राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थ-सूची

[चतुर्थ भाग]

(जयपुर के बारह जैन ग्रंथ भंडारों में संग्रहीत दस हजार से अधिक ग्रंथों की सूची, १८० ग्रंथों की प्रशस्तियां तथा ४२ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय सहित)

भूमिका लेखक:—

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, काशी विश्व विद्यालय, वाराणसी

सम्पादक:—

डा० कस्तूरचंद कासलीवाल

एम. ए. पी-एच. डी., शास्त्री

पं० अनूपचंद न्यायतीर्थ

साहित्यरत्न



प्रकाशक :—

केशरलाल बख्शी

मंत्री :—

प्रबन्धकारिणी कमेटी

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, जयपुर

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर (राजस्थान)

२. मैनेजर दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी (राजस्थान)



प्रथम संस्करण
५०० प्रति

महावीर जयन्ति
वि० सं० २०१९
अप्रेल १९६२



मुद्रक :—
भँवरलाल न्यायतीर्थ
श्री वीर प्रेस, जयपुर ।

★ विषय-सूची ★



★ प्रकाशकीय ★

ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता होती है। ग्रंथ सूची का यह भाग अब तक प्रकाशित ग्रंथ सूचियों में सबसे बड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सहित अब तक जयपुर के १७ तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १८ भंडारों के अनुमानतः २० हजार ग्रंथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

ग्रंथों के संकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर बड़े बड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द जी, सदासुखजी जैसे महान विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पथ-प्रदर्शन किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिखी हुई पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य निधियों में से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में पं० टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोम्मट्टसार जीवकांड की मूल पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई है जिसका एक चित्र हमने इस भाग में दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोदीका, खुशालचंद आदि अन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतियां हैं।

इस ग्रंथ सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचेगा इसका सही अनुमान तो विद्वान् ही कर सकेंगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की सैकड़ों प्राचीन एवं अज्ञात रचनायें प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनदत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसको संभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था शीघ्र ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रद्युम्न चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की अपूर्व रचना स्वीकार किया है।

उक्त सूची प्रकाशन के अतिरिक्त क्षेत्र के साहित्य शोध संस्थान की ओर से अब तक ग्रंथ सूची के तीन भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वार्थसिद्धिसार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jainism a key to true happiness. तथा प्रद्युम्नचरित आठ ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, कस्बे एवं गांवों में स्थित ७० से भी अधिक भंडारों की ग्रंथ सूचियां बनायी जा

चुकी हैं जो हमारे संस्थान में हैं, तथा जिनसे विद्वान एवं साहित्य शोध में लगे हुये विद्यार्थी लाभ उठाते रहते हैं। ग्रंथ सूचियों के साथ २ करीब ४०० से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचीन ग्रंथों की प्रशस्तियां एवं परिचय लिये जा चुके हैं जिन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी इन भंडारों में प्रचुर संख्या में मिलते हैं। ऐसे करीब २००० पदों का हमने संग्रह कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह खोज पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिस उद्देश्य से क्षेत्र ने साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की थी हमारा वह उद्देश्य धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर खोज करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर खोज करने का प्रयास करें। हम भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में यथाशक्ति सहयोग देंगे।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र भंडारों की सूची दी गई है मैं उन भंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः श्री नाथूलालजी बज, अनूपचंदजी दीवान, पं० भंवरलालजी न्यायतीर्थ, श्रीराजमलजी गोधा, समीरमलजी छाबड़ा, कपूरचंदजी रांवका, एवं प्रो. सुल्तानसिंहजी जैन का आभारी हूं जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र भंडारों की सूचियां बनाने तथा समय समय पर वहां के ग्रंथों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। आशा है भविष्य में भी उनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में सहयोग मिलता रहेगा।

हम श्री डा० वासुदेव शरणजी अग्रवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हृदय से आभारी हैं जिन्होंने अस्वस्थ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। भविष्य में उनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्देशन मिलता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस ग्रंथ के विद्वान् सम्पादक श्री डा० कस्तूरचंदजी कासलीवाल एवं उनके सहयोगी श्री पं० अनूपचंदजी न्यायतीर्थ तथा श्री सुगनचंदजी जैन का भी मैं आभारी हूं जिन्होंने विभिन्न शास्त्र भंडारों को देखकर लगन एवं परिश्रम से इस ग्रंथ को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान् श्री पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हूं कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यों में पथ-प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

ता० ३१—८—६१

केशरलाल बख्शी

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्त्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी संस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हठात् अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने संकल्प बल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों में जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं उनकी छान बीन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर उठा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच पड़ताल करके उनमें संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबंध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकांचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्त्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जगत् में इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्त्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिससे महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोध कर्त्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रस्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोध कर्त्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की ब्योरेवार परीक्षा करेंगे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रंथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ में भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद चरित्र आदि वर्णक ग्रंथों में इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचिया मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में ६८ देशों की संख्या रूढ .हो गई थी। ज्ञात होता है कालान्तर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २२ (ग्रंथ संख्या ५४०२) में नगरों की बसापत का संवत्वार व्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत् १६१२ अकबर पातसाह आगरो बसायो : संवत् १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो : संवत् १२४५ विमल मंत्री स्वर हुवो विमल बसाई।

विकास की उन पिछली शतियों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ, संग्रह, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, जयमाल, प्रश्नोत्तरी, मंत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, वर्णन, सुभाषित, चौपई, शुभमालिका, निशाणी, जकडी, व्याहलो, बधावा, विनती, पत्री, आरती, बोल, चरचा, विचार, बात, गीत, लीला, चरित्र, छंद, छप्पय, भावना, विनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, धमाल, चौढालिया, चौमासिया, बारामासा, बटोई, बेलि, हिंडोलणा, चूनडी, सज्झाय, बाराखड़ी, भक्ति, वन्दना, पच्चीसी, बत्तीसी, पचासा, बावनी, सतसई, सामायिक, सहस्रनाम, नामावली, गुरुवावली, स्तवन, संबोधन, मोडलो आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कब आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ, यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी बहुमूल्य सामग्री इन भंडारों में सुरक्षित है।

राजस्थान में कुल शास्त्र भंडार लगभग दो सौ हैं और उनमें संचित ग्रंथों की संख्या लगभग दो लाख के आंकी जाती है। हर्ष की बात है कि शोध संस्थान के कार्य कर्त्ता इस भारी दायित्व के प्रति जागरूक हैं। पर स्वभावतः यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना और बहु व्यय की अपेक्षा रखता है। जिस प्रकार अपने देश में पूना का भंडारकर इन्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वती महल लाइब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मेनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी या कलकत्ते की बंगाल एशियाटिक सोसाइटी का ग्रंथ भंडार हस्तलिखित ग्रंथों को प्रकाश में लाने का कार्य कर रहे हैं और उनके कार्य के महत्व को मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, आशा है कि उसी प्रकार महावीर अतिशय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की ओर भी जनता और शासन दोनों का ध्यान शीघ्र आकृष्ट होगा और यह संस्था जिस सहायता की पात्र है, वह उसे सुलभ की जायगी। संस्था ने अब तक अपने साधनों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु जो कार्य शेष हैं वह कहीं अधिक बड़ा है और इसमें संदेह नहीं कि अवश्य करने योग्य है। ११ वीं शती से १६ वीं शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही उसकी संचित निधि का कुबेर जैसा समृद्ध कोष ही हमारे सामने आ गया है। आज से केवल १५ वर्ष पूर्व तक इन भंडारों के अस्तित्व का पता बहुत कम लोगों को था और उनके संबंध में छान बीन का कार्य तो कुछ हुआ ही नहीं था। इस सबको देखते हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य का व्यापक स्वागत किया जाना चाहिये।

काशी विद्यालय
३-१०-१६६१

वासुदेव शरण अग्रवाल

प्रस्तावना

राजस्थान शताब्दियों से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहां अधिक राजनीतिक उथल पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहां शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहां राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी सदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों में पूर्ण प्रभुत्व रहा। शताब्दियों तक वहां के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनदक्षता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुरक्षा एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहां के शासकों ने एवं समाज के सभी वर्गों ने उस ओर बहुत ही रुचि दिखलायी इसलिये सैकड़ों की संख्या में नये नये ग्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का जितना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भंडारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताड़पत्र एवं कागज दोनों पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियां इन्हीं भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य इन्हीं भण्डारों में संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि से नागौर एवं जयपुर के भण्डार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, डूंगरपुर एवं ऋषभदेव के भंडार भट्टारकों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहां से ग्रन्थों को बटोर कर इनको अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भंडारों को ४ श्रेणियों में बांट सकते हैं।

१. पांच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भंडार

२. पांच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

३. एक हजार से कम एवं पांचसौ से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

४. पांचसौ ग्रंथों से कम वाले शास्त्र भंडार

इन शास्त्र भंडारों में केवल धार्मिक साहित्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु काव्य, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विषयों पर भी ग्रंथ मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विषय, कथा कहानी एवं नाटक भी इनमें अच्छी संख्या में उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र पर भी ग्रंथों का संग्रह मिलता है। कुछ भंडारों में जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये अलभ्य ग्रंथ भी संग्रहीत किये हुये मिलते हैं। वे शास्त्र भंडार खोज करने वाले विद्यार्थियों के लिये शोध संस्थान हैं लेकिन भंडारों में साहित्य की इतनी अमूल्य सम्पत्ति होते हुये भी कुछ वर्षो पूर्व तक ये विद्वानो के पहुँच के बाहर रहे। अब कुछ समय बदला है और भंडारों के व्यवस्थापक ग्रंथों के दिखलाने में उतनी आना-कानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में खोज में लीन विद्वानों के लिये शुभ है। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्थान के ६० प्रतिशत भंडारों को न तो किसी जैन विद्वान ने देखा और न किसी जैनेतर विद्वान ने इन भंडारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अब गत १०, १५ वर्षों से इधर कुछ विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सर्व प्रथम हमने राजस्थान के ७५ के करीब भंडारों को देखा है और शेष भंडारों को देखने की योजना बनाई जा चुकी है।

ये ग्रंथ भंडार प्राचीन युग में पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमें बैठ कर स्वाध्याय प्रेमी शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। उस समय इन ग्रंथों की सूचियां भी उपलब्ध हुआ करती थी तथा ये ग्रंथ लकड़ी के पुट्ठों के बीच में रखकर सूत अथवा सिल्क के फीतों से बांधे जाते थे। फिर उन्हें कपड़े के वेष्टनों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार ग्रंथों के वैज्ञानिक रीति से रखे जाने के कारण इन भंडारों में ११ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये ग्रंथ पाये जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि वे ग्रंथ भंडार नगर कस्बे एवं गांवों तक में पाये जाते हैं इसलिये राजस्थान में उनकी वास्तविक संख्या कितनी है इसका पता लगाना कठिन है। फिर भी यहां अनुमानतः छोटे बड़े २०० भंडार होंगे जिनमें १॥, २ लाख से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है।

जयपुर आरम्भ से ही जैन संस्कृति एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहां १५० से भी अधिक जिन मंदिर एवं चैत्यालय हैं। इस नगर की स्थापना संवत् १७८४ में महाराजा सवाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा उसी समय आमेर के बजाय जयपुर को राजधानी बनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र बनाया तथा एक राज्यकीय पोथीखाने की स्थापना की जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैकड़ों महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत किये हुये हैं। यहां के महाराजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान् थे। इन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखे थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ संगीतसार जयपुर के बड़े मन्दिर के शास्त्र भंडार में संग्रहीत है।

१८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) गुमानीराम (१८, १६ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वी शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छाबड़ा (१६ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१६ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१६ वीं शताब्दी नन्दलाल छाबड़ा (१६ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द बिलाला (१६ वीं शताब्दी) सदासुख कासलीवाल (१६ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्दूका (१६ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१६ वीं शताब्दी) जैतराम (१६ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१६ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१६ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर में ग्रथ भन्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रन्थों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भन्डारों में रखी गई।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भंडार यहां के प्रमुख शास्त्र भंडार हैं और इनमें दस हजार से भी अधिक ग्रथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा ञ भन्डार प्रमुख हैं। ग्रथ सूची में आये हुये इन भंडारों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भंडार)

यह भंडार दि० जैन पाटोदी के मंदिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ में 'आदिनाथ चैत्यालय'[1] भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भंडार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भंडार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भट्टारक भी यहीं आकर रहने लगे। भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्त्ति सुरेन्द्रकीर्त्ति, सुखेन्द्रकीर्त्ति एवं नरेन्द्रकीर्त्ति का क्रमशः संवत् १८१५,

---

१. देखिये ग्रंथ सूची पृष्ठ संख्या १६६, व ४६०

१८२८, १८६३, तथा १८७६ में यहीं पट्टाभिषेक[1] हुआ था। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ में यहां का शास्त्र भंडार भट्टारकों की देख रेख में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहां शास्त्रों की लिखने लिखवाने की भी अच्छी व्यवस्था थी इसलिये श्रावकों के अनुरोध पर यहीं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी होती रहती थी। भट्टारकों का जब प्रभाव क्षीण होने लगा तथा जब वे साहित्य की ओर उपेक्षा दिखलाने लगे तो यहां के भंडार की व्यवस्था श्रावकों ने संभाल ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संग्रहीत ग्रंथों को देखने के पश्चात यह पता चलता है कि श्रावकों ने शास्त्र भंडार के ग्रंथों की संख्या वृद्धि में विशेष अभिरुचि नहीं दिखलाई और उन्होंने भंडार को उसी अवस्था में सुरक्षित रखा।

हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार में शास्त्रों की कुल संख्या २२५७ तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। लेकिन एक एक गुटके में बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिये गुटकों में १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार में चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र की एक एक ताडपत्रीय प्रति को छोड़ कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी भंडार में कपडे पर लिखे हुये कुछ जम्बूद्वीप एवं अढाईद्वीप के चित्र एवं यन्त्र, मंत्र आदि का उल्लेखनीय संग्रह हैं।

भंडार में महाकवि पुष्पदन्त कृत जसहर चरिउ (यशोधर चरित) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत १४०७ में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। इसके अतिरिक्त यहां १५ वीं, १६ वी, १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन प्रतियों में गोम्मटसार जीवकांड, तत्त्वार्थ सूत्र (सं० १४५८) द्रव्यसंग्रह वृत्ति (ब्रह्मदेव-सं० १६३५), उपासकाचार दोहा (सं० १५५५), धर्मसंग्रह श्रावकाचार (संवत् १५४२) श्रावकाचार (गुणभूषणाचार्य संवत् १५६२,) समयसार (१५६४), विद्यानन्दि कृत अष्टसहस्री (१७६१) उत्तरपुराण टिप्पण प्रभाचन्द (सं० १५७५) शान्तिनाथ पुराण (असगकवि सं. १५५२) णेमिणाह चरिए (लक्ष्मण देव सं. १६३६) नागकुमार चरित्र (मल्लिषेण कवि सं. १५६४) वरांग चरित्र (वर्द्धमान देव सं. १५६४) नवकार श्रावकाचार (सं० १६१२) आदि सैकड़ों ग्रंथों की उल्लेखनीय प्रतियां हैं। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

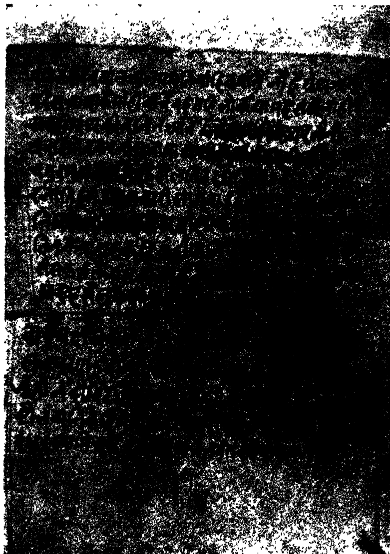
शास्त्र भंडार में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, चरित्र, काव्य, कथा, व्याकरण, आयुर्वेद के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

---

१. भट्टारक पट्टावली: आमेर शास्त्र भंडार जयपुर वेष्टन सं० १७२४

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी




पं० दौलतरामजी कासलीवाल कृत जीवन्धर चरित्र की
मूल पाण्डुलिपि के दो पत्र

है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों नुसखे इन्हीं गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वैदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पदों का भी इन गुटकों में एवं स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्रायः सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टि से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पदों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कबीर, सूरदास, मलूकराम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में व्रतकथा कोष (सकलकीर्त्ति एवं देवेन्द्रकीर्त्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्त्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद का मुनिसुव्रत छंद, आशाधर के शिष्य विनयचंद की भूपालचतुर्विशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत णेमिणाह चरिउ, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण कथा, विमलसेन की सुगंधदशमीकथा अज्ञात रचनायें हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रल्ह कविकृत जिनदत्त चौपई (सं. १३५४) मुनिसकलकीर्त्ति की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, बूचराज का भुवनकीर्त्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) बिहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पदमभगत का कृष्णरुक्मिणीमंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाएं हैं जिनके सम्बन्ध में हम पहिले अन्धकार में थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हुये हैं।

२. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार दि० जैन बड़ा तेरहपंथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र भंडार हैं जिनमें एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उसका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में

से दिया गया है। दूसरा शास्त्र भंडार इसी मन्दिर में बाबा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इसी लिये इस भंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फल्टन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुये आये और उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र संग्रहालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र भंडार में ८५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्दजी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के पश्चात् संग्रहीत किये गये थे। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं बाबाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा कुछ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। वे एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। ग्रंथों की सुरक्षा, लेखन आदि ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन जैन यात्रा दर्पण में लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भन्डार में संग्रहीत हैं।

यह शास्त्र भंडार पूर्णतः व्यवस्थित है तथा सभी ग्रंथ अलग अलग वेष्टनों में रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार वेष्टनों में बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरक्षा जयपुर के किसी भंडार में नहीं मिलेगी। शास्त्र भंडार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथ हैं। हिन्दी के ग्रंथ अधिकांशतः संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीकायें हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहां ग्रंथों की प्रतियां मिलती हैं लेकिन मुख्यतः पुराण, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित ग्रंथों ही का यहां अधिक संग्रह है।

भंडार में आप्तमीमांसालंकृति (आ० विद्यानन्दि) की सुन्दर प्रति है। क्रियाकलाप टीका की संवत् १५३४ की लिखी हुई प्रति इस भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगढ में सुल्तान गयासुद्दीन के राज्य में लिखी गई थी। तत्त्वार्थसूत्र की स्वर्णमयी प्रति दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोम्मटसार, त्रिलोकसार आदि कितने ही ग्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतियां हैं। ऐसी अच्छी प्रतियां कदाचित् ही दूसरे भंडारों में देखने को मिलती हैं। त्रिलोकसार की सचित्र प्रति है तथा इतनी बारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि वह देखते ही बनती है। पन्नालाल चौधरी के द्वारा लिखी हुई डालूराम कृत द्वादशांग पूजा की प्रति भी (सं० १८७६) दर्शनीय ग्रंथों में से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पं० पन्नालालजी संघी का अधिकांश साहित्य यहां संग्रहीत है। इसी तरह भंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों में अल्हू कवि का प्राकृतछन्दकोष, विनयचन्द की द्विसंधान काव्य टीका, वादिचन्द्र सूरि का पवनदूत काव्य, ज्ञानार्णव पर नयविलास की संस्कृत टीका, गोम्मटसार पर सकलभूषण एवं धर्मचन्द की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनाओं में देवीसिंह छावड़ा कृत

उपदेशरत्नमाला भाषा (सं० १७६६) हरिकिशन का भद्रबाहु चरित (सं० १७८७) छत्रपति जैसवाल की मनमोहन पंचविंशति भाषा (सं० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदोंका भी अच्छा संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एवं जयचन्द छाबडा के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल बाजार में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई थी। पंडितजी जोबनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवत् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य पं० बख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संकलन है। भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे प्राचीन प्रति पद्मनन्दिपंचविंशति की है जिसकी संवत् १५७८ में प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय ग्रंथों में पं० आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्ति कृत गजपंथामंडलपूजन उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भंडार में सं० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शांतिकुशल का अंजनारास एवं पृथ्वीराज का रुक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। यहां बिहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पद्य वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

४. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर चौकी के कुआ के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर' के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां छोटा

सा शास्त्र भंडार है जिसमें केवल १०८ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इनमें ७५ हिन्दी के तथा शेष संस्कृत भाषा के ग्रंथ हैं। संग्रह सामान्य है तथा प्रतिदिन स्वाध्याय के उपयोग में आने वाले ग्रंथ हैं। शास्त्र भंडार करीब १४० वर्ष पुराना है। कालूरामजी साह यहां उत्साही सज्जन हो गये हैं जिन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखवाकर शास्त्र भंडार में विराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुये ग्रंथों में पं. जयचन्द्र छाबड़ा कृत ज्ञानार्णव भाषा (सं. १८२२) खुशालचन्द कृत त्रिलोकसार भाषा (सं० १८८४) दौलतरामजी कासलीवाल कृत आदि पुराण भाषा सं. १८८३ एवं छीतर ठोलिया कृत होलिका चरित (सं. १८८३) के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार व्यवस्थित है।

५. शास्त्र भंडार दि. जैन नया मन्दिर बैराठियों का जयपुर (घ भंडार)

'घ' भंडार जौहरी बाजार मोतीसिंह भोमियों के रास्ते में स्थित नये मन्दिर में संग्रहीत है। यह मन्दिर बैराठियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र भंडार में १५० हस्तलिखित ग्रंथ है जिनमें वीरनन्दि कृत चन्द्रप्रभ चरित के प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १५२४ भादवा बुदी ७ के दिन लिखा गया था। शास्त्र संग्रह की दृष्टि से भंडार छोटा ही है किन्तु इसमें कितने ही ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण (सं० १६०६,) ब्रह्मजिनदास कृत हरिवंश पुराण (सं० १६४१,) दीपचन्द्र कृत ज्ञानदर्पण एवं लोकसेन कृत दशलक्षणकथा की प्रतियां उल्लेखनीय हैं। श्री राजहंसोपाध्याय की षष्ठ्यधिक शतक की टीका संवत् १५७६ के ही अगहन मास की लिखी हुई है। ब्रह्मजिनदास कृत अठावीस मूलगुणरास एवं दान कथा (हिन्दी) तथा ब्रह्म अजित का हंसतिलकरास उल्लेखनीय प्रतियों में हैं। भंडार में ऋषिमंडल स्तोत्र, ऋषिमंडल पूजा, निर्वाणकान्ड, अष्टान्हिका जयमाल की स्वर्णाक्षरी प्रतियां हैं। इन प्रतियों के बार्डर सुन्दर बेल बूटों से युक्त हैं तथा कला पूर्ण हैं। जो बेल एक बार एक पत्र पर आगई वह फिर आगे किसी पत्र पर नहीं आई है। शास्त्र भंडार सामान्यतः व्यवस्थित है।

६. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर संघीजी जयपुर (ङ भंडार)

संघीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विशाल मन्दिर है। यह चौकड़ी मोदीखाना में महावीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण दीवान झूंथारामजी संघी द्वारा कराया गया था। ये महाराज जयसिंहजी के शासन काल में जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चंवरी में सोने एवं काच का कार्य हो रहा है। वह बहुत ही सुन्दर एवं कला पूर्ण है। काच का ऐसा अच्छा कार्य बहुत ही कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र भंडार में ६७६ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी के लिखे हुये हैं। सबसे नवीन ग्रंथ णमोकारकाव्य है जो संवत् १६६५ में लिखा गया था। इससे पता चलता है कि समाज में अब भी ग्रंथों की प्रति-

लिपियां करवा कर भंडारों में विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह आचार्य कुन्दकुन्द कृत पंचास्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो संवत् १४८७ की लिखी हुई है।

ग्रंथ भंडार में प्राचीन प्रतियों में भ. हर्षकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, धर्मकीर्ति की कौमुदीकथा संवत् १६६३, पद्मनन्दि श्रावकाचार संवत् १६१३, भ. शुभचंद्र कृत पाण्डवपुराण सं. १६१३, बनारसी विलास सं० १७१५, मुनि श्रीचन्द कृत पुराणसार सं० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार में संवत् १५३० की किरातार्जुनीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीक्षा की भाषा संवत् १७१८ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद सं० १७१६ की ही लिखी हुई भंडार में एक प्रति संग्रहीत है। इसी भंडार में महेश कवि कृत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णबालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भंडार में ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें हर्षकवि कृत चंद्रहंसकथा सं० १७०८, हरिदास की ज्ञानोपदेश बत्तीसी (हिन्दी) मुनिभद्र कृत शांतिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनायें हैं।

७. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रप्रभ दि० जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचंदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय में दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह बड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचंदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पंथ आम्नाय के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहां संस्कृत ग्रंथों का विशेषतः पूजा एवं सिद्धान्त ग्रंथों का अधिक संग्रह है। ग्रंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

संस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निम्न प्रकार हैं।

धर्म एवं सिद्धान्त १५७, अध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १५२, स्तोत्र ८१ अन्य विषय ३२०।

इन ग्रंथों के संग्रह करने में स्वयं अमरचंदजी दीवान ने बहुत रुचि ली थी क्योंकि उनके

समयकालीन विद्वानों में से नवलराम, गुमानीराम, जयचन्द छाबड़ा, डालूराम। मन्नालाल खिन्दूका, स्वरूपचन्द बिलाला के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों के सहयोग से वे ग्रंथों का इतना संग्रह कर सके होंगे। प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन सं. १८७७, गोम्मटसार सं. १८८६, पंचतन्त्र सं. १८८७, छत्र चूडामणि सं० १८६१ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवा कर इन्होंने भंडार में विराजमान की थी।

भंडार में अधिकांश संग्रह १६ वीं २० वीं शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ वीं एवं १७ वीं शताब्दी के भी हैं। इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं।

पूर्णचन्द्राचार्य	उपसर्गहरस्तोत्र	ले. का सं० १५५३	संस्कृत
पं० अभ्रदेव	लब्धिविधानकथा	सं० १६०७	,,
अमरकीर्ति	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	सं० १६२२	अपभ्रंश
पूज्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं० १६२५	संस्कृत
पुष्पदन्त	यशोधर चरित्र	सं० १६३०	अपभ्रंश
ब्रह्मनेमिदत्त	नेमिनाथ पुराण	सं० १६४६	संस्कृत
जोधराज	प्रवचनसार भाषा	सं० १७३०	हिन्दी

अज्ञात कृतियों में तेजपाल कविकृत संभवजिणणाह चरिए (अपभ्रंश) तथा हरचंद गंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भाषा (र० का० १६१८) के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

८. दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर (छ भंडार)

गोधों का मन्दिर घी वालों का रास्ता, नागोरियों का चौक जौहरी बाजार में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण १८ वीं शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के पश्चात ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था। बहुत से ग्रंथ यहां सांगानेर के मन्दिरों में से भी लाये गये थे। वर्तमान में यहां एक सुव्यवस्थित शास्त्र भंडार है जिसमें ६१६ हस्तलिखित ग्रंथ एवं १०२ गुटके हैं। भंडार में पुराण, चरित, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है। अधिकांश ग्रंथ १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये हैं। शास्त्र भंडार में व्रतकथाकोश की संवत् १५८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है। यहां हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है। हिन्दी की निम्न रचनायें महत्वपूर्ण हैं जो अन्य भंडारों में सहज ही में नहीं मिलती हैं।

चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुर कवि	हिन्दी	१६ वीं शताब्दी
सीमन्धर स्तवन	,,	,,	,, ,,
गीत एवं आदिनाथ स्तवन	पल्ह कवि	,,	,, ,,

नेमीश्वर चौमासा	मुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	"	"	" "
नेमीश्वर रास	मुनि रतनकीर्ति	"	" "
नेमीश्वर हिंडोलना	"	"	" "
द्रव्यसंग्रह भाषा	हेमराज	"	र० का० १७१६
चतुर्दशीकथा	डालूराम	"	१७६५

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें बूचराज, छीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द्र, मुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय है। संवत् १६२६ में रचित डूंगरकवि की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवत् १८३० में रचित हरचंद गंगवाल कृत पंचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संस्कृत ग्रंथों में उमास्वामि विरचित पंचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उसका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संग्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित सं० १६५२, विदग्धमुखमंडन सं० १६८३, सारस्वत दीपिका सं० १६५७, नाममाला (धनंजय) सं. १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगति) सं. १६५३, समयसार नाटक (बनारसीदास) सं० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

९ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा सं० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय पश्चात ही यहां शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यक व्यक्ति थे इसलिये उन्होंने थोड़े समय में ही अपने यहां शास्त्रों का अच्छा संकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एवं उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभकाव्य पंजिका सं० १५६४, पं० देवीचन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, हैं। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार सं० १६१४, आशाधर कृत सागारधर्मामृत सं० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाषा सं० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौड़ा रास्ते में स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पांड्या जयपुर (झ भंडार)

विजयराम पांड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर बसने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

पानों का दरीबा चो० रामचन्द्रजी में स्थित है। यहां का शास्त्र भंडार भी कोई अच्छी दशा में नहीं है। बहुत से ग्रंथ जीर्ण हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहां २७५ ग्रंथ एवं ७६ गुटके हैं। शास्त्र भंडार को देखते हुये यहां गुटकों का अच्छा संग्रह है। इनमें विश्वभूषण की नेमीश्वर की लहरी, पुण्यरत्न की नेमिनाथ पूजा, श्याम कवि की तीन चौबीसी चौपाई (र. का. १७५६) स्योजीराम सोगाणी की लग्नचन्द्रिका भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त रूपचन्द्र, दरिगह, मनराम, हर्षकीर्ति, कुमुदचन्द्र आदि कवियों के पद भी संग्रहीत हैं साह लोहट कृत षडलेश्यावेलि एवं जसुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनायें हैं।

११ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर (ञ भंडार)

दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह खवासजी का रास्ता चो० रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८०४ में सोनी गोत्र वाले किसी श्रावक ने कराया था इसलिये यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां एक शास्त्र भंडार है जिसमें ५४० ग्रंथ एवं १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा के ग्रंथों की है। माणिक्य सूरि कृत नलोदय काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४५५ की लिखी हुई है। यद्यपि भंडार में ग्रंथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा प्राचीन प्रतियों का यहां अच्छा संग्रह है।

इन अज्ञात ग्रंथों में अपभ्रंश भाषा का विजयसिंह कृत अजितनाथ पुराण, कवि दामोदर कृत णेमिणाह चरिए, गुणनन्दि कृत वीरनन्दि के चन्द्रप्रभकाव्यकी पंजिका, (संस्कृत) महापंडित जगन्नाथ कृत नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मनन्दि कृत वर्द्धमान काव्य, शुभचन्द्र कृत तत्ववर्णन (संस्कृत) चन्द्रमुनि कृत पुराणसार (संस्कृत) इन्द्रजीत कृत मुनिसुव्रत पुराण (हि०) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां ग्रंथों की प्राचीन प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में संग्रहीत है। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूची की क्र. सं.	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार नाम	ले. काल	भाषा
१५३५	षट्पाहुड	आ० कुन्दकुन्द	१५१६	प्रा०
२३५०	वर्द्धमानकाव्य	पद्मनन्दि	१५१८	संस्कृत
१८३६	स्याद्वादमंजरी	मल्लिषेण सूरि	१५२१	"
१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	१५८०	अपभ्रंश
२०६८	णेमिणाहचरिए	दामोदर	१५८२	"
२३२३	यशोधरचरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	१५८५	संस्कृत
११७६	सागारधर्मामृत	आशाधर	१५६५	"

सूची की क्र. सं.	ग्रंथ नाम	ग्रंथ कार नाम	ले. काल	भाषा
२५४१	कथाकोश	हरिषेणाचार्य	१५६७	संस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१५९४	"
२२५	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	१६३३	"
१०२९	क्षत्रचूडामणि	वादीभसिंह	१६०५	"
२११३	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	१६०३	"
२११५	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	"

इस भंडार में कपड़े पर संवत् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन है। यहां यशोधर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

१२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १९४८ में क्षेत्र के शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची में १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छावड़ों के मन्दिर के तथा बाबू ज्ञानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेंट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची में आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन ग्रंथों में पुष्पदंत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३९९ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित चौबीसीय कवित्त (हिन्दी), ब्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्धन कृत पाण्डव-चरित (संस्कृत), लालो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमंजरी, उदयभानु कृत भोजरासो, अभयदास के कवित्त, तिपरदास कृत रुक्मिणी कृष्णजी का रासो, जगमोहन कृत स्नेहलीला, श्यामविश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाह्निका रासो तथा वंशीदास कृत रोहिणीविधिकथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंडार में प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

ग्रंथ सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिये ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें २५ विषयों में विभाजित किया गया है। विविध विषयों के ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। साहित्य का संभवतः एक भी ऐसा विषय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक ओर जहां इन्होंने धार्मिक एवं आगम साहित्य लिख कर भंडारों को भरा है वहां दूसरी ओर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा कोश आदि लिख कर अपनी विद्वत्ता की छाप लगाई है। श्रावकों एवं सामान्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय का विश्लेषण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एवं सूक्ष्म चर्चा शायद ही अन्य धर्मों में मिल सके। पूजा साहित्य लिखने में भी ये किसी से पीछे नहीं रहे। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर श्रावकों को इनको जीवन में उतारने की प्रेरणा भी दी है। पूजाओं की जयमालाओं में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का बड़ी उत्तमता से वर्णन किया है। ग्रंथ सूची के इसही भाग में १५०० से अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने खूब लिखा है। तीर्थंकरों एवं शलाकाओं के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये बड़े बड़े पुराण एवं काव्य ग्रंथ मिलते हैं। ग्रंथ सूची में प्रायः सभी महत्वपूर्ण पुराण साहित्य के ग्रंथ आगये हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में वर्णन करने में जैनाचार्यों ने अपने पाण्डित्य का अच्छा प्रदर्शन किया है। इन भंडारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये कथायें रोचक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन भंडारों में अच्छा साहित्य संग्रहीत है। गुटकों में आयुर्वेद के नुसखों का अच्छा संग्रह है। सैकड़ों ही प्रकार के नुसखे दिये हुये हैं जिन पर खोज होने की अत्यधिक आवश्यकता है।। इस बार हमने फागु, रासो एवं बेलि साहित्य के ग्रंथों का अतिरिक्त वर्णन दिया है। जैन आचार्यों ने हिन्दी में छोटे छोटे सैकड़ों रासो ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों संग्रहीत हैं। अकेले ब्रह्म जिनदास के ४० से भी अधिक रासो ग्रंथ मिलते हैं। जैन भंडारों में १४ वीं शताब्दी के पूर्व से रासो ग्रंथ मिलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन करने की दृष्टि से संग्रहीत किये हुये इन भंडारों में जैनेतर विद्वानों के काव्य, नाटक, कथा, ज्योतिष, आयुर्वेद, कोष, नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संकलन मिलता है। जैन विद्वानों ने कालिदास, माघ, भारवि आदि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्तु उन पर विस्तृत टीकायें भी लिखी हैं। ग्रंथ सूची के इसी भाग में ऐसे कितने ही काव्यों का उल्लेख आया है। भंडारों में ऐतिहासिक रचनायें भी पर्याप्त संख्या में मिलती हैं। इनमें भट्टारक पट्टावलियां, भट्टारकों के छन्द, गीत, चोमासा वर्णन, वंशोत्पत्ति वर्णन, देहली के बादशाहों एवं अन्य राज्यों के राजाओं के वर्णन एवं नगरों की बसापत का वर्णन मिलता है।

विविध भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों में उत्तरी भारत की प्रायः सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने वृहद् साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलंक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, वीरनन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, सकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकायें भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशस्तिलक चम्पू, वीरनन्दि का चन्द्रप्रभकाव्य, वर्द्धमानदेव का वरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समकक्ष बिठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांशतः योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रंथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची में अपभ्रंश में एवं प्राकृत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से[1] भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों में हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएं मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सबं प्रमुख है जो संवत् १३५४ (१२९७ ई.) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, छीहल, बूचराज, ठक्कुरसी, पल्ह आदि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहां अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेलि, बिहारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कबीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र प्रबन्ध इस दृष्टि से अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

---

१. देखिये कासलीवालजी द्वारा लिखे हुये Jain Granth Bhandars in Rajsthan का चतुर्थ परिशिष्ट।

स्वयं ग्रंथकारों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों की मूल प्रतियां

जैन विद्वान् ग्रंथ रचना के अतिरिक्त स्वयं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलिपियां राष्ट्र की धरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति है। ऐसी पाण्डुलिपियों का प्राप्त होना सहज बात नहीं है लेकिन जयपुर के इन भंडारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियां प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की क्र. सं.	ग्रंथकार	ग्रंथ नाम	लिपि संवत
८४८	कनककीर्ति के शिष्य सदाराम	पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय	१७०७
१०४२	रत्नकरन्डश्रावकाचार भाषा	सदासुख कासलीवाल	१९२०
६७	गोम्मटसार जीवकांड भाषा	पं. टोडरमल	१८ वीं शताब्दी
२६२५	नाममाला	पं० भारामल्ल	१६४३
३६५२	पंचमंगलपाठ	खुशालचन्द काला	१८४४
४४३३	शीलरासा	जोधराज गोदीका	१७५०
५३८२	मिथ्यात्व खंडन	बख्तराम साह	१८३५
५७२८	गुटका	टेकचंद	—
५६५७	परमात्म प्रकाश एवं तत्वसार	डालूराम	—
६०४४	छीयालीस ठाणा	ब्रह्मरायमल्ल	१६१३

गुटकों का महत्व

शास्त्र भंडारों में हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त गुटके भी संग्रह में होते हैं। साहित्यिक रचनाओं के संकलन की दृष्टि से ये गुटके बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संकलन किये हुए कभी कभी ऐसे पाठ मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते। ग्रंथ सूची में आये हुये बारह भंडारों में ८५० गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक गुटके अ भंडार में हैं। अधिकांश गुटकों में पूजा स्तोत्र एवं कथायें ही मिलती हैं लेकिन प्रत्येक भंडार में कुछ गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं अलभ्य पाठों का संग्रह होता है। ऐसे गुटकों का अ, ज, अ एवं ट भंडार में अच्छा संकलन है। १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई अ भंडार के एक गुटके में ही प्राप्त हुई है। इसी तरह अपभ्रंश की कितनी ही कथायें, ब्रह्मजिनदास, शुभचन्द्र, छीहल, ठक्कुरसी, पल्ह, मनराम आदि प्राचीन कवियों की रचनायें भी इन्हीं गुटकों में मिली हैं। हिन्दी पदों के संकलन के तो ये एकमात्र स्रोत है। अधिकांश हिन्दी विद्वानों का पद साहित्य इनमें संकलित किया हुआ होता है। एक एक गुटके में कभी कभी तो ३००, ४०० पद संग्रह किये हुये मिलते हैं। इन गुटकों में ही ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। पट्टावलियां, छन्द, गीत, वंशावलि, बादशाहों के विवरण, नगरों की बसापत आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने यहां के गुटकों को बहुत ही सम्हाल कर रखें जिससे वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके बिना वेष्टनों में बंधे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आज्ञा देदी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूंढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली सन्तति तो इन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही इन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहीत कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी बस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहां रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुंच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतः प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, कोटा, बूंदी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाडा आदि स्थानों पर इनके बड़े बड़े संग्रहालय खोल दिये जावें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावें तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बड़ा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में वेष्टन नहीं हैं तो कहीं बिना पुट्ठों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय हमारा यह संग्रहालय जयपुर के दर्शनीय स्थानों में से गिना जावेगा। प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी आवेंगे और जैन साहित्य के विविध विषयों पर खोज कर सकेंगे। इस संग्रहालय में शास्त्रों की पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रबन्ध एक संस्था के अधीन हो। आशा है जयपुर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के लिये कोई निश्चित योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वांग सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों की ग्रंथ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियां दी गई हैं जिनसे विद्वानों को उनके कर्त्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। गुटकों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से गुटकों के पूरे पाठ एवं शेष गुटकों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं। ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमणिका, ग्रंथ एवं ग्रंथकार, ग्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख ये चार परिशिष्ट दिये हैं। ग्रंथानुक्रमणिका को देखकर सूची में आये हुये किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र मालूम किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रमणिका में ४२०० ग्रंथों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट पं. सभी ग्रंथ मूल ग्रंथ हैं तथा शेष उन्हीं की प्रतियां हैं। इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही ग्रंथकार के इस सूची में कितने ग्रंथ आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। ग्राम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन भंडारों में किस किस ग्राम एवं नगरों में रचे हुये एवं लिखे हुये ग्रंथ संग्रहीत हैं यह जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस प्रकार चलती थी इसका भी हमें आभास मिल सकता है। शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं बादशाहों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ २ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख बहुत प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। प्रस्तावना में ग्रंथ भंडारों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४६ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तावना के साथ में ही एक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में अन्य सूचियों से सभी तरह की अधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। ग्रंथों के नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, उनके रचनाकाल, भाषा आदि के साथ-साथ उनके आदि अन्त भाग पूर्णतः ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियां रहना स्वाभाविक है। इसलिये विद्वानों से हमारा उदार दृष्टि अपनाने का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इन कमियों को दूर किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की खोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये प्रशंसनीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। ग्रंथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी बज, समीरमलजी छाबड़ा, पूनमचंदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचंदजी दीवाण, भंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रांवका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें ग्रंथ भंडार की सूचियां बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर, भंडार के ग्रंथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य किया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगनचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका ग्रंथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक पं. परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हृदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा. वासुदेवशरणजी सा. अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा. का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर
दिनांक १०-११-६१

कस्तूरचंद कासलीवाल
अनूपचंद न्यायतीर्थ

प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतधर्मरस काव्य

श्रावक धर्म पर यह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं भट्टारक गुणचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे लोहट के पुत्र सावलदास के पठनार्थ लिखा था। स्वयं ग्रंथकार ने अपनी प्रशस्ति निम्न प्रकार लिखी है—

पट्टे श्रीकुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्रीसहस्रकीर्ति तत्पट्टे श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरु-रत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री श्रगुणचन्द्रदेवभट्टविरचितमहाग्रंथ कर्मक्षयार्थं लोहट सुत पंडित श्री सावलदास पठनार्थं।। काव्य की एक प्रति ञ भंडार में है। प्रति अशुद्ध है तथा उसमें प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

२ आध्यात्मिक गाथा

इस रचना का दूसरा नाम षट् पद छप्पय है। यह भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र की रचना है जो संभवतः भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में हुये थे। रचना अपभ्रंश भाषा में निबद्ध है तथा उच्चकोटि की है। इसमें संसार की नश्वरता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें २८ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

विरला जाणंति गुणो विरला सेवंति अप्पणो सामि, विरला ससहावरया परदव्व परम्मुहा विरला।
ते विरला जगि अत्थि जिकिवि परदव्वु ण इच्छहिं, ते विरला ससहाव करहिं रुइ णियमणि पिच्छहिं।।
विरला सेवहिं सामि णित्तु णिय देह वसंतउ, विरला जाणहिं अप्पु शुद्ध चेयण गुणवंतउ।
मणु पसणु दुल्लह लहिवि सरवय कुलु उत्तमु जियउ, जिणु एम पयंपइ णिसुणि बुह गाह भणिण छप्पय कियउ।।

इसकी एक प्रति ञ भंडार में सुरक्षित है। यह प्रति आचार्य नेमिचन्द्र के पढ़ने के लिये लिखी गई थी।

३ आराधनासार प्रबन्ध

आराधनासार प्रबन्ध में मुनि प्रभाचंद्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रभाचन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रभाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मनंन्दि जिनके द्वारा विरचित 'वर्द्ध-मान पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रभाचन्द ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपना परिचय दिया है। एक परिचय देखिये—

श्रीमूलसंघे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेति रम्ये।
श्रीकुंदकुन्दाख्यमुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः।।

देवेन्द्रचन्द्रार्कसमर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण ।
अनुमहार्थं रचितः सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः ॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते च ।
मार्गेण किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोके ॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है । यह अभीतक अप्रकाशित है ।

४ कवि वल्लभ

क भंडार में हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं । एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है । हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था । ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे।। विहारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी । इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की । इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है । पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं । संवत् १८५२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है ।

५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छाबडा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान थे । ये जिनदास के पुत्र थे । संवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दोबद्ध रचना की थी । मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है । कवि नरवर निवासी थे जहां कूर्म वंश के राजा छत्रसिंह का राज्य था ।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है । पूरे ग्रंथ में १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों में निबद्ध है । कवि ने ग्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सूचरो, संघई सकल बखान ।
गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान ॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की बांनी, जगत मांहि प्रगटै सुखदानी ।
या विधि चिंता मनि सुभावी, भाषा छंद मांहि अभिलाषी ॥
श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खंडेलवाल सावरा साखा ।
देवीसिंघ नाम सब भावै, कवित मांहि जिवा भवि रावै ॥

गीता छंद

श्री सिद्धान्त उपदेशरत्न रतनगुन मंडित करी
सब सुकवि कंठ करहु भूषित सुखसोमित विधिकरी ।।
जिम सूर्य के प्रकाश सेती तम विलाय विभात है।
इमि पढ़े परमागम सुवानी विदत रुचि अवदात है ।।

दोहा

सुखनिधान नरवरपती, छत्रस्यंघ अवतंस।
कीरति वंत प्रवीन अति, राजत कूरम वंश ।।१६४।।
जाके राज सुचैन सौं, विना ईति अरु भीति।
रच्यौ ग्रंथ सिद्धान्त सुभ, यह उपगार सुनीति ।।१६५।।
सत्रहसै अरु छप्पनवे, संवत विक्रमराज।
भादव सुदि एकादसी, शनिदिन सुविधि समाज ।।१६६।।
ग्रंथ कियो पूरन सुविधि नरवर नगर मंझार।
जे समझै याको अरथ ते पावे भवपार ।।१६७।।

चौबोला

सावन वदि की तीज आदि सौ आरंभ्यो यह ग्रंथ।
भादव वदि एकादशि तक लौं परमपुन्य को पंथ ।।
एक अधिक आठ दिना मैं कियौ समापत जानि।
पढ़े सुने प्रकटै चितशक्ति बोध सदा सुख खानि ।।१६८।।

इति उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा ।।

६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका आ० सकलभूषण द्वारा विरचित है। टीका के प्रारम्भ में लिपिकार ने टीकाकार के विषय में लिखा है वह निम्न प्रकार है.—

"अथ गोम्मटसार ग्रंथ गाथा बंध टीका करणाटक भाषा में है उसके अनुसार सकलभूषण नें संस्कृत टीका बनाई सो लिखिये है।"

टीका का नाम मन्दप्रबोधिका है जिसका टीकाकार ने मंगलाचरण में ही उल्लेख किया है:—

मुनिं सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रं जिनेश्वरं।
टीकां गुम्मटसारस्य कुर्वे मंदप्रबोधिकां ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्मटसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रबोधिका ही है। [1]मुख्तार साहब ने उसको गाथा नं० ३८३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आ० सकल भूषण दिया है। इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये। टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है।

विक्रमादित्यभूपस्य विख्याते च मनोहरे।
दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्तती (१५७६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है:—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासन गुहाभ्यंतरनिवासि प्रवादिमदांधसिंधुरसिंहायमानसिंहनंदि मुनींद्राभिनंदित गंगवंशललामराज सर्वज्ञाद्यनेकगुणनामधेय श्रीमद्राचमल्लदेव महावल्लभ—महामात्य पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुणरत्नभूषण सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनाम समासादितकीर्तिकांतश्रीमच्चामुंडराय भव्यपुंडरीक द्रव्यानुयोगप्रश्नानुरूपकल्पं महाकर्मप्राभृतसिद्धान्त जीवस्थानाख्यप्रथमखंडार्थसंग्रहं गोम्मटसारनामधेयं पंचसंग्रहशास्त्रं प्रारभ समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोमटसारप्रथमावयवभूत जीवकांड विरचयन्नादौ मलगालनपुण्यावाप्ति शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थं विशिष्टइष्टदेवतानमस्काररूपपरं परम मंगलपूर्वकं प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिज्ञासूचकं गाथा सूत्रं कथयति।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवर्द्धमानांतान् वृषभादि जिनेश्वरान्।
धर्ममार्गोपदेशत्वात् सर्वकल्याणदायिकान् ॥ १ ॥
श्रीचन्द्रादिप्रभीतं च नत्वा स्याद्वादवेदकं।
श्रीमद्गुम्मटसारस्य कुर्वे शस्तां प्रशस्तिकां ॥ २ ॥
श्रीमतः शकराजस्य शाके वर्षे हि सुन्दरे।
चतुर्दशशते चैक-चत्वारिंशत्-समन्विते ॥ ३ ॥
विक्रमादित्यभूपस्य विख्याते च मनोहरे।
दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्तती ॥ ४ ॥

---

1. देखिये पुरातन जैन वाक्य सूची प्रस्तावना पत्र ८८ :

कार्तिके चासिते पक्षे त्रयोदश्यां शुभ दिने।
शुक्रे च हस्तनक्षत्रे योगो च प्रीति नामनि ॥ ५ ॥
श्रीमच्छ्रीमूलसंघे च नंद्याम्नाये तसद्गणे।
बलात्कारे जगन्नमे गच्छे सारस्वताभिधे ॥ ६ ॥
श्रीमत्कुंदकुंदाख्य सूरेरन्वयके भवत्।
पद्मादिनंदि दित्याख्यो भट्टारकविचक्षणः ॥ ७ ॥
तत्पट्टांभोजमार्त्तंडः चंद्रांतश्च शुभादिक।
तत्पदस्थोभवच्छ्रीमान् जिनचंद्राभिधोगणी ॥ ८ ॥
तत्पट्टे सद्गुणैर्युक्तो भट्टारकपदेश्वरः।
पंचाचाररतो नित्यं प्रभाचन्द्रो जितेन्द्रियः ॥ ६ ॥
तत्शिष्यो धर्मचन्द्रश्च तत्कमांबुधि चंद्रमा।
तदाम्नाये भवत भव्यास्ते वर्ण्यंते यथाक्रमं ॥१०॥
पुरे नागपुरे रम्ये राजो महादखानके।
पाटणीगोत्रके धुर्ये खंडेलवालान्वयभूषणे ॥११॥
दानादिभिर्गुणैर्युक्तः लूणानामविचक्षणः।
तस्य भार्या भवत् शस्ता लूणाश्री चाभिधानिका ॥१२॥
तयोः पुत्रः समाख्यातः पर्वताख्यो विचारकः।
राज्यमान्यो जनैः सेव्यः संघभारधुरंधर ॥१३॥
तस्य भार्यास्ति सत्साध्वी पर्वतश्रीति नामिका।
शीलादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विताः ॥१४॥
प्रथमो जिनदासाख्यो गृहभारधुरंधरः।
तस्य भार्या भवत्साध्वी जौणादेयविचक्षणा ॥१५॥
दानादिगुणसंयुक्ता द्वितीया च सुहागिणी।
प्रथमायास्तु पुत्रः स्यात् तेजपालो गुणान्वितो ॥१६॥
द्वितीयो देवदत्ताख्यो गुरुभक्तः प्रसन्नधीः।
पतिव्रता गुणैर्युक्ता भार्यादेवासिरीति च ॥१७॥
पितुर्भक्तो गुणैर्युक्तो होलानामातृतीयकः।
होलादेवा च तद्भार्या होलश्री द्वितीयिका ॥१८॥
लिखापि दत्तं निमित्ते सुभक्तितः।
सिद्धान्तशास्त्रमिदं हि गुम्मट ॥

धर्मादिचंद्राय स्वकर्महानये ।
हितोक्तये श्री सुखिने नियुक्तये ।।१६।।

७ चन्दनमलयागिरि कथा

चन्दनमलयागिरि की कथा हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है । यह रचना मुनि भद्रसेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार, वंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ।।३।।

रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है । कुछ पद्य पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं:—

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप झणकार । पणघट पांणी भरण कौं, ख्वार बहुत पणिहार ।।

× × × × ×

चंदन विनु मलयागरी, दिन दिन सूकत जात । ज्यौं पावस जलधार विनु, वनवेली कुमिलात ।।

× × × × ×

अगनि मांझि जरिबौ भलौ, भलौ ज विष कौ पान । शील खंडिवौ नहिं भलौ, कहिं कछु शील समान ।।

× × × × ×

चंदन आवत देखि करि, ऊठि दियो सनमान । उतरौ आपणौ धाम है, हम तुम होई पिछान ।।

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं । पद्य संख्या १८८ है । रचनाकाल एवं लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिये । भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है । श्री मोतीलाल[1] मेनारिया ने इसका रचना काल सं. १६७५ मांना है । इसका दूसरा नाम कलिकापंचमी[2] कथा भी मिलता है । अभीतक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है । इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमें भट्टारकीय शास्त्र भंडार डूंगरपुर में प्राप्त हुई है ।

८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है । ये भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देवकीर्ति के शिष्य थे । कल्याणकीर्ति ने चारुदत्त चरित्र को संवत् १६९२ में समाप्त किया था । रचना में

---

१. राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ सं० १९१

२ राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ पृ० सं० २३६

सेठ चारुदत्त के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छन्द में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुदत्तरास भी है।

कल्याणकीर्ति १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। अब तक इनकी पार्श्वनाथ[1] रासोः (सं० १६६७) बावनी[2], जीरावलि पार्श्वनाथ स्तवनः (सं०) नवग्रह स्तवन (सं०) तीर्थंकर बिनती[3] (सं० १७२३) आदीश्वर[4] बधावा आदि रचनायें मिल चुकी है।

९ चौरासी जातिजयमाल

ब्रह्म जिनदास १५ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही प्रगाढ विद्वान थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। जयपुर के इन भंडारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातिजयमाल का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातिजयमाल में माला की बोली के उत्सव में सम्मिलित होने वाली ८४ जैन जातियों का नामोल्लेख किया है। माला की बोली बढाने में एक जाति से दूसरी जाति वाले व्यक्तियों में बडी उत्सुकता रहती थी। इस जयमाल में सबसे पहिले गोलालार अन्त में चतुर्थ जैन श्रावक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४३ पद्य हैं। ब्रह्म जिनदास ने जयमाल के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है।

ते समकित वंतह बहु गुण जुत्तहं, माल सुणो तहमे एकमनि।
ब्रह्म जिनदास भासैं विबुध प्रकासैं, पढई गुणे जे धम्म धनि ॥४३॥

इसी चौरासी जाति जयमाला समाप्त।

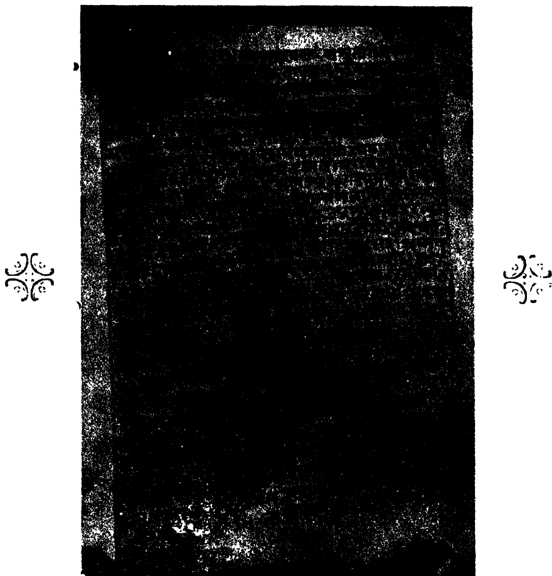
इति जयमाल के आगे चौरासी जाति की दूसरी जयमाल है जिसमें २६ पद्य हैं और वह संभवतः किसी अन्य कवि की है।

१० जिनदत्तचौपई

जिनदत्त चौपई हिन्दी का आदिकालिक काव्य है जिसको रल्ह कवि ने संवत् १३५४ (सन् १२९७) भादवा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

---

१. राजस्थान जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ पृष्ठ ७४
२. " " " पृष्ठ १०९
३. " " भाग ३ पृष्ठ १४१
४. " " " पृष्ठ १५२



रल्ह कवि द्वारा संवत् १३५४ में रचित हिन्दी की अति प्राचीन कृति जिनदत्त चौपई का एक चित्र:—
पान्डुलिपि जयपुर के दि० जैन मन्दिर पाटोदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

(इसका विस्तृत परिचय प्रस्तावना की पृष्ठ संख्या ३८ पर देखिये)





१८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्य सेवी महा पंडित टोडरमलजी द्वारा रचित एवं लिखित गोम्मटसार की मूल पाण्डुलिपि का एक चित्र।

यह ग्रन्थ जयपुर के दि० जैन मंदिरपाटोदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।

(सूची क्र. सं. ६७ वे. सं. ४०३)



संवत् तेरहसे चउवएणे, भादव सुदिपंचमगुरु दिएणे।
स्वाति नखत्त चंदु तुलहती, कवइ रल्हु पणवइ सुरसती ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे। उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम आते था।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, बाईसइ पाडल उतपाति।
पंचऊलीया आतेकउपूतु, कवइ रल्हु जिणदत्तु चरित्तु ॥

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है। ग्रंथ का आधार पं. लाखू द्वारा विरचित जिएयत्तचरिउ (सं. १२७५) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है।

मइ जोयउ जिनदत्तपुराणु, लाखू विरयउ अइसू पमाण ॥

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था। रचना प्रधानतः चौपई छन्द में निबद्ध है किन्तु वस्तुबंध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। इसमें कुल पद्य ५५४ हैं। रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है। वैसे भाषा सरल एवं सरस है। अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है। काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत बसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था। जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था। जिनदत्त व्यापार के लिये सिंघल आदि द्वीपों में गया था। उसे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहां से उसे अनेक अलौकिक विद्यायें एवं राजकुमारियां भी प्राप्त हुई थीं। इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है।

११ ज्योतिषसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिषसार ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ है। इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी। कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने वाले थे। पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

केदरियौ चौथो भवन, सपतमदसमौं जान। पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बखान ॥६॥
तीजो षसटम ग्यारमों, बर दसमों कर लेखि। इनकौ उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ॥७॥

बरष लग्यो जा अंस में, सोइ दिन चित धारि। वा दिन उतनी घडी, जु पल बीते लग्नविचारि ॥४०॥
लगन लिखे ते गिरह जो, जा घर बैठो आय। ता घर के मूल सुकुल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

१२ ज्ञानार्णव टीका

आचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्णव संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। स्वाध्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी प्रायः प्रत्येक शास्त्र भंडार में हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं। इसकी एक टीका विद्यानन्दि के शिष्य श्रुतसागर द्वारा लिखी गई थी। ज्ञानार्णव की एक अन्य संस्कृत टीका जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हुई है। टीकाकार है पं. नयविलास। उन्होंने इस टीका को मुगल सम्राट अकबर जलालुद्दीन के राजस्व मंत्री टोडरमल के सुत रिपिदास के श्रवणार्थ एवं पठनार्थ लिखी थी। इसका उल्लेख टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है:—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवमूलसूत्रे योगप्रदीपाधिकारे पं. नयविलासेन साह पासा तत्पुत्र साह टोडर तत्पुत्र साह रिषिदासेन स्वश्रवणार्थं पंडित जिनदासोद्यमेन कारापितेन द्वादशभावना प्रकरण द्वितीयः।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है—

शास्वत् साहि जलालदीनपुरतः प्राप्त प्रतिष्ठोदयः।
श्रीमान् मुगलवंशशारद–शशि–विश्वोपकारोद्यतः।
नाम्ना कृष्ण इति प्रसिद्धिरभवत् सद्यात्रधर्मोन्नतेः।
तन्मंत्रीश्वर टोडरो गुणयुतः सर्वाधिकाराधितः ॥६॥
श्रीमन् टोडरसाह पुत्र निपुणः सद्दानचिंतामणिः।
श्रीमन् श्रीरिषिदास धर्मनिपुणः प्राप्तोन्नतिरवश्रिया।
तेनाहं समवादि निपुणो न्यायाद्यलीलाह्वयः।
श्रोतुं वृत्तिमता परं सुविपया ज्ञानार्णवस्य स्फुटं ॥७॥

उक्त प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल संभवतः जैन थे। इनके पिता का नाम साह पाशा था। स्वयं मंत्री टोडरमल भी कवि थे और इनका एक भजन "अब तेरो मुख देखूं जिनंदा" जैन भंडारों में कितने ही गुटकों में मिलता है।

नयविलास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है। पं. नयविलास का विशेष परिचय अभी खोज का विषय है।

१३ णेमिणाह चरिए—महाकवि दामोदर

महाकवि दामोदर कृत णेमिणाह चरिए अपभ्रंश भाषा का एक सुन्दर काव्य है। इस काव्य में पांच संधियां हैं जिनमें भगवान नेमिनाथ के जीवन का वर्णन है। महाकवि ने इसे संवत् १२८७ में समाप्त किया था जैसा निम्न दुवई छन्द (एक प्रकार का दोहा) में दिया हुआ है:—

बारहसयाइं सत्तसियाइं, विक्कमरायहो कालहं। पमारहं पट्ट समुद्धरणु, णरवर देवापालहं ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे। इन्होंने इस ग्रंथ की पंडित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी। ग्रंथ की भाषा सुन्दर एवं ललित है। इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है। कुल पद्यों की संख्या १४५ है। इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनैः शनैः हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है।

इसकी एक प्रति अ भंडार में उपलब्ध हुई है। प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं। प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है।

१४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संक्षिप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है। रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं। प्रारम्भ में ग्रंथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है:—

तत्त्वातत्वस्वरूपज्ञं सार्व्वं सर्व्वगुणाकरं। वीरं नत्वा प्रवक्ष्येऽहं जीवद्रव्यादिलक्षणं ॥१॥
जीवाजीवमिदं द्रव्यं युग्ममाहु जिनेश्वरा। जीवद्रव्यं द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पतः ॥२॥

रचना की भाषा सरल है। ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्री कंजकीर्त्तिसद्देवैः शुभेंदुमुनितेरितैं। जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति–हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं। यह रचना अ भंडार में संग्रहीत है। यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

१५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किया है। अभी क भंडार में इस ग्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्त्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ प्रान्त के मेंडूगांव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम मोतीलाल था। ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे। इन्होंने इस ग्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १६३२ में समाप्त किया था।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं। ये रचनायें चौवीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एवं नित्यनियमपूजा हैं। तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है।

मोक्ष की राह बनावत जे। अरु कर्म पहाड करै चकचूरा,
विश्वसुतत्त्व के ज्ञायक है ताही, लब्धि के हेत नमौं परिपूरा।
सम्यग्दर्शन चरित ज्ञान कहे, याहि मारग मोक्ष के सूरा,
तत्व को अर्थ करो सरधान सो सम्यग्दर्शन मजहूरा ॥१॥

कवि ने जिन पद्यों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं:—

जिलो अलीगढ जानियो मेडूगाम सुधाम। मोतीलाल सुपुत्र है छोटेलाल सुनाम ॥१॥
जैसवाल कुल जाति है श्रेणी वीसा जान। वंश इच्याक महान में लयो जन्म भू आन ॥२॥
काशी नगर सुआय कै सैनी संगति पाय। उदयराज भाई लखो सिखरचन्द गुण काय ॥३॥
छंद भेद जानों नहीं और गणागण सोय। केवल भक्ति सुधर्म की बसी सुहृदय मोय ॥४॥
ता प्रभाव या सूत्र की छंद प्रतिज्ञा सिद्धि। भाई सु भवि जन सोधियो होय जगत प्रसिद्ध ॥५॥
मंगल श्री अर्हंत है सिद्ध साध चपसार। तिन नुति मनवच काय यह मेटो विघन विकार ॥६॥
छंद बंध श्री सूत्र के किये सु बुधि अनुसार। मूलग्रंथ कूं देखिके श्री जिन हिरदै धारि ॥७॥
कारमास की अष्टमी पहलो पक्ष निहार। अठसटि ऊन सहस्र दो संवत रीति विचार ॥८॥

इति छंदबद्धसूत्र संपूर्ण।
संवत् १६५३ चैत्र कृष्णा १३ बुधे।

१६ दर्शनसार भाषा

नथमल नाम के कई विद्वान हो गये हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नथमल बिलाला थे जो मूलतः आगरे के निवासी थे किन्तु बाद में हीरापुर (हिण्डौन) आकर रहने लगे थे। उक्त विद्वान के अतिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे नथमल हुये जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा टीका लिखी। दर्शनसार भाषा भी इन्हीं का लिखा हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १६२० में समाप्त किया था। इसका उल्लेख स्वयं कवि ने निम्न प्रकार किया है।

बीस अधिक उगणीस सै शात, श्रावण प्रथम चोथि शनिवार।
कृष्णपक्ष में दर्शनसार, भाषा नथमल लिखी सुधार ॥५६॥

दर्शनसार मूलतः देवसेन का ग्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ६६० में समाप्त किया था। नथमल ने इसी का पद्यानुवाद किया है।

नथमल द्वारा लिखे हुये अन्य ग्रंथों में महीपालचरितभाषा (संवत् १६१८), योगसार भाषा (संवत् १६१६), परमात्मप्रकाश भाषा (संवत् १६१६), रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा (संवत् १६२०), षोडश-

कारणभावना भाषा (संवत् १६२१) अष्टाह्निकाकथा (संवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाल (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं। इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में अनुवाद किया था। इन्हीं विद्वानों में से पं० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है। ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १८२३ में समाप्त की थी। गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है। इसका एक उदाहरण देखिये:—

सांच कहतां जीव के उपरिलोक दूखो वा तूपो। सांच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदंड छोडि देता है वा जूंवा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटकि देय है ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, सांच बोला तो सांच कहै।

१८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध में मुनि धर्मचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। मुनि, भट्टारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है। रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। ये सकल कला में प्रवीण एवं आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान थे। भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रभुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है।

१६ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है। कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है। इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान ब्र० जिनदास से भिन्न विद्वान हैं। इन्होंने प्रथम मंगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है।

भव्वकमलमायंडं सिद्धजिण तिहुवर्णिद सदपुज्जं। नेमिशसिं गुरुवीरं पणमीय तियशुद्धभोवमहएं ॥१॥

ग्रंथ का नाम धर्मपंचविंशतिका भी है। यह प्राकृत भाषा में निबद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं। ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्यश्रीनेमिचन्द्रस्य प्रियशिष्यब्रह्मजिनदासविरचितं धर्मपंचविंशतिका नाम शास्त्रसमाप्तम् ।

२० निजामणि

यहाँ प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्म जिनदास की कृति है जो जयपुर के 'क' भण्डार में उपलब्ध हुई है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५४ पद्य हैं । इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति एवं अन्य शलाका महापुरुषों का नामोल्लेख किया गया है । रचना स्तुति परक होते हुये भी आध्यात्मिक है । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है:—

श्री सकल जिनेश्वर देव, हूं तह्म पाय करू सेव ।
हवे निजामणि कहु सार, जिम क्षपक तरे संसार ॥ १ ॥
हो क्षपक सुणे जिनवाणि, संसार अथिर तू जाणि ।
इहां रह्या नहिं कोई थीर, हवे मन दृढ करो निज धीर ॥ २ ॥
ग्या आदिश्वर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार ।
ग्या अजित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म नो भंग ॥ ३ ॥
ग्या संभव भव हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि गामी ।
ग्या अभिनंदन आनंद, जिने मोड्यो भव नो कंद ॥ ४ ॥
ग्या सुमति सुमति दातार, जिने रण भुमी जित्यो मार ।
ग्या पद्मप्रभ जगिवास, ते मुक्ति तणा निवास ॥ ५ ॥
ग्या सुपार्श्व जिन जगीसार, जसु पास न रहियो भार ।
ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिन त्रिभुवन कियो आनन्द ॥ ६ ॥

× × × ×

ए निजामणि कहि सार, ते सयल सुख भंडार ।
जे क्षपक सुणे ए चंग, ते सौख्य पाये अभंग ॥ ५३ ॥
श्री सकलकीर्त्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्त्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणेसार, ए निजामणि भवतार ॥ ५४ ॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है । ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे तथा टोडारायसिंह (जयपुर) के रहने वाले थे । अब तक इनकी श्वेताम्बर पराजय (केवलि मुक्ति निराकरण), सुख निधान, चतुर्विंशति संधान स्वोपज्ञ टीका एवं शिव साधन नाम के चार ग्रंथ उपलब्ध हुये थे । नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

उनकी पांचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है:—

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्त्तिरतुलं चित्तोत्सवं च कृतात्।
पूर्व्वानेकभवार्जितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतात्॥
उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतृनहो..........।
शाश्वत् छ्रीजगदीशनिर्मलहृदि प्रायः सदा वर्तताम्॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति अ भण्डार में संग्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकीर्त्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भंडार में संग्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचरिए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूघलि के लिये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति ८ भण्डार में संग्रहीत है। इस प्रति में ८ से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ संधियों का विवरण है। आठवीं संधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रइयं कइ तेजपाल साणंदं अणुसंणियसुहद्दं घूघलि सिवदास पुत्तेण सग्गग्गवाल छीजा सुपसाएण लब्भए णाणं अरविंद दिक्खा अट्ठमसंधी परिसमत्तो॥

तेजपाल ने ग्रंथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

पार्श्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान थे तथा क्याहटका ग्राम के रहने वाले थे। उस समय मुगल बादशाह औरंगजेब का शासन था। पार्श्वनाथ चौपई में २६८ पद्य हैं जो सभी चौपई में हैं। रचना सरस भाषा में निबद्ध है।

२५ पिंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माखन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है। रचना का दूसरा नाम माखन छंद विलास भी है। माखन कवि के पिता जिनका नाम गोपाल था स्वयं भी कवि थे। रचना में दोहा चौबोला, छप्पय, सोरठा, मदनमोहन, हरिमालिका संखधारी, मालती, डिल्ल, करहंचा समानिका, भुजंगप्रयात, मंजुभाषिणी, सारंगिका, तरंगिका, भ्रमरावलि, मालिनी आदि कितने ही छन्दों के लक्षण दिये हुये हैं।

माखन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समाप्त किया था। इसकी एक अपूर्ण प्रति 'अ' भण्डार के संग्रह में है। इसका आदि भाग सूची के ३१० पृष्ठ पर दिया हुआ है।

२६ पुण्यास्रवकथा कोश

टेकचन्द १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं। अबतक इनकी २० से भी अधिक रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं। जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं:—

पंचपरमेष्ठी पूजा, कर्मदहन पूजा, तीनलोक पूजा (सं० १८२८) सुदृष्टि तरंगिणी (सं० १८३८) सोलहकारण पूजा, व्यसनराज वर्णन (सं० १८२७) पञ्चकल्याण पूजा, पञ्चमेरु, पूजा, दशाध्याय सूत्र गद्य टीका, अध्यात्म बारहखड़ी, आदि। इनके पद भी मिलते हैं जो अध्यात्म रस से ओतप्रोत हैं।

टेकचंद के पितामह का नाम दीपचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था। दीपचंद स्वयं भी अच्छे विद्वान् थे। कवि खण्डेलवाल जैन थे। ये मूलतः जयपुर निवासी थे लेकिन फिर साहिपुरामें जाकर रहने लगे थे। पुण्यास्रवकथाकोश इनकी एक और रचना है जो अभी जयपुर के 'क' भण्डार में प्राप्त हुई है। कवि ने इस रचना में जो अपनापरिचय दिया हैं वह निम्न प्रकार है:—

दीपचन्द साधर्मी भए, ते जिनधर्म विषै रत थए।
तिन से पुरस तणु संगपाय, कर्म जोग्य नहीं धर्म सुहाय ॥ ३२ ॥
दीपचन्द तन तैं तन भयो, ताको नाम हली हरि दीयो।
रामकृष्ण तैं जो तन थाय, टेकचंद ता नाम धराय ॥ ३३ ॥
सो फिरि कर्म उदै तैं आय, साहिपुरै थिति कीनी जाय।
तहां भी बहुत काल विन ज्ञान, खोयो मोह उदै तैं आनि ॥

× × ×

साहिपुरा सुभथान में, रूलो सहारो पाय।
धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय॥
नृप उमेद ता पुर विषै, करै राज बलवान।
तिन अपने भुजबलथकी, अरि शिर कीहनी आनि॥
ताके राज सुराज में ईतिभीति नहीं जान।
अबलूं पुर में सुखथकी तिष्ठे हरष जु आनि॥
करी कथा इस ग्रंथ की, छंद बंध पुर मांहि।
ग्रंथ करन कछू बीचि में, आकुल उपजी नांहि॥ ५३॥
साहि नगर साह्यै भयो, पायो सुभ अवकास।
पूरण ग्रंथ सुख तैं कीयौ, पुण्याश्रव पुण्यवास॥ ५४॥

चौपई एवं दोहा छन्दों में लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रंथ है। इसमें ७६ कथाओं का संग्रह है। कवि ने इसे संवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है:—

संवत् अष्टादश सत जांनि, ऊपरि बीस दोय फिरि आंनि।
फागुण सुदि ग्यारसि निसमांहि, कियो समापत उर हुल साहि॥ ५५॥

प्रारम्भ में कवि ने लिखा है कि पुण्याश्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निबद्ध था लेकिन जब उसे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्त्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की। जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे में धनराम ने उसकी वचनिका की। टेकचंद ने संभवतः इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोबद्ध रचना की होगी। कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

साधर्मी धनराम जु भए, संसकृत परवीन जु थए।
तों यह ग्रंथ आगरै थान, कीयो वचनिका सरल बखान॥
जिन धुनि तो बिन अक्षर होय, गणधर समझै और न कोय।
तो प्राकृत मैं करै बखांन, तब सब ही सुनि है गुणखानि॥ ३॥
तब फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत वानी श्रुति ठई।
फेरि अलप बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्त्ति आदिक जोय॥
तिन यह महा सुगम करि लीए, संस्कृत अति सरल जु कीए॥

२७ बारहभावना

पं० रइधू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इनकी प्रायः सभी रचनायें अपभ्रंश

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश–ग्वालियर के रहने वाले थे। बारह भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य हैं। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अगाधता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है:—

कथन कहाणी ज्ञान की, कहन सुनन की नांहि। आपन्ही मैं पाइए, जब देखै घट मांहि॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार है:—

संसार रूप कोई वस्तु नांही, भेदभाव अज्ञान। ज्ञान दृष्टि धरि देखिए, सब ही सिद्ध समान॥

× × × × × ×

धर्म करावौ धरम करि, किरिया धरम न होय। धरम जु जानत वस्तु है, जो पहचानै कोय॥

× × × × × ×

करन करावन ग्यान नहिं, पढ़ि अर्थ बखानत और। ग्यान दिष्टि विन ऊपजै, मोहा तणी हु कोंर॥

रचना में रइधू का नाम कहीं नहीं दिया है केवल ग्रंथ समाप्ति पर "इति श्री रइधू कृत बारह भावना संपूर्ण" लिखा हुआ है जिससे इसको रइधू कृत लिखा गया है।

२८ भुवनकीर्ति गीत

भुवनकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के पश्चात् ये ही भट्टारक की गद्दी पर बैठे। राजस्थान के शास्त्र भंडारों में भट्टारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं इनमें बूचराज एवं भ० शुभचन्द्र द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बूचराज ने भट्टारक भुवनकीर्ति की तपस्या एवं उनकी बहुश्रुतता के सम्बन्ध में गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे भुवन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बूचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान[1] थे इनके द्वारा रची हुई अबतक पांच और रचनाएं मिल चुकी हैं। पूरा गीत अविकल रूप से सूची के पृष्ठ ६६६–६६७ पर दिया हुआ है।

२९ भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका

महा पं० आशाधर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखे गये कितने ही ग्रंथ मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अप्राप्य थी लेकिन अब इसकी २ प्रतियां जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हो चुकी हैं। आशाधर ने इसकी टीका अपने प्रिय शिष्य विनयचन्द्र के लिये

---

१ विस्तृत परिचय के लिए देखिये डा० कासलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एवं उनका साहित्य–जैन सन्देश शोधांक–११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उपशम इव मूर्त्तिः पूतकीर्त्तिः स तस्माद्। अजनि विनयचन्द्रः सच्चकोरैकचन्द्रः ॥
जगदमृतसगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः। शुचिचरित सहिष्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाचः ॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भण्डार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपालस्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

३० मनमोदनपंचशती

कवि छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृपणजगावन चरित्र' पहिले ही प्रकाश में आचुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे संग्रह में हैं। ये अवांगढ के निवासी थे। पं० बनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नही रखते थे तथा एक घन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपंचशति' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचशती को कवि ने संवत १९१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

वीर भये असरीर गई पट सत पन वरसहि। प्रघटो विक्रम दैत तनौ संवत सर सरसहि ॥
उनिसइसत षोडशहि पोष प्रतिपदा उजारी। पूर्वाषाढ नक्षत्र अर्क दिन सब सुखकारी ॥
वर वृद्धि जोग सिंक्षत इहग्रंथ समापित करिलियो। अनुपम असेष आनंद घन भोगत निवसत थिर थयो ॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सवैया, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पंचशती में सभी स्फुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह। तिन पद पंकज कौ सदा प्रनमौं धरि मन नेह ॥
नहि अधिकार प्रबंध नहि फुटकर कवित्त समस्त। जुदा जुदा रस वरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त ॥

मित्र की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करैं चारि बात कौं। उछेद तन धन धर्म मंत्र अनेक प्रकार के ॥
दोष देखि दाबै पीठ पीछे होय जस गावै। कारज करत रहै सदा उपकार के ॥

साधारन रीति नहीं स्वारथ की प्रीति जाके । जब तब वचन प्रकासत पचार के ॥
दिल को उदार निरवाहै जो पै दे करार । मति कौ सुठार गुनवीसरै न यार के ॥२१३॥
अंतरंग बाहिज मधुर जैसी किसमिस । धनलरचन कौ कुवेरवानि घर है ॥
गुन के बधाय कूं जैसे चन्द सायर कूं । दुख तम चूरिवे कूं दिन दुपहर है ॥
कारज के सारिवे कूं हरू बहु विधना है । मंत्र के सिखायवे कूं मानों सुरगुर है ॥
ऐसे सार मित्र सौ न कीजिवे जुदाई कभी । धन मन तन सब वारि देना वर है ॥२१४॥

इस तरह मनमोदन पंचशती हिन्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीघ्र ही प्रकाशन योग्य है ।

२१ मित्रविलास

मित्रविलास एक संग्रह ग्रंथ है जिसमें कवि घासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का संकलन है । घासी के पिता का नाम बहालसिंह था । कवि ने अपने पिता एवं अपने मित्र भारामल के आग्रह से मित्र विलास की रचना की थी । ये भारामल संभवतः वे ही विद्वान हैं जिन्होंने दर्शनकथा, शीलकथा, दानकथा आदि कथायें लिखी हैं । कवि ने इसे संवत् १७८६ में समाप्त किया था जिसका उल्लेख ग्रंथ के अन्त में निम्न प्रकार हुआ है:—

कर्म रिपु सो तो चारों गति मैं घसीट फिरयौ, ताही के प्रसाद सेती घासी नाम पायौ है ।
भारामल मित्र वो बहालसिंह पिता मेरो, तिनकीसहाय सेती ग्रंथ ये बनायौ है ॥
यां मैं भूल चूक जो ही सुधि सो सुधार लीजो, मो पै कृपा दृष्टि कीज्यो भाव ये जनायौ है ।
दिगनिध सतजान हरि को चतुर्थ ठान, फागुण सुदि चौथ मान निजगुण गायौ है ॥

कवि ने ग्रंथ के प्रारम्भ में वर्णनीय विषय का निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

मित्र विलास महासुखदैन, वरनुं वस्तु स्वाभाविक ऐन ।
प्रगट देखिये लोक मंझार, संग प्रसाद अनेक प्रकार ॥
शुभ अशुभ मन की आवंति होय, संग कुसंग तणो फल सोय ।
पुद्‌गल वस्तु की निरणय ठीक, हम कूं करनी है तहकीक ॥

मित्र विलास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर है तथा पाठकों के मन को लुभाने वाली है । ग्रंथ प्रकाशन योग्य है ।

घासी कवि के पद भी मिलते हैं ।

२२ रागमाला—श्याममिश्र

राग रागनियों पर निबद्ध रागमाला श्याम मिश्र की एक सुन्दर कृति है । इसका दूसरा नाम

कासम रसिक विलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखां के संरक्षता में आकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कासिमखां उस समय वहां का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखांन सुजान कृपा कवि पर करी।
रागनि की माला करिवै की चित धरी ।।

दोहा

सेख खांन के वंश में उपज्यौ कासमखांन।
निस दीपग ज्यौं चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौ भान ।।
कवि बरनै छवि खांन की, सौ बरनी नहीं जाय।
कासमखांन सुजांन की अंग रही छवि छाय ।।

रागमाला में भैरोंराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी. विलावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्भुज मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

संवत् सौरहसे बरष, उपर बीते दोइ।
फागुन सुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ ।।

सोरठा

पोथी रची लाहौर, स्याम आगरे नगर के।
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरभुज मिश्र के ।।

इति रागमाला ग्रंथ स्याममिश्र कृत संपूरण।

३३ रुकमणिकृष्णजी को रासो

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दर्य का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणि के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलबल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

सदलबल के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान, पूजा के बहाने रुक्मिणी का मन्दिर की ओर जाना, रुक्मिणी का सौन्दर्य वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में बैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध वर्णन, रूक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान आदि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कलश, त्रोटक, नाराच जाति छंद आदि का प्रयोग किया गया है। रासो की भाषा राजस्थानी है।

नाराच जातिछंद

आणंद भरीए सोहती, त्रिभवणरूप मोहती।
रुणं झणंत नेवरी, सुचल चरण घुघरी ॥
झब झबै झबक झाल, श्रवण हंस सोमती।
रतन हीर जडत जाम, खीर ली अनोपती ॥
झलमलै ज चंद सूर, सीस फूल सोहए।
बासिग वेणि रुलै जेम, सिरह मणिज मोहए ॥
सोवन मै रलहार, जडित कंठ मैं रुलै।
अबंध मोति जडित जोति, नाकिउ जलाढुलै ॥

३४ लग्नचन्द्रिका

यह ज्योतिष का ग्रंथ है जिसकी भाषा स्योजीराम सौगाणी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंवरपाल तथा गुरु का नाम पं० जैचन्दजी था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी भाषा संवत् १८७४ में समाप्त की थी। लग्नचन्द्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अच्छा ग्रंथ है। भाषा टीका में ५२३ पद्य हैं। इसकी एक प्रति झ भंडार में सुरक्षित है।

इनके लिखे हुये हिन्दी पद एवं कवित्त भी मिलते हैं:—

३५ लब्धि विधान चौपई

लब्धि विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमें लब्धिविधान व्रत से सम्बन्धित कथा दी हुई है। यह व्रत चैत्र एवं भादव मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाता है। इस व्रत के करने से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि भीषम जिनका नाम प्रथमवार सुना जा रहा है। कवि सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा गोधा इनका गोत्र था। सांगानेर में उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का खूब प्रचार था। इन्होंने इसे संवत् १६१७ (सन् १५६०) में समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसै सतरौ, फागुण मास जबै ऊतरौ।
उजल पाखि तेरसि तिथि जांण, ता दिन कथा गढी परवाणि ॥६६॥
बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति।
यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुरांण मांहि जैसी लही ॥६७॥
सांगानेरी बसै सुभ गांव, मांन नृपति तस चहु खंड नाम।
जहि कै राजि सुखी सब लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥६८॥
जैनधर्म की महिमां बणी, संतिक पूजा होई तिहघणी।
श्रावक लोक बसै सुजांण, सांझ संवारा सुणै पुराण ॥६६॥
आठ विधि पूजा जिणेश्वर करै, रागदोष नहीं मन मैं धरै।
दान चारि सुपात्रा देय, मनिष जन्म कौ लाहौ लेय ॥२००॥
कडा बंध चौपई जांणि, पूरा हुवा दोइसै प्रमाण।
जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥२०१॥
इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण।

३६ वर्द्धमानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिव्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३५६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रबन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विषहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विषहरन विधि संतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरष के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य थे) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में लिखकर इसे संवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

अथ विषहरन लिख्यते—

दोहरा—श्री गनेस सरस्वती, सुमरि गुर चरननु चितलाय।
खेत्रपाल दुखहरन कौ, सुमति सुबुधि बताय ॥

चौपई

श्री जिनचंद्र सुवाच बखांनि, रच्यौ सोभाग्य ते यह हरष मुनिजान।
इस सीख दीनी जीव दया आंनि, संतोष वंश लइ तिरहमनि ॥२॥

३८ व्रतकथाकोश

इसमें व्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३७ से भी अधिक हैं। कथाकार पं० दामोदर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही धर्मचन्द्र सूरि के शिष्य थे। ऐसा मालूम पड़ता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्व नाम दामोदर था इसलिये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थीं उनमें दामोदर कृत लिख दिया है तथा साधु बनने के पश्चात् जो कथायें लिखी उनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया। दामोदर का उल्लेख प्रथम, षष्ठ, एकादश, द्वादश, चतुर्दश, एवं एकविंशति कथाओं की समाप्ति पर आया है।

कथा कोश संस्कृत गद्य में है तथा भाषा, भाव एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर की हैं। इसकी एक अपूर्ण प्रति अ भंडार में सुरक्षित है। इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति ग्रंथ संख्या २५४३ पर देखें। इसमें ४४ कथाओं तक पाठ हैं।

३९ व्रतकथाकोश

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वीं शताब्दी के प्रकांड विद्वान थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत ग्रंथ लिखि हैं जिनमें आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसार संग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमान पुराण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अपने जबरदस्त प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई भट्टारक परम्परा को जन्म दिया जिसमें ब्र० जिनदास, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र जैसे उच्चकोटि के विद्वान हुये।

व्रतकथा कोश भी उनकी रचनाओं में से एक रचना है। इसमें अधिकांश कथायें उन्हीं के द्वारा विरचित हैं। कुछ कथायें अभ्र पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं। कथायें संस्कृत पद्य में हैं। भ० सकलकीर्ति ने सुगन्धदशमी कथा के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

असमगुण समुद्रान्, स्वर्ग मोक्षाय हेतून्।
प्रकटित शिवमार्गान्, सद्गुरुन् पंचपूज्यान् ॥

विस्तृत परिचय देखिये डा० कासलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एवं उनका साहित्य—जैन सन्देश शोधांक अंक ११

त्रिभुवनपतिभव्यैस्तीर्थनाथादिमुख्यान् ।
जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद्‌ गुणाप्त्यै ॥

प्रति में ३ पत्र (१४३ से १४५) बाद में लिखे गये हैं। प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है। कथा कोश में कुल कथाओं की संख्या ५० है।

४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी में ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है। इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कीर्त्ति के आश्रित थे। ब्रह्म गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे। एक बार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और ये मुनि भी बन गये। इनके द्वारा विरचित अब तक ८ रचनाएं उपलब्ध हो चुकी हैं। जिसमें त्रेपन क्रिया (संवत् १६६५) गुलाल पच्चीसी, जलगालन क्रिया, विवेक चौपई, कृपण जगावन चरित्र (१६७१), रसविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं।

'समोसरण' एक स्तोत्र के रूप में रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ में समाप्त किया था। इसमें भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है। इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे।

स रहसै अठसठिसमै, माघ दसै सित पक्ष।
गुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिक्ष ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है। सोनागिर पहिले दतिया स्टेट में था अब वह मध्यप्रदेश में है। कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था। रचना में क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है:....

मेला है जहा कौ कातिक सुद पूनौ को,
हाट हू बजार नाना भांति जुरि आए हैं।
भावधर वंदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,
पाप मूल निकंदन कौ दूर हू से धाए है॥
गोठै जैउ नारे पुनि दान देह नाना विधि,
सुर्ग पंथ आइवे कौ पूरन पद पाए है।

कीजिये सहाइ पाइ आए हैं भागीरथ,
गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाए हैं ।।

दोहा

जेठ सुदी चौदस भली, जा दिन रची बनाइ ।
संवत् अष्टादस इकिसठ, संवत् लेउ गिनाइ ।।
पढै सुनै जो भाव धर, ओरे देइ सुनाइ ।
मनवंछित फल कौ लिये, सो पूरन पद को पाइ ।।

४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेश कवि ने महिमासाह का बादशाह अलाउद्दीन के साथ झगडा, महिमासाह का भागकर रणथम्भौर के महाराजा हम्मीर की शरण में आना, बादशाह अलाउद्दीन का हम्मीर को महिमासाह को छोडने के लिये बार २ समझाना एवं अन्त में अलाउद्दीन एवं हम्मीर का भयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है । कवि की वर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है ।

रासो कब और कहां लिखा गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है । उसने केवल अपना नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है ।

मिले रावपति साही षीर ज्यौ नीर समाही ।
ज्यों पारिस कौ परसि वजर कंचन होय जाई ।।
अलादीन हमीर से हुआ न हौस्यौ होयसे ।
कवि महेस यम उच्चरै वै सभांसहै तसु पुरवसै ।।

———

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१.	४३८१	अनंतव्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचंद्र	सं०	अ	१६३०
२.	४३६२	अनंतचतुर्दशीपूजा	शांतिदास	सं०	ख	×
३	२८६५	अभिधान रत्नाकर	धर्मचंद्रगणि	सं०	अ	×
४.	४३६१	अभिषेक विधि	लक्ष्मीसेन	सं०	ज	×
५.	५६६	अमृतधर्मरसकाव्य	गुणचंद्र	सं०	अ	१६ वीं शताब्दी
६.	४४०१	अष्टाह्निकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं०	अ	१८५१
७.	२५३५	आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचंद्र	सं०	ट	×
८.	६१६	आराधनासारवृत्ति	पं० आशाधर	सं०	ख	१३ वीं शताब्दी
९.	४४३५	ऋषिमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	सं०	ख	×
१०.	४४८०	कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्त्ति	सं०	अ	×
११.	२५८३	कथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	सं०	अ	×
१२.	५४५६	कथासंग्रह	ललितकीर्त्ति	सं०	अ	×
१३.	४४४६	कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	सं०	छ	×
१४.	३८२८	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	सं०	अ	×
१५.	३८२७	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	पं० आशाधर	सं०	अ	१३ वीं "
१६.	४४६७	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	अ	१५ वीं "
१७.	२७५८	कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	चारित्रसिंह	सं०	अ	१६ वीं "
१८.	४४७३	कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	सं०	अ	×
१९.	२०२३	कुमारसंभवटीका	कनकसागर	सं०	अ	×
२०.	४४८४	गजपंथामण्डलपूजनविधान	भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति	सं०	ख	×
२१.	२०२८	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	सं०	ङ	×
२२.	३८३९	गीतवीतराग	अभिनव चारुकीर्त्ति	सं०	अ	×
२३.	११७	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	कनकनन्दि	सं०	क	×
२४.	११८	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	ज्ञानभूषण	सं०	क	×
२५.	११	गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	सं०	क	×
२६.	५४३९	चंदनषष्ठीव्रतकथा	छत्रसेन	सं०	अ	×
२७.	२०४८	चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	गुणनंदि	सं०	अ	×

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२८.	४५१२	चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	सं०	च	×
२९.	४६१४	ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं०	च	×
३०.	४६२१	णमोकारपैंतीसीव्रतविधान	कनककीर्त्ति	सं०	ङ	×
३१.	२१३	तत्ववर्णन	शुभचंद्र	सं०	अ	×
३२.	५४४६	त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	सं०	अ	×
३३.	४७०५	दशलक्षणव्रतपूजा	जिनचन्द्रसूरि	सं०	ङ	×
३४.	४७०६	दशलक्षणव्रतपूजा	मल्लिभूषण	सं०	छ	×
३५.	४७०२	दशलक्षणव्रतपूजा	सुमतिसागर	सं०	ङ	×
३६.	४७२१	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	सं०	अ	१७७२
३७.	४७२४	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मनंदि	सं०	अ	×
३८.	४७२५	,, ,, ,,	जगत्कोर्त्ति	सं०	च	×
३९.	७७२	धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्त्ति	सं०	अ	×
४०.	२१५२	नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	सं०	ट	×
४१.	४८१	निजस्मृति	×	सं०	ट	×
४२.	४८१९	नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	सं०	अ	×
४३.	४८२३	पंचकल्याणकपूजा	,,	सं०	क	×
४४.	३९७१	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्ति	सं०	अ	×
४५.	५४२८	प्रशस्ति	दामोदर	सं०	अ	×
४६.	१९१८	पुराणसार	श्रीचंदमुनि	सं०	अ	१०७७
४७.	५४४०	भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	सं०	अ	×
४८.	४०५३	भूपालचतुर्विंशतिटीका	आशाधर	सं०	अ	१३ वीं शताब्दी
४९.	४०५५	भूपालचतुर्विंशतिटीका	विनयचंद्र	सं०	अ	१३ वीं ,,
५०.	५०५७	मांगीतुंगीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूषण	सं०	अ	१७५६
५१.	५३८१	मुनिसुव्रतछंद	प्रभाचंद्र	सं० हि०	अ	×
५२.	९७९	मूलाचारटीका	वसुनंदि	प्रा० सं०	अ	×
५३.	२३२३	यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचंद्र	सं०	अ	×
५४.	२६८३	रत्नत्रयविधि	आशाधर	सं०	अ	×
५५.	२९३५	रूपमञ्जरीनाममाला	रूपचंद	सं०	अ	१६४४
५६.	२१५०	वर्द्धमानकाव्य	मुनिपद्मनंदि	सं०	अ	१३ वीं ,,

क्रमांक	ग्रं. सू. क.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
५७.	३२६५	वाग्भट्टालंकारटीका	वादिराज	सं०	अ	१७२६
५८.	५४४७	वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनंदि	सं०	अ	×
५६.	५२२५	शरदुत्सवदीपिका	सिंहनंदि	सं०	अ	×
६०.	५८२६	शांतिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	सं०	छ	×
६१.	४१०७	शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सं०	अ	×
६२.	५१६६	षणवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	सं०	अ	×
६३.	५४६	षष्ठ्यधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	सं०	च	×
६४.	१८२३	सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	सं०	अ	×
६५.	५४६७	सरस्वतीस्तुति	आशाधर	सं०	अ	१३ वीं "
६६.	४६४६	सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	सं०	ङ	×
६७.	२७३१	सिंहासनद्वात्रिंशिका	क्षेमकरमुनि	सं०	अ	×
६८.	३८१८	कल्याणक	समन्तभद्र	प्रा०	ङ	×
६९.	३६३१	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	अ	×
७०.	१००५	यत्याचार	आ० वसुनंदि	प्रा०	अ	×
७१.	१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	अप०	अ	१५०५
७२.	६५५४	कल्याणकविधि	विनयचंद	अप०	अ	×
७३.	५४४	चूनडी	"	"	अ	×
७४.	२६८८	जिनपूजापुरंदरविधानकथा	अमरकीर्ति	अप०	अ	×
७५.	५४३६	जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अप०	अ	१७ वीं
७६.	२०६७	णेमिणाहचरिउ	लक्ष्मणदेव	अप०	अ	×
७७.	२०६८	णेमिणाहचरिय	दामोदर	अप०	अ	१२८७
७८.	५६०२	त्रिशतजिनचउवीसी	महणसिंह	अप०	अ	×
७९.	५४३६	दशलक्षणकथा	गुणभद्र	अप०	अ	×
८०.	२६८८	दुधारसविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
८१.	४६८६	नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अप०	अ	×
८२.	२६८८	निर्झरपंचमीविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
८३.	२१७६	पासचरिय	तेजपाल	अप०	ट	×
८४.	५४३६	रोहिणीविधान	गुणभद्र	अप०	अ	×
८५.	२६८३	रोहिणीचरित	देवनंदि	अप०	अ	१५ वीं

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
८६.	२४३७	सम्भवजिणणाहचरिउ	तेजपाल	अप०	ब	×
८७.	५४५४	सम्यक्त्वकौमुदी	सहणपाल	अप०	अ	×
८८.	२६८८	सुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकीर्त्ति	अप०	अ	×
८९.	५४३९	सुगन्धदशमीकथा	"	अप०	अ	×
९०.	५३९१	अंजनारास	धर्मभूषण	हि० प०	अ	×
९१.	४३४७	अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	हि० प०	ङ	×
९२.	२५०८	अठारहनातेकीकथा	ऋषिलालचंद	हि० प०	अ	×
९३.	६००३	अनन्तकेछप्पय	धर्मचन्द्र	हि० प०	झ	×
९४.	४३८१	अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	हि० प०	अ	१५ वीं
९५.	४२१५	अर्हनकचौढालियागीत	विमलकीर्त्ति	हि० प०	अ	१६८१
९६.	५७६७	आदित्यवारकथा	रायमल्ल	हि० प०	ङ	×
९७.	५४२५	आदित्यवारकथा	वादिचन्द्र	हि० प०	अ	×
९८.	५३९२	आदीश्वरकासमवसरन	×	हि० प०	अ	१६६७
९९.	५७३०	आदित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हि० प०	घ	१७४१
१००.	५९१५	आदिनाथस्तवन	पल्ह	हि० प०	छ	१६ वीं
१०१.	५४८७	आराधनाप्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	अ	×
१०२.	३८६४	आरतीसंग्रह	ब० जिनदास	हि० प०	अ	१५ वीं शताब्दी
१०३.	३४००	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	हि० प०	अ	×
१०४.	४४२८	ऋषिमंडलपूजा	आ० गुणनंदि	हि० प०	अ	×
१०५.	२५५०	कठियारकानडरीचौपई	×	हि० प०	अ	१७४७
१०६.	६०५२	कवित्त	अगरदास	हि० प०	ट	१८ वीं शताब्दी
१०७.	६०६५	कवित्त	बनारसीदास	हि० प०	ट	१७ वीं शताब्दी
१०८.	५३९७	कर्मचूरव्रतवेलि	मुनिसकलचंद	हि० प०	अ	१७ वीं शताब्दी
१०९.	५६०८	कविवल्लभ	हरिचरणदास	हि० प०	अ	×
११०.	३८६४	कृपणछंद	चन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	अ	१६ वीं शताब्दी
१११.	५४८७	कृष्णरुक्मिणीवेलि	पृथ्वीराज	हि० प०	अ	१६३७
११२.	२५५७	कृष्णरुक्मिणीमंगल	पदमभगत	हि० प०	अ	१८९०
११३.	५९१५	गीत	पल्ह	हि० प०	छ	१६ वीं शताब्दी
११४.	३८६४	गुरुछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वीं शताब्दी

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
११५.	५६३२	चतुर्दशीकथा	डालूराम	हि० प०	छ	१७६५
११६.	५४१७	चतुर्विंशतिछप्पय	गुणकीर्त्ति	हि० प०	झ	१७७७
११७.	४५२६	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	नेमिचंदपाटनी	हि० प०	क	१८८०
११८.	४५३५	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	सुगनचंद	हि० प०	च	१९२६
११९.	२५६२	चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह	हि० प०	ज	१८४१
१२०.	२५६४	चन्दनमलयागिरीकथा	चतर	हि० प०	झ	१७०१
१२१.	२५६३	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	हि० प०	झ	×
१२२.	१८७६	चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	हि० प०	क	१९१३
१२३.	१५७	चर्चासागर	चम्पालाल	हि० ग०	झ	×
१२४.	१५४	चर्चासार	पं० शिवजीलाल	हि० ग०	क	×
१२५	२०५८	चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्त्ति	हि० प०	झ	१६९२
१२६.	५६१५	चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१२७.	५६१५	चेतनगीत	मुनिसिंहनंदि	हि० प०	छ	१७ वीं शताब्दी
१२८.	५४०१	जिनचौबीसीभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	झ	×
१२९.	५५०२	जिनदत्तचौपई	रल्हकवि	हि० प०	झ	१३५४
१३०.	५४१४	ज्योतिषसार	कृपाराम	हि० प०	झ	१७९२
१३१.	६०६१	ज्ञानबावनी	मतिशेखर	हि० प०	ट	१५७४
१३२.	५८२६	टंडाणागीत	बूचराज	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१३३.	३६६	तत्वार्थसूत्रटीका	कनककीर्त्ति	हि० ग०	ङ	१८ वी „
१३४.	३६८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडेजयवन्त	हि० ग०	छ	१८ वी „
१३५.	३७४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि० ग०	झ	१७ वी „
१३६.	३७८	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	शिखरचंद	हि० प०	क	१९ वी „
१३७.	४६२७	तीनचौबीसीपूजा	नेमीचंदपाटणी	हि० प०	क	१८६४
१३८.	६००६	तीसचौबीसीचौपई	स्याम	हि० प०	ञ	१७४९
१३९.	५८८१	तेईसबोलविवरण	×	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१४०.	१७३६	दर्शनसारभाषा	नथमल	हि० प०	क	१९२०
१४१.	१७४०	दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	हि० ग०	क	१९२३
१४२.	४२४५	देवकीकीढाल	लूणकरणकासलीवाल	हि० प०	झ	×
१४३.	४६८	द्रव्यसंग्रहभाषा	बाबा दुलीचंद	हि० ग०	क	१९६६

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१४४.	५८८१	द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	हि० ग०	छ	१७३१
१४५.	५४०२	नगरों की वसापतका विवरण	×	हि० ग०	म	×
१४६.	२६०७	नागमंता	×	हि० प०	म	१८६३
१४७.	४२४६	नागश्रीसज्झाय	विनयचंद	हि० प०	म	×
१४८.	८११	निजामणि	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वी शताब्दी
१४९.	५४४६	नेमिजिनंदव्याहलो	खेतसी	हि० प०	म	१७ वी ,,
१५०.	२१५८	नेमीजीकाचरित्र	आणन्द	हि० प०	म	१८०४
१५१.	५३९२	नेमिजीकोमंगल	विश्वभूषण	हि० प०	म	१६९८
१५२.	३८६४	नेमिनाथछंद	शुभचंद	हि० प०	म	१६ वी ,,
१५३.	४२५४	नेमिराजमतिगीत	हीरानंद	हि० प०	म	×
१५४.	२६१४	नेमिराजुलव्याहलो	गोपीकृष्ण	हि० प०	म	१८६३
१५५.	५४२९	नेमिराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	हि० प०	म	१७ वी ,,
१५६.	५९१५	नेमीश्वरकाचौमासा	मुनिसिंहनंदि	हि० प०	छ	१७ वी ,,
१५७.	५८२९	नेमिश्वरकाहिंडोलना	मुनिरत्नकीर्त्ति	हि० प०	छ	×
१५८.	४८२९	नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्त्ति	हि० प०	छ	×
१५९.	३९५०	पंचकल्याणकपाठ	हरचंद	हि० प०	छ	१८२३
१६०.	२१७३	पांडवचरित्र	लाभवर्द्धन	हि० प०	ट	१७६८
१६१.	४२५७	पद	ऋषिशिवलाल	हि० प०	म	×
१६२.	१४३६	परमात्मप्रकाशटीका	खानचंद	हि०	क	१८३६
१६३.	५८३०	प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	हि० प०	छ	×
१६४.	५३९४	पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	हि०	म	१७ वी ,,
१६५.	४२९०	पार्श्वनाथचौपई	पं० लाखो	हि० प०	ट	१७३४
१६६.	३८६४	पार्श्वछन्द	ब्र० लेखराज	हि० प०	म	१६ वी ,,
१६७	३२७७	पिंगलछंदशास्त्र	माखनकवि	हि० प०	म	१८६३
१६८.	२६२३	पुण्यास्रवकथाकोश	टेकचंद	हि० प०	क	१८२८
१६९	५२५	बंधउदयसत्ताचौपई	श्रीलाल	हि० प०	ट	१८८१
१७०.	५८५६	बिहारीसतसईटीका	कृष्णराय	हि० प०	छ	×
१७१.	५६०८	बिहारीसतसईटीका	हरचरणदास	हि० प०	म	१८३४
१७२.	५४९७	भुवनकीर्त्तिगीत	बूचराज	हि० प०	म	१६ वीं ,,

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१७३.	२२५४	मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रंगविनयगणि	हि० प०	ग्रं	१७१४
१७४.	३४८६	मनमोदनपंचशती	छत्रपति	हि० प०	क	१९१६
१७५.	६०४६	मनोहरमञ्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ट	×
१७६.	३८६४	महावीरछंद	शुभचंद	हि० प०	ग्रं	१६ वीं ,,
१७७.	२६३८	मानतुंगमानवतिचौपई	मोहनविजय	हि० प०	ग्रं	×
१७८.	३१८५	मानविनोद	मानसिंह	हि० प०	ग्रं	×
१७९.	३४९१	मित्रविलास	घासी	हि० प०	क	१७८६
१८०.	१९४८	मुनिसुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	ग्रं	१८८५
१८१.	२३१३	यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	—	१५८१
१८२.	२३१५	यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	क	१९३२
१८३.	५११३	रत्नावलिव्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	हि० प०	ग्रं	१६ वीं
१८४.	५५०१	रविव्रतकथा	जयकीर्ति	हि० प०	ग्रं	१७ वीं ,,
१८५.	६०३८	रागमाला	श्याममिश्र	हि० प०	ट	१६०२
१८६.	३४६४	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	हि० प०	क	×
१८७.	५३९८	राजसभारंजन	गंगादास	हि० प०	ग्र	×
१८८.	६०५५	रुक्मणिकृष्णजीकोरास	तिपरदास	हि० प०	ट	×
१८९.	२६८६	रैदव्रतकथा	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वीं ,,
१९०	६०६७	रोहिणीविधिकथा	बंसीदास	हि० प०	ट	१६९५
१९१.	५९६६	लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीरामसोगाणी	हि० प०	ज	×
१९२.	६०८६	लब्धिविधानचौपई	भीषमकवि	हि० प०	ट	१६१७
१९३.	५९५१	लहुरीनेमीश्वरकी	विश्वभूषण	हि० प०	ट	×
१९४.	६१०५	बसंतपूजा	अजयराज	हि० प०	ट	१८ वीं ,,
१९५.	५५१९	वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	हि० प०	ग्र	×
१९६.	२३५६	विक्रमचरित्र	अभयसोम	हि० प०	ग्र	१७२४
१९७.	३८६४	विजयकीर्त्तिछंद	शुभचंद	हि० प०	ग्र	१६ वी. ,,
१९८.	३२१३	विषहरनविधि	संतोषकवि	हि० प०	ख	१७४१
१९९.	२६७५	वैदरभीविवाह	पेमराज	हि० प०	ग्र	×
२००.	३७०४	षटलेश्यावेलि	साहलोहट	हि० प०	क	१७३०
२०१.	५४०२	शहरमारोठ की पत्री		हि० प०	ग्र	×

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२०२	५४१७	शीलरास	गुणकीर्ति	हि० प०	अ	१७११
२०३	५६४१	शीलरास	ब्र० रायमलादेवसूरि	हि० प०	क	१६ वी
२०४	३६६६	शीलरास	विजयदेवसूरि	हि० प०	अ	१६ वीं
२०५	२७०१	श्रेणिकचौपई	डू गावेद	हि० प०	अ	१८२६
२०६	२४१२	श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्त्ति	हि० प०	अ	१८२०
२०७	५३६२	समोसरण	ब्र० गुलाल	हि० प०	अ	१६६८
२०८	५५२८	स्याम्रबत्तीसी	नंददास	हि० प०	अ	×
२०९	२४३८	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	हि० प०	अ	१७२४
२१०	१२१६	सामायिकपाठभाषा	तिलोकचंद	हि० प०	च	×
२११	३७०९	हम्मीररासो	महेशकवि	हि० प०	ङ	×
२१२	१११४	हरिवंशपुराण	×	हि० ग०	अ	१६७?
२१३	२७४२	होलिका चौपई	डूंगरकवि	हि० प०	अ	१६२९



भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है।
राजा यशोधर दुःस्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की बलि न
चढा कर स्वयं की बलि देने को तैयार होता है।
रानी हाहाकार करती है।

[दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये]

चित्र नं० २



जिन चैत्यालय एवं राजमहल का एक दृश्य
(ग्रंथ सूची क्र. सं. २२६५ वेष्टन संख्या ११५)

॥ श्री महावीराय नमः ॥

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अर्थदीपिका—जिनभद्रगणि । पत्र सं० ५७ से ६८ तक । आकार १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-जैन सिद्धान्त । रचना काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन संख्या २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२. अर्थप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ३०३ । आ० ११½×८ इंच । भा० राजस्थानी (ढूंढारी गद्य) विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १९१४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्वार्थ सूत्र की वृहद् विशद व्याख्या है ।

३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल × । वे० सं० ४८ । प्राप्ति स्थान ङ भण्डार ।

४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२७ । ले० काल सं० १९३५ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १८९६ । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर एवं आकर्षक है ।

५. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन………। पत्र सं० ४९ । आ० ९×६ इंच । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय-आठ कर्मों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष—ज्ञानावरणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुणस्थानों का भी अच्छा विवेचन किया गया है । अन्त में व्रतों एवं प्रतिमाओं का भी वर्णन किया हुआ है ।

६. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन……………। पत्र सं० ७ । आ० ८×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय-आठ कर्मों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

७. आर्हत्प्रवचन………। पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८२ । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

विशेष—सूत्र मात्र है। सूत्र संख्या ८५ है। पांच अध्याय हैं।

८. अर्हत्प्रवचनव्याख्या......... ....। पत्र सं० ११। आ० १०×४½ इंच। भा० संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६१। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम चतुर्दश सूत्र भी है।

९. आचारांगसूत्र............×। पत्र सं० ५३। आ० १०½×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय–आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १८२०। अपूर्ण। वे० सं० ६०६। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

विशेष—छठा पत्र नहीं है। हिन्दी में टब्बा टीका दी हुई है।

१०. आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक.......... । पत्र सं० २। आ० १०×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय–आगम। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २८। प्राप्ति स्थान ख भण्डार।

११. आश्रवत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ३१। आ० ११¾ × ५½ इंच। भा० प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८६२ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८२। प्राप्ति स्थान ज भण्डार।

१२. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० १८८३ प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० २६५। प्राप्ति स्थान ञ भण्डार।

१४. आश्रवत्रिभंगी.......... । पत्र सं० ६। आ० १२×५¾ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २०१५। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

१५. आश्रववर्णन......... ....। पत्र सं० १४। आ० ११½×६½ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

विशेष–प्रति जीर्ण शीर्ण है।

१६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १६६। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

१७. इक्कीसठाणाचर्चा—सिद्धसेन सूरि। पत्र सं० ४। आ० ११×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६५। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम एकविंशतिस्थान-प्रकरण भी है।

१८. उत्तराध्ययन.......... ....। पत्र सं० २५। आ० ९¾×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय–आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८०। प्राप्तिस्थान अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

१९. उत्तराध्ययनभाषाटीका .... । प० सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भा० हिन्दी । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२४४ । प्राप्ति स्थान ञ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयाल दया करू, आशा पूरण काज ।
चउवीसे जिणवर नमुं, चउवीसे गणधार ।। १ ।।
धरम ध्यान दाता सुगुरु, अहनिस ध्यान धरेस ।
वाणी वर देवी सरस, विघन हार विघनेस ।। २ ।।
उत्तराध्ययन चउवमइ, भिन्न छए अधिकार ।
अलप अकल गुण छइ घणा, कहूं बाल मति अनुसार ।। ३ ।।
चतुर चाह कर सांभलो, ऐ अधिकार अनूप ।
निद्रा विकथा परिहरी, सुणा ज्यो आलस मूढ ।। ४ ।।

आगे साकेत नगरी का वर्णन है । कई ढाले दी हुई हैं ।

२०. उदयसत्ताबंधप्रकृति वर्णन .... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१. कर्मग्रन्थसत्तरी .... । पत्र सं० २८ । आ० ६×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७८६ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १२२ । प्राप्तिस्थान ञ भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

२२. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२ । आ० १०½×४½ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १६८१ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २६७ । प्राप्तिस्थान ञ भण्डार ।

विशेष—पांडे डालू के पठनार्थ नागपुर में प्रतिलिपि की गई थी । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६८१ वरषे मिति मागसिर वदि १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णीकृता पांडे डालू पठनार्थं लिखितं सुरजन मुनि सा० धर्मदासेन प्रदत्ता ।

२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । प्राप्ति स्थान ञ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० १४० । प्राप्ति स्थान ञ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७६८ । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०२ फाल्गुन बुदी ७ । वे० सं० १०५ । क भण्डार ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि विद्यानन्दि के शिष्य सर्वैराम मलूकचन्द ने रूडमल के लिये की थी । प्रति के दोनों ओर तथा ऊपर नीचे संस्कृत में संक्षिप्त टीका है ।

२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६७१ आषाढ सुदी २ । वे० सं० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । मालपुरा मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई तथा सं० १६८७ में मुनि नन्दकीर्ति ने प्रति का संशोधन किया ।

२८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८२३ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० १०४ ङ । भण्डार ।

२९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल स० १८१६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ६१ । च भण्डार ।

३०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ११ । ले० काल x । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे संकेत दिये हुये है ।

३१. प्रति सं० १० । पत्र सं० ११ । ले० काल x । वे० सं० २८९ । छ भण्डार ।

विशेष—१५९ गाथायें हैं ।

३२. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० १६२ । ज भण्डार ।

विशेष—सम्बावती में पं० रूडा महात्मा ने पं० जीवाराम के शिष्य मोहनलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३३. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १७ । ले० काल x । वे० सं० १२३ । ब्र भण्डार ।

३४. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० का० सं० १६४४ कार्तिक बुदी १० । वे० सं० १२६ । ब्र भण्डार ।

३५. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २१५ । ब्र भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में राव सुर्जसेन के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । ख भण्डार ।

३७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ३ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८० । ख भण्डार ।

३८. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । ख भण्डार ।

३९. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३० । ख भण्डार ।

४०. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ५ से १७ । ले० काल सं० १७६० । अपूर्ण । वे० सं० २००० । ट भंडार ।

विशेष—वृन्दावती नगरी में पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्रीमान् बुधसिंह के विजय राज्य में आचार्य उदयभूषण के प्रशिष्य पं० तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण ने संशोधन करके प्रतिलिपि की। प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४१. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ से ४३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। गुजराती टीका सहित है।

४२. कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीर्त्ति । पत्र सं० २ से २२ । आ० १२×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १२५२ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषण के सहाय्य से लिखी थी।

४३. कर्मप्रकृति............... ....। पत्र सं० १० । आ० ८¾×४½ इंच । भा० हिन्दी । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१५ । ख भण्डार ।

४४. कर्मप्रकृतिविधान—बनारसीदास । पत्र सं० १६ । आ० ८½×४½ इंच । भा० हिन्दी पद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० ३७ । ङ भण्डार ।

४५. कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७९८ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलकर्ता आ० नेमिचन्द्र हैं।

४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे सं० १२ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४७. कर्मस्तवसूत्र—देवेन्द्रसूरि । पत्र सं० १२ । आ० ११×६ इंच । भा० प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १०५ । ङ भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

४८. कल्पसिद्धान्तसग्रह…………………। पत्र सं० ४२। आ० १०×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय–आगम। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६६। अ भण्डार।

विशेष—श्री जिनसागर सूरि की आज्ञा से प्रतिलिपि हुई थी। गुजराती भाषा मे टीका सहित है।

अन्तिम भाग—मूलः–तेणं कालेणं तेणं समयणं…………सित्ताणं पडि बुद्धा।

अर्थ—तिणइ कालइ गर्भापहार कालइ तिणइ समयइ गर्भापहार थकी पहिली श्रमण भगवंत श्री महावीर त्रिहु ज्ञानेकरी सहित इ जिहुंता ने भणी इमजि जाणइ नेहरिणे गाम परियवतायइ। इहा थकी लेइ त्रिसलानी कूंखइ संक्रमाविस्यइं। अनइ जिणि वलाखइ संक्रमावइ ने वेला न जाणइ। अपहरणकाल अंतर्मुहूर्त्त मंजावियइ अनइ उपयोग काल तिणि अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण। पर छद्मस्थनाउपयोग भिकउ। संहरण काल सूक्ष्म जाणिवउ वली श्री आचारांग मांहि कहिउलइ। संहरण काल तिणि जाणइ। परं ए पाठ सगलइ नहो। ते भणी आवीर्णन ही। तिसलानी कूंखि आया पछी जाणइ। जिणी रात्रिइ श्रमण भगवंत श्री महावीर देवानंदा ब्राह्मणी सुखशय्या सूती। काई सूती, काई जागती। यहं वाउदार स्फाटं जिस्या पूर्वइ वर्णव्या तिस्या चउदह महास्वप्न त्रिशला क्षत्रियाणी पइ माहराहभा खासी लीधा। इमउ स्वप्न देखि जागी। जे भणी कल्याण कारिया निरूपद्रव। धन धान्य ना करणहार। मंगलीक। स श्री कजियइ वरि वाजइ वीपइ घर पहुंता। हिवइ त्रिशला क्षत्रियाणी जिणइ पुकारइ सुपिना देखिस्यइ ने प्रसातइ वाचेस्या। य श्री कल्प सिद्धान्तनी वाचना तणइ अधिकारइ। एवं भाग्यवंत दान घइ। शील पालइ। तप तपइ। भावना भावई एवंविध धर्म कर्त्तव्य करइं ते श्री देवगुरु तणउ प्रसाद देवनइ अधिकारइ विधि चैत्यालय पूज्यमान श्री पार्श्वनाथ तणइ प्रसादि गुरुनी परंपरायइ सुविहित चक्रचूडामणि श्री उद्योतनसूरि श्री वर्द्धमान सूरि श्री। श्री जिनेश्वर सूरि। श्री अभयदेव सूरि युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि श्रीमज्जिन कुशलसूरि श्री इकब्बर पातिसाहि प्रतिबोधकं युगप्रधान श्री मज्जिनसूरि तत्पट्टे प्रभाकर श्री मज्जिनसिंह सूरि तत्पट्टे प्रभाकर भट्टारक श्री जिनसागर सूरिनी आज्ञा प्रवर्त्तइ। श्रीरस्तु।

संस्कृत में श्लोक तथा प्राकृत मे कई जगह गाथाएँ दी है।

४८. कल्पसूत्र (भिक्खु अज्झयणं)………। पत्र सं० ४१। आ० १०×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय–आगम। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ६०६। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४६. कल्पसूत्र—भद्रबाहु। पत्र सं० ११६। आ० १०×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय–आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १८६४। अपूर्ण। वे० सं० ३६। छ भण्डार।

विशेष—२ रा तथा ३ रा पत्र नही है। गाथाओं के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

५०. प्रति सं० २। पत्र सं० ५ से ४०२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११८७। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत तथा गुजराती छाया सहित है। कहीं २ टब्बा टीका भी दी हुई है। बीच के कई पत्र नही हैं।

५१. कल्पसूत्र—भद्रबाहु। पत्र सं० ६। आ० ११×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० का ×। ले० का सं० १९६० आसोज सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८४६। ट भण्डार।

५२. प्रति सं० २। पत्र सं० ८ से २७४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६४। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। गाथाओं के ऊपर अर्थ दिया हुआ है।

५३. कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरोपाध्याय। पत्र सं० २५। आ० ६×४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १७२५ कार्तिक। पूर्ण। वे० सं० २८। ख भण्डार।

विशेष—लूणकर्णसर ग्राम में ग्रंथ की रचना हुई थी। टीका का नाम कल्पलता है। सारक ग्राम में पं० भाग्य विशाल ने प्रतिलिपि की थी।

५४. कल्पसूत्रवृत्ति………। पत्र सं० १२६। आ० ११×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८१८। ट भण्डार।

५५. कल्पसूत्र ………। पत्र सं० १० से ४८। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००२। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण भी दिया हुआ है।

५६. क्षपणासारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव। पत्र सं० ६७। आ० १२×७½ इंच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल शक सं० ११२५ वि० सं० १२६०। ले० काल सं० १८१६ वैशाख बुदी ११। पूर्ण। वे० सं. ११७। क भण्डार।

विशेष—ग्रंथ के मूलकर्त्ता नेमिचन्द्राचार्य है।

५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १४४। ले० काल सं० १९५५। वे० सं० १२०। क भण्डार।

५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०२। ले० काल सं० १८४७ आषाढ बुदी २। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी।

५९. क्षपणासार—टीका………। पत्र सं० ६१। आ० १२½×५½ इंच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११८। क भण्डार।

६०. क्षपणासारभाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० २७३। आ० १३×८ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५। ले० काल १९४६। पूर्ण। वे० सं० ११६। क भण्डार।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र हैं। जैन सिद्धान्त का यह अपूर्व ग्रन्थ है। महा पं० टोडरमलजी की गोमट्टसार (जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड) लब्धिसार और क्षपणासार की टीका का नाम सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका है। इन तीनों की भाषा टीका एक ग्रन्थ में भी मिलता है। प्रति उत्तम है।

६१. गुणस्थानचर्चा ………………। पत्र सं० ४५। आ० १२×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०३। अ भण्डार।

६२. प्रति सं० २। ले० काल ×। वे० सं० ५०४। अ भण्डार।

६३. गुणस्थानक्रमारोहसूत्र—रत्नशेखर। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इंच। भा० संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

६४. प्रति सं० २। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १७३५ आसोज बुदी १४। वे० सं० ३७६। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित।

६५. गुणस्थानचर्चा………………। पत्र सं० ३। आ० ६×४½ इंच। भा० हिन्दी। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १३६०। अपूर्ण। अ भण्डार।

६६. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से २४। वे० सं० १३७। ड भण्डार।

६७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २२ से ५१। अपूर्ण। ले० काल ×। वे० सं० १३८ ड भण्डार।

६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० का० सं० १८६३। वे० सं० ५३३। च भण्डार।

६९. प्रति सं० ५। पत्र सं० १५। ले० का ×। वे० सं० २३६ छ भण्डार।

७०. प्रति सं० ६। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० ३४६। झ भण्डार।

७१. गुणस्थानचर्चा—चन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ३३। आ० ७×७ इंच। भा० हिन्दी। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ११६।

७२. गुणस्थानचर्चा एवं चौबीस ठाणा चर्चा…………। पत्र सं० ८। आ० १२×५½ इंच। भा० संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० का० ×। ले० का० ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३१। ट भण्डार।

७३. गुणस्थानप्रकरण…………। पत्र सं० ६। आ० ११×४ इंच। भा० संस्कृत। विषय–सिद्धान्त र० का ×। ले० का० ×। पूर्ण। वे सं १३८। 'ड' भण्डार।

७४. गुणस्थानभेद…………। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भा० संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६३। अ भण्डार।

७५. गुणस्थानमार्गणा…………। पत्र सं० ४। आ० ८×६½ इंच। भा० हिन्दी। विषय–सिद्धान्त र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३७। च भण्डार।

७६. गुणस्थानमार्गणारचना…………। पत्र सं० १८। आ० ११×४½ इंच। भा० संस्कृत। विषय–सिद्धान्त र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७७। च भण्डार।

७७. गुणस्थानवर्णन……………। पत्र सं० २० आ० १०×५ इंच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७८। घ भण्डार।

विशेष—१४ गुणस्थानों का वर्णन है।

७८. गुणस्थानवर्णन……………। पत्र सं० १५ से ३१। आ० १२×५½ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३६। क भण्डार।

७९. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १७६३। वे० सं० ४६६। अ भण्डार।

८०. गोम्मटसार (जीवकाण्ड)—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सं० ११। आ० १३×५ इंच। भा०—प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १५५७ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ११८। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १५५७ वर्षे आषाढ सुक्ल नवम्यां श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्री मंडलाचार्य रत्नकीर्त्ति देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचंद्र नामा तदाम्नाये खंडेलवालवंसे सा० देल्हा भार्या दल्ही तत्पुत्र सा० भाजा तद्भार्या भरमा तत्पुत्रा सा० भावलो द्वितीय अमरसी तृतीय जाल्हा एते शास्त्रमिदं लेखयित्वा तस्मै ज्ञानपात्राय मुनि श्री हेमचंद्राय भक्त्या प्रदत्तं।

८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ११९४। अ भण्डार।

८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४६। ले० काल सं० १७२६। वे० सं० १११। अ भण्डार।

८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५ से ४८। ले० काल सं० १६२४। चैत्र सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० १२८। क भण्डार।

विशेष—हरिश्चन्द्र के पुत्र सुमपथी ने प्रतिलिपि की थी।

८४. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३६। क भण्डार।

८५. प्रति सं० ६। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १३६। ख भण्डार।

८६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३७५। ले० काल सं० १७३८ सावण सुदी ५। वे० सं० १४। घ भण्डार।

विशेष—प्रति टीका सहित है। श्री वीरदास ने अकबराबाद में प्रतिलिपि की थी।

८७. प्रति सं० ८। पत्र सं० ७४। ले० काल सं० १८६६ आषाढ सुदी ७। वे० सं० १३८। क भण्डार।

८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ७६ । च भण्डार ।

८९. प्रति सं० १० । पत्र सं० १७२–२४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । च भण्डार ।

९०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४ । च भण्डार ।

९१. गोम्मटसारटीका—सकलभूषण । पत्र सं० १४३४ । आ० १२३/४×७ इंच । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १५७६ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वे० सं० १४० । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने पन्नालाल चौधरी से प्रतिलिपि कराई । प्रति ७ वेष्टनों में बंधी है ।

९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । क भण्डार ।

९३. गोम्मटसारटीका—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३३ । आ० १०×५½ इंच । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

विशेष—पत्र १३१ पर आचार्य धर्मचन्द्र कृत टीका की प्रशस्ति का भाग है । नागपुर नगर (नागौर) में महमदखां के शासनकाल में गोलहा यादि खांडवाड़ गोत्र वाले श्रावकों ने भट्टारक धर्मचन्द्र को यह प्रति लिखकर प्रदान की थी ।

९४. गोम्मटसारवृत्ति—केशववर्णी । पत्र सं० ४३० । आ० १०½×४½ इंच । भा० संस्कृत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८१ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल गाथा सहित जीवकाण्ड एवं कर्मकाण्ड की टीका है । प्रति अभयचन्द द्वारा संशोधित है । 'पं० गिरधर की पोथी है' ऐसा लिखा है ।

९५. गोम्मटसारवृत्ति······ । पत्र सं० ३ से ६१२ । आ० १०३/४×४½ इंच । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२३८ । अ भण्डार ।

९६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१४ । ले० काल × । वे० सं० ८३ । छ भण्डार ।

९७. गोम्मटसार (जीवकाण्ड) भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २२१ से ३६४ । आ० १६½×६ इंच । भा० हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४०३ । अ भण्डार ।

विशेष—पंडित टोडरमलजी के स्वयं के हाथ का लिखा हुआ ग्रंथ है । जगह २ कटा हुआ है । टीका का नाम सम्यक्ज्ञानचन्द्रिका है । प्रदर्शन–योग्य ।

९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५ । ख भण्डार ।

९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५६ । ले० का० सं० १६४८ भादवा सुदी १५ । वे० सं० १४१ । क भण्डार ।

१००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६५ । अ भण्डार ।

१०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७६ । ले० काल सं० १८८५ माघ सुदी १५ । वे० सं० १८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह तथा मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी

१०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—२७४ से आगे ५४ पत्रों पर गुणस्थान आदि पर यंत्र रचना है ।

१०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० १५० । क भण्डार ।

विशेष—केवल यंत्र रचना ही है ।

१०४. गोम्मटसार-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २१३ । आ० १५×१० इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १९४२ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५१ । क भण्डार ।

विशेष—लब्धिसार तथा क्षपणासार की टीका है । गणेशलाल मुंशरलाल पांड्या ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी ।

१०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११० । ले० काल सं० १८५७ सावण सुदी ५ । वे० सं० ५३८ । च भण्डार ।

१०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७१ से ७६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । ज भण्डार ।

१०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८१८ । ले० काल सं० १८८७ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० २२१८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़े आकार एवं सुन्दर लिखाई की है तथा दर्शनीय है । कुछ पत्रों पर बीच में कलापूर्ण गोलाकार दिये हैं । बीच के कुछ पत्र नहीं है ।

१०८. गोम्मटसारपीठिका-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६२ । आ० ११×७ इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१२ । ड भण्डार ।

१०६. गोम्मटसारटीका (जीवकाण्ड)·········। पत्र सं० २६५। आ० ११×८½ इंच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६। ञ भण्डार।

विशेष—टीका का नाम तत्वप्रदीपिका है।

११०. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३१। ञ भण्डार।

१११. गोम्मटसारसंदृष्टि—पं० टोडरमल। पत्र सं० ८२। आ० १५×७ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०। ग भण्डार।

११२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८ से २०४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३१। च भंडार।

११३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ११६। आ० ११×५½ इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८८५ चैत सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८१। च भण्डार।

११४. प्रति सं० २। पत्र सं० १८३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८२। च भण्डार।

११५. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३। च भण्डार।

११६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८४४ चैत्र बुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० १८२०। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य लाल सर्वसुख के अध्ययनार्थ अटोरिए नगर में प्रतिलिपि की गई।

११७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका— कनकनंदि। पत्र सं० १०। आ० ११½×५½ इंच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। (तृतीय अधिकार तक)। वे० सं० १३५। क भण्डार।

११८. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—भट्टारक ज्ञानभूषण। पत्र सं० ५४। आ० ११¾×७½ इंच। भा० संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० ११५७ माघ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १३४। क भण्डार।

विशेष—सुमतिकीर्ति की सहाय्य से टीका लिखी गयी थी।

११९. प्रति सं० २। पत्र सं० ८३। ले० काल सं० १६७३ फागुण सुदी ५। वे० सं० १३६। क भण्डार।

१२०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४७। क भण्डार।

१२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० २५ । ञ भण्डार ।

१२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७५········ । वे० सं० ४९० । ञ भण्डार ।

१२३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६९४ । आ० १३×८ इंच । भा० हिन्दी गद्य (ढूंढारी) । विषय-सिद्धान्त । र० काल १९ वी शताब्दी । ले० काल सं० १९४९ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १३० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल × । वे० सं० १४८ । ङ भण्डार ।

विशेष—संदृष्टि सहित है ।

१२५. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० २०१७। ले० काल सं० १७८८ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० सं. १०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रश्न साह आनन्दरामजी खण्डेलवाल ने पूछया तिस ऊपर हेमराज ने गोम्मटसार को देख के क्षयोपशम माफिक पत्री में जबाव लिखने रूप चर्चा की वासना लिखी है ।

१२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । । ले० काल सं० १७१७ आसोज बुदी ११ । वे. सं. १२६ ।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर में कल्याण पहाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति जीर्ण है । हेमराज १८ वीं शताब्दी के प्रथमपाद के हिन्दी गद्य के अच्छे विद्वान हुये हैं । इन्होंने १० से अधिक प्राकृत व संस्कृत रचनाओं का हिन्दी गद्य में रूपांतर किया है ।

१२७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका······· । पत्र सं० १६ । आ० ११½×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० × । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

१२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार हैः—

इति प्रायः श्रीमुमट्टारमुत्तापूटीकाच्च निःश्रयकर्मेणएकीकृत्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्रसैद्धान्ती विरचितकर्मप्रकृतिग्रंथस्य टीका समाप्ताः ।

१३०. गौतमकुलक—गौतम स्वामी। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति गुजराती टीका सहित है २० पद्य हैं।

१३१. गौतमकुलक............ । पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० सं० १२४२। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

१३२. चतुर्दशसूत्र............ । पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६१। ख भण्डार।

१३३. चतुर्दशसूत्र—विनयचन्द्र मुनि। पत्र सं० २६। आ० १०½×४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १६८२ पौष बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० १८२। ङ भण्डार।

१३४. चतुर्दशांगबाह्यविवरण.........। पत्र सं० ३। आ० ११×६ इंच। भा० संस्कृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५१४। ख भण्डार।

विशेष—प्रत्येक अंग का पद प्रमाण दिया हुआ है।

१३५. चर्चाशतक—द्यानतराय। पत्र सं० १०३। आ० ११½×८ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सिद्धान्त। र० काल १८ वी शताब्दी। ले० काल सं० १९२९ आषाढ बुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १४६। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका भी दी है।

१३६. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी १२। वे० सं० १५०। क भण्डार।

१३७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ४६। अपूर्ण। ख भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित।

१३८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १९३१ मंगसिर सुदी २। वे० सं० १७१। ङ भण्डार।

१३९. प्रति सं० ५। पत्र सं० १८। ले० काल-×। वे० सं० १७२। ङ भण्डार।

१४०. प्रति सं० ६। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १९३४ कार्तिक सुदी ८। वे० सं० १७३। ङ भण्डार।

विशेष—नीले कागजों पर लिखी हुई है। हिन्दी [illegible] भी दी हुई है।

१४१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १९६८ । वे० सं० २८१ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनायें और हैं।

१. अक्षर बावनी – द्यानतराय – हिन्दी
२. गुरु विनती – भूधरदास – „
३. बारह भावना – नवल – „
४. समाधि मरण – „

१४२. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

विशेष—गुटकाकार है।

१४३. चर्चावर्णन—। पत्र सं० ८१ से ११४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा हिन्दी। विषय–सिद्धान्त। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७० । छ भण्डार ।

१४४. चर्चासंग्रह........। पत्र सं० ३९ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

१४५. चर्चासंग्रह........। पत्र सं० ३ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत–हिन्दी । विषय सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५१ । अ भण्डार ।

१४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ८९ । अ भण्डार ।

विशेष—विभिन्न आचार्यों की संकलित चर्चाओं का वर्णन है।

१४७. चर्चासमाधान—भूधरदास । पत्र सं० १३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धांत । र० काल सं० १८०६ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८६७ । पूर्ण । वे० सं० ३८६ । अ भण्डार ।

१४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १९०८ आषाढ सुदी ६ । वे० सं० ४४३ । अ भण्डार ।

१४९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० २६ । ग भण्डार ।

१५०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९९ । ले० काल सं० १९४१ वैशाख सुदी ५ । वे० सं० ५० । ग भंडार ।

१५१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १९६४ चैत सुदी १५ । वे० सं० १७४ । क भंडार ।

१५२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ से १६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३ । छ भण्डार ।

१५३. प्रति सं० ७ | पत्र सं० ५८ | ले० काल सं० १८८३ पौष सुदी १३ । वे० सं० १६७ । छ भण्डार ।

विशेष—जयनगर निवासी महात्मा चंदालाल ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपी की थी ।

१५४. चर्चासार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० १३३ । प्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल–× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । क भण्डार ।

१५५. चर्चासार········ । पत्र सं० १६२ । प्रा० ८×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४० । छ भण्डार ।

१५६. चर्चासागर········ । पत्र सं० ३६ । प्रा० १३×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८६ । अ भण्डार ।

१५७. चर्चासागर—चंपालाल । पत्र सं० ३०४ । प्रा० १३×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १९१० । ले० काल सं० १९३१ । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में १४ पत्र विषय सूची के अलग दे रखे हैं ।

१५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१० । ले० का० सं० १९३८ । वे० सं० १४७ । क भण्डार ।

१५९. चौदहगुणस्थानचर्चा–अखयराज । पत्र सं० ४१ । प्रा० ११×५½ इञ्च । भा० हिन्दी गद्य । (राजस्थानी) विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९२ । अ भण्डार ।

१६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १–४१ । ले० का० × । वे० सं० ८६० । अ भण्डार ।

१६१. चौदहमार्गणा········ । प० सं० १० । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३६ । अ भण्डार ।

१६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० १८५५ । ट भण्डार ।

१६३. चौबीसठाणाचर्चा–नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । प्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल । सं० १८२० बैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५७ । क भण्डार ।

१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५९ । क भण्डार ।

१६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८१७ पौष बुदी १२ । वे० सं० १६० । क भण्डार ।

विशेष–पं० ईश्वरदास के शिष्य रूपचन्द के पठनार्थ मरायणा ग्राम में ग्रन्थ की प्रतिलीपि की ।

१६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १९४६ कार्तिक बुदि ५ । वे० सं० ५१ । ख भंडार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या बाई शीलश्री ने प्रतिलिपि कराई।

१६७. प्रति सं ५। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वे० सं० ५२। ख भण्डार।

विशेष—श्रेष्ठी मानसिंहजी ने ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थ पं० प्रेम से प्रतिलिपि करवायी।

१६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० १ से ४३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत टब्बा टीका सहित है। १४३वी गाथा से ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५६। ले० काल ×। वे० सं० ५४। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थसार टिप्पण' है। आनन्दराम के पठनार्थ टिप्पण लिखा गया।

१७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० २५। ले० का० सं० १६४६ चैत सुदी २। वे० सं० १८६। क भंडार।

१७१. प्रति सं० ९। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

१७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

१७३. प्रति सं० ११। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० १४५। छ भण्डार।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है।

१७४. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २९१। ज भण्डार।

१७५. प्रति सं० १३। पत्र सं० २ से २५। ले० काल सं० १६६५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १८१५। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्तिः—संवत् १६६५ वर्षे कार्त्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये चौबीस ठाणो ग्रन्थ संपूर्ण भवति।

१७६. प्रति सं० १४। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८१४ चैत बुदि ६। वे० सं० १८१६। ट भण्डार।

प्रशस्ति—संवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चंद्रमिते १८४४ चैत्र कृष्ण नवम्यां सोमवासरे हड़ुवती देशे मराह्लयपुरे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति नेदं विद्वद् छात्र सर्व सुखह्लयाध्यापनर्थ लिपिकृतं स्वक्षयेना चन्द्र तारकं स्थीयतामिदं पुस्तकं।

१७७. प्रति सं० १५। पत्र सं० ६६। ले० का० सं० १८४० माघ सुदी ११। वे० सं० १८१७। ट भण्डार।

विशेष—नैणवा नगर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८. प्रति सं० १६। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १८८९। ट भण्डार।

विशेष—५ पत्र तक चर्चायें है इससे आगे शिक्षा की बातें तथा फुटकर श्लोक हैं। चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न आदि का वर्णन है।

१७६. चतुर्विंशति स्थानक—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ४६। आ० ११×५ इञ्च। भा० प्राकृत। विषय—सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६५। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका भी है।

१८०. चतुर्विंशति गुणस्थान पीठिका……… ………। पत्र सं० १८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२५। ट भण्डार।

१८१. चौबीस ठाणा चर्चा………। पत्र सं० २ से २४। आ० १२×५½ इञ्च। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६४। अ भण्डार।

१८२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२ से ५१। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा संस्कृत। ले० काल सं० १८६१ पोष सुदी १०। वे० सं० १६६६। अपूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—पं० रामबक्सेन थाणानगरमध्ये लिखितं।

१८३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६३। ले० काल ×। वे० सं० १६८। अ भण्डार।

१८४. चौबीस ठाणा चर्चा वृत्ति……… …। पत्र सं० १२३। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२८। अ भण्डार।

१८५. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८४१ जेठ सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० ७७७। अ भण्डार।

१८६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। वे० सं० १५५। क भण्डार।

१८७ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८१० कार्तिक बुदि १०। जीर्ण-शीर्ण। वे० सं० १५६। क भण्डार।

विशेष—पं० ईश्वरदास के शिष्य तथा शोभाराम के गुरुभाई रूपचन्द्र के पठनार्थ मिश्र गिरधारी के द्वारा प्रतिलिपि करवायी गई। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१८८. चौबीस ठाणा चर्चा………। पत्र सं० ११। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४३०। अ भण्डार।

विशेष—समाप्ति में ग्रन्थ का नाम 'इकवीस ठाणा' प्रकरण भी लिखा है।

१८९. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८२६। वे० सं० १०४७। अ भण्डार।

१६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१६२. प्रति सं ५ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

१६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

१६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—वेनीराम की पुस्तक से प्रतिलीपि की गई ।

१६६. छियालीसठाणाचर्चा ………… । पत्र सं० १० । आ० ६½×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल–× । ले० काल सं० १८२२ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

१६७. जम्बूद्वीपफल………। पत्र सं० ३२ । आ० १२¾×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

१६८. जीवस्वरूप वर्णन…………। पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इंच । भाषा प्राकृत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पत्रों में तत्व वर्णन भी है । गोम्मटसार में से लिया गया है ।

१६६. जीवाचारविचार…………। पत्र सं० ५ । आ० ६×४½ इंच । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । अ भण्डार ।

२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८१८ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० २०५ । क भण्डार ।

२०१. जीवसमासटिप्पण………… । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । अ भण्डार ।

२०२. जीवसमासभाषा………… । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० १६७१ । ट भण्डार ।

२०३. जीवाजीवविचार………… । पत्र सं० ६२ । आ० १२×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २००४ । ट भण्डार ।

२०४. जैन सदाचार मार्त्तण्ड नामक पत्र का प्रत्युत्तर—बाबा दुलीचन्द। पत्र सं० २५। आ० १२×७½ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-चर्चा समाधान। र० काल सं० १९४६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०८। क भण्डार।

२०५. प्रति स० २। पत्र सं० २९। ले० काल ×। वे० सं० २१७। क भण्डार।

२०६. ठाणांगसूत्र·········। पत्र सं० ४। आ० १०½×४½ इन्च। भाषा संस्कृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल। अपूर्ण। वे० सं० १९२। अ भण्डार।

२०७. तत्त्वकौस्तुभ—पं० पन्नालाल संघी। पत्र सं० ७२७। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० का० ×। ले० काल सं० १९४४। पूर्ण। वे० सं० २३१। क भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ तत्वार्थराजवार्तिक की हिन्दी गद्य टीका है। यह १० अध्यायों में विभक्त है। इस प्रति में ४ अध्याय तक हैं।

२०८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५४६। ले० काल सं० १९४४। वे० सं० २३२। क भण्डार।

विशेष—५वे अध्याय से १०वें अध्याय तक की हिन्दी टीका है। नवा अध्याय अपूर्ण है।

२०९. प्रति सं० ३। पत्र स० ४२८। र० काल सं० १९३४। ले० काल ×। वे० सं० २४०। ङ भंडार
विशेष—राजवार्तिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है।

२१०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४२८ से ७७३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २४१। ङ भण्डार।
विशेष—तीसरा तथा चौथा अध्याय है। तीसरे अध्याय के २० पत्र अलग और है। ४७ अलग पत्रों में सूचीपत्र है।

२११. प्रति सं० ५। पत्र सं० १०७ से ४०७। ले० काल ×। वे० सं० २४२। ङ भण्डार।

विशेष—५, ६, ७, ८, ९, १०वें अध्याय की भाषा टीका है।

२१२. तत्त्वदीपिका—। पत्र सं० ३१। आ० ११½×६½ भाषा हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०१४। अ भण्डार।

२१३. तत्त्ववर्णन— शुभचन्द्र। पत्र स० ४। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धात र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६। ञ भण्डार।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

२१४. तत्त्वसार— देवसेन। पत्र सं० ६। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १७१९ पौष बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० २२५।
विशेष—पं० बिहारीदास ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है। अन्तिम पत्र नहीं है।

२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७. तत्त्वसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ४४ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १९३१ बैशाख बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । क भण्डार ।

विशेष—देवसेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है।

२१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । क भण्डार ।

२१९. तत्त्वार्थदर्पण........। पत्र सं० ३९ । आ० १३½×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय तक ही है।

२२०. तत्त्वार्थबोध— पत्र सं० १८ । आ० १२½×५¾ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । । वे० सं० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्र ९ से भी देवसेन कृत आलापपद्धति दी हुई है।

२२१. तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र सं० १४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धांत । र० काल सं० १८७९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९७ । अ भण्डार ।

२२२. तत्त्वार्थबोध ······ । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६९ । च भण्डार ।

२२३. तत्त्वार्थदर्पण········। पत्र सं० १० । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भौसा का भेंट किया हुआ है।

२२४. तत्त्वार्थबोधिनीटीका—। पत्र सं० ४२ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १९५२ प्रथम बैशाख सुदि ३ । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भौंसा का है। श्लोक सं० २२५ ।

२२५. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १२६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १६७१ आसोज बुदी ५ । वे० सं० ७२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे। ब्र० हरदेव के लिए ग्रंथ बनाया था। संघही कँवर ने जोशी गंगाराम से प्रतिलिपि करवायी थी।

२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६३३ आषाढ बुदी १० । वे० सं० १३७ । च भण्डार ।

२२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

२२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९३९ । ट भण्डार ।

विशेष-अन्तिम पुष्पिका— इति तत्त्वार्थ रत्नप्रभाकरग्रन्थे मुनि श्री धर्मचन्द्र शिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेव विरचिते ब्रह्मजैत साधु हावादेव देव भावना निमित्ते मोक्ष पदार्थ कथनं दशम सूत्र विचार प्रकरण समाप्त ॥

२२९. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंकदेव । पत्र सं० ३६० । आ० १६×७ इञ्च । भाषा- संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० १०७ । अ भण्डार ।

विशेष—इस प्रति की प्रतिलिपि सं० १५७८ वाली प्रति से जयपुर नगर मे की गई थी ।

२३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२२८ । ले० काल सं० १९४१ भादवा सुदी ६ । वे० सं० २३३ । क भण्डार ।

विशेष-यह ग्रन्थ २ वेष्टनो में है । प्रथम वेष्टन मे १ से ६०० तथा दूसरे मे ६०१ से १२२८ तक पत्र है । प्रति उत्तम है । मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

२३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९२ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

विशेष-मूलमात्र ही है ।

२३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५०० । ले० काल सं० १९७४ पौष सुदी १३ । वे० सं० २४४ । ङ भण्डार ।

विशेष-जयपुर में म्होरीलाल भावसा ने प्रतिलिपि की ।

२३३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५६ । ङ भण्डार ।

२३४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७४ से २१० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२७ । च भण्डार ।

२३५. तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा ...... । पत्र सं० ५८२ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४५ । ङ भण्डार ।

२३६. तत्त्वार्थवृत्ति—पं० योगदेव । पत्र सं० ९७ । आ० ११½×७¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचनाकाल × । ले० काल सं० १९५८ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । क भण्डार ।

विशेष—वृत्ति का नाम सुखबोध वृत्ति है । तत्त्वार्थ सूत्र पर यह उत्तम टीका है । पं० योगदेव कुम्भनगर के निवासी थे । यह नगर कनारा जिले मे है ।

२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल × । वे० सं० २५२ । ञ भण्डार ।

२३८. तत्त्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ मे ६१८ श्लोक है जो ९ अध्यायों मे विभक्त है । इनमे ७ तत्त्वो का वर्णन किया गया है ।

२३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० २३६ । क भण्डार ।

२४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २४२ । क भण्डार ।

२४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । ख भण्डार ।

२४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

विशेष–पुस्तक दीवान ज्ञानचन्द की है ।

२४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १३२ । ञ भण्डार ।

२४४. तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ६१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । ञ भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्त्ति ने 'तत्त्वार्थसारदीपक' मे जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन किया है । रचना १२ अध्यायों मे विभक्त है । यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नही है जैसा कि इसके नाम से प्रकट होता है ।

२४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० २४० । क भण्डार ।

२४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८६४ आसोज सुदी २ । वे० सं० २४१ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिलिपि की ।

२४७. तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २८६ । आ० १२¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १९३७ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ ।

विशेष—जिन २ ग्रन्थो की पन्नालाल ने भाषा लिखी है सब की सूची दी हुई है ।

२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८७ । ले० काल × । वे० सं० २४३ । क भण्डार ।

२४९. तत्त्वार्थ सूत्र—उमास्वाति । पत्र सं० २६ । आ० ७×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १४५८ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २१६६ (क) ञ भण्डार ।

विशेष—लाल पत्र है जिन पर श्वेत (रजत) अक्षर है । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है । तत्त्वार्थ सूत्र समाप्ति पर भक्तामर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है ।

प्रशस्ति—सं० १४५८ श्रावण सुदी ६ ·······।

२५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १९९९ । वे० सं० २२०० ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । पत्रों के किनारों पर सुन्दर बेले हैं । प्रति दर्शनीय एवं प्रदर्शनी मे रखने योग्य है । नवीन प्रति है । सं० १९९९ में जौहरीलालजी नंदलालजी घी वालों ने व्रतोद्यापन मे प्रति लिखा कर चढ़ाई ।

२५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २२०२ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय एवं प्रदर्शनी योग्य है ।

२५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । लि० काल × । वे० सं० १८५५ । अ भण्डार ।

२५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । लि० काल सं० १८८८ । वे० सं० २४६ । अ भण्डार ।

२५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । लि० काल सं० १८८६ । वे० सं० ३३० । अ भण्डार ।

२५५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४४ । अ भण्डार ।

२५६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । लि० काल सं० १८३७ । वे० सं० ३६२ । अ भण्डार ।
विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२५७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ११ । लि० काल × । वे० सं० १०५५ । अ भण्डार ।

२५८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । लि० काल × । वे० सं० १०३० । अ भण्डार ।
विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । पं० अमीचंद ने अलवर में प्रतिलिपि की ।

२५९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४ । लि० काल × । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

२६०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २८ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७५ अ भण्डार ।
विशेष—पत्र १७ से २० तक नहीं है ।

२६१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६ से ३३ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १००८ । अ भण्डार ।

२६२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३६ । लि० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४७ । अ भण्डार ।
विशेष—संस्कृत टीका सहित ।

२६३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । लि० काल × । वे० सं० ४८ । अ भण्डार ।

२६४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २५ । लि० काल सं० १८२० चैत्र बुदी ३ । वे० स० ८११ ।
विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

२६५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० २४ । लि० काल × । वे० सं० २००८ । अ भण्डार ।

२६६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ११ से २२ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२३८ । अ भण्डार ।

२६७. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १६ लि० काल सं० १८६८ । वे सं० १२४४ । अ भण्डार ।

२६८. प्रति सं० २० । पत्र सं० २४ । लि० काल × । वे० सं० १२७५ । अ भण्डार ।

२६९. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ८ । लि० काल × । वे० सं० १३३१ । अ भण्डार ।

२७०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ५ । लि० काल × । वे० सं० २१४३ । अ भण्डार ।

२७१. प्रति स० २३ । पत्र सं० १२ । लि० काल × । वे० सं० २१५६ । अ भण्डार ।

२७२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ३८ । लि० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है । फूलचंद बिंदायक्या ने प्रतिलिपि की ।

२७३. प्रति सं० २५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६ ········। वे. सं० २००७ । अ भण्डार ।

२७४ प्रति सं० २६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७५. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदास दौलतराम ने जैसिंहपुरा में इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

२७६. प्रति सं० २८ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६३६ भादवा सुदी ४ । वे० सं० २५८ । क भण्डार ।

२७७. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २५६ । क भण्डार ।

२७८. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६४५ बैशाख सुदी ७ । वे० सं० २५० । क भण्डार ।

२७९. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

२८०. प्रति स० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महुवा निवासी पं० नानगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. प्रति सं० ३३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२. प्रति सं० ३४ पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । ग भण्डार ।

२८३. प्रति सं० ३५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ४ । वे० सं० ४० । ग भण्डार ।

२८४. प्रति स० ३६ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । घ भण्डार ।

२८५ प्रति सं० ३७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२८६. प्रति सं० ३८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३५ । घ भण्डार ।

२८७. प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ५८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८८. प्रति सं० ४० । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे सं० २४७ । ङ भण्डार ।

२८९. प्रति सं० ४१ । पत्र सं० ८ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४८ । ङ भण्डार ।

२९०. प्रति सं० ४२ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । ङ भण्डार ।

२९१. प्रति सं० ४३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २५० । ङ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी है ।

२६२. प्रति सं० ४४ । पत्रसं० १५ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० २५१ । क भण्डार ।

२६३. प्रति सं० ४५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० २५२ । क भण्डार ।

विशेष—सूत्रों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२६४. प्रति सं० ४६ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० २५३ । क भण्डार ।

२६५. प्रति सं० ४७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २५४ । क भण्डार ।

२६६. प्रति सं० ४८ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६२१ कार्त्तिक सुदी ४ । वे० सं० २५५ । क भंडार

२६७. प्रति सं० ४६ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २५६ । क भण्डार ।

२६८. प्रति सं० ५० । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

२६६. प्रति सं० ५१ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं २५८ । क भण्डार ।

३००. प्रति सं० ५२ । पत्र सं० ६ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५६ । क भण्डार ।

३०१. प्रति स० ५३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० ं० २६० । क भण्डार ।

३०२. प्रति सं० ५४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०३. प्रति सं० ५५ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । क भण्डार ।

३०४. प्रति सं० ५६ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । क भण्डार ।

३०५. प्रति सं० ५७ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय ही है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०६. प्रति सं० ५८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १२८ । ख भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३०७. प्रति सं० ५६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

३०८. प्रति सं० ६० । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी १३ । जीर्ण । वे० सं० १३० । ख भण्डार ।

विशेष—मुरलीधर अग्रवाल जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की ।

३०६. प्रति सं० ६१ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६५२ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० १३१ । ख भण्डार ।

३१०. प्रति सं० ६२ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८७१ जेठ सुदी १२ । वे० सं० १३२ । ख भंडार ।

३११. प्रति सं० ६३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० १३४ । ख भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल सेठी ने प्रतिलिपि करवायी ।

३१२. प्रति सं० ६४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १३३ । ख भण्डार ।

३१३. प्रति सं० ६५ । पत्र सं० २१ से २५ । ले० का० × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । ख भण्डार ।

३१४. प्रति सं० ६६ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

३१५. प्रति सं० ६७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३७ ख भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित । १ ला पत्र नहीं है ।

३१६. प्रति सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० १३८ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१७. प्रति सं० ६६ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० ५७० । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१८. प्रति सं० ७० । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों मे तत्वार्थ सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम अधिकार हैं । इससे आगे भक्तामर स्तोत्र है ।

३१९. प्रति सं० ७१ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

३२०. प्रति सं० ७२ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं ३८ । ज भण्डार ।

३२१. प्रति सं० ७३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२२ फागुनसुदी १५ । वे० सं० ८८ । ज भण्डार।

३२२. प्रति सं० ७४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । झ भण्डार ।

३२३. प्रति सं० ७५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० ३०५ । झ भण्डार ।

३२४. प्रति सं० ७६ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । ञ भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२५. प्रति सं० ७७ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६२६ चैत सुदी १४ । वे० सं० २७३ । ञ भंडार

विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६. प्रति सं० ७८ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ४४८ । ञ भण्डार ।

३२७. प्रति सं० ७९ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ३४ ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

३२८. प्रति सं० ८० । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १६१५ ट भण्डार ।

३२९. प्रति सं० ८१ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६१६ । ट भण्डार ।

३४०. प्रति सं० ८२ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १६३१ । ट भण्डार ।

विशेष—हीरालाल बिंदायक्या ने गोकलाल पांड्या से प्रतिलिपि करवायी । पुस्तक सिरूमोचन्द खाबड़ा खजांची की है ।

३४१. प्रति सं० ८३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६३१ । वे० सं० १६४२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर आगमन के समय सवाई रामसिंह जी के शासनकाल में जीवणलाल काला ने जयपुर में हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

३४२. प्रति सं० ८४ । पत्र सं० ३ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय से है। इसके आगे कलिकुण्डपूजा, पार्श्वनाथपूजा, क्षेत्रपालपूजा, क्षेत्रपालस्तोत्र तथा चिन्तामणिपूजा है।

३४३. तत्त्वार्थ सूत्र टीका श्रुतसागर। पत्र सं० ३५६। आ० १२×५ इञ्च। भाषासंस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १७३३ प्र० श्रावण सुदी ७। वे० सं० १६०। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—श्री श्रुतसागर सूरि १६ वी शताब्दी के संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। इन्होंने ३८ से भी अधिक ग्रंथों की रचना की जिसमें टीकाएँ तथा छोटी २ कथाएँ भी हैं। श्री श्रुतसागर के गुरु का नाम विद्यानंदि था जो भट्टारक पद्मनंदि के प्रशिष्य एवं देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे।

३४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१५। ले० काल सं० १७४८ फागन सुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० २५५। क भण्डार।

विशेष—३१५ से आगे के पत्र नहीं हैं।

३४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५३। ले० काल–×। वे० सं० २६६। क भण्डार।

३४६ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५३। ले० काल–×। वे० सं० ३३०। अ भण्डार।

३४७. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—सिद्धसेन गणि। पत्र सं० २४८। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० २५३। क भण्डार।

विशेष—तीन अध्याय तक ही है। आगे पत्र नहीं हैं। तत्वार्थ सूत्र की विस्तृत टीका है।

३४८. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति.................। पत्र सं० ६३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल–×। ले० काल–सं० १६३३ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५८। अ भण्डार।

विशेष—मालपुरा में श्री कनककीर्त्ति ने अपने पठनार्थ मु० जेसा से प्रतिलिपि करवायी।

प्रशस्ति—संवत् १६३३ वर्षे फागुण मासे कृष्ण पक्षे पंचमी तिथौ रविवारे श्री मालपुरा नगरे। भ० श्री ५ श्री श्री श्री चंद्रकीर्त्ति विजय राज्ये ब्र० कमलकीर्त्ति लिखापितं आत्मार्थे पठनीया तु मु० जेसा केन लिखितं।

३४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२०। ले० काल सं० १६५६ फागुण सुदी १५। तीन अध्याय तक पूर्ण। वे० सं० २५४। क भण्डार।

विशेष—बाला बक्स शर्मा ने प्रतिलिपि की थी। टीका विस्तृत है।

३५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५ से ५६३। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० २५६। क भण्डार।

विशेष—टीका विस्तृत है।

३५१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १७८६। वे० सं० १०४५। अ भण्डार।

३५२. प्रति सं० ५। पत्र सं० २ से २२। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० ३२६। 'अ' भण्डार।

३५३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १६। ले० काल–×। अपूर्ण। वे० सं० १७६३। 'ट' भण्डार।

३५४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ३३३। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–सिद्धान्त। र० काल सं० १६१० फागुण बुदि १०। ले० काल–×। पूर्ण। वे० सं० २४५। क भण्डार।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य में सुन्दर टीका है।

३५५. प्रति सं० २। पत्र सं० १५१। ले० काल सं० १६४३ श्रावण सुदी १५। वे० सं० २४६। क भण्डार।

३५६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०२। ले० काल सं० १६४० मंगसिर बुदी १३। वे० सं० २४७। क भण्डार।

३५७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी ६। वे० सं० ६६। अपूर्ण। ग भण्डार।

३५८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १००। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२।

विशेष—पृष्ठ ६० तक प्रथम अध्याय की टीका है।

३५६. प्रति सं० ६। पत्र सं० २८३। ले० काल सं० १६३५ माह सुदी ८। वे० सं० ३३। क भण्डार

३६०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १६६६। वे० सं० २७०। क भण्डार।

३६१. प्रति सं० ८। पत्र सं० १०२। ले० काल ×। वे० सं० २७१। क भण्डार।

३६२. प्रति सं० ६। पत्र सं० १२८। ले० काल सं० १६४० चैत्र बुदी ८। वे० सं० २७२। क भण्डार।

विशेष—म्होरीलालजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि करवाई।

३६३. प्रति सं० १०। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६३६। वे० सं० ५७३। च भण्डार।

विशेष—मांगीलाल श्रामाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया।

३६४. प्रति सं० ११। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १६५५। वे० सं० १८५। छ भण्डार।

विशेष—आनन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई।

३६५. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७१। ले० काल १६१५ आषाढ़ सुदी ६ वे० सं० ६१। झ भण्डार।

विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक चढाई।

३६६. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पं० जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ११८। आ० १३×७ इञ्च। भाषा हिन्दी (गद्य)। र० काल सं० १८५६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५१। क भण्डार।

३६७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६७। ले० काल सं० १८४६। वे सं० ५७२। च भण्डार।

३६८. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पांडे जयवंत। पत्र सं० ६६। आ० १३×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८४६। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है :—

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध हो केइक जीव ऊर्द्ध सिद्ध हो इत्यादि।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालाबोधि टीका पांडे जयवंत कृत संपूर्ण समाप्ता। श्री सवाई के कहने से वैष्णव रामनारायण ने प्रतिलिपि की।

३६६. तत्त्वार्थसूत्र टीका—आ० कनककीर्ति। पत्र सं० १४५। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा हिन्दी (गद्य)। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६६। क भण्डार।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र की श्रुतसागरी टीका के आधार पर हिन्दी टीका लिखी गयी है। १४५ से आगे पत्र नहीं है।

३७०. प्रति सं० २। पत्र सं० १०२। ले० काल ×। वे० सं० १३८। भ्र भण्डार।

३७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १७८३। चैत्र सुदी ६। वे० सं० २७२। ञ भण्डार।

विशेष—लालसोट निवासी ईश्वरलाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी।

३७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६२। ले० काल ×। वे० सं० ४४६। ञ भण्डार।

३७३. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३८। ले० काल सं० १६११। वे० सं० १६३८। ट भण्डार।

विशेष—वैद्य अमीचन्द काला ने ईसरदा में शिवनारायण जोशी से प्रतिलिपि करवायी।

३७४. तत्त्वार्थसूत्र टीका—पं० राजमल्ल। पत्र सं० ५ से ४८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६१।। अ भण्डार।

३७५. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—छोटीलाल जैसवाल। पत्र सं० २१। आ० १३×५¾ इञ्च। भाषा हिन्दी पद्य। विषय–सिद्धान्त। र० काल सं० १६३२ आसोज बुदी ८। ले० काल सं० १६५२ आसोज सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २४४। क भण्डार।

विशेष—मथुराप्रसाद ने प्रतिलिपि की। छोटीलाल के पिता का नाम मोतीलाल था यह अलीगढ जिला के मेडू ग्राम के रहने वाले थे। टीका हिन्दी पद्य मे है जो अत्यन्त सरल है।

३७६. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल ×। वे० सं० २६७। क भण्डार।

३७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७।। ले० काल ×। वे० सं० २६८। क भण्डार।

३७८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—शिखरचन्द। पत्र सं० २७। आ० १०½×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–सिद्धान्त। र० काल सं० १८६८। ले० काल सं० १६५३। पूर्ण। वे० सं० २४८। क भण्डार।

३७६. तत्त्वार्थसूत्र भाषा........। पत्र सं० ६४। आ० १२×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४३६।

३८०. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ४६। ले० काल सं० १८५० बैशाख बुदी १३। अपूर्ण। वे० सं० ६७। ख भण्डार।

३८१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ६८। ख भण्डार।

विशेष—द्वितीय अध्याय तक है।

३८२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १६४१ फागुण बुदी १४। वे० सं० ६६। ख भण्डार

३८३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० ४१। ग भण्डार।

३८४ प्रति सं० ६। पत्र सं० ४६८ से ८१३। ले० काल सं० ×। अपूर्ण। वे० सं० २६४। ङ भण्डार।

३८५. प्रति सं० ७। पत्र सं० ८७। र० काल-×। ले० काल सं० १६१७। वे० सं० ५७१। ख भण्डार।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित।

३८६. प्रति सं० ८। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० ५७४। ख भण्डार।

विशेष—पं० सदासुखजी की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है।

३८७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० ५७५। ख भण्डार।

३८८. प्रति सं० १०। पत्र सं० २३। ले० काल ×। वे० सं० १८५। छ भण्डार।

३८६. तत्त्वार्थसूत्र भाषा............। पत्र सं० ३३। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८६।

विशेष—१५वां तथा ३३ से आगे पत्र नहीं है।

३६०. तत्त्वार्थसूत्र भाषा............। पत्र सं० ६० से १०८। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-× हिन्दी। र० काल ×। ले० काल सं० १७१६। अपूर्ण। वे० सं० २०८१। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १७१६ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह औरंगसाहि राज्य प्रवर्त्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्रं सुज्ञानात्मक ग्रन्थ जन बोधाय विदुषा जयवंता कृतं साह जगन.........पठनार्थं बालाबोध वचनिका कृता। किमर्थं सूत्राणां। मूलसूत्रं अतीव गंभीरतर प्रवर्तत तस्य अर्थ केनापि न अवबुध्यते। इदं वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित भव्य इमां पठति ज्ञानोद्योतं भविष्यति। लिखापितं साह् विहारीदास खाजांनची सावडावासी आमेर का कर्म्मक्षय निमित्त लिखाई साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैसिंहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद।

३६१. प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १८६०। वे० सं० ७०। ख भण्डार।

विशेष—हिन्दी में टिप्पण रूप मे अर्थ दिया है।

३६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४२। र० काल ×। ले० काल सं० १६०२ आसोज बुदी १०। वे० सं० १६८। झ भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित है। हीरालाल कासलीवाल फागी वाले ने विजयरामजी पांड्या के मन्दिर के वास्ते प्रतिलिपि की थी।

३६३. त्रिभंगीसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६६। आ० ६½×४¾ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल सं० १८५० सावन सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ७४। ख भण्डार।

विशेष—लालचन्द टोंग्या ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की।

३६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १६१६। अपूर्ण। वे० सं० १४६। ख भण्डार।

विशेष—जौंहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की।

३६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८७६ कार्तिक सुदी ४। वे० सं० २४। क भण्डार।

विशेष—भ० क्षेमकीर्त्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी।

३९६. त्रिभंगीसार टीका—विवेकनन्दि । पत्र सं० ४८ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वे० सं० २८० । क भण्डार ।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । क भण्डार ।

३९८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । छ भण्डार ।

३९९. दशवैकालिकसूत्र ……… । पत्र सं० १८ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५१ । अ भण्डार ।

४००. दशवैकालिकसूत्र टीका ……… । पत्र सं० १ से ४२ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०९ । छ भण्डार ।

४०१. द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा–प्राकृत । र० काल × । ले० काल सं० १६३५ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६३५ वर्षके माघ मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ ।

४०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ९२९ । अ भण्डार ।

४०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ आसोज सुदी १३ । वे० सं० १३१० । अ भण्डार

४०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२५ । अ भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित ।

४०५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २९२ । अ भण्डार ।

४०६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८२० । वे० सं० ३१२ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित ।

४०७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१६ भादवा सुदी ३ । वे० सं० ३१३ । क भण्डार

४०८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८१५ पौष सुदी १० । वे० सं० ३१४ । क भण्डार ।

४०९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८४४ श्रावण सुदि १ । वे० सं० ३१५ । क भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित ।

४१०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ सुदी १२ । वे० सं० ३१५ । क भण्डार ।

४११. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३१९ । क भण्डार ।

४१२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३११ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं के नीचे संस्कृत में छाया दी हुई है ।

४१३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७८९ ज्येष्ठ बुदी ८ । वे० सं० ८६ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । टोंक में पार्श्वनाथ चैत्यालय में पं० डूंगरसी के शिष्य पेमराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई ।

४१४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

४१५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० ४० । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४१६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४२ । घ भण्डार ।

४१७. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ४३ । घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४१८. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० ३१२ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४१९. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ३१३ । ङ भण्डार ।

४२०. प्रति सं० २० । पत्र सं० ९ । ले० काल X । वे० सं० ३१४ । ङ भण्डार ।

४२१. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० ३१६ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत और हिन्दी अर्थ सहित है ।

४२२. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४२३. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ५। ले० काल X । वे० सं० १६९ । च भण्डार ।

४२४. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ द्वि० आषाढ़ सुदी २ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में बालावबोध टीका सहित है । पं० चतुर्भुज ने नागपुर ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

४२५. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७८२ भादवा सुदी ९ । वे० सं० ११२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ऋषभसेन खतरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी ।

४२६. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १३। ले० काल X । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है ।

४२७. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० १२७ । ञ भण्डार ।

४२८. प्रति सं० २८ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० २०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४२९. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० २६४ । ञ भण्डार ।

४३०. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० २७५ । ञ भण्डार ।

४३१. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २१ । ले० काल X । वे० सं० ३७८ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३२. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७८५ पौष सुदी ३ । वे० सं० ४६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। सीलोर नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में मूलसंघ के अंबावती पट्ट के भट्टारक जगतकीर्त्ति तथा उनके पट्ट में भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के आम्नाय के शिष्य मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४३३. प्रति सं० ३३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ४१५। ञ भण्डार।

विशेष—३ पत्र तक द्रव्य संग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रों में टीका भी है। इसके बाद 'सज्जनचित्तवल्लभ' मल्लिषेणाचार्य कृत दिया हुआ है।

४३४. प्रति सं० ३४। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० १६४१। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।

४३५. प्रति सं० ३५। पत्र सं० २ से ६। ले० काल सं० १७८४। अपूर्ण। वे० सं० १८४५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४३६. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ११। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८२२ मंगसिर बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १०५३। अ भण्डार।

विशेष—महाचन्द्र ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४३७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६५६ पौष सुदी ३। वे० सं० ३१७। क भण्डार।

४३८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से ३२। ले० काल सं० १७३....। अपूर्ण। वे० सं० ३१७। ङ भण्डार

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति ने फागपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १७१४ द्वि० श्रावण बुदी ११। वे० सं० १६८। ञ भण्डार।

विशेष—यह प्रति जोधराज गोदीका के पठनार्थ रूपसी भांवसा जोबनेर वालो ने सांगानेर मे लिखी।

४४०. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—ब्रह्मदेव। पत्र सं० १०८। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १६३५ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ६०।

विशेष—इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंह के शासनकाल में मालपुरा में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में हुई थी।

प्रशस्ति—शुक्लादिपक्षे नवमदिने पुष्यनक्षत्रे सोमवासरे संवत् १६३५ वर्षे आसोज बदि १० शुभ दिने राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंघ राज्य प्रवर्तमाने माल्हपुर वास्तव्ये श्री चंद्रप्रभनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे मं० श्री प्रभाचन्द्र देवास्तत्सिष्य मं० श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्सिष्य मं० श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तत्सिष्य मं० श्री चन्द्रकीर्त्ति देवास्तदाम्नाए खंडेलवालान्वये गंगवालगोत्रे सा. नानिग द्वि पदारथा। सा. नानिग भार्या नायकदे तत्पुत्र सा. खामा तद्भार्या द्वे। प्र. खनिसिरि। द्वि० हरमदे तत्पुत्र कमा तद्भार्या करणादे। द्वि० सा. पदारथ तद् भार्या पिदिमदे तत्पुत्र सा. गोइंद तद्भार्या शारादे तत्पुत्रापंच प्र. बीका, द्वि नराइण, तृ. उवा, चतुर्थ बिरम पं० दसरथ। प्र. बिका भार्या बिक्रम दे एतेषां सा. कमा इदं सास्त्र लिख्याप्य आचार्य श्री सिघनंदए घटापितं।

४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १२४ । अ भण्डार ।

४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८१० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं ३२३ । क भण्डार ।

४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८०० । वे० सं० ४४ । छ भण्डार ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७८४ अषाढ बुदी ११ । वे० स० १११ । छ भण्डार ।

४४५. द्रव्यसंग्रहटीका………… । पत्र सं० ५८ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । र० काल × । ले० काल सं० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० सं० ५१० । अ भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ मे लिखा है कि ग्रा० नेमिचन्द्र ने मालवदेश की धारा नगरी में भोजदेव के शासनकाल में श्रीपाल मंडलेश्वर के आश्रम नाम नगर मे सोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-संग्रह की रचना की थी। सोम

४४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम बृहद् द्रव्य संग्रह टीका है ।

४४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७७८ पौष सुदी ११ । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

४४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६७० भादवा सुदी ५ । वे० सं० ८५ । ख भंडार ।

विशेष—नागपुर निवासी खंडेलवाल जातीय सेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्या ऊदलदे ने पल्य व्रतोद्यापन मे प्रतिलिपि कराकर चढाया ।

४४९. प्रति स० ६६ । ले० का० सं० १६०० चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ४५ । घ भण्डार ।

४५०. द्रव्यसंग्रह भाषा………… । पत्र सं० ११ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १७७१ सावरण बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे निम्न प्रकार अर्थ दिया हुआ है ।

गाथा—दव्व–संगहमिणं मुणिणाहा दोस–संचयचुदा सुदपुण्णा ।
सोधयंतु तणुसुत्तधरेण णेमिचंद मुणिणा भणियं जं ॥

अर्थ— भो मुनि नाथ ! भो पंडित कैसे हो तुम्ह दोष संचय मुति दोषनि के जु संचय कहिये समूह तिनतें जु रहित हो । मया नेमिचंद्र मुनिना भणितं । यत् द्रव्य संग्रह इमं प्रत्यक्षी भूतां में जु हो नेमिचंद मुनि तिन जु कह्यौ यहु द्रव्य सग्रह शास्त्र । ताहि सोधयंतु । सो धौ हुं कि कि सो हूं । तनु सुत्त धरेण तनु कहिये थोरों सौ सूत्र कहिये । सिद्धांत ताकौ जु धारक ह्यौ । अल्प शास्त्र करि संयुक्त हो जु नेमिचंद्र मुनि तेन कह्यौ जु द्रव्य संग्रह शास्त्र ताकौ भो. पंडित सोधो ।

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचितं द्रव्य संग्रह बालबोध संपूर्ण ।

संवत् १७७१ शाके १६३६ प्र० श्रावरण मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां १३ बुधवासरे लिप्यकृतं विद्याधरेण स्वात्मार्थे ।

४५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । अ भण्डार ।

४५२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं०७७४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी सामान्य है ।

४५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८१४ मंगसिर बुदी ६ । वे०सं० ३६३ । क भण्डार

विशेष—धर्मार्थी रामचन्द्र की टीका के आधार पर भाषा रचना की गई है ।

४५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १५५७ आसोज सुदी ८ । वे० सं० ८८ । ख भण्डार

४५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४४ । ग भण्डार ।

४५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७४३ श्रावण बुदी १३ । वे० सं० १११ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—बालानामुपकाराय रामचन्द्रेण सभाषया । द्रव्यसंग्रहशास्त्रस्य व्याख्यालेशो वितन्यते ॥१॥

४५७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं० १६ । आ० १३×५३ इञ्च । भाषा-गुजराती । *लिपि हिन्दी । विषय-छह द्रव्यों का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १८०० माघ बुदि १३ । वे० सं० २१/२६२* छ भण्डार ।

४५८. द्रव्यसंग्रह भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १६ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-छह द्रव्यों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२ । घ भण्डार ।

४५९. द्रव्यसग्रह भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ३१ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-छह द्रव्यों का वर्णन। र० काल सं० १८८३ सावन बुदि १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१२ । अ भण्डार ।

४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६३ सावण बुदी १४ । वे० सं० ३२१ । क भण्डार ।

४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । क भण्डार ।

४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ४२ के आगे द्रव्यसंग्रह पद्य में है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६२. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) विषय-छह द्रव्यों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२२ । क भण्डार ।

४६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ३१८ । क भण्डार ।

४६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ३१६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया हुआ है ।

४६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८७६ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० ५६१ । च भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुख कासलीवाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की है ।

४६६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया गया है ।

४६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २४० । ञ भण्डार ।

४६८. द्रव्यसंग्रह भाषा—बाबा दुलीचन्द । पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-छह द्रव्यों का वर्णन । र० काल सं० १९६६ आसोज सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

विशेष—जयचन्द छाबड़ा की हिन्दी टीका के अनुसार बाबा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली में भाषा लिखी थी ।

४६९. द्रव्यस्वरूप वर्णन । पत्र सं० ६ से १६ तक । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छह द्रव्यों का लक्षण वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १६०५ सावन बुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१३७ । ट भंडार ।

४७०. धवल………… । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-जैनागम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५० । क भण्डार ।

४७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३५२ । क भण्डार ।

४७३. नन्दीसूत्र………… । पत्र सं० ८ । आ० १२×४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल सं० १५६० । वे० सं० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—सं० १५६० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि पं० नयसमुद्रगणि नामा देश ? तस्मु शिष्यै वी. गुणलाभ गणिभि लिलेखि ।

४७४. नवतत्त्वगाथा………… । पत्र सं० ३ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-९ तत्त्वों का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—पं० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १०५० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७६ । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७७. नवतत्त्व प्रकरण—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र सं० १४ । आ० ९¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-९ तत्त्वों का वर्णन । र० काल सं० १७४७ । ले० काल सं० १८०९ । वे० सं० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है । रायचन्द शक्तावत ने हरिसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की ।

४७८. नवतत्त्ववर्णन............। पत्र सं० ५। आ० ८३/४×४३/४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-जीव अजीव आदि ६ तत्त्वों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०१। च भण्डार।

विशेष—जीव अजीव, पुण्य पाप, तथा आस्रव तत्त्व का ही वर्णन है।

४७६. नवतत्त्व वचनिका—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ५१। आ० १२×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-६ तत्त्वों का वर्णन। र० काल सं० १६३४ आषाढ सुदी ११। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६४। क भण्डार।

४८०. नवतत्त्वविचार............। पत्र सं० ६ से २४। आ० ६×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-६ तत्त्वों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५६। ञ भण्डार।

४८१. निजस्मृति—जयतिलक। पत्र सं० ५ से १३। आ० १०×४३/४ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३१। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इत्यागमिकाचार्यश्रीजयतिलकरचितं निजस्मृत्ये बंध-स्वामित्वाख्यं प्रकरणमेतच्चतुर्थः। संपूर्णोऽयं ग्रन्थः। ग्रन्थाग्रन्थ ५६० प्रमाणं। केतरांतरां श्री तपोगच्छीय पंडित रत्नाकर पंडित श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री सौभाग्य-विजयगणि तच्छिष्य मु० सिद्धविजयेन। पं० पन्नालाल ऋषभचन्द की पुस्तक है।

४८२. नियमसार—आ० कुन्दकुन्द। पत्र सं० १००। आ० १०१/२×५१/२ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३। घ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४८३. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव। पत्र सं० २२२। आ० १२१/२×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ माघ बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ३८०। क भण्डार।

४८४. प्रति सं० २। पत्र सं० ८७। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० ३७१। ञ भण्डार।

४८५. निरयावलीसूत्र............। पत्र सं० १३ से ३६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६। घ भण्डार।

४८६. पञ्चपरावर्तन............। पत्र सं० ३। आ० ११×५१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३८। अ भण्डार।

विशेष—जीवों के द्रव्य क्षेत्र आदि पञ्चपरिवर्तनों का वर्णन है।

४८७. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ४१३। क भण्डार।

४८८. पञ्चसंग्रह—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सं० २६ से २४८। आ० १२×५१/२ इञ्च। भाषा-प्राकृत संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४००। क भण्डार।

४८६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १८१२ कार्तिक बुदी ८। वे० सं० १३८। अ भण्डार।

विशेष—उदयपुर नगर में रत्नविजयगणि ने प्रतिलिपि की थी। कहीं कहीं हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है।

४६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०७। ले० काल ×। वे० सं० ५०१। अ भण्डार।

४६१. पञ्चसंग्रहवृत्ति—अभयचन्द्र। पत्र सं० १२०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०८। अ भण्डार।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण। २४–२५वां पत्र नवीन लिखा हुआ है।

४६२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०६ से २५०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०६ अ भण्डार।

विशेष—केवल जीव काण्ड है।

४६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४५२ से ६१५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११०। अ भण्डार।

विशेष–कर्मकाण्ड नवमां अधिकार तक। वृत्ति–रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट में साधु सांगा के सहयोग से की थी।

४६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५८६ से ७६१ तक। ले० काल सं० १७२३ फागुन सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ७८१। अ भण्डार।

विशेष—बुन्दावती में पार्श्वनाथ मन्दिर में औरंगशाह (औरंगजेब) के शासनकाल में हाडा वंशोत्पन्न राव श्री भावसिंह के राज्यकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

४६५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४३०। ले० काल सं० १८६८ माघ बुदी २। वे० सं० १२७। क भण्डार

४६६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६२४। ले० काल सं० १६५० वैशाख सुदी ३। वे० सं० १३१। क भण्डार

४६७. प्रति सं० ७। पत्र सं० २ से २०८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४७। ङ भण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र भी नहीं है।

४६८. प्रति सं० ८। पत्र सं० ७४ से २१४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८५। च भण्डार।

४६६. पंचसंग्रह टीका—अमितगति। पत्र सं० ११४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल सं० १०७३ (शक)। ले० काल सं० १८०७। पूर्ण। वे० सं० २१४। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ संस्कृत गद्य और पद्य में लिखा हुआ है। ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है।

श्रीमाथुराणामनघद्युतीनां संघोऽभवद् वृत्त विभूषितानाम्।
हारो मणीनामिवतापहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मि शुभ्रः ॥ १ ॥

माधवसेनगणीगणनीयः शुद्धतमोऽजनि तत्र जनीयः ।
भूयसि सत्यवतीव शशांकः श्रीमति सिंधुपतावकलंकः ॥ २ ॥
शिष्यस्तस्य महात्मनोऽमितगतिमोक्षार्थिनामग्रणी ।
रेतच्छास्त्रमशेषकर्मसमितिप्रख्यापनापाकृत ॥
वीरस्येव जिनेश्वरस्य गणभृद्भव्योपकारोद्यतो ।
दुर्वारस्मरदंतिदारणहरिः श्रीगौतमोऽनुत्तमः ॥ ३ ॥
यदत्र सिद्धान्त विरोधिबद्ध ग्राह्यं निराकृत्यतदेतदार्यैः ।
गृह्णंति लोका ह्युपकारियत्नावं निराकृत्य फलं पवित्रं ॥ ४ ॥
भ्रमत्यरं केवलमर्चनीयं यावस्थिरं तिष्ठतिमुक्तपंक्तौ ।
तावद्धरायामिदमत्रशास्त्रं स्थेयाच्छुभं कर्मनिरासकारि ॥
त्रिसप्तत्यधिकेब्दनां सहस्रे शकविद्विषः ।
मसूतिकापुरे जातमिदं शास्त्रं मनोरमं ॥ ५ ॥
इत्यमितगतिकृता नैणसार तपागच्छे ।

५००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१५ । ले० काल सं० १७६६ माघ बुदी १ । वे० सं० १८७ । अ भण्डार

५०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८० । ले० काल सं० १७२४ । वे० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—जीर्ण प्रति है ।

५०२. पञ्चसंग्रह टीका—। पत्र सं० २५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

५०३. पंचास्तिकाय—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १७०३ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । अ भण्डार ।

५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६४० । वे. सं० ४०४ । अ भण्डार ।

५०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ४०२ । क भण्डार ।

५०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं०१८६६ । वे० सं० ४०३ । क भण्डार ।

५०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । क भण्डार

विशेष—द्वितीय स्कन्ध तक है । गाथाओं पर टीका भी दी है ।

५०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १८७ । ज भण्डार ।

५०९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी ५ । वे० सं० १६१ । ञ भंडार ।

विशेष—चंपावती में प्रतिलिपि हुई थी ।

५१०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं १६६ । ङ भण्डार ।

५११. पंचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र सं० १२४ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा संस्कृत विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १९३८ श्रावण बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । क भण्डार ।

५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १४८७ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ४०२ । ङ भण्डार ।

५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७९ । ले० काल × । वे० सं० २०२ । च भण्डार ।

५१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १९५६ । वे० सं० २०३ । च भण्डार ।

५१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १५४१ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० । व्य भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा. फहरी भार्या धमला तयोः पुत्रधालु तस्य भार्या धनसिरि नाम्या पुत्र सा. होलु भार्या सुनखत तस्य दामाद सा. हंसराज तस्य भ्राता देवपति एवं पुस्तक पंचास्तिकायाभिधं लिखाप्यं कुलभूषणस्य कर्मक्षयार्थ दत्तं ।

५१६. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हीरानन्द । पत्र सं० ६३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल स० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष—जहानाबाद में बादशाह जहांगीर के समय में प्रतिलिपि हुई ।

५१७. पञ्चास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० १७५ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । क भण्डार ।

५१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १९४७ । वे० सं० ४०८ । क भण्डार ।

५१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४९ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । ङ भण्डार ।

५२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १९५४ । वे० सं० ६२० । च भण्डार ।

५२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १९३६ आषाढ़ सुदी ४ । वे० सं० ६२१ । च भण्डार

५२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३६ । र० काल × । वे० सं० ६२२ च भण्डार ।

५२३. पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र सं० ६११ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धांत । र० काल सं० १८९२ । ले० काल × । वे० सं० ७१ । झ भण्डार ।

५२४. पुण्यतत्त्वचर्चा— । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १८८१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४१ । ट भण्डार ।

५२५. बंध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र सं० ६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १८८१ । ले० काल × । वे० सं० १९०५ । पूर्ण । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ ।

विमल जिनेश्वरप्रणमुं पाय, मुनिसुव्रत कूं सीस नवाय ।
सतगुरु सारद हिरदै धरूं, बंध उदय सत्ता उचरूं ॥ १ ॥

अन्तिम—बंध उदै सत्ता बखाणी, ग्रन्थ त्रिभंगीसार तैं जाणि ।

सुद्ध असुद्ध सुधा रस गाण, अल्प बुद्धि मैं करूं बखाण ।। १२ ।।

साहिब राम मुझकूं बुध दई, नगर पचेवर मांही लही ।

मुझ उतपत डगी के माहि, श्रावक कुल गंगवाल कहाहि ।। १३ ।।

काल पाय के पंडित भयो, नैणचन्द के शिष्य म थयो ।

नगर पचेवर माहि गयो, आदिनाथ मुझ दर्शण दियो ।। १४ ।।

पापकर्म तै विकृत भयो, लाव आ कर रहतो भयो ।

शीतल जिनकूं करि परिणाम, स्वपर कारण तैं कहै बखाण ।। १५ ।।

संवत् अठरासै का कह्या, अवर अक्यासी ऊपर लह्या ।

पढत सुणत अघ खय होय, पुन्य बंध बुधि बहु होय ।। १६ ।।

।। इति श्री उदै बंध सत्ता समाप्ता: ।।

इससे आगे चौबीस ठाणा की चौपाई है—

प्रारम्भ—देव धर्म गुरु ग्रन्थ पद बंदौं मन वच काय ।

गुणठाणनि परि ग्रन्थ की रचना कहूं बणाय ।।

अन्तिम—इह विधि जस गुणस्थान की रचना वरणी सार ।

भूल चूक जो होय तो, बुधिजन लेहु सुधार ।।

छठि मंगसिर कृष्ण की लावा नगर मझार ।

उगणीसै अरु पाच के साल जाय श्रीलाल ।।

।। इति सम्पूर्ण ।।

५२६. भगवतीसूत्र—पत्र सं० ५० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०७ । अ भण्डार ।

५२७. भावत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र दुबारा लिखा गया है ।

५२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८११ माघ सुदी ३ । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

विशेष—पं० रूपचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर मे की थी ।

५२९. भावदीपिका भाषा—। पत्र सं० २१८ । आ० १२×७½ । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६७ । क भण्डार ।

५३०. मरणकरंडिका·······। पत्र सं० ८ । आ० ९½×४¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८ ।

विशेष—आचार्य शिवकोटि की आराधना पर अमितिगति का टिप्पण है।

५३१. मार्गणा व गुणस्थान वर्णन—। पत्र सं० ३-५५। आ० १४×५ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४२। ट भण्डार।

५३२. मार्गणा समास—। पत्र सं० ३ से १८। आ० ११½×५ इञ्च। भाष-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१४६। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

५३३. रायपसेणी सूत्र—। पत्र सं० १५३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०। वे० सं० २०३२। ट भण्डार।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है। सेमसागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य सकलसागर ने स्वपठनार्थ टीका की। गाथाओं के ऊपर छाया दी हुई है।

५३४. लब्धिसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ५७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२१। च भण्डार।

विशेष—५७ से आगे पत्र नही है। संस्कृत टीका सहित है।

५३५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२२। च भण्डार।

५३६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १८४६। वे० सं० १६००। ट भण्डार।

५३७. लब्धिसार टीका—। पत्र सं० १५७। आ० १३×८ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १६५६। पूर्ण। वे० सं० ६३८। क भण्डार।

५३८. लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० १८०। आ० १३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल १६४६। पूर्ण। वे० सं० ६३६। क भण्डार।

५३९. प्रति सं० २। पत्र सं० १६३। ले० काल ×। वे० सं० ७५। ग भण्डार।

५४०. लब्धिसार क्षपणासार भाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० १००। आ० १५×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६। ग भण्डार।

५४१. लब्धिसार क्षपणासार संदृष्टि—पं० टोडरमल। पत्र सं० ४६। आ० १४×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल सं० १८८६ चैत बुदी ७। वे० सं० ७७। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

५४२. विपाकसूत्र—। प० सं० ३ से ३५। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१३१। ट भण्डार।

५४३. विशेषसत्तात्रिभंगी—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धांत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४३। ञ भण्डार।

५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार

५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८०२ आसोज बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ८५४ । अ भण्डार ।

विशेष—३० से ३४ तक पत्र नहीं हैं । जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

५४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५५ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल आस्रव त्रिभङ्गी ही है ।

५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६० । अ भण्डार ।

विशेष—दो तीन प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५४८. षट्लेश्या वर्णन ·· ·····। पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सिद्धान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६० । अ भण्डार ।

विशेष—षट लेश्याओं पर दोहे हैं ।

५४९. षष्ठ्याधिक शतक टीका—राजहंसोपाध्याय । पत्र सं० ३१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धात । र० काल सं० १५७९ भादवा । ले० काल सं० १५७९ अगहन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीमज्जडकढाभिख्ये गोत्रे गौत्रावतंसिके, सुश्रावकशिरोरत्न देल्हाख्यो समभूत्पुरा ।। १ ।।

स्वजन–जलधिचन्द्रस्तत्तनूजो वितंद्रो, विबुधकुमुदचन्द्रः सर्वविद्यासमुद्रः ।

जयति प्रकृतिभद्रः प्राज्यराज्ये समुद्रः, खल हरिणा हरीन्द्रो रायचन्द्रो महीन्द्रः ।। २ ।।

तदंगजन्माजिनजैनभक्तः परोपकारव्यसनैकशक्तः सदा सदाचारविचारविज्ञः सीहगराज सुकृतीकृतज्ञः ।। ३ ।।

श्रीमाल–भूपालकुलप्रदीप, समेदिनी मल्हाड पावनीय । नंद्यादसंख्य गुणसावधान, तत्सूनुरत्यूनगुणप्रधान ।। ४ ।।

भार्याबहुगुणैरार्या करमादे पतिव्रता, कमलेव हरेस्तस्य यास्वामागे विराजते ।। ५ ।।

तत्पुत्रोभद्रचंद्रोस्ति भव्यश्चन्द्र इवापरः निर्भयो निष्कलंकश्च निःकुरंग. कलानिधिः ।

तस्याभ्यर्थनया तया विरचिता श्रीराजहंसाभिद्योपाध्यायै शतषष्ठिकस्य विमलावृत्तिः शिशूनां हिता ।

वर्षे नंद मुनिषुचंद्र सहिते सावाच्यमाना बुधे । मासे भाद्रपदे सिकंदरपुरे नंद्याच्चिरं भूतले ।। ७ ।।

स्वच्छे खरतरगच्छे श्रीमाज्जनदत्तसूरिसंताने । जिनतिलकसूरिसुगुरो शिष्य श्रीहर्षतिलकोऽभूत् ।। ८ ।।

तच्छिस्येन कृतेयं पाठकमुख्येन राजहंसेन षष्ठ्यधिकशतप्रकरणटीका नंद्याच्चिरं मह्यां ।। ९ ।।

इति षष्ठ्यधिकशतप्रकरणस्य टीका कृतां श्री राजहंसोपाध्यायैः ।। समयहंसेन लि० ।।

संवत् १५७९ समये अगहण वदि ६ रविवासरे लेखक श्री भिखारीदासेन लेखि ।

५५०. श्लोकवार्त्तिक—आ० विद्यानन्दि । पत्र सं० १५८५ । आ० १२×७½ । भा० संस्कृत । विषय–सिद्धांत । र० काल × । ले० काल १८४४ श्रावण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । क भण्डार ।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की वृहद टीका है। पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ तीन वेष्टनों में बंधा हुआ है। हिन्दी अर्थ सहित है।

५५१. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० ७८। ञ भण्डार।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

५५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६५। ञ भण्डार।

५५३. संग्रहणीसूत्र……। पत्र सं० ३ से २८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०२। ख भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ६, ११, १६ से २०, २३ से २५ नहीं है। प्रति सचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है। ४, २१ और २८वें पत्र को छोड़कर सभी पत्रों पर चित्र हैं।

५५४. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० २३३। छ भण्डार। ३११ गाथायें हैं।

५५५. संग्रहणी बालावबोध—शिवनिधानगणि। पत्र सं० ७ से ५३। आ० १०½×४½। भाषा—प्राकृत-हिन्दी। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १००१। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६. सत्ताद्वार……। पत्र सं० ३ से ७ तक। आ० ८¾×४¾ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धांत र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६१। च भण्डार।

५५७. सत्तात्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० २ से ४०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८४२। ट भण्डार।

५५८. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद। पत्र सं० ११८। आ० ११×६ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धांत र० काल ×। ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वे० सं० ११२। अ भण्डार।

५५९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६८। ले० काल सं० १६४४। वे० सं० ७६८। क भण्डार।

५६०. प्रति सं० ३। पत्र सं०……। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८०७। ङ भण्डार।

५६१. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२२। ले० काल ×। वे० सं० ३७७। च भण्डार।

५६२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७२। ले० काल ×। वे० सं० ३७८। च भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १–१३३, २००–२६३। ले० काल सं० १६२५ माघ सुदी ५। वे० सं० ३७९। च भण्डार।

निम्नकाल और दिये गये हैं—

सं० १६६३ माघ शुक्ला ७—६ कालाडेरा में श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी। सं० १७१७ कार्तिक सुदी १३ ब्रह्म नाथू ने भेंट में दिया था।

५६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८२ । ले० काल × । वे० सं० ३८० । च भण्डार ।

५६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १५८ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । छ भण्डार ।

५६६. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ बुदी २ । वे० सं० ८५ । छ भण्डार ।

५६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० २७४ । ले० काल सं० १७०४ बैशाख बुदी ९ । वे० सं० २१९ । व्य भण्डार ।

५६८. सर्वार्थसिद्धि भाषा—जयचन्द छावडा । पत्र सं० ६४३ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा हिन्दी विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १८६१ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १९२९ कार्तिक सुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ७९९ क भण्डार ।

५६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । ले० काल × । वे० सं० ८०८ । ङ भण्डार ।

५७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४६७ । ले० काल सं० १९१७ । वे० सं० ७०५ । च भण्डार ।

५७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७० । ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० १८७ । ज भण्डार ।

५७२. सिद्धान्तअर्थसार—पं० रइधू । पत्र सं० ९९ । आ० १३×८ इंच । भाषा अपभ्रंश । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १९५६ । पूर्ण । वे० सं० ७९९ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति सं० १५९३ वाली प्रति से लिखी गई है ।

५७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ८०० । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति भी सं० १५९३ वाली प्रति से ही लिखी गई है ।

५७४. सिद्धान्तसार भाषा— । पत्र सं० ७५ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७१६ । च भण्डार ।

५७५. सिद्धान्तलेशसंग्रह........। पत्र सं० ९४ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४४८ । अ भण्डार ।

विशेष—वैदिक साहित्य है । दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५७६. सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति । पत्र सं० २२२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९१ ।

५७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ऽऽ । वे० सं० १९८ । अ भंडार ।

विशेष—पं० चोखचन्द के शिष्य पं० किशनदास के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

५७८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १७९२ । वे० सं० १३२ । अ भण्डार ।

५७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १८३२ । वे० सं० ८०२ । क भण्डार ।

विशेष—सन्तोषराम पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७८ । ले० काल सं० १८१३ । बैशाख सुदी ८ । वे० सं० १२६ । घ भण्डार ।

विशेष—शाहजहानाबाद नगर में लाला हीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

५८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७३ । ले० काल सं० १८२७ बैशाख बुदी १२ । वे० सं० २६२ । ञ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं।

५८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८–१२४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५२ । छ भण्डार ।

५८३. **सिद्धान्तसारदीपक**……। पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल ज्योतिर्लोक वर्णन वाला १४वां अधिकार है।

५८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । ख भण्डार ।

५८५. **सिद्धान्तसार भाषा—नथमल बिलाला** । पत्र सं० ८७ । आ० १३½×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८४५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४ । घ भण्डार ।

५८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५० । ले० काल × । वे० सं० ८५० । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल 'ङ' भण्डार की प्रति में है।

५८७. **सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० नरेन्द्रदेव** । पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६५ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है।

५८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० १६८ । अ भण्डार ।

५८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३० मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० १५० । ञ भंडार

विशेष—पं० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

५९०. **सूत्रकृतांग**……। पत्र सं० १६ से ५६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है। बहुत से पत्र दीमकों ने खा लिये है। बीच में मूल गाथायें हैं तथा ऊपर नीचे टीका है। इति श्री सूत्रकृतांगदीपिका षोडषमाध्याय।

विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

५६१. अट्ठाईसमूलगुणवर्णन……। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मुनिधर्म वर्णन। र० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २०३०। अ भण्डार।

५६२. अनगारधर्मामृत—पं० आशाधर। पत्र सं० ३७७। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मुनिधर्म वर्णन। र० काल सं० १३००। ले० काल सं० १७७७ माघ सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६३१। अ भण्डार।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है। बोली नगर में श्रीमहाराजा कुशलसिंहजी के शासनकाल में साहजी रामचन्द्रजी ने प्रतिलिपि करवायी थी। सं० १८२६ में पं० सुखराम के शिष्य पं० केशव ने ग्रन्थका संशोधन किया था। ६२ से १६१ तक नवीन पत्र है।

५६३. प्रति सं० २। पत्र सं० १२३। ले० काल ×। वे० सं० १८। ग भण्डार।

५६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७७। ले० काल सं० १६५३ कार्तिक सुदी ५। वे० सं० १६। ग भण्डार।

५६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। वे० सं० ४६७। त्र भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। पं० माधव ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्मामृतसूक्ति संग्रह' भी है।

५६६. अनुभवप्रकाश—दीपचन्द कासलीवाल। पत्र सं० ४४०। आकार १२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) गद्य। विषय-धर्म। र० काल सं० १७८१ पौष बुदी ५। ले० काल सं० १८१४। अपूर्ण। वे० सं० १। घ भण्डार।

५६७ प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ७४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१। छ भण्डार।

५६८. अनुभवानन्द……। पत्र सं० ५६। आ०१३½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० १३। क भण्डार।

अमृतधर्मरसकाव्य—गुणचन्द्रदेव। पत्र सं० ३ से ६६। आ० १०½×४½ भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६८५ पौष सुदी १। अपूर्ण। वे० सं० २३४। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के दो पत्र नहीं हैं। अन्तिम पुष्पिकाः—इति श्री गुणचन्द्रदेवविरचितअमृतधर्मरसकाव्य आवर्णनं श्रावकव्रतनिरूपणं चतुर्विंशति प्रकरणं संपूर्णं। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

पट्टे श्री कुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्री सहस्रकीर्त्ति तत्पट्टे त्रिभुवनकीर्त्तिदेवभट्टारक तत्पट्टे श्री पद्मनंदिदेव भट्टारक तत्पट्टे श्री जसकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री ललितकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुणरत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ५ गुणचन्द्रदेव भट्टारक

विरचित महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थं। लोहटसुन पंडितश्री सावलदास पठनार्थं । अन्तिसीश्वसावधप्रकाशन धर्मउपदेशाकमार्थं । चन्द्रप्रभ चैत्यालयं माघ मासे कृष्णपक्षे पुष्यनक्षत्रे पार्थिवि दिने १ शुक्रवारे सं० १६८५ वर्षे बैरागरग्रामे चौधरी कम्र-सेनिमहार्यं नन्मुत चतुर्भुज जगमनि परमराम खेमराज भ्राता पंच सहायिका । शुभं भवतु ।

६००. आगमविलास—द्यानतराय । पत्र सं० ७३ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) विषय–धर्म । र० काल सं० १७८३ । ले० काल सं० १६२८ । पूर्ण । वे० सं० ४२ । क भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी पद्य—"युग वसु शैल सितंस"

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार द्यानतराय के पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को आळू को बेचा तथा उसके पास से वह मूल प्रति जगतराय के हाथ में आयी । ग्रन्थ रचना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु बीच ही में स्वर्गवास हाजाने के कारण जगतराय ने संवत् १७८४ मे मैनपुरी में ग्रन्थ को पूर्ण किया । आगम विलास मे कवि की विविध रचनाओं का संग्रह है ।

६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६५४ । वे० सं० ४३ । क भण्डार ।

६०२. आचारसार—वीरनंदि । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० १२७ । अ भण्डार ।

६०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ४४ । क भण्डार ।

६०४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४ । घ भण्डार ।

६०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ से ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८५ । ञ भण्डार ।

६०६. आचारसार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २०३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचारशास्त्र । र० काल सं० १६३४ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । वे० सं० ४५ । क भंडार ।

६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६२ । ले० काल० × । वे० सं० ४६ । क भंडार ।

६०८. आराधनासार—देवसेन । पत्र सं० २० । आ० ११×४½ । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल-१०वीं शताब्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७० । अ भण्डार ।

६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । वे० सं० २२० । अ भण्डार ।

विशेष–प्रति संस्कृत टीका सहित है

६१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । अ भण्डार

६११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८४ । ख भण्डार ।

६१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१५१ । ट भण्डार ।

६१३. आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १६३१ चैत्र बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति का अंतिम पत्र नहीं है।

६१४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० ६८। क भण्डार।

६१५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५२। ले० काल ×। वे० सं० ६६। क भण्डार।

६१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० ७५। ङ भण्डार।

विशेष—गाथायें भी है।

६१७. आराधनासार भाषा……। पत्र सं० १६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१२१। ट भण्डार।

६१८. आराधनासार वचनिका—बाबा दुलीचन्द। पत्र सं० २२। आ० १२½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल २०वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३। छ भण्डार।

६१९. आराधनासार वृत्ति—पं० आशाधर। पत्र सं० ८। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल १३वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०। ख भण्डार।

विशेष—मुनि नयचन्द्र के लिए ग्रन्थरचना की थी। टीका का नाम आराधनासार दर्पण है।

६२०. आहार के छियालीस दोष वर्णन—भैया भगवतीदास। पत्र सं० २। आ० ११×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचारशास्त्र। र० काल सं० १७५०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०४। झ भण्डार।

६२१. उपदेशरत्नमाला—धर्मदासगणि। पत्र सं० २०। आ० १०×४½। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७५५ कार्त्तिक बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ८२८। अ भण्डार।

६२२. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ३४८। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

६२३. उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण। पत्र सं० १२६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल सं० १६२७ श्रावण सुदी ६। ले० काल सं० १७६७ श्रावण सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ११। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर नगर में श्री गोपीराम बिलाला ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६२४. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल ×। वे० सं० २७। अ भण्डार।

६२५. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १७२० श्रावण सुदी ४। वे० सं० २८०। अ भण्डार।

६२६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६१। ले० काल सं० १६८८ कार्त्तिक सुदी १२। अपूर्ण। वे० सं० ८५० अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ६० से ६३ तथा १०८ नहीं है। प्रशस्ति में निम्नप्रकार लिखा है—"शेरपुर की समस्त श्रावकणी ज्ञान कल्याण निमित्त इस शास्त्र को श्री पार्श्वनाथ निमित्त भण्डार में रखवाया।"

६२७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ से १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११७५ । अ भण्डार ।

६२८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ७७ । क भण्डार ।

६२९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० ८२ । ङ भण्डार ।

६३०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । ङ भण्डार ।

६३१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६४ से १४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०९ । छ भण्डार ।

६३२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

६३३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ३१ । ञ भण्डार

६३४. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १८१ । ले० काल × । वे० सं० २७० । ञ भण्डार ।

६३५. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १७१८ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ४५२ । ञ भण्डार ।

६३६. उपदेशसिद्धांतरत्नमाला—भंडारी नेमिचन्द्र । पत्र सं० १६ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९४३ आषाढ़ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है ।

६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ७९ । क भण्डार ।

६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३४ । वे० सं० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

६३९. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा—भागचन्द्र । पत्र सं० २८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १९१२ आषाढ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को सं० १९६७ में कालूराम पांड्याका ने खरीदा था । यह ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशमाला का हिन्दी अनुवाद है ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १९२९ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० ८० । क भण्डार

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४९ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । क भण्डार ।

६४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १९४३ सावण बुदी ३ । वे० सं० ८२ । क भंडार ।

६४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७९ । ले० काल × । वे० सं० ८३ । क भण्डार ।

६४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । क भण्डार ।

६४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।

६४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । ङ भण्डार ।

६४७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५९ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । ङ भण्डार ।

६४८. उपदेशरत्नमालाभाषा—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र सं० २० । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १९६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ८५ । क भण्डार ।

६४९. उपदेश रत्नमाला भाषा—देवीसिंह छाबड़ा। पत्र सं० २०। आ० ११½×७¼ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। र० काल सं० १७६६ भादवा बुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६। क भण्डार।

विशेष—नरवर नगर में ग्रन्थ रचना की गई थी।

६५०. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ८८। क भण्डार।

६५१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ८६। क भण्डार।

६५२. उपसर्गार्थ विवरण—दुपाचार्य। पत्र सं० १। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६०। अ भण्डार।

६५३. उपासकाचार दोहा—आचार्य लक्ष्मीचन्द्र। पत्र सं० २७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल सं० १५५५ कार्तिक सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २२३। अ भण्डार।

विशेष—ग्रंथ का नाम श्रावकाचार भी है। पं० लक्ष्मण के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। विस्तृत प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

स्वस्ति संवत् १५५५ वर्षे कार्तिक सुदी १५ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० विद्यानंदी पट्टे भ० मल्लिभूषण तच्छिष्य पंडित लक्ष्मण पठनार्थं दूहा श्रावकाचार शास्त्रं समाप्तं। ग्रंथ सं० २७०। दोहों की संख्या २२४ है।

६५४. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० २४८। अ भण्डार।

६५५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० १७। अ भण्डार।

६५६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० २६४। अ भण्डार।

६५७. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७७। ले० काल ×। वे० सं० ६६५। क भण्डार।

६५८. उपासकाचार…………। पत्र सं० ६५। आ० १३½×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण (१५ परिच्छेद तक) वे० सं० ४२। च भण्डार।

६५९. उपासकाध्ययन…………। पत्र सं० ११४–३४१। आ० ११¼×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल। अपूर्ण। वे० सं० २०६। अ भण्डार।

६६०. ऋद्धिशतक—स्वरूपचन्द बिलाला। पत्र संख्या ६। आ० १०½×५। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १६०२ ज्येष्ठ सुदी १। ले० काल सं० १६०६ बैशाख बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २०। ख भण्डार।

विशेष—हीरानन्द की प्रेरणा से सवाई जयपुर में इस ग्रन्थ की रचना की गई।

६६१. कुशीलखंडन—जयलाल। पत्र सं० २६। आ० १२×७½। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १६३०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४११। अ भण्डार।

६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । क भण्डार ।

६६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

६६४. केवलज्ञान का ब्यौरा········। पत्र सं० १ । आ० १२½×५½ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

६६५. क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १२२ । आ० ११½×५½ । भाषा-संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३ । अ भण्डार ।

६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । वे० सं० ११५ । क भंडार ।

६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं १७६५ भादवा सुदी ४ । वे० सं० ७५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सवाई जयपुर मे महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे लिखी गई थी।

६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल सं० १५७७ बैशाख बुदी ४ । वे० सं० १८८७ । ट भण्डार ।

विशेष—'प्रशस्ति संग्रह' में ६७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है।

६६९. क्रियाकलाप········। पत्र सं० ७ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । छ भण्डार ।

६७०. क्रियाकलाप टीका········। पत्र सं० ६१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १५३६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज मांडौगढदुर्गे श्री सुलतानगयासुद्दीनराज्ये चन्देरीदेशेमहाखेरखानध्याप्रीयमाने वेसरे ग्रामे वास्तव्य कायस्थ पदमसी तत्पुत्र श्री राघौ लिखितं ।

६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । ञ भण्डार ।

६७२. क्रियाकलापवृत्ति········। पत्र सं० ६६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १३६६ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १८७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

एवं क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ।। छ ।। छ ।। सा० पूना पुत्रेण छाजूकेन लिखितं श्लोकानामष्टादश-शतानि ।। पूरी प्रशस्ति 'प्रशस्ति संग्रह' में पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है ।

६७३. क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह । पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल सं० १७८४ भादवा सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०२ । अ भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८३३ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५८ । अ भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १८८५ आषाढ़ बुदी १० । वे० सं० ८ । ग भंडार
विशेष—घ्योलालजी साह ने प्रतिलिपि करवायी थी।

६७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ से ११५ । ले० काल सं० १८८८ । अपूर्ण । वे० सं० १३० । ङ भण्डार ।

६७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । वे० सं० १३१ । ङ भण्डार ।

६७९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३४ । च भण्डार ।

६८०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १८५१ मंगसिर बुदी १३ । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

६८१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १९५६ आषाढ़ सुदी ६ । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति किशनगढ़ के मन्दिर की है।

६८२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०४ । ज भण्डार ।

६८३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १ से १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं है।

६८४. **क्रियाकोश**········। पत्र सं० ५० । आ० १०¾×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०९ । अ भण्डार ।

६८५. **कुगुरुलक्षण**········। पत्र सं० १ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१६ । अ भण्डार ।

६८६. **क्षमाबत्तीसी—जिनचन्द्रसूरि** । पत्र सं० ३ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४१ । अ भण्डार ।

६८७. **क्षेत्र समासप्रकरण**········। पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७०७ । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । अ भण्डार ।

६८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० × । अ भण्डार ।

६८९. **क्षेत्रसमासटीका—टीकाकार हरिभद्रसूरि** । पत्र सं० ७ । आ० ११×४½ । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । अ भण्डार ।

६९०. **गणसार**········। पत्र सं० ८ । आ० ११½×५½ भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । च भण्डार ।

६९१ **चउसरण प्रकरण**········। पत्र सं० ४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४६ । अ भण्डार ।

विशेष—

आरम्भ—सावज्जजोगविरइ उक्कित्तण गुणवउ अपडिवत्ती ।

खलि अस्सय निंदणावण तिगिच्छ गुण धारणा चेव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयण किलइहय ।

सावज्जे अरजोगाणं वज्जणा सेवणत्तणउ ॥२॥

दसणयारविसोही चउवीसा इच्छएण किज्जइय ।

अच्चपत्त अगुण कित्तण रूवेणं जिणवरिंदाणं ॥३॥

अन्तिम—मवणभावाबद्धा तिव्वगु भावाउ कुणई ताचेव ।

असुहाऊ निरणु बंधउ कुणई निव्वाउ मंदाउ ॥ ६० ॥

ता एवं कायव्वं बुहेहि निच्चंपि संकिलेसंमि ।

होई तिक्कालं सम्मं असंकिले संमि मुगइफलं ॥ ६१ ॥

चउरंगो जिणधम्मो नकउ चउरंगसरण मवि नकमं ।

चउरंगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

इ अजीव पमीयमहारि वीरंभद्दं तमेव अम्मयणं ।

भाए सुति संभम वंभं कारणं निव्वुइ सुहाणं ॥ ६३ ॥

इति चउसरण प्रकरणं संपूर्णं । लिखितं मणिवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थं ।

६६२. चारभावना·········। पत्र सं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३. चारित्रसार—श्रीमच्चामु डराय । पत्र सं० ६६ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १५४५ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसंयमसम्पन्न श्रीमज्जिनसेनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रसादासादित चतुरनुयोगपारावार पारगधर्मविजयश्रीमच्चामुण्डमहाराजविरचिते भावनासारसंग्रहे चरित्रसारे अनागारधर्म्मसमाप्तः ॥ ग्रन्थ संख्या १८५० ॥

सं० १५४५ वर्षे वैशाख बदी ५ भौमवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंद-कुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवाः तत् शिष्य आचार्य श्री मुनिरत्नकीर्तिः तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दोवरी तयोः पुत्राः साह डावर भार्या लक्ष्मी साह अर्जुन भार्या दामातयोः पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कर्म्मा तयोः पुत्रः साह दामा साह योजा भार्या होली तयोः पुत्रौ रणमल क्षेमराजसा. डाकुर भार्या खेत तयोः पुत्र हरराज । सा. जालप साह तेजा भार्या त्यजसिरि पुत्रपौत्रादि प्रभृतीनां एतेषां मध्ये सा. अर्जुन इदं चारित्रसारं शास्त्रं लिखाप्य अस्मात्र आर्यनारंगाय प्रदत्तं लिखितं ज्योतिकुम्भ ।

६९४. प्रति सं० २। पत्र सं० १४१। ले० काल सं० १९३५ आषाढ सुदी ४। वे० सं० १५१। क भण्डार।

विशेष—बा० दुलीचन्द ने लिखवाया।

६९५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १५८५ मंगसिर बुदी २। वे० सं० १७७। ङ भण्डार।

६९६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। वे० सं० ३२। ञ भण्डार।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं।

६९७. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १७८३ कार्तिक सुदी ८। वे० सं० १३५। ञ भण्डार।

विशेष—हीरापुरी में प्रतिलिपि हुई।

६९८. चारित्रसार भाषा—मन्नालाल। पत्र सं० ३७। आ० १२×६। भाषा-हिन्दी(गद्य)। विषय-धर्म। र० काल सं० १८७१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७। ग भण्डार।

६९९. प्रति सं० २। पत्र सं० १६८। ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६। वे० सं० १७८। ङ भण्डार।

७००. प्रति सं० ३। पत्र सं० १३८। ले० काल सं० १९६० कार्तिक बुदी १३। वे० सं० १७९। ङ भण्डार।

७०१. चारित्रसार·······। पत्र सं० २२ से ७६। आ० ११×५। भाषा-संस्कृत। विषय-आचारशास्त्र र० काल ×। ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ बुदी १०। अपूर्ण। वे० सं० २१६४। ट भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६४३ वर्षे शाके १५०७ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे दशम्यां तिथौ सोमवासरे पातिसाह श्री अकब्बरराज्येंप्रवर्त्तते पोथी लिखितं माधौ तत्पुत्र जोसी गोदा लिखितं मालपुरा।

७०२. चौबीस दण्डकभाषा—दौलतराम। पत्र सं० ६। आ० ६½×४½। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल १८वी शताब्दि। ले० काल सं० १८४७। पूर्ण। वे० सं० ४५७। अ भण्डार।

विशेष—लहरीराम ने रामपुरा में पं० निहालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

७०३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १८९९। अ भण्डार।

७०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी ४। वे० सं० १५४। क भंडार।

७०५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १९०। ङ भण्डार।

७०६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १९१। ङ भण्डार।

७०७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १९२। ङ भण्डार।

७०८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० ७३५। च भण्डार।

७०६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७३६ । ख भण्डार ।

७१०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—५७ पद्य हैं ।

७११. चौरासी आसादना ......| पत्र सं० १ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४३ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन मन्दिरों में वर्जनीय ८४ क्रियाओं के नाम है ।

७१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

७१३. चौरासी आसादना ......| पत्र सं० १ । आ० १०×४½" । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७१४. चौरासीलाख उत्तर गुण.... । पत्र सं० १ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३३ । अ भण्डार ।

विशेष—१८००० शील के भेद भी दिये हुए हैं ।

७१५. चौसठ ऋद्धि वर्णन.... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५१ । ज भण्डार ।

७१६. छहढाला—दौलतराम । पत्र सं० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२२ । अ भण्डार ।

७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १९५७ । वे० सं० १३२५ । अ भण्डार ।

७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८६१ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० १७७ । क भंडार

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १९६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २२ परीषह, पंचमंगलपाठ, महावीरस्तोत्र एवं संकटहरणबिनती आदि भी दी हुई हैं ।

७२०. छहढाला—बुधजन । पत्र सं० ११ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-धर्म । र० काल सं० १८५९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९७ । छ भण्डार ।

७२१. छेदपिण्ड—इन्द्रनंदि । पत्र सं० ३६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-प्रायश्चित शास्त्र । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८२ । क भण्डार ।

७२२. जैनागारप्रक्रियाभाषा—बा० दुलीचन्द । पत्र सं० २४ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र० काल सं० १९३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८ । क भण्डार ।

७२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १९६६ आसोज सुदी १० । वे० सं० २०९ । क भण्डार ।

७२४. ज्ञानानन्दश्रावकाचार—साधर्मी भाई रायमल्ल । पत्र सं० २३१ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३३ । क भण्डार ।

७२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५६ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । ङ भण्डार ।

७२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । ङ भण्डार ।

७२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३२ । ले० काल सं० १९३२ श्रावण सुदी १४ । वे० सं० २२२ । ङ भण्डार ।

७२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०२ से २७४ । ले० काल × । वे० सं० ५६७ । च भण्डार ।

७२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । च भण्डार ।

७३०. ज्ञानचितामणि—मनोहरदास । पत्र सं० १० । आ० ६$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५५३ । अ भण्डार ।

विशेष—५ से ८ तक पत्र नहीं है ।

७३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० ३३ । ग भंडार

७३२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

विशेष—१२८ छन्द है ।

७३३. तत्त्वज्ञानतरंगिणी—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत विषय–धर्म । र० काल सं० १५६० । ले० काल सं० १९३५ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १८९ । अ भण्डार ।

७३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७९९ चैत बुदी ८ । वे० सं० ३३३ । अ भंडार ।

७३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १९३४ ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० सं० २६३ । क भंडार

७३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८१४ । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

७३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० २४३ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७८० फागुण सुदी १५ । वे० सं० ५१३ । च भण्डार ।

७३९. त्रिवर्णाचार—भ० सोमसेन । पत्र सं० १०७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार-धर्म । र० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८५२ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २८८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र दूसरी लिपि के है ।

७४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८३८ कार्त्तिक सुदी १३ । वे० सं० ८१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंडित बखतराम और उनके शिष्य शम्भूनाथ ने प्रतिलिपि की थी ।

७४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४३ । ले० काल × । वे० सं० २८६ । ञ भण्डार ।

७४२. त्रिवर्णाचार .... । पत्र सं० १८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । ख भण्डार ।

७४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० २८५ । अपूर्ण । ङ भण्डार ।

७४४. त्रेपनक्रिया........ । पत्र सं० ३ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक की क्रियाओं का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८४ । च भण्डार ।

७४५. त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम । पत्र सं० ८२ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार । र० काल सं० १७६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८५ । च भण्डार ।

७४६. दण्डकपाठ........ । पत्र सं० २३ । आ० ८×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य (आचार) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६० । अ भण्डार ।

७४७. दर्शनप्रतिमास्वरूप........ । पत्र सं० १६ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८. दशभक्ति.... । पत्र सं० ५६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । र० काल सं० १६७३ आसोज बुदी ३ । वे० सं० १०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियों का वर्णन है । भट्टारक पद्मनंदि के आम्नाय वाले खण्डेलवाल ज्ञातीय सा० ठाकुर वंश में उत्पन्न होने वाले साह भीखा ने चन्द्रकीर्ति के लिए मौजमाबाद में प्रतिलिपि कराई ।

७४९. दशलक्षणधर्मवर्णन—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ४१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वे० सं० २९५ । ङ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार की गद्य टीका में से है ।

७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २९६ । ङ भण्डार ।

७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० २९७ । ङ भण्डार ।

७५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १९९३ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १९४१ । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ७ पत्र बाद में लिखे गये हैं ।

७५५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १७०६ । ट भण्डार ।

७५८. दशलक्षणधर्मवर्णन । पत्र सं० २८ । आ० १२¾×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८७ । च भण्डार ।

७५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७६०. दानपंचाशत—पद्मनंदि । पत्र सं० ८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३२५ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री पद्मनंदि मुनिराश्रित मुनि पुगमदान पंचाशत ललितवर्णा श्रयो प्रकरण ।। इति दान पंचाशत समाप्त ।।

७६१. दानकुल……। पत्र सं० ७ । आ० १० ×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० ८३३ । अ भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है । लिपि नागरी है । प्रारम्भ में ४ पत्र तक चैत्यवदनक भाष्य दिया है ।

७६२. दानशीलतपभावना—धर्मसी । पत्र सं० १ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५३ । ट भण्डार ।

७६३. दानशीलतपभावना…… । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—४ ५ पत्र नहीं हैं । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७६४. दानशीलतपभावना…… । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—मोती और कांकडे का संवाद भी बहुत सुन्दर रूप में दिया गया है ।

७६५. दीपमालिकानिर्णय ……। पत्र सं० १२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार बाछूलाल व्यास ।

७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०५ । क भण्डार ।

७६७. दोहापाहुड—रामसिंह । पत्र सं० २० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-आचार शास्त्र । र० काल १०वी शताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—कुल ३३३ दोहे हैं । ६ से १६ तक पत्र नहीं है ।

७६८. धर्मचाहना...... | पत्र सं० ८ | आ० ८½×७ | भाषा–हिन्दी | विषय–धर्म | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ३२८ | ङ भण्डार |

७६९. धर्मपंचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास | पत्र सं० ३ | आ० ११½×४½ इञ्च | भाषा–हिन्दी | विषय–धर्म | र० काल १५वीं शताब्दी | ले० काल सं० १८२७ पौष बुदी ९ | पूर्ण | वे० सं० ११० | छ भण्डार |

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदास विरचितं धर्मपंचविंशतिका नामशास्त्रं समाप्तम् | श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी |

७७०. धर्मप्रदीपभाषा—पन्नालाल संघी | पत्र सं० ६४ | आ० १२×७½ | भाषा–हिन्दी | र० काल सं० १९३५ | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ३३६ | ङ भण्डार |

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है |

७७१. प्रति सं० २ | पत्र सं० ६४ | ले० काल सं० १९६२ आसोज सुदी १४ | वे० सं० ३३७ | ङ भण्डार |

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है | पं० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य मे अर्थ लिखा है |

७७२. धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्त्ति | पत्र सं० ५० | आ० १०½×४½ | भाषा–संस्कृत | विषय–धर्म | र० काल × | ले० काल सं० १८१६ फागुन सुदी ५ | ञ भण्डार |

विशेष—१११६ प्रश्नो का उत्तर है | ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं | परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रश्नो के उत्तर है— १. दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर | २. श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन | ३. रत्नत्रय प्रश्नोत्तर | ४ तत्त्व पृच्छा वर्णन | ५. कर्म विपाक पृच्छा | ६. सज्जन चित्त वल्लभ पृच्छा |

मङ्गलाचरण :— तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरून् |
अनन्तमहिमारूढान् वंदे विश्वहितकारकान् || १ ||

चोखचन्द के शिष्य रायमल ने जयपुर में शांतिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी |

७७३. धर्मप्रश्नोत्तर ...... | पत्र सं० २७ | आ० ८½×४ | भाषा–हिन्दी | विषय–धर्म | र० काल × | ले० काल सं० १९३० | पूर्ण | वे० सं० ४०० | ञ भण्डार |

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है |

७७४. धर्मप्रश्नोत्तरी........ | पत्र सं० ४ से ३४ | आ० ८×६ इञ्च | भाषा–हिन्दी | विषय– धर्म | र० काल × | ले० काल सं० १९३३ | अपूर्ण | वे० सं० ५९८ | च भण्डार |

विशेष—पं० खेमराज ने प्रतिलिपि की |

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम | पत्र सं० १७७ | आ० १२×८ इञ्च | भाषा–हिन्दी | विषय– श्रावकों के आचार का वर्णन है | र० काल सं० १८६८ | ले० काल सं० १८९० | पूर्ण | वे० सं० ३३८ | ङ भण्डार |

७७६. धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार ......। पत्र सं० १ से ३५ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३० । ङ भण्डार ।

७७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । ञ भण्डार ।

७७८. धर्मरत्नाकर—संग्रहकर्ता पं० मंगल । पत्र सं० १६१ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल सं० १६८० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६८० वर्षे काष्ठासंघे मंदतट ग्रामे भट्टारक श्रीभूषण शिष्य पंडित मङ्गल कृत शास्त्र रत्नाकर नाम शास्त्र संपूर्ण । संग्रह ग्रन्थ है ।

७७६. धर्मरसायन—पद्मनंदि । पत्र सं० २३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । क भण्डार ।

७८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७६७ वैशाख बुदी ५ । वे० सं० ४३ । ञ भण्डार ।

७८१. धर्मरसायन .... । पत्र सं० ८ । आ० ११¼×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । अ भण्डार ।

७८२. धर्मलक्षण ......। पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५५ । ट भण्डार ।

७८३. धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी । पत्र सं० ४८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० का सं० १५४१ । ले० काल सं० १५४२ कार्त्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति बाद में संशोधित की हुई है । मंगलाचरण को काट कर दूसरा मंगलाचरण लिखा गया है । तथा पुष्पिका में शिष्य के स्थान में अंतेवासिना शब्द जोड़ा गया है । लेखक प्रशस्ति निम्न है—

श्री विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४२ वर्षे कार्त्तिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वर्द्धमानचैत्यालयविराजमाने श्रीहिसार पेरोजापत्तने सुलतानश्रीबहलोलसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सारस्वतगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवाः । तत्पट्टे कुवलयवनविकासनैकचन्द्र श्री शुभचन्द्रदेवाः । तत्पट्टे षट्तर्कचक्रवर्तिकृतसेवाः भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्शिष्ये मंडलाचार्य मुनि श्री रत्नकीर्त्तिः तस्य शिष्यो दिगम्बर मूलिर्मुनि श्री विमलकीर्त्ति पंडितश्रीमोहाख्यः तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भौंसा गोत्रे परमश्रावकसाधु साधूनामा तस्याद्या भार्या देवगुरुपादारविंद सेवनतत्परा साध्वी लाच्छिसंज्ञिका तयो श्रावकाचारोत्पन्नौ साधुभोजा—केशोभिधानौ । साधुनाम्नो, द्वितीय भार्या छाहुधी इति नाम्नी । तन्नंदनो निमित्तज्ञानविशारदसाधुसावलाभिधेयः अथ साधुभोजापत्नीपातिव्रत्याविगुणनिलयाभोलसिरि संज्ञा । तयोः प्रथमपुत्रः साधुधामीख्य । तद्भार्यादेवगुरुचरणारविंदचंचरीका साध्वी धनश्रीः । द्वितीय पुत्रः श्री गिरनारिगिरौ श्री नेमीश्वर यात्राकारक संघपति रूल्हा नामा । तस्य गेहिनी शीलशालिनी जही इति संज्ञिका । तयोर्ज्येष्ठ-पुत्रश्चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्षः शान्तिदासः तस्य भामिनी अनेकगुणशालिनी साध्वी हिउसिरि नाम-

धेयाः । द्वितीय पुत्रः पंचाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदासः तस्य भार्या विहितानेकधर्म्मकार्या गुणसिरि इति प्रसिद्धिः तत्पुत्रौ चिरंजीविनौ संसार चंदराय चंद्राभिधानौ । अथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायाशीलादिगुणरत्नखानिः साध्वी कमलश्री द्वितीयमनेकव्रतनियमानुष्ठानकारिका परमभाविकासाध्वी सूवरीनामा तत्तनूजः सम्यक्त्वालंकृतद्वादशव्रतपालकः । संघपति डूगराह । तत्कलत्र नानाशीलविनयादिगुणपात्रं साधु लाडी नाम धेयं । तयोः सुतो देवपूजाविषट्क्रिया कमलिनीविकास-नैकमार्त्तण्डोपमो जिनदासः तन्महिलाधर्म्मकर्म्मठ कर्म श्रीरतिनाम । एतेषां मध्येसंघपति ल्हाख्यं भार्या जही नाम्ना निजपुत्र शांतिदासनेमिदासयो न्योपार्जितवित्तेन इदं श्री धर्मसंग्रह पुस्तकपंचकं पंडितश्रीमीहाख्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्थं लिखापितं भव्यानां पठनाय । निजज्ञानावरणकर्म्मक्षयार्थं आचन्द्रार्क्कादिनंदतात् ।

७८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । क भण्डार ।

७८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १७८६ । वे० सं० ३४२ । ङ भण्डार ।

७८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८८६ चैत सुदी १२ । वे० सं० १७२ । च भण्डार ।

७८७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ से ५५ । ले० काल सं० १६४२ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० १७३ । च भण्डार ।

७८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० सं० १०८ । छ भंडार ।

विशेष—भखतराम के शिष्य संपतिराम हरिवंशदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८९. धर्मसंग्रहश्रावकाचार……… । पत्र सं० ६६ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा ली है ।

७९०. धर्मसंग्रहश्रावकाचार………। पत्र सं० २ से २७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४१ । ङ भण्डार ।

७९१. धर्मशास्त्रप्रदीप …। पत्र सं० २३ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६६ । अ भण्डार ।

७९२. धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ३६ । आ० ११¾×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्मोपदेश । र० काल सं० १७२४ आषाढ़ सुदी ऽऽ । ले० काल सं० १९४७ । पूर्ण । वे० सं० ३३४ । क भंडार

विशेष—नागबद्ध, धनुषबद्ध तथा चक्रबद्ध कविताओं के चित्र हैं । प्रति सं० २ के आधार से रचना संवत् है

७९३. प्रति सं० २ । ले० काल सं० १७२७ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ३४४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सांगानेर में हुई थी ।

७९४. धर्मसार—पं० शिरोमणिदास । पत्र सं० ११ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १७३२ बैशाख सुदी ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०४० । अ भण्डार ।

७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८८५ फागुण सुदी ५ । वे० सं० ४६ । ग भण्डार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साह नै सवाई माधोपुर में सोनपाल भौंसा से प्रतिलिपि करवाई ।

७९६. धर्मामृतसूक्तिसंग्रह—आशाधर । पत्र सं० ६५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचारएवं धर्म । र० काल सं० १२९६ । ले० काल सं० १७४७ आसोज बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २६५ ।

विशेष—संवत् १७४७ वर्षे आसौज सुदी २ बुधवासरे अयं द्वितीय सागरधर्म्म स्कंधः तद्यान्यत्रषट्सप्तव्यधिकानि चत्वारिंशशतानि ॥४७६ ॥ छ ॥

अंतमहुत्तमद्दलेषी रस मुच्छियं सिमापन्ता ॥
हुंति असंख्य जीवानिद्दिग सव्वदरसी ॥ दुग्धा गाथा ॥
संगर कड्ढ मिथीमूगचरोगमसू कम्मासं ।
एव सर्व्व विदलं वज्जोपव्वापयत्रेण ॥ १ ॥
विदलं जी भी पच्छा मुहं च पत्तं च दोविघो विज्जा ।
अहवावि अत्र पत्तो भुंजिज्जं गोग्साईय ॥ २ ॥

इति विदल गाथा ॥ श्री ॥

रचना का नाम 'धर्मामृत' है । यह दो भागो मे विभक्त है । एक सागारधर्मामृत तथा दूसरा अनागार धर्मामृत ।

७९७. धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार—सिंहनंदि । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७८५ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । घ भण्डार ।

७९८. धर्मोपदेशश्रावकाचार—अमोघवर्ष । पत्र सं० ३३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७८५ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । घ भण्डार ।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि की गई थी ।

७९९. धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० २६ । आ०१०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४५ । छ भण्डार । अन्तिम पत्र नहीं है ।

८००. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८९६ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० ८० । ज भण्डार ।

विशेष—भवानीचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २३ । ञ भण्डार ।

८०२. धर्मोपदेशश्रावकाचार……। पत्र सं० २१ । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८०३. धर्मोपदेशसंग्रह—सेवाराम साह । पत्र सं० २१८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८५८ । ले० काल × । वे० सं० ३४३ ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सं० १८५८ में हुई किन्तु कुछ अंश स० १८६१ में पूर्ण हुआ ।

८०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६० । ले० काल × । वे० सं० ५९७ । च भण्डार ।

८०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७६ । ले० काल × । वे० सं० १८९५ । ट भण्डार ।

८०६. नरकदुःखवर्णन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–नरक के दुखों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । अ भण्डार ।

विशेष—भूधर कृत पार्श्वपुराण में से है ।

८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

८०८. नरकवर्णन...... । पत्र सं० ८ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–नरकों का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ६०० । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की ।

८०९. नवकारश्रावकाचार....... । पत्र सं० १४ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–श्रावकों का आचार वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १६१२ बैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार

विशेष—श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में खंडेलवाल गोत्र वाली बाई तील्हू ने श्री आर्यिका विनय श्री को भेंट किया । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१२ वर्षे बैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार-गणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्-शिष्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सोनी गोत्रे बाई तील्हू इदं शास्त्रं नवकारे श्रावकाचारं ज्ञानावरणी कर्मक्षयं निमित्तं अर्जिका विनैसिरीए दत्तं ।

८१०. नष्टोदिष्ट....... । पत्र सं० ३ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३३ । अ भण्डार ।

८११. निजामणि—ब्र० जिनदास । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । क भण्डार ।

८१२. नित्यकृत्यवर्णन...... । पत्र सं० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । ङ भण्डार ।

८१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३५६ । ङ भण्डार ।

८१४. निर्माल्यदोषवर्णन—बा० दुलीचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०¾×८½ भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ । क भण्डार ।

८१५. निर्वाणप्रकरण....... । पत्र सं० ६२ । आ० ६½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३१ । ज भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज में है । यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमें २६ सर्ग हैं ।

८१६. निर्वाणमोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र सं० ११ । आ० ११¾×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ६७ । ख भण्डार ।

८१७. पंचपरमेष्ठीगुण········। पत्र सं० ५ । आ० ७×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२० । अ भण्डार ।

८१८. पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन—डालूराम । पत्र सं० ७३ । आ० ४३×४३ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्व साधु पंच परमेष्ठियों के गुणों का वर्णन । र० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १० । ले० काल सं० १८६६ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १७ । भ्क भण्डार ।

विशेष—६०वें पत्र से द्वादशानुप्रेक्षा भाषा है ।

८१९. पद्मनंदिपंचविंशतिका—पद्मनंदि । पत्र सं० ५ से ८३ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १५८९ चैत सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १६७१ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु निम्न प्रकार है—

श्री धर्मचन्द्रास्तदाम्नाये वैद्य गोत्रे खंडेलवालान्वये रामसरिवास्तव्ये राव श्री जगमाल राज्यप्रवर्त्तमाने साह सोनपाल············।

८२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२९ । ले० काल सं० १५७० ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा । वे० सं० २४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—संवत् १५७० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १ रवौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तच्छिष्य भ० भुवनकीर्तिस्तच्छिष्य भ० श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य ब्रह्म तेजसा पठनार्थं । देवुलि ग्रामे वास्तव्ये व्या० शवदासेन लिखिता । शुभं भवतु ।

विषय सूची पर "सं० १६८५ वर्षे" लिखा है ।

८२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ५२ । अ भण्डार ।

८२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९० । ले० काल सं० १८७२ । वे० सं० ४२२ । क भण्डार ।

८२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२० । क भण्डार ।

८२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

८२५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १७४८ माघ सुदी ४ । वे० सं० १०२ । ख भण्डार ।

विशेष—भट्ट वल्लभ ने अवंती में प्रतिलिपि की थी । ब्रह्मचर्याष्टक तक पूर्ण ।

८२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १५७८ माघ सुदी २ । वे० सं० १०३ । ख भण्डार ।

प्रशस्ति निम्नप्रकार है— संवत् १५७८ माघ सुदी २ बुधे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवास्त-त्भ्रातृ आचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्शिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तच्छिष्य आचार्य श्री यशःकीर्ति उपदेशात् हूंबड़

ज्ञातीय बागड़देशे सागवाड़ शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये हुंबड़ ज्ञातीय गांधी श्री पोपट भार्या धर्मादिस्तयोःसुत गांधी रामा भार्या रामादे सुत डूंगर भार्या दाडिमदे ताभ्यां स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं लिखाप्य इयं पंचविंशतिका दत्ता।

८२७. प्रति सं० ६। पत्र सं० २८८। ले० काल सं० १६३८ आषाढ़ सुदी ६। वे० सं० ५४। घ भण्डार

विशेष—वैराठ नगर में प्रतिलिपि की गई थी।

८२८. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१८। ङ भण्डार।

८२९. प्रति सं० ११। पत्र सं० ५१ से १४६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१६। ङ भण्डार।

८३०. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२०। ङ भण्डार।

८३१. प्रति सं० १३। पत्र सं० ८१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२१। ङ भण्डार।

८३२. प्रति सं० १४। पत्र सं० १३१। ले० काल सं १६८२ पौष बुदी १०। वे० सं० २६०। ज भण्डार

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं।

८३३. प्रति सं० १५। पत्र सं० १६८। ले० काल सं० १७३२ सावण सुदी ६। वे० सं० ४६। ञ भण्डार।

विशेष—पंडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई।

८३४. प्रति सं० १६। पत्र सं० १३७। ले० काल सं० १७३५ कार्त्तिक सुदी ११। वे० सं० १०८। ञ भण्डार।

८३५. प्रति सं० १७। पत्र सं० ७८। ले० काल ×। वे० सं० २६४। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सामान्य संस्कृत टीका सहित है।

८३६. प्रति सं० १८। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १५८५ बैशाख सुदी १। वे० सं० २१२०। ट भण्डार।

विशेष—१५८५ वर्षे बैशाख सुदी १५ सोमवारे श्री काष्ठासंघे माथुरगच्छे (माथुरान्वे) पुष्करगणे भट्टारक श्री हेमचन्द्रदेव। तत्........।

८३७. पद्मनंदिपंचविंशतिटीका........। पत्र सं० २००। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६५० भादवा बुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० ४२३। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नहीं हैं।

८६८. पद्मनंदिपच्चीसीभाषा—जगतराय। पत्र सं० १८०। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। र० काल सं० १७२२ फागुण सुदी १०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ रचना औरङ्गजेब के शासनकाल में आगरे में हुई थी।

८३६. प्रति सं० २। पत्र सं० १७१। र० काल सं० १७५८। वे० सं० २६२। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

८४०. पद्मनंदिपच्चीसीभाषा—मन्नालाल खिन्दूका। पत्र सं० ६४१। आ० १३×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-धर्म। र० काल सं० १९१५ मंगसिर बुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। क भण्डार

विशेष—इस ग्रन्थ की वचनिका लिखना ज्ञानचन्द्रजी के पुत्र जौंहरीलालजी ने प्रारम्भ की थी। 'सिद्ध स्तुति' तक लिखने के पश्चात् ग्रन्थकार की मृत्यु होगई। पुनः मन्नालाल ने ग्रन्थ पूर्ण किया। रचनाकाल प्रति सं० ३ के आधार से लिखा गया है।

८४१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१७। ले० काल ×। वे० सं० ४१७। क भण्डार।

८४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५७। ले० काल सं० १९४४ चैत बुदी ३। वे० सं० ४१७। ङ भण्डार।

८४३. पद्मनंदिपच्चीसीभाषा……। पत्र सं० ९७। आ० ११×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१८। क भण्डार।

८४४. पद्मनंदिश्रावकाचार—पद्मनंदि। पत्र सं० ४ से ५३। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६१३। अपूर्ण। वे० सं० ४२८। ङ भण्डार

८४५. प्रति सं० २। पत्र सं० १० से ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१७०। ट भण्डार।

८४६. परीषहवर्णन……। पत्र सं० ६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४४१। क भण्डार।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह भी है।

८४७. पुच्छीसेण……। पत्र सं० २। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२७०। पूर्ण। अ भण्डार।

८४८. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय—अमृतचन्द्राचार्य। पत्र सं० १९। आ० १३½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७०७ मंगसिर सुदी ३। वे० सं० ५३। अ भण्डार।

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति के शिष्य सदाराम ने फागुईपुर में प्रतिलिपि की थी।

८४९. प्रति स० २। पत्र सं० ९। ले० काल ×।। वे० सं० ५५। छ भण्डार।

८५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५९। ले० काल सं० १८३२। वे० सं० १७८। अ भण्डार।

८५१. प्रति सं० ४। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १९३४। वे० सं० ४७१। क भण्डार।

विशेष—श्लोकों के ऊपर नीचे संस्कृत टीका भी है।

८५२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ४७२। क भण्डार।

८५३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ९७। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। ग्रन्थ का दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य भी दिया हुआ है।

८५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है तथा जयपुर में लिखी गई थी ।

८५५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३१ । ज भण्डार ।

८५६. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८२७ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । अ भण्डार ।

८५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १६५२ । वे० सं० ४७३ । क भण्डार ।

८५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ११८ । झ भण्डार ।

८५९. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ११६ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल सं० १६५२ । पूर्ण । वे० सं० ४७३ । क

८६०. पुरुषार्थसिद्धयुपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र सं० १३६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८७१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७२ । क भण्डार ।

८६१. पुरुषार्थानुशासन—श्री गोविन्द भट्ट । पत्र सं० ३८ से ६७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ भादवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति विस्तृत दी हुई है । ज्योजीराम भांवसा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

८६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७१ । ले० काल × । वे० सं० ४७० । क भण्डार ।

८६४. प्रतिक्रमण……। पत्र सं० १३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुये दोषों की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । च भण्डार ।

८६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । च भण्डार ।

८६६. प्रतिक्रमण पाठ…… । पत्र सं० २६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय किये हुये दोषो की आलोचना र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ३२ । ज भण्डार ।

८६७. प्रतिक्रमणसूत्र……। पत्र सं० ६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुये दोषों की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६८ । अ भण्डार ।

८६८. प्रतिक्रमण…… । पत्र सं० २ से १८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुये दोषों की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

८६९. प्रतिक्रमणसूत्र—(वृत्ति सहित)…… । पत्र सं० २२ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय किये हुए दोषों की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । घ भण्डार ।

८७०. प्रतिमाउत्थापक कूं उपदेश—जगरूप । पत्र सं० ४७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । ख भण्डार ।

विशेष—औरङ्गाबाद में रचना की गयी थी ।

८७१. प्रत्याख्यान········ । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७२ । ट भण्डार ।

८७२. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार······ । पत्र सं० २५ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६१८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है ।

८७३. प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा—बुलाकीदास । पत्र सं० १६८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १७४७ बैशाख सुदी २ । ले० काल सं० १८८६ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ६२ । ग भण्डार ।

विशेष—श्योलालजी के पुत्र छाजूलालजी साह ने प्रतिलिपि करायी । इस ग्रन्थ का ¾ भाग जहानाबाद तथा चौथाई ¼ भाग पानीपत में लिखा गया था ।

'तीन हिस्से या ग्रन्थ को भये जहानाबाद ।
चौथाई जलपथ विषै वीतराग परसाद ।।'

८७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८८५ सावण सुदी १ । वे० सं० ६३ । ग भण्डार ।

विशेष—श्योलालजी साह ने सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर ग्रन्थ चढाया ।

८७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० ५२१ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १८२१ फागुण सुदी १३ को बखतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी और उसी प्रति से इस की नकल उतारी गई है । महात्मा सीताराम के पुत्र लालचन्द ने इसको प्रतिलिपि की ।

८७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ६४८ । अपूर्ण । च भण्डार ।

८७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १९६६ माघ सुदी १२ । वे० सं० १११ । छ भण्डार ।

८७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८८३ पौष बुदी १४ । वे० सं० १६ । झ भण्डार ।

८७९. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३४८ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १९३१ पौष बुदी १४ । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । क भण्डार ।

८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०० । ले० काल सं० १९३९ । वे० सं० ५१५ । क भण्डार ।

८८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३१ से ४६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४६ । च भण्डार ।

८८२. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार········। पत्र सं० ३३ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३२ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४७ । च भण्डार ।

८८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१८ । क भण्डार ।

८८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

८८६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १३१ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६६५ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १४२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या २६०० ।

प्रशस्ति—संवत् १६६५ वर्षे फागुण सुदी १० सोमे खिराडदेशे पनवाड़नगरे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राममेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीमसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सोमकीत्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयसेनदेवा भ० श्री त्रिभुवनकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रत्नभूषणदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्त्तिस्तच्छिष्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखितं ।

८८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १ । वे० सं० १७४ । अ भण्डार ।

८८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १८८१ मंगसिर सुदी ११ । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शासनकाल मे जैतराम साह के पुत्र श्योजीलाल की भार्या ने प्रतिलिपि कराई । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर मे अंबावती (आमेर) बाजार में स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे जती तनसागर के शिष्य मन्नालाल के यहां सवाईराम गोधा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के चड़ो में (१२वें दिन पर) श्योजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में सं० १८६३ में भेंट की ।

८८९. प्रति सं ४ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १६०० । वे० सं० २१७ । अ भण्डार ।

८९०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१६ । ले० काल सं० १६७६ आसोज बुदी ५ । वे० सं० २११ । अ भण्डार ।

विशेस—नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—संवत् १६७६ वर्षे आसोज बदि शनिवासरे रोहणी नक्षत्रे मोजाबादनगरे राज्यश्रीराजाभावसिंध राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्त्तितत्पट्टे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये गोधा गोत्रे श्रावक-जनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरण-निरत-चित साह श्री धनराज

तद्भार्या सीलतोय-तरङ्गिणी विनय-वागेश्वरी धनसिरि तयोः पुत्राः त्रयः प्रथमपुत्रधर्मधुराधरण धीरसाह श्री रूपा तद्भार्या दानसीलगुणभूषणभूषितगात्रानाम्ना गूजरि तयोः पुत्र राजसभा शृंगारहारस्वप्रतापदिनकरमुकुलिकृतशत्रुमुखकुमुदाकर स्वज……निसाकरमाह्लादित कुवलयदानगुण मल्लीकृतकल्पपादप श्री पंचपरमेष्ठिचिंतन पवित्रितचित्त सकलगुणिजनविश्रामस्थान साह श्री नानूतन्मनोरमाः पंच प्रथमनारंगदे द्वितीया हरखमदे तृतीया सुजानदे चतुर्था ललालदे पंचम भार्या लाडी । हरखमदेजनितपुत्राः त्रयः स्वकुलनामप्रकाशनैकचन्द्राः प्रथम पुत्र साह आशकर्ण तद्भार्या अहंकारदेपुत्र नाथु । दुतीभार्यालाडमदे पुत्र केसवदास भार्या कपूरदे द्वितीय पुत्र चि० लूणकरण भार्या द्वै प्रथमललतादे पुत्र रामकर्ण द्वितीय लाडमदे । तृतीय पुत्र चि० वलिकर्ण भार्या बालमदे । चतुर्थ पुत्र चि० पूर्णमल भार्या पुरवदे । साह धनराज द्विती पुत्र साह श्री जोधा तद्भार्या जौणादेतयोः पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्रधार्मिक साह करमचन्द तद्भार्या मोहागदे तयो पुत्र चि० दयालदास भार्या दाडमदे । द्वितीपुत्र साह धर्मदास तद्भार्याद्वै । प्रथम भार्या धारादे द्वितीय भार्या लाडमदे तयो पुत्र साह डूंगरसी तद्भार्या दाडिमदे तत्पुत्रौ द्वै । प्र० पु० लक्ष्मीदास द्वि० पुत्र चि० तुलसीदास । जोधा तृतीय पुत्र जिणचरणकमलमधुप साह पदारथ तद्भार्या हमीरदे । साह धनराज तृतीय पुत्र दानगुणश्रेयाससकल जनानन्दकारकस्ववचनप्रतिपालनसमर्थसर्वोपकारकसाहश्रीरतनसी तद्भार्या द्वै प्रथम भार्या रत्नादे द्वितीय भार्या नौलादे तयो पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र क्षुपाल तद्भार्या मुष्यारदे तयोःपुत्र चि० भोजराज तद्भार्या भावलदे । श्रीरतनसी द्वितीय पुत्र साह गेगराज तद्भार्या गौरादे तयोपुत्राः त्रयः प्रथम पुत्र चि० सादूल द्वि० पुत्र चि० मिघा तृतीय पुत्र चि० मलहदी । साह रतनसी तृतीय पुत्र साह मरथा तद्भार्या भावलदे चतुर्थ पुत्र चि० परवत तद्भार्या पाटमदे । एतेषां मध्ये सिघवी श्री नानू भार्या प्रथम नारंगदे । भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्त्ति शिष्य आ० श्री शुभचन्द्र इदं शास्त्रं व्रतनिमित्तं घटापितं कर्मक्षयनिमित्तं । ज्ञानवान ज्ञानदाने……

८६१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८३ । अ भण्डार ।

८६२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३० । ले० काल सं० १८६२ । अपूर्ण । वे० सं० १०१६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । बीच के कुछ पत्र नहीं है । पं० केशरीसिंह के शिष्य लालचन्द ने महात्मा शंभुराम से सवाई जयपुर में प्रतिलिपि करायी ।

८६३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १६८२ । वे० सं० ५१६ । क भण्डार ।

८६४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १६५८ । वे० सं० ५२० । क भण्डार ।

८६५. प्रति सं० १० । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १६७७ पौष सुदी । वे० सं० ५१७ । क भण्डार ।

८६६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८८…। वे० सं० ११५ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० रूपचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८६७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

८६८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१७ । ङ भण्डार ।

८६९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१७ । ङ भण्डार ।

९००. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । वे० सं० ५२० । ङ भण्डार ।

६०१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १४५ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र बाद मे लिखा हुआ है ।

६०२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

६०३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १७७४ फागुण बुदी ८ । वे० सं० १०६ ।

विशेष—पांचोलास में चातुर्मास योग के समय पं० सोभागविमल ने प्रतिलिपि की थी । सं० १८२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे घासीराम छाबड़ा ने सांगानेर में गोधो के मन्दिर मे चढाई ।

६०४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १६० । ले० काल सं० १८२६ मंगसिर बुदी १४ । वे० सं० ७८ । ञ भण्डार ।

६०५. प्रति स० २० । पत्र सं० १३२ । ले० काल × । वे० सं० २२३ । ञ भण्डार ।

६०६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १७५६ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०२ ।

विशेष—महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० ३७५ । ञ भण्डार ।

६०८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६८८ पौष सुदी ५ । वे० सं० ३४३ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पहाड्या साह श्री कान्हा इदं पुस्तकं लिखापितं ।

६०६. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० १८७३ । ट भण्डार ।

६१०. प्रश्नोत्तरोद्धार ...... । पत्र संख्या ५० । आ०—१०½×५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल—× । ले० काल—सं० १६०५ सावन बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

विशेष—चूरू नगर में स्योजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६११. प्रशस्तिकाशिका—बालकृष्ण । पत्र संख्या १६ । आ० ६½×४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल—× । ले० काल—सं० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—बख्तराम के शिष्य शंभु ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—नत्वा गणपति देवं सर्व विघ्न विनाशनं ।

गुरु च करुणानाथं ब्रह्मानंदाभिधानकं ।।१।।

प्रशस्तिकाशिका दिव्या बालकृष्णेन रच्यते ।

सर्वषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ।। २ ।।

चतुर्णामपि वर्णानां क्रमतः कार्यकारिका ।

लिख्यते सर्वविद्यार्थि प्रबोधाय प्रशस्तिका ।। ३ ।।

यस्या लेखन मात्रेण विद्याकीर्तिपगोपि च ।

प्रतिष्ठा लभ्यते शीघ्रमनायासेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२. प्रात: क्रिया······ । पत्र सं० ४ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० १६१६ । ट भण्डार ।

६१३. प्रायश्चित ग्रंथ ······ । पत्र सं० ३ । आ० १३×६ इन्च । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१४ प्रायश्चित विधि—अकलंक देव । पत्र सं० १० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल–× । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—१० पत्र से आगे अन्य ग्रंथो के प्रयश्चित पाठो का संग्रह है ।

६१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६३४ चैत्र बुदी १ । वे० सं० ११० । व भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने जोबनेर के मंदिर जयपुर प्रतिलिपि की थी ।

६१७. प्रति सं० ४ । ले० काल–× । वे० सं० ५२३ । ङ भण्डार ।

६१८. प्रति सं० ५ । ले० काल–सं० १७४८ । वे० सं० २४४ । च भण्डार ।

विशेष—आचार्य महेन्द्रकीर्ति ने मूंबावती (अंबावती) मे प्रतिलिपि की ।

६१९. प्रति सं० ५ । ले० काल–सं० १७६६ । वे० सं० ८ । व्य भण्डार ।

विशेष—बगरू नगर में पं० हीरानंद के शिष्य प चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६२०. प्रायश्चित विधि·········। पत्र सं० ५६ । आ० ६×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल–× । ले० काल सं० १८०५ । अपूर्ण । वे० सं०–१२८० । अ भण्डार ।

विशेष—२२ वां तथा २६ वां पत्र नही है ।

६२१. प्रायश्चित विधि········। पत्र सं० ६ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुये दोषो का पश्चाताप । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० १२८१ । अ भण्डार ।

६२२. प्रायश्चित विधि– भ० एकसंधि । पत्र सं० ४ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुए दोषों की आलोचना । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ११०७ । अ भण्डार ।

६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल–× । वे० सं० २४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठासार का दशम अध्याय है ।

६२४. प्रति सं० ३ । ले० काल सं० १७६६ । वे० सं० ३३ । व्य भण्डार ।

६२५. प्रायश्चित शास्त्र—इन्द्रनन्दि । पत्र सं० १४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुए दोषों का पश्चाताप । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० १२३ । अ भण्डार ।

६२६. प्रायश्चित शास्त्र·······। पत्र सं० ६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–गुजराती (लिपि

देवनागरी) विषय–किये हुए दोषों की आलोचना र० काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० १६६८ । ट भण्डार ।

६२७. **प्रायश्चित्त समुच्चय टीका—नंदिगुरु** । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ । भाषा-संस्कृत । विषय–किये हुए दोषों की आलोचना । र० काल–× । ले० काल–सं० १६३४ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ११८ । ख भण्डार ।

६२८ **प्रोषध दोष वर्णन**··· । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल–× । वे० सं० १४७ । पूर्ण । छ भण्डार ।

६२६. **बाईस अभक्ष्य वर्णन—बाबा दुलीचन्द** । पत्र सं० ३२ । आ० १०½×६¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–श्रावकों के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । र० काल–सं० १६४१ बैशाख सुदी ५ । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ५३२ । क भण्डार ।

६३० **बाईस अभक्ष्य वर्णन** · ×। पत्र सं० ६ । आ० १०×७ । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावकों के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति संशोधित है ।

६३१. **बाईस परीषह वर्णन—भूधरदास** । पत्र सं० ६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–मुनियों द्वारा सहन किये जाने योग्य परीषहों का वर्णन । र० काल १८ वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

६३२. **बाईस परीषह** ······ × । पत्र सं० ६ । आ० ६×४। भाषा–हिन्दी । विषय–मुनियों के सहने योग्य परीषहों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । छ भण्डार ।

६३३. **बालाविबोध (णमोकार पाठ का अर्थ)** ·· × । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ । भाषा प्राकृत, हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि माणिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६३४. **बुद्धि विलास—बखतराम साह** । पत्र सं० ७५ । आ० ७×६ । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । ले० काल सं० १८३२ । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । ट भण्डार ।

६३५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवणराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

६३६. **ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन** ··· ·· × । पत्र सं० ४ । आ० ८×५ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० पूर्ण । वे० सं० २३१ । झ भण्डार ।

६३७. **बोधसार**···· · × । पत्र सं० ३७ । आ० १२×५½ भाषा–हिन्दी विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६२८ । काती सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२५ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ बीसपंथ की आम्नाय की मान्यतानुसार है ।

६३८. भगवद्गीता (कृष्णार्जुन संवाद)····× । पत्र सं० २२ से ४६ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १५६७ । ट भण्डार ।

६३९. भगवती आराधना—शिवाचार्य । पत्र सं० ३२१ । आ० १११/२×५३ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–मुनि धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण वे सं० ५४९ । क भण्डार ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० सं० ५५० । क भण्डार ।

विशेष—पत्र ९६ तक संस्कृत में गाथाओं के ऊपर पर्यायवाची शब्द दिये हुए है ।

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । वे० सं० २५९ च भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ एवं अन्तिम पत्र बाद में लिखकर लगाये गये है ।

६४२. प्रति सं० ४ । २६५ । ले० काल × । वे० सं० २६० च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

६४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९३ । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ संस्कृत में टोका भी दी है ।

६४४. भगवती आराधना टीका—अपराजितसूरि श्रीनंदिगरण । पत्र सं० ४३४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–मुनि धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १७९३ माघ बुदी ७ पूर्ण । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

६४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१५ । ले० काल सं० १५९७ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० ३३१ । अ भण्डार ।

६४६. भगवती आराधना भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ६०७ । आ० १२१/२×८३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १९०८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४८ । क भण्डार ।

६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३० । ले० काल सं० १९५५ माह बुदी १३ । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२२ । ले० काल सं० १९११ जेष्ठ सुदो ९ । वे सं० ६६५ । च भण्डार ।

६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ५१९ । ले० काल सं० १९२८ वैशाख सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । ज भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हीरालालजी बगडा का है । मिती १९४२ माघ सुदी १० को आचार्य जी के कर्मदहन व्रत के उद्यापन में चढ़ाई ।

६५०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०५ । ज भण्डार ।

६५१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० १६६७ । ट भण्डार ।

६५१. भावदीपक—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १ से २७७ । आ० १०×५¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल—सं० १८५७ पौष सुदी १५ । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७३ । र० काल × । ले० काल—सं० १६०४ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० २५४ । ज भण्डार ।

६५४. भावनासारसंग्रह—चामुण्डराय । पत्र सं० ४१ । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल—× । ले० काल—सं० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी अष्टमी सोमवासरे लिखितं बाई धानी कर्मक्षयनिमित्तं ।

६५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १५३१ फागुण बुदी ८ । वे० सं० २११६ । ट भण्डार ।

६५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल—× । अपूर्ण । वे० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—७४ से आगे के पत्र नही हैं ।

६५७. भावसंग्रह—देवसेन । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल—× । ले० काल—सं० १६०७ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ कर्त्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे । प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विशाखानक्षत्रे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढ महादुर्गे महाराउ श्री रामचंद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा.......... ।

६५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४५ । ले० काल—सं० १६०४ भादवा सुदी १५ । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भौमदिने शतभिषा नाम नक्षत्रे धृतनाम्नियोगे सुरित्राण सलेमसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने सिकंदराबादशुभस्थाने श्रीमत्काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्त्ति देवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीभानुकीर्त्ति तस्य शिक्षणी बा० मोमा योग्य भावसंग्रहाख्य शास्त्रं प्रदत्तं ।

६५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल—× । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

६६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल—सं० १८६४ पौष सुदी १ । वे० सं० ५५८ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

९६१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७ से ४५। ले० काल-सं० १५९४ फागुण बुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० २१६३। ट भण्डार।

९६२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४०। ले० काल-सं० १५७१ असाढ बुदी ११। वे० सं० २१६६। ट भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १५७१ वर्षे आषाढ बदि ११ आदित्यवारे पेरोजा साहे। श्री मूलसंघे पंडितजिणदासेन लिखापितं।

९६३. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० सं० २१७६। ट भण्डार।

विशेष—६ से आगे पत्र नही है।

९६४. भावसंग्रह—श्रुतमुनि। पत्र सं० ५६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-सं० १७६२। अपूर्ण। वे० सं० ३१९। अ भण्डार।

विशेष—बीसवां पत्र नही है।

९६५. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० सं० १३३। ख भण्डार।

९६६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५६। ले० काल-सं० १७८३। वे० सं० ५६६। ङ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

९६७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल-×। वे० सं० १८४१। ट भण्डार।

विशेष—कहीं २ संस्कृत मे अर्थ भी दिये हैं।

९६८. भावसंग्रह—पं० वामदेव। पत्र सं० २७। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-सं० १८२८। पूर्ण। वे० सं० ३१७। अ भण्डार।

९६९. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० सं० १३४। ख भण्डार।

विशेष—पं० वामदेव की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है। २ प्रतियो का मिश्रण है। अन्त के पृष्ठ पानी मे भीगे हुये है। प्रति प्राचीन है।

९७०. भावसंग्रह……। पत्र सं० १४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-×। वे० सं० १३५। ख भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। १४ मे आगे पत्र नही है।

९७१. मनोरथमाला……। पत्र सं० १। आ० ८×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० सं० ५७०। अ भण्डार।

९७२. मरकतविलास—पन्नालाल। पत्र सं० ६१। आ० १२×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावक धर्म वर्णन। र० काल-×। ले० काल-×। अपूर्ण। वे० सं० ६६२। च भण्डार।

९७३. मिथ्यात्वखण्डन—बखतराम। पत्र सं० ५८। आ० १४×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-धर्म। र० काल-सं० १८२१ पौष सुदी ५। ले० काल-सं० १८९२। पूर्ण। वे० सं० ५७७। क भण्डार।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल–× । वे० सं० ६७ । ग भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ । ले० काल–सं० १८२४ । वे० सं० ६६४ । च भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ से १०५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नही हैं । पत्र फटे हुये है ।

६७७. मिथ्यात्वखंडन·······। पत्र सं० १७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नही है ।

६७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ५६४ । ङ भण्डार ।

६७९. मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र सं० ३६८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–सं० १८२६ मंगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७३ । ले० काल–× । वे० सं० ५८० । क भण्डार ।

६८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—५१ से आगे पत्र नहीहै ।

६८२. मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र सं० १२६ । आ० १२¾×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचारशास्त्र । र० काल–× । ले० काल–सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी ।

६८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल–× । वे० सं० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल–× । वे० सं० २७७ । च भण्डार ।

६८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५५ । ले० काल–× । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

६८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल–सं० १८३० पौष सुदी २ । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचंद के शिष्य पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८० । ले० काल–सं० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वसुख ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३७ । ले० काल–सं० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० सं० ४५५ । अ भण्डार ।

६८९. मूलाचारभाषा—ऋषभदास । पत्र सं० ३० से ६३ । आ० १०×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–सं० १८८८ । ले० काल–सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । च भण्डार ।

६६०. **मूलाचार भाषा**……। पत्र सं० ३० से ६३ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ५६७ ।

६६१. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १ से १००, ३४६ से ३६० । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

६६२. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १ से ८१, १०१ से ६०० । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ६०० ।

६६३. **मोक्षपैडी—बनारसीदास** । पत्र सं० १ । आ० ११½×६¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ७६५ । अ भण्डार ।

६६४. **प्रति सं० २** । पत्र सं ४ । ले० काल–× । वे० सं० ६०२ । क भण्डार ।

६६५. **मोक्षमार्गप्रकाशक—पं० टोडरमल** । पत्र स० ३२१ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–ढूंढारी (राजस्थानी) गद्य । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–सं०१६५४ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८३ । क भण्डार ।

विशेष—ढूंढारी शब्दों के स्थान पर शुद्ध हिन्दी के शब्द भी लिखे हुये है ।

६६६ **प्रति सं० २** । पत्र सं० २८२ । ले० काल-सं० १६५४ । वे० सं० ५८४ । क भण्डार ।

६६७. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २१२ । ले० काल–सं० १६४० । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।

६६८. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० २१२ । ले० काल–सं० १८८८ वैशाख बुदी ६ । वे० सं ६८ । ग भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

६६६. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० २२८ । ले० काल–× । वे० सं० ६०३ । क भण्डार ।

१०००. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० २७६ । ले० काल–× । वे० सं० ६५८ । च भण्डार ।

१००१. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० १०१ से २१६ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० स० ६५६ । च भण्डार ।

१००२. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० १२३ से २२५ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ६६० । च भण्डार ।

१००३. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० ३५१ । ले० काल–× । वे० सं० ११६ । झ भण्डार ।

१००४. **यतिदिनचर्या—देवसूरि** । पत्र सं० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–सं० १६६८ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री सुविहितशिरोमणिश्रीदेवसूरिविरचिता यतिदिनचर्या संपूर्णा ।

प्रशस्तिः—संवत् १६६८ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे नवमीभौमवासरे श्रीमत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री ५ विजयसेन सूरीश्वराय लिखितं ज्योतिसी उधव श्री शुजाउलपुरे ।

१००५. **यत्याचार—आ० वसुनंदि** । पत्र सं० ६ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–

मुनि धर्म वर्णन । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२० । अ भण्डार ।

१००६. रत्नकरण्डश्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ७ । आ० १०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । ग्रंथ का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है ।

१००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टिप्पणियां दी हुई है । १६३ श्लोक हैं ।

१००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । वे० सं० ६१२ । क भण्डार ।

१००६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल-सं० १६३८ माह सुदी १० । वे० सं० १५६ । ख भण्डार ।

विशेष—कही २ संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१०१०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३० । क भण्डार ।

१०११. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३१ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । क भण्डार ।

१०१३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८-५६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३२ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२ । ले० काल-× । वे० सं० ६३४ । क भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४० । ले० काल-× । वे० सं० ६३५ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में पन्नालाल संघी कृत टीका भी है । टीका सं० १९३१ में की गयी थी ।

१०१६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २६ । ले० काल-× । वे० सं० ६३७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१०१७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४२ । ले० काल-सं० १९५० । वे० सं० ६३८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३९ । क भण्डार ।

१०१९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है । संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २९२ । ख भण्डार ।

१०२१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल-× । वे० सं० २९३ । ख भण्डार ।

१०२२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ९ । ले० काल-× । वे० सं० २९४ । ख भण्डार ।

१०२३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १३ । ले० काल–× । वे० सं० २६५ । च भण्डार ।

१०२४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल–× । वे० सं० ७४० । च भण्डार ।

१०२५. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ । ले० काल–× । वे० सं० ७४२ । च भण्डार ।

१०२६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३ । ले० काल–× । वे० सं० ७४३ । च भण्डार ।

१०२७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १० । ले० काल–× । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।

१०२८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १० । ले० काल–× । वे० सं० १४४ । ज भण्डार ।

१०२६. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १६ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । झ भण्डार ।

१०३० प्रति सं० २५ । पत्र सं० १२ । ले० काल–सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १५८ । अ भण्डार ।

१०३१. रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द । पत्र सं० ४३ । आ० १०३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–सं० १८६० श्रावण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ । अ भण्डार ।

१०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल–× । वे० सं० १०६५ । अ भण्डार ।

१०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१–५३ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे सं० ३८० । अ भण्डार ।

१०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६–६२ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ३२६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम उपासकाध्ययन टीका भी है ।

१०३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल–× । वे० सं० ६३६ । ड भण्डार ।

१०३६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल–सं० १७७६ फागुण सुदी ५ । वे० सं० १७८ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय मे खंडेलवाल जातीय भौसा गोत्रोत्पन्न साह छजमलजी के वंशज साह चन्द्रभाण की भार्या ल्होडी ने ग्रंथ की प्रतिलिपि कराकर आचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति के निमि कर्मक्षय निमित्त भेट की ।

१०३७. रत्नकरण्डश्रावकाचार—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० १०४२ । आ० १२१/२×८१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १६२० चैत्र बुदी १४ । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ २ वेष्टनो में है । १ से ४५५ तथा ४५६ से १०४२ तक है । प्रति सुन्दर है ।

१०३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ६२० । क भण्डार ।

१०३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ से १७६ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । क भण्डार ।

१०४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल–आसोज बुदि ८ सं० १६२१ । वे० सं० ६६६ । च भण्डार ।

१०४१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० ६७० । च भण्डार ।

विशेष—नेमीचंद कालख वाले ने लिखा और सदासुखजी डेडाकाने लिखाया—यह अन्त में लिखा हुआ है ।

१०४२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल-× । वे० सं० १८२ । छ भण्डार ।

विशेष—"इस प्रकार मूलग्रंथ के प्रसाद तै सदासुखदास डेडाका का अपने हस्त तै लिखि ग्रंथ समाप्त किया ।" अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २२१ । ले० काल-सं० १९६३ कार्तिक बुदी ऽऽ । वे० सं० १९८ । छ भण्डार ।

१०४४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५३६ । ले० काल-सं० १९५० वैशाख सुदी ६ । वे० सं० । झ भण्डार ।

विशेष—इस ग्रंथ की प्रतिलिपि स्वयं सदासुखजी के हाथ से लिखे हुये सं० १९१९ के ग्रंथ से सामोद मे प्रतिलिपि की गई है । महासुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१०४५. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा—नथमल । पत्र सं० २९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-सं० १९२० माघ सुदी ६ । ले० काल-× । वे० सं० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१०४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० ६२३ । क भण्डार ।

१०४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल-× । वे० सं० ६२१ । क भण्डार ।

१०४८. रत्नकरण्डश्रावकाचार—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ४४ । आ० १०३/४×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-सं० १९३१ पौष बुदी ७ । ले० काल-सं० १९५३ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । क भण्डार ।

१०४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल-× । वे० सं ६१४ । क भण्डार ।

१०५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २९ । ले० काल-× । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल-× । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०५२. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा........ । पत्र सं० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-सं० १९५७ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ६१७ । क भण्डार ।

१०५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७० । ले० काल-सं० १९५३ । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

१०५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल-× । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

१०५५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ से १५९ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६४० । ङ भण्डार ।

१०५६. रत्नमाला—आचार्य शिवकोटि । पत्र सं० ४ । आ० १११/२×४१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भः—

सर्वज्ञं सर्ववागीशं वीरं मारमदापहं ।

प्रणमामि महामोहशांतये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

सारं यत्सर्वसारेषु वंद्यं यद्वंदितेष्वपि ।
अनेकांतमयं वंदे तदर्हत् वचनं सदा ।।२।।

अन्तिम—यो नित्यं पठति श्रीमान् रत्नमालामिमांपरा ।
सशुद्धचरणो नूनं शिवकोटित्वमाप्नुयात् ।।

इति श्री समन्तभद्र स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विरचिता रत्नमाला समाप्ता ।

१०५७. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ५ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० २११५ । ट भण्डार ।

१०५८. **रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य** । पत्र सं० १० । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–सं १८८३ । पूर्ण । वे० सं० ६४६ । अ भण्डार ।

१०५९. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १० । ले० काल–× । वे० सं० १८१० । ट भण्डार ।

१०६०. **रात्रि भोजन त्याग वर्णन**·······। पत्र सं० १६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ४८० । ञ भण्डार ।

१०६१. **राधा जन्मोत्सव**·······। पत्र सं० १ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ११५१ । अ भण्डार ।

१०६२. **रिक्तविभाग प्रकरण**·······। पत्र सं० २६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ५७ । ज भण्डार ।

१०६३. **लघुसामायिक पाठ**·······। पत्र सं० २ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–सं० १८१४ । पूर्ण । वे० सं० २०२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति:—

१८१४ अगहन सुदी १५ सनै बुन्दी नग्रे नेमनाथ चैत्यालै लिखितं श्री देवेन्द्रकीर्त्ति आचारज सीरोज के पट्ट स्वयं हस्ते ।

१०६४. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १ । ले० काल–× । वे० सं० १२४३ । अ भण्डार ।

१०६५. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १ । ले० काल–× । वे० सं० १२२० । अ भण्डार ।

१०६६. **लघुसामायिक**·······। पत्र सं० ३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ६४० । क भण्डार ।

१०६७. **लाटीसंहिता—राजमल्ल** । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–सं० १६४१ । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं० ८८ ।

१०६८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ७३ । ले० काल–सं० १८६७ वैशाख बुदी·······रविवार वे० सं० ६६५ । क भण्डार ।

१०६९. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ५६ । ले० काल–सं० १८६७ मंगसिर बुदी ३ । वे० सं० ६६६ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा शंभूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१०७०. वज्रनाभि चक्रवर्ति की भावना—भूधरदास। पत्र सं० २। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-× पूर्ण। वे० सं० ६६७। अ भण्डार।

विशेष—पार्श्वपुराण में से है।

१०७१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल-सं० १८८८ पौष सुदी २। वे० सं० ६७२। च भण्डार।

१०७२. वनस्पतिसत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० सं० ८४१। अ भण्डार।

१०७३. वसुनंदिश्रावकाचार—आ० वसुनंदि। पत्र सं० ५६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-श्रावक धर्म। र० काल-×। ले० काल-सं० १८६२ पौष सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २०६। अ भण्डार।

विशेष—ग्रंथ का नाम उपासकाध्ययन भी है। जयपुर में श्री चिरागदास बाकलीवाल ने प्रतिलिपि करायी। संस्कृत मे भाषान्तर दिया हुआ है।

१०७४. प्रति सं० २। पत्र सं० ५ से २३। ले० काल-सं० १६११ पौष सुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० ८४८। अ भण्डार।

विशेष—सारंगपुर नगर में पाण्डे दासू ने प्रतिलिपि की थी।

१०७५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६३। ले० काल-सं० १८७७ भादवा बुदी ११। वे० सं० ६५२। क भण्डार।

विशेष—महात्मा शंभूनाथ ने सवाई जयपुरमें प्रतिलिपि की थी। गाथाओं के नीचे संस्कृत टीका भी दी है।

१०७६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४४। ले० काल-×। वे० सं० ८७। छ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये हैं।

१०७७. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५१। ले० काल-×। वे० सं० ४५। च [illegible]।

१०७८. प्रति सं० ६। पत्र सं० २२। ले० काल-सं० १५९८ भादवा बुदी १२। वे० सं० २९६। ञ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १५९८ वर्षे भादवा बुदी १२ गुरु दिने पुष्यनक्षत्रेअमृतसिद्धिनामउपयोगे श्रीपथस्थाने मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तस्य शिष्य मंडलाचार्य धर्मकीर्त्ति द्वितीय मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र एतेषां मध्ये मंडलाचार्य श्री धर्मकीर्त्ति तत् शिष्य मुनि वीरनंदिने इदं शास्त्रं लिखापितं। पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ में पार्श्वनाथ (सोनियों) के मंदिर में चढाया।

१०७९. वसुनंदिश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल। पत्र सं० २१८। आ० १२¾×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-आचार शास्त्र। र० काल-सं० १९३० कार्तिक बुदी ७। ले० काल-सं० १९३८ माह बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ६५०। क भण्डार।

१०८०. प्रति सं० २ । ले० काल सं० १९३० । वे० सं० ६५१ । क भण्डार ।

१०८१. वार्त्तासंग्रह...... । पत्र सं० २५ से ६७ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

१०८२. विद्वज्जनबोधक........ । पत्र सं० २७ । आ० १२½×८½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ४ अध्याय तक है ।

१०८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । पत्र क्रम से नहीं है और कितने ही बीच के पत्र नहीं है । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

१०८४. विद्वज्जनबोधक भाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ८६० । आ० १४×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १९३९ माघ सुदी ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ । क भण्डार ।

१०८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४३ । ले० काल सं० १९४२ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ६७७ । ख भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल साह के पुत्र नन्दलाल ने अपनी माताजी के व्रतोद्यापन के उपलक्ष में ग्रन्थ मन्दिर दीवान अमरचन्दजी के मे चढाया । यह ग्रन्थ के द्वितीयखण्ड के अन्त में लिखा है

१०८६. विद्वज्जनबोधकटीका........ । पत्र सं० ४४ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड के पाचवें उल्लास तक है ।

१०८७. विवेकविलास........ । पत्र सं० १८ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १७७० फागुण बुदी । ले० काल सं० १८८८ चैत बुदी ३ । वे० सं० ८२ । झ भण्डार ।

१०८८. वृहत्प्रतिक्रमण......... । पत्र सं० १६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । ट भण्डार ।

१०८९. प्रति सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २१५९ । ट भण्डार ।

१०९०. प्रति सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २१७९ । ट भण्डार ।

१०९१. वृहत्प्रतिक्रमण........ । पत्र सं० १९ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३ । अ भण्डार ।

१०९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

१०६३. बृहत्प्रतिक्रमण । पत्र सं० ३१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । ट भण्डार ।

१०६४. व्रतों के नाम.......। पत्र सं० ११ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । ञ भण्डार ।

१०६५. व्रतनामावली.......। पत्र सं० १२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

१०६६. व्रतसंख्या.......। पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१५१ व्रतों एवं ४१ मंडल विधानों के नाम दिये हुये है ।

१०६७. व्रतसार....... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल २२ पद्य है ।

१०६८. व्रतोद्यापनश्रावकाचार....... । पत्र सं० ११३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । घ भण्डार ।

१०६९. व्रतोपवासवर्णन.......। पत्र सं० ५७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । ञ भण्डार ।

विशेष—५७ से आगे के पत्र नही है ।

११००. व्रतोपवासवर्णन ....। पत्र सं० ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७८ । ञ भण्डार ।

११०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७६ । ञ भण्डार ।

११०२. षट्आवश्यक (लघुसामायिक)—महाचन्द्र । पत्र सं० ३ । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ख भण्डार ।

११०३. षट्आवश्यकविधान—पन्नालाल । पत्र सं० १४ । आ० १४×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १६३२ । ले० काल सं० १६३४ बैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । क भण्डार ।

११०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६३२ । वे० सं० ७४५ । क भण्डार ।

११०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । ङ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जन बोधक के तृतीय व पञ्चम उल्लास का हिन्दी अनुवाद है ।

११०६. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला (छक्कम्मोवएस)—महाकवि अमरकीर्त्ति । पत्र सं० ३ से ७१ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १२४७ । ले० काल सं० १६२२ चैत्र सुदी १३ । वे० सं० ३५६ । ख भण्डार ।

विशेष—नागपुर नगरमें खण्डेलवालान्वय पाटनीगोत्रवाले श्रीमतीहरषमदे ने ग्रन्थकी प्रतिलिपि करवायी थी।

११०७. षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा — पांडे लालचन्द । पत्र संख्या १२६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८४६ शाके १७०५ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी देवकरण ने महात्मा भूरा से जयपुर में प्रतिलिपि करवायी ।

११०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १८६६ माघ सुदी ६ । वे० सं० ६७ । घ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक पं० सदासुख दिल्लीवालों की है ।

११०९. षट्संहननवर्णन—मकरन्द पद्मावति पुरवाल । पत्र सं० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १७८६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । क भण्डार ।

१११०. षड्भक्तिवर्णन······ । पत्र सं० २२ से २६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

११११. षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति—पं० शिवजित्करुण । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००४ । ख भण्डार ।

१११२. षोडषकारणभावना—पं० सदासुख । पत्र सं० ८० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा में से है ।

१११३. षोडशकारणभावना जयमाल— नथमल । पत्र सं० २८ । आ० ११½×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १९२५ सावन सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१९ । क भण्डार ।

१११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । ङ भण्डार ।

१११५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । ङ भण्डार ।

१११६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५० । ङ भण्डार ।

१११७. षोडशकारणभावना········ । पत्र सं० ६४ । आ० १३½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९६२ कार्त्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । ङ भण्डार ।

विशेष—रामप्रताप व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

१११८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ७५४ । ङ भण्डार ।

११११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ७५५ । ङ भण्डार ।

११२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ ।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं है ।

११२१. षोडशकारणभावना........। पत्र सं० १७ । आ० १२½×७½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ (क) । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

११२२. शीलनववाड़........। पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना-काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२६ । ङ भण्डार ।

११२३. श्राद्धषडिकम्मणसूत्र........। पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । घ भण्डार ।

विशेष—पं० जसवन्त के पौत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजराती टब्बा टीका सहित है ।

११२४. श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ५० । आ० ११½×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १९३० माघ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी ।

११२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । क भण्डार ।

११२६. श्रावकधर्मवर्णन........। पत्र सं० १० । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । च भण्डार ।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । च भण्डार ।

११२८. श्रावकप्रतिक्रमण........। पत्र सं० २५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८२३ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १११ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । हुकमीजीवस ने अहिपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११२९. श्रावकप्रतिक्रमण........ । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८९ । ङ भण्डार ।

११३०. श्रावकप्रायश्चित—वीरसेन । पत्र सं० ७ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ । पूर्ण । वे० सं० १९० ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११३१. श्रावकाचार—अमितिगति। पत्र सं० ९७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६९४। क भण्डार।

विशेष—कही कही संस्कृत में टीका भी है। ग्रन्थ का नाम उपासकाचार भी है।

११३२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४४। च भण्डार।

११३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०८। छ भण्डार।

११३४. श्रावकाचार—उमास्वामी। पत्र सं० २३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८९। अ भण्डार।

११३५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १९२६ आषाढ़ सुदी २। वे० सं० २९०। अ भण्डार।

११३६. श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य। पत्र सं० २१। आ० १०३⁄४×४३⁄४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५६२ बैशाख बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० १३८। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति :

संवत् १५६२ वर्षे बैशाख बुदी ४ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सा० गोत्रे सं० परवत तस्य भार्या रोहातत्पुत्र नेता तस्य भार्या नारंगदे। तत्पुत्र मलिदास तस्य भार्या भ्रमरी द्वितीय पुत्र उर्वा तस्य भार्या वोरवी तत्पुत्र नथमल द्वतीय खीवा सा० नरसिंह महादास एतेषांमध्ये इदंशास्त्रं लिखायतं कर्मक्षयनिमित्तं श्रावकाचार। अर्जिका पदमसिरिज्योग्य बाई नारिंग घटापित।

११३७. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १५२९ भादवा बुदी १। वे० सं० ५०१। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १५२९ वर्षे भाद्रपद १ पक्षो श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचन्द्र ब्र० नरसिंघ खंडेलवालान्वये सं० झालय भार्या जैश्री पुत्र हाम्प लिखावदतु।

११३८. श्रावकाचार—पद्मनन्दि। पत्र सं० २ से २९। आ० ११३⁄४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१०७।

विशेष—३९ से आगे भी पत्र नही है।

११३९ श्रावकाचार—पूज्यपाद। पत्र सं० ६। आ० ९१⁄२×६ इञ्च। भाषा- संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ बैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १०२। घ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम उपासकाचार तथा उपासकाध्ययन भी है।

११४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८८० पौष बुदी १५। वे० सं० ८६। क भण्डार।

११४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८८४ आषाढ़ बुदी २। वे० सं० ४३। च भण्डार

११४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८०४। भादवा सुदी ६। वे० सं० १०२। छ भण्डार।

११४३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २१५१। ट भण्डार।

११४४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २१५८। ट भण्डार।

११४५. श्रावकाचार—सकलकीर्त्ति। पत्र सं० ६६। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०८८। अ भण्डार।

११४६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२३। ले० काल सं० १८५५। वे० सं० ६६३। क भण्डार।

११४७ श्रावकाचारभाषा—पं० भागचन्द। पत्र सं० १८६। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-आचार शास्त्र। र० काल सं० १६२२ आषाढ सुदी ८। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८।

विशेष—अमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है। अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है।

११४८. श्रावकाचार...... । पत्र संख्या १ से २१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१८२। ट भण्डार।

विशेष—इससे आगे के पत्र नही हैं।

११४९. श्रावकाचार...... । पत्र सं० ७। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-आचारशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०८। छ भण्डार।

विशेष—६० गाथायें है।

११५०. श्रावकाचारभाषा...... । पत्र सं० ५२ से १३१। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६४। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

११५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६६६। क भण्डार।

११५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १११ से १७४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७०६। क भण्डार।

११५३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १६६४ भादवा बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ७१०। ङ भण्डार।

विशेष—गुणभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है। संवत् १५२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह ग्रन्थ जिहानाबाद जैसिंहपुरा में लिखा गया था। उस प्रति से यह प्रतिलिपि की गयी थी।

११५४. प्रति सं० ५। पत्र सं० १०८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८२। च भण्डार।

११५५. श्रुतज्ञानवर्णन ......। पत्र सं० ८ । आ० ११३/४×७३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०१ । क भण्डार ।

११५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । क भण्डार ।

११५७. समस्तश्लोकीगीता........। पत्र सं० २ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७४० । ट भण्डार ।

११५८. समकितढाल—आसकरण । पत्र सं० १ । आ० ९३/४×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । वे० सं० २१२९ । अ भण्डार ।

११५९. समुद्घातभेद.........। पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८८ । क भण्डार ।

११६०. सम्मेदशिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र सं० ८१ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । र० काल सं० १६४५ । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल × । वे० सं० ७९५ । क भण्डार ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७५ । च भण्डार ।

११६३. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० ६५ । आ० १३×५ । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–धर्म । र० काल सं० १८४२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६९० । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक श्री जगतकीर्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाड़ी में यह ग्रन्थ रचना की थी ।

११६४. सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनसुखलाल । पत्र सं० १०१ । आ० ११×५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १९४१ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १०५९ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी दोहा—

बान वेद शशिगये विक्रमार्क तुम जान ।

अश्वनि सित दशमी सुगुरु ग्रन्थ समापत ठान ।।

लोहाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा टीका है ।

११६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८८४ चैत सुदी २ । वे० सं० ७८ । ग भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८८७ चैत सुदी १५ । वे० सं० ७९६ । क भण्डार ।

विशेष—स्योजीरामजी भांवसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १९११ पौष बुदी १५ । वे० सं० २२ । भ्र भण्डार ।

११६८. सम्मेदशिखरविलास—केशरीसिंह । पत्र सं० ३ । आ० ११३/४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल २०वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७९७ । क भण्डार ।

११६९. सम्मेदशिखर विलास—देवाब्रह्म । पत्र सं० ४ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

११७०. संसारस्वरूप वर्णन ····। पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

११७१. सागारधर्मामृत—पं० आशाधर । पत्र सं० १४३ । आ० १२¾×७½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय–श्रावकों के आचार धर्म का वर्णन । र० काल सं० १२९६ । ले० काल सं० १७९८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० सं० ७७५ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ वाले ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

११७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५९ । ले० काल × । वे० सं० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—४ से ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के है बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५९ । ले० काल सं० १८९१ भादवा बुदी ५ । वे० सं० ७८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सागानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

११७७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १६२८ फागुण सुदी १० । वे० सं० १४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । रचियता एवं लेखक दोनो की प्रशस्ति है ।

११७८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४० । ले० काल × । वे० सं० १ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं शुद्ध है ।

११७९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६९ । ले० काल सं० १५९५ फागुण सुदी २ । वे० सं० १८ । व्य भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे पाडे डीडा तेन इदं धर्मामृतनामोपाध्ययनं आचार्य नेमिचन्द्राय दत्तं । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तत् शिष्य मं० धर्मचन्द्राम्नाये ।

११८०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८ क । ञ भण्डार ।

११८१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४१ । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

११८२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४५० । ञ भण्डार ।

विशेष—मूलमात्र प्रति प्राचीन है।

११८३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ५०० । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुन सुदी १२ रविवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसंघे नन्दिसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दि तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवातत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवतत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्ततमुख्यशिष्याचार्य श्री नेमिचन्द्रदेवास्तैरियं धर्मामृतनामाशाधरश्रावकाचारटीका भव्यकुमुदचन्द्रिकानाम्नी लिखापितात्मपठनार्थं ज्ञानावरणादिकर्मक्षयार्थं च ।

११८४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

११८५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । ट भण्डार ।

११८६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से ७२ । ले० काल सं० १५६४ भादवा सुदी १ । अपूर्ण । वे० संख्या २११० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । लेखक प्रशस्ति पूर्ण है ।

११८७. सातव्यसनस्वाध्याय······। पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७८० । पूर्ण । वे० सं० १८७३ ।

विशेष—रूपमञ्जरी भी दी हुई है जिसके आठ पद्य हैं ।

११८८. साधुदिनचर्या······। पत्र सं० ६ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ ।

विशेष—श्रीमत्तपोगणे श्री विजयदानसूरि विजयराज्ये ऋषि रूपा लिखितं ।

११८९. सामायिकपाठ—बहुमुनि । पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० २१०१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीबहुमुनिविरचितं सामयिकपाठ संपूर्ण ।

११९०. सामायिकपाठ······ । पत्र सं० २५ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७७६ । क भण्डार ।

११६३. सामायिकपाठ ...... । पत्र सं० ५० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

११६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ७७७ । अ भण्डार ।

विशेष—उदयचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

११६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०१७ । अ भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १०११ । अ भण्डार ।

११६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७७८ । क भण्डार ।

११६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२० कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ६५ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य विजयकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

११६६. सामायिक पाठ ...... । पत्र सं० २५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे सं० ८१४ । क भण्डार ।

१२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० ८१५ । क भण्डार ।

१२०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—पत्रों को चूहों ने खालिया है ।

१२०२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ । च भण्डार ।

१२०३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१३ । क भण्डार ।

१२०४. सामायिकपाठ (लघु) । पत्र सं० १ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । च भण्डार ।

१२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । च भण्डार ।

१२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ क । च भण्डार ।

१२०७. सामायिकपाठभाषा—बुध महाचन्द । पत्र सं० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०८ । च भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल कृत आलोचना पाठ भी है ।

१२०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६५४ सावन बुदी ३ । वे० सं० १६४१ । ट भण्डार ।

१२०९. सामायिकपाठभाषा—अयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ८२ । आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६३७। पूर्ण। वे० सं० ७८०। अ भण्डार।

१२१०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६५६। वे० सं० ७८१। अ भण्डार।

१२११. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ७८२। अ भण्डार।

१२१२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ७८३। अ भण्डार।

१२१३. प्रति सं० । पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६७१। वे० सं० ८१७। अ भण्डार।

विशेष—श्री केशरलाल गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१२१४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १८७४ फागुण सुदी ६। वे० सं० १८३। ज भण्डार।

१२१५. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १६११ आसोज सुदी ८। वे० सं० ५६। ञ भण्डार।

१२१६. सामायिकपाठभाषा—भ० श्री तिलोकचन्द। पत्र सं० ६४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १८६२। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७१०। च भण्डार।

१२१७. प्रति सं० २। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८६१ सावन बुदी १३। वे० सं० ७१३। च भण्डार।

१२१८. सामायिकपाठ भाषा……। पत्र सं० ४५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १२८। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर मे महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल मे जती नैणसागर तपागच्छ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

१२१९. प्रति सं० २। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १७४० बैशाख सुदी ७। वे० सं० ७०६। च भण्डार।

विशेष—महात्मा सावलदास बगद वाले ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत अथवा प्राकृत छन्दो का अर्थ दिया हुआ है।

१२२०. सामायिकपाठ भाषा……। पत्र सं० २ से ३। आ० ११¾×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१२। ङ भण्डार।

१२२१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ८१६। च भण्डार।

१२२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४८६। ङ भण्डार।

१२२३. सामायिकपाठभाषा……। पत्र सं० ६७। आ० ६×५¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी (ढूंढारी) विषय–धर्म। रचनाकाल ×। ले० काल सं० १७६३ मंगसिर सुदी ८। वे० सं० ७११। च भण्डार।

१२२४. **सारसमुच्चय—कुलभद्र** । पत्र सं० १५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६०७ पौष बुदी ४ । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द के शिष्य ब्रह्मभाऊ बोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२२५. **सावयधम्म दोहा—मुनि रामसिंह** । पत्र सं० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४१ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

१२२६. **सिद्धों का स्वरूप**........ । पत्र सं० ३८ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८५४ । ङ भण्डार ।

१२२७. **सुदृष्टि तरंगिणीभाषा—टेकचन्द** । पत्र सं० ४०५ । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८३८ सावण सुदी ११ । ले० काल सं० १८६१ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

१२२८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ८० । ले० काल × । वे० सं० ६६४ । अ भण्डार ।

१२२९. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ६११ । ले० काल सं० १९४४ । वे० सं० ८११ । क भण्डार ।

१२३०. **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ६२ । ग भण्डार ।

विशेष—स्योलाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१. **प्रति सं० ५** । पत्र सं० १०५ से १२३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२७ । घ भण्डार ।

१२३२. **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १९९ । ले० काल × । वे० सं० १२८ । घ भण्डार ।

१२३३. **प्रति सं० ७** । पत्र सं० ५४५ । ले० काल सं० १८९८ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ८६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है ।

१२३४. **प्रति सं० ८** । पत्र सं० ५०० । ले० काल सं० १९६० कार्तिक बुदी ५ । वे० सं० ८६९ । ङ भण्डार ।

१२३५. **प्रति सं० ९** । पत्र सं० २०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७२२ । च भण्डार ।

१२३६. **प्रति सं० १०** । पत्र सं० ४३० । ले० काल सं० १९४९ चैत बुदी ८ । वे० सं० ११ । ज भण्डार ।

१२३७. **प्रति सं० ११** । पत्र सं० ५३५ । ले० काल सं० १८३९ फागुण बुदी ४ । वे० सं० ८९ । झ भण्डार ।

१२३८. **सुदृष्टितरंगिणीभाषा**...... । पत्र सं० ५१ से ५७ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८६७ । ङ भण्डार ।

१२३९. सोनागिरपच्चीसी—भागीरथ। पत्र सं० ८। आ० ५३×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४। ले० काल ×। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

१२४०. सोलहकारणभावनावर्णन—पं० सदासुख। पत्र सं० ४६। आ० १२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२३। च भण्डार।

१२४१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० १८८। छ भण्डार।

१२४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५७। ले० काल सं० १९२७ सावण बुदी ११। वे० सं० १८८। छ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में गणेशीलाल पांड्या ने काली के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

१२४३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१ से ६६। ले० काल स० १९५८ माह सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० १६०। छ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३० पत्र नही है। सुन्दरलाल पांड्या ने चाटसू में प्रतिलिपि की थी।

१२४४. सोलहकारणभावना एवं दशलक्षण धर्म वर्णन—पं० सदासुख। पत्र सं० ११४। साइज ११३×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १९४१ मंगसिर सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ९४। ग भण्डार।

१२४५. स्थापनानिर्णय……। पत्र सं० ६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६००। ङ भण्डार।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथम कांड का अष्टम उल्लास है। हिन्दी टीका सहित है।

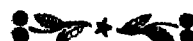
१२४६. स्वाध्यायपाठ……। पत्र सं० २०। आ० ९×६३ इञ्च। भाषा–प्राकृत, संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३। ज भण्डार।

१२४७. स्वाध्यायपाठभाषा……। पत्र सं० ७। आ० ११३×७३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४२। क भण्डार।

१२४८. सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला……। पत्र सं० १२। आ० १९×३३ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१। ख भण्डार।

१२४९. हुण्डावसर्पिणीकालदोष—माणकचन्द। पत्र सं० ६। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १९३७। पूर्ण। वे० सं० ८५५। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।



विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२५०. अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव। पत्र सं० १० । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २० । क भण्डार ।

१२५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३७ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ४ । क भण्डार ।

विशेष- ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत में टीका लिखी हुई है ।

१२५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३८ आषाढ बुदी १० । वे० सं० ८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । विबुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२५३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७ । क भण्डार ।

१२५४. अध्यात्मबत्तीसी—बनारसीदास । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल १७वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

१२५५. अध्यात्म बारहखड़ी—कवि सूरत । पत्र सं० १५ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । छ भण्डार ।

१२५६. अष्टपाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० १० से २७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । १ से ६ तथा २४–२५वां पत्र नहीं है ।

१२५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७ । क भण्डार ।

१२५८. अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ४३० । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १८६७ भादवा सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । क भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुंद है ।

१२५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ से २४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४ । क भण्डार ।

१२६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । । वे० सं० १५ । क भण्डार ।

१२६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६७ । ले० काल × । वे० सं० १६ । क भण्डार ।

१२६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३४ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० १ । क भण्डार ।

१२६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० २ । क भण्डार ।

१२६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६५ । ले० काल × । वे० सं० ३ । घ भण्डार ।

१२६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १९३ । ले० काल सं० १९३६ आसोज सुदी १५ । वे० सं० ३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—८१ पत्र प्राचीन प्रति है । ८८ से १२३ पत्र फिर लिखाये गये हैं तथा १२४ से १९३ तक के पत्र किसी अन्य प्रति के हैं ।

१२६६ प्रति सं० ९ । पत्र सं० २४३ । ले० काल सं० १९५१ आषाढ बुदी १४ । वे० सं० ३९ । ङ भण्डार ।

१२६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० १९७ । ले० काल × । वे० सं० ५०८ । च भण्डार ।

१२६८. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४५ । ले० काल सं० १८८० सावन बुदी १ । वे० सं० ३८ । ञ भण्डार ।

१२६९. आत्मध्यान—बनारसीदास । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–आत्मचिंतन । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२७६ । अ भण्डार ।

१२७०. आत्मप्रबोध—कुमारकवि पत्र सं० १३ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ । अ भण्डार ।

१२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३८० (क) अ भण्डार ।

१२७२. आत्मसंबोधनकाव्य········। पत्र सं० २७ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५४ । अ भण्डार ।

१२७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२ । ङ भण्डार ।

१२७४. आत्मसंबोधनकाव्य—ज्ञानभूषण । पत्र सं० २ से २३ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९८७ । अ भण्डार ।

१२७५. आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ६६ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७७४ फागुन बुदी । वे० सं० २१८ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में दयाराम लच्छीराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१२७६. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२६२ । पूर्ण । जीर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— ············ वर्षे ············ शाके············

श्रीनेमिनाथचैत्यालये । श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्राम्नाये । लिखितं ज्योति (षी) श्री गैबा तत्पुत्र महेस लिखितं ।

१२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १५१४ आषाढ बुदी ८ । वे० सं० २९६ । अ भण्डार ।

१२७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८९० सावरण सुदी ४ । वे० सं० ३१५ । अ भण्डार ।

१२७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १२६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं प्राचीन है ।

१२८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७० । अ भण्डार ।

१२८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ७९२ । अ भण्डार ।

१२८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७९३ । अ भण्डार ।

१२८३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८६ । अ भण्डार

१२८४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १९४० । वे० सं० ४७ । क भण्डार ।

१२८५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० ४९ । क भण्डार ।

१२८६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० १५ । क भण्डार ।

१२८७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८७२ चैत सुदी ८ । वे० सं० ५३ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । पहिले संस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है।

१२८८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७३० भादवा सुदी १२ । वे० सं० ५४ । ङ भण्डार ।

विशेष- -पन्नालाल बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की था ।

१२८९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६७० फागुन सुदी २ । वे० सं० २६ । च भण्डार ।

विशेष—महिनगपुर निवासी चौधरी मोहल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२९०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १९९५ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० २२० । ञ भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२९१. आत्मानुशासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २७ । च भण्डार ।

१२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १९०१ । वे० सं० ४८ । क भण्डार ।

१२९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १६८५ मंगसिर सुदी १४ । वे० सं० ९३ । छ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती नगर में प्रतिलिपि हुई।

१२६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४२। ले० काल सं० १८३२ बैशाख बुदी ६। वे० सं० ५०। अ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई।

१२६५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १६१६ आषाढ सुदी १। वे० सं० ७१।

विशेष—साहू तिहुरण अग्रवाल गर्ग गोत्रीय ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी।

१२६६. आत्मानुशासनभाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० ८७। आ० १४×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वे० सं० ३७१। अ भण्डार।

१२६७. प्रति सं० २। पत्र सं० १८६। ले० काल सं० १६०८। वे० सं० ३९६। अ भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

१२६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४८। ले० काल ×। वे० सं० ३९८। अ भण्डार।

१२६९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १९६३। वे० सं० ४३४। अ भण्डार।

१३००. प्रति सं० ५। पत्र सं० २३६। ले० काल सं० १९३०। वे० सं० ५०। क भण्डार।

विशेष—प्रभाचन्द्राचार्य कृत संस्कृत टीका भी है।

१३०१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३०५। ले० काल सं० १९८०। वे० सं० ५१। क भण्डार।

१३०२. प्रति सं० ७। पत्र सं० ११८। ले० काल सं० १८९९ कार्तिक सुदी ५। वे० सं० ५। घ भण्डार।

१३०३. प्रति सं० ८। पत्र सं० ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५५। ङ भण्डार।

१३०४. प्रति सं० ९। पत्र सं० ८९ से १०२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५६। ङ भण्डार।

१३०५. प्रति सं० १०। पत्र सं० १८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५७। ङ भण्डार।

१३०६. प्रति सं० ११। पत्र सं० १५१। ले० काल सं० १९३३ ज्येष्ठ बुदी ८। वे० सं० ५८। ङ भण्डार।

विशेष—प्रति संशोधित है।

१३०७. प्रति सं० १२। पत्र सं० ९७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५९। ङ भण्डार।

१३०८. प्रति सं० १३। पत्र सं० ६१ से १६५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६०। ङ भण्डार।

१३०९. प्रति सं० १४। पत्र सं० ७१ से १८६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५१३। च भण्डार।

१३१०. प्रति सं० १५। पत्र सं० ९९ से १४३। ले० काल सं० १९२४ कार्तिक सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० ५१४। च भण्डार।

१३११. प्रति सं० १६। पत्र सं० ८०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५१५। च भण्डार।

१३१२. प्रति सं० १७। पत्र सं० ९५। ले० काल सं० १८५४ आषाढ बुदी ५। वे० सं० २२२। ज भण्डार।

विशेष—रायचन्द साहवाड मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१३१३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१२४ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नही है।

१३१४. आध्यात्मिकगाथा—भ० लक्ष्मीचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

१३१५. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्त्तिकेय । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

१३१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६२८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है। १८६ गाथाये है।

१३१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—२८३ गाथाये है।

१३१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है।

१३१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० ८४५ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द है।

१३२०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३१ । ख भण्डार ।

१३२१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४ । ङ भण्डार ।

१३२२. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६४३ सावण सुदी ४ । वे० सं० ११६ । ङ भण्डार ।

१३२३. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २८ से ७५ । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० ११७ । ङ भण्डार ।

१३२४. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५० । ले० काल सं० १८२५ पौष बुदी १० । वे० सं० ११९ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी है। मुनि रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१३२५. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ४३७ । च भण्डार ।

१३२६. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३८ । च भण्डार ।

१३२७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६६ सावण सुदी ६ । वे० सं० ४३९ । च भण्डार ।

१३२८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १६२० सावण सुदी ८ । वे० सं० ४४० । च भण्डार ।

१३२६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ८४२ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

१३३०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८८१ भादवा बुदी १० । वे० सं० ८० । छ भण्डार ।

१३३१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० १०७ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है ।

१३३२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । झ भण्डार ।

१३३३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५२५ । झ भण्डार ।

१३३४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

विशेष—११ से ७४ तथा १०० से आगे के पत्र नहीं है ।

१३३५ प्रति सं० २० । पत्र सं० ३८ से ६८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१३३६. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका ······। पत्र सं० ५८ । आ० १०३×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३२ । अ भण्डार ।

१३३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ से ११० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

१३३८. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका—शुभचन्द्र । पत्र सं० २१० । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १६०० माघ बुदी १० । ले० काल सं० १८५८ । पूर्ण । वे० सं० ८४३ । क भण्डार ।

१३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । अपूर्ण । छ भण्डार ।

१३४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४१ । च भण्डार ।

१३४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ से १७२ । ले० काल सं० १८३२ । अपूर्ण । वे० सं० ८४३ । च भण्डार ।

१३४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१७ । ले० काल सं० १८२२ आसोज सुदी १२ । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में माधोसिंह के शासनकाल में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में पं० चोखचन्द के शिष्य रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१३४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८८ । ले० काल सं० १८६६ आषाढ सुदी ८ । वे० सं० ५०५ । ञ भण्डार ।

१३४४. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० २३७ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १८६३ सावण बुदी ३ । ले० काल सं० १०२६ । पूर्ण । वे० सं० ८४६ । क भण्डार ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८१ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । ख भण्डार ।

१३४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२० । ङ भण्डार ।

१३४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १२१ । ङ भण्डार ।

१३४९. कुशलाणुबंधिअज्झयणं········ । पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १९८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इति कुशलाणुबंधिअज्झयणं समत्तं । इति श्री चतुशरण टबार्थ ।

इसके अतिरिक्त राजसुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतियां और हैं ।

१३५०. चक्रवर्त्तिकीबारहभावना········ । पत्र सं० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च भण्डार ।

१३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५४१ । च भण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान········ । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५१ । क भण्डार ।

१३५३. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७७९ । पूर्ण । वे० सं० २१ । घ भण्डार ।

१३५४. जोगीरासो—जिनदास । पत्र सं० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । च भण्डार ।

१३५५. ज्ञानदर्पण—साह दीपचन्द । पत्र सं० ४० । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२९ । क भण्डार ।

१३५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८६४ सावण सुदी ११ । वे० सं० ३० । घ भण्डार ।

विशेष—महात्मा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में विराजमान की गई ।

१३५७. ज्ञानबावनी—बनारसीदास । पत्र सं० १० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । ङ भण्डार ।

१३५८. ज्ञानसार—मुनि पद्मसिंह । पत्र सं० १२ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १०८६ सावण सुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८ । क भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल वाली गाथा निम्न प्रकार है—

सिरि विक्कमस्सकाले दससयछासी जुं यमि वहमाणेह

सावणसिय णवमीए अंवयणपरीम्मकयं मेयं ॥

१३५९. ज्ञानार्णव—शुभचन्द्राचार्य। पत्र सं० १०५। आ० १२३×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–योग। र० काल ×। ले० काल सं० १६७६ चैत्र बुदी १४। पूर्ण। वे० सं० २७४। अ भण्डार।

विशेष—बैराट नगर मे श्री चतुरदास ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

१३६०. प्रति सं० २। पत्र सं० १०३। ले० काल सं० १६५९ भादवा सुदी १३। वे० सं० ४२। अ भण्डार।

१३६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०७। ले० काल सं० १६४२ पौष सुदी ९। वे० सं० २२०। क भण्डार।

१३६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१। क भण्डार।

१३६३. प्रति सं० ५। पत्र सं० १०८। ले० काल ×। वे० सं० २२२। क भण्डार।

१३६४. प्रति सं० ६। पत्र सं० २६४। ले० काल सं० १८३५ आषाढ सुदी ३। वे० सं० २३४। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम अधिकार की टीका नही है।

१३६५. प्रति सं० ७। पत्र सं० १० से ८२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६२। ख भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ९ पत्र नही है।

१३६६. प्रति सं० ८। पत्र सं० १३१। ले० काल ×। वे० सं० ३२। घ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१३६७. प्रति सं० ९। पत्र सं० १७९ से २०१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२३। ङ भण्डार।

१३६८. प्रति सं० १०। पत्र सं० २६८। ले० काल ×। वे० सं० २२४। अपूर्ण। ङ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है। हिन्दी टीका सहित है।

१३६९. प्रति सं० ११। पत्र सं० १०६। ले० काल ×। वे० सं० २२५। ङ भण्डार।

१३७०. प्रति सं० १२। पत्र सं० ४४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२५। ङ भण्डार।

१३७१. प्रतिसं० १३। पत्र सं० १३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२६। ङ भण्डार।

विशेष—प्राणायाम अधिकार तक है।

१३७२. प्रति सं० १४। पत्र सं० १४२। ले० काल सं० १८८९। वे० सं० २२७। ङ भण्डार।

१३७३. प्रति सं० १५। पत्र सं० १४०। ले० काल सं० १९४८ आसोज बुदी ८। वे० सं० १२४। ङ भण्डार।

विशेष—लक्ष्मीचन्द्र वैद्य ने प्रतिलिपि की थी।

१३७४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३५ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

१३७५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० सं० २८२ । छ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना मात्र है ।

१३७६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५८१ फागुण सुदी १ । वे० सं० २५ । ज भण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे फागुण सुदी १ बुधवार दिने । अथ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सकलविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनिजनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवा । ग्रांवेर गण स्थानत् । कूरमवंशे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोठि पंचायत शास्त्रं ज्ञानार्णव लिखापितं त्रैपनक्रियावर्तनिवनंबाइ धनाइयोग्य घटापितं कर्म्मक्षयनिमित्तं ।

१३७७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११५ । ले० काल × । । वे० सं० ६० । झ भण्डार ।

१३७८. प्रति सं० २० । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० १०० । ञ भण्डार ।

१३७६. प्रति सं० २१ । पत्र स० ३ से ७३ । ले० काल सं० १५०१ माघ बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३ । ञ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्त्ति के लिए प्रतिलिपि की थी ।

१३८०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १७८८ । वे० सं० ३७० । ञ भण्डार ।

१३८१. प्रति सं० २३ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६४१ । वे० सं० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१३८२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६०१ । अपूर्ण । वे० सं० १६६३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत गद्य टीका सहित है ।

१३८३. ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

१३८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । क भण्डार ।

१३८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२३ माघ सुदी १० । वे० सं० २२६ । क भण्डार ।

१३८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३१ । घ भण्डार ।

१३८७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७४६ । जीर्ण । वे० सं० २२८ । क भण्डार ।

विशेष—मौजमाबाद मे आचार्य कनककीर्त्ति के शिष्य पं० मदाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१३८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । क भण्डार ।

१३८९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७८५ भादवा । वे० सं० २३० । क भण्डार ।

विशेष—पं रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३९०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० २२१ । ख भण्डार ।

१३९१. ज्ञानार्णवटीका—पं० नय विलास । पत्र सं० २७६ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति शुभचन्द्राचार्यविरचितयोगप्रदीपाधिकारे पं० नयविलासेन साह पाशा तत्पुत्र साह टोडर तत्कुलकमल–दिवाकरसाहऋषिदासस्य श्रवणार्थं पं० जिनदासो धर्मनाकारापिता मोक्षप्रकरण समाप्तं ।

१३९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल × । । वे० सं० २२८ । क भण्डार ।

१३९३. ज्ञानार्णवटीकाभाषा—लब्धिविमलगणि । पत्र सं० १५८ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–योग । र० काल सं० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १६४ । छ भण्डार ।

१३९४. ज्ञानार्णवभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ६६३ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) विषय–योग । र० काल सं० १८६९ माघ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । क भण्डार ।

१३९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२० । ले० काल × । वे० सं० २२४ । क भण्डार ।

१३९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२१ । ले० काल सं० १८८३ सावण सुदी ७ । वे० सं० ३४ । ग भण्डार ।

विशेष—शाह जिहानाबाद मे संतूलाल की प्रेरणा से भाषा रचना की गई । कालूरामजी साह ने मोनपाल भांवसा से प्रतिलिपि कराके चौधरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

१३९७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०८ । ले० काल × । वे० सं० ५६५ । च भण्डार ।

१३९८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०३ से २१६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।

१३९९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १९११ आसोज बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २६० पत्र नही है ।

१४००. तत्त्वबोध……। पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० ३१० । ञ भण्डार ।

१४०१. त्रयोविंशतिका……। पत्र सं० १३। आ० १०३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४०। च भण्डार।

१४०२. दर्शनपाहुडभाषा……। पत्र सं० २६। आ० १०३/४×८१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३। छ भण्डार।

विशेष—अष्टपाहुड का एक भाग है।

१४०३. द्वादशभावना दृष्टान्त……। पत्र सं० १। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–गुजराती। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७०७ वैशाख बुदी १। वे० सं० २२१७। अ भण्डार।

विशेष—जालोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१४०४. द्वादशभावनाटीका……। पत्र सं० ६। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६५५। ट भण्डार।

विशेष—कुन्दकुन्दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी हैं।

१४०५. द्वादशानुप्रेक्षा……। पत्र सं० २०। आ० १०३/४×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८५। ट भण्डार।

१४०६. द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति। पत्र सं० ४। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४। अ भण्डार।

१४०७. द्वादशानुप्रेक्षा……। पत्र सं० १। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४। अ भण्डार।

१४०८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १६१। ञ भण्डार।

१४०९. द्वादशानुप्रेक्षा—कविछत्र। पत्र सं० ८३। आ० १२३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १६०७ भादवा बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६। क भण्डार।

१४१०. द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू। पत्र सं० ४। आ० ६३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०४। ट भण्डार।

१४११. द्वादशानुप्रेक्षा……। पत्र सं० १३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२८। क भण्डार।

१४१२. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ६३। ञ भण्डार।

१४१३. पञ्चतत्त्वधारणा……। पत्र सं० ७। आ० ६३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–योग। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२३२। अ भण्डार।

१४१४. [illegible] ......। पत्र सं० ४ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । ङ भण्डार ।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभावस्तोत्र भाषा भी है ।

१४१५. परमात्मपुराण—दीपचन्द । पत्र सं० २४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ सावन सुदी ११ । पूर्ण । घ भण्डार ।

विशेष—महात्मा उमेद ने प्रतिलिपि की थी ।

१४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ६२६ । च भण्डार ।

१४१७. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १३ से १४४ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल १०वीं शताब्दी । ले० काल सं० १७९९ आसोज सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २०८३ । अ भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९७ । ले० काल सं० १९३५ । वे० सं० ४४५ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१४१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७९ । ले० काल सं० १९०४ श्रावण बुदी १३ । वे० सं० ५७ । घ भण्डार । संस्कृत टीका सहित है ।

विशेष—ग्रन्थ सं० ४००० श्लोक । अन्तिम ९ पृष्ठों में बहुत बारीक लिपि है ।

१४२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३४ । ङ भण्डार ।

१४२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३५ । ङ भण्डार ।

१४२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०९ । च भण्डार

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१४२३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१० । च भण्डार ।

१४२४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८३० बैसाख बुदी ३ । वे० सं० ८२ । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में शुभचन्द्रजी के शिष्य चोखचन्द तथा उनके शिष्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए हैं ।

१४२५. परमात्मप्रकाशटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६६ से २४५ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३३ । ङ भण्डार ।

१४२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० काल × । वे० सं० ४५३ । ञ भण्डार ।

१४२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७६७ पौष सुदी ५ । वे सं० ४५४ । अ भण्डार ।

विशेष—माथाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८. परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र सं० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

१४२९. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ से १४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र है ।

१४३०. परमात्मप्रकाशटीका ⋯ । पत्र सं० १६३ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १९५८ द्वि० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१. परमात्मप्रकाशटीका ⋯ । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८९० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०७ । च भण्डार ।

१४३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ से १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८ । च भण्डार ।

१४३३. परमात्मप्रकाशटीका ⋯ । पत्र सं० १७० । आ० ११½×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४. परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ४४४ । आ० ११×६ । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव कृत सस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३० से २४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

१४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४७ । ले० काल सं० १९५० । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

१४३७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० से ११६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३८ । च भण्डार ।

१४३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । छ भण्डार ।

१४३९. परमात्मप्रकाशबालावबोधिनीटीका—खानचन्द । पत्र सं० २४१ । आ० १२¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका मुल्तान मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने किया है ।

१४४०. परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र सं० २१ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १९१९ चैत्र बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४७ । क भण्डार ।

१४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १९४८ । वे० सं० ४४१ । क भण्डार ।

१४४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ४४२ । क भण्डार ।

१४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १५ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ४४३ । क भण्डार ।

१४४४. परमात्मप्रकाशभाषा—सूरजभान ओसवाल । पत्र सं० १५४ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १८४३ आषाढ बुदी ७ । ले० काल सं० १६५२ मंगसिर बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४४४ । क भण्डार ।

१४४५. परमात्मप्रकाशभाषा……। पत्र सं० ६५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११६० । अ भण्डार ।

१४४६. परमात्मप्रकाशभाषा……। पत्र सं० ५६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२७ । च भण्डार ।

१४४७. परमात्मप्रकाशभाषा……। पत्र सं० ६३ से १०८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । क भण्डार ।

१४४८. प्रवचनसार—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ४७ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल प्रथम शताब्दी । ले० काल सं० १६४० माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५०८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१४४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ५१० ।

१४५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ भादवा बुदी ५ । वे० सं० २३८ । च भण्डार ।

१४५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८३७ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० २४० । च भण्डार ।

विशेष—परागदास मोहा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१४५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १४८ । ज भण्डार ।

१४५४. प्रवचनसारटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल १०वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

१४५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ८५२ । अ भण्डार ।

१४ ६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८५ । अ भण्डार ।

१४५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । अ भण्डार ।

१४५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ५०७ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी ।

१४५६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४६०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४६१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

१४६२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १६४० भादवा बुदी ३ । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६३. प्रवचनसारटीका…… । पत्र सं० ४१ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१० । ङ भण्डार ।

विशेष—प्राकृत मे मूल संस्कृत मे छाया तथा हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

१४६४. प्रवचनसारटीका …… । पत्र सं० १२१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८५७ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४६५. प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति …… । पत्र सं० ५१ से १३१ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ । अपूर्ण । वे० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नही हैं । महाराजा जयसिंह के शासनकाल मे नेवटा में महात्मा हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६६. प्रवचनसारभाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० ८३ से ३०५ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १७०६ माघ सुदी ५ । ले० काल स० १७२५ । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । अ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे ओसवाल गूजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ५१३ । क भण्डार ।

१४६८. प्रति स० ३ । पत्र सं० १७३ । ले० काल × । वे० सं० ५१२ । क भण्डार ।

१४६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ६३ । घ भण्डार ।

विशेष—प० परमानन्द ने दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।

१४७०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १७४३ पौष सुदी २ । वे० सं० ५१३ । ङ भण्डार ।

१४७१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४१ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ६४१ । च भण्डार ।

१४७२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८८३ कार्त्तिक बुदी २ । वे० सं० १९३ । छ भण्डार ।

विशेष—लवाण निवासी अमरचन्द के पुत्र महात्मा गणेश ने प्रतिलिपि की थी ।

१४७३. प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १७२६ । ले० काल सं० १७३० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ६४४ । च भण्डार ।

१४७४. प्रवचनसारभाषा—वृन्दावनदास । पत्र सं० २१७ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १९३३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के अन्त मे वृन्दावनदास का परिचय दिया है।

१४७५. प्रवचनसारभाषा……। पत्र सं० ८६ । आ० ११×६¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१२ । क भण्डार ।

१४७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । च भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

१४७७. प्रवचनसारभाषा……। पत्र सं० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९२२ । ट भण्डार ।

१४७८. प्रवचनसारभाषा……। पत्र सं० १४५ से १८५ । आ० ११¾×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० ६४५ । च भण्डार ।

१४७९. प्रवचनसारभाषा……। पत्र सं० २३२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १९२६ । वे० सं० ६४३ । च भण्डार ।

१४८०. प्राणायामशास्त्र……। पत्र सं० ६ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । अ भण्डार ।

१४८१. बारह भावना—रइधू । पत्र सं० ५ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—लिपिकार ने रइधू कृत बारह भावना होना लिखा है ।

प्रारम्भ—ध्रुववस्त निश्चल सदा अध्रुभाव परजाय ।
स्कंदरूप जो देखिये पुद्गल तणो विभाव ।।

अन्तिम—अकथ कहाणी ज्ञान की कहन सुनन की नाहि ।
आपनही मे पाइये जब देखै घटमाहि ।।
इति श्री रइधू कृत बारह भावना संपूर्ण ।

१४८२. बारहभावना……। पत्र सं० १५। आ० ६३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चिन्तन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५२६। क भण्डार।

१४८३. प्रति स० २। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० ६८। ग भण्डार।

१४८४. बारहभावना—भूधरदास। पत्र सं० १। आ० ६३/४×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चिंतन। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२४७ अ भण्डार।

विशेष—पार्श्वपुराण से उद्धृत है।

१४८५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २५२। ख भण्डार।

विशेष—इसका नाम चक्रवर्त्ति की बारह भावना है।

१४८६ बारहभावना—नवलकवि। पत्र सं० २। आ० ८×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चिंतन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३०। क भण्डार।

१४८७. बोधप्राभृत—आचार्य कुंदकुंद। पत्र सं० ७। आ० ११×४३/४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३५।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है।

१४८८. भववैराग्यशतक……। पत्र सं० १५। आ० १०×६ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १८२८ फागुण सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ४५५। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है।

१४८९. भावनाद्वात्रिंशिका……। पत्र सं० २६। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५५७। क भण्डार।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह और है। यतिभावनाष्टक, पद्मनन्दिपंचविंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र। प्रति स्वर्णाक्षरों मे है।

१४९०. भावनाद्वात्रिंशिकाटीका……। पत्र सं० ४६। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल × ० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६८। क भण्डार।

१४९१. भावपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र सं० ६। आ० १४×५१/२ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३०। ज भण्डार।

विशेष—प्राकृत गाथाओ पर संस्कृत श्लोक भी हैं।

१४९२. मृत्युमहोत्सव……। पत्र सं० १। आ० १११/२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४१। अ भण्डार।

१४९३. मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख। पत्र स० २२। आ० ६३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १९१८ आषाढ सुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०। घ भण्डार।

१४९४. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० ६०४। क भण्डार।

१४९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

१४९६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

१४९७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६५ । म्ह भण्डार ।

१४९८. योगबिंदुप्रकरण—आ० हरिभद्रसूरि । पत्र सं० १८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ञ भण्डार ।

१४९९. योगभक्ति ......। पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । क भण्डार ।

१५००. योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० २५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६३ । अ भण्डार ।

१५०१. योगशास्त्र......। पत्र सं० ६४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-योग । र० काल × । ले० काल सं० १७०५ आषाढ़ बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१५०२. योगसार—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८०४ । अपूर्ण । वे० स० ८२ । अ भण्डार ।

विशेष—सुखराम छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

१५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १९३४ । वे० सं० ६०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत छाया सहित है ।

१५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६०७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१५०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

१५०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ३१० । क भण्डार ।

१५०७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८२ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० २८२ । च भण्डार ।

१५०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०४ आसोज बुदी ३ । वे० सं० ३३६ । ञ भण्डार ।

१५०९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१६ । ञ भण्डार ।

१५१०. योगसारभाषा—नन्दराम । पत्र सं० ५७ । आ० १२½×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १९०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६११ । क भण्डार ।

विशेष—आगरे में ताजगञ्ज में भाषा टीका लिखी गई थी ।

१५११. योगसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३३ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १९३२ सावन सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०९ । क भण्डार ।

१५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६१० । क भण्डार ।

१५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । क भण्डार ।

१५१४. योगसारभाषा — पं० बुधजन । पत्र सं० १० । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १८९५ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा......। पत्र सं० ६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । क भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह......। पत्र सं० १८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल सं० १७५० कात्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपस्थध्यानवर्णन......। पत्र सं० २ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५९ । क भण्डार ।

'धर्म्मनाथंस्तुवे धर्ममयं सद्धर्मसिद्धये ।
धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्त्तकं ।।

१५१९. लिंगपाहुड—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ११ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुरावली भी है ।

१५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६ । ञ भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १८८५ सावण बुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च भण्डार ।

विशेष—बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ञ भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । अ भण्डार ।

१५२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी १५ । वे० सं० १८८ । अ भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० सं० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) में पं० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१७ कार्तिक बुदी ७ । वे० सं० १६५ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत पद्यो में भी अर्थ दिया है ।

१५२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८० ख भण्डार ।

१५२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । ख भण्डार ।

१५३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ से ५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३७ । ङ भण्डार ।

१५३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३८ । ङ भण्डार ।

१५३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २७ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३६ । ङ भण्डार ।

१५३३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० ७४० । ङ भण्डार ।

१५३४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० स० ३५७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५३५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १५१६ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ३८० । ञ भण्डार ।

१५३६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १८४६ । ट भण्डार ।

१५३७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७१५ । वे० सं० १८४७ । ट भण्डार ।

विशेष—नयनपुर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय में ब्र० सुखदेव के पठनार्थ मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५३८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १ से ८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न प्राभृत है– दर्शन, सूत्र, चारित्र । चारित्र प्राभृत की ४५ गाथा से आगे नही है । प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१५३९. षट्पाहुडटीका······ । पत्र सं० ५१ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । अ भण्डार ।

१५४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ । क भण्डार ।

१५४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८० फागुण सुदी ८ । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० स्वरूपचन्द के पठनार्थ भावनगर में प्रतिलिपि हुई ।

१५४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० सं० २५८ । ञ भण्डार ।

१५४३. षटपाहुडटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० २६५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क भण्डार ।

१५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल सं० १८८३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७४१ । क भण्डार ।

१५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १७६५ माह बुदी १० । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१५४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५ । वे० सं० ६ । अ

विशेष—श्रीलालचन्द के पठनार्थ आमेर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १७६७ श्रावण सुदी ७ । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने पं० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी थी ।

१५४८. संबोधअक्षरबावनी—द्यानतराय । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । च भण्डार ।

१५४९. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं ४ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८४० बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । च भण्डार ।

विशेष—बाणपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५०. समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० २३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वृत सं० २६३ सर्व भवंति । वे० सं० १८१ । अ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री मूलसंघे नंदिसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्यमंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृतानि लिखापितानि स्वपठनार्थं ।

१५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

१५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है । दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

१५५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७३४ । क भण्डार ।

१५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७३५ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर ही संस्कृत में अर्थ है ।

१५५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० १०८ । घ भण्डार ।

१५५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८७७ बैशाख बुदी ५ । वे० सं० ३६६ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६७ । च भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५५८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३६७ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

१५५६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से १३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६१. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७० । च भण्डार ।

१५६२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १५६३ पौष बुदी ६ । वे० सं० २१४० । ट भण्डार ।

१५६४. **समयसारकलशा—अमृतचन्द्राचार्य** । पत्र सं० १२२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७४३ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १७३ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७४३ वर्षे आसोज मासे शुक्लपक्षे द्वितिया २ तिथौ गुरुवासरे श्रीमत्कामानगरे श्रीश्वेताम्बरशाखायां श्रीमद्विजयगच्छे भट्टारक श्री १०८ श्री कल्याणसागरसूरिजी तत् शिष्य ऋषिराज श्री जयवंतजी तत् शिष्य ऋषि लक्ष्मणेन पठनाय लिपिचक्रे शुभं भवतु ।

१५६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १६६७ आषाढ सुदी ७ । वे० सं० १३३ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति निम्न प्रकार है–संवत् १६६७ वर्षे अषाढ बदि सतम्यां शुक्रवासरे महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी प्रतापे अंबावतीमध्ये लिखाइतं संघी श्री मोहनदासजी पठनार्थं । लिखितं जोशी आलिराज ।

१५६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । अ भण्डार ।

१५६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । अ भण्डार ।

१५६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—सरल संस्कृत में टीका दी है तथा नीचे श्लोकों की टीका है ।

१५६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२४ । ले० काल × । वे० सं० ७३७ । क भण्डार ।

१५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८६७ भादवा सुदी ११ । वे० सं० ७३८ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७३९ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—कलशो पर भी संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ११० । घ भण्डार ।

१५७४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५९ से संस्कृत टीका नहीं है केवल श्लोक ही हैं ।

१५७५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७२ । च भण्डार ।

१५७६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २९ । ले० काल सं० १७१९ कार्तिक सुदी २ । वे० सं० ९१ । छ भण्डार ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१५७८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १६१४ पौष बुदी ८ । वे० सं० २०५ । ज भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१५७९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

१५८०. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—ब्र० नेतसीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१. समयसारटीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३५ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८३३ माह बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० २ । अ भण्डार ।

१५८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७०३ । वे० सं० १०४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति-संवत् १७०३ मार्गसिर कृष्णाषष्ठ्यां तिथौ बुद्धवारे लिखितेयम् ।

१५८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१५८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० से ४६ । ले० काल × । वे० सं० २००३ । अ भण्डार ।

१५८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल स० १७०३ बैशाख बुदी १० । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति :—सं० १७०३ वर्षे बंशाख कृष्णादशम्या तिथौ लिखितम् ।

१५८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल सं० १६३८ । वे० स० ७४० । क भण्डार ।

१५८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ७४१ । क भण्डार ।

१५८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १७०६ । वे० सं० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—भगवंत दुबे ने सिरोज ग्राम मे प्रतिलिपि की थी ।

१५८९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१५९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६५ । ले० काल × । वे० सं० ७४५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१५९१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १६४८ वैशाख सुदी ५ । वे० सं० १०६ । घ भण्डार ।

विशेष—अकबर बादशाह के शासनकाल में मालपुरा मे लेखक सूरि श्वेताम्बर मुनि जेसा ने प्रतिलिपि की थी । नीचे निम्नलिखित पंक्तियां और लिखी हैं—

'पांडे खेतु सेठ तत्र पुत्र पाडे पारसु पोथी देहुरे ।

घाली सं० १६७३ तत्र पुत्र बीसाखानन्द कवहर ।

बीच में कुछ पत्र लिखवाये हुये है ।

१५९२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६१८ माघ सुदी १ । वे० सं० ७५ । ज भण्डार ।

विशेष—संगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । ११२ मे १७० तक नीले पत्र है ।

१५९३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १७३० मंगसिर सुदी १५ । वे० सं० १०६ । अ भण्डार ।

१५९४. समयसार वृत्ति……। पत्र सं० ४ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । घ भण्डार ।

१५९५. समयसारटीका……। पत्र सं० ८१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ । ङ भण्डार ।

१५९६. समयसारनाटक—बनारसीदास। पत्र सं० ६७। प्रा० ६½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १६६३ प्रासोज सुदी १३। ले० काल सं० १८३८। पूर्ण। वे० सं० ४०६। अ भण्डार।

१५९७. प्रति सं० २। पत्र सं० ७२। ले० काल सं० १८६७ फागुण सुदी ६। वे० सं० ४०६। अ भण्डार।

विशेष—प्रागरे में प्रतिलिपि हुई थी।

१५९८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०६६। अ भण्डार।

१५९९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८४। अ भण्डार।

१६००. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४ से ११५। ले० काल सं० १७८६ फागुण सुदी ४। वे० सं० ११२८ अ भण्डार।

१६०१ प्रति सं० ६। पत्र सं० १८४। ले० काल सं० १९३० ज्येष्ठ बुदी १५। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

विशेष—पद्यों के बीच में सदासुख कासलीवाल कृत हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है। टीका रचना सं० १९१४ कार्तिक सुदी ७ है।

१६०२. प्रति सं० ७। पत्र स० १११। ले० काल सं० १९५६। वे० सं० ७४[illegible]। क भण्डार।

१६०३. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४ से ५६। ले० काल ×। वे० सं० २०८। ख भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नही हैं।

१६०४. प्रति सं० ९। पत्र सं० ८७। ले० काल सं० १८८७ माघ सुदी ८। वे० सं० ८४। ग भण्डार।

१६०५. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३९९। ले० काल सं० १९२० बैशाख सुदी १। वे० सं० ८५। ग भण्डार।

विशेष—प्रति गुटके के रूप में है। लिपि बहुत सुन्दर है। अक्षर मोटे है तथा एक पत्र में ५ लाइन और प्रति लाइन में १८ अक्षर हैं। पद्यों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है। विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रो मे है। यह ग्रन्थ तनसुख सोनी का है।

१६०६. प्रति सं० ११। पत्र सं० २८ से १११। ले० काल सं १७१४। अपूर्ण। वे० सं० ७६७। क भण्डार।

विशेष— रामगोपाल कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६०७. प्रति सं० १२। पत्र सं० १२२। ले० काल सं० १९५१ चैत्र सुदी २। वे० सं० ७६८। क भण्डार।

विशेष—म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी।

१६०८. प्रति सं० १३। पत्र सं० १०१। ले० काल सं० १९४३ मंगसिर बुदी १३। वे० सं० ७६९। क भण्डार।

विशेष—लक्ष्मीनारायण ब्राह्मण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी।

१६०६. प्रति सं० १४। पत्र सं० १६०। ले० काल सं० १६७७ प्रथम सावण सुदी १३। वे० सं० ७७०। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी टीका है।

१६१०. प्रति सं० १५। पत्र सं० १०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७७१। क भण्डार।

१६११. प्रति सं० १६। पत्र सं० २ से २२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३५७। क भण्डार।

१६१२. प्रति सं० १७। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १७६३ आषाढ़ सुदी १५। वे० सं० ७७२। क भण्डार।

१६१३. प्रति सं० १८। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८३४ मंगसिर बुदी ६। वे० सं० ६६२। च भण्डार।

विशेष—पांडे नानगराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई।

१६१४. प्रति सं० १६। पत्र सं० ६०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६६५। च भण्डार।

१६१५. प्रति सं० २०। पत्र सं० ४१ से १३२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६६५ (क)। च भण्डार।

१६१६. प्रति सं० २१। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० ६६५ (ख)। च भण्डार।

१६१७. प्रति सं० २२। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० ६६५ (ग)। च भण्डार।

१६१८. प्रति सं० २३। पत्र सं० ४० से ५०। ले० काल सं० १७०४ ज्येष्ठ सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ६२ (अ)। छ भण्डार।

१६१६. प्रति सं० २४। पत्र सं० १८३। ले० काल सं० १७८८ आषाढ बुदी २। वे० सं० ३। ज भण्डार।

विशेष—भिण्ड निवासी किसी कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६२०. प्रति सं० २५। पत्र सं० ४ से ८१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५२६। ट भण्डार।

१६२१. प्रति सं० २६। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७०८। ट भण्डार।

१६२२. प्रति सं० २७। पत्र सं० २३७। ले० काल सं० १७४६। वे० सं० १६०६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति राजमल्लकृत गद्य टीका सहित है।

१६२३. प्रति सं० २८। पत्र सं० ६०। ले० काल ×। वे० सं० १८६०। ट भण्डार।

१६२४. समयसारभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ५१३। आ० १३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १०। ले० काल सं० १६४६। पूर्ण। वे० सं० ७४८। क भण्डार।

१६२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६६। ले० काल ×। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

१६२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१६। ले० काल ×। वे० सं० ७५०। क भण्डार।

१६२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदासुखजी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१७ । ले० काल सं० १८७७ आषाढ़ बुदी १५ । वे० सं० १११ । घ भण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ में नवाब गजुद्दीह बहादुर के राज्य में प्रतिलिपि की ।

१६२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७५ । ले० काल सं० १९५२ । वे० सं० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०१ से ३१२ । ले० काल × । वे० सं० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२. समयसारकलशाटीका ······ । पत्र सं० २०० से ३३२ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—बंध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाद चूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नही है । पहिले कलशा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी में अर्थ है । समयसार टीका श्लोक सं० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा······ । पत्र सं० ६२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४. समयसारवचनिका······ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७. समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र सं० ५१ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । क भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र······ । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१. समाधितन्त्रभाषा······ । पत्र सं० १३८ से १९२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७५५ । क भण्डार ।

१६४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल X । वे० सं० ७५७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ ऋषभदास निगोत्या द्वारा शुद्ध किया गया है ।

१६४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

१६४६. **समाधितन्त्रभाषा—नाथूराम दोसी** । पत्र सं० ४१५ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–योग । र० काल सं० १६२३ चैत्र सुदी १२ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ७६१ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१० । ले० काल X । वे० सं० ७६२ । क भण्डार ।

१६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी १० । वे० सं० ७८० । ङ भण्डार ।

१६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७५ । ले० काल X । वे० सं० ६६७ । च भण्डार ।

१६५०. **समाधितन्त्रभाषा—पर्वतधर्मार्थी** । पत्र सं० १८७ । आ० १२¾×५ इञ्च । भाषा–गुजराती लिपि हिन्दी । विषय–योग । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ११३ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र दुबारा लिखे गये है । सारंगपुर निवासी पं० उधरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १७४१ कार्त्तिक सुदी ६ । वे० सं० ११४ । घ भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । ङ भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २०१ । ले० काल X । वे० सं० ७८२ । ङ भण्डार ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १७७१ । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

विशेष—समीरपुर में पं० नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४२ । छ भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७३४ पौष सुदी ११ । वे० सं० ४४ । ज भण्डार ।

विशेष—पाण्डे ऊधोलाल काला ने केसरलाल जोशी से बहिन नाथी के पठनार्थ सीलोर में प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति गुटका साइज है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३८ । ले० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी १३ । वे० सं० ५६ । म भण्डार ।

१६५८. **समाधिमरण**........। पत्र सं० ४ । आ० ७¼×६½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३२६ ।

१६५९. **समाधिमरणभाषा—द्यानतराय** । पत्र सं० ३ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४४२ । अ भण्डार ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

१६६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल X । वे० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

१६६२. समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १०१। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १९३३। पूर्ण। वे० सं० ७६६। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है। टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचंद। पत्र सं० ७। आ० ७३⁄४×५३⁄४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

१६६४. समाधिमरणभाषा·········। पत्र सं० १३। आ० १३३⁄४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७८४। क भण्डार।

१६६५. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० १७३७। ट भण्डार।

१६६६. समाधिमरणस्वरूपभाषा·········। पत्र सं० २५। आ० १०१⁄२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १८७८ मंगसिर बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४३१। अ भण्डार।

१६६७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १८८३ मंगसिर बुदी ११। वे० सं० ८६। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया।

१६६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १८२७। वे० सं० ६९९। च भण्डार।

१६६९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १९। ले० काल सं० १९३४ भादवा सुदी १। वे० सं० ७००। च भण्डार।

१६७०. प्रति सं० ५। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १८८४ भादवा बुदी ८। वे० सं० २३९। छ भण्डार।

१६७१. प्रति सं० ६। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १८५३ पौष बुदी ९। वे० सं० १७५। ज भण्डार।

विशेष—हरवंश लुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

१६७२. समाधिशतक—पूज्यपाद। पत्र सं० १९। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६४। अ भण्डार।

१६७३. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ७६। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६७४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १९२४ बैशाख बुदी ६। वे० सं० ७७। ज भण्डार।

विशेष—संगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१६७५. समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य। पत्र सं० ५२। आ० १२३⁄४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल सं० १९३५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ७६३। क भण्डार।

१६७६. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल ×। वे० [redacted] ७६५। क भण्डार।

१६७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १९५८ फागुण बुदी १३ । वे० सं० ३७३ । च
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६७८. प्रति स० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७४ । च भण्डार ।

१६७९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७८५ । क भण्डार ।

१६८०. समाधिशतकटीका········। पत्र सं० १५ । भ्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ । अ भण्डार ।

१६८१. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० १६ । भ्रा० ६½×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१६८२. सबोधपंचासिका—रइधू । पत्र सं० ५ । भ्रा० ११×६ इञ्च । भाषा–भ्रपभ्रंश । र० काल × । ले० काल सं० १७१९ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्ति—

संवत् १७१९ वर्षे मिती पौस वदि ७ सुभ दिने महाराजाधिराज श्री जैसिहजी विजयराज्ये साह श्री हंसराज तत्पुत्र साह श्री गेगराज तत्पुत्र त्रयः प्रथम पुत्र साह राइमलजी । द्वितीय पुत्र साह श्री वलिकर्ण तृतीय पुत्र साह देवसी । जाति साबडा साह श्री रायमलजी का पुत्र पवित्र साह श्री विहारीदासजी लिखायते ।

दोहडा—पूरव श्रावक कौ कहे, गुण इकवीस निवास ।
सो परतखि पेखिये, अंगि बिहारीदास ॥

लिखतं महात्मा डूंगरसी पंडित पदमसीजी का चेला खरतर गच्छे वासी मौजे मौहाणात् मुकाम दिल्ली मध्ये ।

१६८३. संबोधशतक—द्यानतराय । पत्र सं० ३४ । भ्रा० ११×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम २० पत्रों में चरचा शतक भी है । प्रति दोनों ओर से जली हुई है ।

१६८४. संबोधसत्तरी········। पत्र सं० २ से ७ । भ्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८ । अ भण्डार ।

१६८५. स्वरोदय········। पत्र सं० १६ । भ्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य उदयराम ने टीका लिखी थी ।

१६८६. स्वानुभवदर्पण—नाथूराम । पत्र सं० २१ । भ्रा० १३×८½ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १९५६ चैत्र सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७ । छ भण्डार ।

१६८७. हठयोगदीपिका········। पत्र सं० २१ । भ्रा० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४४ । च भण्डार ।

विषय-न्याय एवं दर्शन

अध्यात्म

१६८८. अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड—कवि राजमल्ल। पत्र सं० २ से १३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९७५। अ भण्डार।

१६८९. अष्टशती—अकलंकदेव। पत्र सं० १७। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १७९४ मंगसिर बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० २२२। अ भण्डार।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है। पं० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६९०. प्रति सं० २। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १८७५ फागुन सुदी ३। वे० सं० १५१। ज भण्डार।

१६९१. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि। पत्र सं० १९७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैनदर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १७९१ मंगसिर सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २४४। अ भण्डार।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है। लिपि सुन्दर है। अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है। पं० चोखचन्द ने अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई। प्रशस्ति—

श्री भूरामल संघ मंडनमणिः, श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगणगच्छपुस्तकभिधा, श्री देवसंघाग्रणी संवत्सरे चंद्र रंध्र मुनीदुमिते (१७९१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ चोखचंदेरा विदुषा शुभं पुस्तकमष्टसहस्र्याख्यप्रमाणेन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृतं।

पुस्तकमष्टसहस्र्या वै चोखचंद्रेण धीमता।
ग्रहीतं शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६९२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४०। ङ भण्डार।

१६९३. आप्तपरीक्षा—विद्यानन्दि। पत्र सं० २५७। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १९३६ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ५८। क भण्डार।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी। भीगने से पत्र चिपक गये हैं।

१६९४. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ५९। क भण्डार।

विशेष—कारिका मात्र है।

१६९५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३३। अपूर्ण। च भण्डार।

१६६६. आप्तमीमांसा—समन्तभद्राचार्य। पत्र सं० ८४। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–जैन न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १६३५ आषाढ़ सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ६०। क भण्डार।

विशेष—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'देवागमस्तोत्र सटीक अष्टशती' दिया हुआ है।

१६६७. प्रति सं० २। पत्र सं० १०१। ले० काल ×। वे० सं० ६१। क भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० ६३। क भण्डार।

१६६९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० ६२। क भण्डार।

१७००. आप्तमीमांसालंकृति—विद्यानन्दि। पत्र सं० २२६। आ० १६×७ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १७६६ भादवा सुदी १५। वे० सं० १४।

विशेष—इसी का नाम अष्टशती भाष्य तथा अष्टसहस्री भी है। मालपुरा ग्राम मे महाराजाधिराज राजसिंह जी के शासनकाल में चतुर्भुज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी। प्रति काफी बड़ी साइज की है।

१७०१. प्रति सं० २। पत्र सं० २२५। ले० काल ×। वे० सं० ८६६। क भण्डार।

विशेष—प्रति बड़ी साइज की तथा सुन्दर लिखी हुई है। प्रति प्रदर्शन योग्य है।

१७०२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७२। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल सं० १७८४ श्रावण सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ७३। ङ भण्डार।

१७०३. आप्तमीमांसाभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ६२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–न्याय। र० काल सं० १८६६। ले० काल १८९०। पूर्ण। वे० सं० ३६५। अ भण्डार।

१७०४. आलापपद्धति—देवसेन। पत्र सं० १०। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०। अ भण्डार।

विशेष—१ पृष्ठ से ४ पृष्ठ तक प्राभृतसार ४ से ६ तक सप्तभंग ग्रन्थ और हैं।

प्राभृतसार—मोह तिमिर मार्त्तंड रियजनन्दिपंच शाक्तिकदेवेनेदं कथितं।

१७०५. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० २०१० फागुण बुदी ४। वे० सं० २२७०। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में प्राभृतसार तथा सप्तभंगी है। जयपुर में नाथूलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

१७०६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १९। ले० काल ×। वे० सं० ७६। ङ भण्डार।

१७०७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६। च भण्डार।

१७०८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ३। च भण्डार।

१७०९. प्रति सं० ६। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ४। ञ भण्डार।

विशेष—मूलसघ के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

१७१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ से १५ । ले० काल सं० १७८६ । अपूर्ण । वे० सं० ५१५ । ञ भण्डार ।

१७११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० ले० काल × । वे० सं० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२. ईश्वरवाद ....। पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय- दर्शन । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । ञ भण्डार ।

विशेष— किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७१३. गर्भषडारचक्र—देवनंदि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । झ भण्डार ।

१७१४. ज्ञानदीपक........। पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ख भण्डार ।

विशेष- स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ हैं ।

१७१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २३ । झ भण्डार ।

१७१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ से ६४ । ले० काल सं० १८५६ चैत बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० १५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुणो चितधार ।

सब विद्या को मूल ये या विन सकल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत संपूर्णं ।

१७१७. ज्ञानदीपकवृत्ति .... पत्र सं० ८ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ-

नमामि पूर्णचिद्रूपं नित्योदितमनावृत्तं ।

सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिंगितमीश्वरं ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरैः ।

स्वरस्नेहन संयोज्यं ज्वालयेदुत्तराधरैः ॥२॥

१७१८. तर्कप्रकरण ...... । पत्र सं० ४० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५८ । अ भण्डार ।

१७१९. तर्कदीपिका........। पत्र सं० १५ । आ० १४×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १८३२ माह सुदी १३ । वे० सं० २२४ । ज भण्डार ।

१७२०. तर्कप्रमाण ······ । पत्र सं० ८ से ५० । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण एवं जीर्ण । वे० सं० १६४५ । अ भण्डार ।

१७२१. तर्कभाषा—केशव मिश्र । पत्र सं० ४४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ७१ । ख भण्डार ।

१७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २६ । ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी १० । वे० सं० २७३ । ङ भण्डार ।

१७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी २ । वे० सं० २२५ । ञ भण्डार ।

१७२४. तर्कभाषाप्रकाशिका—बालचन्द्र । पत्र सं० ३५ । आ० १०×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

१७२५. तर्करहस्यदीपिका—गुणरत्नसूरि । पत्र सं० १३५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६४ । अ भण्डार ।

विशेष—यह हरिभद्र के षड्दर्शन समुच्चय की टीका है ।

१७२६. तर्कसंग्रह—अन्नंभट्ट । पत्र सं० ७ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०२ । अ भण्डार ।

१७२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८२४ भादवा बुदी ५ । वे० सं० ४७ । ज भण्डार ।

विशेष—रावल मूलराज के शासन में लच्छीराम ने जैसलपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१७२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१२ माह सुदी ११ । वे० सं० ४८ । ज भण्डार ।

विशेष—पोथी माणकचन्द लुहाड्या की है । 'लेखक विजराम पौष बुदी १३ संवत् १८१३' यह भी लिखा हुआ है ।

१७२९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १७६३ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० १७६५ । ट भण्डार ।

विशेष—आमेर के नेमिनाथ चैत्यालय में भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य (छात्र) दोदराज ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१७३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर बुदी ४ । वे० सं० १७६८ । ट भण्डार ।

विशेष—चेला प्रतापसागर पठनार्थं ।

१७३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने अपने हाथ से प्रतिलिपि की ।

नोट—उक्त ६ प्रतियों के अतिरिक्त तर्कसंग्रह की अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६१३, १८३६, २०४६) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७४) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १७६६, १८३२) और हैं।

१७३२. तर्कसंग्रहटीका…… । पत्र सं० ८ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

१७३३. तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८० । अ भण्डार ।

१७३४. दर्शनसार—देवसेन । पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–दर्शन । र० काल सं० ६६० माघ सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में हुई थी ।

१७३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८७१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० बख्तराम के शिष्य हरवंश ने नेमिनाथ चैत्यालय (गोधों के मन्दिर) जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१७३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

१७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३ । व्य भण्डार ।

१७३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८५० भादवा बुदी ८ । वे० सं० ५ । व्य भण्डार ।

विशेष—जयपुर में पं० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१७३९. दर्शनसारभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–दर्शन । र० काल सं० १९२० प्र० श्रावण बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

१७४०. दर्शनसारभाषा—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० २८१ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–दर्शन । र० काल सं० १९२३ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १९३६ । पूर्ण । वे० सं० २९४ । क भण्डार ।

१७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० २८६ । क भण्डार ।

१७४२. दर्शनसारभाषा……। पत्र सं० ७२ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । ख भण्डार ।

१७४३. द्विजवचनचपेटा । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । ञ भण्डार ।

१७४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७४५. नयचक्र—देवसेन । पत्र सं० ४५ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सात नयो का वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १९४३ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ३३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम सुखबोधार्थ माला पद्धति भी है । उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार मे तीन प्रतियां (वे० सं० ३५३, ३५४, ३५६) च छ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १७७ व १०१) और हैं ।

१७४६. नयचक्रभाषा—हेमराज । पत्र सं० ५१ । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सात नयो का वर्णन । र० काल सं० १७२६ फागुण सुदी १० । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । क भण्डार ।

१७४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९० । ले० काल सं० १७२६ । वे० स० ३५८ । क भण्डार ।

विशेष—७७ पत्र मे तत्त्वार्थ सूत्र टीका के अनुसार नय वर्णन है ।

नोट—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त ङ, छ, ज, झ भण्डारों मे एक एक प्रति (वे० सं० ३४५, १८७, ६२३, ८१) क्रमशः और हैं ।

१७४८. नयचक्रभाषा...... । पत्र सं० १०६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले० काल सं० १९४८ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३५९ । क भण्डार ।

१७४९. नयचक्रभावप्रकाशिनीटीका—निहालचन्द अग्रवाल । पत्र सं० १३७ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-न्याय । र० काल सं० १८६७ । ले० काल सं० १९४४ । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका कानपुर कैंट में की गई थी ।

१७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

१७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १९३८ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ३६२ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७५२. न्यायकुमुदचन्द्रोदय—भट्ट अकलंकदेव । पत्र सं० १५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १ से ९ तक न्यायकुमुदचन्द्रोदय ५ परिच्छेद तथा शेष पृष्ठों में भट्टाकलंकशशांकानुस्मृति प्रवचन प्रवेश है ।

१७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६४ पौष सुदी ७ । वे० सं० २७० । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई राम ने प्रतिलिपि की थी ।

१७५४. न्यायकुमुदचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव । पत्र सं० ५८८ । आ० १४३/४×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वे० सं० ३९६ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टाकलंक कृत न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है ।

१७५५. न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति । पत्र सं० ३ से ८ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०७ । अ भण्डार ।

नोट—उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३६७, ३९८) घ एवं च भण्डार में एक २ प्रति (वे० सं० ३४७, १८० , च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १८०, १८१) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२) और है ।

१७५६. न्यायदीपिकाभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ७१ । आ० १४×७१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–दर्शन । र० काल सं० १९३० । ले० काल स० १९३८ बैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । क भण्डार ।

१७५७. न्यायदीपिकाभाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० १६० । आ० १२३/४×७१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–न्याय । र० काल सं० १९३५ । ले० काल सं० १९४१ । पूर्ण । वे० सं० ३९९ । क भण्डार ।

१७५८. न्यायमाला—परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि । पत्र सं० ८६ से १२७ । आ० १०१/२×५१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९०० सावण बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० २०९३ । अ भण्डार ।

१७५९. न्यायशास्त्र ⋯⋯ । पत्र सं० २ से ५२ । आ० १०१/२×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९७६ । अ भण्डार ।

१७६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९४६ । अ भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय ग्रन्थ में उद्धृत है ।

१७६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५ । ज भण्डार ।

१७६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६८ । ट भण्डार ।

१७६३. न्यायसार—माधवदेव (लक्ष्मणदेव का पुत्र) पत्र सं० २८ से ८७ । आ० १०१/२×४१/२ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल सं० १७४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३४३ अ भण्डार ।

१७६४. न्यायसार⋯⋯ । पत्र सं० २४ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१९ । अ भण्डार ।

विशेष—आगम परिच्छेद तर्कपूर्ण है ।

१७६५. न्यायसिद्धांतमञ्जरी—जानकीनाथ । पत्र सं० १४ से ४६ । आ० ६३/४×३३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । वे० सं० १५७८ । अ भण्डार ।

१७६६. न्यायसिद्धांतमञ्जरी—भट्टाचार्य चूडामणि। पत्र सं० २८ । ग्रा० १३×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३ । ज भण्डार।

विशेष—सटीक प्राचीन प्रति है।

१७६७. न्यायसूत्र……। पत्र सं० ४ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२१ । अ भण्डार।

विशेष—हेम व्याकरण मे से न्याय सम्बन्धी सूत्रों का सग्रह किया गया है। ग्राशानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७६८. पट्टरीति—विष्णुभट्ट। पत्र सं० २ से ६ । ग्रा० १०¾×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० १२६७ । अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्तिम पुष्पिका– इति साधर्म्य वैधर्म्य संग्रहोऽयं कियानपि विष्णुभट्टैः पट्टरीत्या बालव्युत्पत्तये कृतः। प्रति प्राचीन है।

१७६९. पत्रपरीक्षा—विद्यानंदि। पत्र सं० १५ । ग्रा० १२½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७८९ । अ भण्डार।

१७७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १६७७ ग्रासोज बुदी ९ । वे० सं० १६४६ । ट भण्डार।

विशेष—शेरपुरा मे श्री जिन चैत्यालय में लिखमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७७१. पत्रपरीक्षा—पात्र केशरी। पत्र सं० ३७ । ग्रा० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ ग्रासोज सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४५७ । क भण्डार।

१७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४५८ । क भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

१७७३. परीक्षामुख—माणिक्यनंदि। पत्र सं० ५ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३९ । क भण्डार।

१७७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी १ । वे० सं० २१३ । च भण्डार।

१७७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९७ से १२६ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २१४ । च भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

१७७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । छ भण्डार।

१७७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १९०८ । वे० सं० १४५ । ज भण्डार।

लेखन काल ग्रष्टे व्योम क्षिति निधि भूमि ते भाद्रमासगे)

१७७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७३८ । ट भण्डार।

१७७६. परीक्षामुखभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ३०६ । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-न्याय । र० काल सं० १८६३ आषाढ़ सुदी ४ । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । क भण्डार ।

१७८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ४५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर अक्षरों में है । एक पत्र पर हाशिया पर सुन्दर बेलें हैं । अन्य पत्रों पर हाशिया में केवल रेखायें ही दी हुई हैं । लिपिकार ने ग्रन्थ अधूरा छोड़ दिया प्रतीत होता है ।

१७८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५६ । घ भण्डार ।

१७८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । आ० १०३×५३ इञ्च । ले० काल सं० १८७८ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ५०५ । क भण्डार ।

१७८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१८ । ले० काल × । वे० सं० ६३६ । च भण्डार ।

१७८४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १६१६ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० ६४० । च भण्डार ।

१७८५. पूर्वमीमांसार्थप्रकरण-संग्रह—लोगाक्षिभास्कर । पत्र सं० ६ । आ० १२३×६३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । ज भण्डार ।

१७८६. प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकारटीका—रत्नप्रभसूरि । पत्र सं० २८८ । आ० १२×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है । मूलकर्त्ता वादिदेव सूरि है ।

१७८७ प्रमाणनिर्णय·······। पत्र सं० ६४ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

१७८८. प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानंदि । पत्र सं० ६६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६३४ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४६८ । क भण्डार ।

१७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता । मितिराषाढमासस्यपक्षेश्यामलके तिथौ तृतीयायां प्रमाणाख्य परीक्षा लिखिता खलु ॥१॥

१७९०. प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द । पत्र सं० २०२ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-न्याय । र० काल सं० १६१३ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

१७९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१६ । ले० काल × । वे० सं० ५०० । क भण्डार ।

१७९२. प्रमाणप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसेन । पत्र सं० ६७ । आ० १२×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । क भण्डार ।

१७६३. प्रमाणमीमांसा—विद्यानन्दि । पत्र सं० ४० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७६४. प्रमाणमीमांसा……। पत्र सं० ६२ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६५७ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ । क भण्डार ।

१७६५. प्रमेयकमलमार्त्तण्ड—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७६ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७८ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १३८ तथा २७६ से आगे नहीं है ।

१७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३८ । ले० काल सं० १६४२ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० ५०३ । क भण्डार ।

१७६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०४ । क भण्डार ।

१७६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष—५ पत्रों तक संस्कृत टीका भी है । सर्वज्ञ सिद्धि में गदेहवादियों के खण्डन तक है ।

१७६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ से ३४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४७ । ट भण्डार ।

१८००. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६३४ भादवा सुदी ७ । वे० सं० ४५२ । क भण्डार ।

विशेष—परीक्षामुख की टीका है ।

१८०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० २३७ । ख भण्डार ।

१८०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १७६७ माघ बुदी १० । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—तक्षकपुर में रत्नऋषि ने प्रतिलिपि की थी ।

१८०३. बालबोधिनी—शंकर भगति । पत्र सं० १३ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६२ । अ भण्डार ।

१८०४. भावदीपिका—कृष्ण शर्मा । पत्र सं० ११ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६५ । ट भण्डार ।

विशेष—सिद्धानमञ्जरी की व्याख्या दी हुई है ।

१८०५. महाविद्याविडम्बन……। पत्र सं० १२ से १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १५५३ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५५३ वर्षे फागुण सुदी ११ सोमे अद्येह श्रीपत्तनमध्ये एतत् पत्राणि लिखितानि सम्पूर्णानि ।

१८०६. युक्त्यनुशासन—आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं० ६। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०४। क भण्डार।

१८०७. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। ६०५। क भण्डार।

१८०८. युक्त्यनुशासनटीका—विद्यानन्दि। पत्र सं० १८८। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १९३४ पौष सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ६०१। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी।

१८०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ५६। ले० काल ×। वे० सं० ६०२। क भण्डार।

१८१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४२। ले० काल सं० १९४७। वे० सं० ६०३। क भण्डार।

१८११. वीतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र। पत्र सं० ७। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १५१२ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० २५२। अ भण्डार।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग मे प्रतिलिपि की गई थी। संवत् १५१२ वर्षे आसोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट दुर्गे लिखितः।

१८१२. वीरद्वात्रिंशतिका—हेमचन्द्रसूरि। पत्र सं० ३३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७७। अ भण्डार।

विशेष—३३ से आगे पत्र नही है।

१८१३. षड्दर्शनवार्त्ता ……। पत्र सं० २८। आ० ८×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र० काल । ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१। ट भण्डार।

१८१४. षड्दर्शनविचार……। पत्र सं० १०। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १७२४ माह बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ७४२। क भण्डार।

विशेष—सागानेर मे जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। श्लोकों का हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है।

१८१५. षड्दर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि। पत्र सं० ७। आ० १२½×५ इंच। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०६। क भण्डार।

१८१६. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६८। घ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है।

१८१७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ७४३। क भण्डार।

१८१८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १५७० भादवा सुदी २। वे० सं० ३९९। अ भण्डार।

१८१९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १८६४। ट भण्डार।

१८२०. षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति—गणरत्नसूरि। पत्र सं० १८५। आ० १३×८ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १९४७ द्वि० भादवा सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ७११। क भण्डार।

१८२१. षड्दर्शनसमुच्चयटीका……। पत्र सं० ६०। आ० १२३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७१०। क भण्डार।

१८२२. संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया……। पत्र सं० ४६। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १७२७। वे० सं० ३६७। व्य भण्डार।

१८२३. सप्तनयावबोध—मुनि नेत्रसिंह। पत्र सं० ६। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन (सप्त नयों का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल सं० १७४५। पूर्ण। वे० सं० ३४६। अ भण्डार।

प्रारम्भ— विनय-मुनि-नयस्थाः सर्वभावा भुविस्था।
जिनमतकृतिगम्या नेतरेषा सुरम्याः ॥
उरुकृतगुरुगाशासेव्यमाना सदा मे।
विदधतु सुकृपांते ग्रन्थ प्ररम्यमाणे ॥१॥
मादृदेवं प्रणम्यादौ सप्तनयावबोधकं
यं श्रुत्वा येन मार्गेण गच्छन्ति सुधियो जनाः ॥१॥

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है। नीयते प्राप्यते अर्थोऽनेनेति नयः णीञ् प्रापणे इति वचनात्।

अन्तिम— तत्पुण्यं मुनि-धर्मकर्मनिधनं मोक्षं फलं निर्मलं।
लब्धं येन जनेन निश्चयनयात् श्री नेत्रसिंघोदितः ॥
स्याद्वादमार्गाश्रयिणो जनाः ये श्रोष्यति शास्त्रं मुनयावबोधं।
मोक्ष्यंति चैकांतमतं सुदोषं मोक्षं गमिष्यंति सुखेन भव्याः ॥

इति श्री सप्तनयावबोधं शास्त्रं मुनिनेत्रसिंहेन विरचितं शुभं चेयं ॥

१८२४. सप्तपदार्थी……। पत्र सं० ३६। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन मतानुसार सात पदार्थों का वर्णन है। ले० काल ×। र० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८८। व्य भण्डार।

१८२५. सप्तपदार्थी—शिवादित्य। पत्र सं० ×। आ० १०¾×४¼ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-वैशेषिक न्याय के अनुसार सप्त पदार्थों का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११६३। ट भण्डार।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१८२६. सन्मतितर्क—मूलकर्त्ता सिद्धसेन दिवाकर। पत्र सं० ४८। आ० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६०३। अ भण्डार।

१८२७. सारसंग्रह—वरदराज। पत्र सं० २ से ७३। आ० १०¾×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८२१। क भण्डार।

१८२८. सिद्धान्तमुक्तावलिटीका—महादेवभट्ट। पत्र सं० ६८। आ० ११×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल सं० १७५६। वे० सं० ११७२। अ भण्डार।

विशेष—जैनेतर ग्रन्थ है।

१८२९. स्याद्वादचूलिका········। पत्र सं० १५। आ० ११½×५ इंच। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल सं० १६३० कार्तिक बुदी ५। वे० सं० २१६। अ भण्डार।

विशेष—सागवाड़ा नगर में ब्रह्म तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था। समयसार के कुछ पाठों का अंश है।

१८३०. स्याद्वादमञ्जरी —मल्लिषेणसूरि। पत्र सं० ४। आ० १२½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३४। अ भण्डार।

१८३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५४ से १०६। ले० काल सं० १५२१ माघ सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० ३६६। अ भण्डार।

१८३२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। आ० १२×५½ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६१। अ भण्डार।

विशेष—केवल कारिकामात्र है।

१८३३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६०। अ भण्डार।



विषय- पुराण साहित्य

१८३४. अजितपुराण—पंडिताचार्य अरुणमणि। पत्र सं० २७३। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल सं० १७१६। ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २१८। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १७८६ वर्षे मिती जेष्ट सुदी ६। जहानाबादमध्ये लिखापितं आचार्य हर्षकीर्तिजी मयाराम स्वपठनार्थं।

१८३५. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७। छ भण्डार।

विशेष—१६वें पर्व के ६४वें श्लोक तक है।

१८३६. अजितनाथपुराण—विजयसिंह। पत्र सं० १२६। आ० ६३×४ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–पुराण। र० काल सं० १५०५ कार्तिक सुदी १५। ले० काल सं० १५८० चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २२८। अ भण्डार।

विशेष—सं० १५८० में इब्राहीम लोदी के शासनकाल मे सिकन्दराबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

१८३७. अनन्तनाथपुराण—गुणभद्राचार्य। पत्र सं० ८। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १८८५ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ७४। अ भण्डार।

विशेष—उत्तरपुराण से लिया गया है।

१८३८. आगामीत्रेसठशलाकापुरुषवर्णन······। पत्र सं० ८ से २१। आ० १२३×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३८। अ भण्डार।

विशेष—एकसौ उनहत्तर पुण्य पुरुषों का भी वर्णन है।

१८३९. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य। पत्र सं० ५२७। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १८९४। पूर्ण। वे० सं० ६२। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर में पं० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

१८४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ५०६। ले० काल सं० १६६४। वे० सं० १५४। अ भण्डार।

१८४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०४२। अ भण्डार।

१८४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४८१। ले० काल सं० १६५०। वे० सं० ५६। क भण्डार।

१८४३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४३७। ले० काल × वे० सं० ५७। क भण्डार।

विशेष—देहली में सन्तलालजी की कोठी पर प्रतिलिपि हुई थी।

१८४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७१ । ले० काल सं० १९१४ बैसाख सुदी १० । वे० सं० ६ । घ भण्डार ।

विशेष—हाथरस नगर मे टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६१ । ले० काल सं० १८९४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २५० । ङ भण्डार ।

विशेष—सेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल गौड़ से अपने पुत्र पौत्रादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी । प्रशस्ति काफ़ी बड़ी है । भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर सं० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । कहीं कही कठिन शब्दो का संस्कृत मे अर्थ भी दिया है ।

१८४६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल × । जीर्ण । वे० सं० १४६ । ञ भण्डार ।

१८४७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १६०४ मंगासर बुदी ९ । वे० सं० २५२ । ञ भण्डार ।

१८४८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५१० । ले० काल सं० १८०४ पौष बुदी ४ । वे० सं० ४५१ । ञ भण्डार ।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी

१८४९. प्रति सं० १० । पत्र स० २०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८८ । ट भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४२) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५) ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६९) च भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३०, ३१, ३२) ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६८६) और है ।

१८५०. आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८०१ । अ भण्डार ।

१८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७० । अ भण्डार ।

१८५२. आदिपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५२ से ६२ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९ । च भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३. आदिपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ३२५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६३० भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५३ । क भण्डार ।

१८५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ । ङ भण्डार ।

विशेष—बीच में कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । साह व्यहराज ने पंचमी व्रतोद्यापनार्थ कर्मक्षय निमित्त यह ग्रन्थ लिखाकर महात्मा खेमचन्द को भेंट किया ।

१८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० [illegible] । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।

१८५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २९५ । ले० काल सं० १७१६ । वे० सं० २९३ । श्र भण्डार ।

विशेष—कही कहो कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८५७. आदिपुराण—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४०० । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १८२४ । ले० काल सं० १८८३ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४६ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के तीन पत्र नवीन लिखे गये हैं ।

१८५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५०६ । ले० काल सं० १८२४ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १५८ । छ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त ग भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६) ङ भण्डार में ४ प्रतिया (वे० सं० ६७, ६८, ६९, ७०) च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५१८, ५१९) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५५) तथा झ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ८६, १४६) और है । ये सभी प्रतिया अपूर्ण हैं ।

१८६०. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२६ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३० । श्र भण्डार ।

१८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८३ । ले० काल स० १६०६ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ८ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच मे २ पृष्ठ नये लिखाकर रखे गये है । काष्ठासंघी माथुरान्वयी भट्टारक श्री उद्धरसेन की बड़ी प्रशस्ति दी हुई है । जहांगीर बादशाह के शासनकाल मे चौहाणाराज्यान्तर्गत अलाउपुर (अलवर) के तिजारा नामक ग्राम में श्री आदिनाथ चैत्यालय में श्री गोरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६२, प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४० । ले० काल सं० १६३५ माह सुदी ५ । वे० सं० ५९० । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे संकेतार्थ दिया है ।

१८६३. प्रति स० ४ । पत्र सं० ३०६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० १ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुरमे महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई । सा० हेमराज ने संतोषराम के शिष्य बखतराम को भेंट किया । कठिन शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं ।

१८६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५३ । ले० काल सं० १८८८ सावण सुदी १३ । वे० सं० ६ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१८६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८४ । ले० काल सं० १६६७ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जयकीर्त्ति के शिष्य ब्रह्मकल्याणसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल सं० १७०६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ३२४ । ख भण्डार ।

विशेष—पांडे गोर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७२ । ले० काल सं० १७१८ भादवा सुदी १२ । वे० सं० ९७१ । ख भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ, क और ङ भण्डार में एक-एक प्रति (वे० सं० ६२४, ६७३, ७७) और हैं । सभी प्रतियां अपूर्ण हैं ।

१८६८. उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल सं० १०८० । ले० काल स० १५७५ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५४ । अ भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत उत्तरपुराण का टिप्पण है । लेखक प्रशस्ति—

श्री विक्रमादित्य संवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिक सहस्रे महापुराणविषमपदविवरणसागरसेनसैद्धांतान् परिज्ञाय मूलटिप्पणकाचावलोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं । अज्ञपातभीतेन श्रीमद् बलात्कारगणश्रीसंघाचार्य सत्कवि शिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निज दोर्दंडाभिभूतरिपुराज्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य ।। १०२ ।।

इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचन्द्राचार्यविरचितंसमाप्तं ।। अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द संवत् १५७५ वर्षे भादवा सुदी ५ बुधदिने कुरुजांगलदेशे सुलितान सिकंदर पुत्र सुलितानइब्राहिमराज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तदाम्नाये जैसवाल चौ० जगसी पुत्र चौ० टोडरमल्लु इदं उत्तरपुराण टीका लिखापितं । शुभं भवतु । मांगल्यं ददाति लेखक पाठकयोः ।

१८६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० १४५ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरमेष्ठिप्रणामोपार्जितामलपुण्यनिराकृताखिलमल कलंकेन श्रीमत् प्रभाचन्द्र पंडितेन महापुराण टिप्पणकं सतत्र्यधिक सहस्रत्रय प्रमाणं कृतमिति ।

१८७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १८७६ । ट भण्डार ।

१८७१. उत्तरपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० ३१० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १७९९ मंगसिर सुदी १० । ले० काल सं० १९२८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति में खुशालचन्द का ५३ पद्यों में विस्तृत परिचय दिया हुआ है । बख्तावरलाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१८७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२० । ले० काल सं० १८८३ [illegible] सुदी ३ । वे० सं० ७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१५ । ले० काल सं० १८६६ मंगसिर सुदी १ । वे० सं० ६ । ख भण्डार ।

१८७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७४ । ले० काल सं० १८५८ कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० १८ । ङ भण्डार ।

१८७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४०४ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० १३७ । म्न भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ५२२, ५२३, ५२४) और हैं ।

१८७६. उत्तरपुराणभाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ७६३ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १९३० आषाढ सुदी ३ । ले० काल सं० १९४५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७५ । क भण्डार ।

१८७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । ङ भण्डार ।

विशेष—५३४वां पत्र नही है । कितने ही पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१८७८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४९६ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १६७ पत्र नीले रंग के है । यह संशोधित प्रति है । ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७९) च भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० ५२१, ५२५) तथा छ भण्डार मे एक प्रति और है ।

१८७९. चन्द्रप्रभपुराण—हीरालाल । पत्र सं० ३१२ आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १९१३ भादवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । क भण्डार ।

१८८०. जिनेन्द्रपुराण—भट्टारक जिनेन्द्रभूषण । पत्र सं० ६६० । आ० ११×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८४२ फागुण बुदी ७ । वे० सं० ९४ । ञ भण्डार ।

विशेष—जिनेन्द्रभूषण के प्रशिष्य ब्रह्महर्षसागर के भाई थे । १९५ अधिकार है । पुराण के विभिन्न विषय हैं ।

१८८१. त्रिषष्ठिस्मृति—महापंडित आशाधर । पत्र सं० २४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १२९२ । ले० काल सं० १८१५ शक सं० १६८० । पूर्ण । वे० सं० २३१ । अ भण्डार ।

विशेष—नलकच्छपुर में श्री नेमिजिनचैत्यालय में ग्रन्थ की रचना की गई थी । लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

१८८२. त्रिषष्ठिशलाकापुरुषवर्णन...... । पत्र सं० ३७ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । ट भण्डार ।

विशेष—३७ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१८८३. नेमिनाथपुराण—भागचन्द । पत्र सं० १६६ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १९०७ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ । छ भण्डार ।

१८८४. नेमिनाथपुराण—ब्र० जिनदास । पत्र सं० २६२ । आ० १४×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । छ भण्डार ।

१८८५. नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० १६० । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । जीर्ण । वे सं० १४६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि देवातत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा द्वितीय शिष्य मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्त्तिदेवा द्वितीयशिष्य मंडलाचार्य श्रीविशालकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीसहसकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द तदाम्नाये अगरवालान्वये गुगिलगोत्रे साह जीणा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्राः पंच । प्रथम पुत्र सा. खेता तस्य भार्या छानाही । सा. जीणा द्वितीय पुत्र सा. जेता तस्य भार्या बाधाही तयो पुत्राः त्रय प्रथम पुत्र सा. देइदास तस्य भार्या साताही तयोः पुत्रात्रयः प्रथमपुत्र चि० सिरवंत द्वितीयपुत्र चि० मांगा तृतीयपुत्र चि० चतुरा । द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरही तृतीयपुत्र सा. चीमा तस्य भार्या मानु । सा जीणा तस्य तृतीयपुत्र सा. मातु तस्य भार्या नान्यगही तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा. गोविंदा तस्य भार्या पदर्थही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र चि० मोहनदास । सा. जीणातस्य चतुर्थपुत्र सा. मल्लू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्राः त्रय प्रथमपुत्र सा. उत्मा तस्य भार्या वनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा. महीदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा. टेमा तस्य भार्या मोरवणही । सा. जीणा तस्य पंचमपुत्र सा. साधू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सावलदास तस्यभार्या पूराही एतेषां मध्ये सा. मल्लूनेनेदं शास्त्रं हरिवंशपुराणाख्यं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं मंडलाचार्य श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्दतस्यशिष्या अर्जिका शांति श्री योग्य घटापितं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं ।

१८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १६६३ आसोज सुदी ३ । वे० सं० ३८७ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र बिलकुल फटा हुआ है ।

१८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५७ । ले० काल सं० १६४६ माघ बुदी १ । वे० सं० १८६ । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति अम्बावती (आमेर) में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में नेमिनाथ चैत्यालय मे लिखी गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८८ । ले० काल सं० १८३४ पौष बुदी १२ । वे० सं० ३१ । छ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३८) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२) तथा ब भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१३) और हैं ।

१८८९. पद्मपुराण—रविषेणाचार्य । पत्र सं० ८७६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १७०८ चैत्र सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

विशेष—टोडा ग्राम निवासी साह खींवसी ने प्रतिलिपि कराकर पं० श्री हर्ष कल्याण को भेंट किया ।

१८९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६५ । ले० काल सं० १८८२ आसोज बुदी ६ । वे० सं० ५२ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवाई थी ।

१८९१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४५ । ले० काल सं० १८८५ भादवा बुदी १२ । वे० सं० ४२२ । ङ भण्डार ।

१८९२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७६८ । ले० काल सं० १८३२ सावरण सुदी १० । वे० सं १८२ । ञ भण्डार ।

विशेष—चौधरियों के चैत्यालय मे पं० गोरधनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१८९३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल सं० १७१२ आसोज सुदी । वे० सं० १८३ । ञ भण्डार ।

विशेष—अग्रवाल जातीय किसी श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४२६) तथा ङ भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० ४२३, ४२५) और हैं ।

१८९४. पद्मपुराण (रामपुराण)—भट्टारक सोमसेन । पत्र सं० ५२० । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल शक सं० १६५६ श्रावण सुदी १३ । ले० काल सं० १८६८ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २४ । अ भण्डार ।

१८९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५३ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । वे० सं० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—योगी महेन्द्रकीर्त्ति के प्रसाद से यह रचना की गई ऐसा स्वयं लेखक ने लिखा है । लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१८९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल सं० १८३६ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८ । छ भण्डार ।

विशेष—आचार्य रत्नकीर्त्ति के शिष्य नेमिनाथ ने सांगानेर मे प्रतिलिपि की थी ।

१८९७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ । ञ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में गोधों के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई ।

१८६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ । ञ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में गोधों के मन्दिर में मट्टूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४) तथा छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६) और हैं ।

१८६६. पद्मपुराण—भ० धर्मकीर्त्ति । पत्र सं० २०७ । आ० १३×६३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १८३५ कार्त्तिक सुदी १३ । वे० सं० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ़ नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६००. पद्मपुराण (उत्तरखण्ड)········ । पत्र सं० १७६ । आ० ६×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्मपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं । अन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१६०१. पद्मपुराणभाषा—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४६६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । र० काल सं० १८२३ माघ सुदी ६ । ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण । वे० सं० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० शिवदीनजी के समय में मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री अमरचन्द ने हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराकर पाटोदी के मन्दिर में चढ़ाया ।

१६०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० ४२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४१०, २२०३) क और ग भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ४२४, ५३) घ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५५, ५६) च और ज भण्डार में दो तथा एक प्रति (वे० सं० ६२३, ६२४, व २५२) तथा झ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६, ८८) और हैं ।

१६०४. पद्मपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० २०६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १७८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८७ । अ भण्डार ।

१६०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावण बुदी ऽऽ । वे० सं० ७८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी ।

इसी भण्डार में (वे० सं० ३४१) पर एक अपूर्ण प्रति और है ।

१६०६. पाण्डवपुराण—भट्टारक शुभचन्द्र। पत्र सं० १७३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल सं० १६०८। ले० काल सं० १७२१ फागुण बुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ६२। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ की रचना श्री शाकवाटपुर में हुई थी। पत्र १३५ तथा १३७ बाद मे सं० १८८६ मे पुन: लिखे गये हैं।

१६०७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३००। ले० काल सं० १८२६। वे० सं० ४६५। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ ब्रह्मश्रीपाल की प्रेरणा से लिखा गया था। महाचन्द्र ने इसका संशोधन किया।

१६०८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०२। ले० काल सं० १६१३ चैत्र बुदी १०। वे० सं० ४४५। क भण्डार।

विशेष—एक प्रति ट भण्डार में (वे० सं० २०६०) और है।

१६०९. पाण्डवपुराण—भ० श्रीभूषण। पत्र सं० २४६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल सं० १६५०। ले० काल सं० १८०० मंगसिर बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३७। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। पत्र बडकणे है।

१६१०. पाण्डवपुराण—यशःकीर्त्ति। पत्र सं० ३४०। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६६। अ भण्डार।

१६११. पाण्डवपुराणभाषा—बुलाकीदास। पत्र सं० १४६। आ० १३×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–पुराण। र० काल सं० १७५४। ले० काल सं० १८१२। पूर्ण। वे० सं० ४६०। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम ५ पत्रों मे बाईस परीषह वर्णन भाषा मे है।

अ भण्डार में इसकी एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १११८) और है।

१६१२. प्रति सं० २। पत्र सं० १५२। ले० काल सं० १८८६। वे० सं० ५५। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१६१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २००। ले० काल ×। वे० सं० ४४६। ङ भण्डार।

१६१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १४६। ले० काल ×। वे० सं० ४४७। ङ भण्डार।

१६१५. प्रति सं० ५। पत्र सं० १५७। ले० काल सं० १८६० मंगसिर बुदी १०। वे० सं० ६२६। च भण्डार।

१६१६. पाण्डवपुराण—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० २२२। आ० १३×८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। र० काल सं० १६२३ बैशाख बुदी २। ले० काल सं० १६३७ पौष बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ४६१। क भण्डार।

१६१७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२०। ले० काल सं० १६४६ कार्त्तिक सुदी १५। वे० सं० ४६४। क भण्डार।

विशेष—रामरत्न पाराशर ने प्रतिलिपि की थी।

क भण्डार में इसकी एक प्रति (वे० सं० ४४८) और है।

१६१८. पुराणसार—श्रीचन्द्रमुनि। पत्र सं० १००। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल सं० १०७७। ले० काल सं० १६०६ आषाढ़ सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० २३६। क्र भण्डार।

विशेष—आमेर (आम्रगढ़) के राजा भारामल के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

१६१६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १५४३ फाल्गुण बुदी १०। वे० सं० ४७१। क भण्डार।

१६२०. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र सं० १५६। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १८५६ मंगसिर बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ४६६। क भण्डार।

१६२१. बालपद्मपुराण—पं० पन्नालाल बाकलीवाल। पत्र सं० २०३। आ० ८×५३ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १६०६ चैत्र सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ११३८। क्र भण्डार।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है। कलकत्ते में रामप्रधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी।

१६२२. भागवत द्वादशम् स्कंध टीका……। पत्र सं० ३१। आ० १४×७३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१७८। ट भण्डार।

विशेष—पत्रों के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है।

१६२३. भागवतमहापुराण (सप्तमस्कंध)……। पत्र सं० ६७। आ० १४३×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०८८। ट भण्डार।

१६२४. प्रति सं० २ (षष्टम स्कंध)……। पत्र सं० ६२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०२६। ट भण्डार।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं।

१६२५. प्रति सं० ३। (पञ्चम स्कंध)……। पत्र सं० ८३। ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी १२। वे० सं० २०६०। ट भण्डार।

विशेष—चौबे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६२६. प्रति सं० ४ (अष्टम स्कंध)……। पत्र सं० ११ से ४७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६१। ट भण्डार।

१६२७. प्रति सं० ५ (तृतीय स्कंध)……। पत्र सं० ६७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६२। ट भण्डार।

विशेष—६७ से आगे पत्र नहीं हैं।

वे० सं० २८८ से २०६२ तक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका सहित हैं।

१६२८. भागवतपुराण……। पत्र सं० १४ से ६३। आ० १०३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१०६। ट भण्डार।

विशेष—६०वां पत्र नहीं है।

१६२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २११३ । ट भण्डार ।

विशेष—द्वितीय स्कंध के तृतीय अध्याय तक की टीका पूर्ण है ।

१६३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० से १०५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७२ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय स्कंध है ।

१६३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम स्कंध के द्वितीय अध्याय तक है ।

१६३२. मल्लिनाथपुराण—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ४२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल १८८८ । वे० सं० २०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८३६) और है ।

१६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १७२० माह सुदी १४ । वे० सं० ५७१ । क भण्डार ।

१६३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ५७२ ।

विशेष—उदयचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि करके दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर मे रखो ।

१६३५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१० फागुण सुदी ३ । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८८१ सावण सुदी ८ । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

१६३७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी ८ । वे० सं० ५८७ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में शिवलाल गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६३८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १२ । छ भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १७८६ चैत्र सुदी ३ । वे० सं० २१० । अ भण्डार ।

१६४०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८६१ भादवा बुदी ४ । वे० सं० १५२ । व्य भण्डार ।

विशेष—शिवलाल साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६४१. मल्लिनाथपुराणभाषा—सेवाराम पाटनी । पत्र सं० ३६ । आ० १२×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८८ । अ भण्डार ।

१६४२. महापुराण (संक्षिप्त)········। पत्र सं० १७ । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८६ । ङ भण्डार ।

१६४३. महापुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ७०४ । आ० १४×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ ।

विशेष—ललितकीर्ति कृत टीका सहित है ।

घ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७८) और है ।

१६४४. महापुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ५१४ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष–बीच के कुछ पत्र जीर्ण होगये हैं ।

१६४५. मार्कण्डेयपुराण……। पत्र सं० ३२ । आ० ९×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८२९ कार्त्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । छ भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार में इसकी दो प्रतियां (वे० सं० २३३, २४६,) और हैं ।

१६४६. मुनिसुव्रतपुराण—ब्रह्मचारी कृष्णदास । पत्र सं० १०४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १६८१ कार्त्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १८६९ । पूर्ण । वे० सं० ५७८ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल × । वे० सं० ७ । छ भण्डार ।

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

१६४८. मुनिसुव्रतपुराण—इन्द्रजीत । पत्र सं० ३२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १८४५ पौष बुदी २ । ले० काल सं० १८४७ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ४७५ । अ भण्डार ।

विशेष—रतनलाल ने वटेरपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१६४९. लिंगपुराण……। पत्र सं० १३ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–जैनेतर पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४७ । ज भण्डार ।

१६५०. वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० १५१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ९० । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा शंभुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल १८७१ । वे० सं० ६४६ । क भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८६८ सावन सुदी ३ । वे० सं० ३२८ । च भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११३ । ले० काल सं० १८९२ । वे० सं० ४ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० सोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ५ । छ भण्डार ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८५ कार्तिक बुदी ४ । वे० सं० १५ । व्य भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४६३ । व्य भण्डार ।

विशेष—ग्रा० शुभचन्द्रजी, चोखचन्दजी, रायचन्दजी की पुस्तक है । ऐसा लिखा है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० १८६१ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति ने आदिनाथ चैत्यालय मे लिखवायी थी ।

१६५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १६६८ भादवा सुदी १२ । वे० सं० १८६३ । ट भण्डार ।

विशेष—वागड महादेश के सागपत्तन नगर मे भ० सकलचन्द्र के उपदेश से हूबडज्ञातीय बजियाणा गोत्र वाले साह भाका भार्या बाई नायके ने प्रतिलिलिपि करवायी थी ।

इस ग्रन्थ की घ और च भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६, ३२६) व्य भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३२, ४६) और हैं ।

१६५९. वर्द्धमानपुराण—पं० केशरीसिंह । पत्र सं० ११८ । ग्रा० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १८७३ फागुण सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ ।

विशेष—बालचन्दजी छाबड़ा दीवान जयपुर के पौत्र ज्ञानचन्द के आग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना की गई ।

च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ६७४, ६७५, ६७६) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५६) और हैं ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १७७३ । वे० सं० ६७० । छ भण्डार ।

१६६१. वासुपूज्यपुराण……। पत्र सं० ६ । ग्रा० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८ । छ भण्डार ।

१६६२. विमलनाथपुराण—ब्रह्मकृष्णदास । पत्र सं० ७५ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १६७४ । ले० काल सं० १८३१ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३१ । श्र भण्डार ।

१६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८६७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० ६६ । घ भण्डार ।

१६६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० १८ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार का नाम ब्र० कृष्णजिष्णु भी दिया है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६६ वर्षे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे श्री [illegible] महानगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्री रत्नभूषण तत्पट्टे भ० श्री जयकीर्ति ब्र० श्री

मगलाग्रज स्थविराचार्य श्री केशवसेन तत् शिष्योपाध्याय श्री विश्वकीर्त्ति तत्गुरु भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर युक्ते लिखितं स्वज्ञानावर्ग कर्मक्षयार्थं । भ० श्री ५ विश्वसेन तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ५ जयकीर्ति पं० दीपचन्द पं० मयाचंद युक्तै आत्म पठनार्थं ।

१६६५. शान्तिननाथपुराण—महाकवि अशग । पत्र सं० १४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल शक संवत् ६१० । ले० काल सं० १५५३ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । भ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—संवत् १५५३ वर्षे भादवा वदि बारीस रवौ अद्येह श्री गंधारमध्ये लिखितं पुस्तकं लेखक ठाठकयो चिरंजीयात् । श्री मूलसंघे श्री कुंदकुन्दाचार्य्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवाच्छिष्य मंडलाचार्य्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थं हुवड ज्ञातीय श्रे० हापा भार्य्या संपूरित श्रुत श्रेष्ठि धना सं० बाघर सं० सोमा श्रेष्ठि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे तयो पुत्रः विद्याधर द्वितीयः पुत्र धर्मधर एतैः सर्वैः शान्तिपुराणं लखाप्य पात्राय दत्तं ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानतः ।
अन्नदानात् सुखी नित्यं निर्व्याधी भेषजाद्भवेत ॥१॥

१६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ६८७ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ की क, ज और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, १६, १६३५) और हैं ।

१६६७. शान्तिनाथपुराण—खुशालचन्द । पत्र सं० ५१ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण में से है ।

ट भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १८६१) और हैं ।

१६६८. हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ३१४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल शक सं० ७०५ । ले० काल सं० १८३० माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर में पं० डूंगरसी के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ८६८) और है ।

१६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० ८५२ । क भण्डार ।

१६७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० [illegible] । ले० काल सं० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० ११२ । घ भण्डार ।

विशेष—[illegible] नगर में [illegible] ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४२ से ५१७ । ले० काल सं० १६२५ कार्तिक सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४४७ । च भण्डार ।

विशेष—श्री पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४६) और है ।

१६७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७४ से ३१३, ३४१ से ३४३ । ले० काल सं० १६६३ कार्तिक बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

१६७३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४३ । ले० काल सं० १६५३ चैत्र बुदी २ । वे० सं० २६० । व्य भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल मे मागानेर मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

उक्त प्रतियो के अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४६) छ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ७६ में) और हैं ।

१६७४. हरिवंशपुराण—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १२८ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ जोधराज पाटोदी के बनाये हुये मन्दिर मे प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्ण प्रति को पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १६६१ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १३१ । घ भण्डार ।

विशेष—देवपल्ली शुभस्थाने पार्श्वनाथ चैत्यालये काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे रामसेनान्वये…… आचार्य कल्याणकीर्तिना प्रतिलिपि कृतं ।

१६७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल सं० १८०४ । वे० सं० १३३ । घ भण्डार ।

विशेष—देहली में प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदशाह का शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १७३० । वे० सं० ४४८ । च भण्डार ।

१६७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५२ । ले० काल सं० १७८३ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ६६ । ब्य भण्डार ।

विशेष—साह मल्लूकचन्दजी के पठनार्थ बौंली ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी । ब्र० जिनदास भ० सकलकीर्ति के शिष्य थे ।

१६७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६८ । ले० काल सं० १५३७ पौष बुदी ३ । वे० सं० ३३३ । ब्य भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—सं० १५३७ वर्षे पौष बुदी २ सोमे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्त्तिदेवा भ० भुवनकीर्त्तिदेवाः भ० श्री ज्ञानभूषणेन शिष्यमुनि जयनंदि पठनार्थं । हूंबड़ ज्ञातीय·········।

१६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१३ । ले० काल सं० १६३७ माह बुदी १३ । वे० सं० ४६१ । श्र भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त क, ङ एवं श्र भण्डारों में एक एक प्रति (वे० सं० ८५१, ६०६, ६७) और हैं ।

१६८१. हरिवंशपुराण—श्री भूषण । पत्र सं० ३४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६१ । श्र भण्डार ।

१६८२. हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० २७१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६५७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८५० । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१६८३. हरिवंशपुराण—धवल । पत्र सं० ५०२ से ५२३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । श्र भण्डार ।

१६८४. हरिवंशपुराण—यशःकीर्त्ति । पत्र सं० १६६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल स० १५७३ । फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी ।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् राज्ये संवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । अलावलखां राज्ये श्री काष्ट ··· ···। अपूर्ण ।

१६८५. हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र सं० २० । आ० ६×४½ । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४५० । च भण्डार ।

१६८६. हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र सं० १०० से २०० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १८२६ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । ग भण्डार ।

१६८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल सं० १६२६ भादवा सुदी ७ । वे० सं० ६०१ (क) क भण्डार ।

१६८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२५ । ले० काल सं० १६०८ । वे० सं० ७२८ । च भण्डार ।

१६८९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७०६ । ले० काल सं० १६०३ आसोज सुदी ७ । वे० सं० २३७ । छ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १३४, १५१) क, तथा म भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ६०६, १४४) और हैं ।

१९९०. हरिवंशपुराणभाषा—खुशालचन्द्र । पत्र सं० २०७ । ग्रा० १४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १७८० बैशाख सुदी ३ । ले० काल सं० १८६० पूर्ण । वे० सं० ३७२ । ग्र भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

१९९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८०५ पौष बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । छ भण्डार ।

विशेष—१ से १७२ तक पत्र नही हैं । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१९९२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३४ । ले० काल × । वे० स० ४६६ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ४ पत्रो में मनोहरदास कृत नरक दुख वर्णन है पर अपूर्ण है ।

१९९३. हरिवंशपुराणभाषा……। पत्र सं० १५० । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९०७ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति । (वे० सं० ९०८) और है ।

१९९४. हरिवंशपुराणभाषा…… । पत्र स० ३८१ । ग्रा० ८¾×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य (राजस्थानी) । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १६७१ ग्रासोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १०२२ । ग्र भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

आदिभाग—अथ कथा सम्बन्ध लीखीयइ छई । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवंत महावीरे रायगेहे समोसरीये तेहीज काल, तेही ज समउ, ते भगवंत श्री वीर वर्द्धमानं राजग्रही नगरी ग्रावी समोसर्या । ते किसा छइ वीतराग चउतीस ग्रतिसइ करी सहित, पइंतीस वचन वाणी करी सोभित. चउदइसह साध छनीस सहस परवर्या । ग्रनेक भविक जीव प्रतिबोधता श्रीराजग्रही नगरी ग्रावी समोसरया । तिवारइं वनमाली ग्रावी राजा श्री सेणिक कनइ । वधामणी दिधी । सामी ग्राज श्री वर्द्धमान ग्रावी समोसरथा छइ । सेणीक ते वात सांभली नइं बधामणी ग्रापी । राजा ग्रापण महाहर्षवत थकउ । वांदवांनी सामग्री करावण लागउ । ते कि सामा गलीसा …… कीधउ । पछि ग्रानंद भेरि उछली जय जयकार वद थउ । भवीक लोक सघलांइ ग्रानंद परिणया । धन धन कहता लोक सघलाइं वादिवा वाल्या । पछइ राजा श्रेणक सिचाणक हस्ती सिणगारी उपरि छइठउ । माथइं सेत छत्र धराणउ । उभइ पास चामर ढालइ छइ । वंदी जण कइ वार करइ छइं । मंगिण जण बडिद बोलइ छइ । पाच शब्द वाजित्र वाजते । चतुरंगिनी सेना सजकरी । राय राणा मंडलीक मुकुटबधनी सामंत चउरासिया……।

एक अन्य उदाहरण– पत्र १६८

तिणी ग्रजोध्या नउ हेमरथ राजा राज पालै छइं । तेह राजा नइ धारणी राणी छइ । तेह नउ भाव धर्म्म उपरि घणउ छइं । तेहनी कुषि तें कुंमर पणइ उपनो । तेह नउ नाम बुधुकीत जाणिवउ । ते पुणु कुमर जाणे सिस समान छइं । इम करता ते कुंमर जोबन भरिया । तिवारइं पिताइं तेह नइं राज भार थाप्पउ । तिवारइं तेण जाना सुष भोगवता काल ग्रतिक्रमइं छइं । बली जिण नउ धर्म घणु करइं छइं ।

पत्र संख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा सांभलउं । तिणी नरक माहि थी । ते जीवनीकलियउं । पछइ मरी रोइ सर्प्प थयउ । सयंम्भू रमणि द्वीपा माहि । पछइ ते तिहा पाप करिवा लागउ । पछई बली तिहां थको मरण पाम्यो । बीजै नरक गई तिहा तिन सागर प्रायु भोगवी । छेदन भेदन तारन दुख भोगवी । वली तिहां थकी ते निकलि-यउ । ते जीव पछइ चंपा नगरी माहि चांडाल उइ घरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल अवतार पाम्यउं । पछइ ते एक बार वन मांहि तिहां उबर वीणीवा लागी ।

अन्तिम पाठ—पत्र संख्या ३८०–८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभवरण तारणहार तिणी सामी विहार क्रम कीयउं । पछइ देस विदेस नगर पाटणना भवीक लोक प्रबोधीया । वलीत्रिणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप संपनीयउ दान दीयउ । पछइ गिरनार प्राव्या । तिहा समोसर्या । पछइ घणा लोक संबोध्या । पछइ सहस बरस प्राउषउ भोगवीनइ दस धनुष प्रमाण देह जाणवी । ईणी परइ घणा दीन गया । पछइ एक मासउ गरयउ । पछइ जगनाथ जोग धरी नइ । समो सरण त्याग कीयउं । तिवारइ ते घातिया कर्म षय करी चउदमइ गुणठाणइ रह्या । तिहा थका मोष सिद्धि थया । तिहा प्राठ गुण सहित जाणवा । वली पाच सइ छत्रीस साध साथइ मूकति गया । तिणी सामी प्रचल ठाम लाधउ । तेहना सुखनीउपमा दीधी न जाई । ईसा सूखनासवी भागी थया । हिवइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ । जे काई विरुद्ध बात लिखाणी होई ते मोध तिरती कीज्यो । वली सामनी साखि । जे काई मइ आपणी बुध थकी । हरवंस कथा माहि अध कोउ छइ लीखीयउ होइ । ते मिछामि दुकड था ज्यो ।

संवत् १६७१ वर्षे प्रासोज मासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिथौ । लिखितं मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये । व्रज ···· शिष्यणी आर्या सहजा पठनार्थं ।



काव्य एवं चरित्र

१९९५. अकलङ्कचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० १२ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–जैनाचार्य अकलङ्क की जीवन कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।

१९९६. अकलङ्कचरित्र……। पत्र सं० १२ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । ङ भण्डार ।

१९९७. अमरुशतक……। पत्र सं० ६ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । ज भण्डार ।

१९९८. उद्धवसंदेशाख्यप्रबन्ध……। पत्र सं० ८ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ । ज भण्डार ।

१९९९. ऋषभनाथचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ११९ । आ० १२×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६१ पौष बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० २०४०। अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम आदिपुराण तथा वृषभनाथ पुराण भी है ।

प्रशस्ति— १५६१ वर्षे पौष बुदी ऽऽ रवौ । श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ पद्मनंदिदेवाः भ० श्री ६ सकलकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ भुवनकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ विजयकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ शुभचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ सुमतिकीर्तिदेवाः स्थविराचार्य श्री ६ चंद्रकीर्तिदेवास्तत्शिष्य श्री ५ श्रीवंत ते शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येदं पुस्तकं पठनार्थं ।

२०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८८० । वे० सं० १५० । अ भण्डार ।

इस भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३५) और है ।

२००१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६० । ले० काल शक सं० १६६७ । वे० सं० ५२ । क भण्डार ।

एक प्रति वे० सं० ६६६ की और है ।

२००२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १७१७ फागुण बुदी १० । वे० सं० ६४ । क भण्डार ।

२००३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८२ । ले० काल सं० १७८३ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

२००४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १८५५ प्र० श्रावण सुदी ८ । वे० सं० ३० । छ भण्डार ।

विशेष—चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२००५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १७७४ । वे० सं० २८७ । ञ भण्डार ।

इसके अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१८३) और हैं ।

२००६. ऋतुसंहार—कालिदास । पत्र सं० १३ । आ० १०×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १० । वे० सं० ४७१ । ञ भण्डार ।

विशेष- प्रशस्ति—संवत् १६२४ वर्षे अश्विनि सुदि १० दिने श्री मलधारगच्छे भट्टारक श्री श्री श्री मानदेव सूरि तत्शिष्यभावदेवेन लिखिता स्वहेतवे ।

२००७. करकण्डुचरित्र—मुनि कनकामर । पत्र सं० ६१ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५६५ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है ।

२००८. करकण्डुचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । आ० १०×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल सं० १६११ । ले० काल सं० १६५६ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । ञ भण्डार ।

विशेष- प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे मागसिर सुदि ६ भौमे सोझंत्रा (सोजत) ग्रामे नेमनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठासंघे भ० श्री विश्वसेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषण तत्शिष्य भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तत्शिष्य ब्र० नेमसागर स्वहस्तेन लिखितं ।

आचार्यावराचार्य श्री श्री चन्द्रकीर्त्तिजी तत्शिष्य आचार्य श्री हर्षकीर्त्तिजी की पुस्तक ।

२००९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० २८४ । ञ भण्डार ।

२०१०. कविप्रिया—केशवदेव । पत्र सं० २१ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य (शृङ्गार) । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२०११. कादम्बरीटीका········। पत्र सं० १५१ से १८३ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९७७ । अ भण्डार ।

२०१२. काव्यप्रकाशसटीक ·······। पत्र सं० ८३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९७८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार का नाम नही दिया है ।

२०१३. किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि । पत्र सं० ४६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९०२ । अ भण्डार ।

२०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५३० भादवा बुदी ८ । वे० सं० १२२ । ङ भण्डार ।

२०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४२ भादवा बुदी । वे० सं० १२३ । ङ भण्डार ।

विशेष—सांकेतिक टीका भी है ।

२०१७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८१७ । वे० सं० १२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में माधोसिंहजी के राज्य में पं० गुमानीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२०१८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२०१९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० ६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति मल्लिनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३८) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३५) च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७०) तथा छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६४, २५१, २५२) और है ।

२०२०. कुमारसम्भव—महाकवि कालिदास । पत्र सं० ४१ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ चिपक जाने से अक्षर खराब होगये हैं ।

२०२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७५७ । वे० सं० १८४५ । जीर्ण । अ भण्डार ।

२०२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १२५ । ङ भण्डार । अष्टम सर्ग पर्यंत ।

इनके अतिरिक्त अ एवं क भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ११८०, ११३) च भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० ७१, ७२) ञ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १३८, ३१०) तथा ट भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० २०५२, ३२३, २१०४) और हैं ।

२०२३. कुमारसंभवटीका—कनकसागर । पत्र सं० २२ । आ० १०×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२०२४. क्षत्र-चूडामणि—वादीभसिंह । पत्र सं० ४२ । आ० ११×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल सं० १६८७ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम जीवंधर चरित्र भी है ।

२०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८६१ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ७३ । च भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्दजी के मन्नूलाल वैद्य के पास प्रतिलिपि की थी ।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है।

२०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५ । वे० सं० ३३२ । ञ भण्डार ।

२०२७. खण्डप्रशस्तिकाव्य······· । पत्र सं० ३ । आ० ८३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८७१ प्रथम भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३१५ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर में अंबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटोदी) में प्रतिलिपि की थी।

ग्रन्थ में कुल २१२ श्लोक हैं जिनमें रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है। वैसे प्रारम्भ में रघुकुल की प्रशंसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने में राम के पराक्रम का वर्णन है।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खंडप्रशस्ति काव्यानि संपूर्णा ।

२०२८. गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र सं० २३ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । छ भण्डार ।

विशेष—२१ व २२वां पत्र नही है।

२०२९. गीतगोविन्द—जयदेव । पत्र सं० २ । आ० ११३×७३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—झालरापाटन में गौड़ ब्राह्मण पंडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२०३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४४ । वे० सं० १८२९ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १७४६) और है।

२०३१. गोतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र सं० ५३ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत विषय-चरित्र । र० काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१ । ञ भण्डार ।

२०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३६ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० १३२ । क भण्डार ।

२०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० २१ । मु भण्डार ।

२०३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० २५४ । व्य भण्डार ।

२०३६. गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०८ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६४० मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्त्ता आचार्य धर्मचन्द्र हैं। रचना संवत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नहीं होता ।

२०३७. घटकर्परकाव्य—घटकर्पर । पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पापुर में आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ लिखा गया था।

अ और अ भण्डार में इसकी एक एक प्रति (वे० सं० १५४८, ७५) और है ।

२०३८. चन्दनाचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३६ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६२५ । ले० काल स० १८३३ भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । अ भण्डार ।

२०३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८२५ माह बुदी ३ । वे० सं० १७२ । क भण्डार ।

१०४०. प्रति स० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८६३ द्वि० श्रावण । वे० सं० १६७ । ङ भण्डार ।

२०४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८३७ माह बुदी ७ । वे० सं० ५४ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर मे पं० सवाईराम गोधा के मन्दिर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२०४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६१ भादवा सुदी ८ । वे० सं० ५८ । छ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५७) और है ।

२०४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३२ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० ५० । ञ भण्डार ।

२०४४. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनंदि । पत्र स० १३० । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५८६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८६ । ले० काल सं० १६४१ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० १७४ । क भण्डार ।

२०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५२४ भादवा बुदी १० । वे० सं० १६ । घ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मल्लेडल वंशे विबुध मुनि जनानंदकंदे प्रसिद्ध रूपालामीति साधुः सकलकलिमलक्षालनेक प्रवीण मथ-स्तस्यात्मपुत्रो जिनवर वचनाराधको दानत्यास्तेनेदं बालकाव्यं निजकरलिखितं चन्द्रनाथस्य सार्थं सं० १५२४ वर्षे भादवा बदी ७ ग्रन्थ लिखितं कर्मक्षयानिमित्तं ।

२०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ७४ । ले० काल सं० १७८५ । अपूर्ण । वे० सं० २१७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८५ वर्षे फागुण बुदी ७ रविवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्त्ति देवातत्शिष्य ब्र० संजैयति इदं शास्त्रं ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्तं लिखापित्वा ठीकुरवारस्थाने·········साधु लिखितं ।

इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६४६) च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ६०, ८८) ज भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १०३, १०४, १०५) झ एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १६४, २१६०) और हैं ।

२०४८. चन्द्रप्रभकाव्यपंजिका—टीकाकार गुणनन्दि । पत्र सं० ८६ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११ । ञ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता आचार्य वीरनंदि । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है । १८ सर्गों में है ।

२०४९. चंद्रप्रभचरित्रपञ्जिका ·······। पत्र सं० २१ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ३२५ । ज भण्डार ।

२०५०. चन्द्रप्रभचरित्र—यशःकीर्त्ति । पत्र सं० १०६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-आठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६४१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ संवत् १६४१ वर्षे पोह शुदि एकादशी बुधवासरे काष्ठासंघे मा··········· (अपूर्ण)

२०५१. चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० ६५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८०४ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

विशेष—बसवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में आचार्यवर श्री मेरुकीर्त्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के शिष्य नंदराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८३० कार्त्तिक सुदी १० । वे० सं० ७३ । क भण्डार ।

२०५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० सं० १६६ । ङ भण्डार ।

इस प्रति के अतिरिक्त ख एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४८, २१६६) और हैं ।

२०५४. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर (शिष्य धर्मचन्द्र) । पत्र सं० १४९ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल सं० १७२७ भादवा सुदी ५ । ले० काल सं० १८०१ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग—

ॐ नमः । श्री परमात्मने नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।

श्रियं चंद्रप्रभो नित्यां चंद्र दश्चन्द्र लांछनः ।
भव कुमुदचंद्रौवदचंद्रप्रभो जिनः क्रियात् ।।१।।
कुशासनवचो चूडजगतारणहेतवे ।
तेन स्ववाक्यसूरोस्नैर्द्धमपोतः प्रकाशितः ।।२।।
युगादौ येन तीर्थेशाधर्मतीर्थः प्रवर्त्तितः ।
तमहं वृषभं वंदे वृषदं वृषनायकं ।।३।।
चक्री तीर्थकरः कामो मुक्तिप्रियो महावली ।
शांतिनाथः सदा शान्ति करोतु नः प्रशांति कृद् ।।४।।

अन्तिम भाग—

भूभृन्नेत्राचल (१७२१) शशधरांक प्रमे वर्षेऽतीते
नवमिदिवसेमासि भाद्रे सुयोगे ।
रम्ये ग्रामे विरचितमिदं श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि
नाभेयस्यप्रवरभवने भूरि शोभानिवासे ।।८५।।
रम्यं चतुः सहस्राणि पंचदशयुतानि वै
अनुष्टुपैः समास्यातं श्लोकैरिदं प्रमाणतः ।।८६।।

इति श्री मंडलसूरिश्रीभूषण तत्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचंद्रशिष्य कवि दामोदरविरचिते श्रीचन्द्रप्रभ चरिते निर्वाण गमन वर्णनं नाम सप्तविंशति नामः सर्ग ।।२७।।

इति श्री चन्द्रप्रभचरितं समाप्तं । संवत् १८४१ श्रावण द्वितीय कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवासरे सवाई जयनगरे जोधराज पाटोदी कृत मंदिरे लिखतं पं० चोखचंद्रस्य शिष्य सुणरामजी तस्य शिष्य कल्याणदासस्य तत् शिष्य खुशालचंद्रे ण स्वहस्तेनपूर्णीकृतं ।।

२०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९२ । ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी १४ । वे० सं० १७५ । क भण्डार ।

२०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८३४ अषाढ सुदी २ । वे० सं० २५५ । ब भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्दजी शिष्य पं० रामचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२०४७. चन्द्रप्रभचरित्रभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ६६ । आ० १२½×६ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल १६वी शताब्दी । ले० काल सं० १९४२ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

विशेष—केवल दूसरे सर्ग में आये हुये न्याय प्रकरण के श्लोकों की भाषा है ।

इसी भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १६६, १६७, १६८) और हैं ।

२०५८. चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्ति । पत्र सं० १६ । आ० १०¾×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । र० काल सं० १६९२ । ले० काल सं० १७३३ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० ८७४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६ से आगे के पत्र नहीं हैं । अन्तिम पत्र मौजूद है । बहादुरपुर ग्राम में पं० अमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

आदिभाग— ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री सारदाई नमः ॥

श्रादिजिनआदिस्तवु अंति श्री महावीर ।
श्री गौतम गणधर नमुं वलि भारति गुणगंभीर ॥१॥
श्री मूलसंघमहिमा घणो सरस्वतिगच्छ शृंगार ।
श्री सकलकीर्त्ति गुरु अनुक्रमि नमुश्रीपद्मनंदि भवतार ॥२॥
तस गुरु भ्रातर शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय ।
चारुदत्त श्रेष्ठीतणो प्रबंध रचुं नमी पाय ॥३॥

अन्तिम— ·· ························ भट्टारक सुखकार ॥

सुखकर सोभाग्य अति विचक्षण वदि वारण केशरी ।
भट्टारक श्री पद्मनंदिचरणकंज सेवि हरि ॥१०॥
एसहु रे गच्छ नायक प्रणमि करि
देवकीरति रे मुनि निज गुरु मन्य धरी ।
धरिचित्त चरणे नमि कल्याणकीरति इम भणीं ।
चारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रचिमि आदर घणि ॥११॥
रायदेश मध्यि रे भिलोड वसि
निज रचनायि रे हरिपुर जिहसि
हसि अमर कुमारनितिहां धनपति वित्त बिलसए ।
प्रासाद प्रतिमा जिन प्रति करि सुकृत संचए ॥१२॥
सुकृत संचि रे व्रत बहु आचरि
दान महोद्दवरे जिन पूजा करि
करि उछव मान संघव् चन्द्र जिन प्रासादए ।
बावन सिखर सोहामणा ध्वज कनक कलश बिलासए ॥१३॥
मंडप मध्यि समवसरण सोहि
श्री जिन बिंबरे मनोहर मन मोहि ।

सोहि जिनमन प्रति उन्नत मानस्तंभविशालए।
तिहां विजयगढ विख्यात सुन्दर जिनशासन रक्षपालए ।।१४।।
तहां चोमासि रे रचनां करि
सोलबांणु पिरे भासो अनुसरि।
अनुसरि भासो शुक्ल पंचमी श्रीगुरु चरणरुदय धरि।
कल्याणकीरति कहि सज्जन भणो आदर करि ।।१५।।

दोहा—आदर ब्रह्म संघ जीतणि विनय सहित सुखकार।
ते देखि चारुदत्त नो प्रबंध रच्यो मनोहार ।।१।।
भणि सुणि आदर करि याचक दिदिय दान।
ढूंढो तणो पद ते लहि अमर दीपि बहुमान ।।२।।
इति श्री चारुदत्त प्रबंध समाप्तः ।।

विशेष—संवत् १७३३ वर्षे कार्तिक वदि ६ गुरुवारे लिखितं बहादुरपुरग्रामे श्री चितामनी चैत्यालये भट्टारक श्री ५ धर्मभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देविद्रकीर्ति तत्शिष्य पंडित अमीचंद स्वहस्तेन लिखितं।

।। श्री रस्तु ।।

२०५९. चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल। पत्र सं० ५०। आ० १२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १८१३ सावन बुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७८। अ भण्डार।

२०६०. चारुदत्तचरित्र—उदयलाल। पत्र सं० १६। आ० १३½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य विषय–चरित्र। र० काल सं० १६२६ सावन सुदी १। ले० काल ×। वे० सं० १७१। छ भण्डार।

२०६१. जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास। पत्र सं० १०७। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६३३। पूर्ण। वे० सं० १७१। अ भण्डार।

२०६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १७५६ फागुण बुदी ५। वे० सं० २५५। अ भण्डार।

२०६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११४। ले० काल सं० १८२५ भादवा सुदी १२। वे० सं० १८४। क भण्डार।

क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५) और है।

२०६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११३। ले० काल ×। वे० सं० २६। घ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। प्रथम २ पत्र नवीन एवं बाद में लिखे हुये हैं।

२०६५. प्रति सं० ५। पत्र सं० १५५। ले० काल ×। वे० सं० १९१। ङ भण्डार।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र बाद में लिखे हुये हैं।

२०६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८६४ पौष बुदी १४ । वे० सं० २०० । ङ भण्डार ।

२०६७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १०१ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२०६८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८२५ । वे० सं० ३५ । छ भण्डार ।

२०६९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११२ । ञ भण्डार ।

२०७०. जम्बूस्वामीचरित्र—पं० राजमल्ल । पत्र सं० १२९ । भा० १२½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६३२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । क भण्डार ।

विशेष—१३ सर्गों में विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१. जम्बूस्वामीचरित्र—विजयकीर्त्ति । पत्र सं० २० । भा० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४० । ज भण्डार ।

२०७२. जम्बूस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८३ । भा० १४½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९३४ फागुण सुदी १४ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ४२७ । ञ भण्डार ।

२०७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६६ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

२०७४. जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० २८ । भा० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६९ । छ भण्डार ।

२०७५. जिनचरित्र........। पत्र सं० ६ से २० । भा० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११०५ । ञ भण्डार ।

२०७६. जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ६५ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५९५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १४७ । ञ भण्डार ।

२०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १८१६ माघ सुदी ५ । वे० सं० १८९ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८९३ फागुण बुदी १ । वे० सं० २०३ । ङ भण्डार ।

२०७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १९०४ आसोज सुदी २ । वे० सं० १०३ । च भण्डार ।

२०८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८०७ मंगसिर सुदी १३ । वे० सं० १०४ । घ भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं० चोखचन्द एवं रामचंद की थी ऐसा उल्लेख है ।

छ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७१) और है ।

२०८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १९०४ कार्तिक बुदी १२ । वे० सं० ३६ । ञ भण्डार ।

विशेष—गोपीराम बसवा वाले ने फागी में प्रतिलिपि की थी ।

२०८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० २४३ । ञ भण्डार ।

विशेष—भिलाय में पं० गोर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८३. जिनदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ७६ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९३६ माघ सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९० । क भण्डार ।

२०८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० १९१ । क भण्डार ।

२०८५. जीवंधरचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १२१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १५९६ । ले० काल सं० १८४० फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २२ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ८७३, ८६६) और है ।

२०८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदी १३ । वे० सं० २०६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ८ । वे० सं० ४१ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयनगर में महाराजा जगतसिंह के शासनकाल मे नेमिनाथ जिन चैत्यालय (गोधों का मन्दिर) में बखतराम कृष्णराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८८० ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ४२ । छ भण्डार ।

२०८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९१ । ले० काल सं० १८३३ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २७ । ज भण्डार ।

२०९०. जीवंधरचरित्र—नथमल बिलाला । पत्र सं० ११४ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल सं० १८४० । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । अ भण्डार ।

२०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । लें० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ५५६ । च भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ से १५१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४३ । ट भण्डार ।

२०६३. जीवंधरचरित्र—पन्नलाल चौधरी । पत्र सं० १७० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७ । क भण्डार ।

२०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल × । वे० सं० २१४ । ङ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ३५ पत्र चूहों द्वारा खाये हुये हैं ।

२०६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३२ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । छ भण्डार ।

२०६६. जीवंधरचरित्र…… । पत्र स० ४१ । आ० ११½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ भण्डार ।

२०६७. णेमिणाहचरिउ—कविरत्न अबुध के पुत्र लक्ष्मणदेव । पत्र सं० ४४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५३६ शाक १४०१ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

२०६८. णेमिणाहचरिउ—दामोदर । पत्र सं० ४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–काव्य । र० काल सं० १२८७ । ले० काल सं० १५८२ भादवा सुदी ११ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

विशेष—चंदेरी मे आचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया ।

२०६९. त्रेसठशलाकापुरुषचरित्र…… । पत्र सं० ३६ से ६१ । आ० १०¾×४¾ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६० । अ भण्डार ।

३०००. दुर्घटकाव्य…… । पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १८५१ । ट भण्डार ।

३००१. द्वाश्रयकाव्य—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३२ । ट भण्डार । (दो सर्ग हैं)

३००२. द्विसंधानकाव्य—धनञ्जय । पत्र सं० ६२ । आ० १०¾×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र टूट गये हैं । ६२ से आगे के पत्र नही हैं । इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य भी है ।

३००३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३१ । क भण्डार ।

३००४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १५७७ भादवा बुदी ११ । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री खेऊ के पुत्र पदारथ ने प्रतिलिपि की थी ।

३००५. द्विसंधानकाव्यटीका—विनयचन्द्र। पत्र सं० २२। आ० १२३/४×५३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। (पंचम सर्ग तक) वे० सं० ३३०। क भण्डार।

३००६. द्विसंधानकाव्यटीका—नेमिचन्द्र। पत्र सं० ३६१। विषय–काव्य। भाषा–संस्कृत। र० काल ×। ले० काल सं० १६५२ कार्त्तिक सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३२६। क भण्डार।

विशेष—इसका नाम पद कौमुदी भी है।

३००७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५८। ले० काल सं० १८७५ माघ सुदी ८। वे० सं० १५७। क भण्डार।

३००८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १५०६ कार्त्तिक सुदी २। वे० सं० ११३। ञ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। गोपाचल (ग्वालियर) में महाराजा डूगरेंद्र के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गई थी।

३००९. द्विसंधानकाव्यटीका ······। पत्र सं० २६४। आ० १०३/४×८ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२८। क भण्डार।

३०१०. धन्यकुमारचरित्र—आ० गुणभद्र। पत्र सं० ५३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३३। क भण्डार।

३०११. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ४५। ले० काल सं० १५६७ आसोज सुदी १०। अपूर्ण। वे० सं० ३२५। क भण्डार।

विशेष—दूदू गांव के निवासी खण्डेलवाल जातीय ने प्रतिलिपि की थी। उस समय दूदू (जयपुर) पर चडसीराय का राज्य लिखा है।

३०१२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १६५२ द्वि० ज्येष्ठ बुदी ११। वे० सं० ४३। ञ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति दी हुई है। आमेर में आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई। लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

३०१३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १६०४। वे० सं० १२८। ञ भण्डार।

३०१४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३३। ले० काल ×। वे० सं० ३६१। ञ भण्डार।

३०१५. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६०३ भादवा सुदी ३। वे० सं० ४५८। ञ भण्डार।

विशेष—श्राविका सीवायी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करके मुनि श्री कमलकीर्त्ति को भेंट दिया था।

३०१६. धन्यकुमारचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र सं० १०७। आ० ११×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६३। ञ भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है

३०१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८५० आषाढ़ सुदी १२ । वे० सं० २५७ । अ भण्डार ।

विशेष—२१ से ३६ तक के पत्र बाद में लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८२५ माघ सुदी १ । वे० सं० ३१४ । अ भण्डार ।

३०१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ११०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वां पत्र नहीं है । ब्र० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८१३ भादवा सुदी ८ । वे० सं० ४४ । छ भण्डार ।

विशेष—देवगिरि (दौसा) में पं० बख्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दों के हिन्दी में अर्थ दिये है । कुल ७ अधिकार है ।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १७ । ञ भण्डार ।

३०२२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १६६१ बैशाख सुदी ७ । वे० सं० २१८७ । ट भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६१ वर्षे बैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृधिनाम जोगे गुरुवासरे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे.........।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २४ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १९०१ पौष सुदी ३ । वे० सं० ३२७ । क भण्डार ।

विशेष—फोजुलाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७९० श्रावण सुदी ५ । वे० सं० ८६ । च भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १८१६ फागुण सुदी ७ । वे० सं० ८७ । च भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—खुशालचन्द । पत्र सं० ३० । आ० १२×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

३०२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ४१२ । ञ भण्डार ।

३०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ३३४ । क भण्डार ।

३०३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ३२६ । ङ भण्डार ।

३०३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १६६४ कार्त्तिक बुदी ६ । वे० सं० ५६३ । च भण्डार ।

३०३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८५२ । वे० स० २४ । झ भण्डार ।

३०३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४६५ । ञ भण्डार ।

विशेष—संतोषराम छाबड़ा मौजमाबाद वाले ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६४) तथा छ और झ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० १६८ व १२) और हैं ।

३०३४. धन्यकुमारचरित्र········। पत्र सं० १८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ । ङ भण्डार ।

३०३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । अपूर्ण। वे० सं० ३२४ । ङ भण्डार ।

३०३६. धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं० १५३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १६३८ कार्त्तिक सुदी ८ । वे० सं० ३४८ । क भण्डार ।

विशेष—नीचे संस्कृत में संकेत दिये हुए हैं ।

३०३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वे० सं० २०३ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ तथा क भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० १४८१, ३४६) और है ।

३०३६. धर्मशर्माभ्युदयटीका—यशःकीर्त्ति । पत्र सं० ४ से ६६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'संदेह ध्वांत दीपिका' है ।

३०४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०४ । ले० काल सं० १६५१ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४६) की और है ।

३०४१. नलोदयकाव्य—माणिक्यसूरि । पत्र सं० ३२ से ११७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल । ले० काल सं० १४४५ प्र० फागुन बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३४२ । ञ भण्डार ।

पत्र सं० १ से ३१ ५५, ५६ तथा ६२ से ७२ नहीं हैं । दो पत्र बीच के और हैं जिन पर पत्र सं० नही है ।

विशेष—इसका नाम 'नलायन महाकाव्य' तथा 'कुबेर पुरान' भी है । इसकी रचना सं० १४६४ के पूर्व हुई थी । जिन रत्नकोष में ग्रन्थकार का नाम माणिक्यसूरि तथा माणिक्यदेव दोनों दिया हुआ है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४४५ वर्षे प्रथम फाल्गुन वदि ८ शुक्रे लिखितमिदं श्रीमदणहिलपत्तने ।

३०४२. नलोदयकाव्य—कालिदास । पत्र सं० ६ । प्रा० १२×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ११४३ । । अ भण्डार ।

३०४३. नवरत्नकाव्य……। पत्र सं० २ । प्रा० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नो का परिचय दिया हुआ है ।

३·४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ११४६ । अ भण्डार ।

३·४५. नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण सूरि । पत्र सं० २२ । प्रा० १०¼×६¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

संवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये साह जिणदास तद्भार्या जमणादे त० साह सांगा द्वि० सहसा तृ० चुंडा सा० सांगा भार्या सूहवदे द्वि० शृंगारदे तृ० मुरताणदे त० सा० आसा, धणपाल आसा भार्या हंकारदे, धणपाल भार्या धारादे । द्वि० सुहागदे । सहसा भार्या स्वरूपदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल……महिमादे । चुंडा भार्या चादणदे तस्यपुत्र सा० दासा तद्भार्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषां मध्ये आसा भार्या अहंकारदे इदंशास्त्र लि०मंडलाचार्य श्री धर्म्मचंद्राय ।

३०४६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८२१ पौष सुदी ५ । वे० सं० ३६५ । क भण्डार ।

३०४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८०६ चैत्र बुदी ५ । वे० सं० ५० । घ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुये है । १० से ११ तथा ३२वां पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं । अन्त मे निम्न प्रकार लिखा है । पांडे रामचन्द के माथै पधराई पोथो । संवत् १८०६ चैत्र वदी ५ सनिवासरे दिल्ली ।

३०४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५८० । वे० सं० ३५३ । ङ भण्डार ।

३०४९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६४१ माघ बुदी ७ । वे० सं० ४६१ । व्य भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ मे कल्याणराज के समय में आ० भोपति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०५०. प्रति सं० ६ पत्र सं० २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०७ । ट भण्डार ।

३०५१. नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर। पत्र सं० ५५। प्रा० १०½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल सं० १५११ श्रावण सुदी १५। ले० काल सं० १६१६ वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २३०। अ भण्डार।

३०५२. नागकुमारचरित्र……। पत्र सं० २२। प्रा० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८९१ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ८६। ज भण्डार।

३०५३. नागकुमारचरित्रटीका—टीकाकार प्रभाचन्द्र। पत्र सं० २ से २०। प्रा० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१८८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरमेष्ठिप्रमाणोपार्जितमलपुण्यनिराकृताखिलकलंकेन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपंडितेन श्री मत्पंचमी टिप्पणकं कृतमिति।

३०५४. नागकुमारचरित्र—उदयलाल। पत्र सं० ३६। प्रा० १३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५४। क भण्डार।

३०५५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० ३५५। क भण्डार।

३०५६. नागकुमारचरित्रभाषा……। पत्र सं० ४५। प्रा० १३×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७७। अ भण्डार।

३०५७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० १७३। छ भण्डार।

३०५८. नेमिजी का चरित्र—आणन्द। पत्र सं० २ से ५। प्रा० ६×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १८०४ फागुण सुदी ५। ले० काल सं० १८५१। अपूर्ण। वे० सं० २२५७। अ भण्डार।

विशेष–अन्तिम भाग—

नेम तस तात सघर मध्ये रे रह्या ज रूढ भावो।
चरत पाल्ये सात सारे सहस बरसना आव॥
सहस वरसना आवज पूरा जिणवर करडी चौरडी।
आठ कर्म कीधा चकचूरा पांच सय तास सघात पूरा जी।
संवत १८ चिड़ोत्तर फागुण मास मंझारो।
सुद पंचमी सनीसर रे कीधो चरित उदारो॥
कीधो चरत उदार आणंदा इम जाणी छाडो ग्रहफंदा।
चन २ समुद गिरानंदा ऋष जेम लह नेम जिणंदा॥५२॥
इति श्री नेमजी को चरित्र समाप्त।

सं० १८५१ वैसाखे श्री श्री भोजराज जी लिखतं कल्याणजी राजगढ मध्ये। आगे नेमिजी के भव लख दिये हुये हैं।

२१५६. नेमिनाथ के दशभव……। पत्र सं० ७ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६१८ । वे० सं० ३५४ । झ भण्डार ।

२१६०. नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम । पत्र सं० २२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष—कालिदास कृत मेघदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है ।

२१६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७३ । ख भण्डार ।

२१६२. नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० २ से ७८ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १५८१ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० २१३२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

२१६३. नेमिनिर्वाण—महाकवि वाग्भट्ट । पत्र सं० १०० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–नेमिनाथ का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

२१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८२३ । वे० सं० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार में (वे० सं० ३८९) और है ।

२१६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८२ । ङ भण्डार ।

२१६६. नेमिनिर्वाणपंजिका…… । पत्र सं० ९२ । आ० ११½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं २९ । ञ भण्डार ।

विशेष—९२ से आगे पत्र नही हैं ।

प्रारम्भ—धत्वा नेमिश्वरं चित्ते लब्ध्वानंत चतुष्टयं ।
कुर्वेहं नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका ।।

२१६७. नैषधचरित्र—हर्षकवि । पत्र सं० २ से ३० । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंचम सर्ग तक है । प्रति सटीक एवं प्राचीन है ।

२१६८. पद्मचरित्रसार……। पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पद्मपुराण का संक्षिप्त भाग है ।

२१६९. पर्यूषणाकल्प……। पत्र सं० १०० । आ० ११½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६९६ । अपूर्ण । वे० सं० १०५ । ख भण्डार ।

विशेष—९३ वा तथा ९५ से ९९ तक पत्र नहीं हैं । मुलस्कंध का ८वा अध्याय है ।

प्रशस्ति—सं० १६९६ वर्षे मूलताणमध्ये सुश्रावक सोनू तत् बधू हरसी तत् सुता मुलंकणी मेतुषु धडाहुहे बधू तेन एषा प्रति पं० श्री राजकीर्त्तिगणिनां विहुरेऽर्पिता स्वपुन्याय ।

२१७०. परिशिष्टपर्व········। पत्र सं० ५८ से ८० । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७३ । अपूर्ण । वे० सं० १९९० । अ भण्डार ।

विशेष—६१ व ६२वां पत्र नही है । वीरमपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२१७१. पवनदूतकाव्य—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सं० १३ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १९५५ । पूर्ण । वे० स० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १९५५ में राव के प्रसाद से भाई दुलीचन्द के अवलोकनार्थ ललितपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

२१७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४५६ । क भण्डार ।

२१७३. पाण्डवचरित्र—लालवर्द्धन । पत्र सं० ९७ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १७६८ । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वे० सं० १९२३ । ट भण्डार ।

२१७४. पार्श्वनाथचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र सं० ९६ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र । र० काल शक सं० ९४७ । ले० काल सं० १५७७ फागुण बुदी ९ । पूर्ण । अत्यन्त जीर्ण । वे० सं० २२५८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र फटे हुये तथा गले हुये हैं । ग्रन्थ का दूसरा नाम पार्श्वपुराण भी है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५७७ वर्षे फाल्गुन बुदी ९ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये साधु गोत्रे साह काधिल तस्य भार्या कांवलदे तयो: पुत्रः चतुर्विधदान कल्पवृक्ष: साह वछा तस्य भार्या पदमा तयोः पुत्र पंचाइण तस्य भार्या बातारदे तयोपुत्रः····साह दूलह एते नित्यं प्रणमंति ।

२१७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । ब भण्डार ।

विशेष—२२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२१७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १५९५ फाल्गुण सुदी २ । वे० सं० २१८ । ब भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र नही है ।

२१७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८७१ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० २१९ । ब भण्डार ।

२१७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले० काल स० १६८५ आषाढ । वे० सं० १६ । छ भण्डार ।

२१७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—कृष्णावती में आदिनाथ चैत्यालय में गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

२१८०. पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति। पत्र सं० १२०। ग्रा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन। र० काल १५वीं शताब्दी। ले० काल सं० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १३। अ भण्डार।

२१८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १८२३ कार्तिक बुदी १०। वे० सं० ४६६। क भण्डार।

२१८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६१। ले० काल सं० १७६१। वे० सं० ७०। घ भण्डार।

२१८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७५ से १३६। ले० काल सं० १८०२ फागुण बुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० ४५६। ङ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे लिखितं श्रीउदयपुरनगरमध्येसुश्रावक-पुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक सा० श्री दौलतरामजी पठनार्थं।

२१८४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५२ से २२६। ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० २१६। च भण्डार।

विशेष—प्रति दीवान संगही ज्ञानचन्द की थी।

२१८५. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८६। ले० काल सं० १७८५ प्र० वैशाख सुदी ८। वे० सं० २१७। च भण्डार।

विशेष—प्रति खेमकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास से लिखवायी थी।

२१८६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६१। ले० काल सं० १८५२ श्रावण सुदी ६। वे० सं० १५। छ भण्डार।

विशेष—पं० श्योजीराम ने अपने शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई।

२१८७. प्रति सं० ८। पत्र सं० १२३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२१८८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६१ से १४४। ले० काल सं० १७८७। अपूर्ण। वे० सं० १६४५। ट भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४६६, ७०) तथा ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) ञ तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २०४, २१८४) और हैं।

२१८९. पार्श्वनाथचरित्र—रइधू। पत्र सं० ८ से ७६। ग्रा० १०½×५ इंच। भाषा—अपभ्रंश। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१२७। ट भण्डार।

२१९०. पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास। पत्र सं० ६२। ग्रा० १०½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन। र० काल सं० १७८९ आषाढ सुदी ५। ले० काल सं० १८३३। पूर्ण। वे० सं० ३५६। अ भण्डार।

२१६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ४४७ । ग्र भण्डार ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

२१६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६० माह बुदी ६ । वे० सं० ५७ । ग भण्डार ।

२१६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ४५० । ङ भण्डार ।

२१६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ४५१ । ङ भण्डार ।

२१६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८१ पौष सुदी १४ । वे० सं० ४५३ । ङ भण्डार ।

२१६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ से १३० । ले० काल सं० १६२१ सावन बुदी ६ । वे० सं० १७५ । छ भण्डार ।

२१६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८२० । वे० सं० १०४ । झ भण्डार ।

२१६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३० । ले० काल सं० १८५२ फागुण बुदी १४ । वे० सं० १० । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । सं० १८५२ में लूणकरण गोधा ने प्रतिलिपि की ।

२१६६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ से १५४ । ले० काल सं० १६०७ । अपूर्ण । वे० सं० १८४ । ञ भण्डार ।

२२००. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६६ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ५८ । ञ भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल संघी दीवान ने सोनियों के मन्दिर में सं० १६४० भादवा सुदी ४ को चढाया ।

इसके अतिरिक्त ग्र भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४५५, ४०८, ४४७) ग तथा घ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ५६, ७१) ङ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४४६, ४५२, ४५४) च भण्डार मे ५ प्रतियां (वे० सं० ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४) छ भण्डार मे एक तथा ज भण्डार में २ (वे० सं० १५६, १, २) तथा ट भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १६१६, २०७४) और हैं ।

२२०१. प्रद्युम्नचरित्र—पं० महासेनाचार्य । पत्र सं० ५८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

२२०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । ञ भण्डार ।

२२०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १५६५ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे० सं० ३४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५६५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी चतुर्थीदिने गुरुवासरे सिद्धियोगे मूलनक्षत्रे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्र

देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये रामसरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये खंडेलवालान्वये कांटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्भार्या हरषखू । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह दामा द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तयोः पुत्रः सा० वोदिथ तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयोः पुत्रः सा० खरहथ एतेषां मध्ये जिनपूजापुरंदरेण सा० वेलाख्येन इदं श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाप्य ज्ञानावरणीकर्म्म क्षयार्थं निमित्तं सत्पात्रायमं श्री धर्म न्द्राय प्रदत्त ।

२२०४. प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सोमकीर्त्ति । पत्र सं० १६५ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १५३० । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । क भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् 'क' प्रति में से है । संवत् १७२१ वर्षे आसोज वदि ७ शुक्र दिने लिखितं आवह (आमेर) मध्ये लि०आचार्य श्री महीचंद्रकीर्तिजी । लिखितं जोसि श्रीधर ।।

२२०५. प्रति स० २ । पत्र सं० २५५ । ले० काल सं० १८८५ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

भट्टारक रत्नभूषण की आम्नाय मे कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोदय से ऐलिचपुर आकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई ।

२२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १८०२ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हांसी (झांसी) वाले भैया श्री ठमल अग्रवाल श्रावक ने ज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ प्रतिलिपि करवाई थी । पं० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र को समर्पण की गई ।

२२०८.प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ से १६५ । ले० काल सं० १८६६ सावन सुदी १२ । वे० सं० ५०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—लिख्यतं पंडित संगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पंडित गोर्द्धनदासेन आत्मार्थं ।

२२०९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८३३ श्रावण बुदी ३ । वे० सं० १६ । छ भण्डार ।

विशेष—पंडित सवाईराम ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी । ये आ० रत्नकीर्त्तिजी के शिष्य थे ।

२२१०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८१६ मार्गशीर्ष सुदी १० । वे० सं० ९३ । ञ भण्डार ।

विशेष—बखतराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७४ । ले० काल सं० १८०४ भादवा बुदी ९ । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

विशेष—अमरचन्दजी चांदवाड़ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४१९, ९४८, २०८९ तथा क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०८) और है ।

२२१२. प्रद्युम्नचरित्र ·· । पत्र सं० ५० । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३५ । ख भण्डार ।

२२१३. प्रद्युम्नचरित्र—सिंहकवि । पत्र सं० ४ से ८९ । आ० १०¾×४½ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००४ । अ भण्डार ।

२२१४. प्रद्युम्नचरित्रभाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ५०१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल सं० १९३७ बैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४९४ । क भण्डार ।

२२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२२ । ले० काल सं० १९३३ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५०९ । क भण्डार ।

२२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वे० सं० ६३८ । च भण्डार ।

विशेष—रचयिता का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२२१७. प्रद्युम्नचरित्रभाषा········ । पत्र सं० २७१ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १९१६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । अ भण्डार ।

२२१८. प्रीतिंकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २१ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण वे० सं० १२९ । अ भण्डार ।

२२१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५३० । क भण्डार ।

२२२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११९ । ख भण्डार ।

विशेष—२२ से ३१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । दो तीन तरह की लिपि है ।

२२२१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८१० बैशाख । वे० सं० १२१ । ख भण्डार ।

२२२२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६७६ प्र० श्रावण सुदी १० । वे० सं० १२२ । ख भण्डार ।

२२२३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८३१ श्रावण सुदी ७ । वे० सं० ९१ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्द के शिष्य पं० रामचन्द्रजी ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इसकी दो प्रतियां ख भण्डार में (वे० सं० १२०, २८९) और हैं ।

२२२४. प्रीतिंकरचरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल सं० १७२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । अ भण्डार ।

२२२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । छ भण्डार ।

२२२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६ । छ भण्डार ।

२२२७. भद्रबाहुचरित्र—रत्ननन्दि । पत्र सं० २२ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

२२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ५५१ । क भण्डार ।

२२२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६७४ पौष सुदी ८ । वे० सं० १३० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है ।

२२३० . प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १७८६ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० ५५८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) किशनगढ वालों ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२२३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३७ । छ भण्डार ।

विशेष—बखतराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२२३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७६३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ५१७ । व भण्डार ।

विशेष—क्षेमकीर्त्ति ने बौली ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२२३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१३३ । ट भण्डार ।

२२३४. भद्रबाहुचरित्र—[redacted] । पत्र सं० ४८ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

२२३५. भद्रबाहुचरित्र—चंपाराम । पत्र सं० ३८ । आ० १२३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० श्रावण सुदी १५ । ले० काल × । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३६. भद्रबाहुचरित्र········। पत्र सं० २७ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ भण्डार ।

२२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३८. भरतेशवैभव········। पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

२२३९. भविष्यदत्तचरित्र—पं० श्रीधर। पत्र सं० १०८। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०२। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है। संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण भी दिया हुआ है।

२२४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १६१४ माघ बुदी ८। वे० सं० ५५३। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि तक्षकगढ में हुई थी। लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है।

२२४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १७२४ बैशाख बुदी ६। वे० सं० १३१। ख भण्डार।

विशेष—मेडता निवासी साह श्री ईसर सोगाणी के बंश मे से सा० राइचन्द्र की भार्या रहणादे ने प्रतिलिपि करवाकर मंडलाचार्य श्रीभूषण के शिष्य रूपचन्द को कर्मक्षयार्थ निमित्त दिया।

२२४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १६६२ जेठ सुदी ७। वे० सं० ७५। घ भण्डार।

विशेष—अजमेर गढ मध्ये लिखितं अर्जुन सुत जोसी सूरदास।

दूसरी ओर निम्न प्रशस्ति है।

हरसार मध्ये राजा श्री सावलदास राज्ये खण्डेलवालान्वय साह देव भार्या देवलदे ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

२२४३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १८३७ आसोज सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ५६५। ङ भण्डार।

विशेष—लेखक पं० गोवर्द्धनदास।

२२४४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० २६३। च भण्डार।

२२४५. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५०। ले० काल ×। वे० सं० ५१। अपूर्ण। छ भण्डार।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये है तथा अन्त के २५ पत्र नही लिखे गये है।

२२४६. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १६७७ आषाढ सुदी २। वे० सं० ७७। ञ भण्डार।

विशेष—साधु लक्ष्मण के लिए रचना की गई थी।

२२४७. प्रति सं० ९। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६६७ आसोज सुदी ६। वे० सं० १६४४। ट भण्डार।

विशेष—आमेर में महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी। प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है।

२२४८. भविष्यदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १००। आ० ११½×७½ इंच। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–चरित्र। र० काल सं० १९३७। ले० काल सं० १९५०। पूर्ण। वे० सं० ५५४। क भण्डार।

२२४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११५ । ले० काल × । वे० सं० ५५५ । क भण्डार ।

२२५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

२२५१. भोज प्रबन्ध—पंडितप्रवर बल्लाल । पत्र सं० २६ । आ० १२½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । क भण्डार ।

२२५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७११ आसोज बुदी ६ । वे० सं० ४१ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

२२५३. भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र स० ४३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२२५४. मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी—रंगविनयगणि । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (राजस्थानी) विषय–चरित्र । र० काल सं० १७१४ श्रावण सुदी ११ । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण । वे० सं० ८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—चीतोड़ा ग्राम में श्री रंगविनयगणि के शिष्य दयामेरु मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

राग धन्यासिरी—

एह वा मुनिवर निसदिन गाईयइ, मन सुधि ध्यान लगाइ ।
पुण्य पुरूषणा गुण सुणतां थतां पातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥
शांतिचरित्र थकी ए चउपई कीधी निज मति सारि ।
मंगलकलसमुनि सतरंगा कह्या गुण आतम हितकारि ॥२॥ ए० ॥
गच्छ खरतर युग वर गुण आगलउ श्री जिनराज सुरिंद ।
तसु पट्टधारी सूरि शिरोमणि श्री जिनरंग मुणिंद ॥४॥ ए० ॥
तासु सीस मंगल मुनि रायनउ चरित कहेउ स सनेह ।
रंगविनय वाचक मनरंग सु जिन पूजा फल एह ॥५॥ ए० ॥
नगर अभयपुर अति रलियामणउ जहा जिन गृहचउसाल ।
मोहन मूरति वीर जिणंदनी सेवक जन सु रसाल ॥६॥ ए० ॥
जिन मनइवलि सोवत घणी जूणा देवल ठाम ।
जिहां देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ वंछित काम ॥७॥ ए० ॥
निरमल नीर भरयउं सोहइं अणु ऊंक महेश्वर नाम ।
आप विधाता जगि अवतरी कीधउ श्री मति काम ॥८॥ ए० ॥
जिहां किण श्रावक सगुण शिरोमणी धरम मरम नउ जाण ।
श्री नारायणदास सराहियइ मानइ जिणवर आण ॥९॥ ए० ॥

आसु तणइ आग्रह ए चउपई कीधी मन उल्लास ।
अधिकउ उछउ जे इहां भाखियउ मिछा दुक्कड़ तास ॥१०॥ ए० ॥
शासण नायक वीर प्रसाद थी चउपी चडीय प्रमाण ।
भणिस्यइं सुणिस्यइं जे नर भावसु धारयइं तासु कल्याण ॥११॥ ए० ॥
ए संबंध सरस रस गुण भरयउ भाष्य मति अनुसारि ।
धरमी जण गुण गावण मन रली रंगविनय सुखकार ॥१२ ॥ ए० ॥
एह वा मुनिवर निसि दिन गाईयइ सर्व गाथा दूहा ॥ ५३२ ॥

इति श्री मंगलकलसमहामुनिचउपही संपूर्त्तिमगमत् लिखिता श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री आसोज सुदी त्रिजय दसमी वासरे श्री चीतोडा महाग्रामे राजि श्री परतापसिंहजी विजयराज्ये वाचनाचार्य श्री रंगविनयगणि शिष्य पण्डित दयामेरु मुनि आत्मश्रेयसे शुभं भवतु । कल्याणमस्तु लेखक पाठकयोः ॥

२२५५. महीपालचरित्र—चारित्रभूषण । पत्र सं० ४१ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १७३१ श्रावण सुदी १२ (छ) । ले० काल सं० १८१८ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । अ भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल गोदीका ने प्रतिलिपि करवाई ।

२२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

२२५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६२८ फाल्गुण सुदी १२ । वे० सं० २७१ । च भण्डार ।

विशेष—दोहूराम वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

२२५८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

२२५९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० १७० । छ भण्डार ।

२२६०. महीपालचरित्र—भ० रत्ननन्दि । पत्र सं० ३४ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । क भण्डार ।

२२६१. महीपालचरित्रभाषा—नथमल । पत्र सं० ९२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १९१८ । ले० काल सं० १९३९ श्रावण सुदी ३ । वे० सं० ५७५ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता चारित्र भूषण ।

२२६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १९३५ । वे० सं० ५९२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ नये पत्र लिखे हुये हैं ।

कवि परिचय—नथमल सदासुख कासलीवाल के शिष्य थे । इनके पितामह का नाम दुलीचन्द तथा पिता का नाम शिवचन्द था ।

२२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । ञ भण्डार ।

२२६४. मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

२२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

२२६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५४ बैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । ट भण्डार ।

२२६८. मेघदूतटीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल सं० १५७१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ञ भण्डार ।

२२६९. यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत गद्य पद्य । विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल शक सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५१ । ञ भण्डार ।

विशेष—कई प्रतियों का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

२२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । ञ भण्डार ।

२२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । ञ भण्डार ।

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

२२७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३५१ । ञ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं । अंबावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगत्कीर्त्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट भण्डार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३७ । ञ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता सोमदेव सूरि ।

२२७६. यशस्तिलकचम्पूटीका·······। पत्र सं० ६४६ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । क भण्डार ।

२२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१० । ले० काल × । वे० सं० ५८६ । क भण्डार ।

२२७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८१ । ले० काल × वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

२२७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०६ से ४५६ । ले० काल सं० १६४८ । अपूर्ण । वे० सं० ५८७ । क भण्डार ।

२२८०. यशोधरचरित—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ८२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १४०७ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २५ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत्सरेस्मिन १४०७ वर्षे अश्वनिमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे नस्मिन चन्द्रपुरीदुर्गेहोलीपुरविराजमाने महाराजाधिराजसमस्तराजावलीसेव्यमाण खिलजीवश उद्योतक सुरित्राणमहमूदसाहिराज्ये तद्विजयराज्ये श्रीकाष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विमलसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीधर्मसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे श्रीगुणकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक मलयकीर्त्ति देवास्तच्छिष्य महात्मा श्री हरिषेण देवास्तम्याम्नाये अग्रोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्रीकरमसी तद्भार्यासुनखा तयोः पुत्रास्त्रयः जेष्ठः सा मैणपाल द्वितीयः सा. पूना तृतीयः सा. झाभण । साधु मैणपाल भार्ये द्वे चाऊ भूराही । सा. झाभण पुत्र जगमल मोमा एतेषामध्ये इदंपुस्तकं ज्ञानावरणीकर्म्म क्षयार्थं बाइ वधो इदं यशोधरचरित्रं लिखाप्य महात्मा हरिषेणदेवा, दत्तं पठनार्थं । लिखितं पं० विजयसिंहेन ।

२२८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४५ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष—कही कही संस्कृत में टीका भी दी हुई हैं ।

२२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० से ६८ । ले० काल सं० १६३० भादो····। अपूर्ण । वे० सं० २८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि आमेर मे राजा भारमल के शासनकाल मे नेमीश्वर चैत्यालय में की गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२२८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८१७ आसोज सुदी २ । वे० सं० २८६ । ख भण्डार ।

२२८४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १६७२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० २८७ । च भण्डार ।

२२८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । वे० सं० २१२६ । ट भण्डार ।

२२८६. यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ५१ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । अ भण्डार ।

२२८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल X । वे० सं० ५१६ । क भण्डार ।

२२८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७१५ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० २८४ । च भण्डार ।

२२८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २८५ । च भण्डार ।

विशेष—पं० नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ आसोज सुदी ११ । वे० सं० २२ । छ भण्डार ।

२२९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० सं० २३ । छ भण्डार ।

२२९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२९३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० २५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत्सर १७७५ वर्षे मिती चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तस्य आम्नायिकाय आचार्य श्री क्षेमकीर्ति । पं० चोखचन्द ने बसई ग्राम में प्रतिलिपि की थी— अन्त में यह और लिखा है—

संवत् १३५२ येली भौंसे प्रतिष्ठा कराई लाडणा में तपिस्यो ल्होडसाजण उपजो ।

२२९४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २ से ३८ । ले० काल सं० १७८० आषाढ बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २१ । ज भण्डार ।

२२९५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० सं० ११४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति जीर्णशीर्ण है ।

२२९६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७६२ जेष्ठ सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ४९३ । ञ भण्डार ।

विशेष—आचार्य शुभचन्द्र ने टौंक में प्रतिलिपि की थी ।

ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९०४) क भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ५१६, ५१७) और हैं ।

२२९७. वरांगचरित्र—वर्द्धमान भट्टारक । पत्र सं० ७० । आ० ११X४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल सं० १८३२ पौष बुदी १२ । वे० सं० ६९२ । क भण्डार ।

२२९८. प्रति सं० २ । प्रति सं० ९८ । ले० काल सं० १५६५, सावन सुदी १३ । वे० सं० १५२ । ख भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ पौमसिरी से आचार्य भुवनकीर्ति की शिष्या आर्यिका मुक्तिश्री के लिए दयासुन्दर से लिखवाया तथा बैशाख सुदी १० सं० १७८५ को मंडलाचार्य श्री अनन्तकीर्तिजी के लिए नाथूरामजी ने समर्पित किया।

२२९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल X । वे० सं० ८४ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

२३००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८५ । ले० काल स० १६६७ । वे० सं० ६०६ । ङ भण्डार ।

विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई ।

२३०१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८३३ पौष सुदी १३ । वे० सं० २१ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० बखतराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२३०२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० भादवा बुदी १० । वे० सं० ६९ । ञ भण्डार ।

विशेष—टोडरमलजी के पठनार्थ पांडे गोवर्धनदास ने प्रतिलिपि कराई थी । महामुनि गुणकीर्त्ति के उपदेश से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी ।

२३०३. यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र सं० २ से १२ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल सं० १८३९ । अपूर्ण । वे० सं० ८९२ । अ भण्डार ।

२३०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल १८२४ । वे० सं० ५९५ । क भण्डार ।

२३०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १५१८ । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२३०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल X । वे० सं० २१३८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नवीन लिखा गया है ।

२३०७. यशोधरचरित्र—पूरणदेव । पत्र सं० १ से २० । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २५१ । च भण्डार ।

२३०८. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र सं० ७१ । आ० १२X४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १५६५ माघ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । च भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १५६५ वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे बृहस्पतिवासरे मूलनक्षत्रे राव श्रीमालदे राज्यप्रवर्त्तमाने रावत श्री खेतसी प्रतापे सांचोरा नाम नगरे श्रीशांतिनाथ जिणचैत्यालये श्रीमूलसंघेबलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे

नंद्याम्नाये श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये दोशीगोत्रे सा. सिहणा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रयः प्रथम सा. ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा. ऊल्हा ईसरभार्या मजसिरी तयोः पुत्राः चत्वारः प्र० सा० लोहट द्वितीय सा. भूणा तृतीय सा. ऊधर चतुर्थ सा. देवा सा. लोहट भार्या ललितादे तयोः पुत्राः पंच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा. धीरा तृतीय लूणा चतुर्थ होला पंचम राज। सा. भूणा भार्या भूणसिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधसिरी तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम साला द्वितीय खरहथ– सा० देवा भार्या धोसिरि तयो पुत्र धनिउ चि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरंजी धीरा भार्या रमायी सा. टोहा भार्ये द्वे वृहद्लीला लघ्वी सुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य शीलवान सा. नाल्हा तद्भार्या नयणश्री सा० ऊल्हा भार्या वाली तयोः पुत्र सा. डालू तद्भार्या डलसिरि एतेषांमध्ये चतुर्विधदान वितरणशक्तैनत्रिंपंचाशतक्रियाप्रतिपालक सावधानेन जिनपूजापुरंदरेण सद्गुरूपदेशनिर्वाहकेन संघपति साह श्री टोहानामधेयेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय घटापितं ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्तं।

२३०९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४ से ५४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०७३। अ भण्डार।

२३१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १६६० बैशाख बुदी १३। वे० सं० ५९३। क भण्डार।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिलिपि की थी।

२३११. यशोधरचरित्र......। पत्र सं० १७ से ४५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६१। ट भण्डार।

२३१२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० ६९३। ङ भण्डार।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास। पत्र सं० ४३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० १५८१ भादवा सुदी १२। ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ५६६।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है।

२३१४. यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचंद। पत्र सं० ३७। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६। ले० काल सं० १७९६ आसोज सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १०४९। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति–

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७९६ लिखतं। पं० कुशलोजी तत् शिष्येन लिपिकृतं पं० खुस्यालचंद श्री कुशलोजी के चेहरे पूर्ण कर्त्तव्यं।

दिवालो जिनराज को देखत दिवालो जाय।

लिखि दिवालो बनाइये कर्म दिवालो थाय।

श्री रस्तु। कल्याणमस्तु। सहाजहांपुर मध्ये परिपूर्णा।

२३१५. यशोधरचरित्र—पन्नालाल । पत्र सं० ११२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६३२ सावन बुदी ऽऽ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । क भण्डार ।

विशेष—पुष्पदंत कृत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुवाद है ।

२३१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल × । वे० सं० ६१२ । क भण्डार ।

२३१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । छ भण्डार ।

२३१८. यशोधरचरित्र……। पत्र सं० २ से ६३ । आ० ६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६११ । क भण्डार ।

२३१९. यशोधरचरित्र—श्रुतसागर । पत्र सं० ६१ । आ० १२×५१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२३२०. यशोधरचरित्र—भट्टारक ज्ञानकीर्त्ति । पत्र सं० ६३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६५६ । ले० काल सं० १६६० आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६० वर्षे आसौजमासे कृष्णपक्षे नवम्यांतिथौ सोमवासरे आदिनाथचैत्यालये मोजमाबाद वास्तव्ये राजाधिराज महाराजाश्रीमानसिंघराज्यप्रवर्तते श्रीमूलसंघेबलात्कारगणे नंद्याम्नायेसरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये तस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवातत्पट्टे भट्टार श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीचन्द्रकीर्त्ति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालये पान्वाड्यागोत्रे साह हीरा तस्य भार्या हरषमदे । तयो पुत्राचत्वार । प्रथम पुत्र साह नानू तस्यभार्या नौलावे पुत्र त्रयः प्रथमपुत्र साह नादु तस्य भार्या नायकदे तयोपुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र चिरंजीव गीरधर । द्वितीयपुत्र साह वोहिथ तस्य भार्या वहुरंगदे तस्य पुत्रा त्रय प्रथमपुत्र चिरंजी स्थिरपाल द्वितीय पुत्र जेसा । तृतीयपुत्र टेडू । तृतीय पूरण तस्यभार्या कपूरदे । साह हीरा । द्वितीयपुत्र वोहथ तस्यभार्या चावलदे । तस्यपुत्रा द्वौ प्रथमपुत्र साह गुजर तस्यभार्या गारवदे । द्वितीयपुत्र चिरंजी छाजू । हीरा तृतीयपुत्र साह पचाइण । हीरा चतुर्थपुत्र साह नराइण तस्य भार्या नैणादे तस्यपुत्र साह दुरंगा एनेषांमध्ये वोहिथ तेनेदंशास्त्र यशोधरचरित्रकर्मक्षयनिमित्तं भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्त्तितत्शिष्य आर्य लालचंद योग्य घटापितं ।

२३२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १५७७ । वे० सं० ६०६ । क भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म मतिसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

२३२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६५१ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ६१० । क भण्डार ।

विशेष—साह छीतरमल के पठनार्थ जोशी जगन्नाथ ने मौजमाबाद में प्रतिलिपि की थी ।

क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०७, ६०८) और हैं ।

२३२३. यशोधरचरित्रटिप्पण—प्रभाचंद । पत्र सं० १२ । आ० १०३/४×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५८५ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । ञ भण्डार ।

विशेष—पुष्पदंत कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। बादशाह बाबर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३२४. रघुवंशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र सं० १४४। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ८२ से १०५ तक नहीं है। पंचम सर्ग तक कठिन शब्दों के अर्थ संस्कृत में दिये हुये हैं।

२३२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १८२४ काती बुदी ३। वे० सं० ६४३। अ भण्डार।

विशेष—कडी ग्राम में पांड्या देवराम के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १८४४। वे० सं० २०६६। अ भण्डार।

२३२७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६८० भादवा सुदी ८। वे० सं० १५४। ख भण्डार।

२३२८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३२। ले० काल सं० १७८९ मंगसर सुदी ११। वे० सं० १५५। ख भण्डार।

विशेष—हाशिये पर चारों ओर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति मारोठ में पं० अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराम ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२९. प्रति सं० ६। पत्र सं० ९६ से १३४। ले० काल सं० १६९६ कार्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २४२। छ भण्डार।

२३३०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८२८ पौष बुदी ४। वे० सं० २४४। छ भण्डार।

२३३१. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६ से १७३। ले० काल सं० १७७३ मंगसिर सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्ष है।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० १०२८, १२९४, १२९५, १८७४, २०६५) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५ [क])। ड भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५)। च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २८९, २९०) छ और ट भण्डार में एक एक प्रतियां (वे० सं० २६३, १९९६) और हैं।

२३३२. रघुवंशटीका—मल्लिनाथसूरि। पत्र सं० २३२। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २१२। ज भण्डार।

२३३३. प्रति सं० २। पत्र सं० १८ से १४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६८। ज भण्डार।

२३३४. रघुवंशटीका—पं० सुमति विजयगणि । पत्र सं० ६० से १७६ भा० १२×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२७ ।

विशेष—टीकाकाल–

निर्विग्रहंरस शशि संवत्सरे फाल्गुनसितैकादश्यां तिथौ संपूर्णा श्रीरस्तु मंगल सदा कर्तुः टीकायाः । विक्रमपुर में टीका की गयी थी ।

२३३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ से १४७ । ले० काल सं० १८४० चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२८ । क भण्डार ।

विशेष—गुमानीराम के शिष्य पं० शम्भूराम ने ज्ञानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६२६) और है ।

२३३६. रघुवंशटीका—समयसुन्दर । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल सं० १६६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७५ । अ भण्डार ।

विशेष—समयसुन्दर कृत रघुवंश की टीका द्वयार्थक है । एक अर्थ तो वही है जो काव्य का है तथा दूसरा अर्थ जैनदृष्टिकोण से है ।

२३३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ३७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७२ । ट भण्डार ।

२३३८. रघुवंशटीका—गुणविनयगणि । पत्र सं० १३७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ८६ । व्य भण्डार ।

विशेष—खरतरगच्छीय वाचनाचार्य प्रमोदमाणिक्यगणि के शिष्य संख्यवतुल्य श्रीमत् जयसोमगणि के शिष्य गुणविनयगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८९५ । वे० सं० ६२६ । क भण्डार ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १३५०, १०८१) और हैं । केवल व्य भण्डार की प्रति ही गुणविनयगणि की टीका है ।

२३४०. रामकृष्णकाव्य—दैवज्ञ पं० सूर्य । पत्र सं० ३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९०५ । अ भण्डार ।

२३४१. रामचन्द्रिका—केशवदास । पत्र सं० १७६ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७९६ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

२३४२. वरांगचरित्र—भ० वर्द्धमानदेव । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–राजा वरांग का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५९४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ३२१ । च भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—

सं० १५९४ वर्षे शाके १४५६ कार्तिगमासे शुक्लपक्षे दशमीदिवसे शनैश्चरवासरे धनिष्ठानक्षत्रे गंडयोगे आंबां नाम महानगरे राव श्री सूर्यसेणि राज्यप्रवर्त्तमाने कवर श्री पुरणमल्लप्रतापे श्री शान्तिनाथ जिनचैत्यालये श्रीमूल-

संघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये, भ० श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिणचंद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये [illegible] संघाधिपति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम सं. श्री खीवा तद्भार्ये द्वे प्रथमा सं० खेमलदे द्वितीयो सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय सं० वेणा तद्भार्ये द्वे प्रथमा विमलादे द्वि० नौलादे । तृतीय सं. डूंगरसी तद्भार्या दाड्योंदे एतेसां मध्ये सं. विमलादे इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्तं ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६३ [illegible] सुदी १४ । वे० सं० ६६६ । क भण्डार ।

२३४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६४ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० ३३० । ख भण्डार ।

२३४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १८३६ फागुण सुदी १ । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय में संतोषराम के शिष्य वख्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८४७ वैशाख सुदी १ । वे० सं० ४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगावती (सांगानेर) में गोधों के चैत्यालय में पं० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३१ आषाढ सुदी ३ । वे० सं० ४९ । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभ चैत्यालय में पं० रामचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३० से ५६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५७ । ट भण्डार ।

विशेष—८वें सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९. वरांगचरित्र—भर्तृहरि । पत्र सं० ३ से १० । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५०. वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनंदि । पत्र सं० ५० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १५१८ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ब भण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिव्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनंदि विरचिते सुखानामां विने श्री वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय परिच्छेदः

२३५१. वर्द्धमानकथा—जयमित्रहल। पत्र सं० ७३। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १६६५ वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १५३। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति—

सं० १६५५ वरषे वैशाख सुदी ३ शुक्रवारे मृगसीरनखित्रे मूलसंघे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्र तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लिभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचंद तत्पट्टे भट्टारक श्रीचंदकीर्तिः विरचित श्री नेमदत्त आचार्य चंपावतीगढ महादुर्गातः श्रीनेमिनाथ चैत्यालये कुछाहावंस महाराजाधिराज महाराजा श्री मानस्यंघराज्ये अजमेरागोत्रे सा. धीरा तद्भार्याधारादे तत्पुत्र चत्वार प्रथम पुत्र············। (अपूर्ण)

२३५२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० काल ×। वे० सं० १६५३। ट भण्डार।

२३५३. वर्द्धमानचरित्र·······। पत्र सं० १६८ से २१२। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८६। अ भण्डार।

२३५४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७४। अ भण्डार।

२३५५. वर्द्धमानचरित्र—केशरीसिंह। पत्र सं० १८५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० १८६१ ले० काल सं० १८६४ सावन बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६४८। क भण्डार।

विशेष—सदासुखजी गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

२३५६. विक्रमचरित्र—वाचनाचार्य अभयसोम। पत्र सं० ४ से ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–विक्रमादित्य का जीवन। र० काल सं० १७२४। ले० काल सं० १७८१ श्रावण बुदी ४। अपूर्ण। वे० सं० १३६। अ भण्डार।

विशेष—उदयपुर नगर में शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३५७. विदग्धमुखमंडन—बौद्धाचार्य धर्मदास। पत्र सं० २०। आ० १०¾×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १८५१। पूर्ण। वे० सं० ६२७। अ भण्डार।

२३५८. प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १०३३। अ भण्डार।

२३५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० ६५७। क भण्डार।

विशेष—जयपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १७२४। वे० सं० ६५८। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी है।

२३६१. प्रति सं० ५। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० ११३। छ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

प्रथम व अन्तिम पत्र पर गोल मोहर है जिस पर लिखा है 'श्री जिन सेवक साह वाविराज जाति सोगाणी पोमा सुत।

२३६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं १६१५ चैत्र सुदी ७ । वे० सं० ११५ । छ भण्डार ।

विशेष—गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२३६३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८१ पौष बुदी ३ । वे० सं० २७८ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२३६४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७५६ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०१ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३६५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १७४३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ५०७ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेमचन्द्र गणि हैं ।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११३, १४६) ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०७) और है ।

२३६६. विदग्धमुखमंडनटीका—विनयरत्न । पत्र सं० ३३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । टीकाकाल सं० १५३५ । ले० काल सं० १६८३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७. विशृंगारकाव्य—कालिदास । पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १८५३ । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति के समय में लिखी गई थी ।

२३६८. शंबुप्रद्युम्नप्रबंध—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० २ से २१ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रीकृष्ण, शंबुकुमार एवं प्रद्युम्न का जीवन । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ । अपूर्ण । वे० सं ७०१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६५६ वर्षे विजयदशम्यां श्रीस्तंभतीर्थे श्रीबृहत्खरतरगच्छाधीश्वर श्री दिल्लीपति पातिसाह जलालदीन अकबरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानपदधारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि सूरश्वराणां (सूरीश्वराणां) साहिसमक्षस्वहस्तस्थापिता चार्यश्रीजिनसिंहसूरिसुरिकराणां (सूरीश्वराणां) शिष्य मुख्य पंडित सकलचन्द्रगणि तच्छिष्य वा० समयसुन्दरगणिना भोजैसलमेर वास्तव्ये नानाविध शास्त्रविचाररसिक सो० सिवराज समभ्यर्थनया कृतः श्री शंबप्रद्युम्नप्रबन्धे प्रथमः खंडः ।

२३६९. शान्तिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि। पत्र सं० १६६। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०२४। अ भण्डार।

विशेष—१६६ से आगे के पत्र नहीं हैं।

२३७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३ से १०५। ले० काल सं० १७१४ पौष बुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० १६२०। ट भण्डार।

२३७१. शान्तिनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्त्ति। पत्र सं० १६५। आ० १३×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७७६ चैत्र सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

२३७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २२८। ले० काल ×। वे० सं० ७०२। क भण्डार।

विशेष—तीन प्रकार की लिपियां हैं।

२३७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २२१। ले० काल सं० १८९३ माह बुदी ६। वे० सं० ७०३। क भण्डार।

विशेष—लिखितं गुरजीरामलाल सवाई जयनगरमध्ये वासी नेवटा का हाल संघही मालावता के मन्दिर लिखी। लिखाप्यतं चंपारामजी छाबडा सवाई जयपुर मध्ये।

२३७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८७। ले० काल सं० १८६४ फागुण बुदी १२। वे० सं० ३४१। च भण्डार।

विशेष—यह प्रति श्योजीरामजी दीवान के मन्दिर की है।

२३७५. प्रति सं० ५। पत्र सं० १५६। ले० काल सं० १७६६ कार्तिक सुदी ११। वे० सं० १४। छ भण्डार।

विशेष—सं० १८०३ जेठ बुदी ६ के दिन उदयराम ने इस प्रति का संशोधन किया था।

२३७६. प्रति सं० ६। पत्र सं० १७ से १२७। ले० काल सं० १८८८ वैशाख सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ४६४। व्य भण्डार।

विशेष—महात्मा पन्नालाल ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त छ, व्य तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३, ४८६, १६२६) और हैं।

२३७७. शालिभद्रचौपई—मतिसागर। पत्र सं० । आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१५४। अ भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र आधा फटा हुआ है।

२३७८. प्रति सं० २। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० १६२। अ भण्डार।

२३७९. शालिभद्र चौपई········। पत्र सं० ५। आ० ८×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३०।

विशेष—रचना में ६० पद्य हैं तथा अशुद्ध लिखी हुई है। अन्तिम पाठ नहीं है।

प्रारम्भ—

श्री सासण नायक सुमरिये वर्द्धमान जिनचंद ।
अलीइ विघन दुरीहरं आपै प्रमानंद ॥१॥

२३८०. शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४९ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२९१ । अ भण्डार ।

२३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२. शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—९ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र संख्या अलग अलग है ।

२३८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७९ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । अ भण्डार ।

२३८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ से १४४ । ले० काल सं० १७६९ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । अ भण्डार ।

२३८६. श्रवणभूषण—नरहरिभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमंडन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—ओं नमो पार्श्वनाथाय ।

हेरवंक्व किमंब किम् तव कारता तस्य चांद्रीकला
कुत्यं कि धरजन्मनोक्त मन पार्वताक रं स्याविति तातः ।
कुप्पति गुह्यतामिति विहायाहर्तु मन्यां कला–
माकाशे जयति प्रसारित कर स्तंबेरमग्रामणी ॥१॥
यः साहित्यसुधेन्दुर्नरहरि रल्लालनंदनः ।
कुरुते सेवाश्रवण भूषणाख्यां विदग्धमुखमंडनव्याख्या ॥२॥
प्रकाराः संतु बहवो विदग्धमुखमंडने ।
तथापि मत्कृतं भावि मुख्यं श्रवण–भूषणं ॥३॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरभट्टविरचिते श्रवणभूषणे चतुर्थः परिच्छेदः संपूर्ण ।

२३८७. श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्र सं० ६८। आ० १०३×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल सं० १५८५। ले० काल सं० १६४३। पूर्ण। वे० सं० २१०। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। प्रशस्ति—

संवत् १६४३ वर्षे आषाढ सुदी ५ शनिवासरे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मं० भुवनकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मं. धर्मकीर्त्तिदेवा द्वितीय शिष्यमडलाचार्य विशालकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य लक्ष्मीचंददेवा तदन्वये मं० सहसकीर्त्तिदेवा तदन्वये मंडलाचार्य नेमचंद तदाम्नाये खंडेलवालान्वये रैवासा वास्तव्ये बगडा गोत्रे सा० लीला त …………।

२३८८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८४६। वे० सं० ६६६। क भण्डार।

२३८९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४२। ले० काल सं० १८४५ ज्येष्ठ सुदी ३। वे० सं० १६२। ख भण्डार।

विशेष—मालवदेश के पूर्णासा नगर में आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी। विजयराम ने तक्षकपुर (टोडारायसिंह) में अपने पुत्र चि० टेकचन्द के स्वाध्यायार्थ इसको तीन दिन में प्रतिलिपि की थी।

यह प्रति पं० सुखलाल की है। हरिदुर्ग में यह ग्रन्थ मिला ऐसा उल्लेख है।

२३९०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३९। ले० काल सं० १८९५ आसोज सुदी ४। वे० सं० १६३। ख भण्डार।

विशेष—केकड़ी में प्रतिलिपि हुई थी।

२३९१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४२ से ७९। ले० काल सं० १७६१ सावन सुदी ४। वे० सं० । ङ भण्डार।

विशेष—वृन्दावती में राव बुधसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

२३९२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८३१ फागुण बुदी १२। वे० सं० ३८। छ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में श्वेताम्बर पंडित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी।

२३९३. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५३। ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी १४। वे० सं० ३२७। ञ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० ऋषभदास ने कर्मक्षयार्थ प्रतिलिपि की थी।

२३९४. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १८२६ माह सुदी ८। वे० सं० ६। ञ भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्दजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२३९५. प्रति सं० ९। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १६४४ भादवा सुदी ५। वे० सं० २१३६। ट भण्डार।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २३३, २५६) क, छ तथा ञ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७२१, ३६ तथा ८५) और हैं।

२३६६. श्रीपालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र सं० ५६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल शक सं० १६५३। पूर्ण। वे० सं० १०१४। अ भण्डार।

विशेष—ब्रह्मचारी माणकचंद ने प्रतिलिपि की थी।

२३६७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२८। ले० काल सं० १७६५ फागुन बुदी १२। वे० सं० ४०। छ भण्डार।

विशेष—तारापुर में मंडलाचार्य रत्नकीर्त्ति के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी।

२३६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वे० सं० १६२। ञ भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ चिरंजीलाल मोठ्या ने सं० १९६३ की भादवा बुदी ८ को चढाया था।

२३६९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २९ (६० से ८८) ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९७। क भण्डार।

विशेष—पं० हरलाल ने वाम में प्रतिलिपि की थी।

२४००. श्रीपालचरित्र········। पत्र सं० १२ से ३४। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९३। अ भण्डार।

२४०१. श्रीपालचरित्र········। पत्र सं० १७। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९६। अ भण्डार।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल। पत्र सं० १४४। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। र० काल सं० १६५१। आषाढ बुदी ८। ले० काल सं० १९३३। पूर्ण। वे० सं० ४०७। अ भण्डार।

२४०३. प्रति सं० २। पत्र सं० १६४। ले० काल सं० १८९८। वे० सं० ४२१। अ भण्डार।

२४०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५२ से १४४। ले० काल सं० १८५९। वे० सं० ४०४। अपूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। दीवान शिवचन्दजी ने ग्रन्थ लिखवाया था।

२४०५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ९६। ले० काल सं० १८८९ पौष बुदी १०। वे० सं० ७९। ग भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ आमेर में आलमगंज में लिखा था।

२४०६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १८६७ बैशाख सुदी ३। वे० सं० ७१७। क भण्डार।

विशेष—महात्मा कालूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२४०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८५७ आसोज बुदी ७ । वे० सं० ७१६ । क भण्डार ।

विशेष—अभयराम गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८६२ माघ बुदी २ । वे० सं० ६८३ । च भण्डार ।

२४०९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १७६० पौष सुदी २ । वे० सं० १७४ । छ भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज है । हिरणौद में प्रतिलिपि हुई थी । अन्तिम ५ पत्रो मे कर्मप्रकृति वर्णन है जिसका लेखनकाल सं० १७६३ आसोज बुदी १३ है । सांगानेर में गुरुजी मदूराम ने कान्हजीदास के पठनार्थ लिखा था ।

२४१०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८८२ सावन बुदी ५ । वे० सं० २२८ । झ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० १०७७, ४१८) घ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०४) क भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ७१५, ७१८, ७२०) छ, झ और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २२५, २२६ और १६१३) और हैं ।

२४११. श्रीपालचरित्र……। पत्र सं० २५ । आ० ११३/४×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । घ भण्डार ।

विशेष—अमीचन्दजी सोगाणी तबेला वालोंकी बहूने लिखवाकर विजैरामजी पाड्या के मन्दिर मे विराजमान किया ।

२४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७०० । क भण्डार ।

२४१३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२ । ले० काल सं० १६२६ पौष मुदी ८ । वे० सं० ८० । ग भण्डार ।

२४१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १६३० फागुरा मुदी ६ । वे० स० ८२ । ग भण्डार ।

२४१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६३४ फागुन बुदी ११ । वे० सं० २५६ । ज भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७४ । अ भण्डार ।

२४१७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ४४० । अ भण्डार ।

२४१८. श्रीपालचरित्र……। पत्र सं० २४। आ० ११३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७५।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं हैं। दो प्रतियों का मिश्रण है।

२४१९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३९। ले० काल ×। वे० सं० ८१। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

२४२०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८४। ध भण्डार।

२४२१. श्रेणिकचरित्र……। पत्र सं० २७ से ४८। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७३२। क भण्डार।

२४२२. श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र सं० ४६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३५६। च भण्डार।

२४२३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०७। ले० काल सं० १८३७ कार्त्तिक सुदी। अपूर्ण। वे० सं० २७। छ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है।

२४२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७०। ले० काल ×। वे० सं० २८। छ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है।

२४२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८१। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० २९। छ भण्डार।

२४२६. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ८४। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २४६। अ भण्डार।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी। इसका दूसरा नाम भविष्यत् पद्मनाभपुराण भी है

२४२७. प्रति सं० २। पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १७०८ चैत्र बुदी १४। वे० सं० १६४। अ भण्डार।

२४२८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १९८। ले० काल सं० १९२१। वे० सं० १०५। घ भण्डार।

२४२९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३१। ले० काल सं० १८०१। वे० सं० ७३५। ड भण्डार।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखणौती में प्रतिलिपि की थी।

२४३०. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४६ ले० काल सं० १८६४ आषाढ सुदी १०। वे० सं० ३५२। च भण्डार।

२४३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८६१ श्रावण बुदी १। वे० सं० ३५३ च भण्डार।

विशेष—जयपुर में उदयचंद लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी।

२४३२. श्रेणिकचरित्र—भट्टारक विजयकीर्ति। पत्र सं० १२६। आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १८२० फागुण बुदी ७। ले० काल सं० १६०३ पौष सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ४३७। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय–

विजयकीर्ति भट्टारक जान, इह भाषा कीधी परमाण।
संवत अठारास बीस, फागुण बुदी साते सु जगीस ॥
बुधवार इह पूरण भई, स्वाति नक्षत्र वृद्ध जोग सुथई।
गोत पाटणी है मुनिराय, विजयकीर्ति भट्टारक थाय ॥
तसु पटधारी श्री मुनिजानि, बडजात्यातसु गोत पिछाणि।
त्रिलोकेन्द्रकीर्त्तिरिषिराज, नितप्रति साधय आतम काज ॥
विजयमुनि शिषि दुतिय सुजाण श्री बैराड देश तसु आण।
धर्मचन्द्र भट्टारक नाम, ठोल्या गोत वरण्यो अभिराम।
मलयखेड सिंघासण मही, कारंजय पट सोभा लही ॥

२४३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७६। ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० ८३। ग भण्डार।

विशेष—महाराजा श्री जयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर में सवाईराम गोधा ने आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। मोहनराम चौधरी पांड्या ने ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के चैत्यालय मे चढ़ाया।

२४३४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० १६३। छ भण्डार।

२४३५. श्रेणिकचरित्रभाषा........। पत्र सं० ५५। आ० ११×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७३३। क भण्डार।

२४३६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३३ से ६५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७३४। क भण्डार।

२४३७. संभवजिणणाहचरिउ (संभवनाथ चरित्र) तेजपाल। पत्र सं० ६२। आ० १०×५ इंच। भाषा–अपभ्रंश। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ३६५। च भण्डार।

२४३८. सागरदत्तचरित्र—हीरकवि। पत्र सं० १८ से २०। आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १०। ले० काल सं० १७२७ कार्तिक बुदी १। अपूर्ण। वे० सं० ८३५। अ भण्डार।

विशेष–प्रारम्भ के १७ पत्र नही हैं।

ढाल पचतालीसमी गुरुवानी—

संवत् वेद युग जाणीय मुनि शशि वर्ष उदार ।। सुगुण नर सांभलो० ।। 1729
मेदपाढ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ।। ५ ।। सुगुण०
गढ जालोरइ युग तस्युं लिखीउए अधिकार ।
अमृत सिधि योगइ सही त्रयोदसी दिनसार ।। ६ ।। सु०
भाद्रव मास महिमा घणी पूरण करयो विचार ।
भविक नर सांभलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ।। ७ ।। सु०
लूंकइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल ।
गुरु झांझण श्रुत केवली थिवर गुणे चोसाल ।। ८ ।। सु०
समरथथिवर महा मुनी सुंदर रूप उदार ।
तत शिष भाव धरी भणइ सुगुरु तणइ आधार ।। ९ ।। सु०
उछौ अधिकयों कह्यो कवि चातुरीय किलोल ।
मिथ्या दुःकृत ते होज्यो जिन साखइ चउसाल ।। १० ।। सु०
सजन जन नर नारि जे संभली लहइ उल्हास ।
नरनारी धर्मातिमा पंडित म करो को हास ।। ११ ।। सु०
दुरजन नइ न सुहावई नही भावइ कहे दाय ।
माखी चंदन नादरइ असुचितिहां चलि जाय ।। १२ ।। सु०
प्यारो लागइ संतनइ पामर चित संतोष ।
ढाल भली २ संभली चिते धो ढाल रोष ।। १२ ।। सु०
श्री गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपो भाण ।
हीर मुनि आसीस अइ हो ज्यो कोडि कल्याण ।। १४ ।। सु०
सरस ढाल सरसी कथा सरसो सहु अधिकार ।
हीर मुनि गुरु नाम थी आणंद हरख उदार ।। १५ ।। सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र संपूर्णं । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्तिक बुदी १ दिने सोमवासरे लिखतं श्री धन्यजी ऋषि श्री केसवजी तत् शिष्य प्रवर पंडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदंतेवासी लिपिकृतं मुनिसावलं आत्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभं भवतु ।

२४३६. सिरिपालचरिय—पं० नरसेन । पत्र सं० ४७ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–राजा श्रीपाल का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १६१५ कार्त्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४१० । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४४०. सीताचरित्र—कवि रामचन्द (बालक) । पत्र सं० १०० । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल सं० १७१३ मंगसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०० ।

विशेष—रामचन्द्र कवि बालक के नाम से विख्यात थे ।

२४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८० । ले० काल × । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १८८४ कार्त्तिक बुदी ६ । वे० सं० ७१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सजिल्द है ।

२४४३. सुकुमालचरिउ—श्रीधर । पत्र सं० ६५ । आ० १०×४३/४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–सुकुमाल मुनि का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४४४. सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ४४ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६७० कार्त्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

संवत् १६७० शाके १५२७ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रदकार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे अष्टम्या तिथौ सोमवासरे नागपुरमध्ये श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचद्रदेवा मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे मं० श्रीधर्मकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे मं० श्रीसहस्रकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीनेमचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीयशकीर्त्तिः तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये भौंसागोत्रे सा. सोनू तस्यभार्या सोनश्री तयो पुत्र सा. फलहू तस्यभार्या फूलमदे तयो पुत्रा षट् । प्रथम पुत्र सा० नरसिंह तस्यभार्या नरसिंघदे । द्वितीयपुत्र सा. वरसिंह तस्यभार्या बहुरंगदे तयोः पुत्र सा. ठाकुर तस्यभार्या ठाकुरदे । तृतीयपुत्र सा. खेता तस्यभार्या खेतलदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सा. रणमल तस्यभार्या रमणादे तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० चि० कवरा द्वितीय पुत्र चि० धनेड । द्वितीय पुत्र सा. पट्टा तस्यभार्या पाटमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र चि० नाथू द्वि० पुत्र चि० उदयसिंघ । चतुर्थ पुत्र सा. रूपा तस्यभार्या रूपलदे । पंचमपुत्र सा. तेजा तस्यभार्या तेजलदे । तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चि० वछू द्वितीयपुत्र सुलतान । षष्टमपुत्र सा. भीवा तस्यभार्या द्वे प्रथमा भावलदे द्वितीय भीवलदे । तयो पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र सा. नानिग तस्यभार्या द्वे प्रथमा नानिगदे द्वितीया नौलादे तयोः पुत्र चि० उदयसिंघ । सा. भीवा । द्वितीय पुत्र सा. हेमा तस्यभार्या हेमलदे । तृतीयपुत्र चि० भूठा चतुर्थ पुत्र चि० पूरण । एतेषांमध्ये सा. भीवा तस्यभार्या साध्वी भीवलदे तयेदं शास्त्रं सुकुमालचरित्राख्यं ज्ञानावरणी कर्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य सत्पात्राय प्रदत्तं ।

२४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

२४४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० ४१२ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२४४७. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १८१६। वे० सं० ३२। छ भण्डार।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए हैं।

२४४८. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३४। ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० सं० ३४। छ भण्डार।

विशेष—सांगानेर में सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

२४४९. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४४। ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ऽऽ। वे० सं० ८६। ञ भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त अ, क, छ, झ तथा ञ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६५, ३३, २, ३३४) और है।

२४५०. सुकुमालचरित्रभाषा—पं० नाथूलाल दोसी। पत्र सं० १४३। आ० १२३×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। र० काल सं० १६१८ सावन सुदी ७। ले० काल सं० १६३७ चैत्र सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ८०७। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी पद्य में है इसके बाद वचनिका में हैं।

२४५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ८५। ले० काल सं० १६६०। वे० सं० ८६१। क भण्डार।

२४५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल ×। वे० सं० ८६४। क भण्डार।

२४५३. सुकुमालचरित्र—हरचंद गंगवाल। पत्र सं० १५३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र० काल सं० १६१८। ले० काल सं० १६२६ कार्त्तिक सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ७२०। च भण्डार।

२४५४. प्रति सं० २। पत्र सं० १७४। ले० काल सं० १६३०। वे० सं० ७२१। च भण्डार।

२४५५. सुकुमालचरित्र········। पत्र सं० ३६। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६३३। पूर्ण। वे० सं० ८६२। क भण्डार।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। प्रथम २१ पत्रों में तत्त्वार्थसूत्र है।

२४५६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६० से ७६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६०। क भण्डार।

२४५७. सुखनिधान—कवि जगन्नाथ। पत्र सं० ५१। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल सं० १७०० आसोज सुदी १०। ले० काल सं० १७१४। पूर्ण। वे० सं० १६६। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १७१४ फाल्गुन सुदी १० मौजाबाद (मौजमाबाद) मध्ये श्री आदीश्वर चैत्यालये लिखितं पं० दामोदरेण ।

२४५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० २३६ । ज भण्डार ।

२४५९. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ६० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १७१५ । अपूर्ण । वे० सं० ८ । अ भण्डार ।

विशेष—५६ से ५८ तक पत्र नहीं हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत १७७५ वर्षे माघ शुक्लैकादश्यांसोमे पुष्करज्ञातीयेन मिश्रजयरामेणेदं सुदर्शनचरित्रं लेखक पाठकयोः शुभं भूयात् ।

२४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१५ । च भण्डार ।

२४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१६ । च भण्डार ।

२४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० ४९ । छ भण्डार ।

२४६३. सुदर्शनचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० ६९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२ । अ भण्डार ।

२४६४. प्रति सं० २ । पत्र सं ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । पत्र ५६ से ५८ तक नवीन लिखे हुए है ।

२४६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६५२ फागुण बुदी ११ । वे० सं० २२९ । ख भण्डार ।

विशेष—साह मनोरथ ने मुकुंददास से प्रतिलिपि कराई थी ।

पीछे— सं० १६२८ में असाढ बुदी ९ को पं० तुलसीदास के पठनार्थ ली गई ।

२४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३० चैत्र बुदी ९ । वे० सं० ९२ । ज भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने अपने शिष्य सेवकराम के पठनार्थ लिखाई ।

२४६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । वे० सं० ३३५ । ञ भण्डार ।

२४६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७१ । ले० काल सं० १६६० फागुन सुदी २ । वे० सं० २१६८ । ट भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

२४६६. सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि। पत्र सं० २७ से ३६। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६३। क भण्डार।

२४७०. प्रति सं० २। पत्र सं० २१८। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० ४१३। च भण्डार।

२४७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१४। च भण्डार।

२४७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १६६५ भादवा बुदी ११। वे० सं० ४८। छ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

अथ संवत्सरेति श्रीपनृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द संवत् १६६५ वर्षे भादौं बुदि ११ गुरुवासरे कृष्णपक्षे अर्गलापुरदुर्गे शुभस्थाने अश्वपतिगजपतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमत् काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री भानुकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदाम्नाये इक्ष्वाकुवंशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालंब शुभस्थाने जिनचैत्यालये आचार्यगुणकीर्त्तिना पठनार्थं लिखितं।

२४७३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १८८३ बैशाख बुदी ४। वे० सं० ३। झ भण्डार।

विशेष—चित्रकूटगढ़ मे राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल में पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भ० जिनचन्द्रदेव प्रभाचन्द्रदेव आदि शिष्यों ने प्रतिलिपि की। प्रशस्ति अपूर्ण है।

२४७४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २१३६। ट भण्डार।

२४७५. सुदर्शनचरित्र……। पत्र सं० ४ से ५६। आ० ११½×५¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६८। अ भण्डार।

२४७६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३ से ४०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८५। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नही हैं।

२४७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८५६। क भण्डार।

२४७८. सुदर्शनचरित्र……। पत्र सं० ५४। आ० १३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०। छ भण्डार।

२४७६. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द। पत्र सं० ३७। आ० ८¾×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभौम चक्रवर्त्ति का जीवन चरित्र। र० काल सं० १६८३ भादवा सुदी ५। ले० काल सं० १८५०। पूर्ण। वे० सं० ५५। छ भण्डार।

विशेष—विबुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया। पं० सवाईराम के शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी। हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है।

२४८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८४० वैशाख सुदी १ । वे० सं० १५१ । च भण्डार ।

विशेष—हेमराज पाटनी के लिये टोडराज की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२४८१. हनुमच्चरित्र—ब्र० अजित । पत्र सं० १२४ । मा० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६८२ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३० । अ भण्डार ।

विशेष—भृगुकच्छपुरी में श्री नेमिजिनालय में ग्रन्थ रचना हुई ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८२ वर्षे वैशाखमासे बाहुलपक्षे एकादश्यांतिथौ काव्यवारे । लिखापितं पंडित श्री शावल इदं शास्त्रं लिखितं जोधा लेखक ग्राम वैरागरमध्ये । ग्रन्थाग्रन्थ २००० ।

२४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६४४ चैत्र बुदी ५ । वे० सं० १४६ । अ भण्डार ।

२४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९३ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ८४८ । क भण्डार ।

२४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९२ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८४९ । क भण्डार ।

२४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८०७ ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० सं० २४३ । ख भण्डार ।

विशेष—तुलसीदास मोतीराम गंगवाल ने पंडित उदयराम के पठनार्थ कालाडेहरा (कृष्णगढ़) में प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८८२ । वे० सं० ९६ । ग भण्डार ।

२४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १५८४ । वे० सं० १३० । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति नहीं है ।

२४८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४८९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८९ । ले० काल × । वे० सं० ५० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० १०८ क । व्य भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

भट्टारक पद्मनंदि की आम्नाय में खंडेलवाल ज्ञातीय साह गोत्रोत्पन्न साधु श्री वोहीथ के वंश में होने वाली बाई सहलालदे ने सोलहकारण व्रतोद्यापन में प्रतिलिपि कराकर चढाई ।

२४६१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मंगसिर सुदी ४ । वे० सं० ३४७ । व्य भण्डार ।

विशेष—ब्र० डालू लौहशल्या सेठी गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६७४ । वे० सं० ५१२ । व्य भण्डार ।

२४६३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से १०५ । ले० काल सं० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ६, ७३, व १०३ नहीं हैं लेखक प्रशस्ति बड़ी है ।

इनके अतिरिक्त अ और ख भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १७७ तथा ४७३) और है ।

२४६४. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ९६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७८ । अ भण्डार ।

२४६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० सं० २४२ । ख भण्डार ।

२४६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८२ सावण बुदी ६ । वे० सं० ६७ । ग भण्डार ।

विशेष—साह कालूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८८३ आसोज बुदी १० । वे० सं० ६०२ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १६५६ मंगसिर बुदी १ शनिवार को सुवालालजी बंकी वालों के घड़ों पर संघीजी के मन्दिर मे यह ग्रन्थ भेंट किया गया ।

२४६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७६१ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० ६०३ । क भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम में घासीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२५००. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१ । म भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।



२५०१. हारावलि—महामहोपाध्याय ... । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × ... सं० ८५३ । क भण्डार ।

२५०२. होलीरेणुकाचरित्र—पं० जिन... पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अत: महत्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

स्वस्ति श्रीमते शांतिनाथाय । संवत् १६०८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथौ शुक्रवासरे हस्तनक्षत्रे श्री रणस्तंभदुर्गस्य शाखानगरे शेरपुरनाम्नि श्रीशांतिनाथजिनचैत्यालये श्री आलमसाह साहिआलम श्रीसल्लेमसाहराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मं० श्रीधर्मचंद्रदेवास्तदाम्नायेखंडेलवालान्वये सेठीगोत्रे सा० सोल्हू तद्भार्या फूला तत्पुत्रास्त्रयः प्र. सा. पचायण द्वि. सा. डीडा तृतीय सा. करमा । सा. पचायण भार्या वील्हा तत्पुत्र सा. दामोदर तद्भार्ये द्वे, प्र. खेमी द्वि० नौलादे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. नेमा द्वितीय सा. बोषू तृतीय सा० तेजा । सा. नेमा भार्या चतुरा । सा. बोषू भार्या सवीरा सा. डीडा भार्या गौरां तत्पुत्र सा. हेमा तद्भार्ये द्वे प्रथम थीरणि द्वितीय सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. भीखु द्वितीय सा. चतुरा तृतीय सा. भोवालु । सा. करमा भार्या टरमी तत्पुत्रौ द्वौ प्र. सा. धर्मदास द्वि० सा. जसवंत । सा. धर्मदास भार्या सिंगारदे जसवंत भार्या जसमादे तत्पुत्र चिरंजीवी ईसरदास एतेषांमध्ये जिनपूजापुरंदरेण उत्तमगुणगणालंकृतगात्रेण सा. कर्मानामध्ये येनेदंशास्त्रलिखाप्य आचार्य श्री ललितकीर्त्तेर्घटापितं दशलक्षणव्रतोद्यपनार्थं ।

२५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३९ । अ भण्डार ।

२५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १७२६ माघ सुदी ७ । वे० सं० ४५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं० रायमल्ल के द्वारा वृन्दावती (बून्दी) में स्वपठनार्थ चन्द्रप्रभु चैत्यालय में लिखी गई थी । कवि जिनदास रणथंभौरगढ के समीप नवलक्षपुर का रहने वाला था । उसने शेरपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में सं० १६०८ में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी ।

२५०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ से ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।



कथा-साहित्य

२५०६. अकलंकदेवकथा........। पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५६ । ट भण्डार ।

२५०७. अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा........। पत्र सं० ६ । आ० २२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८३४ । ट भण्डार ।

२५०८. अठारहनाते की कथा—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० ४२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १८०५ माह सुदी ५ । ले० काल सं० १८८३ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम भाग—

संवत अठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पांचा गुरुवार ।
भएय मुहुरत सुभ जोग मैं जी हो कथण कह्यो सुवीचार ॥ धन धन० ॥४६६॥
श्री चीतोड तल्हटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम ।
श्री सीध दोलती दो धणी जी हो सीध की पूरी जे हाम ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७०॥
तलहटी श्री सींगराज तो, जी हो बहुलो छय परीवार ।
बेटा बेटी पोतरा जी हो मनधन अधीक अपार ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७१॥
श्री कोठारी काम का धणी, जी हो छाजड सो नगरा सेठ ।
था रावत सुराएा एोखड दीपता जी हो भोर बाण्या हेठ ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७२॥
श्री पुन्य मग छगीडवो महा जी हो श्री विजयराज वांखांएा ।
पाट चणार आंतर जी हो गुण सागर गुण खाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥
सांभागी सीर सेहरो जी हो साग सुरी कल्याण ।
परवारा पूरो सही जी हो सकल वातां सु बीयाएा ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७४॥
श्री बीजवेगछे गीडवोघणी जी हो श्री भीम सागर सुरी पाट ।
श्री तीलक सुरंद वीर जींवज्यो जी हो सहसगुणों का थाट ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७५॥
साध सकल में सोभतो जी. हों ऋषि लालचन्द सुसीस ।
अठारा नता चोवी कवी जी हो ढाल भणी इगतीस ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७६॥

ईती श्री धर्मउपदेस आठारा नाता चरीत्र संपूर्ण समाप्ता ॥

लिखतु चेली सुवकुवर जी आरज्या जी श्री १०८ श्री श्री श्री भागाजी तत् सखणी जी श्री श्री डमरुजा श्री रामकुवर जी। श्री सेवकुवर जी श्री चंदनणाजी श्री दुल्हडी भणतां गुणतां संपूर्ण।

संवत् १८८३ वर्षे साके वर्षे मिती आसोज (काती) वदी ८ मैं दिन वार सोमरे। ग्राम संग्रामगडमध्ये संपूर्ण, चोमासो तीजो कीधो ठाणा ६।। की धो छो जदी लखीइ छ जी। श्री श्री १०८ श्री श्री मासत्या जी क प्रसाद लखेइ छ सेवुली।। श्री श्री मासत्या जी वांचवाने अरथ। आरफा जी वाचवान अरथ ठाणा।। ६।।

२५०९. अनन्तचतुर्दशी कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर। पत्र सं० १२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४२३। अ भण्डार।

२५१०. अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३। च भण्डार।

२५११. अनन्तचतुर्दशीकथा........। पत्र सं० ३। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५। झ भण्डार।

२५१२. अनन्तव्रतविधानकथा—मदनकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५८। ट भण्डार।

२५१३. अनन्तव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत पद्यों के हिन्दी अर्थ भी दिये हुये हैं।

इनके अतिरिक्त ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २) क भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ८, ६, १०, ११) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं।

२५१४. अनन्तव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७८२ सावन बुदी १। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

२५१५. अनन्तव्रतकथा........। पत्र सं० ४। आ० ७½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७। क भण्डार।

२५१६. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१८०। ट भण्डार।

२५१७. अनन्तव्रतकथा........। पत्र सं० १०। आ० ६×३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा (जैनेतर) र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ भादवा सुदी ७। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

२५१८. अनन्तव्रतकथा—खुशालचन्द। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८३७ आसोज बुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ६६६। अ भण्डार।

२५१९. अंजनचोरकथा……। पत्र सं० ६। आ० ८३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९१४। ट भण्डार।

२५२०. अषाढएकादशीमहात्म्य…… ……। पत्र सं० २। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११४९। अ भण्डार।

विशेष—यह जैनेतर ग्रन्थ है।

२५२१. अष्टांगसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्त्ति। पत्र सं० २ से ३९। आ० ७३/४×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२१। ट भण्डार।

विशेष—कुछ बीच के पत्र नही हैं। आठों अङ्गों की अलग २ कथायें हैं।

२५२२. अष्टांगोपाख्यान—पं० मेधावी। पत्र सं० २८। आ० १२१/२×५१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१८। अ भण्डार।

२५२३. अष्टाह्निकाकथा—भ० शुभचंद्र। पत्र सं० ८। आ० १०×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। अ भण्डार।

विशेष—अ भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ४८५, १०७०, १०७२) ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३) ङ भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ४१, ४२, ४३, ४४) च भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० १५, १६, १७, १८, १९, २०) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं।

२५२४. अष्टाह्निकाकथा—नथमल। पत्र सं० १८। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–कथा। र० काल सं० १९२२ फागुण सुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४२५। अ भण्डार।

विशेष—पत्रों के चारों ओर बेल बनी हुई है।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० २७, २८, २९, ७९३) ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ४) ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ४५, ४६, ४७, ४८) च भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५०९, ५१०, ५११, ५१२) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७९) और हैं।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है।

२५२५. अष्टाह्निकाकौमुदी……। पत्र सं० ५। आ० १०×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७११। ट भण्डार।

२५२६. अष्टाह्निकाव्रतकथा……। पत्र सं० ४३। आ० ९×६३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७२। छ भण्डार।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४५) की और है।

२५२७. अष्टाह्निकाव्रतकथासंग्रह—गुणचन्द्रसूरि। पत्र सं० १४। आ० ६३/४×६१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२। छ भण्डार।

२५२८. अशोकरोहिणीकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ६। आ० १०१/२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वे० सं० ३५। छ भण्डार।

२५२९. अशोकरोहिणीव्रतकथा……। पत्र सं० १८। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६। छ भण्डार।

२५३०. अशोकरोहिणीव्रतकथा……। पत्र सं० १०। आ० ८१/२×६ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। र० काल सं० १७८४ पौष बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० २८१। ञ भण्डार।

२५३१. आकाशपंचमीव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ६। आ० ११३/४×६१/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०० श्रावण सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५१। छ भण्डार।

२५३२. आकाशपंचमीकथा……। पत्र सं० ६ से २१। आ० १०×४१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५०। छ भण्डार।

२५३३. आराधनाकथाकोष……। पत्र सं० ११८ से ३१७। आ० १२×५३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७३। अ भण्डार।

विशेष—ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७) तथा ट भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २१७४) और है तथा दोनों ही अपूर्ण हैं।

२५३४. आराधनाकथाकोश……। पत्र सं० १४४। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २८६। अ भण्डार।

विशेष—८४वी कथा तक पूर्ण है। ग्रन्थकर्त्ता का निम्न परिचय दिया हैं।

श्री मूलसंघे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेति रम्ये।
श्रीकुंदकुंदाख्यमुनीद्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥५॥
देवेंद्रचंद्रार्कसम्मर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण।
अनुग्रहार्थं रचित सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः ॥६॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्चनिगद्यते सः।
मार्गेन किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोकः ॥७॥

प्रत्येक कथा के अन्त में परिचय दिया गया है।

२५३५. आराधनासारप्रबंध—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० १५६। आ० ११×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६५। ट भण्डार।

विशेष—५६ से आगे तथा बीच में भी कई पत्र नही हैं।

२५३६. आरामशोभाकथा……। पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । अ भण्डार ।

विशेष—जिन पूजाफल कथायें हैं ।

प्रारम्भ—

अन्यदा श्री महावीरस्वामी राजगृहेपुरे
समवासरदुद्याने भूयो गुण शिलाभिधे ।।१।।

सद्धर्ममूलसम्यक्त्वं नैर्मल्यकरणे सदा ।
यतध्वमिति तीर्थेशा वक्तिदेवादिपर्षदि ।।२।।

देवपूजादिश्रीराज्यसंपदं सुरसंपदं ।
निर्वाणकमलांचापि लभते नियतं जनः ।।३।।

अन्तिम पाठ—

यावद्देवी सुते राज्यं नाम्ना मलयसुंदरे ।
क्षिपामि सफलं तावत्करिष्यामि निजं जनु ।।७५।।

सूरिं नत्वा गृहे गत्वा राज्यं क्षिप्त्वा निजांगजे ।
आरामशोभयायुक्ते राजाव्रतमुपाददे ।।७६।।

अधीत सर्वसिद्धांतं संविग्नगुणसंयुतं ।
एवं संस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ।।७७।।

गीतार्थाये तथारामशोभाये गुणभूमये ।
प्रवर्त्तिनीपदं प्रादात् गुरुस्तद्गुणरंजितः ।।७८।।

संबोध्य भविकान् सूरिः कृत्वा तैरनशनं तथा ।
विपद्यद्वावपि स्वर्गसंपदं प्रापतुर्वरं ।।७९।।

ततश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुवता वरान् ।
भयान् कतिपयान् प्राप्य शाश्वतीं सिद्धिमेष्यत ।।८०।।

एवं भोस्तीर्थकृद्भक्तेः फलमाकर्ण्य सुंदरं ।
कार्यस्तत्करणोपक्षो युष्माभिः प्रमदास्सदा ।।८१।।

।। इति जिनपूजा विषये आरामशोभाकथा संपूर्ण ।।

संस्कृत पद्य संख्या २८१ है ।

२५३७. उपांगललितव्रतकथा……। पत्र सं० १४ । आ० ८½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा (जैनेतर) र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२३ । अ भण्डार ।

२५३८. ऋणसंबंधकथा—अभयचन्द्रगणि। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६२ ज्येष्ठ बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ८४०। अ भण्डार।

विशेष—आणंदरायगुरुणा सीसेण अभयचंदगणिणाय माहणचन्द्रपुत्ताणं कहाकियं ग्यारधनरसए ॥१२॥

इति रिण संबंधे छ ॥१॥

श्री श्री पं० श्री श्री आणंदविजय मुनिभिर्लेखि। श्री किहरोरमध्ये संवत् १६६२ वर्षे जेठ वदि १ दिने।

२५३९. औषधदानकथा—ब्र० नेमिदत्त। पत्र सं० ६। आ० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०८१। ट भण्डार।

विशेष—२ से ५ तक पत्र नही हैं।

२५४०. कठियारकानडरीचौपई—मानसागर। पत्र सं० १४। आ० १०×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल सं० १७४७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १००३। अ भण्डार।

विशेष—आदि भाग।

श्री गुरुभ्योनमः ढाल जंबूद्वीप मझार एहली प्रथम—
मुनिवर आर्यसुहस्तिकिण इक अवसरइ नयइ उजेणी आवियारे।
चरण करण व्रतधार गुणमणि आगर बहु परिवारे परिवस्याए ॥१॥
वन वाड़ी विश्राम लेइ तिहां रह्या दोइ मुनि नगर पठाविया ए।
थानक मांगण काज मुनिवर मान्हता भद्रानइं घरि आविया ए ॥२॥
सेठानी कहे ताम शिष्य तुम्हे केहनास्यै काजे आव्या इहां ए।
आर्यसुहस्तिना सीस अम्हे छां श्राविका उद्याने गुरु छै तिहाए ॥३॥

अन्तिम—

सत्तरै सैताले समै म. तिहां कीधो चौमास ॥ मं० ॥
सद्गुरु ना परसाद थी म. पूगी मन की आस ॥ मं० ॥
मानसागर सुख संपदा म. जति सागरगणि सीस ॥ मं० ॥
साधुतणा गुणगावतां म. पूगी मनह जगीस ॥
दिग पट कथा कोस थी म. रचीयो ए अधिकार।
अद्धि को उछो भाषीयो मं. मिछा दुकड़ कार ॥
नवमी ढाल सोहामजी मं० गौडी राग सुरंग।
मानसागर कहै सांभलो दिन दिन वधतो रंग ॥ १० ॥

इति श्री सील विषय कठीआर कानडरी चौपई संपूर्ण।

२५४१. कथाकोश—हरिषेणाचार्य । पत्र सं० ४६१ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल सं० ६८६ । ले० काल सं० १५६७ पौष सुदी १४ । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संघी पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२५४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । आ० १०×५½ इंच । ले० काल १८३३ भादवा बुदी ऽऽ । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

२५४३. कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३६ से १०६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७६७ असाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८६ तक के पत्र नहीं हैं ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७६७ का आसाढमासे कृष्णपक्षे नवम्मां शनिवारे अजमेराख्ये नगरे पातिस्याहाजी अहमदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उमेसिंहजी राज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघेसरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये कुंदकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीरत्नकीर्त्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीविद्यानंदिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनंतकीर्त्तिजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पंडित मनसारामेण व्रतकथाकोशाख्यं शास्त्रलिखापितं धर्म्मोपदेशदानार्थं ज्ञानावरणीकर्म्मक्षयार्थं मंगलभूयाच्चतुर्विधसंघानां ।

२५४४. कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ४६ से १६२ । आ० १२½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८०२ कार्त्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २२६६ । अ भण्डार ।

२५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०३ । ले० काल सं० १६७५ सावन बुदी ११ । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

इनके अतिरिक्त ङ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३४) छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६४, ६५) और हैं ।

२५४६. कथाकोश........। पत्र सं० २५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

विशेष— च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५७, ५८) ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २११७ २११८) और हैं ।

२५४७. कथाकोश........। पत्र सं० २ से ६८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । ङ भण्डार ।

२५४८. कथारत्नसागर—नारचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। लें० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२५४। अ भण्डार।

विशेष—बीच के १७ से २१ पत्र हैं।

२५४९. कथासंग्रह—ब्रह्मज्ञानसागर। पत्र सं० २५। आ० १२×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ बैशाख बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ३६८। अ भण्डार।

नाम कथा	पत्र	पद्य संख्या
[१] त्रैलोक्य तीज कथा	१ से ३	५२
[२] निसल्याष्टमी कथा	४ से ७	६४
[३] जिन रात्रिव्रत कथा	७ से १२	८६
[४] अष्टाह्निका व्रत कथा	१२ से १५	५२
[५] रक्षाबंधन कथा	१५ से १६	७६
[६] रोहिणी व्रत कथा	१६ से २३	८५
[७] आदित्यवार कथा	२३ से २५	३७

विशेष—१८५४ का बैशाखमासे कृष्णपक्षे तिथौ २ गुरुवासरे। लिख्यंतं महात्मा स्यंभुराम सवाई जयपुर मध्ये। लिखायतं चिरंजीव साहजी हरचंदजी जाति भौंसा पठनार्थं।

२५५०. कथासंग्रह……। पत्र सं० ३ से ६। आ० १०×४¾ इञ्च। भाषा–प्राकृत हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२६३। अपूर्ण। अ भण्डार।

२५५१. कथासंग्रह……। पत्र सं० ६४। आ० १२×७½ इंच। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६। क भण्डार।

विशेष—व्रत कथायें भी है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १००) और है।

२५५२. कथासंग्रह……। पत्र सं० ७८। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४४। अ भण्डार।

२५५३. प्रति सं० २। पत्र सं० ७६। ले० काल सं० १५७८। वे० सं० २३। ख भण्डार।

विशेष—३४ कथाओं का संग्रह है।

२५५४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२। ख भण्डार।
विशेष—निम्न कथायें हो हैं।

१. षोडशकारणकथा—पद्मप्रभदेव।
२. रत्नत्रयविधानकथा—रत्नकीर्त्ति।

क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७) और है।

२५५५. कयवन्नाचौपई—जिनचंद्रसूरि। पत्र सं० १५। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी (राजस्थानी)। विषय-कथा। र० काल सं० १७२१। ले० काल सं० १७६६। पूर्ण। वे० सं० २४। ख भण्डार।

विशेष—वयनविजय ने कृष्णगढ में प्रतिलिपि की थी।

२५५६. कर्मविपाक……। पत्र सं० १८। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८१६ मंगसिर बुदी १४। वे० सं० १०१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री सूर्यारुणसंवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण।

२५५७. कवलचन्द्रायणव्रतकथा……। पत्र सं० ४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०५। अ भण्डार।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४४२) और है।

२५५८. कृष्णरुक्मिणीमंगल—पदमभगत। पत्र सं० ७३। आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६०। वे० सं० ११६०। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—श्री गणेशाय नमः। श्री गुरुभ्यो नमः। अथ रुक्मणि मंगल लिखते।

याद कीयो हरि पदमयोजी, दीयो विवाण खिनाय।
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीयो हजुरी बुलाय ॥
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहां बैठा रुकमणी जादुराय।
कृपा करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय ॥
आग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि।
रुकमणि मंगल सुणै जी, ते अमरापुरि जाहि ॥
नरनारियो मंगल सुणै जी, हरिचरण चितलाय।
वै नारी इंद्र की अपछरा जी, वै नर बैंकुंठ जाय ॥
ब्याह बेल भागीरथि जी गीता सहसर नाव।
गावतो अमरापुरी जी पाव(व)न होय सब गांव ॥
बोलै राणी रुकमणि जी, सुणज्यो भगति सुजाण।
या किया रति केशो तणी जी, वेसबीर करोजी बखाण ॥
वो मंगल परगट करो जी, सत को सबद विचारि।
बीडा दीयो हरी भगत नै जी, कथीयो कृष्ण मुरारि ॥

गुरु गोविंद नै बिनवा जी, व अविनासी जी देव ।
तन मन तो आगै धरा जी, कराजी गुरां की जी सेव ।।
गुरु गोविंद बताइया जी, हरी थापै ब्रहमंड ।
गुरु गोविंद के सरनै आये, होजो कुल की लाज सब पेली ।
कृष्ण कृपा तैं काम हमारो, भणता पदम यो तेली ।।

पत्र ४० – राग सिंधु ।

ससिपाल राजा बोलियो जी सुणि जे राज कवार ।
जो जादु जुध आयसी, तो भौत बजाऊ सार ।।
ये के सार धार करु वैरखा, बाण वहै अपार ।
गोला नालि अनेक छूटै सारंग्यां री मार ।।
डाहलतणि फौजै भली पर आप सुणिज्यों राज्य कै बार ।।
भूप बतलाइयाइ जी............ ।

अन्तिम— माता करी नै प्रभुजी री आरितो ओमि दान दत होय ।
श्रवण सत गुर साभलो, दोष न लागै कोय ।।
श्रीकृष्ण को ब्याहलौ, सुणै सकल चितलाय ।
हरि पुरवै सब कामना, भगति मुकति फलदाय ।।
द्वारामति आनन्द हुवा, मुनिजन देत असीस ।
जन पिय सामलिया, सीगासणि जगदीस ।।

रुकमणि जी मंगल संपूर्ण ।।

संवत १८७० का साके १७३५ का भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां चित्राभौमनक्षत्रे द्वितीयचरणे तुलालग्नेयं समाप्तोयं ।। शुभं ।।

२५५९. **कौमुदीकथा—आचार्य धर्मकीर्ति** । पत्र सं० ३ से ३४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६६३ । अपूर्ण । वे० सं० १३२ । क भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म डूंगरसी ने लिखा । बीच के १६ से १८ तक के भी पत्र नही है ।

२५६०. **ख्याल गोपीचंदका**........ । पत्र सं० १६ । आ० ८×६३ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । झ भण्डार ।

विशेष—अंत मे और भी रागिनियों के पद दिये हुये हैं ।

२५६१. **चतुर्दशीविधानकथा**........ । पत्र सं० ११ । आ० ८×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७ । च भण्डार ।

२५६२. चंद्रकुंवर की वार्ता—प्रतापसिंह। पत्र सं० ६। आ० ११×४३/४ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८४१ भादवा। पूर्ण। वे० सं० १७१। अ भण्डार।

विशेष—६६ पद्य हैं। पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

अन्तिम—

प्रतापसिंघ चर मन बसी, कविजन सदा सुहाइ।
जुग जुग जीवों चंदकुवर, बात कही कविराय ॥ ६६ ॥

२५६३. चन्दनमलयागिरीकथा—भद्रसेन। पत्र सं० ६। आ० ११×५३/४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

प्रारम्भ— स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणमौं श्री जगदीस।
तन मन जीवन सुख करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥
वरदाइक श्रुत देवता, मति विस्तारण मात।
प्रणमौं मन धरि मोद सौं, हरै विघन संघात ॥२॥
मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार।
बंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥
कहां चन्दन कहा मलयगिरि, कहां सायर कहां नीर।
कहिये ताकी वारता, सुणो सबै वर वीर ॥४॥

अन्तिम— कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर संग।
आंसुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गंग ॥ १८६॥
दुख जु मन में सुख भयो, मागौ विरह विजोग।
आनन्द सौं च्यारौं मिले, भयो अपूरव जोग ॥ १८७॥

गाहा— कच्छवि चंदन राया, कच्छव मलयागिरिविते।
कच्छ जोहि पुण्यवल होई, दिढता संजोगो हवइ एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य हैं। ६ कलिका हैं।

२५६४. चन्दनमलयागिरिकथा—चतर। पत्र सं० १०। आ० १०१/२×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल सं० १७०१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७२। अ भण्डार।

अन्तिम ढाल—ढाल एहनी साधनुसु।

कठिन माहावरत राख ही अंत राखीहि सोइ चतर सुजाण ॥
अनुकरमइ सुख पामीयाजी, पाम्यो अमर विमाण ॥ १ ॥ गुणवंता साधनमु ॥

गुण दान सील तप भावना, ध्या रे धरम प्रधान ॥
सुघइ चित्त जे पालइ जी पासी सुख कल्याण ॥ २ ॥ गुण० ॥
सतियाना गुण गावता जी जावइ पातिग दूर ॥
भली भावना भावइ जी जाइ उपसरग दूर ॥ ३ ॥ गुण० ॥
संमत सत्रासइ इकोत्तरइ जी कीधो प्रथम अभास ॥
जे नर नारी सांभलो जी तस मन हाइ उलास ॥ ४ ॥ गुण० ॥
राखी नगर सो पावणो जी वसइ तहां सरावक लोक ॥
देव गुरा नारा गाया जी लाजइ सघला लोक ॥ ५ ॥ गुण० ॥
गुजराति गच्छ जाणीयइ जी श्री पूज्य जी जसराज ॥
आचारइ करो सोभतो जी सं........वीरज रूपराज ॥ ६ ॥ गुण० ॥
तस गछ माहि सोभता जी सोभा थिवर सुजाण ॥
मोहला जी ना जस घणा जी सीख्या बुद्धि निधान ॥ ७ ॥ गुण० ॥
वीर वचन कहइ वीरज हो तस पाटे धरमदास ॥
भाऊ थिवर वरवाणीयइ जी पंडित गुणहि निवास ॥ ८ ॥ गुण० ॥
तस सेवक इम वीनवइ जी चतर कहइ चितलाय ॥
गुणभणता गुणता भावसूजी तस मन वंछित थाय ॥ ९ ॥ गुण० ॥

॥ इति श्रीचंदनमलयागिरिचरित्रसमाप्तं ॥

२५६५. चन्दनषष्ठिकथा—ब्र० श्रुतसागर। पत्र सं० ४। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७०। क भण्डार।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति वे० सं० १६६ की और है।

२५६६. चन्दनषष्ठिकथा……। पत्र सं० २४। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८। घ भण्डार।

विशेष—अन्य कथायें भी हैं।

२५६७. चन्दनषष्ठिव्रतकथाभाषा—खुशालचंद काला। पत्र सं० ६। आ० ११×४½ इंच। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६९। क भण्डार।

२५६८. चंद्रहंसकी कथा—टीकम। पत्र स० ७०। आ० ९×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १७०८। ले० काल सं० १९३३। पूर्ण। वे० सं० २०। घ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त सिन्दूरप्रकरण एकीभाव स्तोत्र आदि और हैं।

२५६९. चारमित्रों की कथा—अजयराज। पत्र सं० ५। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३। ले० काल सं० १७३३। पूर्ण। वे० सं० ५५३। च भण्डार।

२५७०. चित्रसेनकथा……। पत्र सं० १८। आ० १२×५१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८२१ पौष बुदी २। पूर्ण। वे० सं० २२। ञ भण्डार।

विशेष—श्लोक संख्या ४६५।

२५७१. चौआराधनाउद्योतककथा—जोधराज। पत्र सं० ६२। आ० १२१/२×७३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६४६ मंगसिर सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० २२। घ भण्डार।

विशेष—सं० १८०१ की प्रति से लिखी गई है। जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी।

सं० १८०१ चाकसू" इतना और लिखा है। मूल्य– ५) ≋) ॥) इस तरह कुल ५॥≡ लिखा है।

२५७२. जयकुमारसुलोचनाकथा……। पत्र सं० १६। आ० ७×८१/२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६। छ भण्डार।

२५७३. जिनगुणसंपत्तिकथा……। पत्र सं० ४। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७८५ चैत्र बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ३११। ञ भण्डार।

विशेष—क भण्डार में (वे० सं० १८८) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर में मांगीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

२५७४. जीवजीतसंहार—जैतराम। पत्र सं० ५। आ० १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७७६। अ भण्डार।

विशेष—इसमें कवि ने मोह और चेतन के संग्राम का कथा के रूप मे वर्णन किया है।

२५७५. ज्येष्ठजिनवरकथा……। पत्र सं० ४। आ० १३×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४८३। ञ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में (वे० सं० ४८४) की एक प्रति और है।

२५७६. ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्त्ति। पत्र सं० ११ से १४। आ० १२×५३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७३७ आसोज बुदी ४। अपूर्ण। वे० सं० २०८०। अ भण्डार।

विशेष—जसकीर्त्ति देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे।

२५७७. ढोलामारुवणी चौपई—कुशललाभगणि। पत्र सं० २८। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (राजस्थानी)। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३८। क भण्डार।

२५७८. ढोलामारुणीकीबात····। पत्र सं० २ से ७७। ग्रा० ६×८¾ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०० ग्राषाढ सुदी ८। ग्रपूर्ण। वे० सं० १५६१। ट भण्डार।

विशेष—१, ४, ५ तथा ६ठा पत्र नहीं है।

हिन्दी गद्य तथा दोहे हैं। कुल ६८८ दोहे है जिनमे ढोलामारू की बात तथा राजा नल की विपत्ति ग्रादि का वर्णन है। ग्रन्तिम भाग इस प्रकार है—

मारूजी पीहरनै कागद लिखि प्रोहित नै सीख दीनी। ई भाति नरवल को राज करै छै। मारूजी की कूंख कंवर लिछमण स्यंघ जी हुवा। मालवण की कूंखि कंवर वीरभाण जी हुवा। दोय कंवर ढोला जी क हुवा। ढोला जी की मारूजी को श्री महादेव जी की किरपा सु ग्रमर जोड़ी हुई। लिछमण स्यंघ जी कंवर सुं ग्रौलाद कुछाहा की चाली। ढोला सूं राजा रामस्यंघ जी ताई पीढी एक सौदस हुई। राजाधिराज महाराजा श्री सवाई ईसरीसिंहजी तांडी पीढी एक सौ चार हुई॥

इति श्री ढोलामारूजी वा राजा नल का विथा की वारता संपूरण। मिती साढ सुदी ८ बुधवार सं० १६०० का लिछमणराम चांदवाड की पोथी सु उतार लिखितं·········रामगंज में··· ·········।

पत्र ७७ पर कुछ शृंगार रस के कवित्त तथा दोहे हैं। बुधराम तथा रामचरण के कवित्त एवं गिरधर की कुंडलियां भी हैं।

२५७९. ढोलामारुणी की बात·········। पत्र सं० ६। ग्रा० ८½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० १५६०। ट भण्डार।

विशेष—५२ पद्य तक गद्य तथा पद्य मिश्रित है। बीच बीच मे दोहे भी दिये गये है।

२५८०. णमोकारमंत्रकथा··· ·····। पत्र सं० ४२ से ७१। ग्रा० १२½×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० सं० २३७। छ भण्डार।

विशेष—णमोकार मन्त्र के प्रभाव की कथाये हैं।

२५८१. त्रिकालचौबीसीकथा (रोटतीजकथा)—पं० ग्रभ्रदेव। पत्र सं० २। ग्रा० ११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८२२। पूर्ण। वे० सं० २६६। ग्र भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३०८) की ग्रौर है।

२५८२. त्रिकालचौबीसी (रोटतीज) कथा—गुणनन्दि। पत्र सं० २। ग्रा० १०½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वे० सं० ४८२। ग्र भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३३७) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २५४) क भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६६२, ६६३, ६६४) और हैं।

२५८३. त्रिलोकसारकथा……। पत्र सं० १२। आ० १०३×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १६२७। ले० काल सं० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ३८७। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

सं० १८५० शाके १७१५ मिती ज्येष्ठ शुक्ला ७ रविदिने लिखायितं पं० जी श्री भागचन्दजी साल कोटै पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजो चेलान लेबा। दक्षण्याकैर उं भाई कै राडि हुई सूबादार तकूजी भाग्यो राजा जी की फते हुई। लिखितं गुरुजी मेघराज नगरमध्ये।

२५८४. दत्तात्रय……। पत्र सं० ३६। आ० ११३×६३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० र० काल ×। ले० काल सं० १६१५। पूर्ण। वे० सं० ३४१। ज भण्डार।

२५८५. दर्शनकथा—भारामल्ल। पत्र सं० २३। आ० १२×७३ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६८१। अ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४१४) क भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २६३) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३६) च भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ५८६) तथा ज भण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० २६५, २६६, २६७) और हैं।

२५८६. दर्शनकथाकोश……। पत्र सं० २२ से ६०। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८। छ भण्डार।

२५८७. दशमूर्खोंकी कथा……। पत्र सं० ३६। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७४६। पूर्ण। वे० सं० २६०। क भण्डार।

२५८८. दशलक्षणकथा—लोकसेन। पत्र सं० १२। आ० ६३×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६०। पूर्ण। वे० सं० ३५०। अ भण्डार।

विशेष–घ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ३७, ३८) और हैं।

२५८९. दशलक्षणकथा……। पत्र सं० ५। आ० ११×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१३। अ भण्डार।

विशेष—ङ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०२) की और है।

२५९०. दशलक्षणव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०७। अ भण्डार।

२५६१. दानकथा—भारामल्ल । पत्र सं० १८ । आ० ११३/४×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६७६) क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०४) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३०४) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८०) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २६८) और है ।

२५६२. दानशीलतपभावनाका चोढाल्या—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २१७६) की और है । जिस पर केवल दान शील तप भावना ही दिया है ।

२५६३. देवराजवच्छराज चौपई—सोमदेवसूरि । पत्र सं० २३ । आ० ११×५१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । ङ भण्डार ।

२५६४. देवलोकनकथा…… । पत्र सं० २ से ५ । आ० १२×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ कार्तिक सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० १६६१ । अ भण्डार ।

२५६५. द्वादशव्रतकथा—पं० अभ्रदेव । पत्र सं० ७ । आ० ६×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२५ । क भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७३ एक ही वेष्टन) और हैं ।

२५६६. द्वादशव्रतकथासंग्रह—ब्रह्मचन्द्रसागर । पत्र सं० २२ । आ० १२×६१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न कथायें और हैं ।

मौन एकादशीकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।
श्रुतस्कंधव्रतकथा— " " "
कोकिलापंचमीकथा— ब्र० हर्षा " हिन्दी र० काल सं० १७३६
जिनगुणसंपत्तिकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।
रात्रिभोजनकथा— — " "

२५६७ द्वादशव्रतकथा……। पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०० । अ भण्डार ।

विशेष—पं० अभ्रदेव की रचना के आधार पर इसकी रचना की गई है ।

अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १७२, ४३६ तथा ४४०) और हैं।

२५९८. धनदत्त सेठ की कथा……। पत्र सं० १४ । आ० १२३/४×७१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १७२५ । ले० काल × । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२५९९. धन्नाकथानक……। पत्र सं० ६ । आ० १११/२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । घ भण्डार ।

२६००. धन्नासालिभद्रचौपई……। पत्र सं० २४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र हैं। २४ से आगे के पत्र नही हैं । प्रति अधिक प्राचीन नही है ।

२६०१. धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द । पत्र सं० ३७ । आ० ११३/४×४१/२ इञ्च । विषय–कथा । भाषा–हिन्दी पद्य । र० काल सं० १७३६ । ले० काल सं० १८३० भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ९० । ख भण्डार ।

विशेष—खरतरगच्छपति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजैराजगणि ने यह ढाल कही है । (पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२६०२. धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा……। पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ । पूर्ण । वे० सं० ९१ । ख भण्डार ।

२६०३. धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—वृन्दावन । पत्र सं० २४ । आ० ११×५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १८०७ । ले० काल सं० १९२७ सावण बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३३९ । क भण्डार ।

नंदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९२ ।

विशेष—सांगानेर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) सं० १७८२ की लिखी हुई और है ।

२६०५. नंदीश्वरविधानकथा—हरिषेण । पत्र सं० १३ । आ० ११३/४×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९५ । क भण्डार ।

२६०६. नंदीश्वरविधानकथा……। पत्र सं० ३ । आ० १०१/२×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७३ । ट भण्डार ।

२६०७. नागमंता……। पत्र सं० १० । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा–हिन्दी (राजस्थानी) । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९३ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

श्री नागमंता लिख्यते—

नगर हीरापुर पाटण भणीयइ, माहि हर केशरदेव।
नमणि करइ वर नांम लेई नइं, करइ तुम्हारी सेव ॥१॥
करइ तुम्हारी सेवनइं, वसिगराइ तेडावीया।
काल कंकोडनइं तित्यगिक्तंयर, अवर वेग बोलावीया ॥२॥
नाद वेद आणंद अधिका, करइ तुम्हारी सेव।
नगर हीरापुर पाटण भणीयइ, माहि हर केशरदेव ॥३॥
राउ देहरासर बइठउ, आणे निरमल नीर।
डंक गयउ भागीरथी, समुद्रइ पइलइ तीर ॥४॥
नीर लेई डंक मोकल्यउ लागी अति घणवार।
आपं सवारथ पडीउ लोभइ, समुद्रइं पइलेपार ॥५॥
सहस्र अठ्यासी जिहां देवता, जाई तिणवनि पइठउ।
गंगा तणउ प्रवाह जु आयउ, राउ देहरा सरवइ छउ ॥६॥
राम मोकल्या छे वाडीये, आणे सुर ही जाइ।
आणे सुरही पातरी, आणे सुरहीं भाइ ॥७॥
आणे सुरही भाइ नइ, आणे सुगंधी पातरी।
आकतुल छीनइ पाषची, करि कण वीर सुरातडी ॥८॥
जाइ बेउल करणउ, केवडो राइ मच कुंद जु सारी।
पुप्फ करंडक भरीनइ, आयो राइमो कल्याणइ बाडी ॥९॥

अंतिम—

एक कामिणि अवर बाली, विछोही भरतार।
डंक तणइ शिर बरसही, ताल्हण अमी संचारि ॥
ताल्हण अमीय संचारि, मुझ प्रिय मरइ अपूटइ।
बाजि लहरि विष संधालिउ, ताल्ह धवल नइं ऊठइ
रुदन करइ मुख धाह हउं सु सनेहा टाली।
विछोही भरतार एक कामिणि अर बाली ॥३॥
डाकसुंडा कल बाजही, बहु कांसी झमकार।

चंद्र रोहिणी जिम मिलिउं, तिम धण मिली भरतार नइ ।।
तित्थ गिरांणउ तूठउ बोलइ, ग्रमीयविष गयउ छंडी ।
डंक तणइ शिर बूठउ, उठिउ नाह हुई मन संती ।।
मूंध मंगलक छाजइ,........................ ।
बहु कांसी झमकार डाक छंडा कल वाजइ ।।
इति श्री नागमंता संपूर्णम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोथी ग्रा० मेरुकीर्त्ति जी की ।। कथा के रूप में है । प्रति ग्रशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८. नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० १६ । ग्रा० ११३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३६७) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०८) की ग्रौर है ।

ज भण्डार वाली प्रति की गरूडमलजी गोधा ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

२६०९. नागश्रीकथा—किशनसिंह । पत्र सं० २७५ । ग्रा० ७३/४×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १७७३ सावरण सुदी ६ । ले० काल सं० १७८५ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । क भण्डार ।

विशेष—जोबनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से ग्रागे भद्रबाहु चरित्र हिन्दी में है किन्तु ग्रपूर्ण है ।

२६१०. निःशल्याष्टमीकथा........। पत्र सं० १ । ग्रा० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २११७ । ग्र भण्डार ।

२६११. निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० ४० मे ५५ । ग्रा० ८३/४×६१/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०८७ । ग्र भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ९८) की ग्रौर है जिसकी कि सं० १८०१ में महाराजा ईश्वर सिंहजी के शासनकाल में जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२. निशिभोजनकथा........। पत्र सं० २१ । ग्रा० १२×५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३. नेमिब्याहलो........। पत्र सं० ३ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० २२५५ । ग्र भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नरसरीपुरी राजियाहु समदविजय राय धारो।
तस नंदन श्री नेमजी हुं सावल वरण सरीरो ॥
धन धन प्रदे छी ज्यो तेव राजसदरसण करता।
वालदरनासे जीनमो सो सोरजी हु हुतो ॥
समदवजजी रो नंद प्रतेरो ले प्रावण जी।
हुतो सावली हुं श्री रो नमे कल्याण सु पावणो जी ॥

प्रति अशुद्ध एवं जीर्ण है।

२६१४. नेमिराजलब्याहलो—गोपीकृष्ण। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १८६३ प्र० सावरण बुदी ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२५०। अ भण्डार।

प्रारम्भ—

श्री जिरण चरण कमल नमो नमो अरणगार।
नेमनाथ र ढाल तरणे व्याहव थहुं सुखदाय ॥
द्वारामती नगरी भली सोरठ देस मझार।
इन्द्रपुरी सी ऊपमा सुंदर बहु विस्तार ॥
चौडा नो जोजरण तिहां लाबा वारा जारण।
साठि कोठि घर मांहि रे बाहर थहत्तर प्रमारण ॥२॥

अन्तिम—

राजल नेम तणो व्याहलो जी गावसी जो नरनारी।
भरण गुरण सुरणसी भलो जी पावसी सुख अपार ॥

कलश—

प्रथम सावरण चोथ सुकली वार मंगलवार ए।
संवत् अठारा वरस तरेसठि मांग खुल मुझार ए।
श्री नेम राजल क्रसन गोपी तास चरत बखानइ।
सुतार सीखा ताहि ताहि भाखी कही कथा प्रमारण ए ॥

इति श्री नेम राजल बिवाहलो संपूर्ण।

इसमे आगे नव भव की ढाल दी है वह अपूर्ण है।

२६१५. पंचाख्यान—विष्णु शर्मा। पत्र सं० १। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००६। अ भण्डार।

विशेष—केवल ६३वां पत्र है। ङ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ४०१) अपूर्ण और है।

२६१६. परसरामकथा……। पत्र सं० ६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०१७। अ भण्डार।

२६१७ पल्यविधानकथा—खुशालचन्द। पत्र सं० २१। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल सं० १७८७ फागुन बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २०। झ भण्डार।

२६१८. पल्यविधानव्रतोपाख्यानकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ११७। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५४। क भण्डार।

विशेष—ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ८३) जिसका ले० काल सं० १६१७ शाके है और है।

२६१९. पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त। पत्र सं० ५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७८। अ भण्डार।

विशेष—आमेर मे पं० मनोहरलालजी पाटनी ने लिखी थी।

२६२०. पुण्याश्रवकथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र। पत्र सं० २००। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४६८। क भण्डार।

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४६७) तथा छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६, ७०) और है किन्तु तीनो ही अपूर्ण है।

२६२१. पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम। पत्र सं० २४८। आ० ११½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र० काल सं० १७७७ भादवा सुदी ५। ले० काल सं० १७८८ मंगसिर बुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ३७०। अ भण्डार।

विशेष—अहमदाबाद में श्री अभयसेन ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४३३, ४०६, ८६५, ८६६, ८६७) तथा क भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९) तथा च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६३५) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७७) ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३) झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६८) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९४९) और है।

२६२२. पुण्याश्रवकथाकोश……। पत्र सं० ९४। आ० १६×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ५८। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द के पुत्र सोनपाल से कराकर चौधरियों के मंदिर में चढाई।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६२) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६०) [अपूर्ण] और हैं।

२६२३. पुण्याश्रवकथाकोश—टेकचन्द । पत्र सं० ३४१ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १६२८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

२६२४. पुण्याश्रवकथाकोश की सूची……। पत्र सं० ४ । आ० ६¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । ञ भण्डार ।

२६२५. पुष्पांजलीव्रतकथा—श्रुतकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५६) और है ।

२६२६. पुष्पांजलीव्रतकथा—जिनदास । पत्र सं० ३१ । आ० १०½×८½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६७७ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४७८ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति बागड देश स्थित घाटसल नगर मे श्री वासुपूज्य चैत्यालय मे ब्रह्म ठाकरसी के शिष्य गणदास ने लिखी थी ।

२६२७. पुष्पांजलीव्रतविधानकथा……। पत्र सं० ६ से १० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । च भण्डार ।

२६२८. पुष्पांजलीव्रतकथा—खुशालचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १२×५¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६४२ कार्त्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०६) की और है जिसे महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६२९. बैतालपच्चीसी……। पत्र सं० ५५ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५० । च भण्डार ।

२६३०. भक्तामरस्तोत्रकथा—नथमल । पत्र सं० ८६ । आ० १०¾×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १८२६ । ले० काल सं० १८५६ फाल्गुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २५५ । छ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७३१) और है ।

२६३१. भक्तामरस्तोत्रकथा—विनोदीलाल । पत्र सं० १५७ । आ० १२¾×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १७४७ सावन सुदी २ । ले० काल स० १६४६ । अपूर्ण । वे० सं० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच का केवल एक पत्र कम है ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५५३, ५५४) छ भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १८१, २२८) तथा झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १२६) की और है ।

२६३२. भक्तामरस्तोत्रकथा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १२८। आ० १३×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १९३१ फागुण सुदी ४। ले० काल सं० १९३८। पूर्ण। वे० सं० ५४०। क भण्डार।

२६३३. भोजप्रबन्ध……। पत्र सं० १२ से २५। आ० ११½×४¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२५६। अ भण्डार।

विशेष—ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७६) की और है।

२६३४. मधुकैटभवध (महिषासुरवध)……। पत्र सं० २३। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३५३। अ भण्डार।

२६३५. मधुमालतीकथा—चतुर्भु जदास। पत्र सं० ४८। आ० ९×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२८ फागुण बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ५८०। ङ भण्डार।

विशेष—पद्य सं० ९२८। सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी। अन्त के ५ पत्रों मे स्तुति दी हुई है। इसी भण्डार मे १ प्रति [अपूर्ण] (वे० सं० ५८१) तथा १ प्रति (वे० सं० ५८२) की [पूर्ण] और हैं।

२६३६. मृगापुत्रचउढाला……। पत्र सं० १। आ० ९¾×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३७। अ भण्डार।

विशेष—मृगारानी के पुत्र का चौढाला है।

२६३७. माधवानलकथा—आनन्द। पत्र सं० २ से १०। आ० ११×४¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८०९। ट भण्डार।

२६३८. मानतुंगमानवतिचौपई—मोहनविजय। पत्र सं० २६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५१ कार्त्तिक सुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ५३। छ भण्डार।

विशेष—आदि अंतभाग निम्न प्रकार है–

आदि—

ऋषभ जिणंद पदांबुजे, मधुकर करी लीन।
आगम गुण सोइसवर, अति आरद थी लीन ॥१॥

यान पान सम जिनकम, तारण भवनिधि तोय।
आप तर्या तारे अवर, नेहनै प्रणमति होइ ॥२॥

भावै प्रणमुं भारती, वरदाता सुविलास।
बावन अख्यर की भरयौ, अखय खजानो जास ॥३॥

शुक्र करया केई शनि थका, एह् बीजे हनी शक्ति ।
किम मूंकाइं तेहना, पद नीको विषे भक्ति ।।४।

अन्तिम— पूर्ण काय मुनीचद्र सुप वर्ष, बुद्धि मास शुचि पक्षे है । (आगे पत्र फटा हुआ है) ४७ ढाल हैं ।

२६३९. **मुक्तावलिव्रतकथा—श्रुतसागर** । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ पौष बुदो ५ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—यति दयाचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२६४०. **मुक्तावलिव्रतकथा—सोमप्रभ** । पत्र सं० ११ । आ० १०३/४×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ सावन सुदी २ । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में नेमिनाथ चैत्यालय मे कानूलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२६४१ **मुक्तावलिविधानकथा**........। पत्र सं० ६ से ११ । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १५४१ फाल्गुन सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १९९८ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५४१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदाकुंदाचार्यान्वये भट्टारिक श्रीपद्मनंदिदेव। तत्पट्टे भट्टारिक श्रीशुभचंद्रदेवा तत्सिष्य मुनि जिनचन्द्रदेवा खंडेलवालान्वये भावसागोत्रे संघवी खेता भार्या होली तत्पुत्राः संघवी चाहड, आसल, कालू, जालप, लखमण तेषां मध्ये संघवी कालू भार्या कौलसिरी तत्पुत्रा हेमराज रिषभदास तैने रौ साह हेमराज भार्या हिमसिरी एतं रिदं रोहिणीमुक्तावलीकथानकं लिखापतं ।

२६४२. **मेघमालाव्रतोद्यापनकथा**..... । पत्र सं० ११ । आ० १२×६३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । घ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७९) और है ।

२६४३. **मेघमालाव्रतकथा**...... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०९ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४) की और है ।

२६४४. **मेघमालाव्रतकथा—खुशालचंद** । पत्र सं० ५ । आ० १०१/२×४१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८१ । क भण्डार ।

२६४५. **मौनिव्रतकथा—गुणभद्र** । पत्र सं० ५ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४१ । अ भण्डार ।

२६४६. मौनिव्रतकथा........। पत्र सं० १२। आ० ११३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८२। घ भण्डार।

२६४७. यमपालमातंगकीकथा........। पत्र सं० २६। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५१। छ भण्डार।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ६ तक पद्मरथ राजा दृष्टांत कथा तथा पत्र १० से १६ तक पंच नमस्कार कथा दी हुई है। कही २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है। कथायें कथाकोश मे से ली गई हैं।

२६४८. रक्षाबंधनकथा—नाथूराम। पत्र सं० १२। आ० १२३/४×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६१। अ भण्डार।

२६४६. रक्षाबन्धनकथा........। पत्र सं० १। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स १८३५ सावन सुदी २। वे० सं० ७३। छ भण्डार।

२६५०. रत्नत्रयगुणकथा—पं० शिवजीलाल। पत्र सं० १०। आ० ११३/४×५१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७२। अ भण्डार।

विशेष—ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५७) और है।

२६५१. रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ४। आ० ११३/४×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०४ श्रावण बुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ६५२। क भण्डार।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७३) और है।

२६५२. रत्नावलिव्रतकथा—जोशी रामदास। पत्र सं० ४। आ० ११×४१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६६। पूर्ण। वे० सं० ६३४। क भण्डार।

२६५३. रविव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० १८। आ० ६३/४×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६। ज भण्डार।

२६५४. रविव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० १८। आ० ६×३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४०। छ भण्डार।

२६५५. रविव्रतकथा—भाऊकवि। पत्र सं० १०। आ० ६३/४×६३/४ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६५। पूर्ण। वे० सं० ६६०। अ भण्डार।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४), ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४१), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११३) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७५०) और हैं।

२६५६. राठौडरतनमहेशदशोत्तरी ·· ····। पत्र सं० ३ से ८। आ० ६½×४ इंच। भाषा-हिन्दी [राजस्थानी] विषय-कथा। र० काल सं० १५१३ वैशाख शुक्ला ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

दाहा—

सावित्रीउमया श्रीया आगै साम्ही आई।
सुंदर सोचनै, इंदिर लइ बधाइ ॥१॥

हूया अवलि मंगल हरष वधीया नेह नवल।
सूर रतन सतीयां सरीस, मिलीया जाइ महल्ल ॥२॥

औ सुरनर फुरउधरे, वैकुंठ कीधावास।
राजा रयणायरतणी, जुग अविचल जस वास ॥३॥

पख वैशाखह तिथि नवमी पनरोतरै वरस्स।
वार शुकल डोयाविहद, हींदू तुरक वहस्स ॥४॥

जोडि भणै खिडीयौ जगै, रासो रतन रसाल।
सूरा पूरा संभलउ, भउ मोटा भूपाल ॥५॥

दिली राउ वाका उजेणी रासा का च्यार तुगर हिसी कपि बात कैसी॥ इति श्री राठोडरतन महेस दासौत्तसरी वचनिका संपूर्ण।

२६५७. रात्रिभोजनकथा—भारामल्ल। पत्र सं० ८। आ० ११½×८ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१५। अ भण्डार।

२६५८. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० स० ६०९। च भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम निशिभोजन कथा भी है।

२६५९. रात्रिभोजनकथा—किशनसिंह। पत्र सं० २४। आ० १३×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल सं० १७७३ श्रावण सुदी ६। ले० काल सं० १९२८ भादवा बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ६३५। क भण्डार।

विशेष—ग भण्डार में १ प्रति और है जिसका ले० काल सं० १८८३ है। कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

२६६०. रात्रिभोजनकथा········। पत्र सं० ४। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २९९। ख भण्डार।

विशेष—अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९१) और है।

२६६१. रात्रिभोजनचौपई……। पत्र सं० २। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३१। अ भण्डार।

२६६२. रूपसेनचरित्र……। पत्र सं० १७। आ० १०×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६०। क भण्डार।

२६६३. रैदव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१२। अ भण्डार।

२६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

विशेष—लश्कर (जयपुर) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८५७) तथा क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६१) की और हैं।

२६६५. रैदव्रतकथा……। पत्र सं० ४। आ० ११×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६३६। क भण्डार।

विशेष—व्य भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३६५) की है जिसका ले० काल सं० १७८५ आसोज सुदी ४ है।

२६६६. रोहिणीव्रतकथा—आचार्य भानुकीर्त्ति। पत्र सं० १। आ० ११३×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८८ जेठ सुदी ६। वे० सं० ६०८। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६७) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १७२) और है।

२६६७. रोहिणीव्रतकथा……। पत्र सं० २। आ० ११×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६२। अ भण्डार।

विशेष—क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६६७) तथा झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६५) जिसका ले० काल सं० १६१७ बैशाख सुदी ३ और हैं।

२६६८. लब्धिविधानकथा—पं० अभ्रदेव। पत्र सं० ६। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०७ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ३१७। व भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति का संक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भादवा सुदी १४ सोमवासरे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महाराज

श्रीरामचंद्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये...... मंडलाचार्य धर्मचन्द्राम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सा. पद्मा तद्भार्या केलमदे.......... सा. कालू इदं कथा......... मंडलाचार्य धर्मचन्द्राय दत्तं।

२६६९. रोहिणीविधानकथा.......। पत्र सं० ८। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०९। ख भण्डार।

२६७०. लोकप्रत्याख्यानधंमिलकथा.....। पत्र सं० ७। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। ले० काल ×। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५०। अ भण्डार।

विशेष—श्लोक सं० २४३ हैं। प्रति प्राचीन है।

२६७१. वारिषेणमुनिकथा—जोधराजगोदीका। पत्र सं० ५। आ० ६×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६६। पूर्ण। वे० सं० ६७४। क भण्डार।

विशेष—चूहामल बिलाला ने प्रतिलिपि की गयी थी।

२६७२. विक्रमचौबोलीचौपई—अभयचन्दसूरि। पत्र सं० १३। आ० ६×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी १०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६२१। ट भण्डार।

विशेष—मतिसुन्दर के लिए ग्रन्थ की रचना की थी।

२६७३. विष्णुकुमारमुनिकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१०। अ भण्डार।

२६७४. विष्णुकुमारमुनिकथा.......। पत्र सं० ५। आ० १०×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७५। ख भण्डार।

२६७५. वैदरभीविवाह—पेमराज। पत्र सं० ६। आ० १०×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२५४। अ भण्डार।

विशेष—आदि अन्तभाग निम्न प्रकार है—

दोहा—

जिण धरम माही दीपता करो धरम सुरंग।
सो राधा राजा राणेह ढाल भवहु रंग ॥१॥
रंग विणरत्य न भावसी किवता करो विचार।
पढता सवि सुख संपजे हुरस भान हानइ भाव ॥
सुख मामणे हो रंग महल ने निस भार पोढी सेजजी।
दोष भनता उफण्या आलेनवार विछोराछ मेहजी ॥

अन्तिम— कवनाथ सुजाण छै वैदरभी वैत्वार।
सुख अनंता भोगिया वेले हुवा अणगार ॥
दान देई श्राक्ति लीयो होता तो जय जयकार।
पेमराज गुरु इम भणी, मुकत गया तत्काल ॥
भणे गुणे जे सांभली वैदरभी तणो विवाह।
भएण तास ते सुख संपजे पहुत्या मुकत मझार।
इति वैदरभी विवाह संपूर्ण ॥

ग्रन्थ जीर्ण है। इसमें काफी ढालें लिखी हुई हैं।

२६७६. व्रतकथाकोश—श्रुतसागर। पत्र सं० ७६। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८७८। अ भण्डार।

२६७७. प्रति सं० २। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १६४७ कार्तिक सुदी ३। वे० सं० ६७। छ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कार्तिक सुदि ३ बुधवारे इदं पुस्तकं लिखायितं श्रीमद्काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीसोमकीर्त्ति तत्पट्टे भ० यशःकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीउदयसेन तत्पट्टोधारणधीर भ० श्रीत्रिभुवनकीर्त्ति तत्शिष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इदं पुस्तिका लिखापितं खंडेलवालज्ञातीय कासलीवाल गोत्रे साह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ वृहद पुत्र जीनो भार्या जमनादे। द्वि० पुत्र लोबसी तस्य भार्या लोनलदे तृ० पुत्र इसर तस्य भार्या अहंकारदे, चतुर्थ पुत्र नानू तस्य भार्या नायकदे, पंचम पुत्र साह वाला तस्य भार्या वालमदे, षष्ठ पुत्र लाला तस्य भार्या ललतादे, तेषामध्ये साह वालेन इदं पुस्तकं कथाकोशनामधेयं ब्रह्म श्री नर्वदायै ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं लिखाप्य प्रदत्तं। लेखक लषमन श्वेतांबर।

संवत् १७४१ वर्षे माहा सुदि ५ सोमवासरे भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री ३ जयकीर्त्ति पं० दीपचंद पं० मयाचंद युक्तै।

२६७८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७३ से १२६। ले० काल १५८६ कार्तिक सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

२६७९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १७६५ फागुण बुदी ६। वे० सं० ६३। छ भण्डार।

इनके अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६७५, ६७६) ङ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६८८) तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०७३, २१००) और हैं।

२६८०. व्रतकथाकोश—पं० दामोदर। पत्र सं० ६। आ० १२×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७३। क भण्डार।

२६८१. व्रतकथाकोश—सकलकीर्त्ति। पत्र सं० १६४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८७९। अ भण्डार।

विशेष—छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७२) की और है जिसका ले० काल सं० १८६६ सावन बुदी ५ है। श्वेताम्बर पृथ्वीराज ने उदयपुर में जिसकी प्रतिलिपि की थी।

२६८२. व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ८६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८७७। अ भण्डार।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नहीं हैं। कुछ कथायें पं० दामोदर की भी हैं। क भण्डार में १ अपूर्ण प्रति (वे० सं० ६७४) और है।

२६८३. व्रतकथाकोश……। पत्र सं० ३ से १०० । आ० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत अपभ्रंश। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०९ फागुण बुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० ८७६। अ भण्डार।

विशेष—बीच के २२ से २५ तथा ६५ से ६६ तक के भी पत्र नही है। निम्न कथाओं का संग्रह है—

१. पुष्पांजलिविधान कथा ……। संस्कृत पत्र ३ से ५

२. श्रवणद्वादशीकथा—चन्द्रभूषण के शिष्य पं० अभ्रदेव „ „ ५ से ८

अन्तिम—चंद्रभूषणशिष्येण कथेयं पापहारिणी।
सस्कृता पंडिताभ्रेण कृता प्राकृत सूत्रतः ॥

३.	रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्त्ति	….	संस्कृत गद्य पत्र		८ से ११
४.	षोडशकारणकथा—पं० अभ्रदेव	….	„ पद्य	„	११ से १४
५.	जिनरात्रिविधानकथा……। २९३ पद्य हैं।	….	„	„	१४ से २६
६.	मेघमालाव्रतकथा ……।	….	„ गद्य	„	२६ से ३१
७.	दशलाक्षणिककथा—लोकसेन।	….	„ „	„	३१ से ३५
८.	सुगंधदशमीव्रतकथा……।	….	„ „	„	३५ से ४०
९.	त्रिकालचउवीसीकथा—अभ्रदेव।	….	„ पद्य	„	४० से ४३
१०.	रत्नत्रयविधि—आशाधर	….	„ गद्य	„	४३ से ५१

प्रारम्भ— श्रीवर्द्धमानमानस्य गौतमादींश्वसद्गुरून्।
रत्नत्रयविधिं वक्ष्ये यथाम्नायविशुद्धये ॥१॥

अन्तिम प्रशस्ति— साधो मंडितवामवंशसुगणेः सज्जैनचूडामणेः।
मालाख्यस्यसुतः प्रतीतमहिमा श्रीनागदेवोऽभवत् ॥१॥

यः शुक्लादिपदेषु मालवपतेः शात्रातियुक्तं शिवं । ल्व्हा
श्रीसल्लक्षणयास्वमाश्रितवसः का प्रापयन्नः श्रियं ॥२॥

श्रीमत्केशवसेनार्यवर्यवाक्यादुपेयुषा ।
पाक्षिकश्रावकीभावं तेन मालवमंडले ॥

सल्लक्षणपुरे तिष्ठन् गृहस्थाचार्यकुंजरः ।
पंडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्तः सम्यगेकदा ॥३॥

प्रायेण राजकार्येऽवरुद्धधर्माश्रितस्य मे । र्घ
भाद्रं किंचिदनुष्ठेयं व्रतमादिश्यतामिति ॥४॥

ततस्तेन समीक्ष्यो वै परमागमविस्तरं ।
उपदिष्टसतामिष्टस्तस्यायं विधिसत्तमः ॥५॥ दिष्टः

तेनान्यैश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्ठितः ।
ग्रंथो बुधाशाधारेण सद्धर्मार्थमथो कृतः ॥६॥ र्थ

८३ १२
विक्रमार्कव्यशीत्यग्रद्वादशाब्दशतात्यये । द्वा
दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथतां कथा ॥७॥

पत्नी श्रीनागदेवस्य नंद्याद्धर्म्मेण नायिका ।
यासीद्रत्नत्रयविधिं चरतीनां पुरस्मरी ॥८॥ मो

इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधिः समाप्तः ॥

११.	पुरंदरविधानकथा.........।	संस्कृत पद्य	५१ से ५४
१२.	रत्नाविधानकथा.........।	गद्य	५४ से ५६
१३.	दशलक्षणजयमाल—रइधू ।	अपभ्रंश	५६ से ५८
१४.	पल्यविधानकथा ....।	संस्कृत पद्य	५८ से ६३
१५.	अनथमोव्रतकथा—पं० हरिचंद्र ।	अपभ्रंश	६३ से ६९

अगरवाल वरवंसि उप्पण्णइं हरियंदेण ।
भत्तिए जिणुपणपंणवेवि पयडिउ पद्धडियाछंदेण ॥१६॥

१६.	चंदनषष्ठीकथा—	"	"	६९ से ७१
१७.	मुक्तावलोकनकथा	—	संस्कृत	७१ से ७५
१८.	रोहिणीचरित्र—	देवनंदि	अपभ्रंश	७६ से ८१
१९.	रोहिणीविधानकथा—	"	"	८१ से ८५

२०.	अक्षयनिधिविधानकथा	—	संस्कृत	८५ से ८८
२१.	मुकुटसप्तमीकथा—पं० अभ्रदेव		,,	८८ से ८९
२२.	मौनव्रतविधान—रत्नकीर्ति		संस्कृत गद्य	९० से ९४
२३.	रुक्मणिविधानकथा—छत्रसेन		संस्कृत पद्य	१०० [अपूर्ण]

संवत् १६०९ वर्षे फाल्गुण वदि १ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये........।

२६८४. व्रतकथाकोश........। पत्र सं० १५२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९२। छ भण्डार।

२६८५. व्रतकथाकोश—खुशालचंद। पत्र सं० ८९। आ० १२३/४×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १७८७ फागुन बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६७। अ भण्डार।

विशेष—१८ कथायें हैं।

इसके अतिरिक्त घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९१) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ६८९) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७८) और हैं।

२६८६. व्रतकथाकोश........। पत्र सं० ५०। आ० १०×५१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३५। ट भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	विशेष
ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा—	खुशालचंद	र० काल सं० १७८२
आदित्यवारकथा—	भाऊ कवि	×
लघुरविव्रतकथा—	ब्र० ज्ञानसागर	—
सप्तपरमस्थानव्रतकथा—	खुशालचन्द	—
मुकुटसप्तमीकथा—	,,	र० काल सं० १७८३
अक्षयनिधिव्रतकथा—	,,	—
षोडशकारणव्रतकथा—	,,	—
मेघमालाव्रतकथा—	,,	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	,,	—
लब्धिविधानकथा—	,,	—
जिनपूजापुरंदरकथा—	,,	—
दशलक्षणकथा—	,,	—

नाम	कर्त्ता	विशेष
पुष्पांजलिव्रतकथा—	खुशालचन्द	—
आकाशपंचमीकथा—	"	र० काल सं० १७८५
मुक्तावलीव्रतकथा—	"	—

पृष्ठ ३६ से ५० तक दीमक लगी हुई है।

२६८७. व्रतकथासंग्रह·······। पत्र सं० ६ से ६०। आ० ११३⁄४×५१⁄२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३६। ट भण्डार।

विशेष—६० से आगे भी पत्र नहीं हैं।

२६८८. व्रतकथासंग्रह·······। पत्र सं० १२३। आ० १२×४१⁄२ इञ्च। भाषा–संस्कृत अपभ्रंश। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १५१६ सावण बुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ११०। ञ भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है।

नाम	कर्त्ता	भाषा	विशेष
सुगन्धदशमीव्रतकथा·······।		अपभ्रंश	—
अनन्तव्रतकथा·······।		"	—
रोहिणीव्रतकथा—	×	"	—
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	"	—
दुधारसविधानकथा—	मुनिविनयचंद।	"	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—	विमलकीर्त्ति।	"	—
निर्झरपञ्चमीविधानकथा—	विनयचंद्र।	"	—
पुष्पांजलिविधानकथा—	पं० हरिश्चन्द्र।	"	—
श्रवणद्वादशीकथा—	पं० अभ्रदेव।	"	—
षोडशकारणविधानकथा—	"	"	—
श्रुतस्कंधविधानकथा—	"	"	—
रुक्मिणीविधानकथा—	छत्रसेन।	"	—

प्रारम्भ— जिनं प्रणम्य नेमीशं संसारार्णवतारकं।
रुक्मिणिचरितं वक्ष्ये भव्यानां बोधकारणं॥

अन्तिम पुष्पिका— इति छत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणि विधानकथा समाप्तं।

पल्यविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
दशलक्षणविधानकथा—	लोकसेन	—	"	—
चन्दनषष्ठीविधानकथा—	×	—	अपभ्रंश	—
जिनरात्रिविधानकथा—	×	—	"	—
जिनपूजापुरंदरविधानकथा—	अमरकीर्त्ति	—	"	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
जिनमुखावलोकनकथा—	×	—	"	—
शीलविधानकथा—	×	—	"	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	"	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—	×	—	"	—

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी १५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा। भट्टारक श्रीपद्मनंदि शिष्य मुनि मदनकीर्त्ति शिष्य ब्र० नरसिंह निमित्तं। खंडेलवालान्वये दोसीगोत्रे संघी राजा भार्या देउ सुपुत्र छीछा भार्या गणोपुत्र कातु पदमा धर्मा आत्मः कर्मक्षयार्थं इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञान पात्रादत्तं।

२६८६. व्रतकथासंग्रह……। पत्र सं० ८८। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०१। क भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है।

द्वादशव्रतकथ—	पं० अभ्रदेव।	संस्कृत	—
कवलचन्द्रायणव्रतकथा—		"	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	खुशालचन्द।	हिन्दी	—
नंदीश्वरव्रतकथा—		संस्कृत	—
जिनगुणसंपत्तिकथा—		"	—
होली की कथा—	छीतर ठोलिया	हिन्दी	—
रैदव्रतकथा—	ब्र० जिनदास	"	—
रत्नावलिव्रतकथा—	गुणनंदि	"	

२६६०. व्रतकथासंग्रह—ब्र० महतिसागर। पत्र सं० २७। आ० १०×४½। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७७। क भण्डार।

२६६१. व्रतकथासंग्रह……। पत्र सं० ४। आ० ८×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७२। क भण्डार।

विशेष—रविव्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणव्रतकथा इनका संग्रह है षोडश-कारणव्रतकथा गुजराती में है।

२६६२. व्रतकथासंग्रह……। पत्र सं० २२ से १०४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७८। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं।

२६६३. षोडशकारणविधानकथा—पं० अभ्रदेव। पत्र सं० २६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६० भादवा सुदी ५। वे० सं० ७२२। क भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पंचमी, रुक्मिणीकथा एवं अनंतव्रतकथा के कर्त्ता का नाम पं० मदनकीर्त्ति है। ट भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०२६) और है।

२६६४. शिवरात्रिउद्यापनविधिकथा—शंकरभट्ट। पत्र सं० २२। आ० ६×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा (जैनेतर)। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४७२। अ भण्डार।

विशेष—३२ से आगे पत्र नही है। स्कंधपुराण में से है।

२६६५. शीलकथा—भारामल्ल। पत्र सं० २०। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ६६६, ११११) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६२) घ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १००), ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०८), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८०), ज भण्डार मे एक प्रति (ले० सं० ११६७) और हैं।

२६६६. शीलोपदेशमाला—मेरुसुन्दरगणि। पत्र सं० १३१। आ० ६×४ इंच। भाषा-गुजराती लिपि हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७। छ भण्डार।

विशेष—४३वी कथा (धनश्री तक प्रति पूर्ण है)।

२६६७. शुकसप्तति……। पत्र सं० ६४। आ० ६½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४५। च भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२६६८. श्रावणद्वादशीउपाख्यान……। पत्र सं० ३। आ० १०½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा (जैनेतर)। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८०। अ भण्डार।

२६९९. श्रावणद्वादशीकथा·········। पत्र सं० ६८ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत गद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । क भण्डार ।

२७००. श्रीपालकथा·········। पत्र सं० २७ । आ० ११×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १९२६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७१३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) और है ।

२७०१. श्रेणिकचौपई—डूंगा बैद । पत्र सं० १४ । आ० ६¾×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कवि मालपुरा के रहने वाले थे ।

अथ श्रेणिक चौपई लीखते—

आदिनाथ बंदौ जगदीस । जाहि चरित थे होई जगीस ।।
दूजा बंदौ गुर निरगंथ । भूला भव्य दीखावण पंथ ।।१।।
तीजा साधु सबै का पाइ । चौथा सरस्वती करौ सहाय ।
जहि सेया थे सब बुधि होय । करौ चौपई मन सुधि जोई ।।२।।
माता हमनै करो सहाई । अख्यर हीण सवारो आई ।
श्रेणिक चरित बात मैं लही । जैसी जाणी चौपई कही ।।३।।
राणी सही चेलना जाणि । धर्म जैनि सेवै मनि आणि ।
राजा धर्म चलावै बोध । जैन धर्म को काटै खोध ।।४।।

पत्र ७ पर–दोहा—

जो झूठी मुख थे कहै, अणवोल्या दे दोस ।
जे नर जासी नरक मैं, मत कोइ आणौ रोस ।।१५१।।

चौपई— कहुं जती इक साह सुजाण । बामण एक पढ्यो अति आणि ।
जइ कौ पुत्र नहीं को आय । तवै न्यौल इक पाल्यो जाय ।।१५२।।
बेटो करि राख्यो निरताइ । दुवैउ पाव एक पै आइ ।
बांभणी सही जाइयो पूत । पली थावै जाणि अउत ।।१५३।।
एक दिवस बांभण विचारि । पाणी नैवा चाली नारि ।
पालण वालक मेल्हौ तहां । न्यौल वचन ए आखै जहां ।।१५४।।

अन्तिम—

भेद भलो जाणो इक सार। जे गुणिसी ते उतरै पार।
हीन पद अक्षर जो होय। जको सवारो गुणियर लोय ॥२८६॥
मैं म्हारी बुधि साऊ कही। गुणियर लोग सवारो सही।
जे ता तणो कहै निरताय। सुणता सगला पातिग जाइ ॥२६०॥
लिखिवा वाल्यौ सुख नित लहौ, जै साधा का गुण यौ कहौ।
यामै भोलो कोइ नही, इगै वैद चौपइ कही ॥६१॥
वास भलो मालपुरो जाणि। टौक मही सो कियो वखाण।
जठै बसै माहाजन लोग। पान फूल का कीजै भोग ॥६२॥
पौणि छतीसौं लीला करै। दुख थे पेट न कोइ भरै।
राइस्यंध जो राजा बखाणि। और ववाहन राखै आणि ॥६३॥
जीव दया को अधिक सुभाव। सबै भलाई साधै डाव।
पतिसाहा बंदि दीन्ही छोडि। बुरी कही मवि सुणौ बहोडि ॥६४॥
धनि हिंदवाणो राज वखाणि। जह मैं सीसोद्यो सो जाणि।
जीव दया को सदा वीचार। रैति तणौं राखै आधार ॥६५॥
कीरति कहौ कहा लगि जाणि। जीव दया सहु पालै आणि।
इह विधि सगला करै अगीस। राजा जीज्यौ सौ अरु बीस ॥६६॥
एता वरस मै भोलो नही। बेटा पोता फल ज्यो सही।
दुखिया का दुख टाले आय। परमेस्वर जी करै सहाय ॥६७॥
इ पुन्य तणौ कोइ नहीं पार। बंदि खलास करै ते सार।
वाकी बुरी कहै नर कोइ। जन्म आपणौ चालै खोइ ॥६८॥
संवत् सौलह से प्रमाण। उपर सही इतासी जाण।
निन्याणवे कह्या निरदोष। जीव सबै पावै पोष ॥६६॥
भाद्रव सुदी तेरस सनिवार। कह्या तीन से वट अधिकाय।
इ सुणता सुख पासी देह। आप समाही करै सनेह ॥३००॥

इति श्री श्रेणिक चौपइ संपूरण मीती कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्के सं० १८२६ काडी ग्रामे लीखतं वखतसागर वांचै जहने निम्सकार नमोस्तं बांच ज्यो जी।

२७०२. सप्तपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ११। आ० ६३/४×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६८६ आसोज बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ३५०। अ भण्डार।

२७०३. सप्तव्यसनकथा—आचार्य सोमकीर्त्ति । पत्र सं० ४१ । आ० १०३/४×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल सं० १५२६ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७७२ श्रावण बुदी १३ । वे० सं० १००२ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति— सं० १७७२ वर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ अर्कवासरे विजैरामेण लिपिचक्रे अकब्बरपुर समीपेषु केरवाग्रामे ।

२७०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९५ । ले० काल सं० १८६४ भादवा सुदी ६ । वे० सं० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—नेवटा निवासी महात्मा हीरा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवाण संगही अमरचंदजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि दीवाण स्योजीराम के मंदिर के लिए करवाई ।

२७०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७७६ माघ सुदी १ । वे० सं० ९९ । भ्र भण्डार ।

विशेष—पं० नरसिंह ने श्रावक गोविन्ददास के पठनार्थ हिण्डौन में प्रतिलिपि की थी ।

२७०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६४७ आसोज सुदी ९ । वे० सं० १११ । व्य भण्डार ।

२७०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १७५६ कार्त्तिक बुदी ६ । वे० सं० १३६ । व्य भण्डार ।

विशेष—पं० कपूरचंद के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

इनके अतिरिक्त घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७५) और हैं ।

२७०९. सप्तव्यसनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० ८६ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १८१४ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६८८ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं । अंत में कवि का परिचय भी दिया हुआ है ।

२७१०. सप्तव्यसनकथाभाषा…। पत्र सं० १०९ । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६३ । ङ भण्डार ।

विशेष—सोमकीर्त्ति कृत सप्तव्यसनकथा का हिन्दी अनुवाद है ।

च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६८९) और है ।

२७११. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० २६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८७ आषाढ बुदी"" । वे० सं० ८८ । ग भण्डार ।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे । रेवाड़ी (पञ्जाब) के रहने वाले थे और वहीं लेखक ने इसे पूर्ण किया ।

२७१२. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि । पत्र सं० ४८ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-कथा । र० काल सं० १५०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । च भण्डार ।

२७१३. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—खेता । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८३३ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—म्ह भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१) तथा ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०) और है ।

२७१४. सम्यक्त्वकौमुदीकथा""""। पत्र सं० १३ से ३३ । आ० १२×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६२५ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे षष्ठम्यां शनौ ....श्रीकुंभलमेरुदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री खरतरगच्छे श्री गुणलाल महोपाध्याये स्ववाचनार्थं लिखापिता सौवाच्यमाना चिरं नंदनात् ।

२७१५. सम्यक्त्वकौमुदीकथा""""। पत्र सं० ८६ । आ० १०½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६०० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । ञ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६०० में खेटक स्थान में शाह आलम के राज्य में प्रतिलिपि हुई । ब्र० धर्मदास अग्रवाल गोयल गोत्रीय मडलागणपुर निवासी के बंश में उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र आदि ने प्रतिलिपि कराई । लेखक प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है ।

२७१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से ६० । ले० काल सं० १६२८ बैशाख सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । ञ भण्डार ।

श्री डूंगर ने इस ग्रंथ को ब्र० रायमल को भेंट किया था ।

अथ संवत्सरेस्मिन श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षपंचमीदिने भट्टारक श्रीभानुकीर्त्तितदाम्नाये अगरवालान्वये मित्तलगोत्रे साह दासू तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा. गोपी सा. दीपा । सा. गोपी तस्य भार्या दीवो तयो पुत्र सा. भावन साह उदा सा. भावन भार्या बूरदा शही तस्य पुत्र तिपरदास । साह उदा तस्य भार्या मेघनही तस्यपुत्र डूंगरसी सास्त्र सम्यक्त कौमदी ग्रंथ ब्रह्मचार रायमल्लइदात् पठनार्थं ज्ञानावर्णी कर्मक्षयहेतु । शुभं भवतु । लिखितं जीवात्मज गोपालदास । श्रीचन्द्रप्रभु चैत्यालये अहिपुरमध्ये ।

२७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १७११ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

२७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८३१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ७५४ । क भण्डार ।

विशेष—भाकूराम साह ने जयपुर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०६६, ८६४) घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११२), क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८००), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८७), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१), ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०), तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१२६, २१३०) [दोनों अपूर्ण] और हैं ।

२७१९. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—विनोदीलाल । पत्र सं० १६० । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १७४९ । ले० काल सं० १८६० सावन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ८७ । ग भण्डार ।

२७२०. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जगतराय । पत्र सं० १५१ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १७७२ माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । क भण्डार ।

२७२१. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ४७ । आ० १०३×७२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १७२४ फागुण बुदी १३ । ले० काल सं० १८२५ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ४३५ । ञ भण्डार ।

विशेष—नैनसागर ने श्री गुलाबचंदजी गोदीका के वाचनार्थ सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । सं० १८६८ में पोथी की निछरावलि दिवाई पं० खुस्यालजी, पं० ईसरदासजी गोदीका सूं हस्ते महात्मा फत्ताह्वै भाई रु० १) दिया ।

२७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६३ माघ बुदी २ । वे० सं० २११ । ख भण्डार ।

२७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ७६८ । क भण्डार ।

२७२४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ७०३ । च भण्डार ।

२७२५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३५ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० १० । झ भण्डार ।

इसके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०४) ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५४३) और हैं ।

२७२६. सम्यक्त्वकौमुदीभाषा.......। पत्र सं० १७४ । आ० १०३×७३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०२। ख भण्डार।

२७२७. संयोगपंचमीकथा—धर्मचन्द्र। पत्र सं० ३। आ० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८४०। पूर्ण। वे० सं० ३०६। अ भण्डार।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८०१) और है।

२७२८. शालिभद्रधन्नानीचौपई—जिनसिंहसूरि। पत्र सं० ४१। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६। ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० ८४२। क भण्डार।

विशेष—किशनगढ में प्रतिलिपि की गई थी।

२७२९. सिद्धचक्रकथा.......। पत्र सं० २ से ११। आ० १०×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४३। क भण्डार।

२७३०. सिंहासनबत्तीसी.......। पत्र सं० ११ से ६१। आ० ७×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५९७। ट भण्डार।

विशेष—५वें अध्याय से १२वें अध्याय तक है।

२७३१. सिंहासनद्वात्रिंशिका—क्षेमंकरमुनि। पत्र सं० २७। आ० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-राजा विक्रमादित्य की कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२७। ख भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

श्रीविक्रमादित्यनरेश्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिर्निबद्धं।
पुरा महाराष्ट्रपरिष्टभाषा मयं महाश्चर्यकरंनराणां ॥
क्षेमंकरेण मुनिना वरपद्यगद्यबंधेनयुक्तिकृतसंस्कृतबधुरेण।
विश्वोपकार विलसत् गुणकीर्तिनाम्नक्र चिरादमरपंडितहर्षहेतु ॥

२७३२. सिंहासनद्वात्रिंशिका.......। पत्र सं० ६३। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६८ पौष सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ४११। च भण्डार।

विशेष—लिपि विकृत है।

२७३३. सुकुमालमुनिकथा.......। पत्र सं० २७। आ० ११३×७३ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८७१ माह बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १०५२। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर में सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

२७३४. सुगन्धदशमीकथा……। पत्र सं० ६। आ० ११½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०६। क भण्डार।

विशेष—उक्त कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अपूर्ण है।

२७३५. सुगन्धदशमीव्रतकथा—हेमराज। पत्र सं० ५। आ० ८३×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६८५ श्रावण सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ६६५। अ भण्डार।

विशेष—भिण्ड नगर में रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्भ—अथ सुगन्धदशमी व्रतकथा लिख्यते—

चौपई— वर्द्ध मान बंदौ सुखदाई, गुर गौतम वंदौ चितलाय।
सुगन्धदशमीव्रत सुनि कथा, वर्द्ध मान परकाशी यथा ॥१॥
पूर्वदेस राजग्रह गांव, श्रेनिक राज करै अभिराम।
नाम चेलना ग्रहपटरानी, चंद्ररोहिणी रूप समान।
नृप सिंहासन बैठो कदा, वनमाली फल ल्यायो तदा ॥२॥

अन्तिम— सहर गहे लोउ तिम वास, जैनधर्म को करैप्रकास ॥
सब श्रावक व्रत संयम धरै, दान पूजा सो पातिक हरै।
हेमराज कवियन यों कही, विस्वभूषन परकासी सही।
सो नर स्वर्ग अमरपति होय, मन वच काय सुनै जो कोय ॥३८॥
इति कथा संपूरणम्

दोहा— श्रावण शुक्ला पंचमी, चंद्रवार शुभ जान।
श्रीजिन भुवन सहावनौ, तिहां लिखा धरि ध्यान ॥
संवत् विक्रम भूप को, इक नव आठ सुजान।
ताके ऊपर पांच लखि, लीजै चतुर सुजान ॥
देश भदावर के विषै, भिंड नगर शुभ ठाम।
ताही मैं हम रहत है, रामसाय है नाम ॥

२७३६. सुदयवच्छसावलिंगाकी चौपई—मुनि केशव। पत्र सं० २७। आ० ६×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १६६७। ले० काल सं० १८३७। वे० सं० १६४१। ट भण्डार।

विशेष—कटक में लिखा गया।

२७३७. सुदर्शनसेठकीढाल (कथा)……। पत्र सं० ६। आ० ६३×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६१। अ भण्डार।

२७३८. सोमशर्मावारिषेणकथा·······। पत्र सं० ७। आ० १०×३३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२३। अ भण्डार।

२७३९. सौभाग्यपंचमीकथा—सुन्दरविजयगणि। पत्र सं० ९। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल सं० १६६९। ले० काल सं० १८११। पूर्ण। वे० सं० २९९। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है।

२७४०. हरिवंशवर्णन·······। पत्र सं० २०। आ० १०३×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३६। अ भण्डार।

२७४१. होलिकाकथा·······। पत्र सं० २। आ० १०३×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२१। पूर्ण। वे० सं० २९३। अ भण्डार।

२७४२. होलिकाचौपई—डूंगरकवि। पत्र सं० ४। आ० ९×४ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल सं० १६२९ चैत्र बुदी २। ले० काल सं० १७१८। अपूर्ण। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक ओर से फटा हुआ है। अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार।
नयर सिकंदराबाद·······गुणकरि आगाध, वाचक मंडण श्री खेमा साध ॥८४॥
तासु सीस डूंगर मति रली, अण्यु चरित्र गुण सांभली।
जे नर नारी सुणस्यइ सदा तिह घरि वहुली हुई संपदा ॥८५॥

इति श्री होलिका चउपई। मुनि हरचंद लिखितं। संवत् १७१८ वर्षे·········आगरामध्ये लिपिकृतं ॥ रचना में कुल ८५ पद्य हैं। चौथे पत्र में केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नहीं हैं।

२७४३. होलीकीकथा—छीतर ठोलिया। पत्र सं० २। आ० ११३×५३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १६६० फागुण सुदी १५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५८। अ भण्डार।

२७४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७५०। वे० सं० ८५६। क भण्डार।

विशेष—लेखक मौजमाबाद [जयपुर] का निवासी था इसी गांव में उसने ग्रंथ रचना की थी।

२७४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० ९९। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रंथ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया।

२७४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२। वे० सं० १६४२। ट भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२७४७. होलीकथा—जिनसुन्दरसूरि । पत्र सं० १४ । प्रा० १०३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा × । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसके अतिरिक्त ३ प्रतियां वे० सं० ७४ में ही और हैं ।

२७४८. होलीपर्वकथा........ । पत्र सं० ३ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । अ भण्डार ।

२७४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८०४ माघ सुदी ३ । वे० सं० २८२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त ङ भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ६१०, ६११) और हैं ।



व्याकरण-साहित्य

२७५०. अनिटकारिका……। पत्र सं० १ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३५ । अ भण्डार ।

२७५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २१४६ । ट भण्डार ।

२७५२. अनिटकारिकावचूरि……। पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

२७५३. अव्ययप्रकरण……। पत्र सं० ६ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१८ । अ भण्डार ।

२७५४. अव्ययार्थ……। पत्र सं० ८ । आ० ८×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८४८ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । म्ह भण्डार ।

२७५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है ।

२७५६. उणादिसूत्रसंग्रह—संग्रहकर्त्ता–उज्ज्वलदत्त । पत्र सं० ३८ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२७५७. उपाधिव्याकरण……। पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७२ । अ भण्डार ।

२७५८. कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि—चारित्रसिंह । पत्र सं० १३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

नत्वा जिनेंद्रं स्वगुरुं च भक्त्या तत्सत्प्रसादाससुसिद्धिशक्त्या ।
सत्संप्रदायादवचूर्णिमेतां लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ।।१।।

प्रायः प्रयोगादुर्ज्ञेयाः किलकातंत्र विभ्रमो ।
येषु मो मुह्यते श्रेष्ठः शाब्दिकोऽपि यथा जड़ः ।।२।।
कातंत्रसूत्रविसरः खलु साप्रतं ।
यस्माति प्रसिद्ध इह चाति खरोगरीयान् ।।
स्वस्येतरस्ये च सुबोधबिवर्द्धनार्थो ।
ऽस्त्वित्थं ममात्र सफलो लिखन प्रयासः ।।

अन्तिम पाठ—

बाणाश्विषडिंदुमिते संम्वति धवलक्कपुरवरे समहे ।
श्रीखरतरगणपुष्करसुदिवापुष्टप्रकाराणा ।।१।।
श्रीजिनमाणिक्याभिधसूरीणां सकलसार्वभौमानां ।
पट्टे करे विजयिषु श्रीमज्जिनचंद्रसूरिराजेषु ।।२।।
गीति वाचकमतिभद्रगणेः शिष्यस्तदुपास्त्यवासपरमार्थः ।
चारित्रसिंहसाधुर्व्यदधदवचूर्णिमिह सुगमा ।।३।।
यल्लिखितं मतिमाद्यादनृतं प्रश्नोत्तरेत्र किंचिदपि ।
तत्सम्यक् प्राज्ञवरैः शोध्यं स्वपरोपकाय । ४।।
इति कातंत्रविभ्रमावचूरिः संपूर्णा लिखनतः ।

आचार्य श्रीरत्नभूषणस्तच्छिष्य पंडित केशवः तेनेयं लिपि कृता आत्मपठनार्थं । शुभं भवतु । संवत् १६६६ वर्षे कार्तिक सुदी ५ तिथौ ।

२७५६. कातन्त्रटीका·········। पत्र सं० ३ । आ० १०३/४×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२७६०. कातन्त्ररूपमालाटीका—दौर्गसिंह । पत्र सं० ३६४ । आ० १२१/२×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० १११ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कलाप व्याकरण भी है ।

२७६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११२ । क भण्डार ।

२७६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । च भण्डार ।

२७६३ कातन्त्ररूपमालावृत्ति·········। पत्र सं० १४ से ८६ । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १५२४ कार्तिक सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० २१४४ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोंकपत्तने सुरत्राणअलावदीनराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य ब्रह्मतीकम निमित । खंडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे सं० धणा भार्या धनश्री पुत्र सं. दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतयः एतेषांमध्ये सा. दोदा इदं पुस्तकं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्तं ।

२७६४. कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र सं० ३५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२७६५. कारकप्रक्रिया⋯⋯ । पत्र सं० ३ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६. कारकविवेचन⋯⋯ । पत्र सं० ८ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७. कारकसमासप्रकरण⋯⋯ । पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । अ भण्डार ।

२७६८. कृदन्तपाठ⋯⋯ । पत्र सं० ६ । आ० ६½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नही है । सारस्वत प्रक्रिया में से है ।

२७६९. गणपाठ—वादिराज जगन्नाथ । पत्र सं० ३४ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८० । ट भण्डार ।

२७७०. चंद्रोन्मीलन⋯⋯ । पत्र सं० ३० । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८३५ फागुन सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१. जैनेन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र सं० १२६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७१० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—ग्रंथ का नाम पंचाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पंचवस्तु तक । सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने पं० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० आसोज सुदी १० को पुनः श्रीकल्याण व हर्ष को साह श्री लूणा बघेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १९६३ फागुन सुदी ९ । वे० सं० २१२ । क भण्डार ।

२७७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९४ से २१४ । ले० काल सं० १९६४ माह बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २१३ । क भण्डार ।

२७७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८६६ कार्त्तिक सुदी ३ । वे० सं० २१० । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त संकेतार्थ दिये हुये है । पन्नालाल भौसा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १९०८ । वे० सं० ३२८ । ज भण्डार ।

२७७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२५ । ले० काल सं० १८८० वशाख सुदी १४ । वे० सं० २०० । ञ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त च भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२१) ञ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३२३, २८८) और हैं । (वे० सं० ३२३) वाले ग्रन्थ में सोमदेवसूरि कृत शब्दार्णव चन्द्रिका नाम की टीका भी है ।

२७७७ जैनेन्द्रमहावृत्ति—अभयनंदि । पत्र सं० १०४ से २३२ । आ० १२३⁄४×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०४२ । अ भण्डार ।

२७७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६० । ले० काल सं० १९४६ भादवा बुदी १० । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

२७७९. तद्धितप्रक्रिया ......। पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७० । अ भण्डार ।

२७८०. धातुपाठ—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३ । आ० १०×४१⁄२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७९७ श्रावण सुदी ५ । वे० सं० २९२ । छ भण्डार ।

२७८१. धातुपाठ......। पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९६० । अ भण्डार ।

विशेष—धातुओं के पाठ हैं ।

२७८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५९४ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ९२ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३०३) तथा ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २९०) और हैं ।

२७८३. धातुरूपावलि......। पत्र सं० २२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६ । ञ भण्डार ।

विशेष—शब्द एवं धातुओं के रूप हैं ।

२७८४. धातुप्रत्यय......। पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२८ । ट भण्डार ।

विशेष—हेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है ।

२७८५. पंचसंधि......। पत्र सं० २ से ७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७३२ । अपूर्ण । वे० सं० १२६२ । अ भण्डार ।

२७८६. पंचिकरणवार्त्तिक—सुरेश्वराचार्य । पत्र सं० २ से ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४४ । ट भण्डार ।

२७८७. परिभाषासूत्र......। पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १५३० । पूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट भण्डार ।

विशेष—अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्ण ।।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५३० वर्षे श्रीखरतरगच्छेश्रीजयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायशिष्यभक्तिलाभगणिना लिखिता वाचिता च ।

२७८८. परिभाषेन्दुशेखर—नागोजीभट्ट । पत्र सं० ६७ । आ० ६×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८ । ज भण्डार ।

२७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० १०० । ज भण्डार ।

२७९०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० सं० १०२ । ज भण्डार ।

विशेष—दो लिपिकर्त्ताओं ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका का नाम भैरवी टीका है ।

२७९१. प्रक्रियाकौमुदी......। पत्र सं० १४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । अ भण्डार ।

विशेष—१४३ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२७९२. पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पत्र सं० ३६ । आ० ८½×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पत्र के एक ओर ही लिखा गया है ।

२७६३. प्राकृतरूपमाला—श्रीरामभट्ट सुत वरदराज। पत्र सं० ४७ । आ० ६३×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ५२२ । क भण्डार।

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति ने द्रव्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिलिपि की थी।

२७६४. प्राकृतरूपमाला……। पत्र सं० ३१ रे ४६। भाषा-प्राकृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २४६। च भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये है।

२७६५. प्राकृतव्याकरण—चंडकवि। पत्र सं० ६। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पैशाचिकी, मागधी तथा सौरसेनी आदि भाषाओं पर प्रकाश डाला गया है।

२७६६. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० ५२३। क भण्डार।

२७६७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८२३। वे० सं० ५२४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५२२) और है।

२७६८ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४०। ले० काल सं० १८४४ मंगसिर सुदी १५। वे० सं० १०८। छ भण्डार।

विशेष—जयपुर के गोधों के मन्दिर नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

२७६९. प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका—सौभाग्यगणि। पत्र सं० २२४। आ० १२३×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ आसोज सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ५२७। क भण्डार।

२८००. भाष्यप्रदीप—कैय्यट। पत्र सं० ३१। आ० १२३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१। ज भण्डार।

२८०१. रूपमाला……। पत्र सं० ४ से ५०। आ० ८३×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३०६। च भण्डार।

विशेष—धातुओं के रूप दिये हैं।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३०७, ३०८) और हैं।

२८०२. लघुन्यासवृत्ति……। पत्र सं० १२७। आ० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७७९ ट भण्डार।

२८०३. लघुरूपसर्गवृत्ति……। पत्र सं० ४। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४८। ट भण्डार।

२८०४. लघुशब्देन्दुशेखर……। पत्र सं० २१५। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। ज भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं।

२८०५. लघुसारस्वत—अनुभूति स्वरूपाचार्य। पत्र सं० २३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३११, ३१२, ३१३, ३१४) और हैं।

२८०६. प्रति सं० २।……। पत्र सं० २०। आ० ११३×५३ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३११। च भण्डार।

२८०७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८। वे० सं० ३१२। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ३१३, ३१४) और हैं।

२८०८. लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज। पत्र सं० १०४। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। ख भण्डार।

२८०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० सं० १७३। ज भण्डार।

विशेष—आठ अध्याय तक है।

च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३१५, ३१६) और हैं।

२८१०. लघुसिद्धान्तकौस्तुभ……। पत्र सं० ५१। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०१२। ट भण्डार।

विशेष—पाणिनी व्याकरण की टीका है।

२८११. वैय्याकरणभूषण—कौण्डभट्ट। पत्र सं० ३३। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७७४ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६८३। क भण्डार।

२८१२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०४। ले० काल सं० १६०५ कार्त्तिक बुदी २। वे० सं० २८१। क भण्डार।

२८१३. वैय्याकरणभूषण……। पत्र सं० ७। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ पौष सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ६८२। क भण्डार।

२८१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० ३३५ । च भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१५. व्याकरण······। पत्र सं० ४६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

२८१६. व्याकरणटीका······। पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

२८१७. व्याकरणभाषाटीका······ । पत्र सं० १८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । छ भण्डार ।

२८१८. शब्दशोभा—कवि नीलकंठ । पत्र सं० ४३ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ७०० । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१९. शब्दरूपावली······। पत्र सं० ८६ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । ञ भण्डार ।

२८२०. शब्दरूपिणी—आचार्य वररुचि । पत्र सं० २७ । आ० १०½×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । अ भण्डार ।

२८२१. शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८८ । व्य भण्डार ।

२८२२. प्रति सं० २ । । पत्र सं० १० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८६ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ६८१, ६८२, ६८३, ६८३, (क) ६८४, ५२६) तथा अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ११८६) और है ।

२८२३. शब्दानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ७९ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० । २२६३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत व्याकरण भी है ।

२८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ५२५ । क भण्डार ।

विशेष—अजमेर निवासी पिरागदास महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२८२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १ । वे० सं० २४३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३३९) और है ।

२८२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १५२७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० १६५० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ८ भौमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराजश्रीकीर्त्तिसिंहदेवराज-प्रवर्त्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हरि ब्रह्म ....।

२८२७. शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ से २० । आ० १५×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० । च भण्डार ।

२८२८. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७३९ माघ सुदी २ । वे० सं० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपालं, नत्वागोपालमीश्वरं ।
क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषतः ॥

२८२९. संज्ञाप्रक्रिया........। पत्र सं० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । छ भण्डार ।

२८३० सम्बन्धविवक्षा........। पत्र सं० २४ । आ० ६½×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१. संस्कृतमञ्जरी....... । पत्र सं० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ११९७ । अ भण्डार ।

२८३२. सारस्वतीधातुपाठ........। पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३. सारस्वतपंचसंधि........। पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४. सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र सं० १२१ से १४५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३९५ । अ भण्डार ।

२८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९७ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ६२१ । अ भण्डार ।

२८३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० ६५१ । अ भण्डार ।

विशेष—चोखचंद के शिष्य कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६० से १२४ । ले० काल सं० १८३८ । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ भण्डार ।

बशाई (बस्सी) नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८३९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १७५६ । वे० सं० १२४६ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रसागरगरिण ने प्रतिलिपि की थी ।

२८४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७०१ । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

२८४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ से ७२ । ले० काल सं० १८५२ । अपूर्ण । वे० सं० ६३७ । अ भण्डार ।

२८४२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०५५ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

२८४३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० ७६० । क भण्डार ।

विशेष—चिमनराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ७६१ । क भण्डार ।

२८४५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी १४ । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० जगरूपदास ने दुलीचन्द के पठनार्थ नगर हरिदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी । केवल विसर्ग संधि तक है ।

२८४६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ श्रावरण सुदी ५ । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

२८४७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७···। वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—दुर्गाराम शर्मा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० ४८ । झ भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

२८४९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८७६ । वे० सं० १२५ । झ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में १७ प्रतियां (वे० सं० ६०७, ६५२, ८०६, ६०३, १००६,

१०३४, १३१३, ९५३, १२८६, १२७२, १२३२, १६५०, १२५०, १८८०, १२६१, १२६८, १२८४, १३०१, १३०२) ख भण्डार में ७ प्रतियां (वे सं० २१५, २१५ [अ], २१६, २१७, २१८, २१६, २६८) घ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११६, १२०, १२१) ङ भण्डार में १५ प्रतियां (वे० सं० ८२१, ८२२, ८२३, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२६, ८३१, से ८३८, ८३६) च भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) छ भण्डार में ६ प्रतिया (वे० सं० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७) झ भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं० १२१, १४०, २२२) ञ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २०) तथा ट भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० १६८८, १६६०, २१००, २०७२, २१०५) और हैं।

उक्त प्रतियों में बहुत सी अपूर्ण प्रतियां भी हैं।

२८५०. सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी। पत्र सं० ६७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वे० सं० ८२४। ङ भण्डार।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२८५१. संज्ञाप्रक्रिया........। पत्र सं० ६। आ० १०½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। ञ भण्डार।

२८५२. सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति—जिनप्रभसूरि। पत्र सं० ३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल। ले० काल सं० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ....। ज भण्डार।

विशेष—संवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

२८५३. सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित। पत्र सं० ८। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४। ज भण्डार।

२८५४. प्रति स० २। पत्र सं० २४०। ले० काल ×। वे० सं० ६६। ञ भण्डार।

विशेष—पूर्वार्द्ध है।

२८५५. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७६। ले० काल ×। वे० सं० १०१। ञ भण्डार।

विशेष—उत्तरार्द्ध पूर्ण है।

इसके अतिरिक्त ञ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६५, ६६) तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६३४, १६६६) और हैं।

२८५६. सिद्धान्तकौमुदी........। पत्र सं० ४३। आ० १२½×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४७। ङ भण्डार।

विशेष—अतिरिक्त क, च तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८४८, ४०७, २७२) और हैं।

२८५७. सिद्धान्तकौमुदीटीका ……। पत्र सं० ६५। आ० ११३/४×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५। ज भण्डार।

विशेष-पत्रों के कुछ अंश पानी से गल गये हैं।

२८५८. सिद्धान्तचन्द्रिका—रामचंद्राश्रम। पत्र सं० ४४। आ० ६१/२×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६५१। अ भण्डार।

२८५९. प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १८४७। वे० सं० १६५२। अ भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी।

२८६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०१। ले० काल सं० १८४७। वे० सं० १६५३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १० प्रतिया (वे० सं० १६३१, १६५४, १६५५, १६५६, १६५७, १६५८, ६०८, ६१७, ६१८, २०२३) और है।

२८६१. प्रति सं० ४। पत्र सं ६४। आ० ११३/४×५१/२ इंच। ले० काल स० १७८४ असाढ बुदी १४। वे० सं० ७८२। क भण्डार।

२८६२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५७। ले० काल सं० १६०२। वे० सं० २२३। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २२२ तथा ४०८) और है।

२८६३. प्रति सं० ६। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १७५२ चैत्र बुदी ६ वे० सं० ६०। छ भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन मे एक प्रति और है।

२८६४. प्रति सं० ७। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १८६४ श्रावण बुदी ६। वे० सं० ३५२। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है। संस्कृत मे कही शब्दार्थ भी है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३५३) और है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ६ प्रतियां (वे० सं० १२८५, १६५४, १६५५, १६५६, १६५७, ६०८, ६१७, ६१८) ख भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २२२, ४०८) छ तथा ज भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ६०, ३५३ और है। अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ११७७, १२६६, १२६७) अपूर्ण। च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४०६, ४१०) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६) तथा ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३४५, ३४८, ३४६) और है।

ये सभी प्रतियां अपूर्ण है।

२८६५. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर। पत्र सं० १७। आ० ११½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०१। क भण्डार।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है।

२८६६ प्रति सं० २। पत्र सं० ८ से ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४७। ज भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२८६७. सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि। पत्र सं० १७३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ८६। छ भण्डार।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है।

२८६८. प्रति सं० २। पत्र सं० १७८। ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७। वे० सं० ३५१। ज भण्डार।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२८६९. सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि। पत्र सं० १६०। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल सं० १६५६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७९५। क भण्डार।

२८७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६ से ११६। ले० काल सं० १६५७। वे० सं० २६४। छ भण्डार।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य हर्षकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी।

२८७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७२। ले० काल सं० १८२८। वे० सं० २८३। छ भण्डार।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी। पत्र जीर्ण हैं।

२८७२. प्रति सं० ४ पत्र सं० ३। ले० काल सं० १६९१। वे० सं० १९४३। ट भण्डार।

विशेष—इनके अतिरिक्त छ च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १०५५, ३९८ तथा २०६४) और है।

२८७३. सारस्वतदशाध्यायी……। पत्र सं० १०। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७९८ वैशाख बुदी ११। वे० सं० १३७। छ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी।

२८७४. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका……। पत्र सं० १६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४९। क भण्डार।

२८७५. **सिद्धान्तबिन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती** । पत्र सं० २८ । आ० १०¾×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७४२ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीविश्वेश्वर सरस्वती भगवत्पाद शिष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचितः सिद्धान्तबिंदुस्समाप्तः ।। संवत् १७४२ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्या बुधवासरे बगरूनाम्निनगरे मिश्र श्री श्यामलस्य पुत्रेण भगवन्नाम्ना सिद्धान्तबिंदुरलेखि । शुभमस्तु ।।

२८७६. **सिद्धान्तमंजूषिका—नागेशभट्ट** । पत्र सं० ६३ । आ० १२¾×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३४ । ज भण्डार ।

२८७७. **सिद्धान्तमुक्तावली—पचानन भट्टाचार्य** । पत्र सं० ७० । आ० १२×५¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १८३३ भादवा बुदी ३ । वे० सं० ३०८ । ज भण्डार ।

२८७८. **सिद्धान्तमुक्तावली** ……। पत्र सं० ७० । आ० १२×५¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल सं० १७०५ चैत सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । ज भण्डार ।

२८७९. **हैमनीबृहद्वृत्ति**……। पत्र सं० ५४ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । भ्र भण्डार ।

२८८०. **हैमव्याकरणवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य** । पत्र सं० २४ । आ० १२×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४४ । ट भण्डार ।

२८८१. **हैमीव्याकरण—हेमचन्द्राचार्य** । पत्र सं० ८३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५८ ।

विशेष—बीच में अधिकांश पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है ।



कोश

२८८२. अनेकार्थध्वनिमंजरी—महीक्षपण कवि। पत्र सं० ११। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १४। क भण्डार।

२८८३. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी……। पत्र सं० १४। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६१५। ट भण्डार।

विशेष— तृतीय अधिकार तक पूर्ण है।

२८८४. अनेकार्थमञ्जरी—नन्ददास। पत्र सं० २१। आ० ८½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१८। झ भण्डार।

२८८५. अनेकार्थशत—भट्टारक हर्षकीर्ति। पत्र सं० २३। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल सं० १६६७ वैशाख बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १५। क भण्डार।

२८८६. अनेकार्थसंग्रह—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० ४। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल सं० १६६९ अषाढ बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३८। क भण्डार।

२८८७. अनेकार्थसंग्रह……। पत्र सं० ४१। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४। च भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है।

२८८८. अभिधानकोष—पुरुषोत्तमदेव। पत्र सं० ३४। आ० ११½×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११७१। अ भण्डार।

२८८९. अभिधानचिंतामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०५। अ भण्डार।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है।

२८९०. प्रति सं० २। पत्र सं० २३५। ले० काल सं० १७३० आषाढ सुदी १०। वे० सं० ३६। क भण्डार।

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है। महाराणा राजसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

२८९१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० सं० ३७ । क भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञवृत्ति है ।

२८९२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ से १३४ । ले० काल सं० १७८० आसोज सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ५ । च भण्डार ।

२८९३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १९२९ आषाढ बुदी २ । वे० सं० ८५ । ज भण्डार ।

२८९४. प्रति सं० ६ । पत्र सं ५८ । ले० काल सं० १८१३ वैशाख सुदी १३ । वे० सं० १११ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० भीमराज ने प्रतिलिपि की थी ।

२८९५. अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि । पत्र सं० २६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८२७ । अ भण्डार ।

२८९६. अभिधानसार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० २३ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८ । ख भण्डार ।

विशेष—देवकाण्ड तक है ।

२८९७. अमरकोश—अमरसिंह । पत्र सं० २९ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल सं० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २०७५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम लिंगानुशासन भी है ।

२८९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३५ । वे० सं० १९११ । अ भण्डार ।

२८९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० ९२२ । अ भण्डार ।

२९००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ से ६१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ९२१ । अ भण्डार ।

२९०१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १८९४ । वे० सं० २४ । क भण्डार ।

२९०२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३ से ६१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० सं० १२ । अपूर्ण । ख भण्डार ।

२६०३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी ३ । वे० सं० २७ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर में मालीराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८१८ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी । सं० १८२२ आषाढ सुदी २ मे ३) रु० देकर पं० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली ।

२६०६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६१ से १३१ । ले० काल सं० १८३० आषाढ बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—मोतीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६०७ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८८१ वैशाख सुदी १५ । वे० सं० ३४४ । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ टीका भी दी हुई है ।

२६०८. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७६६ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ७ । ञ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २१ प्रतियां (वे० सं० ६३८, ८०४, ७६१, ६२३, ११६६, ११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७, १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६० १८५१, २१०५) क भण्डार मे ५ प्रतियां (वे० सं० २१, २२, २३, २५, २६) ख भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं ६, १०, ११, २६६ २६६) ङ भण्डार में ११ प्रतियां (वे० सं० १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६) च भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १३६ १३६, १४१, २४ [क]) ज भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५६, ३५०, ३५२, ६२) झ भण्डार १ प्रति (वे० सं० ६५), तथा ट भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६) और हैं ।

२६०६. अमरकोषटीका—भानुजीदीक्षित । पत्र सं० ११४ आ० १०×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । च भण्डार ।

विशेष—बघेल वंशोद्भव श्री महीधर श्री कीर्तिसिंहदेव की आज्ञा से टीका लिखी गई ।

२६१०. प्रति स० २ । पत्र सं० २४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७ । च भण्डार ।

२६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १८८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है ।

२६१२. एकाक्षरकोश—क्षपणक । पत्र सं० ४ । आ० ११×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

२६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ५१ । च भण्डार ।

२६१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६०३ चैत बुदी ६ । वे० सं० १५५ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुखजी ने अपने शिष्य के प्रतिबोधार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२६१५. एकाक्षरीकोश—वररुचि । पत्र सं० २ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७१ । अ भण्डार ।

२६१६. एकाक्षरीकोश……। पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३०० । अ भण्डार ।

२६१७. एकाक्षरनाममाला ……। पत्र सं० ४ । आ० १२३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले० काल सं० १६०३ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा रामसिंह के शासनकाल में भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के समय मे पं० सदासुखजी के शिष्य फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६१८. त्रिकाण्डशेषसूची (अमरकोश)—अमरसिंह । पत्र स० ३४ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । च भण्डार ।

विशेष—अमरकोश के काण्डो में आने वाले शब्दों की श्लोक संख्या दी हुई है । प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भिक अंश भी दिया हुआ है ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० १४२, १४३, १४५) और हैं ।

२६१६. त्रिकाण्डशेषाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ४३ । म्रा० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८० । क भण्डार ।

२६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । च भण्डार ।

२६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६०३ म्रासोज बुदी ६ । वे० सं० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० सदासुखजी के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थ. ।

२६२२. नाममाला—धनंजय । पत्र सं० १६ । म्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । म्र भण्डार ।

२६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ फागुण सुदी १ । वे० सं० २८२ । म्र भण्डार ।

विशेष—पाटोदी के मन्दिर में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके म्रतिरिक्त म्र भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १४, १०७३, १०८६) म्रौर हैं ।

२६२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १३०६ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२२) म्रौर है ।

२६२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० २४६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० मारामल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके म्रतिरिक्त इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६६) तथा ज भण्डार में (वे० सं० २७६) की एक प्रति म्रौर है ।

२६२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १८५ । ञ भण्डार ।

२६२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ५२२ । ञ भण्डार ।

२६२८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १७ से ३६ । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके म्रतिरिक्त म्र भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०७३, १४, १०८६) क, छ तथा ज भण्डार में १–१ प्रति (वे० सं० ३२२, २६६, २७६) म्रौर हैं ।

२६२६. नाममाला……। पत्र सं० १२ । आ० १०×५½ इंच। भाषा–संस्कृत । विषय–कोष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२८ । ट भण्डार ।

२६३०. नाममाला—बनारसीदास । पत्र सं० १४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

२६३१ बीजक(कोश)……। पत्र सं० २३ । आ० ६½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००४ । अ भण्डार ।

विशेष—विमलहंसगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३२. मानमञ्जरी—नंददास । पत्र सं० २२ । आ० ८×६ इंच । भाषा–हिन्दी विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । क भण्डार ।

विशेष—चन्द्रभान बज ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३३. मेदिनीकोश । पत्र सं० ६४ । आ० १०¾×४½ इंच। भाषा–संस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । क भण्डार ।

२६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० २७८ । च भण्डार ।

२६३५. रूपमञ्जरीनाममाला—गोपालदास सुत रूपचन्द । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल सं० १६४४ । ले० काल सं० १७८० चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में नाममाला की तरह श्लोक हैं ।

२६३६. लघुनाममाला—हर्षकीर्त्तिसूरि । पत्र सं० २३ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ११२ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४६८ । व्य भण्डार ।

२६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से १६, ३७ से ४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८४ । ट भण्डार ।

२६३६. लिंगानुशासन……। पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—५ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२६४०. लिंगानुशासन—हेमचन्द्र। पत्र सं० १०। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०। ञ भण्डार।

विशेष—कहीं २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई हैं।

२६४१. विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर। पत्र सं० १०१। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल सं० १७९६ आसोज सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ६६३। क भण्डार।

२६४२. प्रति सं० २। पत्र सं० १९। ले० काल ×। वे० सं० ३३२। क भण्डार।

२६४३. विश्वलोचन—धरसेन। पत्र सं० १८। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल सं० १५६६। पूर्ण। वे० सं० २७५। च भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है।

२६४४. विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका·········। पत्र सं० २६। आ० १०×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८७। अ भण्डार।

२६४५. शतक·········। पत्र सं० ६। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–कोश। र० काल × ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६९८। क भण्डार।

२६४६. शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर। पत्र सं० १६। आ० १०×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७७। ख भण्डार।

२६४७. शब्दरत्न·········। पत्र सं० १६६। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४६। ञ भण्डार।

२६४८. शारदीनाममाला·········। पत्र सं० २४ से ४७। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ९८३। अ भण्डार।

२६४९. शिलोञ्छकोश—कवि सारस्वत। पत्र सं० १७। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। (तृतीयखंड तक) वे० सं० ३४३। च भण्डार।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है।

कवेरमर्रासिंहस्य कृतिरेषाति निर्मला।
श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिंगानुशासनम्।
पद्मानिबोधयत्यर्कः शास्त्राणि कुरुते कविः
तत्सौरभनभस्वंतः संतस्तन्वन्तितद्गुणाः॥

सूनेष्वमरसिंहेन, नामलिंगेषु शालिषु ।
एष वाङ्मयवप्रेषु शिलोंछ क्रियते मया ॥

२६५०. सर्वार्थसाधनी—भट्टवररुचि । पत्र सं० २ से २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल सं० १५६७ मंगसिर बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० २१२ । ख भण्डार ।

विशेष—हिसार पिरोज्यकोट में रुद्रपल्लीयगच्छ के देवसुंदर के पट्ट में श्रीजिनदेवसूरि ने प्रतिलिपि की थी ।



ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहंत केवली पाशा............ । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा- संस्कृत । वषय–ज्योतिष । र० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर में हुई थी ।

२६५२. अरिष्ट कर्ता .... । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष ० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—६० श्लोक हैं ।

२६५३. अरिष्टाध्याय............ । पत्र सं० ११ । आ० ८×५ । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवणराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से आगे भारतीस्तोत्र दिया हुआ है ।

२६५४. अबजद केवली........ । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । ञ भण्डार ।

२६५५. उच्चग्रह फल........ । पत्र सं० १ । आ० १०३/४×७१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

२६५६. करण कौतूहल............ । पत्र सं० ११ । आ० १०१/२×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । ख भण्डार ।

२६५७. करलक्खण........ । पत्र सं० ११ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । माणिक्यचन्द्र ने वृन्दावन में प्रतिलिपि की ।

२६५८. कर्पूरचक्र— । पत्र सं० १ । आ० १४१/२×११ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २११४ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्र अवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारों ओर देश चक्र है तथा उनका फल है । पं० खुशाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४० । वे० सं० २१६६ अ भण्डार ।

विशेष—मिश्र धरणीधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६६०. कर्मराशि फल (कर्म विपाक)……। पत्र सं० ३१ । आ० ८३/४×४ इंच । भाषा–संस्कृत विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण × । वे० सं० १६५१ । अ भण्डार ।

२६६१. कर्म विपाक फल……। पत्र सं० ३ । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–ज्योतिष र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । अ भण्डार ।

विशेष—राशियों के अनुसार कर्मों का फल दिया हुआ है ।

२६६२. कालज्ञान—। पत्र सं० १ । आ० ६×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१८ । अ भण्डार ।

२६६३. कालज्ञान……। पत्र सं० २ । आ० १०१/४×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८६ । अ भण्डार ।

२६६४. कौतुक लीलावती……। पत्र सं० ५ । आ० १०३/४×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६२ । वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

२६६५. क्षेत्र व्यवहार……। पत्र सं० २० । आ० ८१/२×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । ट भण्डार ।

२६६६. गर्गमनोरमा……। पत्र सं० ७ । आ० ७३/४×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० २१२ । ञ भण्डार ।

२६६७. गर्गसंहिता—गर्गऋषि । पत्र सं० ३ । आ० ११×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० ११६७ । अ भण्डार ।

२६६८. ग्रह दशा वर्णन……। पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० १७२७ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रहो की दशा तथा उपदशाओं के अन्तर एवं फल दिये हुए है ।

२६६९. ग्रह फल……। पत्र सं० ६ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२२ । ट भण्डार ।

२६७०. ग्रहलाघव—गणेश दैवज्ञ । पत्र सं० ४ । आ० १०३/४×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४ । ख भण्डार ।

२६७८. चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच……। पत्र सं० ५–२१। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८। ङ भण्डार।

विशेष—इसके आगे पंचव्रत प्रमाण लक्षण भी हैं।

२६७६. चमत्कारचिंतामणि……। पत्र सं० २–६। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० ×। १८१८ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ६३२। अ भण्डार।

२६८०. चमत्कारचिन्तामणि……। पत्र सं० २६। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७३०। ट भण्डार।

२६८१. छायापुरुषलक्षण……। पत्र सं० २। आ० ११×४¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सामुद्रिक शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४४। छ भण्डार।

विशेष—नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी।

२६८२. जन्मपत्रीग्रहविचार……। पत्र सं० १। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१३। अ भण्डार।

२६८३. जन्मपत्रीविचार……। पत्र सं० ३। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६१०। अ भण्डार।

२६८४. जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य। पत्र सं० २–२०। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८३१। अपूर्ण। वे० सं० १०४८। अ भण्डार।

विशेष—शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२६८५. जन्मफल……। पत्र सं० १। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२४। अ भण्डार।

२६८६ जातककर्मपद्धति……श्रीपति। पत्र सं० १४। आ० ११×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १६३८ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६००। अ भण्डार।

२६८७. जातकपद्धति—केशव। पत्र सं० १०। आ० ११×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७। ज भण्डार।

२६८८. जातकपद्धति……। पत्र सं० २६। आ० ८×६½। भाषा–संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२९८९. जातकाभरण—दैवज्ञढुंढिराज। पत्र सं० ४३। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १७३६ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ८९७। अ भण्डार।

विशेष—नागपुर में पं० सुखकुशलगणि ने प्रतिलिपि की थी।

२९९०. प्रति सं० २। पत्र सं० १००। ले० काल सं० १८४० कार्तिक सुदी ६। वे० सं० १५७। ञ भण्डार।

विशेष—भट्ट गंगाधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी।

२९९१. जातकालंकार……। पत्र सं० १ से ११। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४५। ट भण्डार।

२९९२. ज्योतिषरत्नमाला……। पत्र सं० ९ से २४। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९८३। अ भण्डार।

२९९३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० १५४। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२९९४. ज्योतिषमणिमाला……केशव। पत्र सं० ५ से २७। आ० ६३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०५। अ भण्डार।

२९९५. ज्योतिषफलग्रंथ……। पत्र सं० ९। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४। ज भण्डार।

२९९६. ज्योतिषसारभाषा—कृपाराम। पत्र सं० ३ से १३। आ० ६३×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८४१ कार्तिक बुदी १२। अपूर्ण। वे० सं० १५१३। भण्डार।

विशेष—फतेराम वैद्य ने नोनिधराम बज की पुस्तक से लिखा।

आदि भाग—(पत्र ३ पर)

अथ केंदरिया त्रिकोण घर को भेद—

केंदरियो चोथो भवन सपतम दसमो जान।
पंचम अरु नोमों भवन येह त्रिकोण बखान ॥६॥
तीजो षसटम ग्यारमो घर दसमो वर सेखि।
इन को उपचै कहत है सबै ग्रंथ में देखि ॥७॥

अन्तिम—

बरष लग्यो जा अंस में सोई दिन चित धारि।
वा दिन उतनी घडी जु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥

लगन लिखे तै गिरह जो जा घर बैठो आय।
ता घर के फल सुफल को कीजे मित्र बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार संपूर्ण।

२९९७. ज्योतिषसारलग्नचन्द्रिका—काशीनाथ। पत्र सं० ६३। आ० ६३⁄४×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८६३ पौष सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६३। ख भण्डार।

२९९८. ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र। पत्र सं० १६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८२। व्य भण्डार।

विशेष—मूलग्रन्थकर्त्ता सागरचन्द्र हैं।

२९९९. ज्योतिषशास्त्र……। पत्र सं० ११। आ० ५×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०१। क भण्डार।

३०००. प्रति सं० २। पत्र सं० ३३। ले० काल ×। वे० सं० ५२१। व्य भण्डार।

३००१. ज्योतिषशास्त्र……। पत्र सं० ५। आ० १०×५३⁄४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९८४। ट भण्डार।

३००२. ज्योतिषशास्त्र……। पत्र सं० ५८। आ० ९×६१⁄२ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १७९८ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० १११५। व्य भण्डार।

विशेष—ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है।

प्रारम्भ में कुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी संख्या २२ है। इनमें मुख्यरूप से निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा बिशनसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह	जन्म सं० १७४५ मंगसिर
महाराजा बिशनसिंह के द्वितीय पुत्र बिजयसिंह	जन्म सं० १७४७ चैत्र सुदी ६
महाराजा सवाई जयसिंह की राणी गौड़ि के पुत्र	सं० १७६६
रामचन्द्र (जन्म नाम भांकूराम)	सं० १७१५ फागुण सुदी २
दौलतरामजी (जन्म नाम बेगराज)	सं० १७४६ आषाढ सुदी १४

३००३. ताजिकसमुच्चय········| पत्र सं० १५ । आ० ११×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वे० सं० २५५ । ख भण्डार

विशेष—बडा नरायने में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे जीवणराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३००४ तात्कालिकचन्द्रशुभाशुभफल········| पत्र सं० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय- ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

३००५ त्रिपुरबंधमुहूर्त········| पत्र सं० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८८ । अ भण्डार ।

३००६. त्रैलोक्यप्रकाश········| पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ६ तक दूसरी प्रति के पत्र है । २ से १४ तक वाली प्रति प्राचीन है । दो प्रतियो का सम्मिश्रण है ।

३००७. दृशोठनमुहूर्त्त········| पत्र सं० ३ । आ० ७¾×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७२५ । अ भण्डार ।

३००८. नक्षत्रविचार········| पत्र सं० ११ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वे० सं० २७६ । झ भण्डार ।

विशेष—छींक आदि विचार भी दिये हुये हैं ।

निम्नलिखित रचनायें और हैं—

सज्जनप्रकाश दोहा—	कवि ठाकुर	हिन्दी [१० कवित्त]
मित्रविषय के दोहे—		हिन्दी [४४ दोहें है]
रक्तगुञ्जाकल्प —		हिन्दी [ले० काल सं० १६६७]

विशेष—लाल चिरमी का सेवन बताया गया है जिसके साथ लेने से क्या असर होता है इसका वर्णन ३६ दोहों में किया गया है ।

३००९. नक्षत्रवेधपीडाज्ञान········| पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६४ । अ भण्डार ।

३०१०. नक्षत्रसत्र········| पत्र सं० ३ से २४ । आ० ६×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८०१ मंगसिर सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १७३६ । अ भण्डार

३०११. नरपतिजयचर्या—नरपति। पत्र सं० १४८ । आ० १२३×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल सं० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४६ । अ भण्डार ।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं हैं ।

३०१२. नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८१० मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १७२ । अ भण्डार ।

३०१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । अ भण्डार ।

३०१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी ३ । वे० सं० ६५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है ।

३०१५. निमित्तज्ञान (भद्रबाहु संहिता)—भद्रबाहु । पत्र सं० ७७ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७ । अ भण्डार ।

३०१६. निषेकाध्यायवृत्ति ·······। पत्र सं० १८ । आ० ८×६३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४८ । ट भण्डार ।

विशेष—१८ से आगे पत्र नही हैं ।

३०१७. नीलकंठताजिक—नीलकंठ । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०५८ । अ भण्डार ।

३०१८. पञ्चागप्रबोध········। पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३५ । ट भण्डार ।

३०१९. पंचांग—चराडू । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न वर्षों के पंचाग हैं ।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ९०, ९१, ९३, ९७, ९८ ।

३०२०. पंचांग·······। पत्र सं० १३ । आ० ७३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १९२७ । पूर्ण । वे० सं०, २४७ । ख भण्डार ।

३०२१. पंचांगसाधन—गणेश (केशवपुत्र) । पत्र सं० ५२ । आ० ९×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ । वे० सं० १७२१ । ट भण्डार ।

३०२२. पल्यविचार……। पत्र सं० ६। आ० ६३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५। ज भण्डार।

३०२३. पल्यविचार……। पत्र सं० २। आ० ६१/२×४१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–शकुनशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३६२। अ भण्डार।

३०२४. पाराशरी……। पत्र सं० ३। आ० १३×५३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३२। ज भण्डार।

३०२५. पाराशरीसज्जनरंजनीटीका……। पत्र सं० २३। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८३६ आसोज सुदी २। पूर्ण वे० सं० ६३३। अ भण्डार।

३०२६. पाशाकेवली—गर्गमुनि। पत्र सं० ७। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्त शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८७१। पूर्ण। वे० सं० ६२५। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शकुनावली भी है।

३०२७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७३८। जीर्ण। वे० सं० ६७६। अ भण्डार।

विशेष—ऋषि मनोहर ने प्रतिलिपि की थी। श्रीचन्द्रसूरि रचित नेमिनाथ स्तवन भी दिया हुआ है।

३०२८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० ६२३। अ भण्डार।

३०२९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८१७ पौष सुदी १। वे० सं० ११८। छ भण्डार।

विशेष—निवासपुरी (सांगानेर) मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे सवाईराम के शिष्य नौनगराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०३०. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० स० ११८। छ भण्डार।

३०३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८६६ वैशाख बुदी १२। वे० सं० ११४। छ भण्डार।

विशेष—दयाचन्द गर्ग ने प्रतिलिपि की थी।

३०३२. पाशाकेवली—ज्ञानभास्कर। पत्र सं० ५। आ० ६×५३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्त शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०। ख भण्डार।

३०३३. पाशाकेवली……। पत्र सं० ११। आ० ६×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्तशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४६। अ भण्डार।

३०३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १७७५ फागुण बुदी १०। वे० सं० २०१६। अ भण्डार।

विशेष—पांडे दयाराम सोनी ने आमेर में मल्लिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त श्र भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०८) छ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८२४) और हैं।

३०३५. पाशाकेवली·········| पत्र सं० ५ | आ० ११३×५ इञ्च | भाषा–हिन्दी विषय–निमित्तशास्त्र | र० काल × | ले० काल सं० १८४१ | पूर्ण | वे० सं० ३६५ | श्र भण्डार |

विशेष—पं० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३०३६. प्रति सं० २ | पत्र सं० ५ | ले० काल × | वे० सं० २५७ | ज भण्डार |

३०३७. प्रति सं० ३ | पत्र सं० २६ | ले० काल × | वे० सं० ११६ | ञ भण्डार |

३०३८. पाशाकेवली·········| पत्र सं० १ | आ० ६×५ इञ्च | भाषा–हिन्दी | विषय–निमित्त शास्त्र | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १८५६ | श्र भण्डार |

३०३९. पाशाकेवली·········| पत्र सं० १३ | आ० ८३×५३ इञ्च | भाषा–हिन्दी गद्य | विषय–निमित्त शास्त्र | र० काल × | ले० काल सं० १८५० | अपूर्ण | वे० सं० ११८ | छ भण्डार |

विशेष—विशनलाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी | प्रथम पत्र नहीं हैं |

३०४०. पुरश्चरणविधि·········| पत्र सं० ४ | आ० १०×४३ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय–ज्योतिष | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ६३४ | श्र भण्डार |

विशेष—प्रति जीर्ण है | पत्र भीग गये हैं जिसमे कई जगह पढा नही जा सकता |

३०४१. प्रश्नचूडामणि·········| पत्र सं० १३ | आ० ६×४½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय–ज्योतिष | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १३६६ | श्र भण्डार |

३०४२. प्रति सं० २ | पत्र सं० १६ | ले० काल सं० १८०८ आसोज सुदी १२ | अपूर्ण | वे० सं० १४५ | छ भण्डार |

विशेष—तीसरा पत्र नहीं है विजैराम अजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी |

३०४३ प्रश्नविद्या·········| पत्र सं० २ से ५ | आ० १०×४ इञ्च | भाषा–संस्कृत | विषय–ज्योतिष | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १३३ | छ भण्डार |

३०४४. प्रश्नविनोद·········| पत्र सं० १६ | आ० १०×४३ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–ज्योतिष | र० काल × | पूर्ण | वे० सं० २८४ | छ भण्डार |

३०४५. प्रश्नमनोरमा—गर्ग | पत्र सं० ३ | आ० १३×४ इञ्च | भाषा–संस्कृत | विषय–ज्योतिष | र० काल × | ले० काल सं० १६२८ भादवा सुदी ७ | वे० सं० १७४१ | ट भण्डार |

३०४६. प्रश्नमाला........। पत्र सं० १० । आ० ६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६५ । अ भण्डार ।

३०४७. प्रश्नसुगनावलिरमल........ । पत्र सं० ४ । आ० ६३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । म भण्डार ।

३०४८. प्रश्नावलि........। पत्र सं० ७ । आ० ६×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

३०४९. प्रश्नसार........। पत्र सं० १६ । आ० १२३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६२६ फागुरा बुदी १४ । वे० सं० ३३६ । ज भण्डार ।

३०५०. प्रश्नसार—हयग्रीव । पत्र सं० १२ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ३३३ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्रों पर कोष्ठक बने हैं जिन पर अक्षर लिखे हुये हैं उनके अनुसार शुभाशुभ फल निकलता है ।

३०५१. प्रश्नोत्तरमाणिक्यमाला—संग्रहकर्त्ता ब्र० ज्ञानसागर । पत्र सं० २७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

३०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला महाग्रन्थे भट्टारक श्री चरणारविंद मधुकरोपमा ब्र० ज्ञानसागर संग्रहीते श्री जिनमाश्रित प्रथमोधिकारः ।। प्रथम पत्र नहीं है ।

३०५३. प्रश्नोत्तरमाला........। पत्र सं० २ से २२ । आ० ७३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८२४ । अपूर्ण । वे० सं० २०१८ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री बलदेव बालाहेडी वाले ने बाबा बालमुकुन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३०५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ आसोज सुदी ५ । वे० सं० ११४ । ख भण्डार ।

३०५५. भवानीवाक्य........। पत्र सं० ५ । आ० ६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८२ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १६०५ से १६२६ तक के प्रतिवर्ष का भविष्य फल दिया हुआ है ।

३०५६. भड्डली········ | पत्र सं० ११ | आ० ६×६ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-ज्योतिष | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २४० | छ भण्डार |

विशेष—मेघ गर्जना, बरसना तथा बिजली आदि चमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं।

३०५७. भास्वती—पद्मनाभ | पत्र सं० ६ | आ० ११×३½ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-ज्योतिष | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २६४ | च भण्डार |

३०५८. प्रति सं० २ | पत्र सं० ७ | ले० काल × | वे० सं० २६५ | च भण्डार |

३०५९. भुवनदीपिका······· | पत्र सं० २२ | आ० ७½×४½ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-ज्योतिष | र० काल × | ले० काल सं० १६१५ | पूर्ण | वे० सं० २४१ | ज भण्डार |

३०६०. भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि | पत्र सं० ५८ | आ० १०½×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-ज्योतिष | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ८९५ | अ भण्डार |

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३०६१. प्रति सं० २ | पत्र सं० ७ | ले० काल सं० १८५६ फागुण सुदी १० | वे० सं० ६१२ | अ भण्डार |

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३०६२. प्रति सं० ३ | पत्र सं० २० | ले० काल × | वे० सं० २६६ | च भण्डार |

विशेष—पत्र १७ से आगे कोई अन्य ग्रन्थ है जो अपूर्ण है।

३०६३. भृगुसंहिता········ | पत्र सं० २० | आ० ११×७ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-ज्योतिष | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ५६४ | क भण्डार |

विशेष—प्रति जीर्ण है।

३०६४. मुहूर्त्तचिन्तामणि········ | पत्र सं० १६ | आ० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-ज्योतिष | र० काल × | ले० काल सं० १८८६ | अपूर्ण | वे० सं० १४७ | ख भण्डार |

३०६५. मुहूर्त्तमुक्तावली········ | पत्र सं० ६ | आ० १०×४½ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-ज्योतिष | र० काल × | ले० काल सं० १८१६ कार्त्तिक बुदी ११ | पूर्ण | वे० सं० १३६४ | अ भण्डार |

३०६६. मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिव्राजकाचार्य | पत्र सं० ६ | आ० ६½×६½ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-ज्योतिष | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २०१२ | अ भण्डार |

विशेष—सब कार्यों के मुहूर्त्त का विवरण है।

३०६७. प्रति सं० २ | पत्र सं० ६ | ले० काल सं० १८७१ वैशाख बुदी १ | वे० सं० १४८ | ख भण्डार |

३०६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८२ मार्गशीर्ष बुदी ३ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाई नगर में मुनि चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. मुहूर्त्तमुक्तावलि……। पत्र सं० १५ से २६ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४९ । ख भण्डार ।

३०७०. मुहूर्त्तमुक्तावली… …। पत्र सं० ९ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८१६ कार्त्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

३०७१. मुहूर्त्तदीपक—महादेव । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७९७ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० डूंगरसी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

३०७२. मुहूर्त्तसंग्रह……। पत्र सं० २२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५० । ख भण्डार ।

३०७३. मेघमाला……। पत्र सं० २ से १८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८९६ । अ भण्डार ।

विशेष—वर्षा आने के लक्षणों एवं कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है । श्लोक सं० ३४९ है ।

३०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६१५ । अ भण्डार ।

३०७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७८७ । ट भण्डार ।

३०७६. योगफल……। पत्र सं० १९ । आ० ६३×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८३ । च भण्डार ।

३०७७. रत्नदीपक—गणपति । पत्र सं० २३ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६० । ख भण्डार ।

३०७८. रत्नदीपक……। पत्र सं० ५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६११ । अ भण्डार ।

विशेष—जन्मपत्री विचार भी है ।

३०७९. रमलशास्त्र—पं० चिंतामणि । पत्र सं० १५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५४ । ङ भण्डार ।

३०८०. रमलशास्त्र……। पत्र सं० १६ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३२ । अ भण्डार ।

३८८१. रमलज्ञान········। पत्र सं० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा- हिन्दी गद्य। विषय-निमित्तशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० ११८। छ भण्डार।

विशेष—आदिनाथ चैत्यालय में आचार्य रतनकीर्त्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिष्य नौनदराम ने प्रतिलिपि की थी।

३८८२. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ४४। ले० काल सं० १८७८ आषाढ बुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० १५६४। ट भण्डार।

३८८३. राजादिफल········। पत्र सं० ४। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८२१। पूर्ण। वे० सं० १६२। ख भण्डार।

३८८४. राहुफल········। पत्र सं० ८। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ६६६। च भण्डार।

३८८५. रुद्रज्ञान ······। पत्र सं० १। आ० ६½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७५७ चैत्र। पूर्ण। वे० सं० २११६। अ भण्डार।

विशेष—देधणाग्राम मे लालसागर ने प्रतिलिपि की थी।

३८८६. लग्नचन्द्रिकाभाषा········। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४८। झ भण्डार।

३८८७. लग्नशास्त्र—वर्द्धमानसूरि। पत्र सं० ३। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६। ज भण्डार।

३८८८. लघुजातक—भट्टोत्पल। पत्र सं० १७। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १६३। व भण्डार।

३८८९. वर्षबोध········। पत्र सं० ५०। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६३। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है। वर्षफल निकालने की विधि दी हुई है।

३८९०. विवाहशोधन········। पत्र सं० २। आ० ११×१ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१९२। अ भण्डार।

३८९१. बृहज्जातक—भट्टोत्पल। पत्र सं० ४। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८०२। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य भारमल्ल ने प्रतिलिपि की थी।

३०९२. षट्पंचासिका—वराहमिहर। पत्र सं० ९ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७९६ । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । क भण्डार ।

३०९३. षट्पंचासिकावृत्ति—भट्टोत्पल । पत्र सं० २२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७८८ । अपूर्ण । वे० सं० ९४४ । अ भण्डार

विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साह पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी। इसमे १, २, ८, ११ पत्र नहीं हैं।

३०९४. शकुनविचार……। पत्र सं० ५ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

३०९५. शकुनावली……। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९५८ । अ भण्डार ।

विशेष—५२ अक्षरों का यंत्र दिया हुआ है ।

३०९६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८९६ । वे० सं० १०२० । अ भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०९७. शकुनावली—गर्ग । पत्र सं० २ से ५ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम पाशाकेवली भी है ।

३०९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । अ भण्डार

विशेष—अमरचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० २७९ । अ भण्डार

३१००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ से ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०९८ । ट भण्डार ।

३१०१. शकुनावली—अभजद । पत्र सं० ७ । आ० ११×५१ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८९२ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २५८ । ज भण्डार

३१०२. शकुनावली……। पत्र सं० १३ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-पुरानी हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४ । छ भण्डार

३१०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७८१ सावन बुदी १४ । वे० सं० ११४ । छ भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर में राणा संग्रामसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी। २० कमलाकार चक्र हैं जिनमें २० नाम दिये हुये हैं। पत्र ५ से आगे प्रश्नों का फल दिया हुआ है।

३१०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ३४०। ञ भण्डार

३१०५. शकुनावली ……। पत्र सं० ५ से ८। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८९०। अपूर्ण। वे० सं० १२५८। अ भण्डार।

३१०६. शकुनावली……। पत्र सं० २। आ० १२×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-शकुनशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८०८ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १९६६। अ भण्डार।

विशेष—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है।

३१०७. शनिश्चरदृष्टिविचार……। पत्र सं० १। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४९। अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिचक्र में से शनिश्चर दृष्टि विचार है।

३१०८. शीघ्रबोध—काशीनाथ। पत्र सं० ११ से ३७। आ० ८३⁄४×४१⁄२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६४३। अ भण्डार।

३१०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० १८६। ख भण्डार।

विशेष—पं० माणिकचन्द्र ने चोढीग्राम में प्रतिलिपि की थी।

३११०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३८। ले० काल सं० १८४८ आसोज सुदी ६। वे० सं० १३८। छ भण्डार।

विशेष—संपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३१११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७१। ले० काल सं० १८६८ आषाढ बुदी १४। वे० सं० २५५। छ भण्डार।

विशेष—आ० रत्नकीर्त्ति के शिष्य पं० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ९०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८७) छ, ञ तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३८, १९२ तथा २११६) और हैं।

३११२. शुभाशुभयोग ……। पत्र सं० ७। आ० ९३⁄४×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८७५ पौष सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १८८। ख भण्डार।

विशेष—पं० हीरालाल ने आंबनेर में प्रतिलिपि की थी।

३११३. संक्रांतिफल……। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०१। ख भण्डार।

३११४. संक्रांतिफल……। पत्र सं० १६ । आ० ६३/४×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १६०१ भादवा बुदी ११ । वे० सं० २१३ । ज भण्डार

३११५. संक्रांतिवर्णन……। पत्र सं० २ । आ० ६×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४६ । अ भण्डार

३११६. समरसार—रामवाजपेय । पत्र सं० १८ । आ० १३×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७१३ । पूर्ण । वे० सं० १७३२ । ट भण्डार

विशेष—योगिनीपुर (दिल्ली) में प्रतिलिपि हुई । स्वर शास्त्र से लिया हुआ है ।

३११७. संवत्सरी विचार……। पत्र सं० ८ । आ० ६×६३/४ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । झ भण्डार

विशेष—सं० १६५० से सं० २००० तक का वर्षफल है ।

३११८. सामुद्रिकलक्षण……। पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । स्त्री पुरुषों के अंगों के शुभाशुभ लक्षण आदि दिये है । र० काल × । ले० काल सं० १५६४ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २८१ । व भण्डार

३११९. सामुद्रिकविचार……। पत्र सं० १४ । आ० ८३/४×४३/४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७६१ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ६८ । ज भण्डार ।

३१२०. सामुद्रिकशास्त्र—श्रीनिधिसमुद्र । पत्र सं० ११ । आ० १२×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—अंत में हिन्दी मे १३ शृङ्गार रस के दोहे है तथा स्त्री पुरुषों के अंगो के लक्षण दिये है ।

३१२१. सामुद्रिकशास्त्र……। पत्र सं० ६ । आ० १४×४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–निमित्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८४ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ ८ तक संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है ।

३१२२. सामुद्रिकशास्त्र……। पत्र सं० ४१ । आ० ८१/२×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ ज्येष्ठ सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० ११०६ । अ भण्डार ।

विशेष—स्वामी चेतनदास ने गुमानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । २, ३, ४ पत्र नही हैं ।

३१२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७६० फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नही है ।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र .... । पत्र सं० ८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त । र० काल ×। लि० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

३१२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४७ । अ भण्डार ।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र .... । पत्र सं० १४ । आ० ८×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-निमित्त । र० काल × । लि० काल सं० १६०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० २७७ । म्ह भण्डार ।

३१२७. सारणी .... । पत्र सं० ४ से १३४ । आ० १२×४½ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-ज्योतिष र० काल × । लि० काल सं० १७१६ भादवा बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७) और है ।

३१२८. साराबली .... । पत्र सं० १ । आ० ११×३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२५ । अ भण्डार ।

३१२६. सूर्यगमनविधि .... । पत्र सं० ५ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गणित भाग दिया है ।

३१३०. सोमउत्पत्ति .... । पत्र सं० २ । आ० ८¾×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । लि० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वे० स० १३८६ । अ भण्डार ।

३१३१. स्वप्नविचार .... । पत्र सं० १ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्तशास्त्र । र० काल × । लि० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६०६ । अ भण्डार ।

३१३२. स्वप्नाध्याय .... । पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । लि० काल × पूर्ण । वे० सं० २१४७ । अ भण्डार ।

३१३३. स्वप्नावली—देवनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×७½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । लि० काल सं० १६५८ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । क भण्डार ।

३१३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । लि० काल × । वे० सं० ८३७ । क भण्डार ।

३१३५. स्वप्नावलि .... । पत्र सं० २ । आ० १०×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्तशास्त्र । र० काल × । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३५ । क भण्डार ।

३१३६. होराज्ञान .... । पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । र० काल × । लि० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ । अ भण्डार ।

विषय-आयुर्वेद

३१३७. अजीर्णरसमञ्जरी ……। पत्र सं० ५। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १७८८। पूर्ण। वे० सं० १०५१। अ भण्डार।

३१३८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १३६। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३१३९. अजीर्णमञ्जरी—काशीराज। पत्र सं० ५। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८६। ख भण्डार।

३१४०. अमृतसागर……। पत्र सं० ४०। आ० ११½×४¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४०। अ भण्डार।

३१४१. अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र सं० ११७ से १६४। आ० १२½×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २९। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है।

३१४२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत मूल भी दिया है।

क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३०, ३१) अपूर्ण और हैं।

३१४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४ से १५०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३६। ट भण्डार।

३१४४. अर्थप्रकाश—लंकानाथ। पत्र सं० ४७। आ० १०½×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १९८४ सावरण बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८८। ञ भण्डार।

विशेष—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को शतक मे विभक्त किया गया है।

३१४५. आत्रेयवैद्यक—आत्रेयऋषि। पत्र सं० ४२। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८०७ भादवा बुदी १४। वे० सं० २३०। छ भण्डार।

३१४६. आयुर्वेदिक नुस्खों का संग्रह ……। पत्र सं० ११। आ० १०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३०। छ भण्डार।

३१४७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६३। ज भण्डार।

३१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८१ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नहीं हैं ।

३१४६. आयुर्वेदिक नुस्खे·········। पत्र सं० ४ से २० । आ० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं ।

३१५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—एक पत्र में एक ही नुस्खा है ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६०, २६६, २६६) और हैं ।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रंथ·········। पत्र सं० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ से ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

३१५३. अयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्र सं० २४ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५५ । अ भण्डार ।

३१५४. कक्षपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र सं० ४२ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है ।

३१५५. कल्पस्थान (कल्पव्याख्या)·········। पत्र सं० २१ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७०२ । पूर्ण । वे० सं० १८१७ । ट भण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसंहिता का एक भाग है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयायां संहितायां कल्पस्थानं समाप्तं ॥

३१५६. कालज्ञान·········। पत्र सं० ३ से १६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७८ । अ भण्डार ।

३१५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है ।

३१५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर सुदी ७ । वे० सं० ३३ । ख भण्डार ।

विशेष—भिवद् ग्राम में खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी । कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है ।

३१५९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

३१६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६७४ । ट भण्डार ।

३१६१. चिकित्सांजनम्—उपाध्यायविद्यापति । पत्र सं० २० । आ० ९×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

३१६२. चिकित्सासार·······। पत्र सं० ११ । आ० १३×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८० । क भण्डार ।

३१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५–३१ । । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१६४. चूर्णाधिकार·······। पत्र सं० १२ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । ट भण्डार ।

३१६५. ज्वरलक्षण·······। पत्र सं० ४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।

३१६६. ज्वरचिकित्सा·······। पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३७ । अ भण्डार ।

३१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ से ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६४ । ट भण्डार ।

३१६८. ज्वरतिमिरभास्कर—चामुंडराय । पत्र सं० ६४ । आ० १०×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८०६ माह सुदी १३ । वे० सं० १३०७ । अ भण्डार ।

विशेष—माधोपुर मे किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६९ त्रिशती—शार्ङ्गधर । पत्र सं० ३२ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६३१ । अ भण्डार ।

३१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १९१९ । वे० सं० २५३ । ञ भण्डार ।

विशेष—पद्य सं० ३३३ है ।

३१७१. नहनसीपाराविधि·······। पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०९ । अ भण्डार ।

३१७२. नाडीपरीक्षा·······। पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३१७३. निघंटु……। पत्र सं० २ से ८८ । पत्र सं० ११×५ । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७७ । अ भण्डार ।

३१७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ८६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८४ । अ भण्डार ।

३१७५. पंचप्ररूपणा……। पत्र सं० ११ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १५५७ । अपूर्ण । वे० सं० २०८० . ट भण्डार ।

विशेष—केवल ११वां पत्र ही है । ग्रन्थ में कुल १५८ श्लोक हैं ।

प्रशस्ति—सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८ । देवगिरिनगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्त्तमाने ब्र० आदू लिखितं कर्मक्षयनिमित्तं । ब्र० जालप जोगु पठनार्थं दत्तं ।

३१७६. पथ्यापथ्यविचार……। पत्र सं० ३ से ४४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ । ट भण्डार ।

विशेष—श्लोकों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । विषरोग पथ्यापथ्य अधिकार तक है । १६ से आगे के पत्रों में दीमक लग गई है ।

३१७७. पाराविधि……। पत्र सं० १ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

३१७८. भावप्रकाश—मानमिश्र । पत्र सं० २७५ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ बैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्रीमानमिश्रलटकमलतनयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भावप्रकाशः संपूर्ण ।

प्रशस्ति—संवत् १८८१ मिती बैशाख शुक्ला ६ शुक्रे लिखितमृषिणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये ।

३१७६. भावप्रकाश……। पत्र सं० १६ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२२ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है–

इति श्री जयु पंडित तनयदास पंडितकृते त्रिसंतिकायां रसायन वा जारण समाप्त ।

३१८०. भावसंग्रह……। पत्र सं० १० । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५६ । ट भण्डार ।

३१८१. मदनविनोद—मदनपाल । पत्र सं० १५ से ६२ । आ० ८३×३३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ ज्येष्ठ सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० १७६८ । जीर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १५ पर निम्न पुष्पिका है–

इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे अपादिवर्गः ।

पत्र १८ पर— यो राज्ञां मुकुटतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेन ग्रन्थेऽस्मिन् मदनविनोदे वटादि पंचमवर्गः ।

लेखक प्रशस्ति—

ज्येष्ठ शुक्ला १२ गुरौ तद्दिने लि·········शामजी विप्रकेन परोपकारार्थं । संवत् १७६५ विश्वेश्वर सन्निधौ····

मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघंटे प्रशस्ति वर्गश्चतुर्दश: ।।

३१८२. मंत्र व औषधि का नुस्खा·········। पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—तिल्ली काटने का मन्त्र भी है ।

३१८३. माधननिदान—माधव । पत्र सं० १२४ । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६५ । अ भण्डार ।

३१८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००१ । ट भण्डार ।

विशेष—पं० ज्ञानमेरु कृत हिन्दी टीका सहित है ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री पं० ज्ञानमेरु विनिर्मितो बालबोधसमासोक्षरार्थो मधुकोष परमार्थः ।

पं० धन्नालाल ऋषभचन्द रामचन्द की पुस्तक है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०८, १३४५, १३४७) ख भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १४३, १६५) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४) और है ।

३१८५. मानविनोद—मानसिंह । पत्र सं० ६७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४४ । ख भण्डार ।

प्रति हिन्दी टीका सहित है । ६७ से आगे पत्र नहीं हैं

३१८६. मुष्टिज्ञान—ज्योतिषाचार्य देवचन्द । पत्र सं० २ । आ० १०×४६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६१ । अ भण्डार ।

३१८७. योगचिन्तामणि—मनूसिंह। पत्र सं० १२ से ४८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१०२। ट भण्डार।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ से आगे नहीं हैं।

द्वितीय अधिकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा. रत्नराजगणि अंतेवासि मनूसिंहकृते योगचितामणि बालावबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीयः।

३१८८. योगचिन्तामणि……। पत्र सं० ४। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८०३। ट भण्डार।

३१८९. योगचिन्तामणि……। पत्र सं० १२ से १०५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ बुदी ७। अपूर्ण। वे० सं० २०८३। ट भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। जयनगर में फतेहचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३१९०. योगचिन्तामणि……। पत्र सं० २००। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४६। अ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है।

३१९१. योगचिन्तामणिबीजक……। पत्र सं० ५। आ० ९½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५६। व्य भण्डार।

३१९२. योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्त्ति। पत्र सं० १५८। आ० १०½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०४। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में संक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है।

३१९३. प्रति सं० २। पत्र सं० १२८। ले० काल ×। वे० सं० २२०६। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३१९४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४१। ले० काल सं० १७८१। वे० सं० १६७८। अ भण्डार।

३१९५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १५६। ले० काल सं० १८३४ आषाढ बुदी २। वे० सं० ८८। छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। सांगानेर में गोधो के चैत्यालय में पं० ईश्वरदास के चेले की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी।

३१९६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १७७९ वैशाख सुदी २। वे० सं० ९६। ज भण्डार।

विशेष—मालपुरा में जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३१९७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १७९६ ज्येष्ठ बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सटीक है । प्रथम दो पत्र नही हैं ।

३१९८. योगशत—वररुचि । पत्र सं० २२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १९१० श्रावण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २००२ । ट भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद का संग्रह ग्रंथ है तथा उसकी टीका है । चंपावती (चाटसू) में पं० शिवचन्द ने व्यास चुन्नीलाल से लिखवाया था ।

३१९९. योगशतटीका........। पत्र सं० २१ । आ० ११½×३¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७६ । अ भण्डार ।

३२००. योगशतक........। पत्र सं० ७ । आ० १०¼×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ । पूर्ण । वे० सं० ७२ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० विनय समुद्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१. योगशतक........। पत्र सं० ७८ । आ० ११¼×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । ख भण्डार ।

३२०२. रसमञ्जरी—शालिनाथ । पत्र सं० २२ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८५९ । ट भण्डार ।

३२०३. रसमञ्जरी—शार्ङ्गधर । पत्र सं० २६ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १९४१ सावन बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल जोबनेर निवासी ने जयपुर मे चिन्तामणिजी के मन्दिर मे शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३२०४. रसप्रकरण........। पत्र सं० ४ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३५ । जीर्ण । ट भण्डार ।

३२०५. रसप्रकरण........। पत्र सं० १२ । आ० ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३२०६. रामविनोद—रामचन्द्र । पत्र सं० २१९ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आयुर्वेद । र० काल सं० १६२० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४४ । अ भण्डार ।

विशेष—शार्ङ्गधर कृत वैद्यकसार ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद है ।

३२०७. प्रति सं० २ | पत्र सं० १६२ | ले० काल सं० १८५१ बैशाख सुदी ११ | वे० सं० १६३ | ख भण्डार |

विशेष—जीवणलालजी के पठनार्थ भैंसलाना ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी |

३२०८. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ८३ | ले० काल × | वे० सं० २३० | छ भण्डार |

३२०९. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ३१ | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १८८२ | ट भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां अपूर्ण (वे० सं० १६६६, २०१८, २०६२) और हैं |

३२१०. रासायिनिकशास्त्र ...... | पत्र सं० ५२ | आ० ५½×६¾ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० ६६८ | च भण्डार |

३२११. लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण | पत्र सं० २ से ८६ | आ० ११½×५ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १०८४ | अ भण्डार |

३२१२. लङ्घनपथ्यनिर्णय........ | पत्र सं० १२ | आ० १०¾×५ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल सं० १८२२ पौष सुदी २ | पूर्ण | वे० सं० १६६ | ख भण्डार |

विशेष—प० जीवमलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था |

३२१३ विषहरनविधि—संतोष कवि | पत्र सं० १२ | आ० ११×५ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-आयुर्वेद | र० काल सं० १७४१ | ले० काल सं० १८६६ माघ सुदी १० | पूर्ण | वे० सं० १४४ | छ भण्डार |

सिरा रिष वैद अर खंडले जेष्ठ सुकल रुदाम |
चंद्रापुरी संवत् गिनौ चंद्रापुरी मुकाम ||२७||
संवत यह संतोष कृत तादिन कविता कीन |
ससि मनि गिर बिव विजय तादिन हम लिख लीन ||२८||

३२१४. वैद्यकसार........ | पत्र सं० ५ से ५४ | आ० ६×४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ३३४ | च भण्डार |

३२१५. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज | पत्र सं० २१ | आ० १२×५½ इञ्च | भाषा-संस्कृत | विषय-आयुर्वेद | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २१५७ | अ भण्डार |

विशेष—५वां विलास तक है |

३२१६. प्रति सं० २ | पत्र सं० २१ से ३२ | ले० काल सं० १८३८ | वे० सं० १५७१ | अ भण्डार |

३२१७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८७२ फागुण। वे० सं० १७६। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १८०, १८१) और है।

३२१८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८१। क भण्डार।

३२१९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० २३०। छ भण्डार।

३२२०. वैद्यजीवनग्रन्थ·······। पत्र सं० ३ से १८। आ० १०½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३३। च भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र भी नही है।

३२२१. वैद्यजीवनटीका—रुद्रभट्ट। पत्र सं० २५। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११६६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० २०१६, २०१७) और है।

३२२२. वैद्यमनोत्सव—नयनसुख। पत्र सं० ३२। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र० काल सं० १६४९ आषाढ सुदी २। ले० काल सं० १८५३ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वे० स० १८७६। अ भण्डार।

३२२३. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८०६। वे० सं० २०७९। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६५) और है।

३२२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८०। क भण्डार।

३२२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १८६३। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

३२२६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १९। ले० काल सं० १८६९ सावण बुदी १४। वे० सं० २००४। ट भण्डार।

विशेष—पाटण में मुनिसुव्रत चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० चम्पाराम ने स्वयं प्रतिलिपि की थी।

३२२७. वैद्यवल्लभ·······। पत्र सं० १६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १९०१। पूर्ण। वे० सं० १८७१।

विशेष—सेवाराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

३२२८. प्रति सं० २। पत्र सं० ९। ले० काल ×। वे० सं० २९७। ख भण्डार।

३२२९. वैद्यकसारोद्धार—संग्रहकर्त्ता श्री हर्षकीर्त्तिसूरि । पत्र सं० १६७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७४६ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८२ । ख भण्डार ।

विशेष—भानुमती नगर में श्रीगजकुशलगणि के शिष्य मणिसुन्दरकुशल ने प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है ।

३२३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७७३ माघ । वे० सं० १४६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है ।

३२३१. वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट । पत्र सं० २० । आ० ६×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ३५४ । अ भण्डार ।

विशेष—माणिक्यभट्ट अहमदाबाद के रहने वाले थे ।

३२३२. वैद्यविनोद········। पत्र सं० १८३ । आ० १०½×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०६ । अ भण्डार ।

३२३३. वैद्यविनोद—भट्टशंकर । पत्र सं० २०७ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७२ । ख भण्डार ।

विशेष—पत्र १४० तक हिन्दी संकेत भी दिये हुये हैं ।

३२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । छ भण्डार ।

३२३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १८७७ । वे० सं० १७३३ । ट भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७५६ वैशाख सुदी ५ । वार चंद्रवासरे वर्षे शाके १६२३ पातिसाहजी नौरंगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम फौजदार खानअब्दुल्लाखांजी के नायबरूप्लमखां स्याहीजी श्री स्याहआलमजी की तरफ मियां साहबजी अब्दुलफतेजी का राज्य श्रीमस्तु कल्याणक । सं० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्त्तमाने कार्तिक १२ गुरुवारलिखितं मिश्रलालजी कस्यं पुत्र रामनारायणे पठनार्थं ।

३२३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ से ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७० । ट भण्डार ।

३२३७. शार्ङ्गधरसंहिता—शार्ङ्गधर । पत्र सं० ५८ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०३, ११४२, १५७७) और हैं ।

३२३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वे० सं० १८५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २७०, २७१) और है ।

३२३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४-४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८२ । ट भण्डार ।

३२४०. शार्ङ्गधरसंहिताटीका—नाढमल्ल । पत्र सं० ४१३ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १३१५ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम शार्ङ्गधरदीपिका है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

वास्तव्यान्वयप्रकाश वैद्य श्रीभावसिंहात्मजेनाढमल्लेन विरचितायाम शार्ङ्गधरदीपिकामुत्तरखण्डे नेत्रप्रसादन कर्मविधि द्वात्रिंशोऽध्यायः । प्रति सुन्दर है ।

३२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल × । वे० सं० ७० । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है जिसके ७ अध्याय हैं ।

३२४२. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)—नकुल पंडित । पत्र सं० ९ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० १२३६ । अ भण्डार ।

विशेष—कालाडहरा में महात्मा कुशलसिंह के आत्मज हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४३. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)......। पत्र सं० १८ । आ० ७¾×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७१८ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १२८३ । अ भण्डार ।

३२४४. सन्तानविधि......। पत्र सं० ३० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ । ट भण्डार ।

विशेष—सन्तान उत्पन्न होने के सम्बन्ध में कई नुस्खे है ।

३२४५. सन्निपातनिदान......। पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२४६. सन्निपातनिदानचिकित्सा—वाहडदास । पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८३९ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

३२४७. सन्निपातकलिका……। पत्र सं० ५। आ० ११३/४×५३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८७३। पूर्ण। वे० सं० २८३। ख भण्डार।

विशेष—यौवनपुर में पं० जीवणदास ने प्रतिलिपि की थी।

३२४८. सप्तविधि……। पत्र सं० ७। आ० ८३/४×४३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४१७। अ भण्डार।

३२४९. सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण……। पत्र सं० ४२। आ० ६×३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८८१। पूर्ण। वे० सं० २२६। ख भण्डार।

३२५०. सारसंग्रह……। पत्र सं० २७ से २५७। आ० १२×५३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १७४७ कार्तिक। अपूर्ण। वे० सं० ११५६। अ भण्डार।

विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी।

३२५१. सालोत्तररास……। पत्र सं० ७३। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ७१४। अ भण्डार।

३२५२. सिद्धियोग……। पत्र सं० ७ से ४३। आ० १०×४३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३५७। अ भण्डार।

३२५३. हरडैकल्प……। पत्र सं० ४। आ० ५३/४×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८१६। अ भण्डार।

विशेष—मालकांगडी प्रयोग भी है। (अपूर्ण)



विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२५४. अमरचंद्रिका……। पत्र सं० ७५। आ० ११×४¾ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-छंद अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३। ज भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है।

३२५५. अलंकाररत्नाकर—दलिपतराय बंशीधर। पत्र सं० ५१। आ० ८¾×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४। क भण्डार।

३२५६. अलङ्कारवृत्ति—जिनवर्द्धन सूरि। पत्र सं० २७। आ० १२×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-रस अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४। क भण्डार।

३२५७. अलङ्कारटीका……। पत्र सं० १४। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६८१। ट भण्डार।

३२५८. अलङ्कारशास्त्र……। पत्र सं० ७ से ११२। आ० ११¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००१। अ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है। बीच के पत्र भी नही है।

३२५९. कविकर्पटी……। पत्र सं० ६। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-रस अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८५०। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३२६०. कुवलयानन्द……। पत्र सं० २०। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७८१। ट भण्डार।

३२६१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० १७८२। ट भण्डार।

३२६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०२५। ट भण्डार।

३२६३. कुवलयानन्द—अप्पय दीक्षित। पत्र सं० ६०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल सं० १७४३। पूर्ण। वे० सं० ६५३। अ भण्डार।

विशेष—सं० १८०३ माह बुदी ५ को नैणसागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

३२६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १२६ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १६०४ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ३१४ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

३२६७. कुवलयानन्दकारिका……। पत्र सं० ६ । म्रा० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल सं० १८१६ म्राषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकायें हैं ।

३२६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

विशेष—हरदास भट्ट की किताब है रामनारायन मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६९. चन्द्रावलोक……। पत्र सं० ११ । म्रा० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । अ भण्डार ।

३२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । म्रा० १०¾×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कारशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० ६१ । च भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

३२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । च भण्डार ।

३२७२. छंदानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८ । म्रा० १२×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है–

इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्यावर्णनोनाम अष्टमोऽध्याय समाप्तः । समाप्तोयग्रन्थः । श्री…… भुवनकीर्त्ति शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थः लिख्यतं । मु० विनयमेरुणा ।

३२७३. छंदोशतक—हर्षकीर्त्ति (चंद्रकीर्त्ति के शिष्य) । पत्र सं० ७ । म्रा० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । अ भण्डार ।

३२७४. छंदकोश—रत्नशेखर सूरि । पत्र सं० ३१ । म्रा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

३२७५. छंदकोश……। पत्र सं० २ से २५ । आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । च भण्डार ।

३२७६. नंदिताढ्यछंद……। पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-छंद शास्त्र। र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ४५७ । ञ भण्डार ।

३२७७. पिंगलछंदशास्त्र—माखनकवि । पत्र सं० ४६ । आ० १३×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-छंदशास्त्र । र० काल सं० १८६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४४ । अ भण्डार ।

विशेष—४६ से आगे पत्र नही हैं ।

आदिभाग— श्री गणेशायनमः अथ पिंगल । सवैया ।

मंगल श्री गुरुदेव गणेश क्रिपाल गुपाल गिरा सरसानी ।
वंदन कै पद पंकज पावन माखन छंद विलास बखानी ।।
कोविद वृंद वृंदनि कौ कल्पद्रुम का मधु का काम निधानी ।
सारद ईंदु मयूष निसोतल सुन्दर सस सुधारस बानी ।।१।।

दोहा— पिंगल सागर छंदमणि वरण वरण बहुरङ्ग ।
रस उपमा उपमेय तै सुंदर अरथ तरंग ।।२।।
तातें रच्यौ विचारि कै नर बानी नरहेत ।
उदाहरण बहु रसन के वरण सुमति समेत । ३।।
विमल वरण भूषन कलित, बानी ललित रसाल ।
सदा सुकवि गोपाल कौं, श्री गोपाल कृपाल ।।४।।
तिन सुत माखन नाम है, उक्ति युक्ति त हीन ।
एक समै गोपाल कवि, मामन हरिवह दीन ।।५।।
पिंगल नाग विचारि मन, नारी बांनीहि प्रकास ।
यथा सुमति सौं कीजिये, माखन छंद विलास ।।६।।

दोहरागीत— यह सुकवि श्री गोपाल की सुभ भई सासन है जवैं ।
पद जुगल वंदन सुनिये उर सुमति बाढी है तवै ।
अति निम्न पिंगल सिंधु मैं मनमीन ह्वै करि संचिरयौ ।
मथि काढि छंद विलास माखन कविन सौ विनती करयौ ।।

दोहा— हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोषन कछु देहु ।
भूल्यौ भ्रम तै हौ वहां जहां सोधि किन लेहु ।।८।।
संवत वसु रस लोक पर नक्षतह सा तिथि मास ।
सित वाण श्रुति दिन रच्यौ माखन छंद विलास ।।९।।

पिंगल छंद में दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छंद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छंद में वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र भी नही है ।

३२७८. पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्र सं० १० । आ० १०×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

३२७९. पिंगलशास्त्र······ । पत्र सं० ३ से २० । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–छंद शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५९ । ख भण्डार ।

३२८०. पिंगलशास्त्र······· । पत्र सं० ४ । आ० १०१/२×४३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६२ । ट भण्डार ।

३२८१. पिंगलछंदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास । पत्र सं० ७ । आ० १३×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–छन्द शास्त्र । र० काल सं० १७९५ । ले० काल सं० १८२९ । पूर्ण । वे० सं० १८६९ । ट भण्डार ।

विशेष— संवतशर नव मुनि शशीनभ नवमी गुरु मानि ।
डिडवाना दृढ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ।।

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छंद रत्नावली संपूर्ण ।

३२८२ पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र सं० ६८ । आ० ९×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–रस अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१३ । अ भण्डार ।

३२८३. प्राकृतछंदकोष—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १३×५३/४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११९ । अ भण्डार ।

३२८४ प्राकृतछंदकोष—अल्हू । पत्र सं० १३ । आ० ८×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–छंद शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९३···· पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२१ । क भण्डार ।

३२८५. प्राकृतछंदकोश······ । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७९२ श्रावरण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं फटी हुई है ।

३२८६. प्राकृतपिंगलशास्त्र……। पत्र सं० २। आ० ११×४¾ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४८। अ भण्डार।

३२८७. भाषाभूषण—जसवंतसिंह राठौड़। पत्र सं० १६। आ० ६×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० ५७१। क भण्डार।

३२८८. रघुनाथ विलास—रघुनाथ। पत्र सं० ३१। आ० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रसालङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६५। च भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम रसतरङ्गिणी भी है।

३२८९. रत्नमंजूषा……। पत्र सं० ६। आ० ११½×५¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६१६। अ भण्डार।

३२९०. रत्नमंजूषिका……। पत्र सं० २७। आ० १०¾×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४४। ञ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति रत्नमंजूषिकायां छंदो विचित्यांभाष्यतोऽष्टमोध्यायः।

मङ्गलाचरण—ॐ पंचपरमेष्ठिभ्यो नमो नमः।

३२९१. वाग्भट्टालङ्कार—वाग्भट्ट। पत्र सं० १६। आ० १०¾×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–अलङ्कार। र० काल ×। ले० काल सं० १६४६ कार्त्तिक सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ६५। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति- सं० १६४६ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे तृतीया तिथौ शुक्रवासरे लिखतं पांडे लूणा माहरोठमध्ये स्वात्ययोः पठनार्थं।

३२९२. प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६९४ फागुण सुदी ७। वे० सं० ६५३। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है। कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए है।

३२९३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० १७२। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है जो कि चारों ओर हासिये पर लिखी हुई है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६), क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७२), छ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३८), ज भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ९०, १४३), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१७), ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४९) और है।

३२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७०० कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० ४५ । ख भण्डार ।

विशेष—ऋषि हंसा ने सादड़ी में प्रतिलिपि कराई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४६) और है ।

३२६५. वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज । पत्र सं० ४० । आ० ६३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल सं० १७२६ कार्तिक बुदी ऽऽ (दीपावली) । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण वे० सं० १५२ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत्सरे निधिदृगश्वशशांकयुक्ते (१७२६) दीपोत्सवाख्यदिवसे सगुरौ सचित्रे ।
लग्नेऽलि नाम्नि च समीपगिरः प्रसादात् सद्वादिराजरचिताकविचन्द्रकेयं ।।
श्रीराजसिंहनृपतिजर्यसिंह एव श्रीटोडाक्षकाख्यनगरी अणहिल्य तुल्या ।
श्रीवादिराजविबुधोऽपर वाग्भटोयं श्रीसूत्रवृत्तिरिह नंदतु चार्कचन्द्रः ।।

श्रीमद्भीमनृपात्मजस्य बलिनः श्रीराजसिंहस्य मे सेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका शिशूनां हिता ।
हीनाधिकवचोयदत्र लिखितं तद्वै बुधैः क्षम्यता गार्हस्थ्यवनिताथ सेवनाधियासकः स्वश्रुतामाश्रूयात् ।।

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकायां पोमराजश्रेष्ठिसुतवादिराजविरचितायां कविचंद्रिकायां पंचमः परिच्छेदः समाप्तः । सं० १८११ श्रावण सुदी ६ गुरवासरे लिखतं महात्मौरूपनगरका हेमराज सवाई जयपुरमध्ये । शुभं भूयात् ।।

३२६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० २५६ । अ भण्डार ।

३२६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १९६० । वे० सं० ६५४ । क भण्डार ।

३२६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७३१ । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में .... खण्डेलवालान्वये सौगाणी गौत्र वाले सम्राट गयासुद्दीन से सम्मानित साह महिणा ....साह पोमा सुत वादिराज की भार्या लौहडी ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

३२६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

३३००. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

३३०१. वाग्भट्टालङ्कार टीका........। पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण (पंचम परिच्छेद तक) वे० सं० २० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३०२. वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार। पत्र सं० ११। ग्रा० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५२। अ भण्डार।

३३०३. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १६८४। वे० सं० ६८४। क भण्डार।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९५०) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २७५) अ भण्डार मे दो प्रतियां (वे० सं० १७७, ३०६) और है।

३३०४. वृत्तरत्नाकर—कालिदास। पत्र सं० ६। ग्रा० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७६। ख भण्डार।

३३०५. वृत्तरत्नाकर ......। पत्र सं० ७। ग्रा० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८५। ज भण्डार।

३३०६. वृत्तरत्नाकरटीका—सुल्हण कवि। पत्र सं० ४०। ग्रा० ११×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६८। क भण्डार।

विशेष—सुकवि हृदय नामक टीका है।

३३०७. वृत्तरत्नाकरछंदटीका—समयसुन्दरगणि। पत्र सं० १। ग्रा० १०½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१९। अ भण्डार।

३३०८. श्रुतबोध—कालिदास। पत्र सं० ६। ग्रा० ८×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५६१। अ भण्डार।

विशेष—अष्टगण विचार तक है।

३३०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८४६ फागुण सुदी ६। वे० सं० ६२०। अ भण्डार।

विशेष—पं० डालूराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३३१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

विशेष—जीवराज कृत टिप्पण सहित है।

३३११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८९५ श्रावण सुदी ६। वे० सं० ७२५। क भण्डार।

३३१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० ७२७। भण्डार।

विशेष—पं० रामचंद ने झिलती नगर मे प्रतिलिपि की थी।

३३१३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८१ चैत्र सुदी १ । वे० सं० १७८ । ञ भण्डार ।

विशेष—पं० सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३१४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं १८११ । ट भण्डार ।

विशेष—आचार्य विमलकीर्त्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ६४८, ६०७, ११६१) क, ड, च और ज भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, ७२६, १४८, २८७) ञ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १५६, १८७) और हैं ।

३३१५. श्रुतबोध—वररुचि । पत्र सं० ४ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६ श्रुतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । क भण्डार ।

३३१७. श्रुतबोधटीका·········। पत्र सं० ३ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६४५ । अ भण्डार ।

३३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०३ । क भण्डार ।

३३१९. श्रुतबोधवृत्ति—हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिसुख ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १६०१ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।



विषय—संगीत एवं नाटक



३३२१. अकलङ्कनाटक—श्री मक्खनलाल। पत्र सं० २३। आ० १२×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १। क भण्डार।

३३२२. प्रति सं० २। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १९९३ कार्त्तिक सुदी ६। वे० सं० १७२। छ भण्डार।

३३२३. अभिज्ञान शाकुन्तल—कालिदास। पत्र सं० ७। आ० १०¾×४¾ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११७०। अ भण्डार।

३३२४. कर्पूरमञ्जरी—राजशेखर। पत्र सं० १२। आ० १२½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८१३। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। मुनि ज्ञानकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ के दोनों ओर ८ पत्र तक संस्कृत में व्याख्या दी हुई है।

३३२५. ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिचन्द्रसूरि। पत्र सं० ६३। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—नाटक। र० काल सं० १६४८ माघ सुदी ८। ले० काल सं० १६९८। पूर्ण। वे० सं० १८। अ भण्डार।

विशेष—आमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

३३२६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६५। ले० काल सं० १८८७ माह सुदी ५। वे० सं० २३१। क भण्डार।

३३२७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८६४ आसोज बुदी ६। वे० सं० २३२। क भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी तथा इसे संघी अमरचन्द दीवान के मन्दिर मे विराजमान की।

३६२८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १९३५ सावण बुदी ५। वे० सं० २३०। क भण्डार।

३३२९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४३। ले० काल सं० १७६०। वे० सं० १३४। ञ भण्डार।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य श्री ज्ञानकीर्त्ति ने प्रतिलिपि करके पं० दोदराज को भेंट स्वरूप दी थी। इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १४७, ३३७) और है।

३३३०. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या। पत्र सं० ४१। आ० १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल सं० १९१७ बैशाख बुदी ६। ले० काल सं० १९१७ पौष ११। पूर्ण। वे० सं० २१६। क भण्डार।

३३३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ७३। ले० काल सं० १९३६। वे० सं० ५६३। च भण्डार।

३३३२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४८ से ११५। ले० काल सं० १९३६। अपूर्ण। वे० सं० ३४४। झ भण्डार।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द। पत्र सं० ४१। आ० १३×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १९३४। पूर्ण। वे० सं० ५६२। च भण्डार।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास। पत्र सं० ४०। आ० ११½×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १८७७ भादवा बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २२०। क भण्डार।

३३३५. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—बख्तावरलाल। पत्र सं० ८७। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी २। ले० काल सं० १९२८ बैशाख बुदी ८। वे० सं० ५६४। पूर्ण। च भण्डार।

विशेष—जौंहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी।

३३३६. धर्मदशावतारनाटक……। पत्र सं० ६६। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। र० काल सं० १९३३। ले० काल ×। वे० सं० ११०। ज भण्डार।

विशेष—पं० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है।

३३३७. नलदमयंती नाटक……। पत्र सं० ३ से २४। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९८। ट भण्डार।

३३३८. प्रबोधचन्द्रिका—वैजल भूपति। पत्र सं० २१। आ० ६×४¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १९०७ भादवा बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८१४। अ भण्डार।

३३३९. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० २१९। झ भण्डार।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह। पत्र सं० ४४। आ० १३×८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। छ भण्डार।

३३४१. मदनपराजय—जिनदेवसूरि। पत्र सं० ३६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८५। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० २ से ७, २७, २८ नहीं है तथा ३६ से आगे के पत्र भी नहीं हैं।

३३४२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८२६। वे० सं० ५६७। क भण्डार।

३३४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। वे० सं० ५७८। ङ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र नवीन लिखे गये है।

३३४४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० १००। छ भण्डार।

३३४५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६१६। वे० सं० ६४। झ भण्डार।

३३४६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८३६ माह सुदी ६। वे० सं० ४८। ञ भण्डार।

विशेष—सवाई जयनगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० चोखचन्द के सेवक पं० रामचन्द ने सवाईराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३३४७. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० २०१।

विशेष—अग्रवाल ज्ञातीय मित्तल गोत्र वाले मे प्रतिलिपि कराई थी।

३३४८. मदनपराजय……। पत्र सं० ३ से २५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। अ भण्डार।

३३४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। अ भण्डार।

३३५०. मदनपराजय—पं० स्वरूपचन्द। पत्र सं० ९२। आ० ११½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल सं० १९१८ मंगसिर सुदी ७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७९। ङ भण्डार।

३३५१. रागमाला……। पत्र सं० ६। आ० ८½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सङ्गीत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३७९। अ भण्डार।

३३५२. राग रागनियों के नाम……। पत्र सं० ८। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सङ्गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०७। झ भण्डार।



विषय-लोक-विज्ञान

३३५३. अढाईद्वीप वर्णन........। पत्र सं० १०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्करार्द्ध द्वीप का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १८१५। पूर्ण। वे० सं० ३। ख भण्डार।

३३५४. ग्रहोंकी ऊंचाई एवं आयुवर्णन........। पत्र सं० १। आ० ८३/४×६१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-नक्षत्रों का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११०। अ भण्डार।

३३५५. चंद्रप्रज्ञप्ति........। पत्र सं० ६२। आ० १०३/४×४१/२ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १६६४ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री चन्द्रपण्णत्तसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) संपूर्णा। लिखतं परिष करमचंद।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ९०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन। र० काल ×। ले० काल सं० १८९६ फाल्गुन सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १००। घ भण्डार।

विशेष—मधुपुरी नगरी में प्रतिलिपि की गयी थी।

३३५७. तीनलोककथन........। पत्र सं० ९६। आ० १०१/२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५०। ङ भण्डार।

३३५८. तीनलोकवर्णन........। पत्र सं० १५४। आ० ९१/२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १०। ज भण्डार।

विशेष—गोपाल व्यास उग्नियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ में नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है। प्रारम्भ में लिखा है— ढूंढार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य पं० सदासुख के शिष्य श्री पं० फतेहलाल की यह पुस्तक है। भादवा सुदी १० सं० १९११।

३३५९. तीनलोकचार्ट........। पत्र सं० १। आ० ५×६१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

विशेष—त्रिलोकसार के आधार पर बनाया गया है। तीनलोक की जानकारी के लिए बड़ा उपयोगी है।

३३६०. त्रिलोकचित्र……। आ० २०×३० इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १५७५। पूर्ण। वे० सं० ५३६। अ भण्डार।

विशेष—कपड़े पर तीनलोक का चित्र है।

३३६१. त्रिलोकदीपक—वामदेव। पत्र सं० ७२। आ० १६×७½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १८५२ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५। ज भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सचित्र है। जम्बूद्वीप तथा विदेह क्षेत्र का चित्र सुन्दर है तथा उस पर वेल बूटे भी है।

३३६२. त्रिलोकसार—नेमिचंद्राचार्य। पत्र सं० ८१। आ० १३×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १८१९ मंगसिर बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

विशेष—पहिले पत्र पर ६ चित्र है। पहिले नेमिनाथ की मूर्त्ति का चित्र है जिसके बाईं ओर बलभद्र तथा दांईं ओर श्रीकृष्ण हाथ जोड़े खड़े है। तीसरा चित्र नेमिचन्द्राचार्य का है वे लकडी के सिंहासन पर बैठे हैं सामने लकडी के स्टैंड पर ग्रन्थ है आगे पिच्छी और कमण्डलु है। उनके आगे दो चित्र और है जिसमे एक चामुण्डराय का तथा दूसरा और किसी श्रोता का चित्र है। दोनो हाथ जोड़े गोडी वाले बैठे है। चित्र बहुत सुन्दर है। इसके अतिरिक्त और भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र है।

३३६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८६६ प्र० बैशाख सुदी ११। वे० सं० २८८। क भण्डार।

३३६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८२६ श्रावण बुदी ५। वे० सं० २८३। क भण्डार।

३३६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७२। ले० काल ×। वे० सं० २८६। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६८। ले० काल ×। वे० सं० २६०। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। कई पृष्ठो पर हाशिया मे सुन्दर चित्राम हैं।

३३६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १७३३ माह सुदी ५। वे० सं० २८३। क भण्डार।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में बसवा में रामचन्द काला ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १५५३। वे० सं० १६४४। ट भण्डार।

विशेष—कालज्ञान एवं ऋषिमंडल पूजा भी है।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २९२, २९३,) च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १४७, १४८) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४) और है।

३३६९. त्रिलोकसारदर्पणकथा—खड्गसेन। पत्र सं० ३२ से २२८। आ० ११×४३ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-लोक विज्ञान। र० काल सं० १७१३ चैत सुदी ५। ले० काल सं० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० ३९०। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। प्रारम्भ के ३१ पत्र नही है।

३३७०. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४। वे० सं० १८२। झ भण्डार।

विशेष—साह लोहट ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी।

३३७१. त्रिलोकसारभाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० २८९। आ० १४×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान। र० काल सं० १८४१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७६। अ भण्डार।

३३७२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७३। अ भण्डार।

३३७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१८। ले० काल सं० १८८४। वे० सं० ४३। ग भण्डार।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौंसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया।

३३७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२५। ले० काल ×। वे० सं० ३६। घ भण्डार।

३३७५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३९४। ले० काल स० १९९९। वे० सं० २८४। ङ भण्डार।

विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी अजमेर वालों ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा……। पत्र सं० ४५२। आ० १२३×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १९४७। पूर्ण। वे० सं० २९२। क भण्डार।

३३७७. त्रिलोकसारभाषा……। पत्र सं० १०८। आ० ११३×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २९१। क भण्डार।

विशेष—भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है।

३३७८. त्रिलोकसारभाषा……। पत्र सं० १५०। आ० १२×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५८३। च भण्डार।

३३७९. त्रिलोकसारभाषा (वचनिका)……। पत्र सं० ३१०। आ० १०३×७३ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल सं० १८९५। वे० सं० ८५। झ भण्डार।

३३८०. त्रिलोकसारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र सं० २४० । आ० १३×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १९४५ । पूर्ण । वे० सं० २८२ । क भण्डार ।

३३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४२ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

३३८२. त्रिलोकसारवृत्ति........। पत्र सं० १० । आ० १०×११½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८ । ज भण्डार ।

३३८३. त्रिलोकसारवृत्ति........ । पत्र सं० ३७ । आ० १२¼×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । ज भण्डार ।

३३८४. त्रिलोकसारवृत्ति........। पत्र सं० २५ । आ० १०×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३३ । ट भण्डार ।

३३८५. त्रिलोकसारवृत्ति........। पत्र सं० ६३ । आ० १३×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३३८६. त्रिलोकसारसंदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६३ । आ० १३½×८ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । क भण्डार ।

३३८७. त्रिलोकस्वरूपव्याख्या—उदयलाल गंगवालाल । पत्र सं० ५० । आ० १३×७½ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–लोक विज्ञान । र० काल सं० १९४४ । ले० काल सं० १९०४ । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

विशेष—मुं० पन्नालाल भौरीलाल एवं चिमनलालजी की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना हुई थी ।

३३८८. त्रिलोकवर्णन........। पत्र सं० ३६ । आ० १२×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लोकविज्ञान र० काल × । ले० काल सं० १८१० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७७ । छ भण्डार ।

विशेष—गाथायें नही है केवल वर्णनमात्र है । लोक के चित्र भी हैं । जम्बूद्वीप वर्णन तक पूर्ण है भगवानदास के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३८९. त्रिलोकवर्णन........। पत्र सं० १५ से ३७ । आ० १०¼×४½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० ७६ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । १ से १४, १८, २१ २३ से २६, २८ से ३४ तक पत्र नही है । पत्र सं० १५ ३६, तथा ३७ पर चित्र नहीं हैं । इसके अतिरिक्त तीन पत्र सचित्र और हैं जिनमें से एक में नरक का, दूसरे में चंद्र, सूर्यचक्र कुण्डलद्वीप और तीसरे मे भौंरा, मछली, कनखजूरा के चित्र हैं । चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय हैं ।

३३६०. त्रिलोकवर्णन······ । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल × । वे० सं० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धशिला से स्वर्ग के विमल पुटल तक ६३ पुटलों का संक्षिप्त वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४½ इंच चौड़े पत्र पर दिये हैं । कही कहीं पीछे कपड़ा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १×१ फुट है । चित्र सभी बिन्दुओं से बने है । नरक वर्णन नही है ।

३३६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२७ । क भण्डार ।

३३६२. त्रिलोकवर्णन······ । पत्र सं० ५ । आ० १७×११½ इंच । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्त्ति । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । क भण्डार ।

३३६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

३३६५. भूगोलनिर्माण······ । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १५७१ । पूर्ण । वे० सं० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० हर्षागम गणि वाचनार्थं लिखितं कोरटा नगरे सं० १५७१ वर्षे । जैनेतर भूगोल है जिसमें सतयुग, द्वापर एवं त्रेता में होने वाले अवतारों का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६. संघयणटपत्र······ । पत्र सं० ६ से ४१ । आ० ६¾×४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टब्बा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २२, २६ । २८ से ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ से आगे पत्र नही हैं ।

३३६७. सिद्धांत त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र सं० ६४ । आ० १३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३११ । अ भण्डार ।



विषय- सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३३६८. अक्कमन्दवार्त्ता·······। पत्र सं० २० । आ० १२×८½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११ । क भण्डार ।

३३६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १२ । क भण्डार ।

३४००. उपदेशछत्तीसी—जिनहर्ष । पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८३१ । पूर्ण । वे० सं० ४२८ । अ भण्डार ।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री सर्वज्ञेभ्यो नमः । अथ श्री जिनहर्षेण वीर चितायांमुपदेश छत्रीसी कामहमेव लख्यते स्यात् ।

जिनस्तुति—

सकल रूप यामे प्रभुता अनूप भूप,
धूप छाया माहे है न जगदीश ज्युं ।
पुण्य हि न पाप हे नसित हे न ताप हे,
जाप के प्रताप कटे करम अतिसयुं ।।
ज्ञान कौ अंगज पुंज सूख्य वृक्ष के निकुंज,
अतिसय चौतिस फुति वचन ये तिसयु ।
अैसे जिनराज जिनहर्ष प्रणमि उपदेश,
की छतिसी कहौ सवइ एसतीसयु ।।१।।

अथिरत्व कथन—

अरे जिउ काचिनीउ ताहु परी अमार लीते,
तो अतीगति करी जौ रसी उठानि है ।
तु तो नही चेतता हे जाणे हे रहेगी वृद्ध,
मेरी २ कर रह्यौ ज्यमि रति मानी हे ।।
ज्ञान की नीजीर खोल देख न कबहे,
तेरी मोह धाक मे भयो वकाणौ अज्ञानी हे ।
कहे जीनहर्ष इह तन लगैगी वार,
कागद की गुडी कौलु रहे जी हा पाणी ।।२।।

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सवैया—

धरम धरम कहै मरम न कोउ लहे,
भरम मैं भूलि रहे कुल रूढ कीजीयै ।
कुल रूढ छोरि कै भरम फंद तोरि कै,
सुमति गति फोरि कै सुज्ञान दृष्टि दीजीयै ।।
दया रूप सोइ धर्म धर्म तै कटै है मर्म,
भेद जिन धरम पीयूष रस पीजीयै ।
करि कै परीक्ष्या जिनहरष धरम कीजीयै,
कसि कै कसोटी जैसे कंचरण क लीजीयै ।।३५।।

अथ ग्रंथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा

भई उपदेस की छतीसी परिपूर्ण चतुर नर
है जे याकौ मध्य रस पीजीयै ।
मेरी है अलपमति तो भी मैं कीए कवित,
कविताह सौ ही जिन ग्रन्थ मान लीजीयै ।।
सरस है है वखाण जौऊ अवसर आण,
दोइ तीन याकै भैया सवैया कहीजीयौ ।
कहै जिनहरष संवत्त गुण सिसि अक्ष कीनी,
जु सुण कै सावास मोकु दीजीयौ ।।३६।।

इति श्री उपदेश छतीसी संपूर्ण ।

संवत् १८३६

गवडि पुछेरे गवडि आ, कवण भले रौ देश ।
संपत हुए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश ।।
सूरवलि तो सूहांमणी, कर मोहि गंग प्रवाह ।
मांडल तणो प्रगणो पांणी अथग अथाह ।।२।।

३४०१. उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र सं० १४ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । च भण्डार ।

३४०२. कर्पूरप्रकरण……। पत्र सं० २४ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८९३ ।

विशेष—१७६ पद्य हैं। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री वज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्टि
सार प्रबंधस्फुट सद्गुणस्य।
शिष्येण चक्रे हरिणेय मिष्टा
सूक्तावली नेमिचरित्र कर्त्ता ॥१७६॥

इति कर्पूरामिध सुभाषित कोशः समाप्ताः ॥

३४०३. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० १०३। क भण्डार।

३४०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १७७६ श्रावण ४। वे० सं० २७६। ज भण्डार।

विशेष—भूधरदास ने प्रतिलिपि की थी।

३४०५. कामन्दकीय नीतिसार भाषा……। पत्र सं० २ से १७। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-नीति। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २८०। भ्र भण्डार।

३४०६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३ से ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६०८। अ भण्डार।

३४०७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३ से ६८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८। अ भण्डार।

३४०८. चाणक्यनीति—चाणक्य। पत्र सं० ११। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ मंगसिर बुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ८११। अ भण्डार।

इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६३०, ६६१, ११००, १६५४, १६८५) और है।

३४०९. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८४६ पौष सुदी ६। वे० सं० ७०। ग भण्डार।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१) और है।

३४१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७५। ङ भण्डार।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३७, ६५७) और हैं।

३४११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६ से १३। ले० काल सं० १८८५ मंगसिर बुदी ऽऽ। अपूर्ण। वे० सं० ६३। च भण्डार।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६४) और है।

३४१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ११। वे० सं० २४६। ञ भण्डार।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १३८, २४८, २५०) और हैं।

३४१३. चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता–चाणक्य । संग्रहकर्त्ता–मथुरेश भट्टाचार्य । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१० । अ भण्डार ।

३४१४. चाणक्यनीतिभाषा……। पत्र सं० २० । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–नीति शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है । ७वें अध्याय के २ पद्य हैं । दोहा और कुण्डलियों का अधिक प्रयोग हुआ है ।

३४१५. छंदशतक—वृन्दावनदास । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १८९८ माघ सुदी २ । ले० काल सं० १९४० मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १७८ । क भण्डार ।

३४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी ९ । वे० सं० १८१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १७९, १८०) और हैं ।

३४१७. जैनशतक—भूधरदास । पत्र सं० १७ । आ० ९×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १७८१ पौष सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००५ । अ भण्डार ।

३४१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १९७७ फागुन सुदी ५ । वे० सं० २१८ । क भण्डार ।

३४१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २१७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति नीले कागजों पर है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१६) और है ।

३४२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ५६० । च भण्डार ।

३४२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८८९ । वे० सं० १५८ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८४) और है जिसमें कर्म छत्तीसी पाठ भी है ।

३४२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८८१ । वे० सं० १६४० । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६५१) और है ।

३४२३. ढालगण……। पत्र सं० ८ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । क भण्डार ।

३४२४. तत्त्वधर्मामृत·········। पत्र सं० ३३ । ग्रा० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १६३६ ज्येष्ठ सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १६३६ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशम्यांतिथौ बुधवासरे चित्रानक्षत्रे परिघयोगे अत्रा दिवसे। आदीश्वर चैत्यालये। चंपावतिनामनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टा० पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्म्म (चं) द्र देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्ति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भसावड्या गोत्र साह हरजाज भार्या पुत्र द्विय प्रथम समतु द्वितिक पुत्र मेघराज। साह समतु भार्या समतादे तत्र पुत्र लक्षिमीदास। साह मेघराज तस्य भार्या द्विय प्रथम भार्या लाडमदेह द्वितीक·········। अपूर्ण।

३४२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१४५। ट भण्डार।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ— शुद्धात्मरूपमापन्नं प्रणिपत्यं गुरो गुरुं।
तत्वधर्म्मामृतं नाम वक्ष्ये संक्षेपत: ॥
धर्मे श्रुते पापमुपैति नाशं धर्मे श्रुते पुण्य मुपैति वृद्धिः।
स्वर्गापवर्ग प्रवरोरु सौख्यं, धर्मे श्रुते रेव न चात्यतोंस्ति ॥२॥

३४२६. दशबोल·········। पत्र सं० २। ग्रा० १०×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९४७। ट भण्डार।

३४२७. दृष्टांतशतक·········। पत्र सं० १७। ग्रा० ६½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८५६। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ दिया है। पत्र १५ से आगे ६३ फुटकर श्लोको का संग्रह और है।

३४२८. द्यानतविलास—द्यानतराय। पत्र सं० २ से १३। ग्रा० ९×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४४। क भण्डार।

३४२९. धर्मविलास—द्यानतराय। पत्र सं० २३४। ग्रा० ११½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १९५८ फागुण बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३४२। क भण्डार।

३४३०. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल सं० १८८१ आसोज बुदी २। वे० सं० ४५। ग भण्डार।

विशेष—जैतरामजी साह के पुत्र शिवलालजी ने नेमिनाथ चैत्यालय (चौधरियों का मन्दिर) के लिए चिम्मनलाल तेरापंथी से दौसा में प्रतिलिपि करवायी थी।

३४३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६१ । ले० काल सं० १९१९ । वे० सं० ३३९ । क भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४०) और है ।

३४३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल × । वे० सं० ५१ । क्ष भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १५९३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्त)........। पत्र सं० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८८ । अ भण्डार ।

३४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १७८ । च भण्डार ।

३४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १९३४ । वे० सं० १७९ । च भण्डार ।

विशेष—पंचरत्न और है । श्री विरधीचंद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७. नीतिसार........। पत्र सं० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८. नीतिसार—इन्द्रनन्दि । पत्र सं० ९ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८९ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम ९वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १९३७ भादवा बुदी ४ । वे० सं० ३८६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३८६, ४००) और हैं ।

३४४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल सं० १८२२ भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ । ङ भण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १७६ । ञ भण्डार ।

विशेष—झलायनगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में गोर्द्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३. नीतिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ९ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७९ । क भण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । ञ भण्डार ।

३४४५. नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि। पत्र सं० ५५। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३८४। क भण्डार।

३४४६. नीतिविनोद........। पत्र सं० ४। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९१८। वे० सं० ३३५। झ भण्डार।

विशेष—मन्नालाल पांड्या ने संग्रह करवाया था।

३४४७. नीलसूक्त। पत्र सं० ११। आ० ६¾×४¼ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२८। ज भण्डार।

३४४८. नौशेरवां बादशाह की दस ताज। पत्र सं० ५। आ० ४½×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–उपदेश। र० काल ×। ले० काल सं० १९४६ बैशाख सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ४०। झ भण्डार।

विशेष—गणेशलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

३४४९. पञ्चतन्त्र—पं० विष्णु शर्मा। पत्र सं१ ६४। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१८। अ भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३७) और है।

३४५०. प्रति सं० २। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० १०१। ख भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३४५१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५४ से १९८। ले० काल सं० १८३२ चैत्र सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० १९४। च भण्डार।

विशेष—पूर्णचन्द्र सूरि द्वारा संशोधित, पुरोहित भागीरथ पल्लीवाल ब्राह्मण ने सवाई जयनगर (जयपुर) में पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी। इस प्रति का जीर्णोद्धार सं० १८५५ फागुण बुदी ३ में हुआ था।

३४५२. प्रति सं० ४। पत्र सं० २८७। ले० काल सं० १८८७ पौष बुदी ४। वे० सं० ६११। च भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है। प्रारम्भ में संगही दीवान अमरचंदजी के आग्रह से नयनसुख व्यास के शिष्य माणिक्यचन्द्र ने पञ्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी।

३४५३. पञ्चतन्त्रभाषा........। पत्र सं० २२ से १४३। आ० ६×७½ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–नीति। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५७८। ट भण्डार।

विशेष—विष्णु शर्मा के संस्कृत पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है।

३४५४. पांचबोल........। पत्र सं० ९। आ० १०×४ इंच। भाषा–गुजराती। विषय–उपदेश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९९९। ट भण्डार।

३४५५. पैंसठबोल····· । पत्र सं० १ आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–उपदेश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७९। अ भण्डार।

विशेष—अथ बोल ६५

[१] अरथ लोभी [२] निरदई मनख होसी [३] विसवासघाती मंत्री [४] पुत्र सुत्रा अरना लोभा [५] नीचा पेषा भाई बंधव [६] असंतोष प्रजा [७] विद्यावंत दलद्री [८] पाखण्डी शास्त्र बांच [९] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीण नगग्रही [११] वेद रोगी हांसी [१२] हीण जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] खिसा काया कलेस घणु करसी दुष्ट बलवंत सुत्र सो [१६] जोबनवंतजरा [१७] अकाल मृत्यु होसी [१८] पुद्रा जीव घणा [१९] अगर्हीण मनुख होसी [२०] अलप मेघ [२१] उस्ल सात बीली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] संथा········ -- [२५] ·········· [२६] ·········· [२७]············ [२८] ·········· [२९] अणकीधा न कीधो कहसी [३०] आपको कीधो दोष पैला का लगावसी [३१] असुद्ध साध भणसी [३२] ढुटल दया पालसी [३३] भेष धारांवैरागी होसी [३४] अहंकार द्वेष मुरख घणा [३५] मुरजादा लोप गऊ ब्राह्मण [३६] माता पिता गुरुदेव मान नहीं [३७] दुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैला की निंद्या घणी करेसी [४०] कुलवंता नार लहोसी [४१] वेसां भगतण लज्या करसी [४२] अफल वर्षा होसी [४३] बाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच घरका रूपवंत होसी [४७] मुंहमाग्या मेघ नहीं होसी [४८] धरतो में मेह थोड़ो होसी [४९] मनख्यां में नेह थोड़ो हांसी [५०] बिना देख्यां चुगली करसी [५१] जाको सरणों लेसी तासूं ही द्वेष करी खोटी करसी [५२] गज हीणा बाजा होसासी [५३] न्याइ कहा हान क लेसी [५४] अवंबंसा राजा हो [५५] रोग सोग घणा होसी [५६] रतबा प्रास होसी [५७] नीच जात श्रद्धान होसी [५८] राडजीग घणा होसी [५९] अस्त्री कलेस गराघण [६०] अस्त्री सील हीण घणी होसी [६१] सीलवंती विरली होसी [६२] विष विकार घनो रगत होसी [६३] संसार चलावाता ते दुखी जाण जोसी।

॥ इति श्री पचावन्न बोल संपूरण ॥

३४५६. प्रबोधसार—यशःकीर्त्ति। पत्र सं० २३। आ० ११×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७५। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में मूल अपभ्रंश का उल्था है।

३४५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १९। ले० काल सं० १९५७। वे० सं० ४९५। क भण्डार।

३४५८. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—तुलसीदास। पत्र सं० २। ग्रा० ६३/४×३१/२ इंच। भाषा–गुजराती। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९७०। ट भण्डार।

३४५९. प्रश्नोत्तररत्नमालिका—अमोघवर्ष। पत्र सं० २। ग्रा० ११×४१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०७। अ भण्डार।

३४६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १६७१ मंगसिर सुदी ५। वे० सं० ५१६। क भण्डार।

३४६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० १०१। छ भण्डार।

३४६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १७६२। ट भण्डार।

३४६३. प्रस्तावित श्लोक……। पत्र सं० ३६। ग्रा० ११×६१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१४। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है। विभिन्न ग्रन्थों में से उत्तम पद्यों का संग्रह है।

३४६४. बारहखड़ी……सूरत। पत्र सं० ७। ग्रा० ६×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५६। झ भण्डार।

३४६५. बारहखड़ी……। पत्र सं० २०। ग्रा० ५×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५६। झ भण्डार।

३४६६. बारहखड़ी—पार्श्वदास। पत्र सं० ५। ग्रा० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल सं० १८६६ पौष बुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४०।

३४६७. बुधजनविलास—बुधजन। पत्र सं० ६४। ग्रा० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–संग्रह। र० काल सं० १८६१ कार्तिक सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८७। झ भण्डार।

३४६८. बुधजन सतसई—बुधजन। पत्र सं० ४४। ग्रा० ८×५१/२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ बुदी ८। ले० काल सं० १९८० माघ बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ४४४। अ भण्डार।

विशेष—७०० दोहों का संग्रह है।

३४६९. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल ×। वे० सं० ७६४। अ भण्डार।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६५४, ६८४) और हैं।

३४७०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३४। क भण्डार।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२१ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४६) और है ।

३४७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १६५४ आषाढ सुदी १० । वे० सं० १६४० । ट भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६३२) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ३०३ । ले० काल × । वे० सं० ५३५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५३६) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४. ब्रह्मविलास—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २१३ । आ० १३×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १७५५ बैशाख सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओं का संग्रह है ।

३४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३२ । ले० काल × । वे० सं० ५३६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइनें सुनहरी रंग की हैं । प्रति गुटके के रूप में है तथा प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३८) और है ।

३४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३७ । ले० काल सं० १८५७ । वे० सं० १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—माधोराजपुरा में महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मिती माह सुदी ६ सं० १८८६ में गोबिन्दराम साहबडा (छाबड़ा) की मार्फत पचार के मन्दिर के वास्ते दिलाया । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

३४७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १८८३ चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ६५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी बज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में चढाया था ।

३४७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०३ । ले० काल × । वे० सं० ७३ । ज भण्डार ।

३४८०. ब्रह्मचर्याष्टक········ । पत्र सं० ५६ । आ० ६३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७४८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

३४८१. भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० २० । आ० ८३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शतकत्रय अथवा त्रिशतक भी है ।

इसी भण्डार में ८ प्रतियां (वे० सं० ६५५, ३८१, ६२८, ६४६, ७६३, १०७४, ११३६, ११७३) और हैं।

३४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५६२, ५६३) अपूर्ण और हैं।

३४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

३४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८७५ चैत सुदी ७ । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८८) और है।

३४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० २८४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । सुखचन्द ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

३४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । ञ भण्डार ।

३४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८ से २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७५ । ट भण्डार ।

३४८८. भावशतक—श्री नागराज । पत्र सं० १४ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८३८ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५७० । क भण्डार ।

३४८९. मनमोदनपंचशतीभाषा—छत्रपति जैसवाल । पत्र सं० ८६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १९१६ । ले० काल सं० १९१६ । पूर्ण । वे० सं० ५६९ । क भण्डार ।

विशेष—सभी सामान्य विषयों पर छंदो का संग्रह है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६६) और है।

३४९०. मान बावनी—मानकवि । पत्र सं० २ । आ० ९½×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१९ । ञ भण्डार ।

३४९१. मित्रविलास—घासी । पत्र सं० ३४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १७९९ फागुण सुदी ४ । ले० काल सं० १९५२ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक ने यह ग्रन्थ अपने मित्र भारामल तथा पिता बहालसिंह की सहायता से लिखा था।

३४९२. रत्नकोष·······। पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७२२ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—विश्वमेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०२१) तथा ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४५ क) और है।

३४६३. रत्नकोष ......। पत्र सं० १४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२४। क भण्डार।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ अंगराज्य, राजाओं के गुण, ४ प्रकार की राज विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम। पत्र सं० १८। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-राजनीति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८। झ भण्डार।

विशेष—श्री गणेशायनमः अथ राजनीत जसुराम कृत लीखतं।

दोहा— अछर अगम अपार गति कितहु पार न पाय।
सो मोकु दीजे सकती जै जै जै जगराय॥

छप्पय— बरनो उज्ज्वल बरन सरन जग असरन सरनी।
कर करूनो करन तरन सब तारन तरनी॥
शिर पर धरनी छत्र भरन सुख संपत भरनी।
झरनी अमृत झरन हरन दुख दारिद हरनी॥
धरनी त्रिसुल खपर धरन भव भय हरनी।
सकल भय जग वंध आदि वरनी जसु जे जग धरनी॥ मात जे०

दोहा— जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि अपार।
करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत वीसतार॥३॥

अन्तिम— लोक सीरकार राजी और सब राजी रहै।
चाकरी के कीये बिन लालच न चाइयै॥
किन हुं की भली बुरी कहिये न काहु आगै।
सटका दे लछन कछु न आप साई है॥
राय के उजीर नयु राख राख लेत रंग।
येक टेक हुं की बात उमरनीबाहिये॥
रीझ खीझ सिरकुं चढाय लीजे जसुराम।
येक परापत कु येले गुन चाहीये॥४॥

३४६५. राजनीति शास्त्र—देवीदास । पत्र सं० १७ । ग्रा० ८½×६ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–राजनीति । र० काल × । ले० काल सं० १६७३ । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । म्र भण्डार ।

३४९६. लघुचाणिक्य राजनीति—चाणिक्य । पत्र सं० ६ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–राजनीति । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । ज भण्डार ।

३४९७. वृन्दसतसई—कवि वृन्द । पत्र सं० ४ । ग्रा० १३½×६½ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १७६१ । ले० काल सं० १८३४ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । ग्र भण्डार ।

३४९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० ६८५ । ड भण्डार ।

३४९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

३५००. वृहद् चाणिक्यनीतिशास्त्र भाषा—मिश्रारामराय । पत्र सं० ३८ । ग्रा० ८½×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५१ । च भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३५०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५२ । च भण्डार ।

३५०२. षष्ठिशतक टिप्पण—भक्तिलाभ । पत्र सं० ५ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १५७२ । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । ग्र भण्डार ।

विशेष—ग्रन्तिम पुष्पिका–

इति षष्ठिशतकं समाप्तं । श्री भक्तिलाभोपाध्याय शिष्य पं० चारू चन्द्रेणलिखि ।

इसमें कुल १६१ गाथायें हैं । ग्रंत की गाथा मे ग्रन्थकर्त्ता का नाम दिया है । १६०वी गाथा की संस्कृत टीका निम्न प्रकार है—

एवं सुगमा । श्री नेमिचन्द्र भांडारिक पूर्व गुरु विरहे धर्मस्य ज्ञातानाभूत । श्री जिनवल्लभसूरि गुणानश्रुत्वा तत्कृते पिंड विशुद्धयादि परिचयेन धर्मतत्त्वज्ञो ततस्तेन सर्वधर्म मूल सम्यक्त्व शुद्धि दृढताहेतुभूता ।। १६० ।। संख्या गाथा विरचयां चक्रे इति सम्बन्ध ।

व्याख्यान्वय पूर्वाऽवचूर्णि रैषानुभक्तिलाभकृता ।
सुखार्थ ज्ञान फला विज्ञैया षष्ठि शतकस्य ।।१।।

प्रशस्ति— सं० १५७२ वर्षे श्री विक्रमनगरे श्री जय सागरोपाध्याय शिष्य श्री रत्नचन्द्रोपाध्याय शिष्य श्री भक्तिलाभो पाध्याय कृता स्वशिष्या वा. चारित्रसोर पं० चारू चंद्रादिभिर्वाच्यमाना चिरं नंदतात् । श्री कल्याणं भवतु श्री श्रमण संघस्य ।

३५०३. शुभसीख........। पत्र सं० २ । ग्रा० ८½×४ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—१३९ सीखों का वर्णन है ।

३५०५. सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिषेण । पत्र सं० ३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० १०५७ । अ भण्डार ।

३५०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ७३१ । क भण्डार ।

३५०७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८५४ पौष बुदी ३ । वे० सं० ७२८ । क भण्डार ।

३५०८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २८३ । ख भण्डार ।

३५०९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७४९ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २०४ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३५१०. सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० ११×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९९ । ञ भण्डार ।

३५११. सज्जनचित्तवल्लभ······। पत्र सं० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७५९ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ञ भण्डार ।

३५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १५३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३५१३. सज्जनचित्तवल्लभ—हगूलाल । पत्र सं० ६६ । आ० १२½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल सं० १९०६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । क भण्डार ।

विशेष—हगूलाल खतौली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीतमदास था । बाद में सहारनपुर चले गये थे वहां मित्रों की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी ।

इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७२९, ७३०) और हैं ।

३५१४. सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचंद । पत्र सं० ३१ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल सं० १९३१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । क भण्डार ।

३५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ७२५ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी पद्य में भी अनुवाद दिया है ।

३५१६. सद्भाषितावलि—सकलकीर्त्ति। पत्र सं० ३४। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८५७। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८६८) और है।

३५१७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १८१० मंगसिर सुदी ७। वे० सं० ४७२। अ भण्डार।

विशेष—घासीराम यति ने मन्दिर में यह ग्रन्थ चढाया था।

३५१८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० १६४१। ट भण्डार।

३५१९. सद्भाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १३६। आ० ११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १९४९ ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ७३२। क भण्डार।

विशेष—पुट्ठों पर पत्रों की सूची लिखी हुई है।

३५२०. प्रति सं० २। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १९४०। वे० सं० ७३३। क भण्डार।

३५२१. सद्भाषितावलीभाषा·········। पत्र सं० २५। आ० १२×५३/४ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १९११ सावन सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५९। अ भण्डार।

३५२२. सन्देहसमुच्चय—धर्मकलशसूरि। पत्र सं० १८। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७१। छ भण्डार।

३५२३. सभासार नाटक—रघुराम। पत्र सं० १५ से ४३। आ० ५१/२×८१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८८१। अपूर्ण। वे० सं० २०७। ख भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में पञ्चमेरु एवं नन्दीश्वरद्वीप पूजा है।

३५२४. सभातरंग·······। पत्र सं० ३८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १००। छ भण्डार।

विशेष—गोधों के नेमिनाथ चैत्यालय सांगानेर में हरिवंशदास के शिष्य कृष्णचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३५२५. सभाशृङ्गार·······। पत्र सं० ४९। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १७३१ कार्त्तिक सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १८७७।

विशेष—प्रारम्भ—

सकलगणि गजेंद्र श्री श्री श्री साधु विजयगणिगुरुभ्योनमः। अथा सभाशृङ्गार ग्रन्थ लिख्यते। श्री ऋषभ देवाय नमः। श्री रस्तु॥

नाभि नंदनु सकलमहीमंडनु पंचशत धनुष मानु तो···· तोर्ण सुवर्ण समानु हर गवल श्यामल कुंतलावली विभूषित स्कंधु केवलज्ञान लक्ष्मी सनाथु भव्य लोकाह्निमुत्ति[क्ति]मार्गनी देखाउड़ं । साध संसार अंधकूप (अंधकूप) प्राणिवर्ग पडता दइं हाथ । युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ । भगवंत श्री आदिनाथ श्री संघतणी मनोरथ पुरो ।।१।।

वीतराग वांणी संसार समुत्तारिणी । महामोह विध्वंसनी । दिनकरानुकारिणी । क्रोधाग्नि दावानलोपशामिनीमुक्तिमार्ग प्रकाशिनी । सर्व जन चित्त सम्मोहकारिणी । आगमोदगारिणी वीतराग वांणी ।।२।।

विशेष अतीसय निधान सकलगुणप्रधान मोहांधकारविछेदन भानु त्रिभुवन सकलसंदेह छेदक । अछेद्य अभेद्य प्राणिगण हृदय भेदक अनंतानंत विज्ञान हसिउं अपनुं केवलज्ञान ।।३।।

अन्तिम पाठ—

अथस्त्री गुणा— १. कुलीना २. शीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ५. कीर्त्तवती ६. विज्ञानवती ७. गुणग्राहणी ८. उपकारिणी ९. कृतज्ञा १०. धर्मवती ११. सोत्साहा १२. संभवमंत्रा १३. क्लेससही १४. अनुपतापीनी १५. सूपात्र सधीर १६. जितेन्द्रिया १७. संमूप्हा १८. अल्पाहारा १९. अलडोला २०. अल्पनिद्रा २१. मितभाषिणी २२. चितज्ञा २३. जीतरोषा २४. अलोभा २५. विनयवती २६. सरूपा २७. सौभाग्यवती २८. सूचिवेषा २९. भुषाश्रया ३०. प्रसन्नमुखी ३१. सुप्रमाणशरीर ३२. सूलक्षणवती ३३. स्नेहवती । इतियोद्गुणा ।

इति सभाश्रृङ्गार संपूर्ण ।।

ग्रन्थाग्रन्थ संख्या १००० संवत् १७३१ वर्षेमास कार्त्तिक सुदी १४ वार सोमवारे लिखतं रूपविजयेन ।।

स्त्री पुरुषो के विभिन्न लक्षण, कलाओं के लक्षण एवं सुभाषित के रूप में विविध बातें दी हुई हैं।

३५२६. सभाश्रृङ्गार········। पत्र सं० २८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७३२ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । क भण्डार ।

३५२७. संबोधसत्ताणु—वीरचंद । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५९ । अ भण्डार ।

आरम्भ— परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार नोकार ।
परमारथ पणि पखणम्युं, संबोधसत्ताणु वीसार ।।१।।
आदि अनादि ते आत्मा, अडवड्यु ऐहअनिवार ।
धर्म्म विहुणो जीवणो, वापडु पंख्यो ये संसार ।।२।।

अन्तिम— सूरी श्री विद्यानंदी जयो श्रीमल्लिभूषण मुनिचंद ।
तसपरि मांहि मांनितो, गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ।। ९६ ।।

तेह कुले कमल दीवसपती जयन्ती जती वीरचंद ।
सुगता भगता ए भावना पीमीये परमानन्द ॥६७॥

इति श्री वीरचंद विरचिते संबोधसत्ताणुदुमा संपूर्ण ।

३५२८. सिन्दूरप्रकरण—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । क्षेमसागर के शिष्य कीर्तिसागर ने लखा मे प्रतिलिपि की थी ।

३५२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से २७ । ले० काल सं० १६०३ । अपूर्ण । वे० सं० २००६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

अन्तिम— इति सिन्दूर प्रकरणस्यस्य व्याख्याणा हर्षकीर्त्तिभिः सूरिभिर्विहितायांत ।

३५३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ से ३४ । ले० काल सं० १८७० श्रावण सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

३५३१. सिन्दूरप्रकरणभाषा—बनारसीदास । पत्र सं० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ । भाषा-हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १६९१ । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वे० सं० ८५६ ।

विशेष—सदासुख भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७१८ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१७) और है ।

३५३३. सिन्दूरप्रकरणभाषा—सुन्दरदास । पत्र सं० ३०७ । आ० १२×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १९२६ । ले० काल सं० १९३९ । पूर्ण । वे० सं० ७६७ । क भण्डार ।

३५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ३० । ले० काल सं० १९३७ सावन बुदी ६ । वे० सं० ८२३ । क भण्डार ।

विशेष—भाषाकार बघावर के रहने वाले थे । बाद में ये मालवदेश के इंद्रावतिपुर मे रहने लगे थे ।
इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ७९८, ८२४, ८५७) और हैं ।

३५३५. सुगुरुशतक—जिनदास गोधा । पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १८५२ चैत्र बुदी ८ । ले० काल सं० १९३७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१० । क भण्डार ।

३५३६. सुभाषितमुक्तावली…… । पत्र सं० २६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६७ । अ भण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नसन्दोह—आ० अमितिगति । पत्र सं० ५४ । आ० १०×३½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १०५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २६) और है ।

३५३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२६ भादवा सुदी १ । वे० सं० ८२१ । क भण्डार ।

विशेष—संग्रामपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से ४६ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । ङ भण्डार ।

३५४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १६१० कात्तिक बुदी १३ । वे० सं० ४२० । च भण्डार ।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पांड्या नाथूलाल से पार्श्वनाथ मंदिर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१. सुभाषितरत्नसन्दोहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १६३३ । ले० काल × । वे० सं० ८१८ । क भण्डार ।

विशेष—पहले भोलीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ८१६, ८२०, ८१६, ८१६) और हैं ।

३५४२. सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र । पत्र सं० ३८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्त्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १६७६) और है ।

३५४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० २३१ । ख भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २३०, २६८) और हैं ।

३५४४. सुभाषितसंग्रह……। पत्र सं० ३१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८४३ बैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१०२ । अ भण्डार ।

विशेष—नैणवा नगर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में १ प्रति पूर्ण (वे० सं० २२५६) तथा २ प्रतियां अपूर्ण (वे० सं० १६६६, १६८०) और हैं।

३५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८८२ । ङ भण्डार ।

३५४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

३५४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६३ । ञ भण्डार ।

३५४८. सुभाषितसंग्रह……। पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत प्राकृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टब्बा टीका दी हुई है । यति कर्मचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३५४९. सुभाषितसंग्रह……। पत्र सं० ११ । आ० ७×५ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११४ । अ भण्डार ।

३५५०. सुभाषितावली—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ५२ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७४८ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

विशेष—लिखितमिदं चौबे रूपसी खीवसी आत्मज ज्ञाति सनाबद वराहटा मध्ये । लिखापितं पहाड्या मयाचंद । सं० १७४८ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्ला ६ रविवासरे ।

३५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८०२ पौष सुदी १ । वे० सं० २२४ । अ भण्डार ।

विशेष—मालपुरा ग्राम में पं० नोनिध ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६०२ पौष सुदी १ । वे० सं० २२७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०२ समये पौष बुदी २ शुक्रवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा: तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा. तदाम्नाये मंडलाचार्य श्री सिंहनंदिदेवा: तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्त्तिदेवा: तत्शिष्यणी पंचाणुव्रतधारिणी बाईक्योसिरि तत्शिष्यनि बाई उदइ सिरि पठनार्थं अग्रोतकान्वये मित्तलगोत्रे साधु श्रीधाने भार्या रयबा तयो पुत्राः त्रयाः प्रथमपुत्र साधु श्री रइमल भार्या पदारथ । द्वितीय पुत्र चाइमल भार्या अजैसिरि तयोः पुत्र परात । तृतीयपुत्र [तपवपु क्रियाप्रतिपालकान् ऐकादश प्रतिमा धारकान जिनशासन समुद्धरणधीरान् साधु श्री कोडना भार्या साध्वी परिमल तयो इदं ग्रन्थं लिखापितं कर्मक्षय निमित्तं । लिखितंकायस्थगौडान्वयश्रीकेशव तत्पुत्र गनेस ।।

३५५३. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६४७ माघ सुदी । वे० सं० २३५। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

भट्टारक श्रीसकलकीर्त्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्तः। श्रीमच्छ्रीपद्मसागरसूरिविजयराज्ये संवत् १६४७ वर्ष माघमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे लीपीकृतं श्रीमुनि शुभमस्तु। लेखक पाठकयो।

संवत्सरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते (१७७७) माघाशितदशम्यां मालपुरेमध्ये श्रीआदिनाथचैत्यालये शुद्धीकृतोऽयं सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पांडेश्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचंद्रेण।

अ भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) और है।

३५५४. प्रति स० ५। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १९३६। वे० सं० ८१३। क भण्डार।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ८१४) और है।

३५५५. प्रति सं० ६। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६। वे० सं० २३३। ख भण्डार

विशेष—पं० माणकचन्द की प्रेरणा से पं० स्वरूपचन्द ने पं० कपूरचन्द से जवनपुर (जोबनेर) में प्रतिलिपि कराई।

३५५६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १६०१ चैत्र सुदी १३। वे० सं० ८७४। ङ भण्डार।

विशेष—श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८) और हैं।

३५५७. प्रति सं० ८। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १७६५ आसोज सुदी ८। वे० सं० ३६५। छ भण्डार।

३५५८. प्रति सं० ९। पत्र सं० ३०। ले० काल सं० १९०४ माघ बुदी ४। वे० सं० ११४। ज भण्डार।

३५५९. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३ से ३०। ले० काल सं० १६३५ बैशाख सुदी १५। अपूर्ण। वे० सं० २१३४। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम २ पत्र नहीं हैं। लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

३५६०. सुभाषितावली……। पत्र सं० २१। आ० ११¾×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८१८। पूर्ण। वे० सं० ४१७। च भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ दीवान संगही ज्ञानचन्दजी का है।

च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४१८, ४१६) अ भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ६३५, १२०१) तथा ट भण्डार १ (वे० सं० १०८१) अपूर्ण प्रति और है।

३५६१. सुभाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १०६। आ० १२३×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१२। क भण्डार।

३५६२. सुभाषितावलीभाषा—दुलीचन्द। पत्र सं० १३१। आ० १२३×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल सं० १६३१ ज्येष्ठ सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८०। क भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८८१) और हैं।

३५६३. सुभाषितावलीभाषा……। पत्र सं० ४५। आ० ११×४३ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८६३ प्र० आषाढ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ११। झ भण्डार।

विशेष—५०५ दोहे हैं।

३५६४. सूक्तिमुक्तावली—सोमप्रभाचार्य। पत्र सं० १७। आ० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम सुभाषितावली भी है।

३५६५. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १६८४। वे० सं० ११७। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

संवत् १६८४ वर्षे श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भ० श्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे भ० श्री विश्वभूषण तत्पट्टे भ० श्री यशःकीर्त्ति ब्रह्म श्रीमेघराज तत्शिष्यब्रह्म श्री करमसी स्वयमेव हस्तेन लिखितं पठनार्थं।

अ भण्डार में ११ प्रतियां (वे० सं० १६५, ३३४, ३४८, ६३०, ७६१, ३७६, २०१०, २०४७, १३४८ २०३३, ११६३) और हैं।

३५६६. प्रति सं० ३। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६३४ सावन सुदी ८। वे० सं० ८२२। क भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८२४) और है।

३५६७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १७७१ आसोज सुदी २। वे० सं० २३४। ख

विशेष—ब्रह्मचारी खेतसी पठनार्थ मालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी।

३५६८. प्रति सं० ५। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० २२६। ख भण्डार।

विशेष—दीवान आरतराम खिंदूका के पुत्र कुंवर बखतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। अक्षर मोटे एवं सुन्दर हैं।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० २३२, २६८) और हैं।

३५६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

ङ भण्डार में ३ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ८८३, ८८४, ८८५) और है ।

३५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १९०१ प्र० श्रावण बुदी ऽऽ । वे० सं० ४२१ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४२२, ४२३) और हैं ।

३५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी ६ । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—रैनवाल में ऋषभनाथ चैत्यालय में आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे (वे० सं० १०३) मे ही ४ प्रतियां और है ।

३५७२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी २ । वे० सं० १८३ । ज भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३६) और है ।

३५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७६७ आसोज सुदी ८ । वे० सं० ८० । ञ भण्डार ।

विशेष—आचार्य क्षेमकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० १६५, २८६, ३७७) तथा ट भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० १६६४, १८३१) और है ।

३५७४. सूक्तावली……। पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । ञ भण्डार ।

३५७५. स्फुटश्लोकसंग्रह…… । पत्र सं० १० से २० । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८८३ । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । ख भण्डार ।

३५७६. स्वरोदय—रनजीतदास (चरनदास) । पत्र सं० २ । आ० १३½×६½ इंच । भाषा–हिन्दी । सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१५ । ञ भण्डार ।

३५७७. हितोपदेश—विष्णुशर्मा । पत्र सं० ३६ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–नीति । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ८५४ । क भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द ने कुमार ज्ञानचंद्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । अ भण्डार ।

३५७६. हितोपदेशभाषा…… । पत्र सं० २६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१११ । अ भण्डार ।

३५८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।



विषय—मन्त्र-शास्त्र



३५८१ इन्द्रजाल……। पत्र सं० २ से ४२। आ० ८३/४×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–तन्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७७८ बैशाख सुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २०१०। ट भण्डार।

विशेष—पत्र १६ पर पुष्पिका—

इति श्री राजाधिराज गोत्र माव वंश केसरीसिंह समाहितेन मनि मंडन मिश्र विरचिते पुरंदरमाया नाम ग्रन्थ वल्लित स्वामिका का माया।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल समाप्तं।

कई नुसखे तथा वशीकरण आदि भी हैं। कई कौतूहल की सी बातें हैं। मंत्र संस्कृत मे है अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

३५८२. कर्मदहनव्रतमन्त्र……। पत्र सं० १०। आ० १०३/४×५३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–मंत्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६३४ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १०४। छ भण्डार।

३५८३ क्षेत्रपालस्तोत्र……। पत्र सं० ४। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६०६ मंगसिर सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ११३७। अ भण्डार।

विशेष—सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुआ है।

३५८४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ३८। ग भण्डार।

३५८५. प्रति स० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६६६। वे० सं० २८२। ञ भण्डार।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है।

३५८६. घंटाकर्णकल्प……। पत्र सं० ५। आ० १२१/२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र र० काल ×। ले० काल सं० १६२२। अपूर्ण। वे० सं० ४५। ख भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है। ५ यंत्र तथा एक घंटा चित्र भी है। जिसमें तीन घण्टे दिये हुये है।

३५८७. घंटाकर्णमन्त्र……। पत्र सं० ५। आ० १२३/४×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६२५। पूर्ण। वे० सं० ३०३। ख भण्डार।

३५८८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प……। पत्र सं० ६। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६१३ बैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १५। घ भण्डार।

३५८९. चतुर्विंशतियंत्रविधान……। पत्र सं० ३। आ० ११३/४×५३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६६। अ भण्डार।

३५९०. चिन्तामणिस्तोत्र……। पत्र सं० २। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८७। झ भण्डार।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी दिया हुआ है।

३५९१. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० २४५। ञ भण्डार।

३५९२. चिन्तामणियन्त्र……। पत्र सं० ३। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-यन्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २९७। ख भण्डार।

३५९३. चौसठयोगिनीस्तोत्र……। पत्र सं० १। आ० ११×५१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११८७, ११९६, २०६४) और है।

३५९४. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८८३। वे० स० ३९७। ञ भण्डार।

३५९५. जैनगायत्रीमन्त्रविधान……। पत्र सं० २। आ० ११×५३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०। ख भण्डार।

३५९६. णमोकारकल्प……। पत्र सं० ४। आ० ८३/४×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९४९। पूर्ण। वे० सं० २८८। झ भण्डार।

३५९७. णमोकारकल्प……। पत्र सं० ६। आ० ११३/४×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९०८। पूर्ण। वे० सं० ३५५। अ भण्डार।

३५९८. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७४। ख भण्डार।

३५९९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १९९५। वे० सं० २३२। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी में मन्त्रसाधन की विधि एवं फल दिया हुआ है।

३६००. णमोकारपैंतीसी……। पत्र सं० ४। आ० १२×५१/२ इंच। भाषा-प्राकृत व पुरानी हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३५। क भण्डार।

३६०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १२५। ख भण्डार।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनन्दि। पत्र सं० ४५। आ० ११३×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९२१। पूर्ण। वे० सं० १९०। अ भण्डार।

३६०३. नवकारकल्प ....। पत्र सं० ६। आ० ९×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

विशेष—अक्षरों की स्याही मिट जाने से पढ़ने में नहीं आता है।

३६०४. पंचदश (१५) यन्त्र की विधि ....। पत्र सं० २। आ० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९७९ फागुण बुदी १। पूर्ण। वे० सं० २४। ज भण्डार।

३६०५. पद्मावतीकल्प ....। पत्र सं० २ से १०। आ० ८×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-मंत्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६८२। अपूर्ण। वे० सं० १३३९। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति– संवत् १६८२ आमावेर्गलपुरे श्री मूलसंघसूरि देवेन्द्रकीर्तिस्तदंतेवासिभिराचार्य श्री हर्षकीर्तिभिरिदमलखि। चिरं नंदतु पुस्तकम्।

३६०६. बाजकोश........। पत्र सं० ६। आ० १२×५। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६३५। अ भण्डार।

विशेष—संग्रह ग्रन्थ है। दूसरा नाम मातृका निर्घंट भी है।

३६०७. भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्य। पत्र सं० ६। आ० ६३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६७। च भण्डार।

३६०८. भूवल ....। पत्र सं० ८। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६८। च भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पत्र में 'अथातः संप्रवक्ष्यामि भूवलानि समासतः' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है।

३६०९. भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिषेण सूरि। पत्र सं० २४। आ० १२×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५०। अ भण्डार।

विशेष—३७ मंत्र एवं विधि सहित हैं।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३२२, १२७९) और हैं।

३६१०. प्रति सं० २। पत्र सं० १४६। ले० काल सं० १७६३ बैशाख सुदी १३। वे० सं० ५६५। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

इसी भण्डार में १ अपूर्ण सचित्र प्रति (वे० सं० ५६३) और है।

३६११. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० ५७५। ङ भण्डार।

३६१२. प्रति सं० ४। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १८६८ चैत बुदी ....। वे० सं० २६६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति संस्कृत टीका सहित (वे० सं० २७०) और है।

३६१३. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० १६३६। ट भण्डार।

विशेष—बीजाक्षरों में ३१ यंत्रों के चित्र है। यत्रविधि तथा मंत्रो सहित है। संस्कृत टीका भी है। पत्र ७ पर बीजाक्षरों में दोनों ओर दो त्रिकोण यन्त्र तथा विधि दी हुई है। एक त्रिकोण मे आभूषण पहिने खड़े हुये नग्न स्त्री का चित्र है जिसमें जगह २ अक्षर लिखे है। दूसरी ओर भी ऐसा ही नग्न चित्र है। यन्त्रविधि है। ३ मे ६ व ६ से ४६ तक पत्र नहीं है। १–२ पत्र पर यंत्र मंत्र सूची दी है।

३६१४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४७ से ५७। ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १६३७। ट भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर मे पं० चोखचन्द के शिष्य सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति अपूर्ण (वे० सं० १६३८) और है।

३६१५. भैरवपद्मावतीकल्प ......। पत्र सं० ४०। आ० ६×४ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७४। ङ भण्डार।

३६१६. मन्त्रशास्त्र...... ...। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३१। ञ भण्डार।

विशेष—निम्न मन्त्रो का संग्रह है।

१. चौकी नाहरसिंह की २. कामण विधि ३. यंत्र ४. हनुमान मंत्र ५. टिड्डी का मन्त्र ६. पलीता भूत व चुडैल का ७. यंत्र देवदत्त का ८. हनुमान का यन्त्र ९. सर्पाकार यन्त्र तथा मन्त्र १०. सर्वकाम सिद्धि यन्त्र (चारों कोनों पर औरङ्गजेब का नाम दिया हुआ है) ११. भूत डाकिनी का यन्त्र।

३६१७. मन्त्रशास्त्र........। पत्र सं० १७ से २७। आ० ६३/४×५१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५८४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ५८५, ५८६) और हैं।

३६१८. मन्त्रमहोदधि—पं० महीधर। पत्र सं० १२०। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ माघ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६१६। अ भण्डार।

३६१९. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ५८३। क भण्डार।

विशेष—अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है।

३६२० मन्त्रसंग्रह……। पत्र सं० फुटकर। आ० । भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६८। क भण्डार।

विशेष—करीब ११५ यन्त्रों के चित्र हैं। प्रतिष्ठा आदि विधानों में काम आने वाले चित्र हैं।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का संग्रह)……। पत्र सं० २०। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७६। घ भण्डार।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है।

३६२२. यक्षिणीकल्प……। पत्र सं० १। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०५। ङ भण्डार।

३६२३ यंत्र मंत्रविधिफल……। पत्र सं० १५। आ० ६½×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६६। ट भण्डार।

विशेष—६२ यंत्र मन्त्र सहित दिये हुये है। कुछ यन्त्रों के खाली चित्र दिये हुये है। मन्त्र बीजाक्षरों मे हैं।

३६२४. वर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक। पत्र सं० ६ से २६। आ० १०½×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १४६५। अपूर्ण। वे० सं० १६६७। ट भण्डार।

विशेष—१ मे ५, ७, १०, १५, १६, १६ से २१ पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है।

८वें पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगणभृच्छिष्यः श्रीसिंहतिलकसूरि रिमासाह्लाददेवतोज्वलविशदमना लिखत वान्कल्पं ।।६६।। इति श्रीसिंहतिलक सूरिकृते वर्द्धमानविद्याकल्पः ।।

हिन्दी गद्य उदाहरण– पत्र ८ पंक्ति ५—

जाइ पुष्प सहस्र १२ जापः। गूगल गउ बीस सहस्र ।।१२।। होम कीजइ विद्यालाभ हुई।

पत्र ८ पंक्ति ६— ॐ कुरु कुरु कामाख्यादेवी कामइ आवीज २। जग मन मोहनी सूती बइठी उठी जगमरण हाथ जोडिकरि साम्ही आवइ। माहरी भक्ति गुरु की शक्ति वायदेवी कामाख्या म्हारी शक्ति आकर्षि।

पृष्ठ २४— अन्तिम पुष्पिका– इति वर्द्धमानविद्याकल्पस्तृतीयाधिकारः ।। ग्रन्थाग्रन्थ १७५ अक्षर १६ सं० १४६५ वर्षे सगरकूपशालायां अणहिल्लपाटकपरपर्याये श्री रत्नमहानगरेऽलेखि।

पत्र २५— गुटिकाओं के चमत्कार हैं। दो स्तोत्र हैं। पत्र २६ पर नालिकेर कल्प दिया है।

३६२५. विजययन्त्रविधान········। पत्र सं० ७। आ० १०३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८००। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५६८, ५६६) तथा ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३३१) और है।

३६२६. विद्यानुशासन·······। पत्र सं० ३७०। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। र० काल ×। ले० काल सं० १६०६ प्र० भादवा बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६५६। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सम्बन्धित यन्त्र भी है। यह ग्रन्थ छोटीलालजी ठोलिया के पठनार्थ पं० मोतीलालजी के द्वारा हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई। पारिश्रमिक २४।-) लगा।

३६२७. प्रति सं० २। पत्र सं० २८५। ले० काल सं० १६३३ मंगसिर बुदी ५। वे० सं० ६५। घ भण्डार।

विशेष—गङ्गाबक्स ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

३६२८. यंत्रसंग्रह········। पत्र सं० ७। आ० १३३×६३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४५। अ भण्डार।

विशेष—लगभग ३५ यन्त्रों का संग्रह है।

३६२६. षटकर्मकथन········। पत्र सं० ३। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१०३। ट भण्डार।

विशेष—मन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है।

३६३०. सरस्वतीकल्प········। पत्र सं० २। आ० ११३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७७०। क भण्डार।



विषय-कामशास्त्र

३६३१. कोकशास्त्र······। पत्र सं० ६। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोक। र० काल ×। ले० काल सं० १८०३। पूर्ण। वे० सं० १६५६। ट भण्डार।

विशेष—निम्न विषयों का वर्णन है।

द्रावणविधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण, स्थूलीकरण, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिसंस्कारविधि आदि।

३६३२. कोकसार······। पत्र सं० ७। आ० ६×६३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६। क भण्डार।

३६३३. कोकसार—आनन्द। पत्र सं० ५। आ० १३३×६३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-काम शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१६। अ भण्डार।

३६३४. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६। ख भण्डार।

३६३५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० २६४। ञ भण्डार।

३६३६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १७३६ प्र० चैत्र सुदी ५। वे० सं० १५५२। ट भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। जट्टू व्यास ने नरायणा में प्रतिलिपि की थी।

३६३७. कामसूत्र—कविहाल। पत्र सं० ३२। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-काम शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५। ख भण्डार।

विशेष—इसमे कामसूत्र की गाथायें दी हुई हैं। इसका दूसरा नाम सत्तसप्रसमत्त भी है।



विषय- शिल्प-शास्त्र



३६३८. **बिम्बनिर्माणविधि**........। पत्र सं० ६। आ० ११½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शिल्प शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३३। क भण्डार।

३६३९. **बिम्बनिर्माणविधि**........। पत्र सं० ६। आ० ११×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शिल्प शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३४। क भण्डार।

३६४०. **बिम्बनिर्माणविधि**........। पत्र सं० ३६। आ० ८½×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शिल्पकला [प्रतिष्ठा] र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७। च भण्डार।

विशेष—कापी साइज है। पं० कस्तूरचन्दजी साह द्वारा लिखित हिन्दी अर्थ सहित है। प्रारम्भ मे ३ पत्र की भूमिका है। पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के श्लोको का हिन्दी अनुवाद किया गया है। श्लोक ६१ है। पत्र २६ से ३६ तक बिम्ब निर्माणविधि भाषा दी गई है। इसी के साथ ३ प्रतिमाओ के चित्र भी दिये गये है। (वे० सं० २४९) च भण्डार। कलशारोपण विधि भी है। (वे० सं० २४८) च भण्डार।

३६४१. **वास्तुविन्यास**........। पत्र सं० ३। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-शिल्पकला। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४५। छ भण्डार।



विषय- लक्षण एवं समीक्षा

३६४२. आगमपरीक्षा······। पत्र सं० ३ । आ० ७×३¾ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–समीक्षा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

३६४३. छंदशिरोमणि—शोभनाथ । पत्र सं० ३१ । आ० ९×६ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–लक्षण । र० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ···· । ले० काल सं० १८२६ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १९३६ । ट भण्डार ।

३६४४. छंदकीय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१४ । ट भण्डार ।

अन्तिम पुष्पिका— इति श्री छंदकीयकवित्वे कामधेन्वाख्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्त्तिविरचिते समवृत्तप्रकरण समाप्त । प्रारम्भ मे कमलबंध कवित्त में चित्र दिये हैं ।

३६४५. धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी गद्य । विषय–समीक्षा । र० काल सं० १७१८ । ले० काल सं० १७५७ । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है । टीकाकार का परिचय—

साहु श्री हेमराज सुत मात हमीरदे जाणि ।
कुल निगोत श्रावक धर्म दशरथ तास बखाणि ।।
संवत सतरासै सही अष्टादश अधिकाय ।
फागुण तम एकादशी पूरण भई सुभाय ।।
धर्म परीक्षा वचनिका सुंदरदास सहाय ।
साधर्मी जन समझि नै दशरथ कृति चितलाय ।।

टीका— विषया कै वसि पड्या किंपरण जीव पाप ।
करै छै सह्यो न जाई ती थे दुखी होइ मरे ।।

लेखक प्रशस्ति— संवत् १७५७ वर्षे पौष शुक्ला १२ भृगौवारे दिवसा नगर्यां (दौसा) जिन चैत्यालये भि० भट्टारक-श्रीनरेन्द्रकीर्त्ति तत्शिष्य पं० (गिरधर) कटा हुआ ।

३६४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०५ । ले० काल सं० १७१६ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ३३० । क भण्डार ।

विशेष—इति श्री अमितिगतिकृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी बालबोधनामटीका तत्र धर्म्मार्थी दशरथेन कृता: समाप्ताः ।

३६४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १८९६ भादवा सुदी ११ । वे० सं० ३३१ । क भण्डार ।

३६४८. धर्मपरीक्षा—अमितिगति । पत्र सं० ८५ । आ० १२×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । र० काल सं० १०७० । ले० काल सं० १८८४ । पूर्ण । वे० सं० २१२ । अ भण्डार ।

३६४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० ३३२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७८४, ९४५) और हैं ।

३६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १९३९ भादवा सुदी ७ । वे० सं० ३३५ । क भण्डार ।

३६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७८७ माघ बुदी १० । वे० सं० ३२९ । ङ भण्डार ।

३६५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० १७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३३ । ले० काल सं० १६५३ बैशाख सुदी २ । वे० सं० ५९ । छ भण्डार ।

विशेष—अलाउद्दीन के शासनकाल मे लिखा गया है । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०, ६१) और हैं ।

३६५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ९१ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३४४, ४७४) और हैं ।

३६५५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १५९३ भादवा बुदी १३ । वे० सं० २१५७ । ट भण्डार ।

विशेष—रामपुर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे जमू से लिखवाकर ब्र० श्री धर्मदास को दिया । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

३६५६. धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास सोनी। पत्र सं० १०२। आ० १०३×४३ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय-समीक्षा। र० काल १७००। ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ७७३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति अपूर्ण (वे० सं० ११६६) और हैं।

३६५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६५४। वे० सं० ३३६। क भण्डार।

३६५८. प्रति स० ३। पत्र सं० ११४। ले० काल सं० १८२६ आषाढ बुदी ६। वे० सं० ५६५। च भण्डार।

विशेष—हंसराज ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। पत्र चिपके हुये हैं।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५६६) और है।

३६५९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६३। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० ३४५। झ भण्डार।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३६) और है।

३६६०. प्रति सं० ५। पत्र सं० १०३। ले० काल सं० १८२५। वे० सं० ५२। ञ भण्डार।

विशेष—बखतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३१४) और है।

३६६१. धर्मपरीक्षाभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ३८६। आ० ११×५३ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–समीक्षा। र० काल सं० १६३२। ले० काल सं० १६४२। पूर्ण। वे० सं० ३३८। क भण्डार।

३६६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२२। ले० काल सं० १६३८। वे० सं० ३३७। क भण्डार।

३६६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २५०। ले० काल सं० १६३६। वे० सं० ३३४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३३३, ३३५) और हैं।

३६६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६२। ले० काल ×। वे० सं० १७०७। ट भण्डार।

३६६५. धर्मपरीक्षारास—ब्र० जिनदास। पत्र सं० १८। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–समीक्षा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०२ फागुण सुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० ६७३। अ भण्डार।

विशेष— १६ व १७वां पत्र नही है। अन्तिम १८वें पृष्ठ पर जीरावलि स्तोत्र हैं।

आदिभाग—

धर्म जिणेसर २ नमूं ते सार,
तीर्थंकर जे पनरमु वांछित फल बहु दान दातार,
सारदा स्वामिणि बली तवुं बुधिसार,

मुक्त देउमाता श्रीगणधर स्वामी नमसकरूंश्री सकलकीर्त्ति भवतार,

मुनि भवनकीर्त्ति पाय प्रणमनि कहिसूं रासहूं सार ॥१॥

दूहा— धरम परीक्षा करूं निरूमली भवीयण सुणु तह्यं सार।

ब्रह्म जिणदास कहि निरमलु जिम जांणु विचार ॥२॥

कनक रतन माणिक आवि परीक्षा करी लीजिसार।

तिम धरम परीषीइ सत्य लीजि भवतार ॥३॥

अन्तिम प्रशस्ति—

दूहा— श्री सकलकीरतिगुरुप्रणमीनि मुनिभवनकीरतिभवतार।

ब्रह्म जिणदास भणिरू अदु रासकीउ सविचार ॥६०॥

धरमपरीक्षारासनिरमलु धरमतणुं निधान।

पढि गुणि जे सांभलि तेहनि उपजि मति ज्ञान ॥६१॥

इति धर्मपरीक्षा रास समाप्तः

संवत् १६०२ वर्षे फागुण सुदी ११ दिने सूरतस्थाने श्री शीतलनाथ चैत्यालये आचार्य श्री विनयकीर्तिः पंडित मेघराजकेन लिखितं स्वयमिदं।

३६६६. धर्मपरीक्षाभाषा……। पत्र सं० ६ से ५०। आ० ११×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–समीक्षा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३२। क भण्डार।

३६६७. मूर्खके लक्षण……। पत्र सं० २। आ० ११×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–लक्षणग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७६। क भण्डार।

३६६८. रत्नपरीक्षा—रामकवि। पत्र सं० १७। आ० ११×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय–लक्षण ग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११८। छ भण्डार।

विशेष—इन्द्रपुरी में प्रतिलिपि हुई थी।

प्रारम्भ— गुरु गणपति सरस्वति समरि यातै वध है बुद्धि।

सरसबुद्धि संवह रचो रतन परीक्षा सुधि ॥१॥

रतन दीपिका ग्रन्थ मे रतन परिछ्या जान।

सगुरु देव परताप तैं भाषा वरनो आनि ॥२॥

अन्तिम— रत्न परीछ्या रंगसु कीन्ही राम कविंद।

इन्द्रपुरी में आनि के लिखी जु भामाणंद ॥६१॥

३६६९. रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट। पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५३। ट भण्डार।

विशेष—१२ से आगे पत्र नहीं है।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र। पत्र सं० १७। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल सं० १८२७ पौष सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६४१। अ भण्डार।

३६७१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १६३५ आसोज सुदी ११। वे० सं० २१६। ज भण्डार।

३६७२. वक्ताश्रोतालक्षण……। पत्र सं० ६। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६४२। क भण्डार।

३६७३ प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ६४३। क भण्डार।

३६७४. वक्ताश्रोतालक्षण……। पत्र सं० ४। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६४४। क भण्डार।

३६७५. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६४५। क भण्डार।

३६७६. शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट। पत्र सं० २४। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६१६। अ भण्डार।

३६७७. शृङ्गारतिलक—कालिदास। पत्र सं० २। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल सं० १८३७। पूर्ण। वे० सं० ११४१। अ भण्डार।

इति श्री कालिदास कृतौ शृङ्गारतिलक संपूर्णम्

प्रशस्ति— संवत्सरे सप्तत्रिकवस्वेंदु मिते असाढसुदी १३ त्रयोदश्यां पंडितजी श्री हीरानन्दजी तच्छिष्य पंडितजी श्री चोखचन्दजी तच्छिष्य पंडित विनयवताजिनदासेन लिपीकृतं। मूरामलजी या आका।।

३६७८. स्त्रीलक्षण……। पत्र सं० ४। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११८१। अ भण्डार।



विषय- फागु रासा एवं वेलि साहित्य

३६७६. अञ्जनारास—शांतिकुशल। पत्र सं० १२ से २७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल सं० १६६७ माह सुदी २। ले० काल सं० १६७६। अपूर्ण। वे० सं० २। ख भण्डार।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

रास रच्यू सती अञ्जना मइ जूनी चउपई जोई रे।
अधिकुं उछउं जे कह्यं मुझ मिथ्या दोकड होई रे॥
संवत् सोलइ सतइ सठि माहा शुदि नी बीज बखाणु रे।
सोवन गिरिरास माझीउ जइ सोलइ गुरु जाणु रे॥
तप गछ नायक गुण निलउ विजय सेन सूरी सरगाजइ रे।
आचारिज महिमा घणो विज देव सूरी पद छाजइ रे॥
तात पचाइणि दीपलु जस महिमा कीरति भरिउस।
मात प्रेमलदे उरि धरया देत्र कइ पाटणे अवतरिउ रे॥
विनयकुशल पडित वरु परगारी गुणदरिउ रे।
चरण कमल सेवा लही शांतिकुशल इम रास करिउ रे॥
अविचलकीरति अञ्जना जा रवि सस होइइ आकाश रे।
पढै गुणैइ जे सांभलइ रहि लखिमी तम घर पासइ रे॥

३६८०. आदीश्वरफाग—ज्ञानभूषण। पत्र सं० ४०। आ० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–फागु (भगवान आदिनाथ का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल सं० १५६२ वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ७१। क भण्डार।

विशेष—श्री मूलसंघे भट्टारिक श्री ज्ञानभूषण क्षुल्लिका बाई कल्याणमती कर्मक्षयार्थं लिखितं।

३६८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ११ से ५। ले० काल ×। वे० सं० ७२। ख भण्डार।

३६८२. कर्मप्रकृतिविधानरास—बनारसीदास। पत्र सं० १८। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल सं० १७००। ले० काल सं० १७८४। पूर्ण। वे० सं० १६२७। ट भण्डार।

३६८३. चन्दनबालारास……… पत्र सं० २ । म्रा० ६३/४×४१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सती चन्दनबाला की कथा है । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६५ । श्र भण्डार ।

३६८४. चन्द्रलेहारास—मतिकुशल । पत्र सं० २६ । म्रा० १०×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–रासा (चन्द्रलेखा की कथा है) र० काल सं० १७२८ म्रासोज बुदी १० । ले० काल सं० १८२६ म्रासोज सुदी । पूर्ण । वे० सं० २१७१ । श्र भण्डार ।

विशेष—म्रकबराबाद में प्रतिलिपि की गयी थी । दशा जीर्ण शीर्ण तथा लिपि विकृत एवं म्रशुद्ध है । प्रारम्भिक २ पद्य पत्र फटा हुम्रा होने के कारण नहीं लिखे गये हैं ।

सामाइक सुधा करो, त्रिकरण सुद्ध त्रिकाल ।
सत्रु मित्र समतागणि, तिमतुटे जग जाल ।।३।।
मरुदेवि भरथादि मुनि, करी समाइक सार ।
केवल कमला तिण वरी, पाम्यो भवनो पार ।।४।।
सामाइक मन सुद्ध करी, पामी ह्रांम पवल ।
तिष ऊपरिन्दु सांभलो, चंद्रलेहा चरित्र ।।५।।
वचन कला तेह वनिछै, सरसंघ रसाल ।
तीणे जाणु सक्त पड़सौ, सोभलतां खुस्याल ।।६।।

म्रन्तिम—

संबत् सिद्धि कर मुनिससी जी वद म्रासू दसम विचार ।
श्री पभीयाल मैं प्रेम सुं, एह रच्यौ म्रधिकार ।।१२।।
खरतर गरापति सुखकरुंजी, श्री जिन सूरिंद ।
वडवती जिम साखा खमनीजी, जो घू रजनीस दिणंद ।।१३।।
सुगुरु श्री सुगुणकीरति गणीजी, वाचक पदवी धरंत ।
म्रंतयवासी चिर गयो जी, मतिवल्लभ महंत ।।१४।।
प्रथमत सुसी म्रति प्रेम स्युं जी, मतिकुसल कहै एम ।
सामाइक मन सुद्ध करो जी, जीव वए म्रइं लेहा जेम ।।१५।।
रतनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम म्रभ्यास ।
खसय चोबीस गाहा म्रछे जी, उगुणतीस ढाल उल्हास ।।१६।।
भणे गुणे सुणे भावस्युं जी, गच्छातण गुण जेह ।
मन सुध जिनधर्म तैं करैं जी, त्री भुवन पति हुवै तेह ।।१७।।

सर्व गाथा ६२४ । इति चन्द्रलेहारास संपूर्ण ।।

३६८५. जलगालणरास—ज्ञानभूषण। पत्र सं० २। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी गुजराती। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। ट भण्डार।

विशेष—जल छानने की विधि का वर्णन रास के रूप में किया गया है।

३६८६. धन्नाशालिभद्ररास—जिनराजसूरि। पत्र स० २६। आ० ७½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय–रासा। र० काल सं० १६७२ आसोज बुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४८। अ भण्डार।

विशेष—मुनि इन्द्रविजयगणि ने गिरपोर नगर में प्रतिलिपि की थी।

३६८७. धर्मरासा……। पत्र सं० २ से २०। आ० ११×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६४८। ट भण्डार।

विशेष—पहिला, छठा तथा २० से आगे के पत्र नहीं हैं।

३६८८. नवकाररास……। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–णमोकार मन्त्र महात्म्य वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १८३१ फागुण सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ११०२। अ भण्डार।

३६८९. नेमिनाथरास—विजयदेवसूरि। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (भगवान नेमिनाथ का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १०२६। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर में साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी।

३६९०. नेमिनाथरास—ऋषि रामचन्द। पत्र सं० ३। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४०। अ भण्डार।

विशेष—आदिभाग–

दूहा— अरिहंत सिध ने आपरीया उपजाया अणगार।
पांचेपद तेहुंनमूं, अठोत्तर सो वार ॥१॥
मोक्षगामी बोनु हुवा, राजमती रह नेम।
चित्रेकतर लीया मणी, साभल जे धर प्रेम ॥२॥

ढाल जिणेसुर मुनिराया…………….।

सुखकारी सोरठ देसे राज कीसन रेस मन मोहौलाल।
दीपती नगरी दुवारकाए ॥१॥
समुद विजे तिहांभूप सेवा देजी राणी रूरेक।
महाराणी मानी जतीए ॥२॥

आए जन(म)मीया अरिहन्त देव इह चोसट सारे।
ज्यारी नेव में बाल ब्रह्मचारी बाबा समोए ॥३॥

अन्तिम— सिल ऊपर पच डालियो दीठो दोय सुत्रा में निचोड़रे।
तिरा अनुसार माफक है, रिषि रामचंद्रजी कीनो जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उमाजीरी तन् सीखणी छोटाजीरी चेलीह सतु लीखतु पाली मदे। पाली में प्रतिलिपि हुई थी।

३६६१. नेमीश्वरफाग—ब्रह्मरायमल्ल। पत्र सं० ८ से ७०। आ० ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–फागु। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३८३। ङ भण्डार।

३६६२. पंचेन्द्रियरास……। पत्र सं० ३। आ० ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (पांचों इन्द्रियों के विषय का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३५६। अ भण्डार।

३६६३. पल्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० ८½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४४३। ङ भण्डार।

विशेष—पल्यविधानव्रत का वर्णन है।

३६६४. बंकचूलरास—जयकीर्त्ति। पत्र सं० ४ से १७। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (कथा)। र० काल सं० १६८५। ले० काल सं० १६६३ फागुण बुदी १३। अपूर्ण। वे० सं० २०६२। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं है। ग्रन्थ प्रशस्ति—

कथा सुणी बंकचूलनी श्रेणिक धरी उल्लास।
वीरमि वांदी भावसुं पुहुत राजग्रह वास ॥१॥
संवत सोल पच्यासीइं गूर्ज्जर देस मझार।
कल्पवल्लीपुर सोभती इन्द्रपुरी अवतार ॥२॥
नरसिंघपुरा वाणिक वसि दया धर्म सुखकंद।
चैत्यालि श्री वृषभवि आदि भवीयण वृंद ॥३॥
काष्ठासंघ विद्यागणे श्री सोमकीर्त्ति मही सोम।
विजयसेन विजयाकर यशकीर्त्ति यशस्तोम ॥४॥
उदयसेन महीमोदय त्रिभुवनकीर्त्ति विख्यात।
रत्नभूषण गछपती हवा भुवनरयण जेहुंजात ॥५॥

तस पट्टि सूरीवरमणु जयकीत्ति जयकार ।
जे भवियण भवि सांभली ते पामी भवपार ।।६।।
रूपकुमर रलीया मणु बंकचूल बीजु नाम ।
तेह रास रच्यु रूवडु जयकीत्ति सुखधाम ।।७।।
नीम भाव निर्मल हुई गुरुवचने निर्द्धार ।
सांभलतां संपद् मलि ये भणि नरतिनार ।।८।।
याद्र सायर नम्र महीचंद सूर जिनभास ।
जयकीत्ति कहिता रहु बंकचूलनु रास ।।९।।
इति बकचूलरास समाप्तः ।

संवत् १६६३ वर्षे फागुण बुदी १३ पिपलाइ ग्रामे लक्षतं भट्टारक श्री जयकीत्ति उपाध्याय श्री वीरचंद ब्रह्म श्री जसवंत वाइ कपूरा या बीच रास ब्रह्म श्री जसवंत लक्षतं ।

३६६५. भविष्यदत्तरास—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा-भविष्यदत्त की कथा है । र० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ६८६ । अ भण्डार ।

३६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० ११३० । ट भण्डार ।

विशेष—आमेर में श्री मल्लिनाथ चैत्यालय मे श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य दयाराम सोनी ने प्रतिलिपि की थी ।

३६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

विशेष—पं० खाजूराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १३२) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १६१) तथा झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३५) और है ।

३६६८. रुकमिणीविवाहवेलि (कृष्णरुकमिणीवेलि)—पृथ्वीराज राठौड़ । पत्र स० ५१ से १२१ । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–वेलि । र० काल सं० १६३८ । ले० काल सं० १७११ चैत्र बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १६४ । ख भण्डार ।

विशेष—देवगिरी मे महात्मा जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी । ६३० पद्य हैं । हिन्दी गद्य में टीका भी दी हुई है । ११२ पृष्ठ से आगे अन्य पाठ हैं ।

३६९९. शीलरासा—विजयदेव सूरि । पत्र सं० ७ । आ० १०३×४१ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–रासा । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी ३ । वे० सं० ११८८ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६३७ वर्षे फागुण सुदी ३ गुरुवारे श्री खरतरगच्छे आचार्य श्री जिनराजसूरि शिष्य पं० नंदिरंग लिखितं । उसवंसेसंघ वालेचा गोत्रे सा० हीरा पुत्री रतनकु श्राविका नाम्नी पठनार्थं लिखितं दारुमध्ये ।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्री पुज्य वयस सेवे संतोष सुपसाय,
सीस भुवी लिख निरूपम भाव
नकर जावे उर्वहि बावतु
नेमि तणउ नित नेवल जोडि ॥
नानटी एह वि नीनवज
मुक लिखा प्रगह मनो भावि जोड़ि ।
गोतम संमत्त व, जी प्रीतकि
उसरामुयन, नामीसद तोह ॥

बली घने, राय धकी भाय, माता पिता जे सहु होई
विफल हो यो मुझ पातक सोइ, जिम जिन भाख्यउ ते सही ॥
दुरित नइ दुख सहु दूरि, नेमि जिणेसर नामइ पूरि
प्रारणसुसंयम आषिया, इम वीनवइ श्री विजयदेव सूरि ॥

॥ इति शील रासउ समाप्तः ॥

३७००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७ । ले० काल सं० १६७० फागुण सुदी १ । वे० सं० १०६१ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । ख भण्डार ।

३७०२. श्रीपालरास—जिनहर्षगणि । पत्र सं० १० । आ० १०×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–रासा (श्रीपाल रासा की कथा है) । र० काल सं० १७४२ चैत्र बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । अ भण्डार ।

विशेष—आदि एवं अन्त भाग निम्न प्रकार है—

श्रीजिनाय नमः ।। ढाल सिधनी ।।

चउवीसे प्रणमु' जिणराय, जास पसायइ नवनिधि पाय ।
सुयदेवा धरि रिदय मझारि, कहिस्यु' नवपदनउ अधिकार ।।
मंत्र जंत्र छइ अवर अनेक, पिणि नवकार समउ नही एक ।
सिद्धचक्र नवपद सुपसायइ, सुख पाम्यां श्रीपाल नररायइ ।।
आंबिल तप नव पद संजोग, गलित सरीर थयो नीरोग ।
तास चरित्र कहुं हित आणी, सुणिज्यो नरनारी मुझ वाणी ।।

अन्तिम—

श्रीपाल चरित्र निहालमइ, सिद्धचक्र नवपद धारि ।
ध्याईयइ तउ सुख पाईयइं, जगमा जस विस्तार ।।८५।।
श्री गच्छखरतर पति प्रगट श्री जिनचन्द्र सरीस ।
गणि शांति हरख वाचक तणो, कहइ जिनहरष सुसीस ।।८६।।
सत्तरै बयालीसे समै, वदि चैत्र तेरसि जाण ।
ए रास पाटण मां रच्यो, सुणता सदा कल्याण ।।८७।।

इति श्रीपाल रास संपूर्ण । पद्य सं० २८७ है ।

३७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १७७२ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ७२२ । अ भण्डार ।

३७०४. षट्लेश्याबेलि—साह लोहट । पत्र सं० २२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धांत । र० काल सं० १७३० आसोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८० । झ भण्डार ।

३७०५. सुकुमालस्वामीरास—ब्रह्म जिनदास । पत्र सं० ३४ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–हिन्दी गुजराती । विषय–रासा (सुकुमाल मुनि का वर्णन) । ले० काल सं० १६३५ । पूर्ण । वे० सं ३६६ । अ भण्डार ।

३७०६. सुदर्शनरास—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० १३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–रासा (सेठ सुदर्शन का वर्णन है) । र० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० १०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—साह लालचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १७६२ सावण सुदी १० । वे० सं० १०६ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३७०८. सुभौमचक्रवर्त्तिरास—ब्रह्मजिनदास। पत्र सं० १३। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६२। अ भण्डार।

३७०९. हमीररासो—महेश कवि। पत्र सं० ८८। आ० ६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–रास। (ऐतिहासिक)। र० काल ×। ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० ६०४। क भण्डार।



विषय- गणित-शास्त्र

३७१०. गणितनाममाला—हरदत्त। पत्र सं० १४। आ० ६३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-गणितशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४०। ख भण्डार।

३७११. गणितशास्त्र……। पत्र सं० ६१। आ० ६×३३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६। घ भण्डार।

३७१२. गणितसार—हेमराज। पत्र सं० ५। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२२१। अ भण्डार।

विशेष—हाशिये पर सुन्दर बेलबूटे हैं। पत्र जीर्ण है तथा बीच मे एक पत्र नही है।

३७१३. पट्टी पहाड़ों की पुस्तक……। पत्र सं० ४७। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२८। ट भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के पत्रो में खेतो की डोरी आदि डालकर नापने की विधि दी है। पुनः पत्र १ से ३ तक सीधो वर्ण समाम्नायः। आदि की पांचो संधियो (पुस्तियो) का वर्णन है। पत्र ४ से १० तक चाणिक्य नीति के श्लोक हैं। पत्र १० से ३१ तक पहाड़े है। किसी २ जगह पहाड़ो पर सुभाषित पद्य है। ३१ से ३६ तक तोल नाप के गुर दिये हुये है। निम्न पाठ और हैं।

१. हरिनाममाला—शङ्कराचार्य। संस्कृत …… तक।
२. गोकुलगांवकी लीला— हिन्दी पत्र ४५ तक।
विशेष—कृष्ण ऊधव का वर्णन
३. सप्तश्लोकीगीता— पत्र ४६ तक।
४. स्नेहलीला— पत्र ४७ (अपूर्ण)

३७१४. राजूप्रमाण……। पत्र सं० २। आ० ८३×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय गणितशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४२७। अ भण्डार।

३७१५. लीलावतीभाषा—मोहनमिश्र। पत्र सं० ८। आ० ११×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-गणितशास्त्र। र० काल सं० १७१४। ले० काल सं० १८३८ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ६४०। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरादास। पत्र सं० ३। आ० ६×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-गणितशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४१। क भण्डार।

३७१७. प्रति सं० २। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। वे० सं० १४४। ख भण्डार।

३७१८. लीलावतीभाषा………। पत्र सं० १३। आ० १३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७१। च भण्डार।

३७१९. प्रति सं० २। पत्र सं० २७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६४२। ट भण्डार।

३७२०. लीलावती—भास्कराचार्य। पत्र सं० १७६। आ० ११¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३६७। अ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित सुन्दर एवं नवीन है।

३७२१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१। ले० काल सं० १८६२ भादवा बुदी २। वे० सं० १७०। ख भण्डार।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल मे माणकचन्द के पुत्र मनोरथराम सेठी ने हिण्डौन में प्रतिलिपि की थी।

३७२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५४। ले० काल ×। वे० सं० ३२१। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वे० सं० ३२४ से ३२७ तक) और हैं।

३७२३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १७६५। वे० सं० २१६। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० २२०, २२१) और हैं।

३७२४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६३। ट भण्डार।



विषय- इतिहास



३७२५. आचार्यों का ब्यौरा·······। पत्र सं० ६। आ० १२३×५३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १७१६। पूर्ण। वे० सं० २६७। ख भण्डार।

विशेष—सुखानन्द सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी। इसी वेष्टन मे १ प्रति और है।

३७२६. खंडेलवालोत्पत्तिवर्णन······। पत्र सं० ८। आ० ७×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५। ङ भण्डार।

विशेष—८४ गोत्रो के नाम भी दिये हुये हैं।

३७२७. गुर्वावलीवर्णन·······। पत्र सं० ५। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३०। ञ भण्डार।

३७२८. चौरासीज्ञातिछंद·······। पत्र सं० १। आ० १०×५३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०३। ट भण्डार।

३७२९. चौरासीजाति की जयमाल—विनोदीलाल। पत्र सं० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १८७३ पौष बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २८१। छ भण्डार।

३७३०. छठा आरा का विस्तार·······। पत्र सं० २। आ० १०३×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८६। अ भण्डार।

३७३१. जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक वर्णन······। पत्र सं० १२७। आ० ९×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८९। ट भण्डार।

विशेष—रामगढ सवाईमाधोपुर आदि बसाने का पूर्ण विवरण है।

३७३२. जैनबद्री मूडबद्री की यात्रा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ४। आ० १०३×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। ख भण्डार।

३७३३. तीर्थङ्करपरिचय·······। पत्र सं० ४। आ० १२×५३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४०। अ भण्डार।

३७३४. तीर्थङ्करों का अन्तराल·······। पत्र सं० १। आ० ११×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० २१४२। अ भण्डार।

३७३५. दादूपन्थावली ……। पत्र सं० १। आ० १०×३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३६४। अ भण्डार।

दादूजी दयाल पाट गरीब मसकीन ठाट।
जुगलबाई निराट निराणौ बिराज ही॥
बखनौंस कर पाक जसौ बावौ प्राग टाक।
बडो ह गोपाल ताक गुरुद्वारे राजही॥
सांगानेर रजबसु देवल दयाल दास।
घडसी कडाला बसै धरम कीया जही॥
ईड बैहू जनदास तेजानन्द जौधपुर।
मोहन सु भजनीक प्रासोपनि वाज ही॥
गूलर मे माधोदास विदाध में हरिसिंह।
चतरदास सिंध्यावट कीयो तनकाज ही॥
त्रिहाणी पिरागदास डोडवाने है प्रसिद्ध।
सुन्दरदास जू सरसू फतेहपुर छाजही॥
बाबो बनवारी हरदास दोऊ रतीय मैं।
साधु एक मांडोठी मैं नीकै नित्य छाजही॥
सुंदर प्रहलाद दास घाटडैसु छोड़ मांहि।
पूरब चतरभुज रामपुर छाजही॥१॥
निराणदास माडाल्यौ सडांग मांहि।
इकलौद रणतभंवर डाढ चरणदास जानियौ॥
हाडौती गेगाइ जामैं माखूजी मगन भये।
जगोजी भडौंच मध्य प्रबाधारी मानियौ॥
लालदास नायक सो पीराल पटणदास।
फोफली मेवाड मांहि टीलोजी प्रमानियौ॥
साधु परमानंद इदोखली में रहे जाय।
जैमल चुहाण भलो आलड हरगानियौ॥
जैमल जोयो कुछाहो बनमाली चोकन्यौस।
सांभर भजन सो बितान तानियौ॥

मोहन वफतरीसु मारोठ चिताई भले ।
रघनाथ मेड़तैसु भावकर आनियौ ।।
कालेडहरे चत्रदास टीकोदास नांगल मैं ।
झोटवाडै झाझूमांझू लघु गोपाल धानियौ ।।
आंबावती जगनाथ राहोरी जनगोपाल ।
बाराहदरी संतदास चावड्यलु आनियौ ।।
आंधी में गरीबदास भानगढ माधव कै ।
मोहन मेवाड़ा जोग साधन सौं रहे है ।।
टहटडै मैं नागर निजाम हू भजन कियो ।
दास जग जीवन द्यौसा हर लहे है ।।
मोहन दरियायीसो सम नागरचाल मध्य ।
बोकडास संत जूहि गोलगिर भये है ।।
चैनराम कांणौता मे गोदेर कपलमुनि ।
स्यामदास झालाणीसू चोड कै मे ठये है ।।
सौंक्या लाखा नरहर अलूदे भजन कर ।
महाजन खंडेलवाल दादू गुर गहे है ।।
पूरणदास ताराचन्द म्हाजन सुम्हेर वाली ।
आंधी मे भजन कर काम क्रोध दहे है ।।
रामदास राणीबाई आंजल्या प्रगट भई ।
म्हाजन डिगाइचसू जाति बोल सहे है ।।
बावन ही थांभा अरु बावन ही म्हंत ग्राम ।
दादूपंथी चत्रदास सुने जैसे कहे हैं ।। ३ ।।

सोरठ— जै नमो गुर दादू परमातम आदू सब संतन के हितकारी ।
मैं आयो सरनि तुम्हारी ।। टेक ।।
जै निरालंब निरवाना हम संत ते जाना ।
संतनि को सरना दीजै, अब मोहि अपनू कर लीजै ।।१।।
सबके अंतरयामी, अब करो कृपा मोरे स्वामी
अवगति अबनासी देवा, दे चरन कवल की सेवा ।।२।।
जै दादू दीन दयाला काढो जग जंजाला ।
सतचित आनंद में बासा, गावै बखतावरदासा ।।३।।

राग रामगरी—

ऐसे पीव क्यूं पाइये, मन चंचल भाई ।
आंख मीच मूनी भया मंछी गड काई ।।टेक।।
छापा तिलक बनाय करि नांचे अरु गावै ।
आपण तो समझै नही, औरां समझावै ।।१।।
भगति करै पाखंड की, करणी का काचा ।
कहै कबीर हरि क्यूं मिलै, हिरदै नही साचा ।।२।।
।। इति ।।

३७३६. देहली के बादशाहों का ब्यौरा……। पत्र सं० १६ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६ । ञ भण्डार।

३७३७. पट्टाधिकार……। पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४७ । ट भण्डार ।

विशेष—जिनसेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ से आचार्यों का ऐतिहासिक वर्णन है ।

३७३८. पट्टावली……। पत्र सं० १२ । आ० ८×६३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । ञ भण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावलि का नाम दिया हुआ है । १८७६ के संवत् की पट्टावलि है । अन्त में खंडेलवाल वंशोत्पत्ति भी दी हुई है ।

३७३६. पट्टावलि……। पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० ८४० तक होने वाले भट्टारकों का नामोल्लेख है ।

३७४०. पट्टावलि……। पत्र सं० २ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम चौरासी जातियों के नाम है । पीछे संवत् १७६६ में नागौर के गच्छ से अजमेर का गच्छ निकला उसके भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं । सं० १५७२ में नागौर से अजमेर का गच्छ निकला । उसके सं० १८५२ तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१. प्रतिष्ठाकुंकुमपत्रिका……। पत्र सं० १ । आ० २५×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १९२७ फागुन मास का कुंकुमपत्र पिपलोन की प्रतिष्ठा का है। पत्र कार्तिक बुदी १३ का लिखा है। इसके साथ सं० १९३९ की कुंकुमपत्रिका छपी हुई शिखर सम्मेद की और है।

३७४२. प्रतिष्ठानामावलि········| पत्र सं० २० । आ० ६×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४३ । छ भण्डार।

३७४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । छ भण्डार।

३७४४. बलात्कारगणगुर्वावलि········| पत्र सं० ३ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार।

३७४८. भट्टारक पट्टावलि । पत्र सं० १ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३७ । अ भण्डार।

विशेष—सं० १७७० तक की भट्टारक पट्टावलि दी हुई है।

३७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । ज भण्डार।

विशेष—संवत् १८८० तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये है।

३७५०. यात्रावर्णन········| पत्र सं० २ से २६ । आ० ६×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१४ । क भण्डार।

३७५१. रथयात्राप्रभाव—अमोलकचंद । पत्र सं० ३ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०८ । अ भण्डार।

विशेष—जयपुर की रथयात्रा का वर्णन है।

११३ पद्य हैं– अन्तिम—

एकोनविंशतिशतेवश सहावर्षे मासस्यपञ्चमी दिनेसित फाल्गुनस्य श्रीमज्जिनेन्द्र वर सुवरथस्ययात्रा मेलापकं जयपुर प्रकटे बभूव ।।११२।।

रथयात्राप्रभावोऽयं कथितो हृष्टपूर्वकः

नाम्ना मौलिक्यचन्द्रेण साहागोत्रे या संमुदा ।।११३।।

।। इति रथयात्रा प्रभाव समाप्ता ।। शुभं भूयात् ।।

३७५२. राजप्रशस्ति········| पत्र सं० ५ । आ० ६×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८९५ । अ भण्डार।

विशेष—दो प्रशस्ति (अपूर्ण) हैं अंजिका श्रावक वनिता के विशेषण दिये हुए है।

३७५३. विज्ञप्तिपत्र—हंसराज । पत्र सं० १ । आ० ८×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल सं० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५३ । रू भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हंसराज ने जयपुर के जैन पंचों के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पंच साधर्मी बडी पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी साहिब का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पत्र आदि समस्त साधर्मी भाइयन को भोपाल का वासी हंसराज की या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो । इसमें जयपुर के जैनो का अच्छा वर्णन है । अमरचन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमे प्रतिज्ञा पत्र (आखडी पत्र) भी है जिसमे हंसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पडता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है । सं० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७५४. शिलालेखसंग्रह........। पत्र सं० ८ । आ० ११×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न लेखों का संग्रह है ।

१. चालुक्य वंशोत्पन्न पुलकेशी का शिलालेख ।
२. भद्रबाहु प्रशस्ति
३. मल्लिषेण प्रशस्ति

३७५५. श्रावक उत्पत्तिवर्णन.......। पत्र सं० १ । आ० ११×२८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—चौरासी गौत्र, वंश तथा कुलदेवियों का वर्णन है ।

३७५६. श्रावकों की चौरासी जातियां.......। पत्र सं० १ । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३१ । अ भण्डार ।

३७५७. श्रावकों की ७२ जातियां.......। पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जातियों के नाम निम्न प्रकार हैं ।

१. गोलाराडे २. गोलसिंघाडे ३. गोलापूर्व ४. लंबेचु ५. जैसवाल ६. खंडेलवाल ७. बघेलवाल ८. अगरवाल, ९. सहलवाल, १०. असरवापोरवाड, ११. वोसवापोरवाड, १२. दुसरवापोरवाड, १३. जांगडापोरवाड, १४. परवार, १५. बरहीया, १६. भैसरपोरवाड, १७. सोरठीपोरवाड, १८. पद्मावतीपोरवाल, १९. लंबड, २०. बुसर

२१. वाहुरसेन, २२. गहोइ, २३. अग्रवाल क्षत्री २४. सद्वाण, २५. अजोध्यापुरी, २६. गोरवाड, २७. विद्वलस्वा, २८. कठनेरा, २९. नाम, ३०. गुजरपल्लीवाल, ३१. चीकडा, ३२. नागरवाडा, ३३. बोरवाड, ३४. खडेरवाल, ३५. हर मुला, ३६. नेमडा, ३७. सहरीया, ३८. मेवाडा, ३९. खरांडा, ४०. चीतोडा, ४१. नरसंगपुरा, ४२. नागदा, ४३. बाथ, ४४. हूमड, ४५. रायकवाडा, ४६. बदनोरा, ४७. दमगणश्रावक, ४८. पंचमश्रावक, ४९. हलधरश्रावक, ५०. सादरश्रावक, ५१. हूमर, ५२. लन्नर, ५३. बवल, ५४. बलगारो, ५५. कर्मश्रावक, ५६. वरिकर्मश्रावक ५७. वेसर ५८. सुदेवज, ५९. बलशीगुल, ६०. कोमडी, ६१. गंगरका, ६२. गुनपुर, ६३. तुलाश्रावक, ६४. कचंगश्रावक, ६५. हेवगाश्रावक, ६६. मोगाश्रावक ६७. सोमनश्रावक, ६८. दाउदाश्रावक, ६९. नंगवलीश्रावक, ७०. पणीसंगा, ७१. वगोरिया, ७२. काकलीवाल,

नोट—हूमड जाति को दो बार गिनाने से १ संख्या बढ गई है।

३७५८. श्रुतस्कंध—ब्र० हेमचन्द्र। पत्र सं० ७। आ० ११½×४½ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१। अ भण्डार।

३७५९. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० ७२९। अ भण्डार।

३७६०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २१६१। ट भण्डार।

विशेष—पत्र ७ से आगे श्रुतावतार श्रीधर कृत भी है, पर पत्रों पर अक्षर मिट गये है।

३७६१. श्रुतावतार—पं० श्रीधर। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६। अ भण्डार।

३७६२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८६१ पौष सुदी १। वे० सं० २०१। अ भण्डार।

विशेष—चम्पालाल टोंग्या ने प्रतिलिपि की थी।

३७६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ७०२। क भण्डार।

३७६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३५१। च भण्डार।

३७६५. संघपच्चीसी–द्यानतराय। पत्र सं० ६। आ० ८×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १८८८। पूर्ण। वे० सं० २१३। ज भण्डार।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भैया भगवतीदास कृत भी है।

३७६६. संवत्सरवर्णन········। पत्र सं० १ से ३७। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७६५। क भण्डार।

३७६७. स्थूलभद्र का चौमासा वर्णन……। पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११८। का भण्डार।

ईडर आबा आबली रे ए देसी

सावण मास सुहावणो रे लाल जो पीउ होवे पास।
अरज करूं घरे आवजो रे लाल हूं छूं ताहरी दास।
चतुर नर आवो हम घर छा रे सुगण नर तू छ प्राण आधार ॥१॥
भादवड़े पीउ वेगलो रे लाल हूं कीम करूं सणगारे।
अरज करूं घर आवजो रे लाल मोरा छंकत सार ॥२॥
आसोजा मासनी चांदणी रे लाल फुलतणी बीछाइ सेज।
रंग रा मत कीजिय रे लाल आणी हीयड़े तेज ॥३॥
कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होवे पास।
संदेसा सयण भण रे लाल अलगायो केम ॥४॥
नजर निहालो बाल हो रे लाल आवो मींगसर मास।
लोक कहावत कहा करो जी पीउड़ा परम निवास ॥५॥
पोस बालम बेगलो रे लाल अवडो मुज दोस।
परीत पनोतर पालीये रे लाल आणी मन मे रोस ॥६॥
सीयाले अती घणो दोहलो रे लाल ते माहे बल माह।
पोताने घर आवज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह। ७॥
लाल गुलाल अबीरसुं रे लाल खेलण लागा लोग।
तुज विण मुज नेइहा एकली रे लाल फागुण जाये फोक ॥८॥
सुदर पाव सुहामणो रे लाल कुल तणो मही मास।
चीतारया घरे आवज्यो रे लाल तो करसु गेह गाट ॥९॥
बीसारयो न बीसरे रे लाला जे तुम बोल्या बोल।
बेसाखे तुम नेम सुं रे लाल तो बजउ ढोल ॥१०॥
केहता बीसे कामो रे लाल काइ करावो बेठ।
ढीठ बणो हुवे कहा करो लाल आछी लायो जेठ ॥११॥

असाढो धरमुमछोरे लाल बीच बीच जबुके बीजली रे लाल ।
तुज बीना मुज नैहारे लाल धरम आवे खीज ॥१२॥
रे रे सखी उतावली रे लाल सजी सोला सरणगार ।
घेर बली पंथी सुदरुरे लाल थे छोडी नार ॥१३॥
बार घडी नी अब छकी रे लाल आयो मास अरसाढ ।
कामरण गालो कंत जी रे लाल सखी न आव्यो आज ॥१४॥
ते उठी उलट धरी रे लाल बालम जोवे आस ।
थूलभद्र गुरु आदेस थी रे लाल ऐह बठ्यो चोमास ॥१५॥

३७६८. हमीर चौपई........। पत्र सं० १३ से ३७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—रचना मे नामोल्लेख कहीं नहीं है । हमीर व अलाउद्दीन के युद्ध का रोचक वर्णन दिया हुआ है ।



विषय- स्तोत्र साहित्य

३७६९. अकलंकाष्टक.........। पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५० । अ भण्डार ।

३७७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २५ । अ भण्डार ।

३७७१. अकलंकाष्टकभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० २२ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६) और हैं ।

३७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ३ । ङ भण्डार ।

३७७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी २ । वे० सं० १८७ । छ भण्डार ।

३७७४. अजितशांतिस्तवन.........। पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र भी है ।

३७७५. अजितशांतिस्तवन—नन्दिषेण । पत्र सं० १५ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । अ भण्डार ।

३७७६. अनाथीऋषिस्वाध्याय.........। पत्र सं० १ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

३७७७. अनादिनिधनस्तोत्र । पत्र सं० २ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९१ । अ भण्डार ।

३७७८. अरहन्तस्तवन.........। पत्र सं० ६ से २४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० ११८४ । अ भण्डार ।

३७७९. अवंतिपार्श्वजिनस्तवन—हर्षसूरि । पत्र सं० २ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

विशेष—७८ पद्य हैं ।

३७८०. आत्मनिंदास्तवन—रत्नाकर। पत्र सं० २। आ० ६३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७। छ भण्डार।

विशेष—२५ श्लोक हैं। ग्रन्थ प्रारम्भ करने से पूर्व पं० विजयहंस गणि को नमस्कार किया गया है। पं० जय विजयगणि ने प्रतिलिपि की थी।

३७८१. आराधना……। पत्र सं० २। आ० ८×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६। क भण्डार।

३७८२. इष्टोपदेश—पूज्यपाद। पत्र सं० ५। आ० ११३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टीका भी हुई है।

३७८३. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ७१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२) और है।

३७८४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ७। घ भण्डार।

विशेष—देवीदास की हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३७८५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १६४०। वे० सं० ६०। ङ भण्डार।

विशेष—संघी पन्नालाल दूनीवाले कृत हिन्दी अर्थ सहित है। सं० १६३५ में भाषा की थी।

३७८६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १६७३ पौष बुदी ७। वे० सं० ४०८। ञ भण्डार।

विशेष—वेणीदास ने अगरू में प्रतिलिपि की थी।

३७८७. इष्टोपदेशटीका—आशाधर। पत्र सं० ३६। आ० १२३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०। क भण्डार।

३७८८. प्रति सं० २। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० ६१। ङ भण्डार।

३७८९. इष्टोपदेशभाषा……। पत्र सं० २५। आ० १२×७३ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२। ङ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ को लिखाने व कागज में ४॥=)॥ व्यय हुये हैं।

३७९०. उपदेशसज्झाय—ऋषि रामचन्द। पत्र सं० १। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६०। अ भण्डार।

३७६१. उपदेशसज्झाय—रंगविजय। पत्र सं० ४। ग्रा० १०×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८३। अ भण्डार।

विशेष—रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे।

३७६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६१। अ भण्डार।

विशेष—३रा पत्र नही है।

३७६३. उपदेशसज्झाय—देवादिल। पत्र सं० १। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६२। अ भण्डार।

३७६४. उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णचन्द्राचार्य। पत्र सं० १४। ग्रा० ३¾×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५५३ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ४१। च भण्डार।

विशेष—श्री वृहद्गच्छीय भट्टारक गुणदेवसूरि के शिष्य गुणनिधान ने इसकी प्रतिलिपि की थी। प्रति यन्त्र सहित है। निम्नलिखित स्तोत्र है।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	पत्र	विशेष
१. अजितशांतिस्तवन—	×	प्राकृत संस्कृत	१ से ६	३६ गाथा

विशेष—आचार्य गोविन्दकृत संस्कृत वृत्ति सहित है।

२. भयहरस्तोत्र—	×	संस्कृत	६ से १०	

विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ मन्त्र गर्भित सहित है। इस स्तोत्र की प्रतिलिपि सं० १५५३ आसोज सुदी १२ को मेदपाट देश में राणा रायमल्ल के शासनकाल मे कोठारिया नगर मे श्री गुणदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने की थी।

३. भयहरस्तोत्र—	×	"	११ से १४	

विशेष—इसमें पार्श्वयक्ष मन्त्र गर्भित अष्टादश प्रकार के यन्त्र की कल्पना मानतुंगाचार्य कृत दी हुई है।

३७६५. ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन। पत्र सं० ७। ग्रा० १०¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४६। छ भण्डार।

३७६६. ऋषभदेवस्तुति—पद्मनन्दि। पत्र सं० ११। ग्रा० १२×६½ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४६। क भण्डार।

विशेष—८वें पृष्ठ से दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है। दोनों ही स्तोत्रों के संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

३७९७. ऋषभस्तुति········| पत्र सं० ५ | आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत | विषय-स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० ९५१ | अ भण्डार |

३७९८. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतमस्वामी | पत्र सं० ३ | आ० ९½×४ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ३४ | अ भण्डार |

३७९९. प्रति सं० २ | पत्र सं० १३ | ले० काल सं० १८५६ | वे० सं० १३२७ | अ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३३८, १४२६, १९००) और है।

३८००. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ८ | ले० काल × | वे० सं० ९१ | क भण्डार |

विशेष—हिन्दी अर्थ तथा मन्त्र साधन विधि भी दी हुई है।

३८०१. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ५ | ले० काल × | वे० सं० २१ |

विशेष—कृष्णलाल के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी। ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २९१) और है।

३८०२. प्रति सं० ५ | पत्र सं० ४ | ले० काल × | वे० सं० १३६ | छ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २९०) और है।

३८०३. प्रति सं० ६ | पत्र सं० २ | ले० काल सं० १७९८ | वे० सं० १४ | ञ भण्डार |

३८०४. प्रति सं० ७ | पत्र सं० ७६ से १०१ | ले० काल × | वे० सं० १८३६ | ट भण्डार |

३८०५. ऋषिमंडलस्तोत्र········| पत्र सं० ५ | आ० ९½×४½ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ३०४ | ञ भण्डार |

३८०६. एकाक्षरीस्तोत्र—(तकाराक्षर)········| पत्र सं० १ | आ० ११×५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-स्तोत्र | र० काल × | ले० काल सं० १८९१ ज्येष्ठ सुदी | पूर्ण | वे० सं० ३३९ | अ भण्डार |

विशेष—संस्कृत टीका सहित है | प्रदर्शन योग्य है |

३८०७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज | पत्र सं० ११ | आ० १०×४ इच | भाषा-संस्कृत | विषय-स्तोत्र | र० काल × | ले० काल सं० १८८३ माघ कृष्णा ९ | पूर्ण | वे० सं० २५४ | अ भण्डार |

विशेष—अमोलकचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) और है।

३८०८. प्रति सं० २ | पत्र सं० २ से ११ | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २९९ | ख भण्डार |

३८०९. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ६ | ले० काल × | वे० सं० ९३ | ङ भण्डार |

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है |

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६४) और है।

३८१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५३ । च भण्डार ।

विशेष—महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५२) और है।

३८११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १२ । ञ भण्डार ।

३८१२. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३६ । अ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना तथा शांतिनाथ स्तोत्र और हैं।

३८१३. एकीभावस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १९३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९४) और है।

३८१४. एकीभावस्तोत्रभाषा········। पत्र सं० १० । आ० ७×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९१८ । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । भ्ह भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका········। पत्र सं० ३ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९५ । क भण्डार ।

३८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १९३९ आसोज बुदी ५ । वे० सं० ९६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९७) और है।

३८१७. कल्पसूत्रमहिमा········। पत्र सं० ४ । आ० ९$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-महात्म्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८. कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र सं० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०९ । क भण्डार ।

विशेष— पणविवि चउवीसवि तित्थयर,
सुरणर विसहर थुव चलणा ।
पुणु भणमि पंच कल्याण विण,
भवियहु णिसुणहु इक्कमणा ॥

अन्तिम— करि कल्लाणपुञ्ज जिणणाहहो,

अणु दिणु चित्त अविचलं ।

कहिय समुच्च एण ते कविणा

लिज्जइ इमगुव भव फलं ॥

इति श्री समन्तभद्र कृतं कल्याणक समाप्ता ॥

३८१६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पार्श्वनाथ स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ३८४, १२३६, १२६२) और है ।

३८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां और है (वे० सं० ३०, २६४, २८१) ।

३८८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८१७ माघ सुदी १ । वे० सं० ६२ । च भण्डार ।

३८८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६४६ माह सुदी १५ । अपूर्ण । वे० सं० २५६ । छ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नही है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३४) और है ।

३८८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७१४ माह बुदी ३ । वे० सं ७ । झ भण्डार ।

विशेष—साह जोधराज गोदीकाने आनंदराम मे सांगानेर मे प्रतिलिपि करवायी थी । यह पुस्तक जोधराज गोदीका की है ।

३८८४. प्रति स० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७६६ । वे० सं० ७० । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्त्ति कृत संस्कृत टीका सहित है । हर्षकीर्त्ति नागपुरीय तपागच्छ प्रधान चन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

३८८५ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७४६ । वे० सं० १६६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति कल्याणमञ्जरी नाम विनयसागर कृत संस्कृत टीका सहित है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलकुमतकुमदखंडखंडनंडरश्मिश्रीकुमुदचन्द्रसूरिविरचित श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रस्य कल्याणमञ्जरी टीका संपूर्ण । दयाराम ऋषि ने स्वात्मज्ञान हेतु प्रतिलिपि की थी ।

३८८६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० २०६५ । ट भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३८२७. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका—पं० आशाधर। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३१। अ भण्डार।

३८२८. कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक। पत्र सं० १५। आ० ९¾×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०। अ भण्डार।

विशेष—टीकाकार परिचय—

श्रीउकेशगणाब्धिचन्द्रसदृशा विद्वज्जनाह्लादयन्,
प्रवीण्यागमसारपाठकवरा राजन्ति भास्वांतरं।
तच्छिष्य: कुमुदादिदेवतिलक: सद्बुद्धिवृद्धिप्रदां,
श्रेयोमन्दिरसंस्तवस्य मुदितो वृत्तिं व्यधादद्भुतं ॥१॥
कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति: सौभाग्यमञ्जरी।
वाच्यमानाऽजनैनंदाऽचंद्रार्कं मुदा ॥२॥
इति श्रेयोमंदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२९. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका ......। पत्र सं० ४ से ११। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११०। क भण्डार।

३८३०. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३३। ख भण्डार।

विशेष—रूपचन्द चौधरी कमेसुं सुन्दरदास अजमेरी मोल लीनी। ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है।

३८३१. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—पन्नालाल। पत्र सं० ४७। आ० १२¾×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १९३०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०७। क भण्डार।

३८३२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० १०८। क भण्डार।

३८३३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७१। ट भण्डार।

३८३४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—बनारसीदास। पत्र सं० ८। आ० ६×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२४०। अ भण्डार।

३८३५. प्रति सं० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० १११। क भण्डार।

३८३६. केवलज्ञानीसज्झाय—विनयचन्द्र। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८८। अ भण्डार।

३८३७. क्षेत्रपालनामावली........। पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४८ । व्व भण्डार ।

३८३८. गीतप्रबन्ध........। पत्र सं० २ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में वसन्तराग मे एक भजन है ।

३८३९. गीत वीतराग—पंडिताचार्य अभिनवचारूकीर्त्ति । पत्र सं० २६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० २०२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर मे श्री चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

गीत वीतराग संस्कृत भाषा की रचना है जिसमे २४ प्रबंधो मे भिन्न भिन्न राग रागनियो मे भगवान आदिनाथ का पौराणिक आख्यान वर्णित है । ग्रन्थकार की पंडिताचार्य उपाधि से ऐसा प्रकट होता है कि वे अपने समय के विशिष्ट विद्वान् थे । ग्रन्थ का निर्माण कब हुआ यह रचना मे ज्ञात नही होता किन्तु वह समय निश्चय ही संवत् १८८६ से पूर्व है क्योकि ज्येष्ठ बुदी अमावस्या सं० १८८६ को जयपुरस्थ लश्कर के मन्दिर के पास रहने वाले श्री चुन्नीलालजी साह ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है प्रति सुंदर अक्षरों मे लिखी हुई है तथा शुद्ध है । ग्रन्थकार ने ग्रंथ को निम्न रागो तथा तालों में संस्कृत गीतों में गूंथा है—

राग रागनी— मालव, गुर्ज्जरी, वसंत, रामकली, कान्हरा कर्णाटक, देशासिराग, देशवैराडी, गुणकरी, मालवगौड, गुर्जराग, भैरवी, विराडी, विभास, कानरो ।

ताल— रूपक, एकताल, प्रतिमण्ड, परिमण्ड, तितालो, अठताल ।

गीतों में स्थायी, अन्तरा, संचारी तथा आभोग ये चारो ही चरण है इस सबसे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार संस्कृत भाषा के विद्वान होने के साथ ही साथ अच्छे संगीतज्ञ भी थे ।

३८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १९३४ ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं० १२५ । क भण्डार ।

विशेष—संघपति अमरचन्द्र के सेवक माणिक्यचन्द्र ने मुरंगपत्तन की यात्रा के अवसर पर आनन्ददास के वचनानुसार सं० १८८४ वाली प्रति से प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२६) और है ।

३८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ४२ । ख भण्डार ।

३८४२. गुणस्तवन……। पत्र सं० १५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५८। ट भण्डार।

३८४३. गुरुसहस्रनाम……। पत्र सं० ११। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७४६ वैशाख बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २६८। ख भण्डार।

३८४४. गोम्मटसारस्तोत्र……। पत्र सं० १। आ० ७×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७३। ञ भण्डार।

३८४५. घग्घरनिसाणी—जिनहर्ष। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०१। छ भण्डार।

विशेष—पार्श्वनाथ की स्तुति है।

आदि— सुख संपति सुर नायक परतषि पास जिणंदा है।
जाकी छवि कांति अनोपम उपमा दीपत जात दिणंदा है।

अन्तिम— सिद्धा दावा सातहार हासा दे सेवक बिलवंदा है।
घग्घर नीसाणी पास वखाणी गुणी जिनहरष कहंदा है।
इति श्री घगघर निसाणी संपूर्ण ॥

३८४६. चक्रेश्वरीस्तोत्र……। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६१। ख भण्डार।

३८४७. चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि। पत्र सं० ६। आ० ८×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८५। ख भण्डार।

३८४८. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल……। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४८। अ भण्डार।

३८४९. चतुर्विंशतिस्तवन……। पत्र सं० ५। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२६। ञ भण्डार।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में वसुधारा स्तोत्र है। पं० विजयगणि ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३८५०. चतुर्विंशतिस्तवन……। पत्र सं० ४। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है। प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन में ४ पद्य हैं।

प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

भव्यांभोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्म्मावली

रम्भासामजनभिनंदनमहानष्टा पदाभासुरैः ।

भक्त्या वंदितपादपद्मविदुषां संपादयाभोज्झितां ।

रंभासाम जनभिनंदनमहानष्टा पदाभासुरै ॥१॥

३८५१. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तोत्र—कमलविजयगणि । पत्र सं० १५ । आ० १२३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रकाशित ३८५२. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति—माघनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

३८५३. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तुति·······। पत्र सं० । आ० १०३/४×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६१ । अ भण्डार ।

३८५४. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति·······। पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २३७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८५५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र·······। पत्र सं० ६ । आ० ११×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८२ । ट भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र कट्टर बीसपन्थी आम्नाय का है । सभी देवी देवताओं का वर्णन स्तोत्र मे है ।

३८५६. चतुष्पदीस्तोत्र·······। पत्र सं० ११ । आ० ८३/४×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७५ । अ भण्डार ।

३८५७. चामुण्डस्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० २ । आ० ८×४१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८१ । अ भण्डार ।

३८५८. चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमालस्तवन······· । पत्र सं० ४ । आ० ८×१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३४ । अ भण्डार ।

३८५९. चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तोत्रमंत्रसहित·······। पत्र सं० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६० । अ भण्डार ।

३८६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८३० [illegible] । वे० सं० १८१ । क भण्डार ।

३८६१. चित्रबंधस्तोत्र .... । पत्र सं० ३ । आ० १२×[illegible] इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४८ । ञ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये है ।

३८६२. चैत्यवंदना .... । पत्र सं० ३ । आ० १२×३½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०३ । अ भण्डार ।

३८६३. चौबीसस्तवन .... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८७७ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । अ भण्डार ।

विशेष—बख्शीराम ने भरतपुर मे रणधीरसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि की थी ।

३८६४. छंदसंग्रह .... । पत्र सं० ६ । आ० ११½×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न छंद है—

नाम छंद	नाम कर्त्ता	पत्र	विशेष
महावीर छंद	शुभचन्द्र	१	×
विजयकीर्त्ति छंद		२	×
गुरु छंद		३	×
पार्श्व छंद	ब्र० लेखराज	३	×
गुरु नामावलि छंद	×	४	×
आरती संग्रह	ब्र० जिनदास	४ ,,	×
चन्द्रकीर्त्ति छंद	—	४ ,,	×
कृपण छंद	चन्द्रकीर्त्ति	५ ,,	×
नेमिनाथ छंद	शुभचन्द्र	६ ,,	×

३८६५. [illegible] । पत्र सं० [illegible] । आ० [illegible] इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । (जैनेतर साहित्य) र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० [illegible] । [illegible] भण्डार ।

३८६६. जिनवरस्तोत्र……। पत्र सं० ३। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वे० सं० १०२। च भण्डार।

विशेष—भोगीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३८६७. जिनगुणमाला……। पत्र सं० १६। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४१। झ भण्डार।

३७६८. जिनचैत्यवन्दना……। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०३५। अ भण्डार।

३८६९. जिनदर्शनाष्टक……। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२६। ट भण्डार।

३८७०. जिनपंजरस्तोत्र……। पत्र सं० २। आ० ९½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५४। ट भण्डार।

३८७१. जिनपंजरस्तोत्र—कमलप्रभाचार्य। पत्र सं० ३। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। ख भण्डार।

विशेष—पं० मन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३८७२. प्रति स० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० ३०। ग भण्डार।

३८७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २०५। ङ भण्डार।

३८७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० २६५। झ भण्डार।

३८७५. जिनवरदर्शन—पद्मनंदि। पत्र सं० २। आ० १०½×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वे० सं० २०८। ङ भण्डार।

३८७६ जिनवाणीस्तवन—जगतराम। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३३। च भण्डार।

३८७७. जिनशतकटीका—शंबुसाधु। पत्र सं० २६। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६१। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम– इति शंबु साधुविरचित जिनशतक पंजिकायां वाग्वर्णन नाम चतुर्थपरिच्छेद समाप्त।

३८७८ प्रति सं० २। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। वे० सं० ४६८। अ भण्डार।

३८७९. जिनशतकटीका—नरसिंहभट्ट। पत्र सं० ३३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५६४ चैत्र सुदी १४। वे० सं० २६। अ भण्डार।

विशेष—ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिलिपि की थी।

३८८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ५६। ले० काल सं० १६५६ पौष बुदी १०। वे० सं० २००। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० २०१, २०२, २०३, २०४) और हैं।

३८८१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५३। ले० काल सं० १६१५ भादवा बुदी १३। वे० सं० १००। छ भण्डार।

३८८२. जिनशतकालङ्कार—समंतभद्र। पत्र सं० १४। आ० ११×७½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३०। ज भण्डार।

३८८३. जिनस्तवनद्वात्रिंशिका……। पत्र सं० ६। आ० ६३/४×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६६। ट भण्डार।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है।

३८८४. जिनस्तुति—शोभनमुनि। पत्र सं० ६। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १८७। ज भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

३८८५. जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर। पत्र सं० १७। आ० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०७६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ५२१, ११२६, १०७६) और हैं।

३८८६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ५७। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७) और है।

३८८७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८३३ कात्तिक बुदी ४। वे० सं० ११४। च भण्डार।

विशेष—पत्र ६ से आगे हिन्दी में तीर्थङ्करों की स्तुति और है।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११७) और हैं।

३८८८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३३) और है।

३८८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६३ आसोज बुदी ४ । वे० सं० २८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त लघु सामयिक, लघु स्वयंभूस्तोत्र, लघुसहस्रनाम एवं चैत्यवंदना भी है। अंकुरारोपण मंडल का चित्र भी है।

३८९०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६५३ । वे० सं० ४७ । व्य भण्डार ।

विशेष—संवत् सोल १६५३ त्रेपनावर्षे श्रीमूलसंघे भ० श्री विद्यानन्दि तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषणतत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचंद्र तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचंद्र तेषांमध्ये श्री प्रभाचन्द्र चेली बाइ तेजमती उपदेशनार्थ बाइ अर्जीनमती नारायणग्रामे इदं सहस्रनाम स्तोत्रं निजकर्मक्षयार्थं लिखितं ।

इसी भण्डार से एक प्रति (वे० सं० १८६) और है।

३८९१. जिनसहस्रनामस्तोत्र—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ३८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ५३२, ५४३, १०६४, १०९८) और हैं।

३८९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३१ । ग भण्डार ।

३८९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ११७ क । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११८) और हैं।

३८९४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९०३ आसोज सुदी १३ । वे० सं० १९५ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२१) और है।

३८९५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६७) और है।

३८९६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ८८ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१६) और है।

३८९७. जिनसहस्रनामस्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० ४ । आ० १२½×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । घ भण्डार ।

३८९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७२६ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८ । ङ भण्डार ।

विशेष—पहले गद्य हैं तथा बाद में ५२ श्लोक दिये हैं।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाकवीश्वरविरचितं श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्ण। दुबे ज्ञानचन्द से जोधराज गोदीका ने आत्मपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी।

३८९९. **जिनसहस्रनामस्तोत्र**……। पत्र सं० २९। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे०० सं० ८११। क भण्डार।

३९००. **जिनसहस्रनामस्तोत्र**……। पत्र सं० ४। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३९। घ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं- घंटाकरण मंत्र, जिनपंजरस्तोत्र पत्रों के दोनों किनारों पर सुन्दर बेलबूटे है। प्रति दर्शनीय है।

३९०१. **जिनसहस्रनामटीका**……। पत्र सं० १२१। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९३। क भण्डार।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी।

३९०२. **जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर**। पत्र सं० १८०। आ० १२×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९५८ आषाढ सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० १९२। क भण्डार।

३९०३. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ४ से १६४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१०। क भण्डार।

३९०४. **जिनसहस्रनामटीका—अमरकीर्ति**। पत्र सं० ८१। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८४ पौष सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १९१। अ भण्डार।

३९०५. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ४७। ले० काल सं० १७२५। वे० सं० २९। घ भण्डार।

विशेष—बंध गोपालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी।

३९०६. **प्रति सं० ३**। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० २०९। क भण्डार।

३९०७. **जिनसहस्रनामटीका**……। पत्र सं० ७। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र र० काल ×। ले० काल सं० १८२२ श्रावण। पूर्ण। वे० सं० ३०९। ञ भण्डार।

३९०८. **जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम**। पत्र सं० १६। आ० ७×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १९५९। ले० काल सं० १९८४ चैत्र सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २१०। क भण्डार।

३९०९ **जिनोपकारस्मरण**……। पत्र सं० १३। आ० १२½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७। क भण्डार।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २१२ । ङ भण्डार ।

३६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० १०७ से ११३ तक) और है ।

३६१२. णमोकारादिपाठ ······ । पत्र सं० ३०४ । आ० १२×७½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३३ । ङ भण्डार ।

विशेष—११८८ बार णमोकार मन्त्र लिखा हुआ है । अन्त में द्यानतराय कृत समाधि मरण पाठ तथा २१८ बार श्रीमद्वृषभादि वर्द्धमानांतेभ्योनमः । यह पाठ लिखा हुआ है ।

३६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३४ । ङ भण्डार ।

३६१४. णमोकारस्तवन······ । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४½ इंच । भाषा हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६३ । अ भण्डार ।

३६१५. तकाराक्षरीस्तोत्र······ । पत्र सं० २ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३ । ञ भण्डार ।

विशेस—स्तोत्र की संस्कृत में व्याख्या भी दी हुई है । ताता ताती ततेता ततति ततता ताति तातति तता इत्यादि ।

३६१६. तीसचौबीसीस्तवन······ । पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७५८ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २७६ । ङ भण्डार ।

३६१७. दलालीनी सज्झाय······ । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१३७ । अ भण्डार ।

३६१८. देवतास्तुति—पद्मनंदि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । ट भण्डार ।

३६१९. देवागमस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७६५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०८) और है ।

३६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६६ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—अभयचंद साह ने सवाई जयपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १६४, १६५) और हैं ।

३६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

३६२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६२३ वैशाख बुदी ३ । वे० सं० ७६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७७) और है ।

३६२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७२५ फागुन बुदी १० । वे० सं० ६ । झ भण्डार ।

विशेष—पांडे दीनाजी ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी । साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पोत दी गई हैं ।

३६२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८१ । व्य भण्डार ।

३६२५. देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनंदि । पत्र सं० २५ । आ० १३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र (दर्शन) । र० काल × । ले० काल सं० १५५६ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १२३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्रीरत्नकीर्त्ति-देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचंद्र देवास्तदाम्नाये श्रीपचावासस्वन्वये खण्डेलवालान्वये बोजुबागोत्रे सा. मदन भार्या हरिसिणी पुत्र सा. परिसराम भार्या भषी एतैसास्त्रमिदं लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्तं ।

३६२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६४४ भादवा बुदी १२ । वे० सं० १६० । ज भण्डार ।

विशेष—कुछ पत्र पानी मे थोड़े गल गये है । यह पुस्तक पं० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है ।

३६२७. देवागमस्तोत्रभाषा—जयचंद छाबड़ा । पत्र सं० १३४ । आ० १२×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-न्याय । र० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १४ । ले० काल सं० १६३८ माह सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१०) और है ।

३६२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ८ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०८) और है ।

३९२९. देवागमस्तोत्रभाषा ......। पत्र सं० ४ । आ० ११×७३ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (द्वितीय परिच्छेद तक) वे० सं० ३०७ । क भण्डार ।

विशेष—न्याय प्रकरण दिया हुआ है ।

३९३०. देवाप्रभस्तोत्रवृत्ति—विजयसेनसूरि के शिष्य अणुभा । पत्र सं० ६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १९६ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३९३१. धर्मचन्द्रप्रबन्ध—धर्मचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० ११×४३ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७२ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरी प्रति निम्न प्रकार है—

वीतरागायनमः । साटा छंद—

सव्वगो सददं तिआल दिसऊ मन्वत्थ वत्थूगदो ।
विस्सचक्खुवरो स आ अविसऊ जो ईस भाऊ समो ।
सम्मदंसरणणाणसच्चरिअदोईसो मुणीरणा गमो पत्तारणा
त चउट्ठउ सविमलो सिद्धो बमं कुज्जओ ।।१।।

विज्जुमाला छंद—

देवाणं सेवा काओएणं बाणीए अंबाडाऊणं ।
गुरुणंदो साराहीत्ताणं विज्जुमाला सोहीआणं ।।२।।

भुजंगप्रयात छंद—

वरे मूलसंघे बलात्कारगण्णे सरस्सत्तिगछे पभंदोपयण्णे ।
वरो तस्स सिस्सो धम्मेदु जीओ बुहो चारूचारित्त भूअंगजीओ ।।३।।

आर्याछंद—

सअल कलापव्वीणो लाणो परमागमस्स सत्थम्मि ।
भविअ अजरण उद्धारो धम्मचदो जओ मुणिदो ।।४।।

कामावतारछंद—

मिछाक अक्खेण आईसरेण आइट्ठिसुण्णाण पञ्चज्जभिगाण । ।।१।।
सिस्साण माणेरा सत्थारा दाणेरा धम्मोपएमेरा बूहारारंजेरा ।।२।।
मिछ........तप्पस्ससूरेण दूम्मत फेडेण सुअव्वपूरेण ।।३।।
भव्वाण भव्वेण लोआरण लोएण भारणग्गि मूहेण कम्मेह दूएण ।।४।।
जित्तोद्द मादेण कामावआरेण इंदीकदूरेण मोक्खक्करत्तेण ।।५।।

जलाचंदेजाण मव्वाज्जणेभाण भलाजईमाण कत्तासुहभरण ॥६॥
धम्मदुकंदेण सद्धम्मचंदेण णम्मोत्युकारेण भत्तिव्वभारेण ॥
त्थुउ मरिट्ठे ण णेमीवि तित्थेण दासेण बूहेण संकुज्जभत्तेण ॥८॥

द्वात्रिंशत्यत्र कमलबंधः ॥

आर्याछंद—

कोहो लोहोचत्तो भत्तो मजईण सासणे लीणो ।
मा ममोहवि खीग्रो मारत्थी कंकणो छेसी ॥६॥

भुजंगप्रयातछंद—

सुचित्तो वितित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसोहो विईसो ।
सुधम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसो विरामो विमाग्रो विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

आर्याछंद—

सम्मद् सणणाणं सचारित्तं तहे बसु णाणो ।
चरइ चरावइ धम्मो चंदो मविपुण्ण विक्खाग्रो ॥११॥

मौत्तिकदामछंद—

तिलंग हिमाचल मालव मंग वरव्वर केरल कण्णड वंग ।
तिलात्त कलिंग कुरंगडहाल कराडम्र गुज्जर डंड तमाल ॥१२॥
सुपोट मवंति किरात मकीर सुतुक्क तुरुक्क बराड सुवीर ।
मरुत्थल दक्खण पूरवदेस सुणागवचाल सुकुंभ लसेस ॥१३॥
चऊड गऊड सुकंकणलाट, सुबेट सुभोट सुदव्विड राट ।
सुदेस विदेसहं माचइ राम, विवेक विचक्खण पूजइ पाम ॥१४॥
सुवक्कल पीणपमोहरि णारि, रणज्भण णेउर पाइ विधारि ।
सुविब्भम मंति महाउ विभाउ, सुगावइ गीउ मणोहरसाउ ॥१५॥
सुउज्जल मुत्ति महीर पवाल, सुपूरउ णिम्मल रंगिहि बाल ।
चउक्क विउप्परि धम्मविचंद बधामउ मक्खहि वारु सुभंद ॥१६॥

आर्याछंद—

जइ जणदिसिवर सहिग्रो, सम्मदिट्ठि साथ माइ परि मारिउ ।
जिणधम्मभवणखंभो विस मंत्र मंकरो जग्रो जयइ ॥१७॥

स्रग्विणीछंद—

जस पतिट्ठ बिबाइ उद्धारकं सिस्स सत्थाण दाणाभरो माणकं ।
धम्मणी राणधारा ण भव्वाणकं चारूसस्स णउ द्धारणिप्पादकं ।।१८।।
छद्दहा अग्गली भावणाभावए, दस्सधम्मा वरा सम्पदा पालए ।
चारू चारित्तहिं भूसिओ विग्गहो, धम्मचंदो जओ जित्त इंदिग्गहो ।।१६।।

पद्धडछंद—

सुरणर खगचरखचर चारू चच्चिय अकम जिणवर ।
चरण कमलहिं अधरण सरण गोयम जइ जइवर ।
पोसि अवित्तर धम्म सोसि अक्कमपबलतर ।
उद्धारी कयसमि बग्गभव्व चातक जलधर ।
वम्मह सप्प दप्प हरणवर समत्थ तारण तरण ।
जय धम्मधुरंधर धम्मचंद सयलसंघ मंगलकरण ।।२०।।

इति धर्मचन्द्रप्रबंध समाप्त: ।।

३६३२ नित्यपाठसंग्रह""""। पत्र सं० ७ । आ० ८३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८२० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

बडा दर्शन—	संस्कृत	—	
छोटा दर्शन—	हिन्दी	बुधजन	
भूतकाल चौबीसी—	"	×	
पंचमंगलपाठ—	"	रूपचंद	(२ मगल है)
अभिषेक विधि—	संस्कृत	×	

३६३३. निर्वाणकाण्डगाथा""""। पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । अ भण्डार ।

विशेष—महावीर निर्वाण कल्याणक पूजा भी है ।

३६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० स० ३७२ । ङ भण्डार ।

३६३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८८) और है ।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार ३ प्रतियां (वे० सं० १३६, २५६, २५६/२) और हैं ।

३६३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । ञ भण्डार ।

३६३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० स० १८६३ । ट भण्डार ।

३६३६. निर्वाणकाण्डटीका…… । पत्र सं० २४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ख भण्डार ।

३६४०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष —इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३७३, ३७४) और हैं ।

३६४१. निर्वाणभक्ति……… । पत्र सं० २४ । आ० ११×७½ इंच । भाषा- हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । क भण्डार ।

३६४२. निर्वाणभक्ति……… । पत्र सं० ६ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा- संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७५ । ट भण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है ।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र……… । पत्र सं० ६ । आ० ८×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १६२३ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० । ञ भण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र …… । पत्र सं० ३ से ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७५ । ट भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दी हुई है ।

३६४५. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्नाथ । पत्र सं० ८ । आ० ६½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७०४ भादवा बुद. २ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । ञ भण्डार ।

विशेष—पं० दामोदर ने शेरपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं० शाली । पत्र सं० १ । आ० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वे० सं० ३४० । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । द्वयक्षरी स्तोत्र है । प्रदर्शन योग्य है ।

३६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १८३० । ट भण्डार ।

३६४८. नेमिस्तवन—ऋषि शिव। पत्र सं० २। ग्रा० १०३/४×४१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० १२०८। अ भण्डार।

विशेष— बीस तीर्थङ्कर स्तवन भी है।

३६४९. नेमिस्तवन—जितसागरगणी। पत्र सं० १। ग्रा० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१५। अ भण्डार।

विशेष—दूसरा नेमिस्तवन और है।

३६५०. पञ्चकल्याणकपाठ—हरचंद। पत्र सं० १। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल सं० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३८। छ भण्डार।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ—

कल्यान नायक नमौ, कल्प कुरुह कुलकंद।
कल्मष दुर कल्यान कर, बुधि कुल कमल दिनंद ॥१॥
मंगल नायक वंदिकै, मंगल पंच प्रकार।
वर मंगल मुझ दीजिये, मंगल वरनन सार ॥२॥

अन्तिम-धत्त छंद—

यह मंगल माला सब जनविधि है,
सिव साला गल में धरनी।
बाला ग्रध तरुन सब जग कौ,
सुख समूह की है भरनी॥
मन वच तन श्रधाम करै गुन,
तिनके चहुंगति दुख हरनी॥
तातै भविजन पढि कढि जगते,
पंचम गति वामा वरनी ॥११६॥

दोहा—

व्योम अंगुल न नापिये, गनिये मघवा धार।
उडगन मित भू पैडन्यौ, त्यो गुन वरने सार ॥११७॥
तीनि तीनि बसु चंद्र, संवतसर के अंक।
जेष्ठ शुक्ल सप्तम दिवस, पूरन पढौ निसंक ॥११८॥

॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥

पाल देशी

३६५१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानंदि। पत्र सं० ४ । आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल सं० १७६६ फागुण। पूर्ण। वे० सं० ३५। अ भण्डार।

३६५२. पञ्चमंगलपाठ—रूपचंद। पत्र सं० ६ । आ० १२३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल सं० १८४४ कार्त्तिक सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ५०२।

विशेष—अन्त में तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं। पं० खुस्यालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ६५७, ७७१, ६६०) और हैं।

३६५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ४१४ । क भण्डार।

३६५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३६४ । ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति और है।

३६५५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८६ आसोज सुदी १५ । वे० सं० ६१८ । च भण्डार।

विशेष—पत्र ४ चौथा नही है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २३६) और है।

३६५६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १४५ । छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) और है।

३६५७. पंचस्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ५३ । आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ६१८ । अ भण्डार।

विशेष—पाचों ही स्तोत्र टीका सहित हैं।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१. एकीभाव	नागचन्द्र सूरि	संस्कृत
२. कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्ति	"
३. विषापहार	नागचन्द्रसूरि	"
४. भूपालचतुर्विंशति	आशाधर	"
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	—	"

३६५८. पंचस्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २४ । आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १४०० । अ भण्डार।

३६५६. पंचस्तोत्रटीका……। पत्र सं० ५० । आ० १२×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० २००३ । ट भण्डार।

विशेष—भक्तामर, विषापहार, एकीभाव, कल्याणमंदिर, भूपालचतुर्विंशति इन पांच स्तोत्रों की टीका है।

३६६०. पद्मावत्यष्टकवृत्ति—पार्श्वदेव। पत्र सं० १५। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० सं० १४४। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम– अस्यायां पार्श्वदेवविरचितायां पद्मावत्यष्टकवृत्तौ यत् किमप्यबंधयति तत्सर्वं सर्वाभिः क्षंतव्यं देवताभिरपि। वर्षाणां द्वादशभिः शतैर्गतैस्तुत्तरैरियं वृत्ति वैशाखे सूर्यदिने समाप्ता शुक्लपंचम्यां अस्याक्षरगणनातः पंचशतानि जातानिद्वाविंशदक्षराणि वासदनुष्टुपछंदसा प्रायः।

इति पद्मावत्यष्टकवृत्तिसमाप्ता।

३६६१. पद्मावतीस्तोत्र……। पत्र सं० १५। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३२। ज भण्डार।

विशेष—पद्मावती पूजा तथा शान्तिनाथस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र और विषापहारस्तोत्र भी हैं।

३६६२. पद्मावती की ढाल……। पत्र सं० २। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८०। अ भण्डार।

३६६३. पद्मावतीदण्डक……। पत्र सं० १। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५१। अ भण्डार।

३६६४. पद्मावतीसहस्रनाम……। पत्र सं० १२। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६०२। पूर्ण। वे० सं० ६६५। अ भण्डार।

विशेष—शान्तिनाथाष्टक एवं पद्मावती कवच (मंत्र) भी दिये हुये हैं।

३६६५. पद्मावतीस्तोत्र……। पत्र सं० ६। आ० ६½×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १०३२, १८६८) और है।

३६६६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६३३। वे० सं० २६४। ख भण्डार।

३६६७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० २०६। ख भण्डार।

३६६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ४२६। क भण्डार।

३६६९. परमज्योतिस्तोत्र—बनारसीदास। पत्र सं० १। आ० १२½×६½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२११। अ भण्डार।

३६७०. परमात्मराजस्तवन—पद्मनंदि। पत्र सं० २। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२३। म भण्डार।

३६७१. परमात्मराजस्तोत्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ भण्डार ।

अथ परमात्मराज स्तोत्र लिख्यते

यन्नामसंस्तवफलात् महता महत्यप्यग्नौ, विशुद्धय इहात्र भवंति पूर्णाः ।
सर्वार्थसिद्धजनकाः स्वचिदेकमूर्त्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥१॥
यद्ध्यानवज्रहननान्महतां प्रयाति, कर्म्माद्रबोति विषमाः शतचूर्णतां च ।
अंतातिगाबरगुणाः प्रकटाभवेयुर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥२॥
यस्यावबोधकलनात्त्रिजगत्प्रदीपं, श्रीकेवलोदयमनंतसुखाब्धिमाशु ।
संतः श्रयन्ति परमं भुवनार्च्य वंद्यं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥३॥
यद्दर्शनेनमुनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्पदार्थान् ।
पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥४॥
यद्भावनादिकरणाद्भवनाशनाच, प्रणश्यंति कर्म्मरिपवो भवकोटि जाताः ।
अभ्यन्तरेऽत्रविविधाः सकलार्द्धयः स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥५॥
सन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दुःकर्मदुर्मलचयाद्विमला भवंति
दक्षा जिनेन्द्रगणभृत्सुपदं लभंते, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥६॥
यं ध्यान्तरेतु विमलं विमलाविबुद्धय, शुक्लेन तत्त्वमसमं परमार्थरूपं ।
अर्हत्पदं त्रिजगता शरणं श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥७॥
यद्ध्यानशुक्लपविनाखिलकर्म्मशैलान्, हत्वा समाप्यशिवदाः स्तवबंदनार्हाः ।
सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजनाः स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥८॥
यस्याप्तये सुगणिनो विधिनाचरंति, ह्याचारयन्ति यमिनो वरपञ्चभेदान् ।
आचारसारजनितान् परमार्थबुद्धया, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥९॥
यं ज्ञातुमात्मसुविदो यतिपाठकाश्च, सर्वागपूर्वजलधेर्लघु यांति पारं ।
अन्त्यात्मसंविधिप्रदं परतत्त्वबीजं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥१०॥
ये साधयंति वरयोगबलेन नित्यमध्यात्ममार्गनिरताबनपर्वताद्रौ ।
श्रीसाधवः शिवगतेः करमं तिरस्थं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥११॥
रागदोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानपि च देह वर्ज्जितः ।
कर्म्मवानपि कुकर्म्मदूरगो, निश्चयेन भुवि यः स नन्दतु ॥१२॥

जन्ममृत्युकलितो भवांतक, एक रूप इह योप्यनेकधा ।

व्यक्त एव यमिनां न रागिणां, यश्चिदात्मक इहास्तुनिर्म्मलः ॥१३॥

यत्तत्वं ध्यानगम्यं परपदकर तीर्थनाथादिमेव्यं ।

कर्म्मघ्नं ज्ञानदेहं भवभयमथन ज्येष्ठमानदमूल ॥

अंतातीतं गुणाप्त रहितविधिगण सिद्धसादृश्यरूपं ।

तद्वंदे स्वात्मतत्वं शिवसुखगतये स्तौमि युक्त्याभजेह ॥१४॥

पठति नित्यं परमात्मराजमहास्तवं ये विबुधाः किलं मे ।

तेषां चिदात्माविरतोगद्वरो ध्यानी गुणी स्यात्परमात्मरूपः ॥१५॥

इत्थं यो वारवारं गुणगणरचनैर्वंदितः संस्तुतोऽस्मिन्

सारे ग्रन्थे चिदात्मा समगुणजलधिः सोस्तुमे व्यक्तरूपः ।

ज्येष्ठः स्वध्यानदाताखिलविधिवपुषा हानय चित्तशुद्धये

सन्मत्यैवो।धकर्ता प्रकटनिजगुणो धैर्य्यशाली च शुद्धः ॥१६॥

इति श्री सकलकीर्त्तिभट्टारकविरचितं परमात्मराजस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

३६७२. परमानंदपंचविंशति⋯ ⋯ । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३ । ञ भण्डार ।

३६६३. परमानंदस्तोत्र⋯ ⋯। पत्र सं० ३ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३० । अ भण्डार ।

३६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । भ भण्डार ।

३६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २१२ । च भण्डार ।

विशेष—फूलचन्द बिन्दायका ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २११) और है ।

३६७६. परमानंदस्तोत्र⋯⋯। पत्र सं० ३ । आ० ११×७½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९६७ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३६७७. परमार्थस्तोत्र⋯⋯। पत्र सं० ४ । आ० ११¾×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । ख भण्डार ।

विशेष—सूर्य की स्तुति की गयी है । प्रथम पत्र मे कुछ लिखने से रह गया है ।

३६७८. पाठसंग्रह ……। पत्र सं० ३६ । मा० ४३/४×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६२८। अ भण्डार।

निम्न पाठ हैं— जैन गायत्री उर्फ वज्रपञ्जर, शान्तिस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र, णमोकारकल्प, न्हावणकल्प

३६७९. पाठसंग्रह ……। पत्र सं० १०। आ० १२×७३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६८। अ भण्डार।

३६८०. पाठसंग्रह—संग्रहकर्त्ता–जैतराम बाफना। पत्र सं० ७०। आ० ११३/४×७३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४६१। क भण्डार।

३६८१. पात्रकेशरीस्तोत्र ……। पत्र सं० १७। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल × ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३४। छ भण्डार।

विशेष—५० श्लोक हैं। प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

३६८२. पार्थिवेश्वरचिन्तामणि ……। पत्र सं० ७। आ० ८१/२×४३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६० भादवा सुदी ८। वे० सं० २३४। ज भण्डार।

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिलिपि की थी।

३६८३. पार्थिवेश्वर ……। पत्र सं० ३। आ० ७३/४×४३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–वैदिक साहित्य। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १५४४। पूर्ण। अ भण्डार।

३६८४. पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र ……। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३६। छ भण्डार।

३६८५ पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव। पत्र सं० १। आ० ६×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४। ख भण्डार।

३६८६. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६२। झ भण्डार।

३६८७. पार्श्वनाथ एवं वर्द्धमानस्तवन ……। पत्र सं० १। आ० १०×४३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। छ भण्डार।

३६८८. पार्श्वनाथस्तोत्र ……। पत्र सं० ३। आ० १०३/४×११/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४३। अ भण्डार।

विशेष—लघु सामायिक भी है।

३९८९. पार्श्वनाथस्तोत्र........। पत्र सं० १२ । आ० १०×४¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५३ । अ भण्डार ।

विशेष—मन्त्र सहित स्तोत्र हैं । अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं ।

३९९०. पार्श्वनाथस्तोत्र........। पत्र सं० १ । आ० १२½×७½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ भण्डार ।

३९९१. पार्श्वनाथस्तोत्र........। पत्र सं० १ । आ० १०¾×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९६३ । अ भण्डार ।

३९९२. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका........। पत्र सं० २ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४२ । अ भण्डार ।

३९९३. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका........। पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९८७ । अ भण्डार ।

३९९४. पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा—द्यानतराय । पत्र सं० १ । आ० १०×५¾ इंच । भाषा हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५५ । अ भण्डार ।

३९९५. पार्श्वनाथाष्टक........। पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति मन्त्र सहित है ।

३९९६. पार्श्वमहिम्नस्तोत्र—महामुनि राजसिंह । पत्र सं० ४ । आ० ११½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९८७ । पूर्ण । वे० सं० ७७० । अ भण्डार ।

३९९७. प्रश्नोत्तरस्तोत्र........। पत्र सं० ७ । आ० ८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । ख भण्डार ।

३९९८. प्रातःस्मरणमंत्र........। पत्र सं० १ । आ० ८½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८९ । अ भण्डार ।

३९९९. भक्तामरपञ्जिका........। पत्र सं० ८ । आ० १३×४ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७८१ । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री हीरानन्द ने द्रव्यपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४०००. भक्तामरस्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०३ । अ भण्डार ।

४००१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १७२० । वे० सं० २६ । अ भण्डार ।

४००२. प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल सं० १७५५ । वे० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४००३. प्रति सं० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० सं० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय है । आ० ५×२ इंच है । इसके अतिरिक्त २ पत्र पुट्ठों की जगह हैं । २×१½ इंच चौड़े पत्र पर रामोकार मन्त्र भी है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

४००४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १७५५ । वे० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतियां (वे० सं० ४४१, ६५६, ६७३, ८६०, ६२०, ९५६, ११३५, ११८६, १३६६) और है

४००५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६७ पौष सुदी ८ । वे० सं० २५१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है । मूल प्रति मथुरादास ने निमखपुर मे लिखी तथा उदैराम ने टिप्पण किया । इसी भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० सं० १२८, २८८, १८५६) और है ।

४००६ प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । घ भण्डार ।

४००७. प्रति सं० ८ । पत्र स० ६ से ११ । ले० काल सं० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ५४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १२ प्रतियां (वे० सं० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) और हैं ।

४००८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७३८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में ७ प्रतिया (वे० सं० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३६) और है ।

४००९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२२ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतियां (वे० सं० १३४ (४) १३६, २२६) और हैं ।

४०१०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १७० । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० सं० २१५) और है ।

४०११. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १७५ । ज भण्डार ।

४०१२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७७ पौष सुदी १ । वे० सं० २६३ । म

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६६ ३३६, ५२५) और हैं ।

४०१३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३ से ३६ । ले० काल सं० १६३२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१३ । ट भण्डार ।

विशेष—इस प्रति में ५२ श्लोक हैं । पत्र १, २, ४, ६, ७ ६, १६ यह पत्र नही हैं । प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है । इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १६३४, १७०४, १६६६, २०१४) और हैं ।

४०१४. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्र० रायमल । पत्र सं० ३० । आ० ११३×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १६६६ । ले० काल सं० १७६१ । पूर्ण । वे० सं० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की टीका ग्रीवापुर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में की गयी । प्रति कथा सहित है ।

४०१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल स० १७२४ आसोज बुदी ६ । वे० सं० २८७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४३) और है ।

४०१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० ५४४ । क भण्डार ।

४०१७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—फतेचन्द गंगवाल ने मन्नालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई ।

४०१८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७५४ पौष बुदी ८ । वे० सं० ५५७ । ङ भण्डार ।

४०१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८३२ पौष सुदी २ । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में ईसरदास की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

४०२० प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८७३ चैत्र बुदी ११ । वे० स० १५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरिनारायण ब्राह्मण ने पं० कालूराम के पठनार्थ आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

४०२१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६८८ फागुन बुदी ८ । वे० सं० २८ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- संवत् १६८८ वर्षे फागुण बुदी ८ शुक्रवार नक्षित्र अनुराध व्यतिपात नाम जोगे महाराजाधिराज श्री महाराजाराव छत्रसालजी बूंदीराज्ये इदंपुस्तकं लिखाइतं। साह श्री स्योपा तत्पुत्र सहलाल तत् पुत्र साह श्री धणराज आई मनराज गोत्रे षटवीड जाती बघेरवाल इदं पुस्तकं पुन्निश्र दीयते। लिखतं जोसी नराइण।

४०२२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १७६१ फागुण। वे० सं० ३०३। अ भण्डार।

४०२३. भक्तामरस्तोत्रटीका—हर्षकीर्त्तिसूरि। पत्र सं० १०। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७६। अ भण्डार।

४०२४ प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६४०। वे० सं० १६२५। ट भण्डार।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है।

४०२५. भक्तामरस्तोत्रटीका……। पत्र सं० १२। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६१। ट भण्डार।

४०२६. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० १८४४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र चिपके हुये है।

४०२७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८७२ पौष बुदी १। वे० सं० २१०६। अ भण्डार।

विशेष—मन्नालाल ने शीतलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६८) और है।

४०२८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४८। ले० काल ×। वे० सं० ५६६। क भण्डार।

४०२९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४६।

विशेष—३६वें काव्य तक है।

४०३०. भक्तामरस्तोत्रटीका……। पत्र सं० ११। ग्रा० १२½×८ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६१८ चैत सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १६१२। ट भण्डार।

विशेष—अक्षर मोटे है। संस्कृत तथा हिन्दी मे टीका दी हुई है। संगही पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी। अ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०८२) और है।

४०३१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित……। पत्र सं० २७। ग्रा० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४३ वैशाख बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० २८५। अ भण्डार।

विशेष—श्री [illegible] ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। अन्तिम २ पृष्ठ पर उपसर्ग हर स्तोत्र दिया हुआ है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५१) और है।

४०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० १२१ । [illegible] भण्डार ।

विशेष—गोविंदगढ मे पुरुषोत्तमसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७ । ञ भण्डार ।

विशेष—मन्त्रों के चित्र भी हैं।

४०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८२१ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८१ । ञ भण्डार ।

विशेष—पं० सदाराम के शिष्य गुलाब ने प्रतिलिपि की थी।

४०३५. भक्तामरस्तोत्रभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ६४ । आ० १२¾×५ इंच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५४१ ।

विशेष—क भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५४२, ५४३) और हैं।

४०३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १९६० । वे० सं० ५५६ । ङ भण्डार ।

४०३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १९३० । वे० सं० ६५४ । च भण्डार ।

४०३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १९०४ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

४०३९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २७३ । झ भण्डार ।

४०४०. भक्तामरस्तोत्रभाषा—हेमराज । पत्र सं० ८ । आ० ८¾×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११२५ । अ भण्डार ।

४०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८८४ माघ सुदी २ । वे० सं० ६४ । ग भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्द के मन्दिर में प्रतिलिपि की गयी थी।

४०४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ से १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५१ । ङ भण्डार ।

४०४३. भक्तामरस्तोत्रभाषा—गंगाराम । पत्र सं० २ से २७ । आ० १२¾×५½ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० २००७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। पहिले मूल फिर शंकाराम कृत टीका, हेमराज कृत पद्य, बाद में २ भाषा अर्थ इससे आगे ऋद्धि मन्त्र सहित है।

अन्त में लिखा है— बाबूजी श्रावको धर्मवी इनके २ पुत्र जोधराजजी, बाबू अमरचन्द मोहनलालजी ने यति भागचन्दजी जती को यह पुस्तक भेंट किया सं० १८७२ का साल में आसोज में वदि के।

४०४४. भक्तामरस्तोत्रभाषा……। पत्र सं० ६ से १०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७८७। अपूर्ण। वे० सं० १२६४। अ भण्डार।

४०४५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८२८ मंगसिर बुदी ६। वे० सं० २११। अ भण्डार।

विशेष—भूधरदास के पुत्र के लिये संभूराम ने प्रतिलिपि की थी।

४०४६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० ११२। अ भण्डार।

४०४७. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १८२१। वे० सं० ११७। क भण्डार।

विशेष—जयपुर में पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०४८. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८०१ चैत्र बुदी १३। वे० सं० २६७। अ भण्डार।

४०४९. भक्तामरस्तोत्रभाषा……। पत्र सं० ३। आ० १०½×७¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५२। च भण्डार।

४०५०. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्र—भूपाल कवि। पत्र सं० ८। आ० ९½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४३। पूर्ण। वे० सं० ४१। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२३) और है।

४०५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २६८। अ भण्डार।

४०५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ५७२। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७३) है।

४०५३. भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर। पत्र सं० १४। आ० ११½×४¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७७८ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ६। अ भण्डार।

विशेष—श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ पं० आशाधर ने टीका लिखी थी। पं० हीरानन्द के शिष्य लोकचन्द्र के पठनार्थ मौजमाबाद में प्रतिलिपि कराई गई।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है— संवत्सरे वसुमुनिगजेन्दु (१७७८)_ मिति भाद्रपद कृष्णा द्वादशी तिथौ श्रीजमाबादनगरे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकोत्तम श्री श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी कस्य शासनकारी बुधजी श्रीहीरानन्दजीकस्य शिष्येन विनयवता श्रीलचन्द्रं गुरुवचनेन स्वपठनार्थ लिखितेयं भूपाल चतुर्विशतिका टीका विनयचन्द्रस्यार्थमित्याशाधरविरचिताभूपालचतुर्विशति जिनेन्द्रस्तुतेष्टीका परिसमाप्ता।

ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०) और है।

४०५४. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १५३२ मंगसिर सुदी १०। वे० सं० २३१। ज भण्डार।

विशेष— प्रशस्ति—सं० १५३२ वर्षे मार्ग सुदी १० गुरुवासरे श्रीघाटमपुरशुभस्थाने श्रीचन्द्रप्रभुचैत्यालय लिख्यते श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये.........।

४०५५. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्रटीका—विनयचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२०।

विशेष—श्री विनयचन्द्र नरेन्द्र द्वारा भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र रचा गया था ऐसा टीका की पुष्पिका में लिखा हुआ है। इसका उल्लेख २७वें पद्य में निम्न प्रकार है।

यः विनयचन्द्रनामायतीवरो जनि समभूत। ललितचंद्रान्। उपशमइवोपक्षेपतेयमुपशमः साक्षा-मूर्तिमान् सः कथंभूतः सज्जनकोरचन्द्रः संतः पंडिताः एव चकोराः तेषां प्रमोदवे द्वितीयश्चन्द्रः यस्यशुचि चरितं चरिदनोः शुचि च तच्चरितं च तच्चरण शीलं शुचि चरित चरिष्णुः तस्य वाचो वाच्यः जगल्लोकाधिन्वन्ति कथंभूतावाचः अमृतगर्भा अमृतंगर्भे यासां तास्तथोक्ताः शास्त्रसंदर्भगर्भाः शास्त्राणां संदर्भः विस्ताराः शास्त्रसंदर्भास्तेगर्भे यासां तास्तास्ता ॥२७॥ इति विनयचन्द्रनरेन्द्र विरचितं भूपाल स्तोत्र समाप्तं।

प्रारम्भ में टीकाकार का मंगलाचरण नहीं है। मूल स्तोत्र की टीका आरम्भ करदी गई है।

४०५६. भूपालचौबीसीभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० २४। आ० १२½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १९३० चैत्र सुदी ४। ले० काल सं० १९३०। पूर्ण। वे० सं० ५६१। क भण्डार।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५६२) और है।

४०५७. मृत्युमहोत्सव.........। पत्र सं० १। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६३। ङ भण्डार।

४०५८. महर्षिस्तवन.........। पत्र सं० ३१ से ७४। आ० ५×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५८८। क भण्डार।

४०५६. महर्षिस्तवन……। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६३। अ भण्डार।

विशेष—अन्त में पूजा भी दी हुई है।

४०६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी १४। वे० सं० ६११। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है।

४०६१. महामहिम्नस्तोत्र……। पत्र सं० ४। आ० ८×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९०६ फागुन बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ३११। अ भण्डार।

४०६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ३१५। अ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४०६३. महामहर्षिस्तवनटीका……। पत्र सं० २। आ० ११३⁄४×४१⁄२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। छ भण्डार।

४०६४ महालक्ष्मीस्तोत्र……। पत्र सं० १०। आ० ८१⁄२×६१⁄२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २९५। ख भण्डार।

४०६५. महालक्ष्मीस्तोत्र……। पत्र सं० ६ से ९। आ० ९×३१⁄२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–वैदिक साहित्य स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७८२।

४०६६ महावीराष्टक—भागचन्द। पत्र सं० ४। आ० ११३⁄४×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७३। क भण्डार।

विशेष—इसी प्रति में जिनोपदेशोपकारस्मर स्तोत्र एवं आदिनाथ स्तोत्र भी हैं।

४०६७. महिम्नस्तोत्र……। पत्र सं० ७। आ० ९×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। झ भण्डार।

४०६८. यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्त्ति। पत्र सं० १। आ० १२×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८२२ पौष बुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ५८६। क भण्डार।

४०६९. युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र……। पत्र सं० २ से १४। आ० ११×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०९४। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम तीन पत्रों में पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं। इससे आगे महिम्नस्तोत्र हैं।

४०७०. राधिकानाममाला………। पत्र सं० १ । ग्रा० १०½×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६६ । ट भण्डार ।

४०७१. रामचन्द्रस्तवन………। पत्र सं० ११ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्तिम– श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरणम् ॥ १०० पद्य हैं ।

४०७२. रामबतीसी—अगनकवि । पत्र सं० ६ । ग्रा० ६½×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७३५ प्रथम चैत्र बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १५१० । ट भण्डार ।

विशेष—कवि पोहकरना (पुष्करना) जाति के थे । नरायणा में जट्टू व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

४०७३. रामस्तवन………। पत्र सं० ११ । ग्रा० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११२ । ट भण्डार ।

विशेष—११ से आगे पत्र नहीं हैं । पत्र नीचे की ओर से फटे हुए हैं ।

४०७४. रामस्तोत्र………। पत्र सं० १ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७२५ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६५८ । ङ भण्डार ।

विशेष—जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

४०७५. लघुशान्तिस्तोत्र । पत्र सं० १ । ग्रा० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४६ । अ भण्डार ।

४०७६. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं० २ । ग्रा० १३×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०३६) और है ।

४०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४४) और है ।

४०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १८२८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है ।

४०७६. लक्ष्मीस्तोत्र………। पत्र सं० ४ । ग्रा० ६×३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२१ । अ भण्डार ।

विशेष—ड भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०६७) और है ।

४०८०. लघुस्तोत्र ··· । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ख भण्डार ।

४०८१. वज्रपंजरस्तोत्र ······· । पत्र सं० १ । आ० ८½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

४०८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र में होम का मन्त्र है ।

४०८३. वर्द्धमानद्वात्रिंशिका—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० १२ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६७ । ट भण्डार ।

४०८४. वर्द्धमानस्तोत्र—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं० १२ । आ० ४½×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९३३ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १४ । ज भण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण की राजा श्रेणिक की स्तुति है तथा ३३ श्लोक हैं । संग्रहकर्ता श्री फतेहलाल शर्मा हैं ।

४०८५. वर्द्धमानस्तोत्र······· । पत्र सं० ५ । आ० ७½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३ से आगे निर्वाणकाण्ड गाथा भी है ।

४०८६. वसुधारापाठ······· । पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । छ भण्डार ।

४०८७. वसुधारास्तोत्र······· । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । ख भण्डार ।

४०८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

४०८९. विद्यमानबीसतीर्थंकरस्तवन—मुनि दीप । पत्र सं० १ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९३१ ।

४०९०. विषापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र सं० ४ । आ० १२½×६ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है । इसकी प्रतिलिपि पं० मोहनदासजी ने अपने शिष्य भुवानीरामजी के पठनार्थ खेमकरणजी की पुस्तक से बसई (बस्सी) नगर में शान्तिनाथ चैत्यालय में की थी ।

४०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

४०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १५२ । ज भण्डार ।

विशेष—सिद्धिप्रियस्तोत्र भी है ।

४०६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १६११ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६४. विषापहारस्तोत्रटीका—नागचन्द्रसूरि । पत्र सं० १४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । अ भण्डार ।

४०६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ से १६ । ले० काल सं० १७७८ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ८८६ । अ भण्डार ।

विशेष—मौजमाबाद नगर मे पं० चोखचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

४०६६. विषापहारस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० ३१ । आ० १२½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १९३० फागुण सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । क भण्डार ।

विशेष— सी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६६५) और है ।

४०६७. विषापहारस्तोत्रभाषा—अचलकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८५ । ट भण्डार ।

४०६८. वीतरागस्तोत्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । छ भण्डार ।

४०६९. वीरछत्तीसी……। पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । अ भण्डार ।

४१००. वीरस्तवन……। पत्र सं० १ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० १२४८ । अ भण्डार ।

४१०१. वैराग्यगीत—महमत । पत्र सं० १ । आ० ८×३½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ भण्डार ।

विशेष—'भूल्यो भमरा रे काई भमै' ११ अंतरे है ।

४१०२. षट्पाठ—बुधजन । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । अ भण्डार ।

४१०३. षट्पाठ……। पत्र सं० ६ । आ० ४×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । क भण्डार ।

४१०४. शान्तिघोषणास्तुति……। पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

४१०५. शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३५ । अ भण्डार ।

विशेष—शांतिनाथ का एक स्तवन और है ।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन……। पत्र सं० १ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । ट भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के पूर्वभव की कथा भी है ।

अन्तिमपद्य— कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ गुण हिम मे धरै ।
रोग सोग संताप दूरं जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ।।

इति शान्तिनाथस्तोत्रं संपूर्ण ।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र । पत्र सं० १ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७० । अ भण्डार ।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते—

काव्य– नाना विचित्रं भवदुःखराशि, नाना प्रकारं मोहाग्निपाशं ।
पापानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।१।।
संसारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिबंध ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।२।।
कामं च क्रोधं मायाविलोभं, चतुःकषायं इह जीव बंधं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।३।।
मोहावमहीने कठिनस्यचित्ते, परजीवहिंसा मनसा च वाचा ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।४।।
चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्नं परिपालनीयं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ।।५।।

जातस्य तरणं युक्तस्य वचनं, ही शान्तिजीवं बहुजन्मदुःखं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥६॥
परद्रव्यचोरी परदारसेवा, शकादिकक्षा अजमृत्यबंधं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥७॥
पुत्राणि मित्राणि कलित्रदंदं, इहबंदमध्ये बहुजीवबंधा ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥८॥

जयति पठति नित्यं श्री शान्तिनाथादिशाति
स्तवनमधुरवाणी पापतापोपहारी ।
कृतमुनिभद्रं सर्वकार्येषु नित्यं
.... ॥६॥

इतिश्रीशान्तिनाथस्तोत्र संपूर्ण । शुभम् ॥

४१०८. शान्तिनाथस्तोत्र……। पत्र सं० २ । ग्रा० ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१६ । अ भण्डार ।

४१०६. शान्तिपाठ……। पत्र सं० ३ । ग्रा० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

४११०. शान्तिविधान……। पत्र सं० ७ । ग्रा० ११½×४¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३१ । अ भण्डार ।

४१११. श्रीपतिस्तोत्र—चैनसुखजी । पत्र सं० १ । ग्रा० ८×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क भण्डार ।

४११२. श्रीस्तोत्र……। पत्र सं० २ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १६०४ चैत बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १८०४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४११३. सप्तनयविचारस्तवम……। पत्र सं० ८ । ग्रा० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

विशेष—३७ पद्य हैं ।

४११४. समवशरणस्तोत्र·······। पत्र सं० ८। आ० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७९८ फागुन सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २६६। छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

प्रारम्भ— वृषभाद्यानभिवंद्यान् वंदित्वा वीरपश्चिमजिनेंद्रान्।

भक्त्या नतोत्तमांगः स्तोष्ये तन्समवशरणाणि ॥२॥

४११५. समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि। पत्र सं० २ से ६। आ० ११½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७। अ भण्डार।

४११६. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ७७८। अ भण्डार।

४११७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७८५ माघ बुदी ५। वे० सं० ३०५। अ भण्डार।

विशेष—पं० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य पं० मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४११८. संभवजिनस्तोत्र—मुनि गुणनंदि। पत्र सं० २। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७९०। क भण्डार।

४११९. समुदायस्तोत्र·······। पत्र सं० ५३। आ० १३×८½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८७। पूर्ण। वे० सं० ११५। घ भण्डार।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

४१२०. समवशरणस्तोत्र—विश्वसेन। पत्र सं० ११। आ० १०½×४¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

४१२१. सर्वतोभद्रमंत्र·······। पत्र सं० २। आ० ६×३½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८९७ आसोज सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १४२२। अ भण्डार।

४१२२. सरस्वतीस्तवन—लघुकवि। पत्र सं० ३ से ५। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२५७। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं।

अन्तिमपुष्पिका— इति भारत्यालघुकवि कृत लघुस्तवन सम्पूर्णतामागतम्।

४१२३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ११२५। अ भण्डार।

४१२४. सरस्वतीस्तोत्र—बृहस्पति। पत्र सं० १। आ० ८३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र (जैनेतर)। र० काल ×। ले० काल सं० १८५१। पूर्ण। वे० सं० १५५०। अ भण्डार।

४१२५. सरस्वतीस्तोत्र—श्रुतसागर। पत्र सं० २६। आ० १०३×४१ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७७४। ट भण्डार।

विशेष—बीच के पत्र नहीं है।

४१२६. सरस्वतीस्तोत्र……। पत्र सं० ३। आ० ८×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०६। क भण्डार।

४१२७. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८६२। वे० सं० ४३६। ञ भण्डार।

विशेष—रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी। भारतीस्तोत्र भी नाम है।

४१२८. सरस्वतीस्तोत्रमाला (शारदा-स्तवन)……। पत्र सं० २। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२६। ञ भण्डार।

४१२९. सहस्रनाम (लघु)—आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं० ४। आ० ११३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७१४ आश्विन बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ६। भ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त भद्रबाहु विरचित ज्ञानाकुश पाठ भी है। ४३ श्लाक है। आनन्दराम ने स्वय जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। 'पोथी जोधराज गोदीका की पढिबा की छै' पत्र ८ मु० सागानेर।

४१३०. सारचतुर्विंशति……। पत्र सं० ११२। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८९० पौष सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० २८८। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम ६५ पृष्ठो मे सकलकीर्ति कृत श्रावकाचार है।

४१३१. सायंसन्ध्यापाठ……। पत्र सं० ७। आ० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८२४। पूर्ण। वे० सं० २७८। ख भण्डार।

४१३२. सिद्धवंदना……। पत्र सं० ८। आ० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६ फाल्गुन सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ९०। ग भण्डार।

विशेष—श्रीमाणिक्यचंद ने प्रतिलिपि की थी।

४१३३. सिद्धस्तवन……। पत्र सं० ८। आ० ८३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६५२। ट भण्डार।

४१३४. सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनंदि । पत्र सं० ८ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ भाद्रपद बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २००८ । अ भण्डार ।

४१३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है ।

४१३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

विशेष—हासिये में कठिन शब्दो के अर्थ दिये हैं । प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है । अक्षर काफी मोटे हैं । मुनि विशालकीर्त्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २६३, २६८) और हैं ।

४१३७. प्रति सं० ४ पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० ८५३ । क भण्डार ।

४१३८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४०६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर मे अभयचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३९. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० १०२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३८, १०३) और है ।

४१४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

४१४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अमरसी ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४७) और है ।

४१४२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १८२५ । ट भण्डार ।

४१४३. सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका……। पत्र सं० ५ । प्रा० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ आसोज बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ञ भण्डार ।

विशेष—त्रिलोकदास ने अपने हाथ मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१४४. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३६ । प्रा० १२½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल सं० १९३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०५ । क भण्डार ।

४१४५. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—जयमल । पत्र सं० ८ । प्रा० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४७ । क भण्डार ।

४१४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८५१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८५२) और है ।

४१४७. सिद्धिप्रियस्तोत्र……। पत्र सं० १३ । आ० ११½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०४ । क भण्डार ।

४१४८. सुगुरुस्तोत्र……। पत्र स० १ । आ० १०½×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५८ । अ भण्डार ।

४१४९. वसुधारास्तोत्र……। पत्र सं० १० । आ० ६½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४६ । ज भण्डार ।

विशेष—अन्त में लिखा है– अथ घंटाकर्णकल्प लिख्यते ।

४१५०. सौंदर्यलहरीस्तोत्र—भट्टारक जगद्भूषण । पत्र सं० १० । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४४ । पूर्ण । वे० सं० १८२७ । ट भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती कर्वट में पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति आमेर वालो ने सर्वसुख के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१५१. सौंदर्यलहरीस्तोत्र……। पत्र सं० ७४ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३७ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २७४ । ज भण्डार ।

४१५२. स्तुति……। पत्र सं० १ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६७ । अ भण्डार ।

विशेष—भगवान महावीर की स्तुति है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रारम्भ— त्राता त्राता महात्राता भर्त्ता भर्त्ता जगत्प्रभु

वीरो वीरो महावीरोस्त्वं देवासि नमोस्तुति ।।१।।

४१५३ स्तुतिसंग्रह……। पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४० । अ भण्डार ।

४१५४. स्तुतिसंग्रह……। पत्र सं० २ से १७ । आ० ११×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीस्तवन, बीसतीर्थङ्करस्तवन आदि हैं ।

४१५५. स्तोत्रसंग्रह...... । पत्र सं० ६ । ग्रा० ११३/४×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५३ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
१. शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	प्राकृत
२. भयहरस्तोत्र	×	"
३. लघुशान्तिस्तोत्र	×	संस्कृत
४. बृहद्शान्तिस्तोत्र	×	"
५. अजितशान्तिस्तोत्र	×	"

२रा पत्र नही है । सभी श्वेताम्बर स्तोत्र है ।

४१५६. स्तोत्रसंग्रह........ । पत्र सं० १० । ग्रा० १२×७३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

१. पद्मावतीस्तोत्र —	× ।
२. कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र —	× ।
३. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा एवं स्तोत्र —	लक्ष्मीसेन
४. पार्श्वनाथपूजा —	× ।
५. लक्ष्मीस्तोत्र —	पद्मप्रभदेव

४१५७. स्तोत्रसंग्रह........ । पत्र सं० २३ । ग्रा० ८१/२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३८५ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं— १. एकीभाव, २. विषापहार, ३. स्वयंभूस्तोत्र ।

४१५८. स्तोत्रसंग्रह........ । पत्र सं० ४६ । ग्रा० ८१/२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १७७६ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३१२ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है । निम्न संग्रह हैं—

१. निर्वाणकाण्डभाषा—	×	हिंदी
२. श्रीपालस्तुति	×	संस्कृत
३. पद्मावतीस्तवन मंत्र सहित	×	

४. एकीभावस्तोत्र, ५. ज्वालामालिनी, ६. जिनपञ्जरस्तोत्र, ७. लक्ष्मीस्तोत्र.

८. पार्श्वनाथस्तोत्र

९. वीतरागस्तोत्र— पद्मनंदि संस्कृत

१०. वर्द्धमानस्तोत्र × " अपूर्ण

११. चौंसठयोगिनीस्तोत्र, १२ शनिस्तोत्र, १३. शारदाष्टक, १४. त्रिकालचौबीसीनाम

१५. पद, १६. विनती (ब्रह्मजिनदास), १७. माता के सोलहस्वप्न, १८. परमानन्दस्तवन।

सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी।

४१५९. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २९। आ० ८×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६०। अ भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र है।

१. जिनदर्शनस्तुति, २. ऋषिमंडलस्तोत्र (गौतम गणधर), ३. लघुशान्तिकमन्त्र

४. उपसर्गहरस्तोत्र, ५. निरञ्जनस्तोत्र।

४१६०. स्तोत्रपाठसंग्रह……। पत्र सं० २२१। आ० ११३⁄४×५ इंच। भाषा–संस्कृत, प्राकृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २४०। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० १७, १८, १९ नही हैं। नित्य नैमित्तिक स्तोत्र पाठो का संग्रह है।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २७९। आ० १०×४३⁄४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ९७। अ भण्डार।

विशेष—२४८, २४९वां पत्र नहीं है। साधारण पूजापाठ तथा स्तुति संग्रह है।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १५३। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०९७। अ भण्डार।

४१६३. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १८। आ० ७१⁄२×६१⁄२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५३। अ भण्डार।

४१६४. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० ३५४। अ भण्डार।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ११। आ० ८३⁄४×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६०। अ भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

भगवतीस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, घण्टाकर्णमन्त्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह ...... । पत्र सं० ८२ । आ० ११३/४×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम स्तोत्र अपूर्ण है। कुछ स्तोत्रों की संस्कृत टीका भी साथ में दी गई है।

४१६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० २५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३३ । क भण्डार ।

४१६८. स्तोत्रपाठसंग्रह ......। पत्र सं० ५७ । आ० १३×६ इंच । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३१ । क भण्डार ।

विशेष—पाठों का संग्रह है।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत, प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है।

नामस्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	प्राकृत, संस्कृत
सामायिक पाठ	×	संस्कृत
श्रुतभक्ति	×	प्राकृत
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
सिद्धभक्ति तथा अन्य भक्ति संग्रह	—	प्राकृत
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
देवागमस्तोत्र	"	संस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	"
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"
भूपालचतुर्विंशतिका	भूपालकवि	"
महिम्नस्तवन	जयकीर्ति	"
समवशरण स्तोत्र	विष्णुसेन	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
महर्षि स्तवन	×	संस्कृत
ज्ञानांकुशस्तोत्र	×	"
चित्रबंधस्तोत्र	×	"
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभ देव	"
नेमिनाथ एकाक्षरीस्तोत्र	पं० शालि	"
लघु सामायिक	×	"
चतुर्विंशतिस्तवन	×	"
यमकाष्टक	भ० अमरकीर्ति	"
यमकबंध	×	"
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"
वर्द्धमानस्तोत्र	×	"
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	×	"
महावीराष्टक	भागचन्द	"
लघुसामायिक	×	"

४१७०. प्रति सं० २ । पत्र स० १२८ । ले० काल × । वे० सं० ८२८ । क भण्डार ।

विशेष—अधिकांश उक्त पाठों का ही संग्रह है ।

४१७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ८२९ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त पाठों के अतिरिक्त निम्नपाठ और है ।

वीरनाथस्तवन	×	संस्कृत
श्रीपार्श्वजिनेश्वरस्तोत्र	×	"

४१७२. स्तोत्रसंग्रह...... । पत्र सं० ११७ । आ० १२३/४×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	संस्कृत
सामायिक	×	"
भक्तिपाठसंग्रह	×	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	"

४१७३. स्तोत्रसंग्रह······ ······। पत्र सं० १० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नेमिनाथस्तोत्र सटीक	×	संस्कृत
द्वयक्षरस्तवन	×	"
स्वयंभूस्तोत्र	×	"
चन्द्रप्रभस्तोत्र	×	"

४१७४. स्तोत्रसंग्रह······ ······। पत्र सं० ८ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३६ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	"

४१७५. स्तोत्रसंग्रह······ ······। पत्र सं० २२ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

एकीभाव	वादिराज	संस्कृत
सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित	×	"
ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	"
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित	×	"
हनुमानस्तोत्र	×	"
ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"

४१७६. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १४ । आ० ७×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४४ माह सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २३७ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

ज्वालामालिनी, मुनीश्वरों की जयमाल, ऋषिमंडलस्तोत्र एवं नमस्कारस्तोत्र ।

४१७७. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २४ । आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३६ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

पद्मावतीस्तोत्र	×	संस्कृत	१ से १० पत्र
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	”	११ से २० पत्र
स्वर्णाकर्षणविधान	महीधर	”	२४

४१७८. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ८१ । आ० ७¾×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८११ । क भण्डार ।

४१७९. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २७ । आ० १०¾×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८९८ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

भक्तामर, एकीभाव, विषापहार, एवं भूपालचतुर्विंशतिका ।

४१८०. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ३ से ५९ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८९७ । क भण्डार ।

४१८१. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २३ से १४१ । आ० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८९६ क भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पंचमंगल	रूपचंद	हिन्दी	अपूर्ण
कलशविधि	×	संस्कृत	
देवसिद्धपूजा	×	”	
शान्तिपाठ	×	”	
जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र	×	हिन्दी	

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूधरदास	"
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"
तेरहकाठिया	बनारसीदास	"
चैत्यबंदना	×	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पंचकल्याणपूजा	×	"

४१८७. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ५१ । आ० ११×७½ इंच । भाषा–संस्कृत-हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्ण
सामायिकपाठ	पं० महाचन्द्र	"	पूर्ण
सामायिकपाठ	×	"	अपूर्ण
पंचपरमेष्ठीगुण	×	"	पूर्ण
लघुसामायिक	×	संस्कृत	"
बारहभावना	नवलकवि	हिन्दी	"
द्रव्यसंग्रहभाषा	×	"	अपूर्ण
निर्वाणकाण्डभाषा	×	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विंशतिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	"
चौबीसदंडक	दौलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	×	"	अपूर्ण
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	पूर्ण
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	"
स्वयंभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	अपूर्ण
आलोचनापाठ	×	"	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी	पूर्ण
संबोधपंचासिका	×	"	"

४१८३. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ५१ । आ० १०½×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ८९४ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

नवग्रहस्तोत्र, योगिनीस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तीर्थङ्करस्तोत्र, सामायिकपाठ आदि है ।

४१८४. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० २५ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८९३ । क भण्डार ।

विशेष—भक्तामर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४१८५. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० २९ । आ० ८½×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८९२ । क भण्डार ।

४१८६. स्तोत्र—आचार्य जसवंत । पत्र सं० १ । आ० ९½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८९१ । क भण्डार ।

४१८७. स्तोत्रपूजासंग्रह........। पत्र सं० ९ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८९० । क भण्डार ।

४१८८. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० १३ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८९ । क भण्डार ।

४१८९. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ७ से ४७ । आ० ६×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८८ । क भण्डार ।

४१९०. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ९ से १६ । आ० ११½×५¾ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२९ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है ।

एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"

प्रति प्राचीन है । संस्कृत टीका सहित हैं ।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २ से ४८। आ० ८×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३०। च भण्डार।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १४। आ० ८½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४३१। च भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

१.	सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत
२.	कल्याणमन्दिर	कुमुदचन्द्राचार्य	"
३	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"

४१६३. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ७ से १७। आ० ११×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३२। च भण्डार।

४१६४. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २४। आ० १२×७½ इंच। भाषा-हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६३। ट भण्डार।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ५ से ३५। आ० ६×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८७५। अपूर्ण। वे० सं० १८७२। ट भण्डार।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १५ से ३४। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३३। च भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

सामायिक बड़ा	×	संस्कृत	अपूर्ण
सामायिक लघु	×	"	पूर्ण
सहस्रनाम लघु	×	"	"
सहस्रनाम बड़ा	×	"	"
ऋषिमंडलस्तोत्र	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	×	"	"
नवकारमन्त्र	×	"	"
वृहद्नवकार	×	अपभ्रंश	"
वीतरागस्तोत्र	पद्मनंदि	संस्कृत	"
जिनपंजरस्तोत्र	×	"	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	"
वज्रपंजरस्तोत्र	×	"	"
हनुमानस्तोत्र	×	हिन्दी	"
षडादर्शन	×	संस्कृत	"
आराधना	×	प्राकृत	"

४१९७. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ४। आ० ११×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। छ भण्डार।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

एकीभाव, भूपालचौबीसी, विषापहार, नेमिगीत भूधरकृत हिन्दी मे है।

४१९८. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० ७। आ० ४½×३½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत	
तीर्थावलीस्तोत्र	×	"	

विशेष—ज्योतिषी देवो में स्थित जिनचैत्यो की स्तुति है।

चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	संस्कृत	
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभ	"	अपूर्ण

श्री रुद्रपल्लीयवरेण्य गच्छः देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः।
वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो जियादसौ कमलप्रभाख्यः ॥

४१९९. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं० १४। आ० ४½×३½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत
नेमिस्तोत्र	×	"
पद्मावतीस्तोत्र	×	"

४२०० स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १३ । आ० ११x७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमन्दिर, भक्तामर तथा वर्द्धमानस्तोत्र ।

४२०१. स्तोत्रपूजासंग्रह……। पत्र सं० ११९ । आ० ६½x५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १४१ । अ भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है । प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है ।

४२०२. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ३१ । आ० ४½x६½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४२०३. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ११ से २२७ । आ० ६½x५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २७१ । अ भण्डार ।

विशेष—गुटका के रूप में है तथा प्राचीन है ।

४२०४. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १४ । आ० ६x६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २७७ । अ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र आदि हैं ।

४२०५. स्तोत्रत्रय……। पत्र सं० २१ । आ० १०x४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । अ भण्डार ।

विशेष—कल्याणमन्दिर, भक्तामर एवं एकीभाव स्तोत्र हैं ।

४२०६. स्वयंभूस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० १२½x५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८४० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विंशति स्तोत्र भी है ।

४२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० ४३५ । च भण्डार ।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४३६) और हैं ।

४२०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल X । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

४२०९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । व्य भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिये गये हैं ।

४२१०. स्वयंभूस्तोत्रटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४३ । आ० ११X६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल सं० १८६१ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुआ है ।

इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ८३२, ८३९) और हैं ।

४२११. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १९१५ पौष बुदी १३ । वे० सं० ८४ । अ भण्डार ।

विशेष—तनुसुखलाल पांड्या चौधरी चाटसू के मार्फत श्रीलाल पाटनी से प्रतिलिपि कराई ।

४२१२. स्वयंभूस्तोत्रटीका……। पत्र सं० ३२ । आ० १०X४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८८४ । अ भण्डार ।



पद भजन गीत आदि

४२१३. अनाथानीचोढाल्या—खेम। पत्र सं० २। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१२१। अ भण्डार।

विशेष—राजा श्रेणिक ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको अनाथ कहा था उसी पर चार ढालों में प्रार्थना की गयी है।

४२१४. अनाथीमुनि सज्झाय……। पत्र सं० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। लि० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७१। अ भण्डार।

४२१५. अर्हंनकचौढालियागीत—विमल विनय (विनयरंग)……। पत्र सं० ३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल १६८१ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ८४५। अ भण्डार।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ—

वर्द्धमान चउवीसमउ जिनवंदी जगदीस।
अरहंनक मुनिवर चरीय भणि सुचरीय जगीस ॥१॥

चौपई—

तु जगीसचरी मनमाहे, कहिसि संबंध उछाहे।
अरहंनकि जिमव्रत लीधउ, जिम ते तारी वलि कीधउ ॥२॥

निज मात……णइ उपदेसइ, वलिव्रत आदरीय विसेसइ।
पहुतउ ते देव विमानि, सुणिज्यो भवियण तिम कानि ॥३॥

दोहा—

नगरा नगरी जाणीयइ, अलकापुरि अवतार।
वसइ तिहां विवहारीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥

चौपई—

सुविचार सुभद्रा घरणी……………………।
तसु नंदन रूप निधान, अरहंनक नाम प्रधान ॥५॥

अन्तिम—

च्यार सरण चित चीतवइ जी, परिहरि च्यारि कषाय।
दोष सबइ मन उचरइ जी, शल्य रहित निरमाय ॥६६॥

असनपान खादम बली जी सादिम सेवे निहार ।
इंण भाव ए सवि परिहरी जी, मन समरइ नवकार ॥५६॥

सिला संथारउ आदरया जी, सूर किरण तनि ताप ।
सहइ परीसह साहसी जी, दे.दइ भवना पाप ॥५७॥

समतारस माहि भीलतउ जी, मनेधरतउ सुभ ध्यान ।
काल करी तिणी पामीयउ जी, सुंदर देव विमान ॥५८॥

सुरग तणा सुख भोगवी जी, परमाणंद उलास ।
तिहां थी चवि वलि पामेस्यइ जी, अनुक्रमि सिवपुर वास ॥५६॥

अरहंनक ि.मते धरइ जी, अंत समय सुभझाण ।
जनम सफल करि ते सही जी, पामइ परम कल्याण ॥६०॥

श्री खरतर गच्छ दीपता जी, श्री जिनचंद मुणिंद ।
जयवंता जग जाणीयइ जी, दरसण परमाणंद ॥६१॥

श्री गुण सेखर गुण निलउ जी, वाचक श्री नयरंग ।
तासु सीस भावइ भणइ जी, विमलविनय मतिरंग ॥६२॥

ए संबंध सुहायउ जी, जे गावइ नर नारि ।
ते पामइ सुख संपदा जी, दिन दिन जय जयकार ॥६३॥

इति अरहंनक चउढालियागीतम् समाप्तम् ॥

संवत् १६८१ वर्षे आसु सुदी १४ दिने बुधवारे पंडित श्री हर्षसिंहगणिशिष्यहर्षकीत्तिगणिशिष्यराम पद्मारंगम् नना लेखि । श्री गुरुवचनगरे ।

४२१६. आदिजिनवरस्तुति—कमलकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा—गुजराती । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७४ । ट भण्डार ।

विशेष—दो गीत हे दोनों ही के कर्त्ता कमलकीर्त्ति हैं ।

४२१७. आदिनाथगीत—मुनिहेमसिद्ध । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल सं० १६३६ । ले० काल × । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—भाषा पर गुजराती का प्रभाव है ।

४२१८. आदिनाथ सज्झाय·········। पत्र सं० १ । आ० ६½×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० २१६६ । अ भण्डार ।

४२१९. आदीश्वरविज्ञप्ति……। पत्र सं० १। आ० ६३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-गीत। र० काल सं० १५६२। ले० काल सं० १७४१ वैशाख सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पद्य नही हैं। कुल ४५ पद्य रचना में हैं।

अन्तिम पद्य—

पनरवासट्ठि जिनसूर अविचल पद पायो।

बीनतडी कुलट पूरणीयां प्रामुमल बहि दयाम दिहाडै मनि वैराते इम भणींया ॥४५॥

४२२०. कृष्णबालविलास—श्री किशनलाल। पत्र सं० १५। आ० ८×५३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२८। क भण्डार।

४२२१. गुरुस्तवन—भूधरदास। पत्र सं० ३। आ० ८३/४×६३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४५। क भण्डार।

४२२२. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तवन—हेमविमलसूरि शिष्य आणंद। पत्र सं० २। आ० ८३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल सं० १५६२। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८८३। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४२२३ चम्पाशतक—चम्पाबाई। पत्र सं० २४। आ० १२×८३/४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२३। छ भण्डार।

विशेष—एक प्रति और है। चंपाबाई ने ६६ वर्ष की उम्र में रुग्णावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव स रोग दूर होगया था। यह प्यारेलाल अलीगढ (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी।

४२२४. चेलना सज्झाय—समयसुन्दर। पत्र सं० १। आ० ६१/२×४१/२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल सं० १८९२ माह सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० २१७५। अ भण्डार।

४२२५. चैत्यपरिपाटी……। पत्र सं० १। आ० ११३/४×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२५५। अ भण्डार।

४२२६. चैत्यवंदना ……। पत्र सं० ३। आ० ६×८३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१५। छ भण्डार।

४२२७. चौबीसी जिनस्तुति—जिमचंद। पत्र सं० ६। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। ले० काल सं० १७६४ चैत्र बुदी १। पूर्ण। वे० सं० १८४। क भण्डार।

४२२८. चौबीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय……। पत्र सं० १। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१९०। अ भण्डार।

४२२९. चौबीसतीर्थङ्करस्तुति—ब्रह्मदेव। पत्र सं० १७। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९४१। अ भण्डार।

विशेष—रतनचन्द पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४२३०. चौबीसीस्तुति……। पत्र सं० १५। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल सं० १९००। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३६। छ भण्डार।

४२३१. चौवीसतीर्थङ्करवर्णन……। पत्र सं० ११। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५८३। ट भण्डार।

४२३२. चौबीसतीर्थङ्करस्तवन—लूणाकरण कासलीवाल। पत्र सं० ८। आ० ९×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५७। च भण्डार।

४२३३. जखड़ी—रामकृष्ण। पत्र सं० ५। आ० १०½×६½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९८। क भण्डार।

४२३४. जम्बूकुमार सज्झाय……। पत्र सं० १। आ० ९½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१३९। अ भण्डार।

४२३५. जयपुर के मंदिरों की वंदना—स्वरूपचंद। पत्र सं० १०। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल सं० १९१०। ले० काल सं० १९४७। पूर्ण। वे० सं० २७८। झ भण्डार।

४२३६. जिणभक्ति—हर्षकीर्त्ति। पत्र सं० १। आ० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४३। अ भण्डार।

४२३७. जिनपच्चीसी व अन्य संग्रह……। पत्र सं० ४। आ० ८½×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०४। क भण्डार।

४२३८. ज्ञानपञ्चमीस्तवन—समयसुन्दर। पत्र सं० १। आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल सं० १७८५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १८८५। अ भण्डार।

४२३९. झखड़ी श्रीमन्दिरजीकी……। पत्र सं० ४। आ० ७½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। क भण्डार।

४२४०. झांझरियानुचोढाल्या……। पत्र सं० २। आ० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२५६। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ— सीता रा मनि अंकर ढाल—

रमती चरणे सीस नमावी, प्रणमी सतगुरु पाया रे।
फांझरिया ऋषि ना गुण गाता, उलट अाग सवाया रे॥
अवियण वंदो मुनि फांझरिया, संसार समुद्र जे तरियो रे।
सबल साह्या परिसा मन सुधे, शील रतन करि भरियो रे॥२॥
पइठतपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राणी रे।
तस सुत मदन भरम वालुडो, किरत जास कहाणी रे॥

मोजी ढाल अपूर्ण है। फांझरिया मुनि का वर्णन है।

४२४१. णमोकारपचीसी—ऋषि ठाकुरसी। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १८२८ आषाढ सुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७८। अ भण्डार।

४२४२. तमाखू की जयमाल—आणंदमुनि। पत्र सं० १। आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७०। अ भण्डार।

४२४३. दर्शनपाठ—बुधजन। पत्र सं० ७। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८८। क भण्डार।

४२४४. दर्शनपाटस्तुति………। पत्र सं० ८। आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९२७। ट भण्डार।

४२४५. देवकी की ढाल—लूणकरण कासलीवाल। पत्र सं० ४। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-गीत। र० काल ×। ले० काल सं० १८८५ वैशाख बुदी १४। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० १२४६। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ दोहा—

रह नेमा नामे हुवा लक्षण सरव संजोग।
आठ सहस लक्षण धरो गोमकार गल जोग॥१॥
सहत अठारा साध जी अजाया चालीस हजार।
मोटार मुनिवर विचरंज्या रा भार॥२॥
....।
वसुदेव राजा डाकरा देवकीरा अंगजात॥३॥
नमोस छ देव का तणा वा राजा कै उरणहार।
नाकी सुख श्री नेम का आवक संभलाई॥४॥

सावणों सुध आठरी देस मछतमी नाम ।
नेमेरआवण स्वामी जी करावो जीव जीव ॥५॥

मध्यभाग— देव श्री तणाइ नंदण वांदवारे उभी श्री नेम जिणेसवार ।
मन्वणा साधा न देख मर कारवालागा इम मरदीतार ॥
साध्या साम्हो देवकी देखी नर उभा रहा छ नजर नीहाल रे ।
कससो····टाल्ल काव वालाणीर छुटी छे दुद तणीए धार रे ॥२॥
ममसन बाग सोहावडो उलस्यो र फल में फुली छे जेहना कायरे ।
बलाया माहा तो माव रही रे देख तो लोवन तीरपत न थायरे ॥३॥
दीवकी तो सावान छ दिणा करी र पाछा आइ छ माहीलो माहारे ।
सोच फिकर देवकीरे ज्योर मोहतणी ए वातरे ॥४॥
सासो तो भाज्यो श्री नेमजीरे एतो छहु थारा बालरे ।
आंख्या माहो आसुं पडरे जाणे मां त्यारे टुटा मालरे ॥५॥

अन्तिम— मरजी तांव छोडो सगला नगर मझारो,
मुहमांगा दीजे घणारे मणि माणक भंडार ।
मणि माणक बहु दीधा देवकी मनरा इछा काइ न राखी ॥
हूणकरण ए ढाल ज भाषा तीज चोथ इसही ए साखी ए ॥६॥

इति श्री देवकी की ढाल स० ॥०॥ रूपमजी ॥

इसखत चुनीलाल छावडा चेतराम ठाकरका बेटा छोटाका छे बांच पढे ज्यासू जथा जोग बाचज्यो । मिती देसाख सुदी १४ सं० १८८५ ।

देवकी की ढाल— रतनचन्द्रकृत और है । प्रति गल गई है । कई अंश नष्ट होगये है । पढने मे नही आता है ।

अन्तिम— गुण गाया जी मारवाड मझार कर जोडि रतनचंद भणे ॥१०॥

४२४६. **द्वीपायनढाल—गुणसागरसूरि** । पत्र सं० १ । आ० १०३/४×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी गुजराती । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । क भण्डार ।

४२४७. **नेमिनाथ के नवमङ्गल—विनोदीलाल** । पत्र सं० १ । आ० १६१/२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–स्तुति । र० काल सं० १७७४ । ले० काल सं० १८५२ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।

विशेष—बीमू में प्रतिलिपि हुई थी । जन्मपत्री की तरह गोल लिखा हुआ है ।

४२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१४३ । ट भण्डार ।

विशेष—लिख्या मंगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपखाना ।

१० पत्र से आगे नेमिराजुलपचीसी विनोदीलाल कृत भी है ।

४२४६. नागश्री सज्झाय—विनयचंद । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२४८ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल १रा पत्र है ।

अन्तिम—

आपण बांधो आप भोगवै कोण गुरु कुण चेला ।
संजम लेइ गई स्वर्ग पांचमें अजुही नावी न बेरारे ।।१५।। आ०।।
महा विदेह मुकते जासी मोटी गर्भ वसेरा रे ।
विनयचंद जिनधर्म अराधो सब दुख जान परेरारे ।।१६।।
इति नागश्री सज्झाय कुचामणे लिखिते ।

४२५०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तुति । र० काल सं० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । झ भण्डार ।

४२५१. नेमिगीत—पासचन्द । पत्र सं० १ । आ० १२३/४×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४७ । अ भण्डार ।

४२५२. नेमिराजमतीकी घोड़ी········। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७७ । अ भण्डार ।

४२५३. नेमिराजमती गीत—छीतरमल । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । अ भण्डार ।

४२५४. नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र सं० १ । आ० ८३/४×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । अ भण्डार ।

सुरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार ।
आलइ जन्म महारिख ओरे, कांइ करघारै मन मांहि विचार ।।१।।
मति राचो रे रंमणी ने रंग क लेबोरे जीण वाणी ।
तुम रमज्यो रे संजम न संगक चेतो रे चित प्राणी ।।२।।
अरिहंत देव अराधाइयोजी, रै गुर मरुपा भी साथ ।
धर्म केवलणो भाखीउ, ए समकित वै रतन जिम लाद्धरु ।।३।।

पहिलो समकित सेवीय रे, जे छे धर्मनो मूल।
संजम सकित बाहिरो, जिए भाख्यो रे तुस खंडए तुलिक ॥४॥

तहत करीन सरवहो रे, जै भाखो जलनाथ।
पाचेइ आस्रव परिहरो, जिम मिलीइ रे सिवपुरनो साथक ॥५॥

जीव सहूजी जीवेवा वांछिरे, मरए न वांछे कोइ।
अपस राखा लैखवा, तस थावर रे हए जो मत कोइ ॥६॥

चोरी लीजे पर तणी रे, तिए तौ लागे पाप।
धन कंचए किम् चोरीय, जिए बांधइ रे भव भवना संताप क ॥७॥

अजस अकीरत ए भव रे, पेरे भव दुख अनेक।
कुड कहता पामीइ, काइ आणी रे मन माहि विवेक ॥८॥

महिला संग धुइ हर, नव लख सम जुत।
कुए सुख कारए ए तला, किम काजे रे हिस्या मतिवत ॥९॥

पुत्र कलत्र घर हाट भरि, ममता काजे फोक।
जु परिगह डाग माहि छै ते छाडरे गया बहूना लोक ॥१०॥

मात पिता बंधव सुतरे, पुत्र कलत्र परवार।
सवार्थया सहू को सगा, कोइ पर भव रे नही राखणहार ॥११॥

अंजुल जल नीपरै रे, खिए रे तुटइ आउ।
जाइ ते बेला नही रे वाहुडि जरा वालरे यौवन ने धाड ॥१२॥

व्याधि जरा जब लग नहीं रे, तब लग धर्म संभाल।
धारा हर धए बरसते, कोइ समरथि रे बाधैगोपाल क ॥१३॥

अलप दीवस को पाहुणा रे, सहू कोइए संसार।
एक दिन उठी जाइवउ, कवए जाएइ रे किए हो अवतारक ॥१५॥

कोध मान माया तजो रे, लोभ मेधरज्यो लीगारे।
समतारस भवपुरीय बली दौहिलो रे नर अवतारक ॥१६॥

आरंभ छाडा अन्तमा रे पीउ संजम रसपुरि।
सिद्ध बधू से सहू को बरो, इम बोलै सखज देवसुरक ॥१७॥

॥ इति वीर ॥

बाल वूमचारही जिण वाइसमा ।।
समदविजइजी रा नंद हो, वैरागी माहरौ मन लागो हो नेम जिणंद सू
जादव कुल केरा चंद हो ।। बाल० ।।१।।
देव घणा छइ हौ पुम जीदोवता (देवता)
तेतौ न चढइ चेत हो, कैइक रे चेत म्हामत हो ।। बाल० ।।२।।
कैइक दोस करइ नर नारनइ मांमइ तेलसिंदूर हर हो ।
वाके इक बन वासै वासै वास, कष्ट बनवासो करइ ।
(कष्ट) कसट सहइ भरपुर हो ।।३।।
तु नर मोह्यां रे नर माया तणी, तु जग दीनदयाल हो ।
नोजोवनवती ए सुंदरी तजीउ राजुल नार हो ।।४।।
राजल के नारि५ले उद्धरी पहुतीउ मुकति मझार ।
हीरानंद संवेग साहिबा, जी वी नव म्हारी बीनतेडा अवधारि हो ।।५।।
।। इति नेमि गीत ।।

४२५५. नेमिराजुलसज्झाय.........। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल सं० १८५१ चैत्र ....। ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८४ । अ भण्डार ।

४२५६. पञ्चपरमेष्ठीस्तवन—जिनवल्लभ सूरि । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

४२५७. पद—ऋषि शिवलाल । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरा पद निम्न है—

या जग में को तेरा बंधे ।।या०।।
जैसे पंछी बीरख बसेरा, बीछरै होय सवेरा ।।१।।
कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती में गाडा ।
अंत समै चलण की बेला, ज्यौं गाडा राह्यो खाडारे ।।२।।
ऊंचा २ महल बणाये, जीव कह इहा रैणा ।
चल गया हंस पडी रही काया, लेय कलेवर देणा ।।३।।
मात पिता सु पतनी रे भारी, तीण धन जोवन खाया ।
उड गया हँस काया का मंडण, कांडो प्रेत पराया ।।४।।

करी कमाइ इण भो भ्राया, उलटी पूञ्जी खोइ ।
मेरी २ करकै जनम गमाया, चलता संक न होइ ॥५॥

पाप की पोट घणी सिर लीनी, हे मूरख भोरा ।
हलकी पोट करी तु चाहै, तो होय कुटुम्बसुं न्यारा ॥६॥

मात पिता सुत साजन मेरा, मेरा धन परिवारो ।
मेरा २ पडा पुकारै चलता, नही कछु लारो ॥७॥

जो तेरा तेरे संग न चलता, भेद न जाका पाया ।
मोह बस पदारथ बीराणी, हीरा जनम गमाया ॥८॥

आंख्या देखत केते चल गए जगमैं, आखर आपुही चलणा ।
औसर बीता बहु पछतावे, माखी जु हाथ मसलणा ॥९॥

आज करु धरम काल करु, याही व नीयत धारे ।
काल अचांणे घाटी पकडी, जब क्या कारज सारे ॥१०॥

ए जोगवाइ पाइ दुहेली, फेर न वारू वारो ।
हीमत होय तो ढील न कीजे, कूद पडो निरधारो ॥११॥

सीह मुखे जीम मीरगलो आयो, फेर नइ छूटण हारो ।
इण दीसदंते मरण मुखे जीव, पाप करी निरधारो ॥१२॥

सुगर सुदेव धरम कु सेवो, लेवो जीन का सरना ।
टीष सीवलाल कहे भो प्राणी, आतम कारज करणा ॥१३॥

॥इति॥

४२५८. पदसंग्रह········। पत्र सं० ५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२७ । क भण्डार ।

४२५९. पदसंग्रह········। पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १२७३ । अ भण्डार ।

विशेष—त्रिभुवन साहब सांवला········।

इसी भण्डार में २ पदसंग्रह (वे० सं० १११७, २१३०) और हैं ।

४२६०. पदसंग्रह········। पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ११ पदसंग्रह (वे० सं० ४०४, ४०६ से ४१५) तक और हैं ।

४२६१. पदसंग्रह········। पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६२५ । च भण्डार ।

४२६२. पदसंग्रह……। पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । ऋ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २७ पदसंग्रह (वे० सं० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ से ६ तक, ३११ से ३२४) और हैं।

नोट—वे० सं० ३१८वें मे जयपुर की राजवंशावलि भी है।

४२६३. पदसंग्रह……। पत्र सं० १४। ले० काल × । वे० सं० १७५६ । ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ पदसंग्रह (वे० सं० १७१२, १७५३, १७५८) और हैं।

नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूधरदास, दौलतराम आदि कवियों के पद हैं।

४२६४. पदसंग्रह……। पत्र सं० ३। आ० १०×४३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

१. मोहि तारो सामि भव सिंधु तै ।

२. राजुल कहै तुमें वेग सिधावे ।

३. सिद्धचक्र वंदो रे जयकारी ।

४. चरम जिणेसर जिहो साहिबा

चरम चरम उपगार वाल्हेसर ॥

४२६५. पदसंग्रह……। पत्र सं० १२ से २५ । आ० १२×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००८ । ट भण्डार।

विशेष—भागचन्द, नयनसुख, द्यानत, जगतराम, जादूराम, जोधा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल बखतराम, झांझूराम, खेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवणदास, विश्वभूषण, मनोहर आदि कवियों के पद हैं।

४२६६. पदसंग्रह—उत्तमचन्द। पत्र सं० १८। आ० ६×६३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५२८ । ट भण्डार।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोंका संग्रह है। पदों के प्रारम्भ में रागरागनियों के नाम भी दिये हैं।

४२६७. पदसंग्रह—ब्र० कपूरचन्द। पत्र सं० १। आ० ११३/४×५३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४३ । अ भण्डार।

४२६८. पद—कैशरगुलाब। पत्र सं० १। आ० ७×४१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-गीत। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४१ । अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ–

श्रीधर नन्दन नयनानन्दन सांवादेव हमारो जी ।

दिलजानी जिनवर प्यारा वो

दिल दे बीच बसत है निसदिन, कबहू न होवत न्यारा वो ॥

४२६९. पदसंग्रह—चैनसुख । पत्र सं० २ । आ० २४×३½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५७ । ट भण्डार ।

४२७०. पदसंग्रह—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ५२ । आ० ११×५½ इंच । भाषा–हिन्दी विषय–पद । र० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १० । ले० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम २ पत्रों में विषय सूची दे रखी है । लगभग २०० पदो का संग्रह है ।

४२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८७४ । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६० । ट भण्डार ।

४२७३. पदसंग्रह—देवाब्रह्म । पत्र सं० ४४ । आ० ६×६½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद भजन । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० १७५१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । विभिन्न राग रागनियो मे पद दिये हुये है । प्रथम पत्र पर लिखा है– श्री देवसागरजी सं० १८६३ का बैशाख सुदी १२ । मुकाम बसवै नैणचंद ।

४२७४. पदसंग्रह—दौलतराम । पत्र सं० २० । आ० ११×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२६ । क भण्डार ।

४२७५. पदसंग्रह—बुधजन । पत्र सं० २६ से ६२ । आ० ११½×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद भजन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ । क भण्डार ।

४२७६. पदसंग्रह—भागचन्द । पत्र सं० २५ । आ० ११×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । क भण्डार ।

४२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । क भण्डार ।

विशेष—थोड़े पदों का संग्रह है ।

४२७८. पद—मलूकचंद । पत्र सं० १ । आ० ६×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

पंच सखी मिल मोहियो जीवा,

काहा पावैगो तु धाम हो जीवा ।

समझो स्युंत राज ।।

४२७९. पदसंग्रह—मंगलचंद । पत्र सं० १० । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३४ । क भण्डार ।

४२८०. पदसंग्रह—माणिकचंद । पत्र सं० ५४ । आ० ११×७ इंच । भाषा–हिंन्दी । विषय–पद व भजन । र० काल × । ले० काल सं० १९५५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४३० । क भण्डार ।

४२८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३. पदसंग्रह—सेवक । पत्र सं० १ । आ० ८¾×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल २ पद है ।

४२८४. पदसंग्रह—हीराचन्द । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४३५, ४३६) और हैं ।

४२८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

४२८६. पद व स्तोत्रसंग्रह········ । पत्र सं० ८८ । आ० १२¾×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	८
सुगुरुशतक	जिनदास	”	१०
जिनसहस्रमङ्गल	सेवगराम	”	४
जिनगुणपच्चीसी	”	”	—
गुरुओं की स्तुति	भूधरदास	”	—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	हिन्दी	१४
वज्रनाभि चक्रवर्त्ति की भावना	"	"	–
पदसंग्रह	माणिकचन्द	"	४
तेरहपंथपच्चीसी	"	"	११
हुंडावसर्पिणीकालदोष	"	"	"
चौबीस दंडक	दौलतराम	"	१२
दशबोलपच्चीसी	द्यानतराय	"	१७

४२८७. पार्श्वजिनगीत—छाजू (समयसुन्दर के शिष्य)। पत्र सं० १। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५८। अ भण्डार।

४२८८. पार्श्वनाथ की निशानी—जिनहर्ष। पत्र सं० ३। आ० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२४७। अ भण्डार।

विशेष—२रे पत्र से–

प्रारम्भ— सुख संपति दायक सुरनर नायक परतिख पास जिणंदा है।
जाकी छवि कांति अनोपम ओपम दिपति जाण दिणंदा है।।

अन्तिम— तिहां सिधादावास तिहा रे वासा दे सेवक विलवंदा है।
घघर निसाणी पास बखाणी गुण जिनहर्ष गावंदा है।।

प्रारम्भ के पत्र पर क्रोध, मान, माया, लोभ की सज्झाय दी हैं।

४२८९. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० २१३३। अ भण्डार।

४२९०. पार्श्वनाथचौपई—पं० लाखो। पत्र सं० १७। आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल सं० १७३४ कार्तिक सुदी। ले० काल सं० १७९३ ज्येष्ठ बुदी २। पूर्ण। वे० सं० १११८। ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति–

संवत् सतरासै चौतीस, कार्त्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस।
नौरंग तप दिल्ली सुलितान, सबै नृपति वहै सिरि आण ।।२६६।।
नागर चाल देश सुभ ठाम, नगर वराहटो उत्तम धाम।
सब श्रावक पूजा जिनधर्म, करै भक्ति पावै बहु शर्म ।।२६७।।

कर्मक्षय कारण सुभहेत, पार्श्वनाथ चौपई सचेत ।
पंडित लालो लाख सभाव, मेवो धर्म लखो सुभथान ॥२६८॥

आचार्य श्री महेन्द्रकीर्ति पार्श्वनाथ चौपई संपूर्ण ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य पांडे दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति के शासन में दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर मे प्रतिलिपि की थी ।

४२६१. पार्श्वनाथ जीरोछन्दमस्तरी·······। पत्र सं० २ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १७८१ बैशाख बुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १८६५ । अ भण्डार ।

४२६२. पार्श्वनाथस्तवन·······। पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक पार्श्वनाथ स्तवन और है ।

४२६३ पार्श्वनाथस्तोत्र······· । पत्र सं० २ । आ० ८¾×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ भण्डार ।

४२६४. बन्दनाजखड़ी—विहारीदास । पत्र सं० ४ । आ० ८×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१३ । च भण्डार ।

४२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । ख भण्डार ।

४२६६. बन्दनाजखड़ी—बुधजन । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । अ भण्डार ।

४२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५२४ । क भण्डार ।

४२६८. बारहखड़ी एवं पद·······। पत्र सं० २२ । आ० ५¾×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५ । झ भण्डार ।

४२६६. बाहुबली सज्झाय—विमलकीर्त्ति । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२४५ ।

विशेष—श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सज्झाय और है ।

४३००. भक्तिपाठ—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १७६ । आ० १२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न भक्तियां हैं ।

स्वाध्यायपाठ, सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति, आचार्यभक्ति, योगभक्ति, वीरभक्ति, निर्वाणभक्ति और नंदीश्वरभक्ति ।

४३०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । वे० सं० ५४७ । क भण्डार ।

४३०२. भक्तिपाठ……। पत्र सं० ६० । आ० ११$\frac{3}{4}$×७$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । क भण्डार ।

४३०३ भजनसंग्रह—नयन कवि । पत्र सं० ४१ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

४३०४. मरुदेवी की सज्झाय—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० १ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल सं० १८०० कार्तिक बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८७ । अ भण्डार ।

४३०५. महावीरजी का चौढाल्या—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० ४ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८३ । अ भण्डार ।

४३०६. मुनिसुव्रतविनती—देवाब्रह्म । पत्र सं० १ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१७ । अ भण्डार ।

४३०७. राजारानी सज्झाय ……। पत्र सं० १ । आ० ६$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६६ । अ भण्डार ।

४३०८. रांकपुरास्तवन ……। पत्र सं० १ । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६३ । अ भण्डार ।

विशेष—रांकपुरा ग्राम में रचित आदिनाथ की स्तुति है ।

४३०९. विजयकुमार सज्झाय—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वे० सं० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेष—कोटा के रामपुरा में ग्रन्थ रचना हुई । पत्र ४ में आगे स्थूलभद्र सज्झाय हिन्दी में और है । जिसका र० काल सं० १८६४ कार्तिक सुदी १५ है ।

४३१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २१८६ । अ भण्डार ।

४३११. विनतीसंग्रह……। पत्र सं० २ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० सं० २०१३ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४३१२. विनतीसंग्रह—ब्रह्मदेव । पत्र सं० ३८ । आ० ७½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३१ । अ भण्डार ।

विशेष—सासू बहू का झगड़ा भी है।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६३, १०४३) और हैं।

४३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १७३ । ख भण्डार ।

४३१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७८ । ङ भण्डार ।

४३१५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८४८ । वे० सं० १६३२ । ट भण्डार ।

४३१६. वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति...... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । क भण्डार ।

४३१७. शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० १ । आ० ९×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३४ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम—

पूज्य श्री श्री दौलतराय जी बहुगुण प्रगवाणी ।
रिषलाल जी करि जोडि वीनवै कर सिर बरवाणी ॥
सहर माधोपुर संवत् पंचावन कातीग सुदी जाणी ।
श्री सीतल जिन गुण गाया अति उलास आणी ॥ सीतल० ॥१२॥
॥ इति सीतलनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

४३१८. श्रेयांसस्तवन—विजयमानसूरि । पत्र सं० १ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४१ । अ भण्डार ।

४३१९. सतियोंकी सज्झाय—ऋषि लालमल्ल जी । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गुजराती । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४५ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न है—

इतीवक सतियारां गुण कह्या थे सुण सांभलो ।
उत्तम पराणी लालमल जी कहइ..............॥१४॥

चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन भी दिया है।

४३२०. सज्झाय (चौदह बोल)—ऋषि रायचन्द । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८१ । अ भण्डार ।

४३२१. सर्वार्थसिद्धिसज्झाय…… । पत्र सं० १ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पर्यूषण स्तुति भी है ।

४३२२. सरस्वतीअष्टक…… । पत्र सं० ३ । आ० ६×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । झ भण्डार ।

४३२३. साधुवंदना—माणिकचन्द । पत्र सं० १ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५४ । ट भण्डार ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय की साधुवंदना है । कुल २७ पद्य हैं ।

४३२४. साधुवंदना—पुण्यसागर । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–पुरानी हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३८ । अ भण्डार ।

४३२५. सारचौबीसीभाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४७० । आ० १२½×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय–स्तुति । र० काल सं० १९१८ कार्त्तिक सुदी २ । ले० काल सं० १९३९ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७८५ । क भण्डार ।

४३२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५०५ । ले० काल सं० १९४८ वैशाख सुदी ० । वे० सं० ७८६ । क भण्डार ।

४३२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७१ । ले० काल × । वे० सं० ८११ । क भण्डार ।

४३२८. सीताढाल…… । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—फतेहमल कृत चेतन ढाल भी है ।

४३२९. सोलहसतीसज्झाय…… । पत्र सं० १ । आ० १०×४¾ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१८ । अ भण्डार ।

४३३०. स्थूलभद्रसज्झाय…… । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८२ । अ भण्डार ।



पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. अंकुरोपणविधि—इन्द्रनंदि। पत्र सं० १५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठादि का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०। अ भण्डार।

विशेष—पत्र १४-१५ पर यंत्र है।

४३३२. अंकुरोपणविधि—पं० आशाधर। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठादि का विधान। र० काल १३वी शताब्दि। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१७। अ भण्डार।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है।

४३३३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। २रा पत्र नही है। संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है।

४३३४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ३१६। ञ भण्डार।

४३३५. अंकुरोपणविधि……। पत्र सं० २ से २७। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठादि का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १। ख भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है।

४३३६. अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल……। पत्र सं० २६। आ० १२×७¾ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल। पूर्ण। वे० सं० १। च भण्डार।

४३३७. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जिनदास। पत्र सं० २६। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६४। पूर्ण। वे० सं० १८५६। ट भण्डार।

४३३८. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत। पत्र सं० २१४। आ० १४×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८७०। ले० काल सं० १८७२। पूर्ण। वे० सं० ५०१। च भण्डार।

विशेष—गोपाचलदुर्ग (ग्वालियर) में प्रतिलिपि हुई थी।

४३३९. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख। पत्र सं० ४८। आ० १३×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १९३० फाल्गुन सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०५। अ भण्डार।

४३४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ७४। ले० काल ×। वे० सं० ४१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६) और है।

४३४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १९३३ । वे० सं० ५०३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०२) और है।

४३४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३९ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २०८ में ही) और हैं।

४३४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १९९ । झ भण्डार ।

विशेष—आषाढ सुदी ५ सं० १९६७ को यह ग्रन्थ रघुनाथ चांदवाड़ ने चढाया।

४३४४. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—मनरङ्गलाल । पत्र सं० ३० । आ० ११×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९३० माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

नाम 'मनरंग' धर्मरुचि सौं मो प्रति राखैं प्रीति ।
चोईसौं महाराज को पाठ रच्यौं जिन रीति ॥
प्रेरकता प्रतितास की रच्यो पाठ सुभनीत ।
ग्राम नग्र एकोहमा नाम भगवती सत ॥

रचना संवत् संबंधीपद्य—

विंशति इक शत शतक पै त्रिशतसंमत आनि ।
माघ शुक्ल त्रयोदशी पूर्ण पाठ महान ॥

४३४५. अक्षयनिधिपूजा........। पत्र सं० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ४० । क भण्डार ।

४३४६. अक्षयनिधिपूजा........। पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—जयमाल हिन्दी में हैं।

४३४७. अक्षयनिधिपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ५ । आ० ११½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७८३ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ४ । छ भण्डार ।

विशेष—श्री देव श्वेताम्बर जैन ने प्रतिलिपि की थी।

४३४८. अक्षयनिधिविधान........। पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५४७२) और है।

४३४६. अढाई (सार्द्धद्वय) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ६१। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५५०। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०४४) और है।

४३५०. प्रति सं० २। पत्र सं० १५१। ले० काल सं० १८२४ ज्येष्ठ सुदी १२। वे० सं० ७८७। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७८८) और है।

४३५१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८५। ले० काल सं० १८६२ माघ सुदी ३। वे० सं० ८४०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ५, ४१) और हैं।

४३५२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८८४ भादवा सुदी १। वे० सं० १११। छ भण्डार।

४३५३. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १८६०। वे० सं० ४२। ज भण्डार।

४३५४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८३। ले० काल ×। वे० सं० १२६। झ भण्डार।

विशेष—विजयराम पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४३५५. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण। पत्र सं० ११३। आ० १०½×७½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०२ बैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० सं० २। ख भण्डार।

४३५६. अढाईद्वीपपूजा......। पत्र सं० १२३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५०५। अ भण्डार।

विशेष—अंबावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३४) और है।

४३५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १२१। ले० काल सं० १८८०। वे० सं० २१४। ख भण्डार।

विशेष—महात्मा जोशी जीवण ने जोबनेर में प्रतिलिपि की थी।

४३५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी ४। वे० सं० १२३। घ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति [वे० सं० १२२] और है।

४३५९. अढाईद्वीपपूजा—डालूराम। पत्र सं० १६३। आ० १२½×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० चैत सुदी ६। ले० काल सं० १६३६ बैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८। क भण्डार।

विशेष—अमरचन्द दीवान के कहने से डालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा में पूजा रचना की।

४३६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ५०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां [वे० सं० ५०४, ५०५] और है ।

४३६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४४ । ले० काल x । वे० सं० २०१ । छ भण्डार ।

४३६२. अनन्तचतुर्दशीपूजा—शांतिदास । पत्र सं० १६ । आ० ८३/४×७ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४ । ख भण्डार ।

विशेष—व्रतोद्यापन विधि सहित है । यह पुस्तक गणेशजी गंगवाल ने बेगस्यों के मन्दिर में चढाई थी ।

४३६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । ञ भण्डार ।

विशेष—पूजा विधि एवं जयमाल हिन्दी गद्य मे है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति सं० १८२० की [वे० सं० ३६०] और है ।

४३६४. अनन्तचतुर्दशीव्रतपूजा........ । पत्र सं० १३ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ से अनन्तनाथ तक पूजा है ।

४३६५. अनन्तचतुर्दशीपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० १८ । आ० १०३/४×७ इंच । भाषा-हिन्द । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८ । ज भण्डार ।

४३६६. प्रति सं०२ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ४२१ । ञ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६७. अनन्तचतुर्दशीपूजा .... । पत्र सं० २० । आ० १०१/२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । ख भण्डार ।

४३६८. अनन्तजिनपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० १ । आ० १०१/२×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०४२ । ट भण्डार ।

४३६९. अनन्तनाथपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० २ । आ० ७×४३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५५ । अ भण्डार ।

४३७०. अनन्तनाथपूजा .... । पत्र सं० १ । आ० ८३/४×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२१ । अ भण्डार ।

४३७१. अनन्तनाथपूजा—सेवग । पत्र सं० ३ । आ० ८१/२×६१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नीचे से फटा हुआ है।

४३७२. अनन्तनाथपूजा ……। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४। म भण्डार।

४३७३. अनन्तव्रतपूजा……। पत्र सं० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६४। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५२०, ६६५) और हैं।

४३७४. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

४३७५. प्रति सं० ३। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० २३०। ज भण्डार।

४३७६. अनन्तव्रतपूजा……। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३५२। अ भण्डार।

विशेष—जैनेतर पूजा ग्रन्थ है।

४३७७. अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्त्ति। पत्र सं० २। आ० १२×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

४३७८. अनन्तव्रतपूजा—साह सेवाराम। पत्र सं० ३। आ० ८×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६६। अ भण्डार।

४३७९. अनन्तव्रतपूजाविधि……। पत्र सं० १८। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५८ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १। ग भण्डार।

४३८०. अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य……। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८४१। पूर्ण। वे० सं० १३६३। अ भण्डार।

४३८१. अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र। पत्र सं० १८। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १६३०। ले० काल सं० १८४५ आसोज सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४१७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इत्याचार्यश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीअनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

संवत् १८४५ का— अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तिथौ च चौथि लिखितं पिरागदास बोहरा का जाति बाकलीवाल प्रतापसिंहराज्ये सुरेन्द्रकीर्त्ति भट्टारक विराजमाने सति पं० कल्याणदासतत्सेवक आज्ञाकारी पंडित खुस्यालचन्द्रेण इदं अनन्तव्रतोद्यापनलिखापितं ॥१॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३६) और है।

४३८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६२८ आसोज बुदी १५ । वे० सं० ७ । ख भण्डार ।

४३८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० १२ । ङ भण्डार ।

४३८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४३८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० २०७ । ञ भण्डार ।

४३८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । ञ भण्डार ।

विशेष—२ चित्र मण्डल के हैं । श्री शाकमडगपुर चूहड़वंश के हर्ष नामक दुर्गा वणिक ने ग्रन्थ रचना कराई थी ।

४३८७. अभिषेकपाठ........। पत्र सं० ४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-भगवान के अभिषेक के समय का पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

४३८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५२ । ङ भण्डार ।

विशेष—विधि विधान सहित है ।

४३८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७३२ । च भण्डार ।

४३९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६२२ । ट भण्डार ।

४३९१. अभिषेकविधि—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० १५ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-भगवान के अभिषेक के समय का पाठ एवं विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१) और है जिसे भाऊराम साह ने जीवनराम सेठी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र सोमसेन कृत भी है ।

४३९२. अभिषेकविधि....... । पत्र सं० ८ । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय भगवान के अभिषेक की विधि एवं पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । ञ भण्डार ।

४३९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७०) और है ।

४३९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११४ । ट भण्डार ।

४३९५. अभिषेकविधि । पत्र सं० १ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भगवान के अभिषेक की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३२ । अ भण्डार ।

४३९६. अरिष्टाध्याय……। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-सल्लेखना विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। ब भण्डार।

विशेष—२०३ कुल गाथायें हैं- ग्रन्थका नाम रिट्ठाइ है। जिसका संस्कृत रूपान्तर अरिष्टाध्याय है। आदि अन्त की गाथायें निम्न प्रकार हैं—

पणमेत सुरासुरमउलिरयणवरकिरणकंतविच्छुरियं।
वीरजिणपायजुयलं णमिऊण भणेमि रिट्ठाइं ॥१॥

संसारम्मि भमंतो जीवो बहुभेय भिण्ण जोणिसु।
पुण्णेण कहंवि पावइ सुहमणु यत्तं ण संदेहो ॥२॥

अन्त— पुणु विज्जवेज्जहणूणं भारउ एव वीस सामिय्यं।
सुणीव सुमंतेणं रइय भणियं मुणि ठीरे वरिं देहि ॥२०१॥

सूई भूमीलें फलए समरे हाहि विराम परिहारणो।
कहिजइ भूमीए समंवरे हातयं वच्छा ॥२०२॥

अट्ठाट्ठारह छिरणे जे लद्धीह लच्छरेहाउं।
पढमोहिरे अंकं गविजए याहि णं तच्छ ॥२०३॥

इति अरिष्टाध्यायशास्त्रं समाप्तम्। ब्रह्मवस्ता लेखितं ॥श्री॥ छ ॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४१) और है।

४३९७. अष्टाह्निकाजयमाल……। पत्र सं० ४। आ० ६३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०३१।

विशेष—जयमाला प्राकृत में है।

४३९८. अष्टाह्निकाजयमाल……। पत्र सं० ४। आ० १३×४३/४ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१) और हैं।

४३९९. अष्टाह्निकापूजा……। पत्र सं० ४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६०) और है।

४४००. अष्टाह्निकापूजा……। पत्र सं० ११। आ० १०३/४×४३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १५३३। पूर्ण। वे० सं० ३३। क भण्डार।

विशेष—संवत् १२३३ में इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई जाकर भट्टारक श्री रत्नकीर्त्ति को भेंट की गई थी। जयमाला प्राकृत में है।

४४०१. अष्टाह्निकापूजाकथा—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय अष्टाह्निका पर्व की पूजा तथा कथा। र० काल सं० १८२१। ले० काल सं० १८६८ आषाढ सुदी १०। वे० सं० ५६६। अ भण्डार।

विशेष—पं० खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के बनवाये हुए मन्दिर में अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी।

भट्टारकोऽमूज्जगदादिकीर्त्ति श्रीमूलसंघे वरशारदायाः।
गच्छेहि तत्पट्टसुराजिराजि देवेन्द्रकीर्त्ति समभूततश्च ॥१३७॥
तत्पट्टपूर्वाचलभानुकक्षः श्रीकुंदकुंदान्वयलब्धमुख्यः।
महेन्द्रकीर्त्तिः प्रबभूवपट्टे क्षेमेन्द्रकीर्त्तिः गुरुरस्यमेऽभूत ॥१३८॥
योऽभूत्क्षेमेन्द्रकीर्त्तिः भुवि सगुणभरश्चारुचारित्रधारी।
श्रीमद्भट्टारकेंद्रो विलसदवगमो भव्यसंघे प्रवंद्यः।
तस्य श्रीकारशिष्यागमजलधिपटुः श्रीसुरेन्द्रकीर्त्ति।
रेना पुण्यांचकार प्रलघुमतिविदा वोधतापार्जशब्दैः ॥१३९॥

मिति असाढमासे शुक्लपक्षेदशम्या तिथौ संवत १८७८ का सवाई जयपुर के श्रीऋषभदेवचैत्यालये निवास पं० कल्याणदासस्य शिष्य खुस्यालचन्द्रेण स्वहस्तेन लिपीकृतं जोधराज पाटोदी कृत चैत्यालये ॥ शुभं भूयात् ॥

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है—

मिति माहसुदी ३ सं० १८८८ मुनिराज दोय आया। बडा वृषभसेनजी लघु बाहुबलि मालपुरासुं प्रकाशमे आया। सांगानेर सुं भट्टारकजी की नसियां मे दिन घड़ी च्यार चढ्या जयपुर मे दिन सवा पहर पाछै मंदिरां दर्शन संगही का पाटोदी उगहर (वगैरह) मंदिर १० कीया पाछे मोहनवाड़ी नंदलालजी की कीर्तिस्तंभ की नसिया संगही बिरधीचंदजी आपकी हवेली मे रात्रि १ रह्या भोजनकरि साहीवाड रात्रिवास कीयो समेदगिरि यात्रापधारया पराकृत बोले श्री ऋषभदेवजी सहाय।

इसी भण्डार में एक प्रति सं० १८८८ की (वे० सं० ५४२) और है।

४४०२. अष्टाह्निकापूजा—द्यानतराय। पत्र सं० ३। आ० ८×६३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०३। अ भण्डार।

विशेष—पत्रों का कुछ भाग जल गया है।

४४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९३१ । वे० सं० १२ । क भण्डार ।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा……। पत्र सं० ४४ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल सं० १८७६ कार्तिक सुदी ९ । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वे० सं० १० । क भण्डार ।

४४०५. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अष्टाह्निका व्रत विधान एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२३ । व्य भण्डार ।

४४०६. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन……। पत्र सं० २२ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–अष्टाह्निका व्रत एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

४४०७. आचार्य शान्तिसागरपूजा—भगवानदास । पत्र सं० ४ । आ० ११३×६३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९८४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४४०८. आठकोडिमुनिपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

४४०९. आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन । पत्र सं० ८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०० । आ भण्डार ।

४४१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८३ श्रावण सुदी ९ । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

४४११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९०५ आसोज सुदी २ । वे० सं० १८० । ग भण्डार ।

४४१२. आदित्यव्रतपूजा……। पत्र सं० ३५ से ४७ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–रविव्रत पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७११ । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । ट भण्डार ।

४४१३. आदित्यवारपूजा……। पत्र सं० १४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–रवि व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२० । च भण्डार ।

४४१४ आदित्यवारव्रतपूजा……। पत्र सं० ९ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–रवि व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४४१५. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४८ । अ भण्डार ।

४४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५१६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५१७) और है ।

४४१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में तीन चौबीसी के नाम तथा लघु दर्शन पाठ भी है।

४४१८. आदिनाथपूजा……। पत्र सं० ४। आ० १२¾×५¾ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० २१४५। अ भण्डार।

४४१९. आदिनाथपूजाष्टक……। पत्र सं० १। आ० १०½×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२३। अ भण्डार।

विशेष—नेमिनाथ पूजाष्टक भी है।

४४२०. आदीश्वरपूजाष्टक……। पत्र सं० २। आ० १०½×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–आदिनाथ तीर्थङ्कर की पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० १२२६। अ भण्डार।

विशेष—महावीर पूजाष्टक भी है जो संस्कृत में है।

४४२१. आराधनाविधान……। पत्र सं० १७। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–विषय–विधान। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वे० सं० ४१५। व्य भण्डार।

विशेष—त्रिकाल चौबीसी, षोडशकारण आदि विधान दिये हुये है।

४४२२. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं० ६८। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल × । ले० काल सं० १८५६ वैशाख बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४६१। अ भण्डार।

विशेष—'विशालकीर्त्यात्मज भ० विश्वभूषण विरचितायां' ऐसा लिखा है।

४४२३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८५० द्वि० वैशाख सुदी ३। वे० सं० ४८७। अ भण्डार।

विशेष—कुछ पत्र चिपके हुये हैं। ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी।

४४२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६६। ले० काल × । वे० सं० ८८। क भण्डार।

४४२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०६। ले० काल × । वे० सं० १३०। छ भण्डार।

विशेष—व्य भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३५, ४३०) और हैं।

४४२६. इन्द्रध्वजमंडलपूजा……। पत्र सं० ६७। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–मेलों एवं उत्सवों आदि के विधान में की जाने वाली पूजा। र० काल × । ले० काल सं० १६३६ फागुण सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १६। ख भण्डार।

विशेष—पं० पन्नालाल जोबनेर वाले ने बधोजीलालजी के मन्दिर में प्रतिलिपि की। मण्डल की सूची भी दी हुई है।

४४२७. उपवासग्रहणविधि........ । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-उपवास विधि । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२५ । पूर्ण । अ भण्डार ।

४४२८. ऋषिमंडलपूजा—आचार्य गुणनन्दि । पत्र सं० ११ से ३० । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विभिन्न प्रकार के मुनियों की पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६१५ बैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से १० तक अन्य पूजायें हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

संवत् १६१५ वर्षे बैशाख बदि ५ गुरुवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे गुणनंदि-मुनीन्द्रेण रचिताभक्तिभावतः । शतमाधिकाशीतिश्लोकानां ग्रन्थ संख्यया ।।ग्रन्थाग्रन्थ ३८०।।

इसी भण्डार भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७२) और हैं ।

४४२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टाह्निका जयमाल एवं निर्वाणकाण्ड और हैं । ग्रन्थ के दोनों ओर सुन्दर बेल बूंटे हैं । श्री आदिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं ।

४४३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनों ओर स्वर्ण के बेल बूंटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७७५ । वे० सं० १३७ (क) घ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) और है ।

४४३२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५ । ङ भण्डार ।

४४३३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । म भण्डार ।

४४३४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २१० । ब भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४३३) और है जो कि मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५. ऋषिमंडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२ । अ भण्डार ।

४४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

४४३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५६ ।

विशेष—प्रथम पत्र पर सकलीकरण विधान दिया हुआ है।

४४३८. ऋषिमंडलपूजा……। पत्र सं० १८ । आ० ११३/४×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल १७६८ चैत्र बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा मानजी ने आमेर में प्रतिलिपि की थी।

४४३९. ऋषिमंडलपूजा……। पत्र सं० ८ । आ० ६३/४×५३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०० कार्त्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति मंत्र एवं जाप्य सहित है।

४४४०. ऋषिमंडलपूजा—दौलत आसेरी । पत्र सं० ६ । आ० ६३/४×६१/२ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० २६० । मः भण्डार ।

४४४१. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० ७ । आ० ११×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा एवं विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । च भण्डार ।

विशेष—कांजीबारस का व्रत भादापुरी १२ को किया जाता है।

४४४२. कंजिकाव्रतोद्यापन……। पत्र सं० ६ । आ० ११३/४×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । च भण्डार ।

विशेष—जयमाल अपभ्रंश में है।

४४४३. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा…… । पत्र सं० १२ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा एवं विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । मः भण्डार ।

विशेष—पूजा संस्कृत में है तथा विधि हिन्दी में है।

४४४४. कर्मचूरव्रतोद्यापन…… । पत्र सं० ८ । आ० ११×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६०४ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०) और है।

४४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा- संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । क भण्डार ।

४४४६. कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० १० । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४४४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४१३ । अ भण्डार ।

४४४८. कर्मदहनपूजा—भ० शुभचंद्र। पत्र सं० १०। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६४ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ११। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३०) और है।

४४४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६७२ आसोज। वे० सं० २१३। अ भण्डार।

४४५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १६३५ मंगसिर बुदी १०। वे० सं० २२५। ग भण्डार।

विशेष—आ० नेमिचन्द के पठनार्थ लिखा गया था।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६७) और है।

४४५१. कर्मदहनपूजा……। पत्र सं० ११। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कर्मों के नष्ट करने की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८३६ मंगसिर बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५२५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० सं० ५१३) और है जिसका ले० काल सं० १८२४ भादवा सुदी १३ है।

४४५२. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८८८ माघ शुक्ला ८। वे० सं० १०। घ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

४४५३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १७०८ श्रावण सुदी २। वे० सं० १०१। ङ भण्डार।

विशेष—आइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १००, १०१) और हैं।

४४५४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० ६३। च भण्डार।

४४५५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० १२५। छ भण्डार।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है। इसी भण्डार में और इसी वेष्टन में १ प्रति और है।

४४५६. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द। पत्र सं० २२। आ० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कर्मों को नष्ट करने के लिये पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं ७०६। अ भण्डार।

४४५७. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ११। घ भण्डार।

४४५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ३। वे० सं० ५३२। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५३१, ५३३) और है।

४४५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

४४६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६५८ । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) और है ।

४४६१. कलशविधान—मोहन । पत्र सं० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० का० सं० १६१७ । ले० काल सं० १६२२ । पूर्ण । वे० सं० २७ । ख भण्डार ।

विशेष—भैरवसिंह के शासनकाल में शिवकर (सीकर) नगर मे मंडब नामक जिन मन्दिर के स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

लिखितं पं० पन्नालाल अजमेर नगर में भट्टारकजी महाराज श्री १०८ श्री रत्नभूषणजी के पाट भट्टारक जी महाराज श्री १०८ श्री ललितकीर्त्तिजी महाराज पाट विराज्या बैशाख सुदी ३ नैं त्याकी दिक्षा मे आया जोबनेरसुं पं० हीरालालजी पन्नालाल जयचंद उतरया दोलतरामजी नोढा ओसवाल की होली मे पंडितराज नोगावां का उतरया एक जायगां ११ ताई रह्या ।

४४६२. कलशविधान······। पत्र सं० ६ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६ । अ भण्डार ।

४४६३. कलशविधि—विश्वभूषण । पत्र सं० १० । आ० ६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । अ भण्डार ।

४४६४. कलशारोपणविधि—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का अंग है ।

४४६५. कलशारोपणविधि······ । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२२) और है ।

४४६६. कलशाभिषेक—आशाधर। पत्र सं० ६। भा० १०½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधि। र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ भादवा बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १०६। क भण्डार।

विशेष—पं० शम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

४४६७. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ३४। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं १६२६ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५८१। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य श्रीमंडलाचार्यधर्मचंद्रदेवा तच्छिष्य मंडलाचार्यश्रीललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-शिष्यणि बाई नानी इदं शास्त्रं लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्तं।

४४६८. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा……। पत्र सं० ७। आ० १०३/४×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। अ भण्डार।

४४६९. कलिकुण्डपूजा……। पत्र सं० ३। आ० १०३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११८३। अ भण्डार।

४४७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १०८। क भण्डार।

४४७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४७। ले० काल ×। वे० सं० २५६। ज भण्डार। और भी पूजायें हैं।

४४७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० २२४। झ भण्डार।

४४७३. कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०३। अ भण्डार।

विशेष—रुचिकरगिरि, मानुषोत्तरगिरि तथा पुष्करार्द्ध की पूजायें और हैं।

४४७४. क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन। पत्र सं० २ से २८। आ० १०३/४×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८७४ भादवा बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० १३३। (क) क भण्डार।

४४७५. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ४। वे० सं० १२४। छ भण्डार।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चौधरी चाटसू वाले के लिए पं० मनसुखजी ने गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

४४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी १३ । वे० सं० ११८ । ज भण्डार ।

४४७७. क्षेत्रपालपूजा........ । पत्र सं० ६ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन मान्यतानुसार भैरव की पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७६ । अ भण्डार ।

विशेष—कंवरजी श्री चंपालालजी टोंग्या खंडेलवाल ने पं० श्यामलाल ब्राह्मण से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४४७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ८२२, १२२८) और हैं ।

४४७९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १२४ । छ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

४४८०. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा—मुनि ललितकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५११ । अ भण्डार ।

४४८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११० । क भण्डार ।

४४८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

४४८३. कंजिकाव्रतोद्यापन........ । पत्र सं० १७ से २१ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

४४८४. गजपथामंडलपूजा—भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति (नागौर पट्ट) । पत्र सं० ८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ३६ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति—

मूलसंघे बलात्कारे गच्छे सारस्वते भवत् ।
कुन्दकुन्दान्वये जातः श्रुतसागरपारगः ।।१६।।
नागौरिपट्टे पि अनंतकीर्तिः तत्पट्टधारी शुभ हर्षकीर्तिः ।
तत्पट्टविद्यादिसुभूषणाख्यः तत्पट्टहेमादिसुकीर्त्तिमाख्यः ।।२०।
हेमकीर्त्तिमुनेः पट्टे क्षेमेन्द्रादियशाःप्रभुः ।
तस्याज्ञया विरचितं गजपंथसुपूजनं ।।२१।।
विदुषा शिवजिद्रक्तः नामधेयेन मोहनः ।
प्रेम्णा यात्राप्रसिद्धयर्थं चैकाह्निरचितं चिरं ।।२२।।

जीयादिदं पूजनं च विश्वभूषणावभुवं ।

तस्यानुसारतो ज्ञेयं न च बुद्धिकृतं त्विदं ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीभट्टारकक्षेमेन्द्रकीर्त्तिविरचितं गजपंथमंडलपूजनविधानं समाप्तम् ॥

४४८५. गणधरचरणारविन्दपूजा……। पत्र सं० ३ । ग्रा० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

४४८६. गणधरजयमाला……। पत्र सं० १ । ग्रा० ८×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०० । ग्र भण्डार ।

४४८७ गणधरवलयपूजा……। पत्र सं० ७ । ग्रा० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२ । क भण्डार ।

४४८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७ । ले० काल × । वे० सं० १३४ । ङ भण्डार ।

४४८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११९, १२२) ग्रौर हैं ।

४४९०. गणधरवलयपूजा……। पत्र सं० २२ । ग्रा० ११×४ इंच । भाषा-विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२१ । ग्र भण्डार ।

४४९१. गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ११ । ग्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १७५६ । ले० काल सं० १९०४ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ९१२ । ग्र भण्डार ।

४४९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति ग्रौर है ।

४४९३. गिरनारक्षेत्रपूजा……। पत्र सं० ४ । ग्रा० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९६० । पूर्ण । वे० सं० १४० । क भण्डार ।

४४९४. चतुर्दशीव्रतपूजा……। पत्र सं० १३ । ग्रा० ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । क भण्डार ।

४४९५. चतुर्विंशतिजयमाल—ग्रति माघनंदि । पत्र सं० २ । ग्रा० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८ । ग्र भण्डार ।

४४९६. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा……। पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३८ । ज भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नही है ।

४४९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १९०२ वैशाख बुदी १० । वे० सं० १३९ । ज भण्डार ।

४४९८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा……। पत्र सं० ४६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ । भ्र भण्डार ।

विशेष—बलजी बज मुशरफ ने चढाई थी ।

४४९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १९०६ । वे० सं० ३३१ । ञ भण्डार ।

४५००. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा…… । पत्र सं० ४४ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५९७ । अ भण्डार ।

विशेष—कही २ जयमाला हिन्दी में भी है ।

४५०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १९०१ । वे० सं० १५६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १५५) और है ।

४५०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । ख भण्डार ।

४५०३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सेवाराम साह । पत्र सं० ४३ । आ० १२×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८२४ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल सं० १८५४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । अ भण्डार ।

विशेष—झाझूराम ने प्रतिलिपि की थी । कवि ने अपने पिता बखतराम के बनाये हुए मिथ्यात्वखंडन और बुद्धिविलास का उल्लेख किया है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) और है ।

४५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १९०२ आषाढ सुदी ८ । वे० सं० ७१४ । अ भण्डार ।

४५०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १९४० फागुण बुदी १३ । वे० सं० ४६ । ख भण्डार ।

४५०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० २३ । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१, २२) और है ।

४५०७. चतुर्विंशतिपूजा………। पत्र सं० २०। आ० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२०। छ भण्डार।

४५०८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ९९। आ० ११×५¾ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १८१९ कार्त्तिक बुदी ३। ले० काल सं० १९१५ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ७१९। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७२०, ६२७) और हैं।

४५०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० १४५। क भण्डार।

४५१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६५। ले० काल ×। वे० सं० ४७। ख भण्डार।

४५११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १९५६ कार्त्तिक सुदी १०। वे० सं० २६। ग भण्डार।

४५१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५। घ भण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

४५१३. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १९२७ सावन सुदी ३। वे० सं० १६०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १६१, १६२, १६३, १६४) और हैं।

४५१४. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०५। ले० काल ×। वे० सं० ५४४। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ५४२, ५४३, ५४५) और हैं।

४५१५. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४७। ले० काल ×। वे० सं० २०२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० २०४ मे ३ प्रतियां, २०५) और हैं।

४५१६. प्रति सं० ९। पत्र सं० ९७। ले० काल सं० १९४२ चैत्र सुदी १५। वे० सं० २६१। ज भण्डार।

४५१७. प्रति सं० १०। पत्र सं० ८१। ले० काल ×। वे० सं० १८९। झ भण्डार।

विशेष—सर्वसुखजी गोधा ने सं० १९०० भादवा सुदी ५ को चढाया था।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४५) और है।

४५१८. प्रति सं० ११। पत्र सं० ११५। ले० काल सं० १९४९ सावण सुदी २। वे० सं० ४४५। ञ भण्डार।

४५१९. प्रति सं० १२। पत्र सं० १४७। ले० काल सं० १९३७। वे० सं० १७०६। ट भण्डार।

विशेष—छोटेलाल भांवसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

४५२०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं० ६०। ग्रा० ११×५½ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० १८५४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१५८, २०८५) ग्रौर हैं।

४५२१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५०। ले० काल सं० १८७१ ग्रासोज सुदी ६। वे० सं० २४। ग भण्डार।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २५) ग्रौर है।

४५२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५१। ले० काल सं० १९९६। वे० सं० १७। घ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६, २४) ग्रौर हैं।

४५२३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५७। ले० काल ×। वे० स० १५७। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १५८, १५६, ७८७) ग्रौर हैं।

४५२४. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५६। ले० काल सं० १९२६। वे० सं० ५४६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ५४६, ५४७, ५४८) ग्रौर है।

४५२५. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५४। ले० काल सं० १८६१। वे० सं० २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतियां (वे० सं० २१७, २१८, २२०/३) ग्रौर है।

४५२६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० २०७। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०८) ग्रौर हैं।

४५२७. प्रति सं० ८। पत्र सं० १०१। ले० काल सं० १८६१ श्रावरण बुदी ४। वे० सं० १८। झ भण्डार।

विशेष—जैतराम रांवका ने प्रतिलिपि कराई एवं नाथूराम रावका ने विजैराम पांड्या के मन्दिर मे चढाई थी। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५८, १८१) ग्रौर हैं।

४५२८. प्रति सं० ९। पत्र सं० ७३। ले० काल सं० १८५२ ग्रासाढ सुदी १५। वे० सं० ६४। ञ भण्डार।

विशेष—महात्मा जयदेव ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३१५, ३२१) ग्रौर है।

४५२९. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—नेमीचन्द पाटनी। पत्र सं० ६०। ग्रा० ११½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८८० भादवा सुदी १०। ले० काल सं० १९१८ ग्रासोज बुदी १२। वे० सं० १४४। क भण्डार।

विशेष—अन्त में कवि का संक्षिप्त परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि दीवान अमरचंद जी के मन्दिर में कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहां से अमरावती गये।

४५३०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरंगलाल। पत्र सं० ५१। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२१। अ भण्डार।

४५३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० १४३। क भण्डार।

विशेष—पूजा के अन्त में कवि का परिचय भी है।

४५३२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६०। ले० काल ×। वे० सं० २०३। छ भण्डार।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—बख्तावरलाल। पत्र सं० ५४। आ० ११½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८५४ मंगसिर बुदी ६। ले० काल सं० १६०१ कार्त्तिक सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ५५०। च भण्डार।

विशेष—तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी।

४५३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ५ से ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५। छ भण्डार।

४५३५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द। पत्र सं० ६७। आ० ११½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ५५५। च भण्डार।

४५३६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८४। ले० काल सं० १६२८ बैशाख सुदी ५। वे० सं० ५५६। च भण्डार।

४५३७. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा········। पत्र सं० ७७। आ० ११×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६१६ चैत्र सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

४५३८. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५४। क भण्डार।

४५३९. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० १०। आ० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६८। ऋ भण्डार।

४५४०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द। पत्र सं० ८। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। अ भण्डार।

विशेष—'चतुर्थ पूजा की जयमाल' यह नाम दिया हुआ है। जयमाल हिन्दी में है।

४५४१. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० ८½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७१। क भण्डार।

४४४२. चन्द्रनषष्ठीव्रतपूजा……। पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ की पूजा । र० का काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८०५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें और हैं- पञ्चमी व्रतोद्यापन, नवग्रहपूजाविधान ।

४४४३. चन्द्नषष्ठीव्रतपूजा…………। पत्र सं० ३ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१६३) और है ।

४४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६३ । ट भण्डार ।

४४४५. चन्द्नषष्ठीव्रतपूजा……। पत्र सं० ६ । आ० ११३×५४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५७ । अ भण्डार ।

विशेष—३रा पत्र नही है ।

४४४६. चन्द्रप्रभजिनपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७६ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४२७ । अ भण्डार ।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४४४७. चन्द्रप्रभजिनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६२ । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । अ भण्डार ।

४४४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६३ । वे० स० ४३० । अ भण्डार ।

विशेष—आमेरमें सं० १८७२ में रामचन्द्र की लिखी हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

४४४९. चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा…… । पत्र सं० ५ । आ० ७×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२७ वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६०२ । अ भण्डार ।

४४५०. चारित्रशुद्धिविधान—श्री भूषण । पत्र सं० १७० । आ० १२३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ४४५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम बारहसौ चौतीसाव्रत पूजा विधान भी है ।

४४५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । वे० सं० १५२ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

४४५२. चारित्रशुद्धिविधान—सुमतिब्रह्म । पत्र सं० ८४ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । र० काल × । ले० काल सं० १८३७ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १२३ । ख भण्डार ।

४४५३. चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र । पत्र सं० ६६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । र० काल × । ले० काल सं० १७१४ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ज भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७१४ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे चउथ तिथौ शुक्रवासरे । षडसौलास्थाने मुंडलदेशे श्रीचन्द्रनाथ चैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्राः तत्पट्टे भ० हर्षचन्द्राः तदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरसी तत्शिष्य ब्रह्म श्री गणदास तत्शिष्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं उद्यापन कारणे चौत्रीसु स्वहस्तेन लिखितं ।

४४५४. चिंतामणिपूजा (बृहत्)—विद्याभूषण सूरि । पत्र सं० ११ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५१ । क भण्डार ।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नहीं हैं ।

४४५५. चिंतामणिपार्श्वनाथपूजा (बृहद्)—शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । अ भण्डार ।

४४५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १६६१ पौष बुदी ११ । वे० सं० ४१७ । अ भण्डार ।

४४५७. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा……। पत्र सं० ३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११८४ । अ भण्डार ।

४४५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २८ । ग भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें और हैं । चिन्तामणिस्तोत्र, कलिकुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा ।

४४५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । घ भण्डार ।

४४६०. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा……। पत्र सं० ११ । आ० ११×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८३ । च भण्डार ।

४५६१. चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा……। पत्र सं० ५। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१४। अ भण्डार।

विशेष—यज्ञविधि एवं स्तोत्र भी दिया है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८४०) और है।

४५६२. चौदहपूजा……। पत्र सं० ११। आ० १०×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६१। ज भण्डार।

विशेष—ऋषभनाथ से लेकर अनंतनाथ तक पूजायें है।

४५६३. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरूपचन्द। पत्र सं० ३५। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–६४ प्रकार की ऋद्धि धारण करने वाले मुनियोंकी पूजा। र० काल सं० १६१० सावन सुदी ७। ले० काल सं० १६५१। पूर्ण। वे० सं० ६६४। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम वृहद्गुर्वावलि पूजा भी है।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७१६, ७१७, ७१८, ७३७) और हैं।

४५६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६१०। वे० सं० ६७०। क भण्डार।

४५६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १६५२। वे० सं० २६। ग भण्डार।

४५६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६२६ फागुण सुदी १२। वे० सं० ७६। घ भण्डार।

४५६७. प्रति सं० ५। पत्र सं० २५। ले० काल ×। वे० सं० १६३। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४) और है।

४५६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं ७३४। च भण्डार।

४५६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १४३, २१६/३) और है।

४५७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २०६। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६२/२ २६५) और हैं।

४५७१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ५३४। ञ भण्डार।

४५७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० १६१३। ट भण्डार।

४५७३. ज्ञातिनिवारणविधि……। पत्र सं० ३। आ० ११×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७८। अ भण्डार।

४५७४. जम्बूद्वीपपूजा—पांडे जिनदास। पत्र सं० १६। आ० १०३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल १७वीं शताब्दी। ले० काल सं० १८२२ मंगसिर बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १८३। क भण्डार।

विशेष—प्रति अकृत्रिम जिनालय तथा भूत, भविष्यत्, वर्तमान जिनपूजा सहित है। पं० चोखचन्द ने माहचन्द से प्रतिलिपि करवाई थी।

४५७५. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४। वे० सं० ६८। घ भण्डार।

विशेष—भवानीचन्द भांवासा फिराय वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४५७६. जम्बूस्वामीपूजा ...। पत्र सं० १०। आ० ८×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-अन्तिम केवली जम्बूस्वामी की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९४८। पूर्ण। वे० सं० ६०१। अ भण्डार।

४५७७. जयमाल—रायचन्द। पत्र सं० १। आ० ८½×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८५५ फागुण सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१३२। अ भण्डार।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ में प्रतिलिपि की थी।

४५७८. जलहरतेलाविधान... ...। पत्र सं० ४। आ० ११½×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ३२३। ज भण्डार।

विशेष—जलहर तेले (व्रत) की विधि है। इसका दूसरा नाम झरतेला व्रत भी है।

४५७९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १९२८। वे० सं० ३०२। ख भण्डार।

४५८०. जलयात्रापूजाविधान.......। पत्र सं० २। आ० ११×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २९३। ज भण्डार।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान।

४५८१. जलयात्राविधान—महा पं० आशाधर। पत्र सं० ४। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०९६। अ भण्डार।

४५८२. जलयात्रा (तीर्थोदकादानविधान) ......। पत्र सं० २। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—जलयात्रा के मन्त्र भी दिये हैं।

४५८३. जिनगुणसंपत्तिपूजा—भ० रत्नचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० ११½×५ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०९। क भण्डार।

४५८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८३ । वे० सं० १७१ । ब भण्डार ।

विशेष—श्रीपति जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

४५८५. जिनगुणसंपत्तिपूजा……। पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नहीं है ।

४५८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२१ । वे सं० २६३ । ख भण्डार ।

४५८७. जिनगुणसंपत्तिपूजा……। पत्र सं० ५ । आ० ७½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१५ । अ भण्डार ।

४५८८. जिनपुरन्दरव्रतपूजा……। पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०६ । ङ भण्डार ।

४५८९. जिनपूजाफलप्राप्तिकथा ……। पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा के साथ २ कथा भी है ।

४५९०. जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठासार)—महा पं० आशाधर । पत्र सं० १०२ । आ० १०½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय मूर्त्ति, वेदी प्रतिष्ठादि विधानो की विधि । र० काल सं० १२८५ आसोज बुदी ८ । ले० काल सं० १४९५ माघ बुदी ८ (शक सं० १३६०) पूर्ण । वे० सं० २८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १४९५ शाके १३६० वर्षे माघ वदि ८ गुरुवासरे……… … .. ………(अपूर्ण)

४५९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- संवत् १६३३ वर्षे………।

४५९२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८५ भादवा बुदी १३ । वे० सं० २७ । घ भण्डार ।

विशेष—मथुरा मे औरङ्गजेब के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई ।

लेखक प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेषु सरस्वतीयो गच्छे बलात्कारणे प्रसिद्धे ।

सिंहासनो श्रीमलयस्य खेटे सुदक्षिणाख्या विषये विलीने ।

श्रीकुंदकुंदाखिलयोगनाथ पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गाः ।
दुर्वादिवायुन्मथनैकसज्ज विद्यानुनंदीश्वरसूरिमुख्यः ॥
तदन्वये योऽमरकीर्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेन्द्रदृप्तः ।
तस्यानुशिष्यशुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगायां ॥
पुर्यां शुभायां पट्टपशानुवत्यां सुवर्णकारणाव्रत नीचकार ॥

४५६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १६५६ भादवा सुदी १२ । वे० सं० २२३ । ञ भण्डार ।

विशेष—बंगाल में अकबरां नगर में राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल में आचार्य कुन्दकुन्द के बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ में भट्टारक पद्मनंदि के शिष्य भ० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय में खंडेलवाल वंशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह श्री पट्टिराज, बलू, फरना, कपूरा, नाथू आदि में से कपूरा ने षोडशकारण व्रतोद्यापन में पं० श्री जयवंत को यह प्रति भेंट की थी ।

४५६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४२ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नंद्यात् खंडिल्लवंशोत्थः केल्हणोन्यासविस्तरः ।
लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रणमं पुस्तकं ॥२०॥

४५६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६६२ भादवा बुदी २ । वे० सं० ४२५ । ञ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ भौमे अद्येह राजपुरनगरवास्तव्यं आभ्यंतरनागरज्ञाती पंचोली त्यारााभट्टसुत नरसिंहेन लिखितं ।

क भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) च भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० १२०, १०५) तथा ञ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) और है ।

४५६६. जिनयज्ञविधान········ । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८३ । ट भण्डार ।

४५६७. जिनस्नपन (अभिषेक पाठ)········ । पत्र सं० १४ । आ० ९½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८११ बैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १७७८ । ट भण्डार ।

४५६८. जिनसंहिता········ । पत्र सं० ४९ । आ० ११×८½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । छ भण्डार ।

४५९९. जिनसंहिता—भद्रबाहु। पत्र सं० १३०। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९६। क भण्डार।

४६००. जिनसंहिता—भ० एकसंधि। पत्र सं० ८४। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १९३७ चैत्र बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १९७। क भण्डार।

विशेष— ५७, ५८, ८१, ८२ तथा ८३ पत्र खाली हैं।

४६०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ८५। ले० काल सं० १८५३। वे० सं० १९८। क भण्डार।

४६०२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १११। ले० काल ×। वे० सं० ५९। ख भण्डार।

४६०३ जिनसंहिता……। पत्र सं० १०९। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८५६ भादवा बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १९५। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम पूजासार भी है। यह एक संग्रह ग्रन्थ है जिसका विषय वीरसेन, जिनसेन पूज्यपाद तथा गुणभद्रादि आचार्यों के ग्रन्थों से संग्रह किया गया है। ९९ पृष्ठों के अतिरिक्त १० पत्रो में ग्रन्थ मे सम्बन्धित ४३ यन्त्र दे रखे हैं।

४६०४. जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण। पत्र सं० १२६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९०६ बैशाख बुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ४३८। अ भण्डार।

विशेष—लिछमणलाल से पं० सुखलालजी के पठनार्थ हीरालालजी रैणवाल तथा पचेवर वालों ने किला खण्डार मे प्रतिलिपि करवाई थी।

अन्तिम प्रशस्ति— या पुस्तक लिखाई किला खण्डारि के कोटडिराज्ये श्रीमानसिंहजी तत् कंवर फतैसिंहजी बुलाया रैणवाललूं बैदगी निमित्त श्रीसहस्रनाम को मंडलजी मंडायौ उत्सव करायो। श्री ऋषभदेवजी का मन्दिर में माल लियो दरोगा चत्रभुजजी वाली वगरू का गोत पाटणी रु० १५) साहजी गणेशलालजी साह ज्याकी सहाय सूं हुवो।

४६०५. प्रति सं० २। पत्र सं० ८७। ले० काल ×। वे० सं० १९४। क भण्डार।

४६०६. जिनसहस्रनामपूजा—स्वरूपचन्द बिलाला। पत्र सं० ९५। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १९१६ आसोज सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८७१३। क भण्डार।

४६०७. जिनसहस्रनामपूजा—चैनसुख लुहाडिया। पत्र सं० २६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९३६ माह सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ७७२। क भण्डार।

४६०८. जिनसहस्रनामपूजा········। पत्र सं० १८ । ग्रा० १३×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०७२४ । अ भण्डार ।

४६०९. प्रति स० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७२४ । च भण्डार ।

४६१०. जिनाभिषेकनिर्णय ·······। पत्र सं० १० । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अभिषेक विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । छ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथमकाण्ड में सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है ।

४६११. जैनप्रतिष्ठापाठ ·······। पत्र सं० २ से ३५ । ग्रा० ११½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । च भण्डार ।

४६१२. जैनविवाहपद्धति·······। पत्र सं० ३४ । ग्रा० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—आचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार संग्रह किया गया है । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६१३ प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १७ । ज भण्डार ।

४६१४. ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० १६ । ग्रा० १०¾×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १८४७ चैत्र बुदी ६ । ले० काल सं० १८६३ ग्राषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । च भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में रचना की गई थी । सोनजी पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा·······। पत्र सं० ७ । ग्रा० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०४ । अ भण्डार ।

विशेष— इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२३) और हैं ।

४६१६. ज्येष्ठजिनवरपूजा········। पत्र सं० १२ । ग्रा० ११½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६ । छ भण्डार ।

४६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २१३ । छ भण्डार ।

४६१८. ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा········। पत्र सं० १ । ग्रा० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६० ग्राषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२१२ । अ भण्डार ।

विशेष—विद्वान खुशाल ने जोधराज के बनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । करदो सुरेन्द्रकीर्तिजी को रच्यो ।

४६१६. णमोकारपैंतीसपूजा—अक्षयराम। पत्र सं० ३। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–णमोकार मन्त्र पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४६६। अ भण्डार।

विशेष—महाराजा जयसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ रचना की गई थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७८) और है।

४६२०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १७६५ प्र० आसोज बुदी १। वे० सं० ३६४। अ भण्डार।

४६२१. णमोकारपैंतीसीव्रतविधान—आ० श्री कनककीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय–पूजा एवं विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८२५। पूर्ण। वे० सं० २३६। क भण्डार।

विशेष—डूंगरसी कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४६२२. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४। अ भण्डार।

४६२३. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा—दयाचन्द्र। पत्र सं० १। आ० ११×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६०। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति वे० सं० २६१। और है।

४६२४. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा……। पत्र सं० २। आ० ११½×५। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६२। क भण्डार।

विशेष—केवल १०वें अध्याय की पूजा है।

४६२५. तीनचौबीसीपूजा……। पत्र सं० ३८। आ० १२×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-भूत, भविष्यत् तथा वर्त्तमान काल के चौबीसों तीर्थङ्करों की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७४। क भण्डार।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा…………। पत्र सं० ५। आ० ११¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८०६। ट भण्डार।

४६२७. तीनचौबीसीपूजा—नेमीचन्द पाटनी। पत्र सं० ६७। आ० ११¾×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १४। ले० काल सं० १६२८ भाद्रपद सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २७५। क भण्डार।

४६२८. तीनचौबीसीपूजा……। पत्र सं० ५७। आ० ११×५ इंच भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८८२। ले० काल सं० १८८२। पूर्ण। वे० सं० २७३। क भण्डार।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा ······। पत्र सं० २० । आ० ११½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२५। छ भण्डार।

४६३०. तीनलोकपूजा—टेकचन्द। पत्र सं० ४१०। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८२८। ले० काल सं० १९७३। पूर्ण। वे० सं० २७७। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ लिखाने में ३७॥।–) लगे थे।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५७६, ५७७) और हैं।

४६३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५०। ले० काल ×। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

४६३२. तीनलोकपूजा—नेमीचन्द। पत्र सं० ८५१। आ० १३×८¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० २२०३। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एवं त्रिलोकपूजा भी है।

४६३३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०८८। ले० काल ×। वे० सं० २७०। क भण्डार।

४६३४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ९८७। ले० काल सं० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० २२९। छ भण्डार।

विशेष—दो वेष्टनों में है।

४६३५. तीसचौबीसीनाम·······। पत्र सं० ६। आ० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५७८। च भण्डार।

४६३६. तीसचौबीसीपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ११६। आ० १०¾×७½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८०। च भण्डार।

विशेष—प्रतिलिपि बनारस में गङ्गातट पर हुई थी।

४६३७. प्रति सं० २। पत्र सं० १२२। ले० काल सं० १९०१ आषाढ सुदी २। वे० सं० ५७। म भण्डार।

४६३८. तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा·······। पत्र सं० ६। आ० ८×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८०८। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७८। क भण्डार।

विशेष—अढाईद्वीप अन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७९) और है।

४६३९. तेरहद्वीपपूजा—शुभचन्द्र। पत्र सं० १५४। आ० १०¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२१ सावन सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ७३। छ भण्डार।

४६४०. तेरहद्वीपपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं० १०२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८७ भादवा सुदी २। वे० सं० १२७। क भण्डार।

विशेष—विजैरामजी पांड्या ने बलदेव ब्राह्मण से लिखवाई थी।

४६४१. तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० २४। आ० ११½×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१। पूर्ण। वे० सं० ४३। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५०) और है।

४६४२. तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० २०८। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२४। पूर्ण। वे० सं० ५३५। अ भण्डार।

४६४३. तेरहद्वीपपूजा—लालजीत। पत्र स० २३२। आ० १२½×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८७७ कार्तिक सुदी १२। ले० काल सं० १६६२ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २७७। क भण्डार।

विशेष—गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

४६४४. तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० १७१। आ० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५८१। च भण्डार।

४६४५. तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० २६४। आ० ११×७¾ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६४६ कार्तिक सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३४३। ज भण्डार।

४६४६. तेरहद्वीपपूजाविधान……। पत्र सं० ८६। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०६१। अ भण्डार।

४६४७. त्रिकालचौबीसीपूजा—त्रिभुवनचन्द्र। पत्र सं० १३। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-तीनो काल में होने वाले तीर्थङ्करों की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७५। अ भण्डार।

विशेष—शिवलाल ने नेवटा में प्रतिलिपि की थी।

४६४८. त्रिकालचौबीसीपूजा……। पत्र सं० ६। आ० १०×६¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० का० ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७८। क भण्डार।

४६४९. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १७०४ पौष सुदी ६। वे० सं० २७६। क भण्डार।

विशेष—बसवा में आचार्य पूर्णचन्द्र ने अपने चार शिष्यों के साथ में प्रतिलिपि की थी।

४६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १९९१ भादवा सुदी ३ । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती अर्जिका की पुस्तक है ।

४६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७४७ फाल्गुन सुदी १३ । वे० सं० ४११ । ञ भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७५) और है ।

४६५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा........ । पत्र सं० १६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान के त्रेसठ शलाका पुरुषों की पूजा है ।

४६५४. त्रिलोकक्षेत्रपूजा......... । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८९ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५. त्रिलोकस्थजिनालयपूजा........ । पत्र सं० ६ । आ० ११×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

४६५६. त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० ३६ । आ० १३½×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र से नवीन पत्र जोडे गये हैं ।

४६५७. त्रिलोकसारपूजा....... । पत्र सं० २६० । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९३० भादवा सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८. त्रेपनक्रियापूजा........ । पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५९. त्रेपनक्रियाव्रतपूजा........... । पत्र सं० ५ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. त्रैलोक्यसारपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० १७२ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२९ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१. त्रैलोक्यसारमहापूजा……। पत्र सं० १४५। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९१९। पूर्ण। वे० सं० ७९। ख भण्डार।

४६६२. दशलक्षणजयमाल—पं० रइधू। आ० १०×५ इंच। भाषा–अपभ्रंश। विषय–धर्म के दश भेदों की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६८। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है।

४६६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १७९५। वे० सं० ३०१। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०२) और है।

४६६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २९७। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २९६) और है।

४६६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८०१। वे० सं० ८३। ग भण्डार।

विशेष—जोशी खुशालीराम ने टोंक में प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ८२, ८३/१) और है।

४६६६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २९४। ङ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं। इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २९२) और है।

४६६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ९। ले० काल ×। वे० सं० १२६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५०) और है।

४६६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ९। ले० काल सं० १७८२ फागुण सुदी १२। वे० सं० १२६। छ भण्डार।

४६६९. प्रति सं० ८। पत्र सं० ९। ले० काल सं० १८९८। वे० सं० ७३। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १९८, २०२) और है।

४६७०. प्रति सं० ९। पत्र स० ४। ले० काल सं० १७४६। वे० सं० १७०। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २६८, २८५) और हैं।

४६७१. प्रति सं० १०। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० १७८६। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १७८७, १७८८, १७९४) और हैं।

४६७२. दशलक्षणजयमाल—पं० भाव शर्मा। पत्र सं० ८। आ० १२×५½ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८११ भादवा सुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० २६८। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४८१) और है।

४६७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७३४ पौष बुदी १२ । वे० सं० ३०२ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रमरावती जिले में समरपुर नामक नगर में आचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने स्वयं के पढने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०१) और है ।

४६७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६१२ । वे० सं० १८१ । ख भण्डार ।

विशेष—जयपुर के जोबनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४६७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८६२ भादवा सुदी ८ । वे० सं० १५१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

४६७६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४६७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४८१) और है ।

४६७८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७८४ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १७८६, १७९०, १७९२, १७९४) और हैं ।

४६७९. दशलक्षणजयमाल········ । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७८४ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २९१ । क भण्डार ।

४६८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । ञ भण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ७२९ । ञ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २९७, २९८) और है ।

४६८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ३ । वे० सं० १५३ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा चौथमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १५२, १५४) और हैं ।

४६८४. दशलक्षणजयमाल········ । पत्र सं० ५ । आ० ११३/४×५३/४ इंच । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११५ । अ भण्डार ।

४६८५. दशलक्षणजयमाल……। पत्र सं० ६। आ० १०३×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७३६ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ८४। ख भण्डार।

विशेष—नागौर में प्रतिलिपि हुई थी।

४६८६. दशलक्षणजयमाल……। पत्र सं० ७। आ० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४५। च भण्डार।

४६८७. दशलक्षणपूजा—अभ्रदेव। पत्र सं० ६। आ० १३×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०८२। अ भण्डार।

४६८८. दशलक्षणपूजा—अभयनन्दि। पत्र सं० १५। आ० १२×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६६। क भण्डार।

४६८९. दशलक्षणपूजा……। पत्र सं० २। आ० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६७। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२०४) और है।

४६९०. प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ४। वे० सं० ३०३। क भण्डार।

विशेष—सांगानेर में विद्याविनोद ने पं० गिरधर के वाचनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २९८) और है।

४६९१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ९। ले० काल ×। वे० सं० १७८५। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७९१) और है।

४६९२. दशलक्षणपूजा……। पत्र सं० ३७। आ० ११×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६३। पूर्ण। वे० सं० १५५। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४६९३. दशलक्षणपूजा—द्यानतराय। पत्र सं० १०। आ० ८३×६३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२५। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ७ तक रत्नत्रयपूजा दी हुई है।

४६९४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १९३७ चैत्र बुदी २। वे० सं० ३००। क भण्डार।

४६९५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३००। ज भण्डार।

४६९६. दशलक्षणपूजा......। पत्र सं० ३५ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९५४ । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५८९) और है ।

४६९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १९३७ । वे० सं० ३१७ । च भण्डार ।

४६९८. दशलक्षणपूजा......। पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२० । ट भण्डार ।

विशेष—स्थापना द्यानतराय कृत पूजा की है अष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है ।

४६९९. दशलक्षणमंडलपूजा......। पत्र सं० ६३ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८८० चैत्र सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । क भण्डार ।

४७००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । क भण्डार ।

४७०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९३७ भादवा सुदी १० । वे० सं० ३०० । क भण्डार ।

४७०२. दशलक्षणव्रतपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७९६ । अ भण्डार ।

४७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८२९ । वे० सं० ४९८ । अ भण्डार ।

४७०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७९ आसोज सुदी ५ । वे० सं० १४९ । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०५. दशलक्षणव्रतोद्यापन—जिनचन्द्र सूरि । पत्र सं० १९ – २५ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । क भण्डार ।

४७०६. दशलक्षणव्रतोद्यापन—मल्लिभूषण । पत्र सं० १४ । आ० १२३×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४७०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । झ भण्डार ।

४७०८. दशलक्षणव्रतोद्यापन......। पत्र सं० ४३ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ७० । झ भण्डार ।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है ।

४७०९. दशलक्षणविधानपूजा……। पत्र सं० ३०। ग्रा० १२१/२×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां इसी वेष्टन में और है।

४७१०. देवपूजा—इन्द्रनन्दि योगीन्द्र। पत्र सं० ५। ग्रा० १०१/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०। ख भण्डार।

४७११. देवपूजा……। पत्र सं० ११। ग्रा० ६१/२×४१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५३। ग्र भण्डार।

४७१२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४ से १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६। घ भण्डार।

४७१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३०५। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०६) और है।

४७१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १६१। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६२, १६३) और है।

४७१५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८३ पौष बुदी ८। वे० सं० १३३। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६६, १७८) और हैं।

४७१६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६५० ग्राषाढ बुदी १२। वे० सं० २१४२। ट भण्डार।

विशेष—छीतरमल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

४७१७. देवपूजाटीका……। पत्र सं० ८। ग्रा० १२×५१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८८६। पूर्ण। वे० सं० १११। छ भण्डार।

४७१८. देवपूजाभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० १७। ग्रा० १२×५१/२ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८४३ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ५११। ग्र भण्डार।

४७१९. देवसिद्धपूजा……। पत्र सं० १५। ग्रा० १२×५१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५१। ख भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

४७२०. द्वादशव्रतपूजा—पं० अभ्रदेव। पत्र सं० ७। ग्रा० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८४। ग्र भण्डार।

४७२१. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० १६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १७७२ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । अ भण्डार ।

४७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

४७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४७२४. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० ६ । आ० ७३×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । अ भण्डार ।

४७२५. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । आ० १०३×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । च भण्डार ।

४७२६. द्वादशव्रतोद्यापन…… । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । ज भण्डार ।

विशेष—गोर्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२७. द्वादशांगपूजा—डालूराम । पत्र सं० १६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल सं० १९३० आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३२४ । क भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२८. द्वादशांगपूजा…… । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५९२ ।

विशेष—इसी वेष्टन में २ प्रतियां और हैं ।

४७२९. द्वादशांगपूजा…… । पत्र सं० ६ । आ० १२×७३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२७) और है ।

४७३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । अ भण्डार ।

४७३१. धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० १९ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

४७३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९४२ फागुण सुदी १० । वे० सं० ८९ । ख भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४७३३. धर्मचक्रपूजा—साधु रणमल्ल। पत्र सं० ८। आ० ११×५½ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८१ चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५२८। अ भण्डार।

विशेष—पं० खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

४७३४. धर्मचक्रपूजा………। पत्र सं० १०। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०६। अ भण्डार।

४७३५. ध्वजारोपण………। पत्र सं० ११। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजाविधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

४७३६. ध्वजारोपणमंत्र………। पत्र सं० ४। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२३। अ भण्डार।

४७३७. ध्वजारोपणविधि—पं० आशाधर। पत्र सं० २७। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। च भण्डार।

४७३८. ध्वजारोपणविधि………। पत्र सं० १३। आ० १०¾×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० । अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४८८) और हैं।

४७३९. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १९१६। वे० सं० ३१८। ज भण्डार।

४७४०. ध्वजारोहणविधि………। पत्र सं० ८। आ० १०½×७½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १९२७। पूर्ण। वे० सं० २७३। ख भण्डार।

४७४१. प्रति सं० २। पत्र सं० २ – ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८२२। ट भण्डार।

४७४२. नन्दीश्वरजयमाल………। पत्र सं० २। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७७६। ट भण्डार।

४७४३. नन्दीश्वरजयमाल………। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७०। ट भण्डार।

४७४४. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रत्ननन्दि। पत्र सं० १०। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११०। च भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४७४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ आषाढ बुदी ३ । वे० सं० १६१ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र चूहों ने का रखे हैं।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा……। पत्र सं० ४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाल प्राकृत में है। इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७६७) और है।

४७४७. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल । पत्र सं० ३१ । आ० १२×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।

४७४८. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा…… । पत्र सं० ६ । आ० ११×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५७) और है।

४७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३६३ । क भण्डार ।

४७५०. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा……। पत्र सं० ३ । आ० १०३/४×५३/४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८३ । अ भण्डार ।

४७५१. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४०६, २१२, २७४ ले० काल सं० १८२४) और हैं।

४७५२. नन्दीश्वरपूजा…… । पत्र सं० ४ । आ० ८३/४×६ इंच । भाषा प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११५२ । अ भण्डार ।

४७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३४८ । क भण्डार ।

४७५४. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र सं० ४ । आ० ९×७ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४७५५. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र सं० ३१ । आ० ६१/२×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत, प्राकृत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

४७५६. नन्दीश्वरपूजा……। पत्र सं० ३० । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । क भण्डार ।

४७५७. नन्दीश्वरभक्तिभाषा—पन्नालाल। पत्र सं० २६। भ्रा० ११½×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १६२१। ले० काल सं० १६४६। पूर्ण। वे० सं० ३६४। क भण्डार।

४७५८. नन्दीश्वरविधान—जिनेश्वरदास। पत्र सं० १११। भ्रा० ११×८½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १६६०। ले० काल सं० १६६२। पूर्ण। वे० सं० ३५०। क भण्डार।

विशेष—लिखाई एवं कागज में केवल १५) रु० खर्च हुये थे।

४७५६. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—नन्दिषेण। पत्र सं० २०। भ्रा० १२½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६२। ख भण्डार।

४७६०. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—अनन्तकीर्त्ति। पत्र सं० १३। भ्रा० ८½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८५७ भ्रासाढ बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २०१७। ट भण्डार।

विशेष—दूसरा पत्र नही है। तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

४७६१. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० ५। भ्रा० ११½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

४७६२. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० ३०। भ्रा० ८×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ३५१। क भण्डार।

विशेष—स्योजीराम भांवसा ने प्रतिलिपि की थी।

४७६३. नन्दीश्वरपूजाविधान—टेकचन्द। पत्र सं० ४६। भ्रा० ८½×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८५ सावन सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १७८। झ भण्डार।

विशेष—फतेहलाल पापड़ीवाल ने जयपुर वाले रामलाल पहाड़िया से प्रतिलिपि कराई थी।

४७६४ नन्दसप्तमीव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० १० भ्रा० ८×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६४७। पूर्ण। वे० सं० ५६२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०३) और है।

४७६५. नवग्रहपूजाविधान—भद्रबाहु। पत्र सं० ८ भ्रा० १०½×५½ इञ्च। भाषा- संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२। ज भण्डार।

४७६६ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २३। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र पर नवग्रहका चित्र है तथा किस ग्रह की शांति के लिए किस तीर्थङ्कर की पूजा करनी चाहिए, यह लिखा है।

४७६७. नवग्रहपूजा·······। पत्र सं० ७। आ० ११½×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४७५, ४६०, ५७३, १२७१, २११२) और हैं।

४७६८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३। वे० सं० १२७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १२७) और हैं।

४७६९. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १९८८ कार्तिक बुदी ७। वे० सं०। २०३ अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १८५, १६३, २८०) और हैं।

४७७०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २०१५। ट भण्डार।

४७७१. नवग्रहपूजा···········। पत्र सं० १६। आ० ६×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११९६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१३) और हैं।

४७७२. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल ×। वे० सं० २२१। छ भण्डार।

४७७३. नित्यकृत्यवर्णन·······। पत्र सं० १०। आ० १०½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ हैं। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११६६। अ भण्डार।

विशेष—३रा पृष्ठ नहीं है।

४७७४. नित्यक्रिया·········। पत्र सं० ६८। आ० ८½×६ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६६। क भण्डार।

विशेष—प्रति संक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है। ३४, ६७, तथा ६८ से आगे के पत्र नहीं हैं।

४७७५. नित्यनियमपूजा·······। पत्र सं० २६। आ० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३७०, ३७१) और हैं।

४७७६. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० ३६७। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३६० से ३६३) और हैं।

४७७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८६१। वे० सं० ५२६। अ भण्डार।

४७७८. नित्यनियमपूजा……। पत्र सं० १५ । ग्रा० १०×७ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७०८, १११४) और हैं ।

४७७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १९४० कार्तिक बुदी १२ । वे० सं० ३६८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३६९) और हैं ।

४७८०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १९५४ । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १२१/२, २२२/२) और हैं ।

४७८१. नित्यनियमपूजा—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ४६ । ग्रा० ६३⁄४×६३⁄४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १९२१ माघ सुदी २ । ले० काल सं० १९२३ । पूर्ण । वे० सं० ४०१ । अ भण्डार ।

४७८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १९२८ सावन सुदी १० । वे० सं० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३७६) और है ।

४७८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९२१ माघ सुदी २ । वे० सं० ३७१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३७०) और है ।

४७८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १९५५ ज्येष्ठ सुदी ७ । वे० सं० २१४ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्र फटे हुये एवं जीर्ण हैं ।

४७८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० १३० । ऋ भण्डार ।

विशेष—इसका पुट्ठा बहुत सुन्दर एवं प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

४७८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १९३३ । वे० सं० १८९९ । ट भण्डार ।

४७८७. नित्यनियमपूजाभाषा……। पत्र सं० १६ । ग्रा० ८३⁄४×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९९५ भादवा सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । अ भण्डार ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने प्रतिलिपि की थी ।

४७८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । ग भण्डार ।

विशेष—जयपुर में शुक्रवार की सहेली (संगीत सहेली) सं० १९५९ में स्थापित हुई थी । उसकी स्थापना के समय का बनाया हुआ भजन है ।

४७८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १९१६ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ४८ । ग भण्डार ।

४७९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १९६७ । वे० सं० २९२ । ङ भण्डार ।

४७९१. प्रति सं० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १९५९ । वे० सं० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष— पं० मोतीलालजी सेठी ने यति यशोदानन्दजी के मन्दिर में चढाई ।

४७९२. नित्यनैमित्तिकपूजापाठसंग्रह·········। पत्र सं० ५८ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । छ भण्डार ।

४७९३. नित्यपूजासंग्रह·······। पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत, अपभ्रंश । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७७ । ट भण्डार ।

४७९४. नित्यपूजासंग्रह·····। पत्र सं० ५ । आ० ६½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । ख भण्डार ।

४७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १९१६ बैशाख बुदी ११ । वे० सं० ११७ । ज भण्डार ।

४७९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १८९८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १९९५, २०९३) और हैं ।

४७९७. नित्यपूजासंग्रह···········। पत्र सं० २–३० । आ० ७¾×२½ इंच । भाषा–संस्कृत, प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९५९ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० १८२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १८३, १८४) और है ।

४७९८. नित्यपूजासंग्रह·······। पत्र सं० ३९ । आ० १०½×७ इंच । भाषा–संस्कृत, हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९५७ । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । ङ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २७, २८ तथा ३५ नहीं है कुछ पत्र भीग गये हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३२२) और हैं ।

४७९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । छ भण्डार ।

४८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २–३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठों का भी संग्रह है ।

४८०२. नित्यपूजा............। पत्र सं० १५ । आ० १२×५३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३७२, ३७३, ३७४, ३७६) और हैं ।

४८०३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३६४, ३६५) और है।

४८०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ६०३ । च भण्डार ।

४८०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमज्जिनवचने प्रकाशक............ संग्रहीतविद्वज्जबोधके तृतीयकाण्डे पूजनवर्णनो नाम अष्टोल्लास समाप्त ।

४८०६. निर्वाणकल्याणकपूजा............। पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२८ । अ भण्डार ।

४८०७. निर्वाणकांडपूजा ......। पत्र सं० ५ । आ० ८१/२×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६६८ सावण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११११ । अ भण्डार ।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि कोकलचन्द पंसारी ने ईश्वरलाल चादवाड़ से कराई थी ।

४८०८. निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा—स्वरूपचन्द । पत्र सं० १६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१६ कार्त्तिक बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । ग भण्डार ।

४८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६२७ । वे० सं० ३७६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३७७, ३७८) और है ।

४८१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १६३५ पौष सुदी ३ । वे० सं० ६०४ । च भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इन्द्रराज बोहरा ने पुस्तक लिखाकर मेघराज लुहाड़िया के मन्दिर में चढायी । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०५, ६०७) और हैं ।

४८११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० २११ । छ भण्डार ।

विशेष—सुन्दरलाल पांडे चौधरी चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४८१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २५५ । ज भण्डार ।

४८१३. निर्वाणक्षेत्रपूजा……। पत्र सं० ११। आ० ११×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १८७१। ले० काल सं० १९९९। पूर्ण। वे० सं० १३०५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०९९) और हैं।

४८१४. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८७१ भादवा बुदी ७। वे० सं० २१६। ज भण्डार। [गुटका साइज]

४८१५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८४ मंगसिर बुदी २। वे० सं० १८७। म्ह भण्डार।

४८१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६०६। च भण्डार।

विशेष— दूसरा पत्र नहीं है।

४८१७. निर्वाणपूजा……। पत्र सं० १। आ० १२×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७१८। अ भण्डार।

४८१८. निर्वाणपूजापाठ—मनरंगलाल। पत्र सं० ३३। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १८४२ भादवा बुदी २। ले० काल सं० १८८८ चैत्र बुदी ३। वे० सं० ८२। म्ह भण्डार।

४८१९. नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० ६×३½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६५। अ भण्डार।

४८२०. नेमिनाथपूजा……। पत्र सं० १। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३१४। अ भण्डार।

४८२१. नेमिनाथपूजाष्टक—शंभूराम। पत्र सं० १। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४२। अ भण्डार।

४८२२. नेमिनाथपूजाष्टक……। पत्र सं० १। आ० ६½×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२४। अ भण्डार।

४८२३. पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० १६। आ० ११½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७१। क भण्डार।

४८२४. प्रति सं० २। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १८७९। वे० सं० १०३७। अ भण्डार।

४८२५. पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल। पत्र सं० १२६। आ० ८×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५६। अ भण्डार।

४८२६. पञ्चकल्याणकपूजा—अरुणमणि। पत्र सं० ३६। आ० १२×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १६२३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५०। ख भण्डार।

४८२७. पञ्चकल्याणकपूजा—गुणकीर्त्ति। पत्र सं० २२। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल १६११। पूर्ण। वे० सं० ५४। ञ भण्डार।

४८२८. पञ्चकल्याणकपूजा—वादीभसिंह। पत्र सं० १८। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८६। अ भण्डार।

४८२९. पञ्चकल्याणकपूजा—सुयशकीर्त्ति। पत्र सं० ७-२६। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५८५। अ भण्डार।

४८३०. पञ्चकल्याणकपूजा—सुधासागर। पत्र सं० १६। आ० ११×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४०६। क भण्डार।

४८३१. पञ्चकल्याणकपूजा……। पत्र सं० १६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०८ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १००७। अ भण्डार।

४८३२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० ३०१। ख भण्डार।

४८३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३८४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३८५) और है।

४८३४ प्रति सं० ४। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १६३६ आसोज सुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० १२५ ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १३७, १८०) और है।

४८३५. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२। वे० सं० १६३। च भण्डार।

४८३६. प्रति सं० ६। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८२१। वे० सं० २३६। ञ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५) और है।

४८३७. पञ्चकल्याणकपूजा—छोटेलाल मित्तल। पत्र सं० १६। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा र० काल सं० १६१० भादवा सुदी १३। ले० काल सं० १६५२। पूर्ण। वे० स० ७३०। अ भण्डार।

विशेष—छोटेलाल बनारस के रहने वाले थे। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६७१, ६७२) और हैं।

४८३८. पञ्चकल्याणकपूजा—रूपचन्द। पत्र सं० १०४। आ० १२×५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६२। पूर्ण। वे० सं० ५३७। अ भण्डार।

४८३९. पञ्चकल्याणकपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८८७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १०८०, ११२०) और हैं ।

४८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९५४ चैत्र सुदी १ । वे० सं० ५० । ग भण्डार ।

४८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९५४ माह सुदी ११ । वे० सं० ६७ । घ भण्डार ।

विशेष—किशनलाल पापड़ीवाल ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७) और है ।

४८४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १९६१ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० ६१२ । च भण्डार ।

४८४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

४८४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० २९८ । ज भण्डार ।

४८४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२० । क भण्डार ।

४८४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १९२८ । वे० सं० ५३९ । व्य भण्डार ।

४८४७. पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल । पत्र सं० ७ । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९२२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—नीले कागजों पर है ।

४८४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—संघीजी के मन्दिर की पुस्तक है ।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र सं० ३१ । आ० ११३×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९१० भादवा सुदी १३ । ले० काल सं० १९१९ । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । च भण्डार ।

४८५०. पञ्चकल्याणकपूजा........। पत्र सं० २५ । आ० ९×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९९ । ख भण्डार ।

४८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १९३९ । वे० सं० १०० । ख भण्डार ।

४८५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३८७) और है ।

४८५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ६१३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१४) और है ।

४८५४. पञ्चकुमारपूजा........। पत्र सं० ७ । आ० ८३/४×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२ । झ भण्डार ।

४८५५. पञ्चक्षेत्रपालपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १४ । आ० १०×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । अ भण्डार ।

४८५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

४८५७. पञ्चगुरुकल्याणपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के शिष्य पांडे डूंगर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४८५८. पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन........। पत्र सं० ६१ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१० । क भण्डार ।

४८५९. पञ्चपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा........। पत्र सं० ४ । आ० ८३/४×६१/२ इंच । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५३ । ट भण्डार ।

४८६०. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७७ । अ भण्डार ।

४८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १९६ । च भण्डार ।

४८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १४० । च भण्डार ।

४८६३ पञ्चपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० ३२ । आ० १२×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × ले० काल सं० १७६१ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ५३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि शाहजहानाबाद में जयसिंहपुरा मे पं० मनोहरदास के पठनार्थ हुई थी ।

४८६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८५९ । वे० सं० ४११ । क भण्डार ।

विशेष—चूरू ग्राम में जानकीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४८६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८०३ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

४८६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६५) और है ।

४८६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० १६३ । ज भण्डार ।

४८६८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा……। पत्र सं० १५ । आ० १२×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१२ । क भण्डार ।

४८६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६२ आषाढ बुदी ८ । वे० सं० १६२ । ज भण्डार ।

४८७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७६७ । ट भण्डार ।

४८७१. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२० । छ भण्डार ।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र सं० ३५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १८६२ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०८६) और है ।

४८७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६२ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ५१ । ग भण्डार ।

४८७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १६८७ । वे० सं० ३८६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३६०) और है ।

४८७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० ६१६ । च भण्डार ।

४८७६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ५१ । म भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६१३ । वे० सं० १८७६ । ट भण्डार ।

विशेष—ईसरदा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा……। पत्र सं० ३६ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

४८७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । च भण्डार ।

४८८०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ३२१ । ञ भण्डार ।

४८८१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । ञ भण्डार ।

४८८२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८१ । वे० सं० १७१० । ट भण्डार ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी है ।

४८८३. पञ्चबालयतिपूजा……। पत्र सं० ६ । आ० ९×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४८८४. पञ्चमङ्गलपूजा………। पत्र सं० २५ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । क्ष भण्डार ।

४८८५. पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १८२८ भादवा सुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । क भण्डार ।

४८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३९७ । क भण्डार ।

४८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८८३ श्रावण सुदी ७ । वे० सं० १९८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भुनाथ ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १९९) और है ।

४८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४८८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८९२ श्रावण बुदी ५ । वे० सं० १७० । ज भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री विमलनाथ चैत्यालय मे गुरु हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९०. पञ्चमीव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१० । क भण्डार ।

४८९१. पञ्चमीव्रतोद्यापन—श्री हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३९८ । क भण्डार ।

विशेष—शम्भूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९१५ आसोज बुदी ५ । वे० सं० २०० । च भण्डार ।

४८९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१२ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४८९४. पञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० १० । आ० ८½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५३ । ख भण्डार ।

विशेष—गाजी नारायन शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९५. प्रति सं० २ | पत्र सं० ७ | ले० काल सं० १९०५ आसोज बुदी १२ | वे० सं० ६४ | क भण्डार |

४८९६. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ५ | ले० काल X | वे० सं० ३८८ | भण्डार |

४८९७. पञ्चमेरुपूजा—टेकचन्द | पत्र सं० ११ | आ० १२X८ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा | र० काल X | ले० काल X | पूर्ण | वे० सं० ७३२ | अ भण्डार |

४८९८. प्रति सं० २ | पत्र सं० ३३ | ले० काल सं० १८८३ | वे० सं० ६१९ | च भण्डार |

४८९९. प्रति सं० ३ | पत्र सं० २९ | ले० काल सं० १९७९ | वे० सं० २१३ | छ भण्डार |

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में लिखा गया | कीमत ४ ।।।)

४९००. पञ्चमेरुपूजा—द्यानतराय | पत्र सं० ६ | आ० १२X५½ इञ्च | भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा | र० काल X | ले० काल सं० १९६१ कार्त्तिक सुदी ८ | पूर्ण | वे० सं० ५४७ | अ भण्डार |

४९०१. प्रति सं० २ | पत्र सं० ३ | ले० काल X | वे० सं० ३९५ | क भण्डार |

४९०२. पञ्चमेरुपूजा—भूधरदास | पत्र सं० ८ | आ० ८¾X४ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा | र० काल X | ले० काल X | पूर्ण | वे० सं० १६५६ | अ भण्डार |

विशेष—अन्त में संस्कृत पूजा भी है जो अपूर्ण है | इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५१८) और है |

४९०३. प्रति सं० २ | पत्र सं० १० | ले० काल X | वे० सं० १४६ | छ भण्डार |

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है |

४९०४. पञ्चमेरुपूजा—डालूराम | पत्र सं० ४४ | आ० ११X५ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा | र० काल X | ले० काल सं० १९३० | पूर्ण | वे० सं० ४१५ | क भण्डार |

४९०५. पञ्चमेरुपूजा—सुखानन्द | पत्र सं० २२ | आ० ११X५ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा | र० काल X | ले० काल X | पूर्ण | वे० सं० ३९६ | क भण्डार |

४९०६. पञ्चमेरुपूजा······ | पत्र सं० २ | आ० ११X५½ इंच | भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा | र० काल X | ले० काल X | पूर्ण | वे० सं० ६६६ | अ भण्डार |

४९०७. प्रति सं० २ | पत्र सं० ५ | ले० काल X | अपूर्ण | वे० सं० ४८७ | अ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ४७६) और है |

४९०८. पञ्चमेरुउद्यापनपूजा—भ० रत्नचन्द्र | पत्र सं० ९ | आ० १०½X५ इंच | भाषा-संस्कृत | विषय-पूजा | र० काल X | ले० काल सं० १८६१ प्र० सावन सुदी ७ | पूर्ण | वे० सं० २०१ | च भण्डार |

४९०९. प्रति सं० २ | पत्र सं० ७ | ले० काल X | वे० सं० ७४ | च भण्डार |

४५१०. पद्मावतीपूजा..............। पत्र सं० ५ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० स० ११८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है ।

४५११. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । च भण्डार ।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र, पद्मावतीकवच, पद्मावतीपटल, एवं पद्मावतीसहस्रनाम भी है । अन्त में २ यन्त्र भी दिये हुये हैं । महायंत्र लिखने की विधि भी दी हुई है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०५) और है ।

४५१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८० । म भण्डार ।

४५१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

४५१४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०० । ज भण्डार ।

४५१५. पद्मावतीमंडलपूजा........। पत्र स० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७६ । अ भण्डार ।

विशेष—शांतिमंडल पूजा भी है ।

४५१६. पद्मावतिशान्तिक........। पत्र सं० १७ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति मन्त्र सहित है ।

४५१७. पद्मावतीसहस्रनाम व पूजा........। पत्र सं० १४ । आ० १०×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३० । क भण्डार ।

४५१८. पल्यविधानपूजा—ललितकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० ११×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । अ भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४५१९. पल्यविधानपूजा—रत्ननन्दि । पत्र स० १४ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—नरसिंहदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । च भण्डार ।

४५२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १७६० वैशाख बुदी ६ । वे० सं० ११२ । च भण्डार ।

विशेष—बघेरा नगर (ढूंढाड़) में पाण्डे श्री ज्ञानकीर्ति के उपदेश से प्रतिलिपि हुई थी ।

४९२२. पल्यविधानपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५३ । क भण्डार ।

४९२३. पल्यविधानपूजा·······। आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७५ । ख भण्डार ।

४९२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ५ । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण । वे० सं० १०५४ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४९२५. पल्यव्रतोद्यापन—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५८३, ६०७) और हैं ।

४९२६. पल्योपमोपवासविधि·······। पत्र सं० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं उपवास विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८४ । क भण्डार ।

४९२७. पार्श्वजिनपूजा—साह लोहट । पत्र सं० २ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६० । ख भण्डार ।

४९२८. पार्श्वनाथपूजा·······। पत्र सं० ६ । आ० ७×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६२ । ख भण्डार ।

४९२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

४९३०. पुण्याहवाचन·······। पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शान्ति विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ५५६, ११६१, १८०२) और हैं ।

४९३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

४९३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८०८ जेठ सुदी ३ । वे० सं० २७ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशन से प्रतिलिपि कराई थी ।

४९३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १९६४ पौष सुदी १० । वे० सं० २००६ । ट भण्डार ।

४९३४. पुरंदरव्रतोद्यापन……। पत्र सं० ९। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९११ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ७२। घ भण्डार।

४९३५. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा—भ० रतनचन्द। पत्र सं० ५। आ० १०½×७½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १६८१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२३। च भण्डार।

विशेष—यह रचना सागवाडपुर में श्रावकों की प्रेरणा से भट्टारक रतनचन्द ने सं० १६८१ मे लिखी थी।

४९३६. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १९२४ आसोज सुदी १०। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति इसी वेष्टन में और है।

४९३७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३८७। ञ भण्डार।

४९३८. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५३। अ भण्डार।

४९३९. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा……। पत्र सं० ८। आ० १०×४¾ इंच। भाषा-संस्कृत प्राकृत। र० काल ×। ले० काल सं० १८६३ द्वि० श्रावण सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २२२। च भण्डार।

४९४०. पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन—पं० गंगादास। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वे० सं० ४८०। अ भण्डार।

विशेष—गंगादास भट्टारक धर्मचन्द के शिष्य थे। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३३६) और है।

४९४१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८२ आसोज बुदी १४। वे० सं० ७८। झ भण्डार।

४९४२. पूजाक्रिया……। पत्र सं० २। आ० ११½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा करने की विधि का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२३। छ भण्डार।

४९४३. पूजापाठसंग्रह……। पत्र सं० २ से ४०। आ० ११×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५५। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७८) और है।

४९४४. पूजापाठसंग्रह……। पत्र सं० ३८। आ० ७×५¾ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३१९। अ भण्डार।

विशेष—पूजा पाठ के ग्रन्थ प्रायः एक से है। अधिकांश ग्रन्थों में वे ही पूजायें मिलती हैं, फिर भी जिनका विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें यहां दिया जारहा है।

४९४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १९३७ । वे० सं० ५६० । भी भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

१. पुष्पदन्त जिनपूजा — संस्कृत
२. चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा ”
३. चन्द्रप्रभपूजा ”
४. शान्तिनाथपूजा ”
५. मुनिसुव्रतनाथपूजा ”
६. दर्शनस्तोत्र—पद्मनन्दि प्राकृत ले० काल सं० १९३७
७. ऋषभदेवस्तोत्र ” ”

४९४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८९९ द्वि० चैत्र सुदी १ । वे० सं० ४५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७२९, ७३३, १३७०, २०१७) और हैं ।

४९४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० ४८१ । क भण्डार ।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

४९४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८५ । ले० काल × । वे० सं० ४८० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं ।

पल्यविधानव्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
बृहद्षोडशकारणपूजा	—	”
ज्येष्ठजिनवरव्रतोद्यापनपूजा	—	”
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	प्राकृत
चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	विजयकीर्ति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	”
जम्बूद्वीपपूजा	पं० जिनदास	”
[illegible]	—	”
[illegible]	—	”

४६४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ से ११६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

विशेष—मुख्य पूजायें निम्न प्रकार हैं—

जिनसहस्रनाम	—	संस्कृत
षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	"
जिनगुणसंपत्तिपूजा	भ० रत्नचन्द	"
णमोकारपञ्चविंशतिकापूजा	—	"
सारस्वतमंत्रपूजा	—	"
धर्मचक्रपूजा	—	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द	"

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४७६, ४७६) और हैं।

४६५०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । ख भण्डार ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

४६५१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० १०४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) और है।

४६५२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८४ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ४३६ । व्य भण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

४६५३. पूजापाठसंग्रह........। पत्र सं० २२ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२८ । अ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है । सामान्य पूजा पाठोंकी इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८८२, ६६४, १०००) और हैं ।

४६५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६५३ आषाढ सुदी १४ । वे० सं० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ४७४, ४७५, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४६१, ४६२) और हैं ।

४६५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट भण्डार ।

४६५६. पूजापाठसंग्रह............। पत्र सं० ४० । सा० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

आदिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्मेदशिखरपूजा	—	"
विद्यमानबीसतीर्थङ्करों की पूजा	—	र० काल सं० १६४१
अनुभव विलास		ले० " १६४६
[पदसंग्रह]		हिन्दी

४६५७. प्रति स० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२) और हैं ।

४६५८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजा पाठ है—

चौबीसदण्डक	—	दौलतराम
विनती गुरुओं की	—	भूधरदास
बीस तीर्थङ्कर जयमाल	—	—
सोलहकारणपूजा	—	द्यानतराय

४६५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६० फागुण सुदी २ । वे० सं० २२० । अ भण्डार ।

४६६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ से २२२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७० । ञ भण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

४६६१. पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचंद । पत्र सं० । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

जयपुर नगर सम्बन्धी चैत्यालयों की वंदना	स्वरूपचन्द	हिन्दी
ऋद्धि सिद्धि शतक	"	"
महावीरस्तोत्र	"	"
जिनपञ्जरस्तोत्र	"	"
त्रिलोकसार चौपई	"	"
चमत्कारजिनेश्वरपूजा	"	"
सुगंधदशमीपूजा	"	"

४९६२. पूजाप्रकरण—उमास्वामी । पत्र सं० २ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—पूजक आदि के लक्षण दिये हुये हैं । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमदुमास्वामीविरचितं प्रकरणं ॥

४९६३. पूजामहात्म्यविधि········ । पत्र सं० ३ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय–पूजा विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । च भण्डार ।

४९६४. पूजावर्णविधि········। पत्र सं० ६ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजाविधि । र० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १४८७ । अ भण्डार ।

४९६५. पूजापाठ········। पत्र सं० १४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८३६ बैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १०९ । ख भण्डार ।

विशेष—माणकचन्द ने प्रतिलिपि की थी । अन्तिम पत्र बाद का लिखा हुआ है ।

४९६६. पूजाविधि········ ····। पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय- विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७८६ । अ भण्डार ।

४९६७. पूजाविधि········ । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । च भण्डार ।

४९६८. पूजाष्टक—आशानन्द । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२११ । अ भण्डार ।

४९६९. पूजाष्टक—लोहट । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०९ । अ भण्डार ।

४९७०. पूजाष्टक—अभयचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१० । अ भण्डार ।

४९७१. पूजाष्टक··········। पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१३ । अ भण्डार ।

४९७२. पूजाष्टक··········। पत्र सं० ११ । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७८ । ट भण्डार ।

४६७३. पूजाष्टक—विश्वभूषण । पत्र सं० १ । ग्रा० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१२ । श्र भण्डार ।

४६७४. पूजासंग्रह……। पत्र सं० ३३१ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० ४६० से ४७४ । श्र भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र सं०	वे० सं०
१. कांजीव्रतोद्यापनमंडलपूजा	×	संस्कृत	१०	४७४
२. श्रुतज्ञानव्रतोद्योतनपूजा	×	हिन्दी	२०	४७३
३. रोहिणीव्रतपूजा	मंडलाचार्य केशवसेन	संस्कृत	१२	४७२
४. दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	×	"	२७	४७१
५. लब्धिविधानपूजा	×	"	१२	४७०
६. ध्वजारोपणपूजा	×	"	११	४६९
७. रोहिणीव्रतोद्यापन	×	"	१३	४६८
८. अनन्तव्रतोद्यापनपूजा	ग्रा० गुणचन्द्र	"	३०	४६७
९. रत्नत्रयव्रतोद्यापन	×	"	१६	४६६
१०. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	×	"	१२	४६५
११. शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	"	२०	४६४
१२. गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	"	२२	४६३
१३. त्रिलोकसारपूजा	×	"	८	४६२
१४. पार्श्वनाथपूजा (नवग्रहपूजाविधान सहित)		"	१८	४६१
१५. त्रिलोकसारपूजा	×	"	१०	४६०

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११२६, २२१६) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं।

४६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १६५८ । वे० सं० ४७५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा
त्रिपञ्चाशतव्रतोद्यापन	—	संस्कृत

नाम	कर्त्ता	भाषा
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	संस्कृत
पञ्चकल्याणकपूजा	—	"
चौसठ शिवकुमारका कांजी की पूजा	ललितकीर्त्ति	"
गणधरवलयपूजा	—	"
सुगंधदशमीकथा	श्रुतसागर	"
चन्दनषष्ठिकथा	"	"
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्ति	"
नन्दीश्वरविधानकथा	हरिषेण	"
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	"

४६७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ४८३ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
सुखसंपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	×	संस्कृत
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	×	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	"
प्रतिमासांतचतुर्दशी व्रतोद्यापनपूजा	×	"

विशेष—ताराचन्द [जयसिंह के मन्त्री] ने प्रतिलिपि की थी ।

नाम	कर्त्ता	भाषा
लघुकल्याण	×	संस्कृत
सकलीकरणविधान	×	"

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४७७, ४७८) और है जिनमे सामान्य पूजायें हैं ।

४६७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १११ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है— सिद्धचक्रपूजा, कलिकुण्डमन्त्रपूजा, आनन्द स्तवन एवं गणधरवलय जयमाल । प्रति प्राचीन तथा मन्त्र विधि सहित है ।

४६७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४६४ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६०, ४६४) और हैं ।

४६७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । च भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एवं इक्ष्वाकार पूजा का संग्रह है ।

४६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५५ से ७३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८ से ११५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८०० आषाढ सुदी १ । वे० सं० ६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	संस्कृत	१–१६
नन्दीश्वरपूजा	—	"	१६–२४
सकलीकरणविधि	—	"	२४–२५
लघुस्वयंभूपाठ	समन्तभद्र	"	२५–२६
अनन्तव्रतपूजा	श्रीभूषण	"	२६–३३
भक्तामरस्तोत्रपूजा	केशवसेन	"	३३–३६

आचार्य विश्वकीर्ति की सहायता से रचना की गई थी ।

पञ्चमीव्रतपूजा	केशवसेन	"	३६–४५

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६६, ४७०) और हैं जिनमें नैमित्तिक पूजायें हैं ।

४६८३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४. पूजासंग्रह........। पत्र सं० ३४ । आ० १०½×५ इञ्च । संस्कृत, प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, अकृत्रिमचैत्यालयपूजा, सिद्धपूजा, गुर्वावलीपूजा, बीसतीर्थङ्करपूजा, क्षेत्रपालपूजा, षोडश कारणपूजा, क्षीरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (ज्ञानभूषण) एवं शान्तिपाठ आदि हैं ।

४६८५. पूजासंग्रह........। पत्र सं० २ से ४५ । आ० ७¾×५¾ इंच । भाषा–प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २२८) और है ।

४६८६. पूजासंग्रह........। पत्र सं० ४६७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी । विषय–संग्रह । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० २५० । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा	र० काल	ले० काल	पत्र
१. भक्तामरपूजा	—	संस्कृत			
२. सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	”		सं० १८८६ ज्येष्ठ सुदी ११	
३. बीसतीर्थङ्करपूजा	—	”		×	अपूर्ण
४. नित्यनियमपूजा	—	संस्कृत हिन्दी			
५. अनन्तपूजा	—	संस्कृत			
६. षण्णवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	”	×	सं० १८८६	पूर्ण
७. ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	”			
८. नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्त्ति	अपभ्रंश			
९. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	संस्कृत [मंडल चित्र सहित]			
१०. रत्नत्रयपूजा	—	”			
११. प्रतिमासान्त चतुर्दशीपूजा	अक्षयराम	”	र० काल १८००	ले० काल १८२७	
१२. रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	”		” ” १८२६	
१३. बारहव्रतो का ब्योरा	—	हिन्दी			
१४. पंचमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत		ले० काल १८२०	
१५. पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	”			
१६. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	”		ले० काल १८६२	
१७. पंचाधिकार	—	”			
१८. पुरन्दरपूजा	—				
१९. अष्टाह्निकाव्रतपूजा	—	”			
२०. परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	”			
२१. पल्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	”			
२२. रोहिणीव्रतपूजा मंडल चित्र सहित	केशवसेन	”			
२३. जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	”			
२४. सौख्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	”			

२५. कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	संस्कृत	
२६. सोलहकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"	
२७. द्विपंचकल्याणकपूजा	—	"	ले० काल सं० १८३१
२८. गन्धकुटीपूजा	—	"	
२९. कर्मदहनपूजा	—	"	ले० काल सं० १८२८
३०. कर्मदहनपूजा	—	"	
३१. दशलक्षणपूजा	—	"	
३२ षोडशकारणजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	
३३. दशलक्षणजयमाल	भावशर्मा	प्राकृत	अपूर्ण
३४. त्रिकालचौबीसीपूजा	—	संस्कृत	ले० काल १८५०
३५ लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	"	
३६. अंकुरारोपणविधि	आशाधर	"	
३७. णमोकारपैंतीसी	कनककीर्त्ति	"	
३८. मौनव्रतोद्यापन	—	"	
३९. शान्तिचक्रपूजा	—	"	
४०. सप्तपरमस्थानकपूजा	—	"	
४१. सुखसंपत्तिपूजा	—	"	
४२. क्षेत्रपालपूजा	—	"	
४३. षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	"	
४४. चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	"	ले० काल १८३०
४५ णमोकारपैंतीसीपूजा	अक्षयराम	"	ले० काल १८२७
४६. पञ्चमीउद्यापन	—	संस्कृत हिन्दी	
४७ त्रिपञ्चाशतक्रिया	—	"	
४८. कञ्जिकाव्रतोद्यापन	—	"	
४९. मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"	
५०. पञ्चमीव्रतपूजा	—	"	ले० काल १८२७

३१. नवग्रहपूजा	—	संस्कृत हिन्दी	ले० काल १८१७
३२. रत्नत्रयपूजा	—	"	
३३. दशलक्षणजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	

टब्बा टीका सहित है।

५१८७. पूजासंग्रह……। पत्र सं० १११। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११०। ख भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	र० काल सं० १८६८
सम्मेदशिखरपूजा	×	"	
निर्वाणक्षेत्रपूजा	×	"	र० काल सं० १८१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	र० काल सं० १८६७
गिरनारक्षेत्रपूजा	×	"	
वास्तुपूजाविधि	×	संस्कृत	
नांदीमंगलपूजा	×	"	
शुद्धिविधान	देवेन्द्रकीर्ति	"	

५१८८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० १४५। छ भण्डार।

५१८९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८५। ले० काल ×। वे० सं० ३१। म भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है—

पञ्चकल्याणकमंगल	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र १–३
पञ्चकल्याणकपूजा	×	संस्कृत	" ४-१२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द	हिन्दी	" १३–२६
पञ्चपरमेष्ठीपूजाविधि	यशोनन्दि	संस्कृत	" २७–४६
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	हिन्दी	" १–११
नन्दीश्वरव्रतविधान	"	"	" १२–२६

५१९०. प्रति सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६०। ट भण्डार।

४९९१. पूजा एवं कथा संग्रह—खुशालचन्द । पत्र सं० ५० । आ० ८×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं तथा कथाओं का संग्रह है ।

चन्दनषष्ठीपूजा, दशलक्षणपूजा, षोडशकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा । तप लक्षणकथा, मेरुपंक्ति तप की कथा, सुगन्धदशमीव्रतकथा ।

४९९२. पूजासंग्रह—हीराचन्द । पत्र सं० ५१ । आ० ६¾×५¾ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । क भण्डार ।

४९९३. पूजासंग्रह………… । पत्र सं० ६ । आ० ८¾×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—पंचमेरु पूजा एवं रत्नत्रय पूजा का संग्रह है ।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७२४, ६७१, १३१६, १३७७) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं ।

४९९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ग भण्डार ।

४९९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । ङ भण्डार ।

४९९६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १९५५ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ७३ । घ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

देवपूजा, सिद्धपूजा एवं शान्तिपाठ, पंचमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजा द्यानतराय कृत । अनन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एवं शास्त्रपूजा ।

४९९७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८६ क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४८७, ४८८, ४८६, ४८५, ४९३) और हैं जो सभी अपूर्ण हैं ।

४९९८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वे० सं० ६३७ । च भण्डार ।

४९९९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०००. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३४ ले० काल × । वे० सं० १२२ । ञ भण्डार ।

विशेष—पंचकल्याणकपूजा, पंचपरमेष्ठीपूजा एवं नित्य पूजायें हैं ।

५००१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९३५ । ट भण्डार ।

५००२. पूजासंग्रह—रामचन्द । पत्र सं० २० । आ० ११३×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ से चन्द्रप्रभ तक की पूजायें हैं ।

५००३. पूजासार………। पत्र सं० ८६ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । अ भण्डार ।

५००४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३०) और है ।

५००५. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० १४ । आ० १०×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६०० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८७ । अ भण्डार ।

विशेष—दीवान ताराचन्द ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५००६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०० भादवा बुदी १० । वे० सं० ४८४ । क भण्डार ।

५००७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २९५ । ख भण्डार ।

५००८. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—रामचन्द । पत्र सं० १२ । आ० १२३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३८६ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंह महाराज के दीवान ताराचन्द श्रावक ने रचना कराई थी ।

५००९. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा………। पत्र सं० १३ । आ० १०×७३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८०० । पूर्ण । वे० सं० ५०० । क भण्डार ।

५०१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८७९ आसोज बुदी ९ । वे० सं० २३३ । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल मोहा का ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । दीवान अमरचन्दजी संगही ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

५०११. प्रतिष्ठादर्श—भ० श्री राजकीर्त्ति । पत्र सं० २१ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा (विधान) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०१ क भण्डार ।

५०१२. प्रतिष्ठादीपक—पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र सं० १४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५०१३. प्रतिष्ठापाठ—आ० वसुनन्दि (अपर नाम जयसेन) । पत्र सं० १३१ । आ० ११३×८३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९४६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४८५ । क भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी हैं ।

५०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १९४९ । वे० सं० ४८७ । क भण्डार ।

विशेष—३९ पत्रों पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं ।

५०१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १९४६ । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—बालाबक्स व्यास ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अन्त में एक अतिरिक्त पत्र पर अङ्कस्थापनार्थ मूर्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है । उसमे अङ्क लिखे हुये हैं ।

५०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७१ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्कुंदकुंदाचार्य पट्टोदयभूधरदिवामणि श्रीवसुबिन्द्वाचार्येण जयसेनापरनामकेन विरचितः । प्रतिष्ठासारः पूर्णमगमतः ।

५०१७. प्रतिष्ठापाठ—आशाधर । पत्र सं० ११९ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल सं० १२८५ आसोज सुदी १५ । ले० काल सं० १८८४ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२ । ञ भण्डार ।

५०१८. प्रतिष्ठापाठ…… । पत्र सं० १ । आं० ३३ गज लंबा १० इंच चौड़ा । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४० । अ भण्डार ।

विशेष—यह पाठ कपड़े पर लिखा हुआ है । कपड़े पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं । यह कपड़े की १० इंच चौड़ी पट्टी पर सिमटता हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सद्धिः ॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ संवतु १५१६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १३ तेरसि सोमवासरे अश्विनि नक्षत्रे श्रीहट्टकापथे श्रीसर्वज्ञचैत्यालये श्रीमूलसंघे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्रीरत्नकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे श्रीपद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्रदेवा ॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः ॥

५०१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८९१ चैत्र बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ५०४ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में प्रथम ९ पत्र में प्रतिष्ठा में काम आने वाली सामग्री का विवरण दिया हुआ है ।

५०२०. प्रतिष्ठापाठभाषा—बाबा दुलीचंद । पत्र सं० २६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८९ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता आचार्य वसुविन्दु हैं । इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है । दक्षिण में कुंकुण नामके देश सह्द्याचल के समीप रत्नगिरि पर लालाह नामक राजाका बनवाया हुआ विशाल चैत्यालय है । उसकी प्रतिष्ठा होने के निमित्त ग्रन्थ रचा गया ऐसा लिखा है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४९०) और है ।

५०२१. प्रतिष्ठाविधि..........। पत्र सं० १७६ से १९९ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०३ । ङ भण्डार ।

५०२२. प्रतिष्ठासार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० ९९ । आ० १२×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९५१ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४९१ । क भण्डार ।

५०२३. प्रतिष्ठासार........। पत्र सं० ८५ । आ० १२३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९३७ आषाढ सुदी १० । वे० सं० २८९ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी । पत्रों के नीचे के भाग पानी से गले हुये हैं ।

५०२४. प्रतिष्ठासारसंग्रह—आ० वसुनन्दि । पत्र सं० २१ । आ० १३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

५०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९९० । वे० सं० ४५९ । अ भण्डार ।

५०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १९७७ । वे० सं० ४९२ । क भण्डार ।

५०२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १७३९ बैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । च भण्डार ।

विशेष—तीसरे परिच्छेद से है ।

५०२८. प्रतिष्ठासारोद्धार..........। पत्र सं० ७६ । आ० १०३×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३४ । ख भण्डार ।

५०२९. प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह..........। पत्र सं० २१ । आ० १३×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९५१ । पूर्ण । वे० सं० ४९३ । क भण्डार ।

५०३०. प्राणप्रतिष्ठा…………। पत्र सं० ३। आ० ६३/४×६३/४ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७। ङ भण्डार।

५०३१. बाल्यकालवर्णन…………। पत्र सं० ४ से २३। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० २६७। छ भण्डार।

विशेष—बालक के गर्भमें आने के प्रथम मास से लेकर दसवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है।

५०३२. बीसतीर्थङ्करपूजा—थानजी अजमेरा। पत्र सं० ५८। आ० १२३/४×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करों की पूजा। र० काल सं० १६३४ आसोज सुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० २०६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

५०३३. बीसतीर्थङ्करपूजा…………। पत्र सं० ५३। आ० १३×७३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६४५ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ३२२। छ भण्डार।

५०३४. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७१। ऋ भण्डार।

५०३५. भक्तामरपूजा—श्री ज्ञानभूषण। पत्र सं० १०। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल × ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३६। क भण्डार।

५०३६. भक्तामरपूजाउद्यापन—श्री भूषण। पत्र सं० १३। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २५२। च भण्डार।

विशेष— १०, ११, १२वां पत्र नहीं है।

५०३७. प्रति सं० २। पत्र स० ८। ले० काल सं० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी १। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय में हरवंशलाल ने प्रतिलिपि की थी।

५०३८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८६१ श्रावण सुदी ५। वे० सं० १२०। छ भण्डार।

५०३९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६११ आसोज बुदी १२। वे० सं० ५० । ऋ भण्डार।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है।

५०४०. भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा—विश्वकीर्ति। पत्र सं० ७। आ० १०३/४×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १६६६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३७। क भण्डार।

विशेष— निधि निधि रस चंद्रोसंख्य संवत्सरेहि
विशदनभसिमासे सप्तमी मंदवारे ।
नलवरवरदुर्गे चन्द्रनाथस्य चैत्ये
विरचितमिति भक्त्या केशवामंतमेन ।।

५०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ५३८ । क भण्डार ।

५०४२. भक्तामरस्तोत्रपूजा……। पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । क भण्डार ।

५०४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५१ । च भण्डार ।

५०४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । ञ भण्डार ।

५०४५. भाद्रपदपूजासंग्रह— द्यानतराय । पत्र सं० २६ से ३६ । आ० १२३/४×७३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०४६. भाद्रपदपूजासंग्रह…… ……। पत्र सं० २४ से ३१ । आ० १२३/४×७३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०४७. भावजिनपूजा……। पत्र सं० १ । आ० ११३/४×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००७ । ट भण्डार ।

५०४८. भावनापच्चीसीव्रतोद्यापन…………। पत्र सं० ३ । आ० १२३/४×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०२ । क भण्डार ।

५०४९. मंडलों के चित्र…………। पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा सम्बन्धी मण्डलों का चित्र । ले० काल × । वे० सं० १३८ । ख भण्डार ।

विशेष—चित्र सं० ५२ है । निम्नलिखित मण्डलों के चित्र हैं—

१. श्रुतस्कंध	(कोष्ठ २)	७. ऋषिमंडल	(„ ५६)
२. क्षेपनक्रिया	(कोष्ठ ५३)	८. सप्तऋषिमंडल	(„ ७)
३. बृहद्सिद्धचक्र	(„ ८६)	९. सोलहकारण	(„ २५६)
४. जिनगुणसंपत्ति	(„ १०१)	१०. चौबीसीमहाराज	(„ १२०)
५. सिद्धकूट	(„ १०१)	११. शांतिचक्र	(„ २४)
६. चिंतामणिपार्श्वनाथ	(„ ५६)	१२. भक्तामरस्तोत्र	(„ ४८)

१३. बारहमास की चौदस (कोष्ठ १६६)
१४. पांचमाह की चौदस („ २५)
१५. अनन्तका मंडल („ १६६)
१६. मेघमालाव्रत („ १५०)
१७. रोहिणीव्रत (कोष्ठ ६१)
१८. लब्धिविधान („ ८१)
१९. रत्नत्रय („ २६)
२०. पञ्चकल्याणक („ १२०)
२१. पञ्चपरमेष्ठी („ १६३)
२२. रविवारव्रत („ ८१)
२३. मुक्तावली („ ८१)
२४. कर्मदहन („ १४८)
२५. कांजीबारस („ ६४)
२६. कर्मचूर („ ६४)
२७ ज्येष्ठजिनवर („ ४६)
२८. बारहमाह की पञ्चमी („ ६५)
२९. बारमाह की पञ्चमी („ २५)
३०. फलकांदल [पञ्चमेरु] („ २५)
३१. पांचवासों का मंडल („ २५)
३२. अंकुरारोपण (कोष्ठ)
३३. गणधरवलय („ ४८)
३४. नवग्रह („ ६)
३५. सुगन्धदशमी („ ६०)
३६. सारसुतयंत्रमंडल („ २८)
३७. शास्त्रजी का मंडल („ १२)
३८. अक्षयनिधिमंडल („ १५०)
३९. अठाई का मंडल („ ५२)
४०, अंकुरारोपण („ —)
४१. कलिकुंडपार्श्वनाथ („ ८)
४२. विमानशुद्धिशांतिक („ १०८)
४३. वासठकुमार („ ५२)
४४. धर्मचक्र („ १५७)
४५. लघुशान्तिक („ —)
४६. विमानशुद्धिशांतिक („ ८१)
४७. छिनवै क्षेत्रपाल व चौबीस तीर्थङ्कर („ २४)
४८. श्रुतज्ञान („ १५८)
४९. दशलक्षण („ १००)

५०५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३८ क । ख भण्डार ।

५०५१. मंडपविधि......। पत्र सं० ४ । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० १२४० । अ भण्डार ।

५०५२. मंडपविधि............। पत्र सं० १ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८ । ङ भण्डार ।

५०५३. मध्यलोकपूजा.......। पत्र सं० ५६ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

५०५४. महावीरनिर्वाणपूजा ...... । पत्र स० ३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८२१ । पूर्ण । वे० सं० ६१० । अ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा प्राकृत मे और है ।

५०५५. महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा .... । पत्र स० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२१६) और है ।

५०५६. महावीरपूजा—वृन्दावन । पत्र स० १ । आ० ८×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

५०५७. मांगीतुङ्गीगिरिमंडलपूजा—विश्वभूषण । पत्र स० १३ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल स० १७५६ । ले० काल स० १६४० वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १४२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १८ पद्यो मे विश्वभूषण कृत शतनाम स्तोत्र है ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीमूलसंघे विलकुद्विभाति श्रीकुन्दकुन्दाख्यमुनीन्द्रवन्द्र ।
महद्बलात्कारगणाविगच्छ लब्धप्रतिष्ठा किलपद्मनाम ।।१।।
जातोऽसौ किलधर्म्मकीर्त्तिरमल वादीभ सार्दूलवत
साहित्यागमतर्कपाठ्यपटुचारित्रभारोद्वह ।
तत्पट्टे मुनिशीलभूषणगणि शीलांबरवेष्टित
तत्पट्टे मुनि ज्ञानभूषणमहान सौख्यस्कला केवली
श्रीमज्जगद्भूषनवेदभूषनैयायिकाचारविचारदक्ष ।
कवीन्द्रचन्द्रोरिव कालिदास-पट्टे तदीये रभवत्प्रतापी ।।३।।
तत्पट्टे प्रकटो जात विश्वभूषण योगिन ।
तैनेद रचितो यत्र भव्यात्मासुख हेतवे ।।४।।
षटवह्नि रिषिश्चन्द्रवासरे माघमासके
एकादश्यामगमत्पूर्णमेवात्मलिकपुरे ।।५।।

५०५८ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८६६ । वे० सं० ११७६ । ट भण्डार ।

विशेष—मांगी तु गी की कमलाकार मण्डल रचना भी है । पद्यो का कुछ हिस्सा चूहोने काट रखा है ।

५०५९. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन ...... । पत्र सं० २ । आ० १२½×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९२८ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । छ भण्डार ।

५०६०. मुक्तावलीव्रतपूजा ......। पत्र सं० २ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ । ख भण्डार ।

५०६१. मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा......... । पत्र सं० १६ । आ० ११½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० २७६ । ख भण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५०६२ मुक्तावलीव्रतविधान ....। पत्र सं० २४ । आ० ८½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधान । र० काल × । ले० काल सं० १९२५ । पूर्ण । वे० सं० २४८ । छ भण्डार ।

५०६३. मुक्तावलीपूजा—वर्णी सुखसागर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१५ । क भण्डार ।

५०६४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५१६ । क भण्डार ।

५०६५. मेघमालाविधि .... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-व्रत विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८९६ । अ भण्डार ।

५०६६. मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा .... । पत्र सं० ३ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रत पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५८० । अ भण्डार ।

५०६७. रत्नत्रयउद्यापनपूजा ...। पत्र सं० २६ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९२९ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—१ अपूर्ण प्रति और है ।

५०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ६६ । ञ भण्डार ।

५०६९. रत्नत्रयजयमाल ...। पत्र सं० ४ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७१) और है ।

५०७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९१२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १५८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५६) और है ।

५०७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६४३ । क भण्डार ।

५०७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ भादवा सुदी १२ । वे० स० २६७ । ख भण्डार ।

५०७३. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० २०० । म्ह भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०१) और है ।

५०७४. रत्नत्रयजयमाल ...... । पत्र सं० ६ । आ० १०×७ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८३३ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है । पत्र ५ से अनन्तव्रतकथा श्रुतसागर कृत तथा अनन्तनाथ पूजा दी हुई है ।

५०७५. प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८१६ सावन सुदी १३ । वे० स० १२८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां इसी वेष्टन मे और हैं ।

५०७६. रत्नत्रयजयमाल ...... । पत्र सं० ६ । आ० १०३/४×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८२७ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७४१) और है ।

५०७७. प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ७८४ । च भण्डार ।

५०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० स० २०३ । म्ह भण्डार ।

५०७९. रत्नत्रयजयमालाभाषा—नथमल । पत्र स० ५ । आ० १२×७१/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १९२२ फागुन सुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१३ । अ भण्डार ।

५०८०. प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १९३७ । वे० स० ६३१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतियां (वे० सं० ६२६, ६३०, ६२७, ६२८, ६२५) और है ।

५०८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । घ भण्डार ।

५०८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९२८ कार्तिक बुदी १० । वे० स० ६४४ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ६४४, ६४६) और हैं ।

५०८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६० । छ भण्डार ।

५०८४. रत्नत्रयजयमाल ....। पत्र सं० ३। आ० ११३/४×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ६३६। क भण्डार।

५०८५. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ६६७। च भण्डार।

५०८६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १६०७ द्वि० आसोज बुदी १। वे० सं० १८५। झ भण्डार।

५०८७. रत्नत्रयपूजा—पं० आशाधर। पत्र सं० ४। आ० ८३/४×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १११०। अ भण्डार।

५०८८. रत्नत्रयपूजा—केशवसेन। पत्र सं० १२। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६६। च भण्डार।

५०८६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ४७६। अ भण्डार।

५०६०. रत्नत्रयपूजा—पद्मनन्दि। पत्र सं० १३। आ० १०३/४×५१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। च भण्डार।

५०६१. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८६३ मंगसिर बुदी ६। वे० सं० ३०५। च भण्डार।

५०६२. रत्नत्रयपूजा..........। पत्र सं० १५। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल × पूर्ण। वे० स० ४७८। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६) और हैं।

५०६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १६८१। वे० सं० ३०१। ख भण्डार।

५०६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ८६। घ भण्डार।

५०६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६१६। सं० वे० ६४७। ङ भण्डार।

विशेष—छोटूलाल अजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी।

५०६६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १८५८ पौष सुदी ३। वे० सं० ३०१। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३०२, ३०३, ३०४) और हैं।

५०६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ६०। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४८२, ५२६) और हैं।

५०६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२७५। ट भण्डार।

५०६६. रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय। पत्र सं० २ से ५। आ० १०३/४×५१/२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६७ पौष बुदी १। अपूर्ण। वे० सं० ६३३। क भण्डार।

५१००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । ञ भण्डार ।

५१०१. रत्नत्रयपूजा—ऋषभदास । पत्र सं० १७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-हिन्दी (पुरानी) विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८४६ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

५१०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । आ० १२३×५३ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८४ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश तीनों ही भाषा के शब्द हैं ।

अन्तिम— सिहि रिसिकित्ति मुहसीसे,
रिसह दास बुहवास भणीसे ।
इय तेरह पयार चारित्तउ,
संखेवे भानिय उपवित्तउ ॥

५१०३. रत्नत्रयपूजा............ । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । अ भण्डार ।

५१०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ६२२ । क भण्डार ।

५१०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १९६४ पौष बुदी २ । वे० सं० ६४१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६४८) और है ।

५१०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) और है ।

५१०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १९७८ । वे० सं० २१० । छ भण्डार ।

५१०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । ञ भण्डार ।

५१०९. रत्नत्रयमंडलविधान........ । पत्र सं० ३५ । आ० १०×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७ । ञ भण्डार ।

५११०. रत्नत्रयविधानपूजा—पं० रत्नकीर्त्ति । पत्र सं० ८ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५१ । क भण्डार ।

५१११. रत्नत्रयविधान........ । पत्र सं० १२ । आ० १०१/२×४१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी ३ । वे० सं० १६६ । ञ भण्डार ।

५११२. रत्नत्रयविधानपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३६ । आ० १३×७½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६७७ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ग भण्डार ।

५११३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । ङ भण्डार ।

५११४. रत्नत्रयव्रतोद्यापन………। पत्र सं० ६ । आ० ७×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६५३) और है ।

५११५. रत्नावलीव्रतविधान—ब्र० कृष्णदास । पत्र सं० ७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–विधि विधान एवं पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६८५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । ब भण्डार ।

विशेष–प्रारम्भ— श्री वृषभदेवाय नमः श्रीसरस्वत्यै नमः ।।

जय जय नाभि नरेन्द्रसुत सुरगण सेवित पाद ।
तत्व सिंधु सागर ललित योजन एक निनाद ।।
सारद गुरु चरणे नमी नमु निरञ्जन हंस ।
रत्नावलि तप विधि कहुं तिम बाधि सुख वंश ।।२।।

चुपई— जंबूद्वीप भरत उदार, बहु बडी धरणीधर सार ।
तेह मध्य एक आर्य सुखंड, पञ्चम्लेक्षधर्मति प्रखंड ।।
चंद्रपुरी नगरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम शोभिताम ।
उच्चैस्तर जिनवर प्रासाद, झल्लर ढोल पटहवात नाद ।।

अन्तिम— अनुक्रमि सुलभि देईराज, दिक्षा लेई करि आतम काज ।
मुक्ति काम नृप हुउं प्रमाण, ए ब्रह्म पूरमल्लह वाण ।।१८।।

दूहा— रत्नावलि विधि भावइं, भावि सूं नरनारि ।
तिम मन वंछित फल लहू, बाधु भव विस्तारि ।।१६।।
मनह मनोरथ संपजि होई, नारी वेद विछेद ।
पाप पङ्क हवि क्षालि, रत्नावलि बहु भेद ।
जे कलियुगणि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास ।
हर्ष सुत नकुल कमल रवि, कहि ब्रह्म कृष्ण उल्लास ।।

इति श्री रत्नावली व्रत विधान लिखतं श्री पाश्र्व चर्चाकर सम्पूर्ण समाप्त ।।

सं० १६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ सोमे ब्र० कृष्णदास पूरनमल्लजी तत्शिष्य ब्र० वर्द्धमान लिखित ॥

५११६. रविव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५०१। अ भण्डार।

५११७. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल स० १८०८। वे० सं० १०१०। अ भण्डार।

५११८ रेवानदीपूजा—विश्वभूषण। पत्र सं० ६। आ० १२½×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल सं० १७३६। ले० काल सं० १६४०। पूर्ण। वे० सं० ३०३। ख भण्डार।

विशेष—अन्तिम—   सरत्समेषेटत्रितत्वचन्द्रे फागुन्यमासे किल कृष्णपक्षे।
नवरंगग्रामे परिपूर्णतास्युः भव्या जनानां प्रददातु सिद्धिः ॥

इति श्री रेवानदी पूजा समाप्ता।

इसका दूसरा नाम आहूठ कोटि पूजा भी है।

५११९. रैदव्रत—गंगाराम। पत्र सं० ४। आ० १३×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ४३६। अ भण्डार।

५१२०. रोहिणीव्रतमंडलविधान—केशवसेन। पत्र सं० १४। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८७८। पूर्ण। वे० सं० ७३८। अ भण्डार।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है। इसी भण्डार में २ प्रतियां वे० सं० ७३६, १०६४) और हैं।

५१२१. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८६२ पौष बुदी १३। वे० सं० १३४। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०२, २६२) और हैं।

५१२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १६७१। वे० सं० ६१। अ भण्डार।

५१२३. रोहिणीव्रतोद्यापन……। पत्र सं० ५। आ० ११×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५५८। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४०) और है।

५१२४. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० २६२। ख भण्डार।

५१२५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ६६६। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६५) और है।

५१२६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३२४। ज भण्डार।

५१२७. लघुअभिषेकविधान······। पत्र सं० ३। आ० १२½×५½ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-भगवान के अभिषेक की पूजा व विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १६६६ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० १७७। ज भण्डार।

५१२८. लघुकल्याण······। पत्र सं० ८। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६३७। क भण्डार।

५१२९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १८२६। ट भण्डार।

५१३०. लघुअनन्तव्रतपूजा······। पत्र सं० ३। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८३१ आसोज बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १८५७। ट भण्डार।

५१३१. लघुशांतिकपूजाविधान······। पत्र सं० १५। आ० १०½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९०६ माघ बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ७३। ख भण्डार।

५१३२. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८६०। अपूर्ण। वे० सं० ८८३। अ भण्डार।

५१३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल स० १९७१। वे० सं० ६६०। क भण्डार।

विशेष—राजूलाल भौंसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

५१३४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८८६। वे० सं० ११९। छ भण्डार।

५१३५. प्रति सं० ५। पत्र स० १४। ले० काल ×। वे० सं० १४२। ज भण्डार।

५१३६. लघुश्रेयविधि—अभयनन्दि। पत्र सं० ६। आ० १०½×७ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १९०६ फागुण सुदी २। पूर्ण। वे० स० १५८। ज भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है।

५१३७. लघुस्नपनटीका—पं० भावशर्मा। पत्र सं० २२। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधि। र० काल सं० १५६०। ले० काल सं० १८१५ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २३२। अ भण्डार।

५१३८ लघुस्नपन······। पत्र सं० ५। आ० ८×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३। ग भण्डार।

५१३९. लब्धिविधानपूजा—हर्षकीर्ति। पत्र सं० २। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०१। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११४१) और है।

५१४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ६६४ । क भण्डार ।

५१४१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल । वे० सं० ७७ । झ भण्डार ।

५१४२. लब्धिविधानपूजा…… । पत्र सं० ६ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६४, २०२०) और हैं।

५१४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५१४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ८७ । घ भण्डार ।

५१४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२० । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

५१४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३१६, ३२०) और हैं।

५१४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

५१४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल सं० १६०० भादवा सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ११७ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १६७) और है।

५१४९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६१२ । वे० सं० २१४ । झ भण्डार ।

५१५०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८८७ माह सुदी १ । वे० सं० ५३ । ब भण्डार ।

विशेष—मंडल का चित्र भी दिया हुआ है।

५१५१. लब्धिविधानव्रतोद्यापनपूजा…… …… । पत्र सं० ६ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । ग भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करके चौधरियो के मन्दिर में चढाई ।

५१५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १७६ । झ भण्डार ।

५१५३. लब्धिविधानपूजा—ज्ञानचन्द । पत्र सं० २१ । प्रा० ११×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० ११५३ । ले० काल सं० १६६२ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ७४३, ७४४/१) और हैं।

५१५४. लब्धिविधानपूजा…… । पत्र सं० ३५ । प्रा० १२×५½ इंच । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । च भण्डार ।

५१५५. लब्धिविधानउद्यापनपूजा ....। पत्र सं० ८। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९१७। पूर्ण। वे० सं० ६९२। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ६९१) और है।

५१५६. प्रति सं० २। पत्र स० २४। ले० काल सं० १९२९। वे० सं० २२७। ज भण्डार।

५१५७. वास्तुपूजा..........। पत्र सं० ५। आ० ११½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–गृह प्रवेश पूजा एवं विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२४। अ भण्डार।

५१५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १९३१ वैशाख सुदी ८। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

विशेष—उदयलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

५१५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १९१६ वैशाख सुदी ८। वे० सं० २०। ज भण्डार।

५१६०. विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा—नरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८१०। पूर्ण। वे० सं० ६७२। अ भण्डार।

५१६१. विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा—जौहरीलाल बिलाला। पत्र सं० ४२। आ० १२×७½ इंच। भाषा-हिन्दी, विषय-पूजा। र० काल सं० १९४६ सावन सुदी १४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३६। अ भण्डार।

५१६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ६१। ले० काल ×। वे० सं० ६७५। क भण्डार।

५१६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५६। ले० काल सं० १९५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी २। वे० सं० ६७८। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७९) और है।

५१६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। वे० सं० २०६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

५१६५. विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ६। आ० ११½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–विधि विधान एवं पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७७। अ भण्डार।

विशेष—कुछ पृष्ठ पानी में भीग गये हैं।

५१६६. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—पीची के मन्दिर में लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

५१६७ विमानशुद्धिपूजा………। पत्र सं० १२ । आ० १२½×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९२० । पूर्ण । वे० सं० ७४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६२) और है।

५१६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ज भण्डार ।

विशेष—शान्तिपाठ भी दिया है।

५१६९. विवाहपद्धति—सोमसेन । पत्र सं० २५ । आ० १२×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय जैन विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । क भण्डार ।

५१७०. विवाहविधि………। पत्र सं० ८ । आ० ९×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–जैन विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११३६ । अ भण्डार ।

५१७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । ख भण्डार ।

५१७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

५१७३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ ले० काल सं० १७९८ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

५१७४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३४९ । ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २४६) और है।

५१७५. विष्णुकुमार मुनिपूजा—बाबूलाल । पत्र सं० ८ । आ० ११×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४५ । अ भण्डार ।

५१७६. विहार प्रकरण………। पत्र सं० ७ । आ० ८×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७३ । अ भण्डार ।

५१७७. व्रतनिर्णय—मोहन । पत्र सं० ३४ । आ० १३×६, इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल सं० १९३२ । ले० काल स० १९४३ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । ख भण्डार ।

विशेष—अजयदुर्ग में रहने वाले विद्वान् ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। अजमेर में प्रतिलिपि हुई।

५१७८ व्रतनाम………। पत्र सं० १० । आ० १३×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–व्रतों के नाम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३७ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २ पत्रो पर ध्वजा, माला तथा छत्र आदि के चित्र हैं। कुल ६ चित्र हैं।

५१७९ व्रतपूजासंग्रह………। पत्र सं० ३१८ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२८ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
बारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	संस्कृत	ले० काल सं० १८०० पौष सुदी ४
विशेष—देवगिरि में पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई।			
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदास	"	ले० काल १८०० पौष सुदी १
रत्नत्रयपूजा	—	"	" " " पौष सुदी ६
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	हिन्दी	
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	संस्कृत	
गुरुपूजा	जिनदास	"	
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	"	
षोडशकारण	—	"	
दशलक्षणपूजाजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	
लघुस्वयंभूस्तोत्र	—	संस्कृत	
नन्दीश्वर उद्यापन	—	"	ले० काल सं० १८००
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	"	
ऋषिमंडलपूजाविधान	गुणनन्दि	"	
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत	
धर्मचक्रपूजा	—	"	
जिनगुणसंपत्तिपूजा	केशवसेन	"	र० काल १६६१
रत्नत्रयपूजा जयमाल	ऋषभदास	अपभ्रंश	
णमोकार पैंतीसीपूजा	—	संस्कृत	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	"	
रविव्रतपूजा	—	"	
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"	

५१८०. व्रतविधान............ । पत्र सं० ४ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ४२४, ६६२, २०३७) और हैं ।

५१८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० स० ६८० । क भण्डार ।

५१८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७६ । क भण्डार ।

५१८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १७८ । छ भण्डार ।

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करो के पंचकल्याणक की तिथिया भी दी हुई है ।

५१८४. व्रतविधानरासो—दौलतरामसंघी । पत्र सं० ३२ । आ० ११×४¾ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल स० १७६७ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १८३२ प्र० भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

५१८५. व्रतविवरण............ । पत्र सं० ४ । आ० १०½×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रत विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२४६) और हैं ।

५१८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण वे० स० १८२३ । ट भण्डार ।

५१८७. व्रतविवरण...... । पत्र सं० ११ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रत विधि । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८३१ । ट भण्डार ।

५१८८ व्रतसार—आ० शिवकोटि । पत्र सं० ६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रत विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६४ । ट भण्डार ।

५१८९ व्रतोद्यापनसग्रह.......... । पत्र सं० ४५१ । आ० ११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० ४५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
पल्यमंडलविधान	शुभचन्द्र	संस्कृत
अक्षयदशमीविधान	—	"
मौनिव्रतोद्यापन	—	"
मौनिव्रतोद्यापन	—	"

पंचमेरुजयमाला	भूधरदास	हिन्दी
ऋषिमंडलपूजा	गुणनन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	"
पञ्चमेरुपूजा	—	"
अनन्तव्रतपूजा	—	"
मुक्तावलिपूजा	—	"
शास्त्रपूजा	—	"
षोडशकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	"
दशलक्षणपूजा	—	"
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा [वृहद]	—	"
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन [वृहद्]	केशवसेन	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्द्रसूरि	"
द्वादशमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	"
अक्षयनिधिपूजा	—	"
सौख्यव्रतोद्यापन	—	"
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	"
णमोकारपैंतीसीपूजा	—	"
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	"
जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	"
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	"

मेघमालाव्रतोद्यापन	—	संस्कृत
आदित्यव्रतोद्यापन	—	"
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	"
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्री भूषण	"
जिनसहस्रनामस्तवन	आशाधर	"
द्वादशव्रतमडलोद्यापन	—	"
लब्धिविधानपूजा	—	"

५१६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २३६। ले० काल ×। वे० सं० १८४। ख भण्डार।

निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
लब्धिविधानोद्यापन	—	संस्कृत
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	हिन्दी
भक्तामरव्रतोद्यापन	केशवसेन	संस्कृत
दशलक्षणव्रतोद्यापन	सुमतिसागर	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचंदसूरि	"
पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन	—	"
शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीपूजा	भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति	"
प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मदहनपूजा	—	"
आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	"

५१६१. बृहस्पतिविधान ……। पत्र सं० १। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८८७। अ भण्डार।

५१६२ बृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । क भण्डार ।

५१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । घ भण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६८० । च भण्डार ।

५१६५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । छ भण्डार ।

५१६६. चत्वर्विक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र सं० १७ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ब भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीमत्काष्ठासंघे यतिपतितिलके रामसेनस्यवंशे ।
गच्छे नंदीतटाख्ये यगदिविहु मुले तु सकर्मायुनीन्द्र ।।
ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञं चकार्षीत् ।
सोमपुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालानां शिवाय ।।

चौबीस तीर्थंकूरों के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल ······ । पत्र सं० १८ । आ० ११३/४×५१/२ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६४ भादवा सुदी १३ । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६६७, २६६, ३०४, १०६१, २०४४) और हैं ।

५१६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १७६० आसोज सुदी १४ । वे० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६०२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५६) और है ।

५२०३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० २०८। ग्र भण्डार।

५२०४. प्रति सं० ७। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८०२ मगसिर बुदी ११। वे० सं० २०८। ग्र भण्डार।

५२०५. षोडशकारणजयमाल—रइधू। पत्र सं० २१। ग्रा० ११×५ इंच। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४७। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८८६) और है।

५२०६. षोडशकारणजयमाल……। पत्र सं० १३। ग्रा० १३×५ इंच। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६। ख भण्डार।

५२०७. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० १२६। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२६) और है।

५२०८. षोडशकारणउद्यापन……। पत्र सं० १५। ग्रा० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७९३ आषाढ बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० २४१। ञ भण्डार।

विशेष—गोधों के मन्दिर मे पं० सवाराम के वाचनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

५२०९. षोडशकारणजयमाल……। पत्र सं० १०। ग्रा० ११½×५½ इंच। भाषा-प्राकृत, संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ९४२। ग्र भण्डार।

५२१०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ७१७। क भण्डार।

५२११. षोडशकारणजयमाल……। पत्र सं० ५२। ग्रा० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९६५ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ६९६। ग्र भण्डार।

५२१२. षोडशकारणतथा दशलक्षण जयमाल—रइधू। पत्र सं० ३३। ग्रा० १०×७ इंच। भाषा-अपभ्रंश। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११९। छ भण्डार।

५२१३. षोडशकारणपूजा—केशवसेन। पत्र सं० १३। ग्रा० १२×५½ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १६९४ माघ बुदी ७। ले० काल सं० १८२३ आसोज सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ५१२। ग्र भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०८) और है।

५२१४. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० ३००। ख भण्डार।

५२१५. षोडशकारणपूजा……। पत्र सं० २। ग्रा० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६८। ग्र भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३५) और है।

५२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७२१ । क भण्डार ।

५२१७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२४ । ख भण्डार ।

विशेष —आचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजमाबाद में प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५२१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६३ सावण सुदी ११ । वे० सं० ४२५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४२६) और है ।

५२१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७२ । ङ भण्डार ।

५२२०. षोडशकारणपूजा (बृहद्)…… । पत्र सं० २६ । आ० ११½×५¼ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१८ । क भण्डार ।

५२२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२६ । ख भण्डार ।

५२२२. षोडशकारण व्रतोद्यापनपूजा— राजकीर्त्ति । पत्र सं० ३७ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७११ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५०७ । अ भण्डार ।

५२२३. षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं २१ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१४ । अ भण्डार ।

५२२४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा—भट्टारक विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६७ । अ भण्डार ।

५२२५ शारदुत्सवदीपिका (मंडल विधान पूजा)—सिंहनन्दि । पत्र सं० ७ आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—
श्रीवीरं शिरसा नत्वा वीरनंदिमहागुरुं ।
सिंहनंदिरहं वक्ष्ये शारदुत्सवदीपिका ॥१॥
अथात्र भारते क्षेत्रे जंबूद्वीपमनोहरे ।
एकवीवेति विख्याता मिथिलानामतः पुरी ॥२॥

अन्तिमपाठ—
एवं महाप्रभावं च दृष्ट्वा सप्तानताजनाः ।
कर्त्तुं प्रभावमार्गं च ततोऽत्रैव प्रवर्तते ॥२३॥
तथामुत्सवोत्सवं प्रसिद्धं जयतीस्वते ।
दृष्ट्वा दृष्ट्वा सुहीतं च भैष्मकुमारिकामैश्वर्कैः ॥२४॥

जातो नागपुरे मुनिर्वरतरः श्रीमूलसंघोवरः ।
सूर्यः श्रीवरपूज्यपाद प्रमलः श्रीवीरनंद्याह्वयः ॥
तच्छिष्यो वर सिंघनंदिमुनियस्तेनेयमाविष्कृता ।
लोकोद्बोधनहेतवे मुनिवरः कुर्वंतु भो सज्जनाः ॥२५॥
इति श्री शरदुत्सवकथा समाप्ताः ॥१॥

इसके पश्चात् पूजा दी हुई है ।

५२२६. प्रति स० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

५२२७. शांतिकविधान (प्रतिष्ठापाठ का एक भाग) ...... । पत्र स० ३२ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६३२ फागुन सुदी १० । वे० सं० ५३७ । अ भण्डार ।

विशेष— प्रतिष्ठा में काम आने वाली सामग्री का वर्णन दिया हुआ है । प्रतिष्ठा के लिये गुटका महत्व-पूर्ण है ।

मण्डलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्त्ति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी । १४वें पत्र से यन्त्र दिये हुये हैं जिनकी संख्या ६८ है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

ॐ नमो वीतरागायनमः । परिमेष्ठिने नमः । श्री गुरुवेनमः ॥ सं० १६३२ वर्षे फागुण सुदी १० गुरौ श्री मूलसंघे भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीधर्म्मचन्द्रदेवा तत् मंडलाचार्य ललितकीर्तिदेवा तच्छिष्यमंडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्त्ति उपदेशात् ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५१२, ५५४) और हैं ।

५२२८. शांतिकविधान (बृहद्) .... । पत्र सं० ७४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६२६ भादवा बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० १७७ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालालजी ने शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५२२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । च भण्डार ।

५२३०. शांतिकविधि—अर्हद्देव । पत्र सं० ५१ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-संस्कृत । विषय विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८९८ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६८६ । क भण्डार ।

५२३१. शान्तिविधि.......... । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । क भण्डार ।

५२३२. शान्तिपाठ (बृहद्)………… । पत्र सं० ४० । आ० १०×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी।

५२३३. शान्तिचक्रपूजा………… । पत्र सं० ४ । आ० १०३/४×५३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६७ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) और है।

५२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १२२) और है।

५२३५. शान्तिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । क भण्डार ।

५२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८२ । च भण्डार ।

५२३७. शांतिमंडलपूजा……… । पत्र सं० ३८ । आ० १०३/४×५३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । क भण्डार ।

५२३८. शांतिपाठ……… । पत्र सं० १ । आ० १०१/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा के अन्त मे पढा जाने वाला पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १२३८, १३१८, १३२४) और हैं।

५२३९. शांतिरत्नसूची……… । पत्र सं० ३ । आ० ८३/४×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत है।

५२४०. शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० ११३/४×६१/२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ में से संग्रहीत है।

५२४१. शास्त्रगुरुजयमाल……… । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ३४२ । च भण्डार ।

५२४२. शास्त्रजयमाल—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । आ० ११३/४×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८८ । क भण्डार ।

५२४३. शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि······ । पत्र सं० १ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८४ । अ भण्डार ।

५२४४. शासनदेवतार्चनविधान······ । पत्र सं० २१ से २५ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । क भण्डार ।

५२४५. शिखरविलासपूजा······ । पत्र सं० ७३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८६ । क भण्डार ।

५२४६. शीतलनाथपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० २६३ । ख भण्डार ।

५२४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६३१ प्र० आषाढ बुदी १४ । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

५२४८. शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा······ । पत्र सं० ७ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८ ... । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४४ । च भण्डार ।

विशेष—रचना सं० निम्न प्रकार है— अब्दे रंध्र यमलं वसु चन्द्र ।

५२४९. शुक्लपञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा······ । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१७ । अ भण्डार ।

५२५०. श्रुतज्ञानपूजा······ । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ७२३ । क भण्डार ।

५२५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६८७ । च भण्डार ।

५२५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

५२५३. श्रुतज्ञानव्रतपूजा······ । पत्र सं० १० । आ० ११×८½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ज भण्डार ।

५२५४. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापनपूजा······ । पत्र सं० ११ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२४ । क भण्डार ।

५२५५. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन······ । पत्र सं० ८ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२२ । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

५२५६. श्रुतपूजा······ । पत्र सं० ४ । आ० १०½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १०७८ । अ भण्डार ।

५२५७. श्रुतस्कंधपूजा—श्रुतसागर। पत्र सं० २ से १३। आ० ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७०५। क भण्डार।

५२५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३४६। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३५०) और है।

५२५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १८४। ञ भण्डार।

५२६०. श्रुतस्कंधपूजा (ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा)—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १८४७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२२। अ भण्डार।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था में किया था।

५२६१. श्रुतस्कंधपूजा..........। पत्र सं० ५। आ० ८½×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०२। क भण्डार।

५२६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० २६२। ख भण्डार।

५२६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १८८। ञ भण्डार।

५२६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ४६०। व्य भण्डार।

५२६५. श्रुतस्कंधपूजाकथा..........। पत्र सं० २८। आ० १२½×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा तथा कथा। र० काल ×। ले० काल वीर सं० २४३४। पूर्ण। वे० सं० ७२८। क भण्डार।

विशेष—चावली (आगरा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर सं० २४५७ को पन्नालालजी गाधा ने तुकीगञ्ज इन्दौर में लिखवाया। जौहरीलाल फिरोजपुर जि० गुडगावां।

बनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है।

५२६६. सकलीकरणविधि..........। पत्र सं० ३। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०, ५७१, ६६१) और हैं।

५२६७. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० स० ७२३। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२४) और है।

५२६८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ३६८। व्य भण्डार।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्त्ति के श्रावकों के लिए प्रतिलिपि हुई थी।

५२६६. सकलीकरण.........। पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७१ । अ भण्डार ।

५२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७५७ । ङ भण्डार ।

५२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६) और है ।

५२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । ज भण्डार ।

५२७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४२४ । व्य भण्डार ।

विशेष—हांसिया पर संस्कृत टिप्पण दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०३) और है ।

५२७४. संथाराविधि.........। पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२५१) और है ।

५२७५. सप्तपदी.........। पत्र सं० २ से १६ । आ० ७½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

५२७६. सप्तपरमस्थानपूजा.........। पत्र सं० ३ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

५२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६२ । ङ भण्डार ।

५२७८. सप्तर्षिपूजा—जिणदास । पत्र सं० ७ । आ० ८×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५२७९. सप्तर्षिपूजा—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

५२८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८२० कार्तिक सुदी २ । वे० सं० ४०१ । व्य भण्डार ।

५२८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २११० । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति द्वारा रचित चांदनपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है ।

५२८२. सप्तर्षिपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० १६ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६१७ । पूर्ण । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

५२८३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ८। वे० सं० १२७। छ भण्डार।

५२८४. सप्तर्षिपूजा············। पत्र सं० १३। आ० ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६१। अ भण्डार।

५२८५. समवशरणपूजा—ललितकीर्त्ति। पत्र सं० ४७। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८७७ मंगसिर बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ४५१। अ भण्डार।

विशेष—खुस्यालजी ने जयपुर नगर में महात्मा शंभुराम से प्रतिलिपि करवायी थी।

५२८६. समवशरणपूजा (वृहद्)—रूपचन्द। पत्र सं० ६४। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र० काल सं० १५६२। ले० काल सं० १८७६ पौष बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ४५५। अ भण्डार।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है— अतीतेष्टयनन्दभद्रासकृत परिमिते कृष्णपक्षेच मासे ॥

५२८७. प्रति सं० २। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी १५। वे० सं० २०६। छ भण्डार।

विशेष—पं० पन्नालालजी जोबनेर वालों ने प्रतिलिपि की थी।

५२८८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५१। ले० काल सं० १६४०। वे० सं० १३३। छ भण्डार।

५२८९. समवशरणपूजा—सोमकीर्त्ति। पत्र सं० २८। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८०७ वैशाख सुदी १। वे० सं० ३८४। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम श्लोक—

श्रीमज्जस्तुत्यार्चा गुणवीतरागः ज्ञानार्कसाम्राज्यविकाससमानः।
श्रीसोमकीर्त्तिविकाससमानः रत्नेपरत्नाकरवार्ककीर्त्तिः ॥

जयपुर में सदानन्द सौगाणी के पठनार्थ आनूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०५) और है।

५२९०. समवशरणपूजा············। पत्र सं० ७। आ० ११×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७७४। क भण्डार।

५२९१. सम्मेदशिखरपूजा—गंगादास। पत्र सं० १०। आ० ११¾×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २०११। अ भण्डार।

विशेष—गंगादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०६) और है।

५२९२. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल सं० १६२१ मंगसिर बुदी ११। वे० सं० २१०। छ भण्डार।

५२९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८८३ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० ४३६ । ग्र भण्डार ।

५२९४. सम्मेदशिखरपूजा—पं० जवाहरलाल । पत्र सं० १२ । ग्रा० १२×८ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४८ । ग्र भण्डार ।

५२९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । र० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १९१२ । वे० सं० ११६ । घ भण्डार ।

५२९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १९५२ ग्रासोज बुदी १० । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

५२९७. सम्मेदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ८ । ग्रा० ११३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९५५ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३६३ । ग्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११२३) ग्रौर है।

५२९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १९५८ माघ सुदी १४ । वे० सं० ७०१ । च भण्डार ।

५२९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७९३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७९४) ग्रौर है।

५३००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५३०१. सम्मेदशिखरपूजा—भागचन्द । पत्र सं० १० । ग्रा० १३×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९२९ । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वे० सं० ७६७ । क भण्डार ।

विशेष— पूजा के पश्चात् पद भी दिये हुये है।

५३०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सिद्धक्षेत्रो की स्तुति भी है।

५३०३. सम्मेदशिखरपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० २१ । ग्रा० ११×५ इ च । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९१२ । पूर्ण । वे० सं० ५९१ । ग्र भण्डार ।

विशेष—१०वें पत्र से ग्रागे पञ्चमेरु पूजा दी हुई है।

५३०४. सम्मेदशिखरपूजा……। पत्र सं० ३ । ग्रा० ११×४३ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३१ । ग्र भण्डार ।

५३०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ग्रा० १०×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७९२) ग्रौर है।

५३०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । ग्र भण्डार ।

५३०७. सर्वतोभद्रपूजा .... । पत्र सं० ५ । आ० ६×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६३ । अ भण्डार ।

५३०८. सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३४ । अ भण्डार ।

५३०९. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ८×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० सं० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ६८६, १३११, ११०८, १०१०) और हैं ।

५३१०. सरस्वतीपूजा .... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८०२) और है ।

५३११. सरस्वतीपूजा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० १७ । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १६२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में १ प्रति और है ।

५३१२. सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द बक्शी । पत्र सं० ८ से १७ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वे० सं० ७७१ । क भण्डार ।

५३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ८०४ । क भण्डार ।

५३१४. सरस्वतीपूजा—पं० बुधजनजी । पत्र सं० ५ । आ० ६×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००६ । अ भण्डार ।

५३१५. सरस्वतीपूजा .... । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । च भण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६. सहस्रकूटजिनालयपूजा .... । पत्र सं० १११ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९२१ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५३१७. सहस्रगुणितपूजा—भ० धर्मकीर्ति। पत्र सं० ६६। आ० १२३×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १७६६ आषाढ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ५३६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५२) और है।

५३१८. प्रति सं० २। पत्र सं० ८२। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० २४६। ख भण्डार।

५३१९. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२२। ले० काल सं० १६६०। वे० सं० ८०६। क भण्डार।

५३२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० ६३। ञ भण्डार।

५३२१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६४। ले० काल ×। वे० सं० ६६। ञ भण्डार।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्त्ति ने जिहानावाद मे प्रतिलिपि कराई थी।

५३२२. सहस्रगुणितपूजा……। पत्र सं० १३। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

५३२३. प्रति सं० २। पत्र सं० ८८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४। ञ भण्डार।

५३२४. सहस्रनामपूजा—धर्मभूषण। पत्र सं० ६६। आ० १०३×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३८३। च भण्डार।

५३२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६ से ६६। ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ बुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० ३८५। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३८४, ३८६) और हैं।

५३२६. सहस्रनामपूजा……। पत्र सं० १३६ से १५८। आ० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३८२। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३८७) और है।

५३२७. सहस्रनामपूजा—चैनसुख। पत्र सं० २२। आ० १२३×८३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१। छ भण्डार।

५३२८. सहस्रनामपूजा……। पत्र सं० १८। आ० ११×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०७। च भण्डार।

५३२९. सारस्वतयन्त्रपूजा……। पत्र सं० ४। आ० १०३×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७७। अ भण्डार।

५३३०. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल ×। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

४३३१. सिद्धक्षेत्रपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ । आ० ९३/४×५१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

४३३२. सिद्धक्षेत्रपूजा (वृहद् —स्वरूपचन्द । पत्र सं० ५३ । आ० ११३/४×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९१९ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल सं० १९४१ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ८९ । ग भण्डार ।

विशेष—अन्त में मण्डल विधि भी दी हुई है । रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी । इसे सुगनचन्द गंगवाल ने चौधरियो के मन्दिर में चढाया ।

४३३३. सिद्धक्षेत्रपूजा……… । पत्र सं० १३ । आ० १३×८३/४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९४४ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । छ भण्डार ।

४३३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २९४ । ज भण्डार ।

४३३५. सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा……… । पत्र सं० १२६ । आ० ११३/४×५३/४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९४० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २२० । ख भण्डार ।

विशेष—अतिशयक्षेत्र पूजा भी है ।

४३३६. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० भानुकीर्त्ति । पत्र सं० १४३ । आ० १०१/२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९२२ । वे० सं० १७८ । ख भण्डार ।

४३३७. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९७२ । पूर्ण । वे० सं० ७५० । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७५१) और है ।

४३३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ८४५ । क भण्डार ।

४३३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० १२९ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १९६९ फागुण सुदी २ को पुष्पचन्द अजमेरा ने संशोधित की । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१९) और ।

४३४०. सिद्धचक्रपूजा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३० से ६० । आ० १२×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४४ । क भण्डार ।

४३४१. सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७९२ । क भण्डार ।

५३४२. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)………। पत्र सं० ३४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८७ । क भण्डार ।

५३४३. सिद्धचक्रपूजा………। पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

५३४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । च भण्डार ।

५३४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६० श्रावण बुदी १४ । वे० सं० २१ । ज भण्डार ।

५३४६. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—संतलाल । पत्र सं० १०८ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९८१ । पूर्ण । वे० सं० ७४९ । अ भण्डार ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड़ ने प्रतिलिपि की थी ।

५३४७. सिद्धचक्रपूजा………। पत्र सं० ११३ । आ० १२×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४६ । क भण्डार ।

५३४८. सिद्धपूजा—रत्नभूषण । पत्र सं० २ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६० । पूर्ण । वे० सं० २०६० । अ भण्डार ।

विशेष—औरङ्गजेब के शासनकाल में संग्रामपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५३४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । आ० ८¾×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७९९ । क भण्डार ।

५३५०. सिद्धपूजा—महा पं० आशाधर । पत्र सं० २ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ७९४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७९५) और है ।

५३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८२३ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—पूजा के प्रारम्भ में स्थापना नहीं है किन्तु प्रारम्भ में ही जल चढाने का मन्त्र है ।

५३५२. सिद्धपूजा………। पत्र सं० ४ । आ० ९½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३० । ट भण्डार ।

विशेष— इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६२४) और है ।

५३५३ सिद्धपूजा............| पत्र सं० ४४ | आ० ६×५ इंच। भाषा–हिन्दी | विषय–पूजा | र० काल × | ले० काल सं० १६५६ | पूर्ण | वे० सं० ७१५ | च भण्डार।

५३५४. सीमंधरस्वामीपूजा............| पत्र सं० ७ | आ० ८×६½ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ८५८ | क भण्डार।

५३५५. सुखसंपत्तिव्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति | पत्र सं० ७ | आ० ८×६½ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा | र० काल सं० १८६६ | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १०४१ | अ भण्डार।

५३५६. सुखसंपत्तिव्रतपूजा—अक्षयराम | पत्र सं० ६ | आ० १२×५½ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय पूजा | र० काल सं० १८०० | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ८०८ | क भण्डार।

५३५७. सुगन्धदशमीव्रतोद्यापन............| पत्र सं० १३ | आ० ८×६½ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० १११२ | अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ७ प्रतियां (वे० सं० १११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६) और है।

५३५८. प्रति सं० २ | पत्र सं० ६ | ले० काल सं० १६२८ | वे० सं० ३०२ | ख भण्डार।

५३५९. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ८ | ले० काल × | वे० सं० ८६६ | क भण्डार।

५३६०. प्रति सं० ४ | पत्र सं० १३ | ले० काल सं० १६५६ आसोज बुदी ७ | वे० सं० २०३४ | ट भण्डार।

५३६१. सुपार्श्वनाथपूजा—रामचन्द्र | पत्र सं० ५ | आ० १२×५½ इंच | भाषा–हिन्दी | विषय–पूजा | र० काल | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ७२३ | च भण्डार।

५३६२. सूतकनिर्णय............| पत्र सं० २१ | आ० ८×४ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–विधि विधान | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ५ | ञ भण्डार।

विशेष—सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला फेरने की विधि आदि भी हैं।

५३६३. प्रति सं० २ | पत्र सं० १२ | ले० काल × | वे० सं० २०६ | ञ भण्डार।

५३६४. सूतकवर्णन............| पत्र सं० १ | आ० १०½×५ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–विधि विधान | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ५४० | अ भण्डार।

५३६५. प्रति सं० २ | पत्र सं० १ | ले० काल सं० १८४५ | वे० सं० १२१४ | अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०१२) और है।

५३६६. सोनागिरपूजा—आशा | पत्र सं० ८ | आ० ५½×४½ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा | र० काल × | ले० काल सं० १६३८ फागुण बुदी ७ | पूर्ण | वे० सं० ३५६ | ख भण्डार।

विशेष—पं० गंगाधर सोनागिरि वासी ने प्रतिलिपि की थी।

५३६७. सोनागिरपूजा............। पत्र सं० ८। आ० ८३/४×४३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८५। क भण्डार।

५३६८. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय। पत्र सं० २। आ० ८×५३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३२९। अ भण्डार।

५३६९. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १९३७। वे० सं० २५। क भण्डार।

५३७०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ६३। ग भण्डार।

५३७१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३०२। ज भण्डार।

विषय—इसके अतिरिक्त पञ्चमेरु भाषा तथा सोलहकारण संस्कृत पूजायें और हैं।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४) और है।

५३७२. सोलहकारणपूजा..........। पत्र सं० १४। आ० ८×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५२। ङ भण्डार।

५३७३. सोलहकारणमंडलविधान—टेकचन्द। पत्र सं० ४८। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८७। क भण्डार।

५३७४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० सं० ७२४। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२५) और है।

५३७५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २०९। छ भण्डार।

५३७६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २६४। ज भण्डार।

५३७७. सौख्यव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम। पत्र सं० १२। आ० ११×४३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र० काल सं० १८२०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८६। अ भण्डार।

५३७८. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८९५ चैत्र सुदी ६। वे० स० ४२७। च भण्डार।

५३७९. स्नपनविधान............। पत्र सं० ८। आ० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४२२। अ भण्डार।

५३८०. स्नपनविधि (बृहद्)........। पत्र सं० २२। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५७०। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम २ पृष्ठों में त्रिलोकसार पूजा है जो कि अपूर्ण है।

गुटका-संग्रह

(शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाटोदी, जयपुर)

४३८१. गुटका सं० १ । पत्र सं० २८४ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ६ । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
१. भट्टाभिषेक	×	संस्कृत	पूर्ण
२. रत्नत्रयपूजा	×	"	"
३. पञ्चमेरुपूजा	×	"	"
४. अनन्तचतुर्दशीपूजा	×	"	
५. षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	संस्कृत	"
६. दशलक्षणउद्यापनपाठ	×	"	"
७. सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्रह्मजयसागर	"	"
८. मुनिसुव्रतछन्द	ब्र० [illegible]	संस्कृत हिन्दी	"

पृष्ठ १२०–१२४

मुनिसुव्रत छन्द लिख्यते—

पुण्यापुण्यनिरूपकं गुणनिधिं सुव्रतं सुव्रतं
स्याद्वादामृततर्पिताखिलजनं दुःखाग्निधाराधरं ।
कोधारव्यघनेश्वरं नतकरं प्रध्वस्तकर्मारिणं
वंदे तद्गुणलब्धये हरिसुतं भोमात्मजं सौख्यदं ॥१॥

अतुलितमगभीरं प्राप्तजन्माब्धितीरः
प्रबलमदनवीरः पंचधासुक्तधीरः
हृतविषयविकारः प्राप्ततत्वप्रचारः
स जयति गुणधारः सुव्रतो विघ्नहारः ॥२॥

आर्या—

त्रिभुवनजनहितकर्ता भर्ता सुपवित्रमुक्तिवरलक्ष्म्याः ।
कन्दर्पदर्पहर्ता सुव्रतदेवो जयति गुणधर्ता ॥१॥
यो वज्रमौलिसंगतमुकुटमहारत्नरक्तनखनिकरं ।
प्रतिपालितवरचरणं केवलबोधे मंडितसुभगं ॥२॥
तं मुनिसुव्रतनाथं नत्वा कथयामि तस्य सन्दोहं ।
श्रृण्वन्तु सकलभव्याः जिनधर्मपराः मौनसंयुक्ताः ॥३॥

अडिल्लछंद—

प्रथम कल्याण कहुं मनमोहन, मगध सुदेश वसे अति सोहन ।
राजगेह नयरि वर सुन्दर, सुमित्र भूप तिहां जिसो पुरंदर ॥१॥
चन्द्रमुखीमृगनयनी बाला, तस राणी सोमा सुविशाला ।
पश्चिमरयणी अलिकुलबाला, स्वप्न सोल देखे गुणमाला ॥२॥
इन्द्रादेसें अति सु विचक्षण, छप्पन कुमारि सेवे शुभलक्षण ।
रत्नवृष्टि करें धनद मनोहर, एम छमास गया सुभ सुखकर ॥३॥
हरिवर्म्मा भूपति भुवि मंगल, प्राणत स्वर्ग हवो आखण्डल ।
श्रावणवदि बीजे गुणधारी, जननी गर्भ रह्यो सुखकारी ॥४॥

भुजङ्गप्रपात—

धरंति अनंगे परं गर्भभारं न रेखात्रयं भगमापन्नमार ।
तदा आगता इन्द्रचन्द्रानरेन्द्रासुराद्याणशाया न युक्ता सुभद्रा ॥१॥
पुरं त्रिःपरित्याखिलंदेवसंघा गृह प्राप्त सोमित्र कंते गता या ।
स्थित गर्भवासे जिनं निष्कलंकं प्रणम्यावराते मलाहिस्यमाव ॥२॥
कुमार्यो हि सेवां प्रकुर्वन्ति गाढं किमय्योज्ज्वलद्दोपसुहवृत्यवाढं ।
वरं पत्रपूर्ण ददामीसुचूर्ण प्रकीर्णं सितछत्रकं कुंभं सुपूर्णं ॥३॥
सुरधैश्वमासैर्भवंसत्पवित्र लसद्रत्नवृष्टि सुभ पुण्यपात्रं ।
जिनं गर्भवासा विनिर्मुक्तदेहं परं स्तौमि सोमात्मजं सौख्यगेहं ॥४॥

अडिल्लछन्द—

श्रीजिनवर अवतरयो महि त्रिभुवन चिह्न हवां सुणता महि ।
घंटा सिहं संख परहारव, सुरपति सहसा करें जय जयरवं ॥१॥
वैशाख वदी दशमी-जिन जायो, सुरनरवृंद वेगें तब आयो ।
ऐरावण आरूढ पुरंदर, सचीसहित सोहें गुणमंदिर ॥२॥

मोतीदामछन्द—

तब ऐरावत सज करी, चढ्यो शतमुख आणंद भरी ।
जस कोटी सतावीस छे अमरी, करैं गीत नृत्य वलीदें भमरी ॥३॥
गज कानें सोहैं सोवर्ण चमरी, घण्टा टङ्कार वदि सह भरी ।
आलम्बलमंकुवावेसंचरी, उछवमंगल गया जिन नयरी ॥
राजगलें मलया इन्द्रसहू, बाजें वाजित्र सुरंग बहू ।
शक्रें कहू जिनवर लावें सही, इन्द्राणी तब घर मभे गई ॥
जिन बालक दीठो निज नयणे, इन्द्राणी बोलें वर वयणें ।
माया मेलि सुतहि एक कीयो, जिनवर युगतें जइ इन्द्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है। सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन है जिसका रचना के आधे से अधिक भाग में वर्णन किया गया है इसमें उक्त छन्दो के अतिरिक्त लीलावती छन्द, हनुमंतछन्द, दूहा, वंभाण छन्दों का और प्रयोग हुआ है। अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस—

बीस धनुष जस देह जहं जिन कछप लांछन ।
तीस सहस्र वर वर्ष आयु सज्जन मन रञ्जन ॥
हरवंशी कुलदीपल, भक्त दारिद्र विहंडन ।
मनवांछितदातार, नयरवालोडम् मंडन ॥
श्री मूलसंघ संघद तिलक, ज्ञानभूषण भट्टारक ।
श्रीप्रभाचन्द्र सुरिवर कहें, मुनिसुव्रतमंगलकरण ॥

इति मुनिसुव्रत छंद सम्पूर्णोऽयं ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

संवत् १८१८ वर्षे शाके १६८४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार-गणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्दि तत्पट्टे भट्टारक श्री मल्लिभूषण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्द तच्छिष्य ब्रह्मश्रीरत्नसागर पठनार्थं। पुण्यार्थं पुस्तकं लिखापितं श्रीसूर्यपुरे श्रीआदिनाथ चैत्यालये ।

विषय	कर्त्ता	भाषा	विशेष
९. मातापद्मावतीछन्द	महीचन्द्र भट्टारक	संस्कृत हिन्दी	१२५–२८
१०. पार्श्वनाथपूजा	×	संस्कृत	
११. कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	"	
१२. [redacted]	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	
१३. अष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	संस्कृत	पं० राघव की प्रेरणा से
१३. अष्टक	×	हिन्दी	भक्ति पूर्वक दी गई
१५. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ अष्टक	×	संस्कृत	
१६. नित्यपूजा	×	"	

विशेष—पत्र न० १६८ पर निम्न लेख लिखा हुवा है—

भट्टारक श्री १०८ श्री विद्यानन्दजी सं० १८२१ ता वर्षे साके १६९६ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिकमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदादिवसे रात्रि पहर पाछलीई देवलोक थया छेजी

५३८२. गुटका सं० २। पत्र सं० ६३। आ० ८½×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १८२०। ले० काल सं० १८३५। पूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—इस गुटके में बख्तराम साह कृत मिथ्यात्व खण्डन नाटक है। यह प्रति स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मिथ्यातखण्डन नाटक सम्पूर्ण। लिखतं बखतराम साह। सं० १८३५।

५३८३ गुटका सं० ३। पत्र सं० ७५। आ० ४×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय–×। ले० काल सं० १९०४। पूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—फतेहराम गोदीका ने लखा था।

१. रसायनविधि	×	हिन्दी	१–३
२. परमज्योति	बनारसीदास	"	४–१२
३. रत्नत्रयपाठविधि	×	संस्कृत	१३–४३
४. अन्तरायवर्णन	×	हिन्दी	४३–४४
५. मंगलाष्टक	×	संस्कृत	४५–४९
६. पूजा	पद्मनन्दि	"	५०–५४

७. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	५५–५६
८. पूजा व जयमाल	×	"	५६–७५

४३८४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । आ० ३×२ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में ज्वालामालिनीस्तोत्र, अष्टादशसहस्रशीलभेद, षट्लेश्यावर्णन, जैनरक्षामन्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

४३८५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । आ० ८×६ इंच । भाषा–संस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—भर्तृहरिशतक (नीतिशतक) हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३८६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ । भाषा–हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं शांतिपाठ का संग्रह है ।

४३८७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ११६ । आ० ६×७ इंच । ले० काल १८५८ आसोज बुदी ४ शनिवार । पूर्ण ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१–६७
२. पद– होजी म्हारो कंथ चतुर दिलजानी हो	विश्वभूषण	"	६७
३. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	६८–११६

४३८८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १७६८ । दशा–सामान्य ।

विशेष—पं० धनराज ने लिखवाया था ।

४३८९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० १५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी ।

विशेष—जिनदास, नवल आदि के पदों का संग्रह है ।

४३९०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १५३ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १९५४ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. पद– जिनवाणीमाता दर्शन की बलिहारी	×	हिन्दी	१
२. बारहभावना	दौलतराम	"	
३. आलोचनापाठ	जौहरीलाल	"	
४. समवशरणपूजा	भूधरदास	"	

५. पञ्चमेरु एवं नंदीश्वरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी	२-३५
६. तीन चौबीसी के नाम व दर्शनपाठ	×	संस्कृत हिन्दी	
७. परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	"	१
८. लक्ष्मीस्तोत्र	द्यानतराय	"	६
९. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	५-६
१०. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	
११. देवशास्त्रगुरुपूजा	×	हिन्दी	
१२. चौबीस तीर्थङ्करों की पूजा	×	"	१५३ तक

५३६१. गुटका सं० ११। पत्र सं० २२२। आ० १०½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १७४६।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. रामायण महाभारत कथा [४६ प्रश्नों का उत्तर है]	×	हिन्दी गद्य	३-१४
२. कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्त्ति		१५-१८

अथ वेलि लिख्यते—

दोहा—

कर्मचूर व्रत जे कर, जीनवाणी तंतसार।
नरनारि भव भंजन धरे, उतर चौरासी मु पार।।

कीधी कुणै कुण प्रारंभ्यो सकलकीर्त्ति नाम,
कर्म सेइय कीधो गुणी कोसंबी वसि गाम ।।
नमणी गुरु निरगंथ नै, सारद दसगुण पुरै।
कहो बरत बेलि उदयु करमसेण कर्मचुरै ।।
ज्ञानावर्ण दर्स्न साता वेदनी मोह मंदराई।
अन्हें जीतनै चेति होसी, कहालु कर वखण सुहाई ।।
नाम कर्म पांचमौग कुछुगे आयु भेदो।
गोत्र नीच गति पोहो चाहै, अन्तराई भय भेदो ।।
चितामणि सुचित अविलागी, कर्मसेण गुणगाई ।।१।।

दोहा— एक कर्म को वेदना, मुंजे है सब लोइ।
नरनारी करि उधरे, वरण गुणसंस्थान संजोई ।।१।।

अन्तिमपाठ— कवित्त—

सकलकीर्त्ति मुनि आप सुनत मिटै संताप चौरासी मरि जाई फिर अजर अमर पद पाइये ।।
जूनी पोथी भई अक्षर दीसे नहीं फेर उतारी बंध छंद कवित्त बेली बनाई क_गाईये ।।
बंप नेरी चाटसू केते भट्टारक भये साधा पार अड़सठि जेहि कर्मचूर बरत कहो है वरणाई ध्याइयै ।।
संवत् १७४६ सोमवार ७ करकोतु कर्मचूर व्रत बैठगो अमर पद चुरी सीर सीधातंम जाइयै ।।

नोट—पाठ एक दम अशुद्ध है। लीपि भी विकृत है।

३. ऋषिमण्डलमन्त्र	×	संस्कृत	ले० काल १७३६ १७-१६
४. चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	अपूर्ण २०
५. अंजना को रास	धर्मभूषण	हिन्दी	२१-३४

प्रारम्भ— पहेली रे अर्हंत पाय नमैं।
हू? भव दुख भंजन त्वं भगवंत कर्म कायातना का पसो।
पाप ना प्रभव असि सौ अंत तौ रास भरणै इति अंजना
तै तौ संयम साधि न गई स्वर लोक तौ सती न सरोमणि वंदीये ।।१।।
वसं विधाधर उपनी माय, नामे तीन वर्नधि संपजे।
भाव करंता हौ भवदुख जाय, सतो न सरोमणि वंदये ।।२।।
ब्राह्मी नै सुंदरी वंदये, राजा हो रसभ तणो वर इंय।
बाल पणै तप बन गई काम ना औमन वंखीय जे हतौ ।। सती न ·······३ ।।
मेच सेनापति नै भरतारि अंजना सो मदालसा।
त्यारे न कोमै सीयाल सवार तो·····।। सती न ·······४ ।।
पंचसै किसन कुमारिका, ईनि बाल कुवारी लाधो रे पावै।
जादव जग बाली करि, द्वारिका वहन सुनि तप जाय।
हुरी तणी अंजना वंधीय जिने राव औंडी मन मैं धरयौ वैराग तो ।। सती न ···५।।

अन्तिमपाठ—

वंस विद्याधरे ऊपनि मात, नामे नवनिधि पावसो ।

भाव करंता हो भव दुख जायतो, साती न सरोमणि वंदीये ।। ५८ ।।

इम गावै धर्मभूषण रास, रत्नमाल गुंथो रचि रास ।

सर्व पंचमिलि मंगल थयो, कहै ता रास ऊपजै रस विलास ।।

ढाल भवन केरी इम भणे, कंठ बिना राग किम होई ।

बुधि बिना ज्ञान नविसोई, गुरु बिना मारग कीम पानी सी ।

दीपक बिना मंदर अंधकार, देवभक्ति भाव बिना सब ह्वार तो ।।५६।।

रस बिना स्वाद न ऊपजै, तिम तिम मति वधै देव गुरु पसाव ।

खिमा विन सील करै कुल हारिण, निर्मल भाव राखो सदा ।

केतन कलक आनि कुल जाय, कुमति विनास निर्मल भावमूं ।

ते समझो सबही नरनारि, अर्हंत बिना दुर्लभ सरावक अवतार ।

जुहि समता भावसूं स्योपुरवास, एह कथी सब मगल करी।।

इति श्री अंजनारास सती सुंदरी हनुमंत प्रसादात् संपूरण ।।

स्वस्ति श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीजगत्कीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीमहेन्द्रकीर्त्ति तस्य भ० श्रीक्षेमेन्द्रकीर्त्ति तस्योपदेश गुणकीतिना इत्यादि तन्मध्ये पंडित कुस्यालि लिखामि वोराव नगरे सुथाने श्रीमहावीरचैत्यालये अमुक श्रावके सर्व वघेरवाल ज्ञात बुधिति समपात रहा श्रीवृषभनाथ यात्रा निमित्त गवन उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुक्लपक्षे आसोज वदी ३ दीतवार संवत् १८२० शालिवाहने १६७६ शुभंमस्तु ।

६. न्हवणविधि	×	संस्कृत	ले० काल १८२० आसोज वदी ३	
७. छियालीसगुण	×	हिन्दी		
८.	×	,,	पृष्ठ ३६वें पर चौबीसवें तीर्थङ्करोंके चित्र	
९. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी		३६-५०

विशेष—पत्र ४०वें पर भी एक चित्र है सं० १८२० मे पं० खुशालचन्द ने बेराठ में प्रतिलिपि की थी।

१०. भविष्यदत्तपञ्चमीकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	४१-८१

रचनाकाल सं० १६३३ पृष्ठ ५० पर रेखाचित्र ले० काल सं० १८२१ बोराव (बोराज) में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी। पत्र ८२ पर तीर्थङ्करों के ३ चित्र हैं।

११. हनुमंतकथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	८३-१०६
१२. बीस विरहमानपूजा	हर्षकीर्त्ति	"	११०
१३. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	१११
१४. सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	संस्कृत	११२
१५. अभिषेकपाठ	×	"	११२
१६. रविव्रतकथा	भाउ	हिन्दी	११२-१२१
१७. चिन्तामणिलग्न	×	संस्कृत ले० काल १८२१	१२२
१८. प्रद्युम्नकुमाररासो	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	१२३-१५१
		र० काल १६२८ ले० काल १८११	
१९. श्रुतपूजा	×	संस्कृत	१५२
२०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१५३-१५६
२१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	१५७-१६६
२२ पूजासंग्रह	×	"	१६७-१७२
२३. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१८३
२४. पाशाकेवली	×	हिन्दी	१८४-२१७
२५. पञ्चकल्याणकपाठ	रूपचन्द	"	२१७-२२२

विशेष—कई जगह पत्रों के दोनों ओर सुन्दर बेलें है।

५२६२. गुटका सं० १२। पत्र सं० १०६। आ० १०½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. यज्ञ की सामग्री का ब्यौरा	×	हिन्दी	१

विशेष—(अथ जागी की मौजे सिमरिया में प्र० देवाराम ने ताकी सामा श्राई संवत् १७९७ माह सुदी पूर्णिमा पुरानी पोथी में से उतारी। पोथी जीरण होगई तब उतरी। सब चीजों का निरख भी दिया हुआ है।

२. यज्ञमहिमा	×	हिन्दी	२

विशेष—मौजे सिमरिया में माह सुदी १५ सं० १७९७ में यज्ञ किया उसका परिचय है। सिमरिया में चौहान वंश के राजा श्रीराव थे। मयाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे। यज्ञाचार्य मोरेना के पं० टेकचन्द थे। यह यज्ञ सात दिन तक चला था।

३. कर्मविपाक	×	संस्कृत		३-११

विशेष—ब्रह्मा नारद संवाद में से लिया गया है। तीन अध्याय है।

४. आदीश्वर का समवशरण	×	हिन्दी	१६६७ कार्तिक सुदी	१२-१४

आदीश्वर को समोशरण-आदिभाग—

गुर गनधनि मन ध्याऊं, चित चरन सरन ल्याउ।
मति मांगि लेउ ग्रैसी, मुनि मांनि लैह जेसी ॥१॥
आदीश्वर गुण गाऊं, वर माथ सग्रु (र) पाउं।
चारित्र जिनेस लीया, भरथ को राजु दीया ॥२॥
तजि राज होइ भिखारी, जिन मौन व्रत धारी।
तब आपनी कमाई, भई उदय अंतराई ॥३॥
मुनि भीख काज जावइ, नहि भानु हाथ आवइ।
लेइ कन्या सरूपा, कोई रतन अति अनूपा ॥४॥

अन्तिमभाग— रिषि सहस गुन गावइ, फल बोधि बीजु पावइ।
कर जोडि इ मुख भासइ, प्रभु चरन मगन राखइ ॥७१॥

दोहरा— समोसरण जिनराय को, गावहि जे नरनारि।
मनवछित फल भोगवै, निरि पहुचहि भव पार ॥७२॥
सोलसह सडसठि वरष, कातिक सुदी बालराज।
सालकोट सुभ थानवर जयउ रिषभ जिनराज ॥७३॥

इति श्री आदीश्वरजी को समोसरण समाप्त ॥

५. द्वितीय समोसरण —	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	१४ १६

आदिभाग— प्रथम सुमरि जिनराज अनन्त सुख निधान मगल सिव संत
जिनवाणी सुमिरत मनु बढै, ज्यो गुनठान छिपक छिनु चढै ॥१॥
गुरुपद सेवहु ब्रह्म गुलाल, देवसास्त्र गुर मंगल माल।
इनहि सुमरि वरन्यो सुखसार, समवसरन जैसे बिसतार ॥२॥
दीठ बुधि मन भायो करै, सुरिख पद ग्रान पायो डरै।
सुनहु भव्य मेरे परवान, समोसरन को करौ बखान ॥३॥

सुभ ग्रासन दिढ अंग ध्यान, वर्द्धमान भयो केवल ज्ञान ।

समोसरण रचना ग्रति बनी, परम धरम महिमा ग्रति तणी ।।४।।

ग्रन्तिमभाग— चल्यौ नगर फिरि ग्रपने राइ, चरण सरण जिन ग्रति सुख पाइ ।

समोसरणय पूरण भयौ, सुनत पढित पातिग गलि गयौ ।।६५।।

दोहरा— सोरह सैं ग्रठसठि समै, माघ वसै सित पक्ष ।

गुलालब्रह्म भनि गीत गति, जसोनंदि पद सिक्ष ।।६६।।

गुरदेस हथिकंतपुर, राजा वक्रम साहि ।

गुलालब्रह्म जिन धर्म्म जय, उपमा दीजै काहि ।।६७।।

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत संपूर्ण ।।

६. नेमिश्री को मंगल जगतभूषण के शिष्य हिन्दी १६-१७

विश्वभूषण रचना सं० १६६८ श्रावण सुदी ८

ग्रादभाग— प्रथम जपौ परमेष्ठि तौ गुर हीयौ धरौ ।

सरस्वती करहुं प्रणाम कवित्त जिन उच्चरौ ।।

सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका ग्रति बनी ।

रची इन्द्र नै ग्राइ सुरनि मनि बहुकनी ।।

बहु कनीय मंदिर चैत्य कीयौ, देखि सुरनर हरषीयौ ।

समुद विजै वर भूप राजा, सक्र सोभा निरखीयौ ।।

प्रिया जा सिव देवि जानौ, रूप ग्रमरी ऊडसा ।

राति सुंदरि सैन सूती, देखि सुपनै षोडशा ।।१।।

ग्रन्तिम भाग— संवत् सोलह सै ग्रठानूवा जाणीयौ ।

सावन मास प्रसिद्ध ग्रष्टमी मानियौ ।।

गाऊं सिकंदराबाद पार्श्वजिन देहुरे ।

ग्र.नग कीया सुजान धर्म्म सौ नेहुरै ।।

धरै धर्म्म सौं नेहु ग्रति ही देही सबकौ दान जू ।

स्यादवाद बानी ताहि मानै करै पंडित मान जू ।।

जगतभूषण भट्टारक जै विश्वभूषण मुनिवर।
नर नारी मंगलचार गावै पढत पातिग निम्तरै॥

इति नेमिनाथ जू को मंगल समाप्त॥

७. पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	हिन्दी	१७-१६

आदिभाग रागुनट—

पारस जिनदेव को सुनहु चरित्र मनु लाई॥ टेक॥

मनउ सारदा माइ, भजौ मनधर चितुलाई।
पारस कथा संबंध, कहो भाषा सुखदाई॥

जंबू दखिन भरथ मै, नगर पोदना माभ।
राजा श्री अरिविंद जू, भुगतै सुख अवाभ॥ पारस जिन०॥

विप्र तहां एकु वसै, पुत्र द्वौ राज सुचारा।
कमठु बडो विपरीत, विसन सेवै जु अपारा॥

लघु भैया मरभूति सौ, वसुधरि दई ता नाम।
रति क्रीडा सेज्या रच्यौ, हो कमठ भाव के धाम॥ पारस जिन०॥

कोपु कीयौ मरभूति, कह्यो मंत्री सो राच्यो।
सीख दई नहीं गह्यो काम रस अंतर साच्यौ॥

कमठ विषै रस कारनै, अमर भूति बांधो जाई।
सो मरि वन हाथी भयौ, हथिनि भई त्रिय आइ॥ पारस जिन०॥

अन्तिमपाठ—

अवधि हेत करि बात सही देवनि तव जानी।
पदमावति धरणेन्द्र छत्र मस्तिग पर तानी॥

सब उपसर्ग निवारिकै, पार्श्वनाथ जिनंद।
सकल करम पर जारिकै, भये मुक्ति त्रियचंद॥ पारस जिन०॥

मूलसंघ पट्ट विश्वभूषण मुनि राई।
उत्तर देखि पुराण रचि, या वई सुभाई॥

वसै महाजन लोग जु, दान चतुर्विधि का देत।
पार्श्वकथा निहचै सुनौ, हो मोछि प्राप्ति फल लेत॥
पारस जिनदेव को, सुनहु चरितु मन लाइ॥२५॥

इति श्री पार्श्वनाथजी को चरित्र संपूर्ण॥

८. वीरजिर्णदगीत	भगौतीदास	हिन्दी	१९–२०
९. सम्यग्ज्ञानी धमाल	"	"	२०–२१
१० स्थूलभद्रशीलरासो	×	"	२१–२२
११. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२२–२३
१२ "	द्यानतराय	"	२३
१३. "	×	संस्कृत	२३
१४. पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	"	२४
१५. "	पद्मनन्दि	"	२४
१६. हनुमतकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी र० काल १६१६	२५–७५
		ले० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३	
१७. सीताचरित्र	×	हिन्दी अपूर्ण	७७–१०६

५३६३. गुटका सं० १३। पत्र सं० ३७। आ० ७½×१० इञ्च। ले० काल सं० १८९२ आसोज बुदी ७। पूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—निम्न पूजा पाठों का संग्रह है—

१. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	पूर्ण
२. लक्ष्मीस्तोत्र (पार्श्वनाथस्तोत्र)	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	"
३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	"
४. भक्तामरस्तोत्र	आ० मानतुंग	"	"
५. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	"
६. सिद्धपूजा	×	"	"
७. दशलक्षणपूजा जयमाल	×	संस्कृत	"
८. षोडशकारणपूजा	×	"	"
९. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	"
१०. शांतिपाठ	×	संस्कृत	"
११. सहस्रनामस्तोत्र	पं० आशाधर	"	"
१२. पञ्चमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी	"

१३. अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	"
१४. अभिषेकविधि	×	"	"
१५. निर्वाणकांडभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	"
१६. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"	"
१७. अनन्तपूजा	×	संस्कृत	"

विशेष—यह पुस्तक सुखलालजी बज के पुत्र मनसुख के पढने के लिए लिखी गई थी।

५३६४. गुटका नं० १४ । पत्र सं० १३ । आ० ४×६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—शारदाष्टक (हिन्दी) तथा ८४ आसादनो के नाम हैं।

५३६५. गुटका नं० १५ । पत्र सं० ४३ । आ० ५×३¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६० । पूर्ण

विशेष— पाठ अशुद्ध हैं—

१. कहज्योजी नेमजीसूं जाय म्हेतो थाही संग चालां	×	हिन्दी	१
२. हो मुनिवर कब मिलि है उपगारी	भागचन्द	"	१–२
३. ध्यावांला हो प्रभु भावसोंजी	×	"	२–८
४. प्रभु थांकीजी मूरत मनड़ो मोहियो	ब्रह्मकपूर	"	८–९
५. गरज गरज गहै नबरसै देखो भाई	×	"	९
६. मान लीज्यो म्हारी अरज रिषभ जिनजी	×	"	१०
७. तुम सी रमा विचारी तजि	×	"	११
८. कहज्योजी नेमिजीसूं जाय म्हे तो	×	"	१२
९. मुझे तारोजी भाई साइयां	×	"	१३
१०. संबोधपंचासिकाभाषा	बुधजन	"	१३–२०
११. कहज्योजी नेमिजीसूं जाय म्हेतो थांकही संगचाला	राजचन्द	"	२१–२३
१२. मान लीज्यो म्हारी आज रिषभ जिनजी	×	"	२३
१३. तजिकै गये पीया हमकै तुमसी रमा विचारी	×	"	२३–२४
१४. म्हे ध्यावाला हो प्रभु भावसूं	×	"	२४
१५. साधु दिगंबर नगन उर पद अंबर भूषणधारी	×	"	२५

१६. म्हे निशिदिन ध्यावांला	बुधजन	"	२६
१७. दर्शनपाठ	×	"	२६–२७
१८. कवित्त	×	"	२८–२६
१६. बारहभावना	नवल	"	३३–३५
२०. विनती	×	"	३६–३७
२१. बारहभावना	दलजी	"	३८–३६

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २२६ । म।० ५३×५ इश्च । ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाओ को मिला दिया गया है ।

विषयसूची—

१. वृहद्कल्याण	×	हिन्दी	३–१२
२. मुक्तावलिव्रत की तिथियां	×	"	१२
३. झाडा देने का मन्त्र	×	"	१२–१६
४. राजा प्रजाको वशमें करनेका मन्त्र	×	"	१७–१८
५. मुनीश्वरों की जयमाल	ब्रह्म जिनदास	"	२३–२४
६. दश प्रकार के ब्राह्मण	×	संस्कृत	२५–२६
७. सूतकवर्णन (यशस्तिलक से)	सोमदेव	"	३०–३१
८. गृहप्रवेशविचार	×	"	३२
६. भक्तिनामवर्णन	×	हिन्दी संस्कृत	३३–३५
१०. दीपावतारमन्त्र	×	"	३६
११. काले बिच्छुके डङ्क उतारने का मंत्र	×	हिन्दी	३८

नोट—यहां से फिर संख्या प्रारम्भ होती है ।

१२. स्वाध्याय	×	संस्कृत	१–३
१३. तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	१ ३
१४. प्रतिक्रमणपाठ	×	"	१६–३७
१५. भक्तिपाठ (सात)	×	"	३७–७२

१६. बृहत्स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	"	७३–८६
१७ बलात्कारगण गुर्वावलि	×	"	८६–६३
१८. श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६४–१०७
१६. श्रुतस्कंध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	१०७–११८
२०. श्रुतावतार	श्रीधर	संस्कृत गद्य	११८–१२३
२१. आलोचना	×	प्राकृत	१२३–१३२
२२. लघु प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	१३२–१४६
२३. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"	१४६–१५५
२४. वंदेतान की जयमाला	×	संस्कृत	१५५–१५६
२५. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	१५६–१६७
२६. संबोधपंचासिका	×	"	१६८–१७२
२७. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	१७२–१७६
२८. भूपालचौबीसी	भूपालकवि	"	१७७–१८०
२६. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१८०–१८४
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१८५–१८८
३१ दशलक्षणजयमाल	पं० रइधू	अपभ्रंश	१८६–१६५
३२. कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१६६–२०३
३३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	२०३–२०४
३४. मन्त्रादिसंग्रह	×	"	२०५–२२६

प्रशस्ति—संवत् १७५१ वर्षे शाके १६१६ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा १ तिथौ मङ्गलवारे आचार्य श्री चारुकीर्त्ति पं० गंगाराम पठनार्थं वाचनार्थं ।

५३६७. गुटका सं० १७ । पत्र स० ४०७ । आ० ७×५ इञ्च ।

१. प्रधानसमितिस्वरूप	×	प्राकृत	संस्कृत व्याख्या सहित १–३
२. भयहरस्तोत्रमन्त्र	×	संस्कृत	४
३. बंधस्थिति	×	"	मूलाचार से उद्धृत ५–६
४. स्वरविचार	×	"	७

५. संदृष्टि	×	संस्कृत	६–११
६. मन्त्र	×	"	१४
७. उपवास के दशभेद	×	"	१५
८. फुटकर ज्योतिष पद्य	×	"	१५
९. मढाई का ब्यौरा	×	"	१८
१०. फुटकर पाठ	×	"	१८-२०
११. पाठसंग्रह	×	संस्कृत प्राकृत	२१–२४
		गोमट्टसार, समयसार, द्रव्यसंग्रह आदि से संगृहीत पाठ हैं।	
१२. प्रश्नोत्तररत्नमाला	अमोघवर्ष	संस्कृत	२४–२५
१३. सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिषेणाचार्य	"	२६–२८
१४. गुणस्थानव्याख्या	×	"	२९–३१
		प्रवचनसार तथा टीका आदि से संगृहीत	
१५. छातीमुख की औषधि का नुमखा	×	हिन्दी	३२
१६. जयमाल (मालारोहण)	×	अपभ्रंश	३२–३५
१७. उपवासविधान	×	हिन्दी	३५–३६
१८. पाठसंग्रह	×	प्राकृत	३६–३७
१९. अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिंशिका	हेमचन्द्राचार्य	संस्कृत मन्त्र आदि भी हैं	३८–४०
२०. गर्भ कल्याणक क्रिया में भक्तियां	×	हिन्दी	४१
२१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	४२–४९
२२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"	४९–५२
२३. यतिभावनाष्टक	आ० कुंदकुंद	"	५२
२४. भावनाद्वात्रिंशतिका	आ० अमितगति	"	५३–५४
२५. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५५–५८
२६. संबोधपंचासिका	×	अपभ्रंश	५९–६०
२७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६१–६७
२८. प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६७–८८
२९. भक्तिस्तोत्र (आचार्यभक्ति तक)	×	संस्कृत	८९–१०७

३०. स्वयंभूस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	संस्कृत	१०८–११८
३१. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११८
३२. दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	"	११६
३३. सुप्रभातस्तवन	×	"	११६–१२१
३४. दर्शनस्तोत्र	×	प्राकृत	१२१
३५. बलात्कार गुरावली	×	संस्कृत	१२२–२४
३६. परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	"	१२४–२५
३७. नाममाला	धनञ्जय	"	१२५–१३७
३८. वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१३८
३६. करुणाष्टकस्तोत्र	"	"	१३६
४०. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१३६–१४१
४१. समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"	१४१
४२. अर्हद्भक्तिविधान	×	"	१४१–१४३
४३. स्वस्त्ययनविधान	×	"	१४४–१५६
४४. रत्नत्रयपूजा	×	"	१५६–१६२
४५. जिनस्नपन	×	"	१६२–१६८
४६. कलिकुण्डपूजा	×	"	१६८–१७१
४७. षोडशकारणपूजा	×	"	१७२–१७३
४८. दशलक्षणपूजा	×	"	१७३–१७५
४६. सिद्धस्तुति	×	"	१७५–१७६
५०. सिद्धपूजा	×	"	१७६-१८०
५१. शुभमालिका	श्रीधर	"	१८२–१६२
५२. सारसमुच्चय	कुलभद्र	"	१६२–२०६
५३. जातिवर्णन	×	" ५८ पद्य ७७ जाति	२०७–२०८
५४. फुटकरवर्णन	×	"	२०६
५५. षोडशकारणपूजा	×	"	२१०

५६. औषधियों के नुसखे	×	हिन्दी	२११
५७. संग्रहसूक्ति	×	संस्कृत	२१२
५८. दीक्षापटल	×	"	२१३
५९. पार्श्वनाथपूजा (मन्त्र सहित)	×	"	२१४
६०. दीक्षा पटल	×	"	२१८
६१. सरस्वतीस्तोत्र	×	"	२२३
६२. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	२२३-१२४
६३ सुभाषितसंग्रह	×	"	२२५-२२८
६४. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	२३१-२३५
६५. योगसार	योगचन्द	संस्कृत	२३१-२३५
६६. द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	२३६-२३७
६७. श्रावकप्रतिक्रमण	×	संस्कृत	२३७-२४५
६८. भावनापद्धति	पद्मनन्दि	"	२४६-२४७
६९. रत्नत्रयपूजा	"	"	२४८-२५९
७०. कल्याणमाला	पं० आशाधर	"	२५९-२६०
७१. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	२६०-२६३
७२. समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	"	२६४-२८५
७३. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	२८६-३०३
७४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३०४-३०६
७५. परमेष्ठियों के गुण व अतिशय	×	प्राकृत	३०७
७६. स्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	३०८-३०९
७७. प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	"	३१०-३२१
७८. देवागमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	"	३२२-३२७
७९. अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	"	३२८-३२९
८०. सुभाषित	×	"	३३०-३३१
८१. जिनगुणस्तवन	×	"	३३१-३३२

८२. क्रियाकलाप	×	”	३३२–३३४
८३. संभवनाथपद्धडी	×	अपभ्रंश	३३४–३३५
८४. स्तोत्र	लक्ष्मीचन्द्रदेव	प्राकृत	३३५–३३६
८५. स्त्रीशृङ्गारवर्णन	×	संस्कृत	३३६–३४१
८६. चतुर्विशतिस्तोत्र	माघनन्दि	”	३४२–३४३
८७. पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	”	३४४
८८. मृत्युमहोत्सव	×	”	३४५
८९. अनन्तगंठीवर्णन (मन्त्र सहित)	×	”	३४६–३४८
९०. आयुर्वेद के नुसखे	×	”	३४९
९१. पाठसंग्रह	×	”	३५०–३५४
९२. आयुर्वेद नुसखा संग्रह एवं मंत्रादि संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी योगशत वैद्यक मे संगृहीत	३५७–३८
९३. अन्य पाठ	×	”	३८८–४०७

इनके अतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके मे और है।

१. कल्याण बडा   २. मुनिश्वरोकी जयमाल (ब्रह्म जिनदास)   ३. दशप्रकार विप्र (मत्स्यपुराणेषु कथितं)
४. सूतकविधि (यशस्तिलक चम्पू मे)   ५. गृहबिबलक्षण   ६. दोपावताग्मन्त्र

५३६८. गुटका सं० १८। पत्र सं० ५५। आ० ७×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८०४ श्रावण बुदी १२। पूर्ण। दशा–सामान्य।

१. जिनराज महिमास्तोत्र	×	हिन्दी	१–३
२. सतसई	विहारीलाल	” ले० काल १७७४ फागुण बुदी १	१–४८
३. रसकौतुक रास सभा रञ्जन	गङ्गादास	” ” १८०४ सावण बुदी १२	४९–५५

दोहा—   अथ रस कौतुक लिख्यते—

गंगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन।
राज सभा रंजन कहत, मन हुलास रस लीन ॥१॥
दंपति रति नैरोग तन, विधा सुधन सुगेह।
जा दिन जाय अनंद सौ, जीतव को फल ऐह ॥२॥

सुंदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।
सोइ नारि सनेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥
हित सो राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
ज्यां हाथां रे वरह ए, पात्यां मैड कारन भारि ॥४॥
तरसै हूं परसे नहो, नौढा रहत उदास ।
जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हालै आस ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नहो, नाहुरि मिलै बिनु नेह ।
औसरि चुक्यौ मेहरा, काई वरसि करेह ॥६८॥
मुदरी लै छलस्यौ कह्यं, औ हौं फिर ना पेंद ।
काम सरै दुख वीसरै, वैरी हुवो वैद ॥६९॥
मानवती निस दिन हरै, बोलत खरीबदास ।
नदी किनारै रूखड़ो, जब तब होइ विनास ॥१००॥
सिव सुखदायक प्रानपति, जरो मांन को भोग ।
नासे देसी रूखड़ो, ना परदेसी लोग ॥१०१॥
गंता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजान ।
राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गंगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रंजन समस्या प्रबंध प्रभाव । श्री मिती सावरण वदि १२ बुधवार संवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखतं माणिकचन्द बज बांचै जीहेने जिसा माफिक वंच्या ।

५३९९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ३९ । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १९३० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—रसालकुंवर की चौपई-नलक कवि कृत है ।

५४००. गुटका सं० २० । पत्र सं० ६८ । आ० ६×३ इञ्च । ले० काल सं० १९९५ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महोदधि है ।

५४ १. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ३१६ । आ० ६×५ इञ्च । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. सामायिकपाठ	×	संस्कृत प्राकृत	१–२४
२. सिद्ध भक्ति आदि संग्रह	×	प्राकृत	२५–७०
३. समन्तभद्रस्तुति	समन्तभद्र	संस्कृत	७२
४. सामायिकपाठ	×	प्राकृत	७३–८१
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	८२–८६
६. पार्श्वनाथ का स्तोत्र	×	"	८७–१००
७. चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	"	१०१-१४६
८ पञ्चस्तोत्र	×	"	१४७–१७०
९. जिनवरस्तोत्र	×	"	१७० -२००
१०. मुनीश्वरों की जयमाल	×	"	२०१–२५०
११. सकलीकरणविधान	×	"	२५१–३००
१२. जिनचौबीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हिन्दी पद्य पद्य सं० ४८	३०१–८

आदिभाग—

जिनवर चुवीसइ जणि भानू पाय नमी कहु भवहं विचार ।

भाविइ सुणत ये संत ॥१॥

महाबल राजा पणि भणीइ, भाग भूमि आइ पणि सुणीइ ।

श्रीधर ईशानि देव ॥२॥

सुचिराज सातयइ भवि जाणु, अच्युतेन्द्र सोलम वखाणु ।

वज्रनाभि चन्द्रेश ॥३॥

तप करि सर्वारथ सिद्धि पासी, भव अग्यारम वृषभह स्वामी ।

मुगतइं ग्या जगनाह ॥४॥

विमलबाहना राजा धरि जांयु, पंचामुत्तरि अहमिन्द्र सुभाणु ।

इशं भवजिन परमपद पाम्यु ॥५॥

विमल वाहन राजा धरि जांयु, पंचामुत्तरि अहमिन्द्र वखाणु ।

अजित अमर पद पाम्यु ॥६॥

विमल वाहन राजा धरि सुरगीइ, प्रथमग्रीवि महमिंद्र सुमरणींइ ।

संभव जिन अवतार ।।७।।

अन्तिमभाग— आदिनाथ अग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर ।

शान्तिनाथ भवपार ।।४५।।

नमिनाथ भवदश तम्हें जाणु, पार्श्वनाथ भव दसइ बखाणु ।

महावीर भव तेत्रीसइ ।।४६।।

अजितनाथ जिन आदि कही जइ, अठार जिनेश्वर हिइ धरीजई ।

त्रिणि त्रिणि भव सही जाणु ।।४७।।

जिम चुवीस भवांतर सारो, भणता सुणता पुण्य अपारो ।

श्री विमलेन्द्रकीर्त्ति इम बोलइ ।।४८।।

इति जिन चुवीस भवान्तर रास समाप्ता ।।

१३. मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	३०८–३१०
१४. नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	संस्कृत	३११–१३
१५. पद–जीवारे जिणवर नाम भजै	×	हिन्दी	३१४–१५
१६. पद-जीया प्रभु न सुमरयो रे	×	"	३१६

५४०२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १५४ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—भजन । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. नेमि गुण गाऊं वांछित पाऊं	महीचन्द सूरि	हिन्दी	१
	बाय नगर में सं० १८८२ में पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।		
२. पार्श्वनाथजी की निशाणी	हर्ष	हिन्दी	१–६
३. रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	"	६
४. सुख कारण सुमरो	×	"	७
५. कर जोर रे जीवा जिनजी	पं० फतेहचन्द	"	८
६. चरण शरण अब आइयो	"	"	८
७. रुलत फिरयो भवादिको रे जीवा	"	"	९

८. आदम जाम बराय	फतेहचन्द	हिन्दी	र० काल स० १८४०	६
९. दर्शन दुहेलो जी	"	"		१०
१०. उग्रसेन घर बारणें जी	"	"		११
११. बारीजी जिनंदजी बारी	"	"		१२
१२. जामन मरण का	"	"		१३
१३. तुम जाय मनावो	"	"		१३
१४. अब ल्यूं नेमि जिनंदा	"	"		१४
१५. राज ऋषभ चरण नित वंदिये	"	"		१५
१६. कर्म भरमाये	"	"		१६
१७. प्रभुजी थांके सरणे आया	"	"		१७
१८. पार उतारो जिनजी	"	"		१७
१९. थांकी सांवरी मूरति छवि प्यारी	"	"		१८
२०. तुम जाय मनावो	"	"	अपूर्ण	१८
२१. जिन चरणां चितलाओ	"	"		१९
२२. म्हारो मन लाग्योजी	"	"		१९
२३. बखल जीव जरे	नेमीचन्द	"		२०
२४. मो मनरा प्यारा	सुखदेव	"		२१
२५. आठ भवांरो बाहलो	खेमचन्द	"		२२
२६. समदविजयजीरो जादुराय	"	"		२३
२७. नाभिजो के नन्दन	मनसाराम	"		२३
२८. त्रिभुवन गुरु स्वामी	भूधरदास	"		२४
२९. नाभिराय मोरां देवी	विजयकीर्त्ति	"		२६
३०. वारि २ हो बोभांजी	जीवणराम	"		२६
३१. श्री ऋषभेसुर प्रणमूं पाय	सदासागर	"		२७
३२. परम महा उत्कृष्ट आदि सुर	अजैराम	"		२७
३३. वै गुरु मेरे उर बसो	भूधरदास	"		२९
३४. करो निज सुखदाई जिनधर्म	त्रिलोककीर्त्ति	"		३०

३५. श्रीजिनराय की प्रतिमा वंदी जाय	त्रिलोककीर्त्ति	हिन्दी		३१
३६. होजी थांकी सांवली सूरत	पं० फतेहचन्द	"		३२
३७. कबही मिलसी हो मुनिवर	×	"		३३
३८. नेमीपुर पुर सरस्वती	सूरजमल	"	र० काल सं० १७८४	३३
३९. श्री जिन तुमसे बीनऊं	अजयराज	"		३५
४०. समदविजयजीरो नंदको	मुनि हीराचन्द	"		३५
४१. शंभुजारो वासी प्यारो	नयविमल	"		३६
४२. मन्दिर आवालां	×	"		३६
४३. ध्यान धरयाजी मुनिवर	जिनदास	"		३७
४४. ज्यारे सोभै राजि	निर्मल	"		३८
४५. केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	"		३९
४६. समकित धारी सहलडीजी	पुरुषोत्तम	"		४०
४७. भवगति मुक्ति नहीं छै रे	रामचन्द्र	"		४१
४८. बधावा	"	"		४२
४९. श्रीमंदरजी सुणज्यो मोरी बीनती	गुणचन्द्र	"		४३
५०. करकसारी बीनती	भगोसाह	"		४४–४५
		सूरत नगर में सं० १८२६ में रचना हुई थी।		
५१. उपदेशबावनी	×	हिन्दी		४५–६१
५२. जैनबद्री देशकी पत्री	मजलसराय	"	सं० १८२१	६२–६६
५३. ८५ प्रकार के मूर्खों के भेद	×	"		६७–६९
५४. रागमाला	×	"	३६ रागनियों के नाम हैं	७०
५५. प्रात भयो सुमरदेव	जगतरामगोदीका	"	राग भैरूं	७०
५६. धनि २ हो धनि दर्शन कार्जे	"	"		७१
५७. देखो जिनराज देव सेव	"	"		७२
५८. महावीर जिन मुक्ति पधारे	"	"		७२
५९. हमरैसो प्रभु सुरति	"	"		७३

६०. श्रीरिषभजी को ध्यान धरो	जगतराम गोदीका	हिन्दी		७३
६१. प्रात प्रथम ही जपो	”	”		७४
६२. जागे श्री नेमिकुमार	”	”	राग रामकली	७४
६३. प्रभु के दर्शन को मैं आयो	”	”		७५
६४. गुरुही भ्रम रोग मिटावे	”	”		७५
६५. सून कंदरी नेमि पढावे	”	”		७५
६६. निंदा तू जागत क्यों नहि रे	”	”		७६
६७. उतो मेरे प्राणको पियारो	”	”		७६
६८. राखोजी जिनराज सरन	”	”		७६
६९. जिनजी से मेरी लगन लगी	”	”		७६
७०. मुनि हो अरज तेरे पांय पगो	”	”		७७
७१. मेरी कौन गति होसी	”	”		७७
७२. देखोरी नेम कैसी रिद्धि पाई	”	”		७८
७३. आजि बधाई राजा नाभि के	”	”		७८
७४. वीतराग नाम सुमरि	मुनि विजयकीर्त्ति	”		७९
७५. या चेतन सब बुद्धि गई	बनारसीदास	”		७९
७६. इस नगरी मे किस बिध रहना	बनारसीदास	”		७९
७७. मैं पाये तुम त्रिभुवन राय	हरीसिह	”		८०
७८. ऋषभअजित संभव हरणा	भ० विजयकीर्त्ति	”		८०
७९. उठो तेरो मुख देखूं	ब्रह्मटोडर	”		८०
८० देखोरी आदीश्वरस्वामी कैसा ध्यान लगाया है	खुशालचंद	”		८१
८१. जै जै जै जै जिनराज	लालचन्द	”		८१
८२. प्रभुजी तिहारो कृपा	हरीसिह	”		८१
८३. धमकि २ धुम तागड दि दा ना	रामभगत	”		८२
८४. विषय त्याग शुभ कारज लागो	नवल	”		८२
८५. छवि जिन देखी देवकी	फतेहचन्द	”		८२

१३८. अजित जिन सरण तुम्हारी	भानुकीर्ति	हिन्दी	६७
१३९. तेरी मूरति रूप बनी	रूपचन्द	”	६७
१४०. अथिर नरभव जागिरे	विजयकीर्ति	”	६८
१४१. हम हैं श्रीमहावीर	”	”	६८
१४२. भलेभल ग्रासकली मुझ ग्राज	”	”	६८
१४३. कहां लो दास तेरी पूज करे	”	”	६८
१४४. ग्राज ऋषभ घरि जावे	”	”	६९
१४५. प्रात भयो बलि जाऊं	”	”	६९
१४६. जागो जागोजी जागो	”	”	६९
१४७. प्रात भये उठि जिन नाम लीजै	हर्षचन्द	”	६९
१४८. ऐसे जिनवर मे मेरे मन विलमायो	ग्रनन्तकीर्ति	”	१००
१४९. ग्रायो सरण तुम्हारी	×	”	”
१५०. सरण तिहारी ग्रायो प्रभु मैं	ग्रक्षयराम	”	”
१५१. बीस तीर्थङ्कर प्रात संभारो	विजयकीर्ति	”	१०१
१५२. कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	द्यानतराय	”	”
१५३. म्हारे प्रकटे देव निरञ्जन	बनारसीदास	”	”
१५४. हूं सरणागत तोरी रे	×	”	”
१५५. प्रभु मेरे देखत ग्रानन्द भये	जगतराम	”	१०२
१५६. जीवडा तू जागिने प्यारा समकित महलमें	हरीसिंह	”	”
१५७. घोर घटाकरि ग्रायोरी अलबर	जयकीर्ति	”	”
१५८. कौन दिखासू ग्रावी रे वनचर	×	”	”
१५९. सुमति जिनंद गुणमाला	गुणचन्द	”	१०३
१६०. जिन बादल चढि ग्रायो हो जगमें	”	”	”
१६१. प्रभु हम चरणन सरन करी	ऋषभहरी	”	”
१६२. जिन २ देखी होत गुरानी	जगमल	”	”
१६३. [illegible]	[illegible]	”	[illegible]

१६४. क्या सोचत अति भारी रे मन	द्यानतराय	हिन्दी	१०४
१६५. समकित उत्तम भाई जगतमे	"	"	"
१६६. रे मेरे घटज्ञान घनागम छायो	"	"	१०५
१६७. ज्ञान सरोवर सोइ हो भविजन	"	"	"
१६८. हो परमगुरु बरसत ज्ञानझरी	"	"	"
१६९ उ[illegible] री जिन दर्शन को नेम	देवसेन	"	"
१७० मेरे अब गुरु है प्रभु ते बकसो	हर्षकीर्त्ति	"	१०६
१७१. बलिहारी खुदा के बन्दे	जानि मोहमद	"	"
१७२. मैं तो तेरी आज महिमा जानी	भूधरदास	"	"
१७३. देखोरी आज नेमीसुर मुनि	×	"	"
१७४. कहारी कहुं कछु कहत न आवै	द्यानतराय	"	१०७
१७५. रे मन करि सदा संतोष	बनारसीदास	"	"
१७६. मेरी २ करता जनम गयो रे	रूपचन्द	"	"
१७७ देह बुढानी रे मै जानी	विजयकीर्त्ति	"	"
१७८ साधो लीज्यो सुमति अकेली	बनारसीदास	"	१०८
१७९. तनिक जिया जाग	विजयकीर्त्ति	"	"
१८०. तन धन जोबन मान जगत मे	×	"	"
१८१ देख्यो बन में ठाडो वीर	भूधरदास	"	१०९
१८२. चेतन नेकु न तोहि संभार	बनारसीदास	"	"
१८३. लगि रह्योरे अरे	बखतराम	"	"
१८४. लागि रह्यो जीव परभाव मे	×	"	"
१८५. हम लागे आतमराम सो	द्यानतराय	"	११०
१८६. निरन्तर ध्याऊ नेमि जिनंद	विजयकीर्त्ति	"	"
१८७. कित गयोरे पंथी बोल तो	भूधरदास	"	"
१८८. हम बैठे अपनी मौन से	बनारसीदास	"	"
१८९. दुविधा कब जैहेगी	×	"	१११

१९०. जगत मे सो देवन का देव	बनारसीदास	हिन्दी		१११
१९१. मन लागो श्री नवकारसू	गुणचन्द्र	”		”
१९२. चेतन अब चोजिये	”	”	राग सवरङ्ग	११२
१९३. आवे जिनवर मनके भावर्ते	राजसिंह	”		”
१९४. करो नाभि कंवरजी की आरती	लालचन्द	”		”
१९५. री भाको वेद रटन ब्रह्मा रटत	नन्ददास	”		११३
१९६. तैं नरभव पाय कहा किमो	रूपचन्द	”		”
१९७. अखिया जिन दर्शन की प्यासी	×	”		”
१९८. वलि जइये नेमि जिनदकी	भाउ	”		”
१९९. सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्ति	”		११४
२००. मुक्तागिरी वदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	”		”

सं० १८२१ मे विजयकीर्ति ने मुक्तागिरी की वंदना की थी।

२०१ उमाहा लाग रह्यो दरसन को	जगतराम	हिन्दी		११४
२०२. नाभि के नंद चरण रज वंदौं	किसनदास	”		”
२०३. लाग्या आतमराम सो नेह	द्यानतराय	”		”
२०४. धनि मेरी आजकी घरी	×	”		११५
२०५ मेरो मन बस कीना जिनराज	चन्द	”		”
२०६. धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मदयाल	”		”
२०७. आज मैं नीके दर्शन पायो	कर्मचन्द	”		”
२०८ देखो भाई माया लागत प्यारी	×	”		११६
२०९. कलियुग मे ऐसे ही दिन जावे	हर्षकीर्ति	”		”
२१० श्रीनेमि चले राजुल तजिके	×	”		”
२११. नेमि कंवर वर बींद बिराजे	×	”		११७
२१२ तेइ बड़भागी तेइ बड़भागी	सुंदरभूषण	”		”
२१३. अरे मन के के बर समझायो	×	”		”
२१४ कब मिलिहो नेम प्यारे	बिहारीदास	”		”

२१५. नेमिजिनंद बर्नन कौ	सकलकीर्ति	हिन्दी	११८
२१६. अब छाक्यो दाव बन्यो है भजले श्रीभगवान	×	”	”
२१७. रे मन जायगो कित ठौर	×	”	”
२१८. निश्चय होणहार सो होय	×	”	”
२१९. समझ नर जीवन थोरो	✓ रूपचन्द	”	”
२२०. लग गई लगन हमारी	जगतराम	”	११९
२२१. अरे तो को कैसे २ कह समझावें	चैन विजय	”	”
२२२. माधुरी जैनवाणी	जगतराम	”	”
२२३. हम आये हैं जिनराज तोरे बन्दन को	द्यानतराय	”	”
२२४. मन अटक्यो रे। अटक्यो	धर्मपाल	”	”
२२५. जैन धर्म नहीं कीना वै इन देही पापी	ब्रह्मजिनदास	”	१२०
२२६. इन नैनों दा यही सुभाव	”	”	”
२२७. नैना सफल भयो जिन दरसन पायो	रामदास	”	”
२२८. सब परि करम है परधान	✓ रूपचन्द	”	”
२२९. सब परि बल चेत ग्यान	हर्षकीर्ति	”	”
२३०. रे मन जायगो कित ठौर	जगतराम	”	१२१
२३१. सुनि मन नेमजी के वेन	द्यानतराय	”	”
२३२. तनक ताहि हे री ताहि आपनो दरस	जगतराम	”	”
२३३. चलत प्राण क्यों रोयेरी काया	×	”	”
२३४. बाजत रंग मृदग रसाला	जयकीर्ति	”	”
२३५. अब तुम जागो चेतनराया	गुणचन्द	”	१२२
२३६. कैसा ध्यान धरया है	जगतराम	”	”
२३७. करि रे आतम हित करि लं	द्यानतराय	”	”
२३८. साहिब खेलत है चौगान	नरपाल	”	”
२३९. देव मोरा हो ऋषभजी	समयसुन्दर	”	१२३
२४०. बंदी चेरी हो पिया मैं	द्यानतराय	”	”

२४१. मैं बंदा तेरा हो स्वामी	द्यानतराय	हिन्दी	१२३
२४२ जै जै हो स्वामी जिनराय	रूपचन्द	"	"
२४३ तुम ज्ञान विभौ फूली बसंत	द्यानतराय	"	१२४
२४४. नैननि ऐसी बानि परि गई	जगतराम	"	"
२४५ लागि लौ नाभिनंदन स्यौ	भूधरदास	"	"
२४६ हम आतम को पहिचाना है	द्यानतराय	"	"
२४७ कौन सयानप कीन्हारे जीव	जगतराम	"	"
२४८ निपट ही कठिन हेरी	विजयकीर्त्ति	"	"
२४९ हा जी प्रभु दीनदयाल मैं बंदा तेरा	अक्षयराम	"	१२५
२५० जिनवाणी दरयाव मन मेरा ताहि म भूल	गुणचन्द्र	"	"
२५१. मनहु महागज राज प्रभु	"	"	"
२५२ र्ण द्रय ऊपर असवार चतन	"	"	"
२५३ आरसी देखत मोहि आरसी लाग	समयसुन्दर	"	१२६
२५४. काम गढ फोज चढी है	×	"	"
२५५. दरवाजे खडा खोलि खोलि	अमृतचन्द्र	"	"
२५६ चलि रे छिन चलि चलि	द्यानतराय	"	"
२५७ चिंतामणि स्वामी साचा साहब मेरा	बनारसीदास	"	"
२५८. मुनि माया ठगिनी तैं सब ठिगी खाया	भूधरदास	"	१२७
२५९ चलि परसैं श्री शिखरसमेद गिरिरी	×	"	"
२६० जिन गुण गावो री	×	"	"
२६१ वीतराग तेरी मोहिनी मूरत	विजयकीर्त्ति	"	"
२६२ प्रभु सुमरन की या विरियां	"	"	१२८
२६३. किये आराधना तेरी	नवल	"	"
२६४. बडो धम आजको ये ही	नवल	"	"
२६५. मैय्या अपराध क्या किया	विजयकीर्त्ति	"	१२९
२६६. तजिके गये पीव हमको तकसीर क्या विचारी,	नवल	"	"

२६७. भैया री गिरि जानेदे मोहि नेमजीसूं काम है,	थीराम	”	१२६
२६८. नेम ब्याहनकूं आया नेम सेहरा बंधाया	विनोदीलाल	”	१३०
२६९. धन्य तुम धन्य तुम पतित पावन	×	”	१३१
२७०. चेतन नाड़ी भूलिये	नवल	”	”
२७१. त्यारो श्री महावीर मांकूं दीन जानिर	सवाईराम	”	”
२७२. मेरो मन बस कीन्हां महावीर (चादनपुरके)	हर्षकीर्ति	”	”
२७३ रावो सीता चलहु गेह	द्यानतराय	”	”
२७४. कहे सीताजी सुनि रामचन्द्र	”	”	१३२
२७५. नहिं छाडा हो जिनराज नाम	हर्षकीर्त्ति	”	”
२७६. देवगुरु पहिचान वंदे	×	”	”
२७७. नेमि जिनंद गिरनेरया	जीवराम	”	१३३
२७८. क्य परदेसी को पतियारो	हर्षकीर्त्ति	हिन्दी	१३३
२७९. चेतन मान ले माढी तिया	द्यानतराय	”	”
२८०. सावरी सूरत मेरे मन बसी है माई	नवल	”	”
२८१ आयो रे बुढापो बैरी	भूधरदास	”	”
२८२. साहिबा था जीवनडो म्हारो	जिनहर्ष	”	१३४
२८३. पंच महाव्रतधारी	किशनसिंह	”	”
२८४. तेरी बलिहारी हो जिनराज	×	”	”
२८५. दख्या दुनिया बिच वे कोई अजब तमाशा,	भूधरदास	”	१३५
२८६. अटकं नैना नहीं वहैदा	नवल	”	”
२८७. चलो जिनवंदिये एरी सखी	द्यानतराय	”	”
२८८ जगतनन्दन जग नायक जादो-पति	×	”	”
२८९ आछिन गहिय मानु नेमजी प्यारो अखिया	राजाराम	”	१३६
२९०. हाजो इक ध्यान संतजी का धरना	हमराज	”	”
२९१ मला हां माडे साइ हो	×	”	”
२९२. तू ब्रह्म भूलो, तू ब्रह्म भूलो अज्ञानी रे प्राणी	बनारसीदास	”	”

२६३. होजी हो सुधातम एह निज पद भूलि रह्या	×	हिन्दी		१३६
२६४. मुनि कनक कीर्ति की जकड़ी	मोतीराम	"		१३७

रचना काल सं० १८५३ लेखन काल संवत् १८५६ नागौर में पं० रामचन्द्र ने लिपि की।

२६५. छींक विचार	×	हिन्दी	ले० काल १८५७	१३७
२६६ सांवरिया अरज सुनो मुझ दीन की हो	पं० खेमचंद	हिन्दी		१३८
२६७. चांदखेड़ी में प्रभुजी राजिया	"	"		"
२६८. ज्यो जानत प्रभु जोग धरयो है	चन्द्रभान	"		"
२६९. आदिनाथ की विनती	मुनि कनक कीर्ति	"	र० काल १८५६	१३९-४०
३००. पार्श्वनाथ की आरती	"	"		१४०
३०१. नगरो की बसापत का संवत्वार विवरण	"	"		१४१

संवत् ११११ नागौर मंडाणो आखा तीज रै दिन।

" ६०६ दिल्ली बसाई अनंगपाल तुंवर बैसाख सुदी १२ भौम।

" १६१२ अकबर पातशाह आगरो बसायो।

" ७३१ राजा भोज उंजणो बसाई।

" १४०७ अहमदाबाद अहमद पातसाह बसाई।

" १५१५ राजा जोधे जोधपुर बसायो जेठ सुदी ११।

" १५४५ बीकानेर राव बीकै बसाई।

" १५०० उदयपुर राणै उदयसिंह बसाई।

" १४४५ राव हमीर न रावत फलोधी बसाई।

" १०७७ राजा भोज रै बेटे वीर नारायण सेवाणो बसायो।

" १५६६ रावल वीदै महेवो बसायो।

" १२१२ भाटी जेसे जैसलमेर बसायो सां (वन) बुदी १२ रवौ।

" ११०० पवार नाहरराव मंडोवर बसायो।

" १६११ राव मालदे माल कोट करायो।

" १५१८ राव जोधावत मेड़तो बसायो।

" १७८३ राजा जैसिंह जैपुर बसायो कछावे।

संवत् १३०० जालौर सौनगरे बसाई ।

„ १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगावाद बसायो ।

„ १३३७ पातसाह अलावद्दीन लोदी वीरमदे काम आयो ।

„ ६०२ अणहल गुवाल पाटण बसाई वैसाख सुदी ३ ।

„ २०२ (१२०२) ? राव अजैपाल पवार अजमेर बसाई ।

„ ११४८ सिधराव जैसिंह देहौ पाटण मैं ।

„ १४५२ देवडो सिरोही बसाई ।

„ १६१६ पातसाह अकबर मुलतान लीयो ।

„ १५६६ रावजी तैतवो नगर बसायो ।

„ ११८१ फलोधी पारसनाथजी ।

„ १६२६ पातसाह अकबर अहमदाबाद लीधी ।

„ १५६६ राव मालदे बीकानेर लीधी मास २ रही राव जैतसी ग्राम आयो ।

„ १६६६ राव किसनसिंह किशनगढ बसायो ।

„ १६१६ मालपुरो बसायो ।

„ १४५५ रैणपुरो देहूरो थांरना ।

„ ६०२ चीतोड चित्रंगद मोडीये बसाई ।

„ १२४५ विमल मंत्रीस्वर हूवो विमल बसाई ।

„ १६०६ पातसिंह अकबर चीतोड़ लीधी जे० सुदी १२ ।

„ १६३६ पातसाह अकबर राजा उदैसिहजी नु म्हाराजा रो खिताब दीयो ।

„ १६३४ पातसाह अक्कबर कछोविदा लीधो ।

३०२. श्वेताम्बर मत के चौरासी बोल		हिन्दी	१४३–४६
३०३. जैन मत का संकल्प	×	संस्कृत	अपूर्ण
३०४. शहर मारोठ की पत्री	×	हिन्दी पद्य	१५१

सं० १८५८ असाढ वदी १४

सर्वज्ञजिनं प्रणमामि हितं, सुभथान पलाडा थी लिखितं ।

सुमुनी महीचन्दजि को विदयं, नवनैद हुकम लुणां सवयं ॥१॥

किरपा कुरिए मोहन जीवरणयं, अपरंपुर मारोठ थानकयं ।
सरवोपम लायक थान छजै, गुरु देव सु आगम भक्ति यजै ॥२॥
तीर्थङ्कर ईस सुभक्ति धरै, जिन पूज पुरंदर जेम करै ।
चतुसंघ सुभार धुरंधरयं, जिन चैति चैत्यालय कारकयं ॥३॥
व्रत द्वादस पालसै सुद्ध खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुथरा ।
बहु दान चतुर्विध देय सदा, गुरु शास्त्र सुदेव पुजै सुखदा ॥४॥
धर्म प्रश्न जु श्रेरिणक भूप जिसा, सघश्रेयांस दानपति जु तिसा ।
निज वंस जु व्योम दिवाकरयं, गुरण सौख्य कलानिधि बोधमयं ॥५॥
सु इत्यादिक वोपम योगि बहु, लिखियो जु कहां लग वोय सहूं ।
दयुक्ता गोठि जु श्रावग पंच लसे, बुद्धि वृद्धि समृद्धि आनन्द वसे ॥६॥
तिह योगि लिखै ध्रम वृद्धि सदा, लहियो सुख संपति भोग मुदा ।
.... ॥७॥
इह थानक आनन्द देव जपै, उत चाहत क्षेम जिनेन्द्र कृपै ।
अपरंच जु कागद आइ इतै, समाचार वाच्या परसंन तितै ॥८॥
सहु वात जु लाय ध्रमकरं, ध्रम देव गुरु पसि भक्ति भरं ।
मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम सुदायक हो ॥६॥
यशवंत विनैवंत दातृ गहो, गुरणशील दयाध्रम पालक हो ।
इत है व्यवहार सदा तुम को, उपरांति तुमै नहि औरन को ॥१०॥
लिखियो लघु को विधमान यहु, सुख पत्र जु वाहुडतो लिखि हू ।
वसु[८] बारण[५] वसू[८] पुनि चन्द्र[१] कियं, वदि मास असाढ चतुर्दिशियं ॥११॥
इह त्रोटक छंद सुचाल मही, लिखवी पतरी हित रीति वही ।
....॥१२॥
तुम भेजि हूं चैक संकर नै, समचार कह्या मुख तै सुरगै ।
इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवांन सवै सुखतै ॥१३॥
॥ इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पंचायती नु ॥

१०५. शृङ्गार रस के फुटकर छन्द × हिन्दी ११३-११४

५४०३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १८२ । आ० ८×५½ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—विभिन्न रचनाओं में से विविध पाठों का संग्रह है ।

५४०४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० ८१ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. चतुर्विशति तीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत	१-६५
२. जिनचैत्यालय जयमाल	रत्नभूषण	हिन्दी	६६-६९
३. समस्त व्रत की जयमाल	चन्द्रकीर्त्ति	"	७०-७३
४. आदिनाथाष्टक	×	"	७३-७५
५. मणिरत्नाकर जयमाल	×	"	७५-७७
६. आदीश्वर आरती	×	"	८१

५४०५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० १५७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७५५ आसोज सुदी १३ ।

१. दशलक्षणपूजा	×	संस्कृत	१-५
२. लघुस्वयंभू स्तोत्र	×	"	१६-१८
३. शास्त्रपूजा	×	"	१९-२४
४. षोडशकारणपूजा	×	"	२४-२७
५. जिनसहस्रनाम (लघु)	×	"	२७-३२
६ सोलकारणरास	मुनि सकलकीर्त्ति	हिन्दी	३३-३८
७. देवपूजा	×	संस्कृत	५०-६६
८. सिद्धपूजा	×	"	६७-७३
९. पञ्चमेरुपूजा	×	"	७४-७५
१०. अष्टाह्निकाभक्ति	×	"	७६-८९
११. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	९०-१०५
१२. रत्नत्रयपूजा	पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन	"	११६-१३७
१३. क्षमावणीपूजा	ब्रह्मसेन	"	१३८-१४५
१४. [illegible]तीर्थवर्णन	×	हिन्दी	१४६

१५. बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	×	संस्कृत	१५१-५४
१६. शास्त्रजयमाल	×	प्राकृत	१५५-५६

५४०६. गुटका सं० ३६। पत्र सं० १४३। आ० ६×४ इञ्च। ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

१. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२. भूपालस्तोत्र	भूपाल	"	५-६
३. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	६-१३
४. सामयिक पाठ	×	"	१३-३२
५. भक्तिपाठ (सिद्ध भक्ति आदि)	×	"	३३-७०
६. स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	"	७१-८७
७. वन्देतान की जयमाला	×	"	८८-८६
८. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	८६-१०७
६. श्रावकप्रतिक्रमण	×	"	१०८-२३
१०. गुर्वावलि	×	"	१२४-३३
११. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	"	१३४-१३६
१२. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१३६-१४३

संवत् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ सुदी द्वितीया रवौदिने मद्येह श्री घनौघेन्द्रगे श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानन्दि पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणपट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयनन्दिपट्टे भ० श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीकुमुदचन्द्रास्तत्पट्टे भ० श्रीअभयचन्द्र ब्रह्म श्री अभयसागर सहायेनेदं क्रियाकलापपुस्तकं लिखितं श्रीमद्घनौघेन्द्रगच्छः हुंबड़जातीयः लघुशाखायां समुत्पन्नस्य परिक्षरविदासस्य भार्या बाई कीकी तयोः संभवा सुता मताइनाम्ने प्रदत्तं पठनार्थं च।

५४०७. गुटका सं० ३७। पत्र सं० १५७। आ० ६×५ इञ्च। ले० काल सं० १८८७। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—पं० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

१. शान्ति पूजा	×	संस्कृत	१-२
२. स्फुट हिन्दी पद्य	×	हिन्दी	३-७

३. मंगल पाठ	×	संस्कृत	८-९
४. नामावली	×	"	९-११
५. तीन चौबीसी नाम	×	हिन्दी	१२-१३
६. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१३-१४
७. भैरवनामस्तोत्र	×	"	१४-१५
८. पञ्चमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी	१५-२०
९. अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	२१-२५
१०. षोडशकारणपूजा	×	"	२५-२७
११. दशलक्षणपूजा	×	"	२७-२९
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	२९-३०
१३. अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	३१-३३
१४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	३४-४६
१५. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	४७-५३
१६. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	५२-५५
१७. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५६-६०
१८. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	६१-७१
१९. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७२-८७
२०. सम्मेद शिखर निर्वाण काण्ड	×	हिन्दी	८८-९१
२१. ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	संस्कृत	९२-९७
२२. तत्वार्थसूत्र (१-५ अध्याय)	उमास्वामि	"	९९-१००
२३. भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	हिन्दी	१००-१६
२४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	"	१०७-१११
२५. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	११२-१३
२६. स्वरोदयविचार	×	"	११४-११९
२७. बाईसपरिषह	×	"	१२०-१२५
२८. सामायिकपाठ लघु	×	"	१२५-२६

२९. श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६–२८
३०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	१२८–३२
३१. चिंतामणीपार्श्वनाथपूजा स्तोत्र	×	संस्कृत	१३२–३६
३२. कलिकुण्डपार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६–३९
३३. पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०–४२
३४. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१४३–४६
३५. ज्योतिष चर्चा	×	"	१४७–१५७

५४०८. गुटका सं० २८। पत्र सं० २०। आ० ८३/४×७ इञ्च। पूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है।

५४०९. गुटका सं० २९। पत्र सं० २१। आ० ६३/४×४ इञ्च। ले० काल सं० १८४६ मंगसिर सुदी १०। पूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—सामान्य शुद्ध। इसमें संस्कृत का सामायिक पाठ है।

५४१०. गुटका सं० ३०। पत्र सं० ८। आ० ७×४ इञ्च। पूर्ण।

विशेष—इसमें भक्तामर स्तोत्र है।

५४११. गुटका सं० ३१। पत्र सं० १२। आ० ६१/२×४१/२ इंच। भाषा–हिन्दी, संस्कृत।

विशेष—इसमे नित्य नियम पूजा है।

५४१२. गुटका सं० ३२। पत्र सं० १०२। आ० ६१/२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८९६ फागुण सुदी ३। पूर्ण एवं शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष—इसमें पं० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है। तनसुख सोनी ने अलवर मे साह दुलीचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी। अन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है।

५४१३. गुटका सं० ३३। पत्र सं० २४०। आ० ५×६१/२ इञ्च। विषय–भजन संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—जैन कवियों के भजनो का संग्रह है।

५४१४. गुटका सं० ३४। पत्र सं० ४१। आ० ६१/२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। ले० काल सं० १९०८ पूर्ण। सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

१. ज्योतिषसार | कृपाराम | हिन्दी | १—३०

र० काल सं० १७९२ कार्तिक सुदी १० ।

आदिभाग- दोहा—

सकल जगत सुर असुर नर, परसत गणपति पाय ।
सो गणपति बुधि दीजिये, जन अपनो चितलाय ।।
अरु परसो चरनन कमल, युगल राधिका स्याम ।
धरत ध्यान जिन चरन को, सुर न (र) मुनि आठो जाम ।।
हरि राधा राधा हरि, जुगल एकता आन ।
जगत आरसी मैं नमो, दूजो प्रतिबिम्ब जान ।।
सोभति ओढे मत्त पर, एकहि जुगल किसोर ।
मनो लस घन मांझ ससि, दामिनी चारु ओर ।।
परसे अति जय चित्त कै, चरन राधिका स्याम ।
नमस्कार कर जोरि कै, भाषत किरपाराम ।।

साहिजहापुर सहर में, कायथ राजाराम ।
तुलाराम तिहि बंस मे, ता सुत किरपाराम ।।६।।

लघु जातक को ग्रन्थ यह, सुनो पंडितन पास ।
ताके सबै श्लोक कैं, दोहा करे प्रकास ।।७।।

औ ग्रवहु जे सुनौ, लयो जु अरथ निकारि ।
ताको बहुविधि हेत सौं, कह्यो ग्रन्थ विस्तार ।।८।।

संवत् सतरह से वरस, और बाणवै जानि ।
कातिक सुदी दसमी गुरु, रच्यौ ग्रन्थ पहचानि ।।९।।

सब ज्योतिष को सार यह, लियो जु अरथ निकारि ।
नाम धरचो या ग्रन्थ को, तातें ज्योतिष सार ।।१०।।

ज्योतिष सार जु ग्रन्थ कौं, कलप वृक्ष मनु लेखि ।
ताको नव साखा लसत, जुदो जुदो फल देखि ।।११।।

अन्तिम—

अथ वरस फल लिखते—

संवत् मही हीन करि, जनम वर (ष) लो मित्त ।
रहै सेष सो गत वरष, आवरदा मैं वित्त ॥६०॥
भये वरष गत अङ्क भर, लिख घर वाहू ईस ।
प्रथम येक मन्दर है, ईह वहौ इकतीस ॥६१॥
अरतीस पहलै धुरवा, अंक को दिन अपनै मन जानि ।
दूजे घर फल तीसरो, चौथे म अखिर ज ठांन ॥६२॥
भये वरष गत अंक को, गुन धरवावो चित्त ।
गुणाकार के अंक मैं, भाग सात हरि मित ॥६३॥
भाग हरै ते सात को, लबध अंक सो जानि ।
जो मिले य पल मैं बहुरि, फल तै घटी बखानि ॥६४॥
घटिका मै तै दिवस मै, मिलि जै है जो अंक ।
तामे भाग ज सत को, हरि ये मित न सं.. ॥६५॥
भाग रहै जो सेष सो, बचै अंक पहिचानि ।
तिन मैं फल घटीका दसा, जन्म मिलावो आनि ॥६६॥
जन्मकाल के अंत रवि, जितने बीते जानि ।
उतनै बाते अंस रवि, वरस लिख्यौ पहचानि ॥६७॥
वरस लग्यौ जा अंत मैं, सोइ देत चित धारि ।
वादिन इतनी घड़ी जु, पल बीते लगुन बीचारि ॥६८॥
लगन लिखै ते गोरहु जो, जा घर बैठो जाइ ।
ता घर के फल सुफल को, दीजे मित बनाइ ॥६९॥

इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार संपूर्णम्

१. पाशाकेवली	×	हिन्दी	३१-३६
२. मुहूर्त	×	„	३६-४१

५४१५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १८ । आ० ६३/४×५१/२ इञ्च । भाषा-× । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १८८६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१. नेमिनाथजी के दश भव	×	हिन्दी पद्य	१-५
२. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	" र० काल १७४१,	५-७
३. दर्शन पाठ	×	संस्कृत	८
४. पार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	९-१०
५. दर्शन पाठ	×	"	११
६. राजुलपच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	"	१२-१८

५४१६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १०६ । आ० ८॥×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल १७८२ माह बुदी ८ । पूर्ण । अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । लिपि विकृत एवं बिलकुल अशुद्ध है ।

१. ढोला मारूणी की बात	×	हिन्दी प्राचीन पद्य सं० ४१५,	१-२४
२. बदरीनाथजी के छन्द	×	"	२८-३०
		ले० काल १७८२ माह बुदी ८	
३. दान लीला	×	हिन्दी	३०-३१
४. प्रह्लाद चरित्र	×	"	३१-३४
५. मोहम्मद राजा की कथा	×	"	३५-४२
		११५ पद्य । पौराणिक कथा के आधार पर ।	
६. भगतवत्सावलि	×	हिन्दी	४२-४४
		सं० १७८२ माह बुदी १३ ।	
७. भ्रमर गीत	×	" १२१ पद्य,	४४-५३
८. ध्रुलीला	×	"	५३-५५
९. गज मोक्ष कथा	×	"	५५-५६
१०. ध्रुलीला	×	" पद्य सं० २४	५६-६०

११. बारहखड़ी	×	हिन्दी		६०-६२
१२. विरहमञ्जरी	×	"		६२-६८
१३. हरि बोला चित्रावली	×	"	पद्य सं० २९	६८-७०
१४. जगन्नाथ नारायण स्तवन	×	"		७०-७४
१५. रामस्तोत्र कवच	×	संस्कृत		७५-७७
१६. हरिरस	×	हिन्दी		७८-८५

विशेष—गुटका साजहानाबाद जयसिंहपुरा में लिखा गया था। लेखक रामजी मीणा था।

५४१७. गुटका सं० ३७। पत्र सं० २४०। आ० ७½×५½ इञ्च।

१. नमस्कार मंत्र सटीक	×	हिन्दी		३
२. मानबावनी	मानकवि	"	५३ पद्य हैं	४-२८
३. चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति	×	"		३२
४. आयुर्वेद के नुसखे	×	"		३५
५. स्तुति	कनककीर्ति	"		३७
			लिपि सं० १७६९ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार	
६. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	संस्कृत		४१

कुशला सौगाणी ने सं० १७७० में सा० फतेहचन्द गोदीका के ओल्ये से लिखी।

७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६ अध्याय तक	६१
८. नेमीश्वररास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	र० सं० १६१५	१७२
९. जोगीरासो	जिनदास	"	लिपि सं० १७१०	१७६
१०. पद	×	"		"
११. आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	"		२०४
१२. दानशीलतपभावना	×	"		२०५-२३६
१३. चतुर्विंशति छप्पय	गुणकीर्ति	"	र० सं० १७७७ असाढ़ वदी १४	

आदि भाग—

आदि अंत जिन देव, सेव सुर नर तुम करता।
जय जय ज्ञान पवित्र, मासु सेवहि अघ हरता॥

सरसुति तनइ पसाइ, ज्ञान मनवांछित पूरइ ।
सारद लागौ पाइ, जेमि दुख दालिद्र भरइ ॥
गुरु निरग्रन्थ प्रणम्य कर, जिन चउवीसो मन धरउ ।
गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभ वसाइ रु वेला तरउ ॥१॥

नाभिराय कुलचन्द, नंद मरुदेवि जानउ ।
काइ धनुष शत पञ्च, वृषभ लाछन जु बखानउ ॥
हेम वर्ष कहि कायु, आयु लक्ष जु चौरासी ।
पूरव गनती एह, जन्म अयोध्या वासी ॥
भरथहि राजु नु सौपि कर, अस्टापद सीधउ तदा ।
गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभवित लोक वन्दहु सदा ॥१॥

अन्तिम भाग—

श्रीमूलसंघ विख्यातगछ सरसुतिय वखानउ ।
तिहि महि जिन चउवीम, ऐह सिक्षा मन जानउ ॥
पराय छइ प्रसादु, उत्तंग मूलचन्द्र प्रभुजानी ।
साहिजिहां पतिसाहि, राजु दिलीपति आनी ॥
सतरहसइरु सतोसरा, वदि असाढ चउदसि करना ।
गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सु सकल संघ जिनवर सरना ॥

॥ इति श्री चतुर्विसततीर्थंकर छपैया सम्पूर्ण ॥

१३. सीलरास	गुणकीर्ति	हिन्दी	रचना सं० १७१३	२४०

५४१८. गुटका सं० ३८—पत्रसंख्या—२२१ । —आ० १०×७॥ दशा—जीर्ण ।

विशेष—३४ पृष्ठ तक आयुर्वेद के अच्छे नुसखे हैं ।

१. प्रभावती कल्प	×	हिन्दी	कई रोगों का एक नुसखा है ।
२. नाड़ी परीक्षा	×	संस्कृत	

करीब ७२ रोगों की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है ।

३. शील सुदर्शन रासो	×	हिन्दी	३७–४२

४. पृष्ठ संख्या ५२ तक निम्न अवतारों के सामान्य रंगीन चित्र हैं जो प्रदर्शनी के योग्य हैं।

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार (६) वराहावतार (७) नृसिंहावतार (८) कल्किअवतार (९) बुद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा (११) पार्श्वनाथ चैत्यालय (पार्श्वनाथ की मूर्ति सहित)

५. शकुनावली	×	संस्कृत	५६
६. पाशाकेवली (दोष परीक्षा) जन्म कुण्डली विचार	×	हिन्दी	६६

७. पृष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के वापिस आने का यन्त्र है।

८. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	७३
९. वैद्यमनोत्सव (भाषा)	नयन सुख	हिन्दी	७४–८१
१०. राम विनोद (आयुर्वेद)	×	"	८२–९८
११. सामुद्रिक शास्त्र (भाषा)	×	"	९९–११२
			लिपी कर्ता—सुखराम ब्राह्मण पचोली
१२. शीघ्रबोध	काशीनाथ	संस्कृत	
१३. पूजा संग्रह	×	"	१९४
१४. जोगीरासो	जिनदास	हिन्दी	१९७
१५. तत्वार्थसूत्र	उमा स्वामि	संस्कृत	२०७
१६. कल्याणमंदिर (भाषा)	बनारसीदास	हिन्दी	२१०
१७. रविव्रतव्रत कथा	×	"	२२६
१८. व्रतों का ब्योरा	×	"	"

अन्त में ६४ योगिनी आदि के यंत्र हैं।

५४१९. गुटका सं० ३६—पत्र सं० ९४। आ० ९×६ इञ्च। पूर्ण। दशा—सामान्य।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५४२० गुटका सं० ४०—पत्र सं० १०३ । प्रा० ८॥×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० सं० १८८० पूर्ण । सामान्य शुद्ध ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह तथा पृष्ठ ८० से नरक स्वर्ग एवं पृथ्वी आदि का परिचय दिया हुवा है ।

५४२१ गुटका सं० ४१—पत्र संख्या—२५७ । प्रा०—८×६॥ इञ्च । लेखन काल—संवत् १८७५ माह बुदी ७ । पूर्ण । दशा उत्तम ।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	रच० सं० १६६३ आसो.सु. १३	१–५१
२. माणिक्यमाला	संग्रह कर्ता	हिन्दी	संस्कृत प्राकृत सुभाषित	५२–१११
ग्रंथप्रश्नोत्तरी	ब्रह्म ज्ञानसागर			
३. देवागमस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	संस्कृत	लिपि संवत् १८६६	

कृपारामसौगाणी ने करौली राजा के पठनार्थ हाडौती गांव मे प्रति लिपि की । पृष्ठ-१११से ११५ ।

४. अनादिनिधनस्तोत्र	×	„	लिपि सं० १८६६	११५–११६
५. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत		११६–११७
६. सामायिकपाठ	अमितगति	„		११७–११८
७. पंडितमरण	×	„		११६
८. चौवीसतीर्थङ्करभक्ति	×	„		११६–२०
			लेखन सं० १६७० बैसाख सुदी ३	
९. तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी		१२०
१०. दर्शनपाठ	×	संस्कृत		१२३
११. पंचमंगल	रूपचंद	हिन्दी		१२३–१२८
१२. कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	„		१२८–३०
१३. विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	„		१२०–३२
			रचना काल १७१५ ।	
१४. भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी		१३२–३५
१५. वज्रनाभि चक्रवर्त्तिकी भावना	भूधरदास	„		१३५–३६

१६. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवती दास	"	१३–३७
१७ श्रीपाल स्तुति	×	हिन्दी	१३७–३८
१८. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१३८–४५
१९. सामायिक बड़ा	×	"	१४५–५२
२०. लघु सामायिक	×	"	१५२–५३
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	हिन्दी	१५३–५४
२२. बाईस परिषह	भूधरदास	"	१५४–५७
२३. जिनदर्शन	"	"	१५७ ५८
२४. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	"	१५८-६०
२५. बीसतीर्थंकर की जकड़ी	×	"	१६०–६१
२६. नेमिनाथ मंगल	लाल	हिन्दी	१६१-१६७
			र० सं० १७४४ सावरण सु० ६
२७. दान बावनी	द्यानतराय	"	१६७–७१
२८. चेतनकर्म चरित्र	भैय्या भगवतीदास	"	१७१–१८३
			र० १७३६ जेठ बदी ७
२९. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	१८४–८६
३०. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	"	१८६–९२
३१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१९२–९४
३२. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१९४–९६
३३. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१९६–९८
३४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१९८–२००
३५. भूपालचौबीसी	भूपाल कवि	"	२००–२०२
३६. देवपूजा	×	"	२०२–२०५
३७. सिद्धचक्र पूजा	×	"	२०५–२०६
३८. सिद्ध पूजा	×	"	२०६–[illegible]

३९. सोलहकारणपूजा	×	"		२०७–२०८
४०. दशलक्षणपूजा	×	"		२०८–२०९
४१. रत्नत्रयपूजा	×	"		२०९–१४
४२. कलिकुण्डलपूजा	×	"		२१४–२२५
४३. चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा	×	"		२२५–२६
४४. शांतिनाथस्तोत्र	×	"		२२६
४५. पार्श्वनाथपूजा	×	"	अपूर्ण	२२६–२७
४६. चौबीस तीर्थङ्कर स्तवन	देवनन्दि	"		२२८–३७
४७. नवग्रहगर्भित पार्श्वनाथ स्तवन	×	"		२३७–४०
४८. कलिकुण्डपार्श्वनाथस्तोत्र	×	"		२४०–४१
		लेखन काल १८६३ माघ सुदी ५		
४९. परमानन्दस्तोत्र	×	"		२४१–४३
५०. लघुजिनसहस्रनाम	×	"		२४३–४६
		लेखन काल १८७० वैशाख सुदी ५		
५१. सूक्तिमुक्तावलिस्तोत्र	×	"		२४६–५१
५२. जिनेन्द्रस्तोत्र	×	"		२५२–५४
५३. बहत्तरकला पुरुष	×	हिन्दी गद्य		२५७
५४. चौसठ कला स्त्री	×	"		"

५४२२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ३२९ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमे भूधरदासजी का चर्चा समाधान है ।

५४२३. गुटका सं० ४३—पत्र सं० ५८ । आ० ६¾×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल १७८७ कार्तिक शुक्ला १३ । पूर्ण एवं शुद्ध ।

विशेष—व घेरवालान्वये साह श्री जगरूप के पठनार्थ भट्टारक श्री देवचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है । सामायिक पाठ आदि का संग्रह है ।

५४२४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ८३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा जीर्ण ।

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है ।

५४२५. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १४०। आ० ६½×५ इञ्च। पूर्ण।

१. देवशास्त्रगुरु पूजा	×	संस्कृत	१–७
२. कमलाष्टक	×	"	८–१०
३. गुरुस्तुति	×	"	१०–११
४. सिद्धपूजा	×	"	१२–१५
५. कलिकुण्डस्तवन पूजा	×	"	१६–१८
६. षोडशकारणपूजा	×	"	१६–२२
७. दशलक्षणपूजा	×	"	२२–२२
८. नन्दीश्वरपूजा	×	"	३२–३६
६. पंचमेरुपूजा	भट्टारक महीचन्द्र	"	३६–४५
१०. अनन्तचतुर्दशीपूजा	" मेरुचन्द्र	"	४५–५७
११. ऋषिमंडलपूजा	गौतमस्वामी	"	५७–६५
१२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	६६–७४
१३. महाभिषेक पाठ	×	"	७४–६६
१४. रत्नत्रयपूजाविधान	×	"	६७–१२१
१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	हिन्दी	१२२–२५
१६. क्षेत्रपाल की आरती	×	"	१२६–२७
१७. गणधरवलयमंत्र	×	संस्कृत	१२८
१८. आदित्यवारकथा	वादीचन्द्र	हिन्दी	१२६–३१
१६. गीत	विद्याभूषण	"	१३१–३३
२०. लघु सामायिक	×	संस्कृत	१३४
२१. पद्मावतीछंद	भ० महीचन्द्र	"	१३४–१४०

५५२६. गुटका सं० ४६—पत्र सं० ४६। आ० ७½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। पूर्ण एवं जीर्ण।

विशेष—[illegible]

५४२७. गुटका सं० ४७ । पत्र स० ३४० । आ० ८×४ इञ्च पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. सूर्य के दस नाम	×	संस्कृत	१
२. बन्दी मोक्ष स्तोत्र	×	"	१–२
३. निर्वाणविधि	×	"	२–३
४. मार्कण्डेयपुराण	×	"	४–५९
५. कालीसहस्रनाम	×	"	५८–१३२
६. नृसिंहपूजा	×	"	१३३–३५
७. देवीसूक्त	×	"	१३६–९५
८. मंत्र-संहिता	×	संस्कृत	१९६–२३३
९. ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	"	२३३–३६
१०. हरगौरी संवाद	×	"	२३६–७३
११. नारायण कवच एवं अष्टक	×	"	२७३–७९
१२. चामुण्डोपनिषद्	×	"	२७९–२८१
१३. पीठ पूजा	×	"	२८२–८७
१४. योगिनी कवच	×	"	२८८–३१०
१५. आनंदलहरी स्तोत्र	शंकराचार्य	"	३११–२४

५४२८ गुटका नं० ४८ । पत्र सं०—२२२ । आ०—८॥×५॥ इञ्च पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. जिनयज्ञकल्प	पं० आशाधर	संस्कृत	१–१४१
२ प्रशस्ति	ब्रह्म दामोदर	"	१४१–४५

दोहा— ॐ नमः सरस्वत्यै । अथ प्रशस्ति ।

श्रीमत सन्मतिदेव, नि कर्माणाम् जगद्गुरुम् ।
भक्त्या प्रणम्य वक्ष्येऽहं प्रशस्ति ता गुणोत्तम ॥ १ ॥

स्याद्वादिनी ब्राह्मी ब्रह्मतत्त्व-प्रकाशिनी ।
सद्भिराराधिता चापि वर्द्धता सत्वधकरी ॥ २ ॥

गणिनो गौतमादींश्च संसारार्णवतारकान् ।
जन-प्रणीत-सम्यक्त्वकैरवाबलचन्द्रकान् ॥ ३ ॥

मूलसंघे बलात्कारगणे सारस्वते सति ।
गच्छे विश्वपदस्थाने वंद्ये वृंदारकादिभिः ॥ ४ ॥
नंदिसंघोऽभवत्तत्र नंदितामरनायकः ।
कुंदकुंदार्यसंज्ञोऽसौ श्रुतरत्नाकरो महान् ॥ ५ ॥
तत्पट्टक्रमतो जातः सर्वसिद्धान्तपारगः ।
हमीर-भूपसेव्योयं धर्मचंद्रो यतीश्वरः ॥ ६ ॥
तत्पट्टे विश्वतत्त्वज्ञो नानाग्रंथविशारदः ।
रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनिः ॥ ७ ॥
शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तमान्यमहोत्सवः ।
प्रभाचंद्रो जगद्वंद्यो परवादिभयंकरः ॥ ८ ॥
कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेधावी शास्त्रसुन्दरः ।
पद्मनंदी जिताक्षोभूत्तत्पट्टे यतिनायकः ॥ ९ ॥
तच्छिष्योजनिभव्यौघपूजितांघ्रिर्विशुद्धधीः ।
श्रुतचंद्रो महासाधुः साधुलोककृतार्चकः ॥ १० ।
प्रामाणिकः प्रमाणेऽभूदागमाध्यात्मविद्धीः ।
लक्षणे लक्षणार्थज्ञो भूतलवृंदवंदितः ॥ ११ ॥
अर्हत्प्रणीततत्त्वार्थवादः पति निजात्मतिः ।
हतपंचेषुरस्तारिर्जिनचंद्रो विचक्षणः ॥ १२ ॥
जम्बूद्रुमांकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानके ।
तत्रास्ति भारतं क्षेत्रं सर्वभोगफलप्रदं ॥ १३ ॥
मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तमः ।
धनधान्यसमाकीर्णग्रामैर्देवविहारिभिः ॥ १४ ॥
नानापुष्पफलैर्भाति सर्वसत्त्वसुखंकरः ।
मनोगतमहाभोगः दाता दातृसमन्वितः ॥ १५ ॥
लोकालोकप्रकाशी सूर्यप्रख्यः सदाचारः ।
तत्प्रकाशपदं यौधि विचक्षुर्निर्मितात्मजः ॥ १६ ॥

स्वच्छपानीयसपूर्णै वापिकूपादिभिर्महत् ।
श्रीमद्वनहट्टानामहट्टव्यापारभूषितं ॥ १७ ॥
अर्हत्चैत्यालये रेजे जगदानंदकारके ।
विचित्रमठमंदोहे वणिज्जनसुमंदिरो ॥ १८ ॥
तस्य अजन्याधिपतिस्तस्य प्रजापालो लसद्गुण ।
कान्त्याचंद्रो विभात्येष तेजसापद्मबाधव ॥ १९ ॥
शिष्यस्य पालको जातो दुष्टनिग्रहकारकं ।
पंचागमन्त्रविच्छूरो विद्याशास्त्रविशारद ॥ २० ॥
शौर्योदार्यगुणोपेतो राजनीतिविदावर ।
रामसिंहो विभुर्धीमान् भृत्यवैन्द्रो महायशी ॥ २१ ॥
प्रासाद्वारणकवरस्तत्र जैनधर्मपरायण ।
पात्रदानादर श्रेष्ठो हरिचन्द्रागुणाग्रणी ॥२२॥
श्रावकाचारसपन्ना दत्ताहारादिदानका ।
शीलभूमिरभूत्तस्य गूजरिप्रियवादिनी ॥२३॥
पुत्रस्तयोरभूत्साधुव्यक्ताहत्सुभक्तिव ।
परापकरणाम्वातो जिनाचनक्रियोद्यत ॥२४॥
श्री श्रीवकाचारतत्त्वज्ञो अकारुण्यवारि ध ।
देल्हा साधु व्रताचारी राजदत्तप्रतिष्ठक ॥२५॥
तस्य भाया महासाध्वी शीलनीरतरंगिणी ।
प्रियंवद हिताचारावाली सौजन्यधारिणी ॥२६॥
तया क्रमेण सजातौ पुत्रौ लावण्यमन्दुरौ ।
अगण्यपुण्यसस्थानी रामलक्ष्मणकाविद ॥२७॥
तयो विनयशोत्सवानन्दकारिणौ व्रतधारिणौ ।
अर्हत्तीर्थमहायात्रासपर्कप्रविधायिनौ ॥२८॥
रामसिंहमहाभूपप्रधानपुरुषौ शुभौ ।
समुद्धृतजिनागारौ धर्मनामसुमहोत्तमौ ॥२९॥

तथ्याबरोभवद्वीरो नायकैः सचन्द्रमा ।
लोकप्रशस्यसत्कीर्ति धर्मसिंहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥
तत्कामिनी महच्छीलधारिणी शिवकारिणी ।
चन्द्रस्य बसती ज्योत्स्ना पापध्वान्तापहारिणी ॥३१॥
कुलद्वयविशुद्धासीत् सधभक्तिपरायणा ।
धर्मानन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्भर्तृ मात्तिका ॥३२॥
पुत्रावाम्नान्तयोः स्वीयरूपनिर्जितमन्मथौ ।
लक्षणाक्षूणसद्गात्रौ योषिन्मानसवल्लभौ ॥३३॥
अर्हद्देवगुसिद्धान्तगुरुभक्तिसमुद्यतौ ।
विद्वज्जनप्रियौ सौम्यौ मोल्हाह्वयपदार्थकौ ॥३४॥
तुधाग्डिण्डीरसमानकीर्ति कुटुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी ।
प्रतापवान्धर्मधरो हि श्रीमान् खण्डेलवालान्वयकजभानु ॥३५॥
भूपेन्द्रकार्याथकरो दयाढ्यो पूज्यो पूर्णेन्दुसकाशमुखोवरिष्ठ ।
श्रेष्ठी विवेकाहितमानसाऽसौ सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ॥३६॥
हस्तद्वय यस्य जिनार्चनं वैजैन वराचाम्बुजपकजे च ।
हृदक्षर वाहृत्मक्षय वा करोतु राज्य पुरुषोत्तमोय ॥३७॥
तत्प्राणवल्लभाजाता जैनव्रतविधायिनी ।
सती मतल्लिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥३८॥
चतुर्विधस्य संघस्य भक्त्युल्लासि मनोरथा ।
जैनश्री: सुधावाक्पयोकोशाम्भोजसन्मुखी ॥३९॥
दुर्लभदे सहर्षात् द्वितीया तस्य वल्लभा ।
दानमानोन्सुमानन्दवर्धिताशेषचेतस ॥४०॥
श्रीरामसिंहेन नृपेण मान्यश्चतुर्विधश्रीवरसंघभक्तः ।
प्रद्योतिताशेषपुराणलोको साधू विवेकी चिरमेवजीयात् ॥४१॥
आहारशास्त्रौषधजीवरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधुः ।
कल्पद्रु मौघायककायधेनुर्गोवृषसमुर्जिततापत्वरिम्या ॥४२॥

सर्वेषु शास्त्रेषु परप्रशस्य श्रीशास्त्रदानंकृतशाव्यभाव ।
स्वर्गापवर्गैकविभूतिपात्र समस्तशास्त्रार्थविधानदक्ष ॥४३॥
दानेषु सार शुचिशास्त्रदान यथा त्रिलोक्या जिनपुंगवोऽय ।
धुदीति धुत्वा परमंगलार्थं श्रलीलिखान्साधूत्तमा प्रतिष्ठा ॥४४॥
पि लेखत्वा शुभाधान प्रतिष्ठासारमुत्तम ।
स्था ब्रह्मदामोदरायापि दत्तवान् ज्ञानहेतवे ॥४५॥
श्रम्याश्रवाणसूपाके राज्येतीतैति सुन्दरे ।
विक्रमादित्यभूपस्य भूमिपालशिरोमणे ॥४६॥
ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे सोमवारे हि सौम्यके ।
प्रतिष्ठासार एवासौ समाप्तिमगमत्परा ॥४७॥
श्रर्हत्क्रमाभोजनक्षावरागी सद्भूषणाकुक्कुटमर्पगाव ।
पद्मावती शासनदेवता सा नाथू सुसाधु चिरमेव पातात् ॥४८॥
व्युधातिता परं येन प्रमाणपुरुषापरो ।
रं श्रीमत्सण्डिल्लवंशोत्थ नाथू साधु सनन्दतु ॥४९॥

॥ इति प्रशस्त्यावली ॥

३. कर्णपिशाचिनीमन्त्र	×	संस्कृत	१४५
४. महाराशांतिकविधि	×	"	१४६
५. नवग्रहस्थापनाविधि	×	"	"
६. पूजाकी सामग्री की सूची	×	हिन्दी	१५२-५५
७. समाधिमरण	×	संस्कृत	१६०-६४
८ कलशविधि	×	"	१७३-९५
९. भैरवाष्टक	×	"	१९६
१०. भक्तामरस्तोत्र मंत्रसहित	×	"	१९८-२१४
११. णमोकारपचासिका पूजा	×	"	२१८

५५२९. गुटका सं० ५६—पत्र सं०—५८ । आ०-५×४ इञ्च । लेखन काल सं०—१८२४ पूर्ण। दशा-सामान्य ।

१. संयोगबत्तीसी	मानकवि	हिन्दी	१–२५
२. फुटकर रचनाएं	×	"	२६–५८

५४३० गुटका सं० ५० । पत्र सं० ७४ । आ० ८×५ इञ्च । ले० काल १८६८ मगसर सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—गंगाराम वैद्य ने सिरोज में ब्रह्मजी संतसागर के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल लालचंद	हिन्दी	१–५
२. चेतनचरित्र	भैयाभगवतीदास	"	६–२६
३. नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्रह्मज्ञानसागर	"	२७–३१

नेमीश्वर राजुल को झगड़ो लिख्यते ।

आदि भाग—राजुल उवाच—

भोग अनोपम छोडी करी तुम योग लियो सो कहा मन ठाणो ।
सज विचित्र तु लाई अनोपम सुंदर नारि को संग न जानू ।।
सूक तनु सुख छोडि प्रतक्ष काहा दुख देखत हो अनजानू ।
राजुल पूछत नेमि कुंवर कूं योग विचार काहा मन आनू ।। १ ।।

नेमीश्वर उवाच

सुन रि मति मुठ न जान जानत हो अब भोग तन ओर घटें हैं ।
पाप बढे अटकर्म थके परमारथ की सब पेट फटे हैं ।।
इंद्रिय को सुख किंचित्काल ही आखिर दुख ही दुख रटे हैं ।
नेमि कुंवर कहे सुनि राजुल योग बिना नहिं कर्म कटे हैं ।। २ ।।

मध्य भाग—राजुलोवाच—

करि निरधार तजि घरबार भये व्रतधार त्रिलोक गोसाईं ।
धूप अनूप सलाबन धार तुषार सहो तुम कोई के तोईं ।। ध्रु।
भूख-पियास अनेक परिसह पावत हो कछु सिद्धन आई ।
राजुल नार कहे सुविचार जु नेमि कुंवार सुनु मन लाई ।। १७ ।।

नेमीश्वरोवाच

काहे को बहुत करो तुम स्यापनय वेक सुनो उपदेस हमारो ।
योगहि भोग किये अब दुःख काम न वेक सरे जु तुम्हारो ।।

मानव जन्म वडो जगमाल के काज विना मतु कूप में डारो।

नेमी कहे सुन राजुल तू सब मोह तजि नेमि काज सवारो ॥ १८ ॥

अन्तिम भाग—राजुलोवाच—

श्रावक धर्म्म क्रिया सुभ ग्रेपन साध कि संगत वेग सुनाइ।

भोग तजि मन सुध करि जिन नेम तणी जव संगत पाइ ॥

भेद अनेक करी दृढ़ता जिन माग की सब वात सुनाई।

लोच करी मन भाव धरी करी राजुल नार भई तब वाई ॥ ३१ ॥

कलश—

आदि रचन्हा विवेक सवल युक्ती समझायो।

नेमिनाथ दृढ चित्त बहु राजुल कु समाभायो ॥

राजमति प्रबोध के सुध भाव संयम लीयो।

ब्रह्म ज्ञानसागर कहे वाद नेमि राजुल कीयो ॥ ३२ ॥

॥ इति नेमीश्वर राजुल विवाद संपूर्णम् ॥

४. अष्टाह्लिकाव्रत कथा	विनयकीर्ति	हिन्दी	३२-३३
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	३४
६. शांतिनाथस्तोत्र	मुनिगुणभद्र	"	"
७. वर्धमानस्तोत्र	×	"	३६
८. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	३७
९. निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवतीदास	हिन्दी	३८
१०. भावनास्तोत्र	द्यानतराय	"	३९
११. गुरुविनती	भूधरदास	"	४०
१२. ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	"	४१-४२
१३. प्रभाती भजरे भंवर अबै	×	"	४३
१४. मो गरीब कूं साहब तारोजी	गुलाबकिशन	"	"
१५. अब तेरो मुख देखूं	टोडर	"	४४
१६. प्रात हुवो सुमर देव	भूधरदास	"	४५

१७. ऋषभजिनन्दजुहार केशरियो	भानुकीर्ति	हिन्दी	४५
१८. करूं अराधना तेरी	नवल	"	"
१९. भूल भमारा कंई भमै	×	"	४६
२०. श्रीपालदर्शन	×	"	४७
२१. भक्तामर भाषा	×	"	४८-५२
२२. सांवरिया तेरे बार बार वारि जाऊं	जगतराम	"	५२
२३. तेरे दरबार स्वामी इन्द्र दो खड़े है	×	"	५३
२४. जिनजी थांकी सूरत मनड़ो मोह्यो	ब्रह्मकपूर	"	"
२५. पार्श्वनाथ स्तोत्र	द्यानतराय	"	५५
२६. त्रिभुवन गुरु स्वामी	जिनदास ———	"	र० सं० १७५१, ५४
२७. अहो जगतगुरु देव	भूधरदास	"	५६
२८. चिंतामणि स्वामी साचा साहब मेरा	बनारसीदास	"	५६-५७
२९. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुद	"	५७-६०
३०. कलियुग की विनती	ब्रह्मदेव	"	६१-६३
३१. शीलव्रत के भेद	×	"	६३-६४
३२. पदसंग्रह	गंगाराम वैद्य	"	६५-६८

५४४१. गुटका सं० ४१। पत्र सं० १०६। आ० ८×६ इंच। विषय-संग्रह। ले० काल १७९६ फागुण सुदी ४ मंगलवार। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—सवाई जयपुर में लिपि की गई थी।

१. भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	संस्कृत	१-९०
२ भक्तामरस्तोत्र हिन्दी टीका सहित	×	"	सं० १८०० ९१-१०६

५४४२. गुटका सं० ४१ क। पत्र सं० १४२। आ० ८×६ इंच। ले० काल १७९३ माघ सुदी २। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—किशनसिंह कृत क्रियाकोश भाषा है।

५४४३ गुटका सं० ४२। पत्र सं० १२४+६८+२९। आ० ८×७ इंच।

विशेष—तीन अपूर्ण गुटकों का मिश्रण है।

१. पडिकम्मणसूत्र	×	प्राकृत
२. पच्चक्खाण	×	"
३. वन्दे तू सूत्र	×	"
४. थंभणपार्श्वनाथस्तवन (बृहत्)	मुनिअभयदेव	पुरानी हिन्दी
५. अजितशांतिस्तवन	×	"
६. "	×	"
७. भयहरस्तोत्र	×	"
८. सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	"
९. गुरुपारतंत्र एवं सप्तस्मरण	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतुंग	संस्कृत
११. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"
१२. शांतिस्तवन	देवसूरि	"
१३. सत्तरिजिनस्तवन	×	प्राकृत

लिपि संवत् १७५० आसोज सुदी ४ को सौभाग्य हर्ष ने प्रतिलिपि की थी।

१४. जीवविचार	श्रीमानदेवसूरि	प्राकृत	
१५. नवतत्त्वविचार	×	"	
१६. अजितशांतिस्तवन	मेरुनन्दन	पुरानी हिन्दी	
१७. सीमंधरस्वामीस्तवन	×	"	
१८. शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दर गणि	राजस्थानी	
१९. थंभणपार्श्वनाथस्तवन लघु	×	"	
२०. "	×	"	
२१. आदिनाथस्तवन	समयसुन्दर	"	
२२. चतुर्विंशति जिनस्तवन	जयसागर	हिन्दी	
२३. चौबीसजिन मात पिता नामस्तवन	आनन्दसूरि	"	रचना० सं० १५६२
२४. फलवधी पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	राजस्थानी	

२५. पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	राजस्थानी
२६. ”	”	”
२७. गौड़ीपार्श्वनाथस्तवन	”	”
२८. ”	जोधराज	”
२९. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तवन	लालचंद	”
३०. तीर्थमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
३१. ”	समयसुन्दर	”
३२. बीसविरहमानजकड़ी	”	”
३३. नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	”
३४. गौतमस्वामीरास	×	”
३५. बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा संकलित	”
३६. शीलरास	विजयदेवसूरि	”
	जोधराज ने सौवसी की भार्या के पठनार्थ लिखा।	
३७. साधुवंदना	आनंद सूरि	”
३८. दानतपशीलसंवाद	समयसुन्दर	राजस्थानी
३९. आषाढभूतिचौढालिया	कनकसोम	हिन्दी
	र० काल १६३८। लिपि काल सं० १७५० कार्तिक बुदी ५।	
४०. आद्रकुमार धमाल	”	”
	रचना संवत् १६४४। अमरसर में रचना हुई थी।	
४१. मेघकुमार चौढालिया	”	हिन्दी
४२. क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	”
	लिपि संवत् १७५० कार्तिक सुदी ११। अवरंगाबाद।	
४३. कर्मबत्तीसी	राजसमुद्र	हिन्दी
४४. बारहभावना	जयसोमगणि	”
४५. पद्मावतीरानीआराधना	समयसुन्दर	”
४६. [illegible]	”	”

४७. नेमिजिनस्तवन	जोधराज मुनि	हिन्दी	
४८. मक्षीपार्श्वनाथस्तवन	"	"	
४९. पञ्चकल्याणकस्तुति	×	प्राकृत	
५०. पंचमीस्तुति	×	संस्कृत	
५१. संगीतबन्धपार्श्वजिनस्तुति	×	हिन्दी	
५२. जिनस्तुति	×	"	लिपि सं० १७५०
५३. नवकारमहिमास्तवन	जिनवल्लभसूरि	"	
५४. नवकारसज्झाय	पद्मराजगणि	"	
५५ "	गुणप्रभसूरि	"	
५६. गौतमस्वामिसज्झाय	समयसुन्दर	"	
५७. "	×	"	
५८. जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरमणि	"	
५९. जिनकुशलसूरि चौपई	जयसागर उपाध्याय	"	र० संवत् १४८१
६०. जिनकुशलसूरिस्तवन	×	"	
६१. नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	"	र० सं० १६८१
६२. नेमिराजुल गीत	भुवनकीर्ति	"	
६३. "	जिनहर्षसूरि	"	
६४. "	×	"	
६५. थूलिभद्र गीत	×	"	
६६. नमिराजर्षि सज्झाय	समयसुन्दर	"	
६७. सज्झाय	"	"	
६८. अरहन्नासज्झाय	"	"	
६९. मेघकुमारसज्झाय	"	"	
७०. अनाथीमुनिसज्झाय	"	"	
७१. सीताजीरी सज्झाय	×	हिन्दी	

७२. चेलना री सज्झाय	×	हिन्दी
७३. जीवकाया ,,	भुवनकीर्ति	,,
७४. ,, ,,	राजसमुद्र	,,
७५. आतमशिक्षा ,,	,,	,,
७६. ,, ,,	पद्मकुमार	,,
७७. ,, ,,	सालम	,,
७८. ,, ,,	प्रसन्नचन्द्र	,,
७९. स्वार्थबीसी	मुनिश्रीसार	,,
८०. शत्रुंजयभास	राजसमुद्र	,,
८१. सोलह सतियों के नाम	,,	,,
८२. बलदेव महामुनि सज्झाय	समयसुन्दर	,,
८३. श्रेणिकराजासज्झाय	,,	हिन्दी
८४. बाहुबलि ,,	,,	,,
८५. शालिभद्र महामुनि ,,	×	,,
८६. बंभणवाड़ी स्तवन	कमलकलश	,,
८७. शत्रुंजयस्तवन	राजसमुद्र	,,
८८. राणपुर का स्तवन	समयसुन्दर	,,
८९. गौतमपृच्छा	,,	,,
९०. नेमिराजमति का चौमासिया	×	,,
९१. स्थूलिभद्र सज्झाय	×	,,
९२. कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	,,
९३. पुण्यछत्तीसी	,,	,,
९४. गौडीपार्श्वनाथस्तवन	,,	,, र० सं० १७२१
९५. पञ्चयतिस्तवन	समयसुन्दर	,,
९६. बलदेवमहामुनिसज्झाय	×	,,
९७. शीलछत्तीसी	×	,,

१८. मौनएकादशी स्तवन समयसुन्दर हिन्दी

रचना सं० १६८१ । जैसलमेर में रची गई । लिपि सं० १७५१ ।

५५३४. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २६१ । आ० ८३/४×४३/४ इञ्च । लेखनकाल १७७५ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. राजाचन्द्रगुप्त की चौपई	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"

पद—

३. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हर्षचन्द्र	"
४. आज नाभि के द्वार भीर	हरिसिंह	"
५. तुम सेवामें जाय सो ही सफल घरी	दलाराम	"
६. चरन कमल उठि प्रात देख मैं	"	"
७. सोही सन्त शिरोमनि जिनवर गुन गावे	"	"
८. मंगल आरती कीजे भोर	"	"
९. आरती कीजे श्री नेमकंवरकी	"	"
१० बंदौं दिगम्बर गुरु चरन जग तरन तारन जान	भूधरदास	"
११. त्रिभुवन स्वामीजी करुणा निधि नामीजी	"	"
१२. बाजा बजिया गहरा जहां जन्म्या हो ऋषभ कुमार	"	"
१३. नेम कंवरजी ये सजि आया	सांईदास	"
१४. भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी की जकड़ी	महेन्द्रकीर्ति	"
१५. अहो जगतगुरु जगपति परमानंद निधान	भूधरदास	"
१६. देख्या दुनिया के बीच वे कोई अजब तमाशा	"	"
१७. विनती—बंदों श्री अरहंतदेव सारद नित्य सुमरण हिरदै धरू	"	"

राजमती वीनवै नेमजी भजी तुम क्यों चढ़ा गिरनारि (विनती)	विश्वभूषण	हिन्दी	
१९. नेमीश्वररास	ब्रह्म रायमल्ल	"	र० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों का फल	×	"	
२१. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	
२२. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	
२३. पांच परवीव्रत की कथा	वेणीदास	"	लेखन संवत् १७७५
२४. पद	बनारसीदास	"	
२५. मुनिश्वरों की जयमाल	×	"	
२६. आरती	द्यानतराय	"	
२७. नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द	"	
२८. विनति-(वंदहु श्री जिनराय मनवच काय करोजी)	कनककीर्ति	"	
२९. जिन भक्ति पद	हर्षकीर्ति	"	
३०. प्राणी रो गीत (प्राणीड़ा रेनू कांई सोवै रैन चित्त)	×	"	
३१. अकड़ी (रिषभ जिनेश्वर वंदस्यौ)	देवेन्द्रकीर्ति	"	
३२. जीव संबोधन गीत (होजीव नव मास रह्यो गर्भ वासा)	×	"	
३३. सुहरि (नेमि नगीना नाथ थां परि वारी म्हारालाल)	×	"	
३४. मोरड़ो (म्हारो रै मन मोरड़ा तूतो उडि गिरनारि जाइ रै)	×	"	
३५. बटोइ (तु तोजिन भजि विलम न लाय बटोई मारग भूली रै)	×	हिन्दी	
३६. पंचम गति की बेलि	हर्षकीर्ति	"	र० सं० १६८३

३७. करम हिण्डोलणा	×	हिन्दी	
३८. पद–(ज्ञान सरोवर मांहि मूले रे हंसा)	सुरेन्द्रकीर्त्ति	"	
३९. पद–(चौवीसौं तीर्थंकर करो कौं वंदन)	नेमिचंद	"	
४०. करमां की गति न्यारी हो	ब्रह्मनाथू	"	
४१. आरती (करौं नाभि कंवरजी की आरती)	लालचंद	"	
४२. आरती	द्यानतराय	"	
४३. पद–(जोवड़ा पूजो श्री पारस जिनेन्द्र रे)	"	"	
४४. गीत (डोरी थे लगावौ हो नेमजी का नाम स्यो)	पांड़े नाथूराम	"	
४५. सुहरि–(यो ससार अनादि को सोही बाग बध्यो री लो)	नेमिचन्द	"	
४६. सुहरि–(नेमि कुंवर व्याहन चढयो राजुल करै ह सिंगार)	"	"	
४७. जोगीरासो	पांडे जिनदास	"	
४८. कलियुग की कथा	केशव	"	४४ पद्य। ले० सं० १७७६
४९. राजुलपच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	"	"
५०. अष्टान्हिका व्रत कथा	"	हिन्दी	
५१. मुनिश्वरों की जयमाल	ब्रह्मजिनदास	"	
५२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	
५३. तीर्थङ्कर जकड़ी	हर्षकीर्ति	"	
५४. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"	
५५. हम बैठे अपने मौन से	"	"	
५६. कोई अज्ञानी जीवको गुरु ज्ञान बतावे	"	"	

५७. रंग बनाने की विधि	×	हिन्दी
५८. स्फुट दोहे	"	"
५९. गुणवेलि (चन्दन वाला गीत)	"	"
६०. श्रीपालस्तवन	"	"
६१. तीन मियां की जकड़ी	धनराज	"
६२. सुखघड़ी	"	"
६३. कक्का बीनती (बारहखड़ी)	"	"
६४. अठारह नाते कीकथा	लोहट	"
६५. अठारह नाता का ब्यौरा	×	"
६६. आदित्यवार कथा	×	" १६५४ में
६७. धर्मरासो	×	"
६८. पद–देखो माई आजि रिषभ घरि आवे	×	"
६९. क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	"
७०. गुरुओं की स्तुति	—	संस्कृत
७१. सुभाषित पद्य	×	हिन्दी
७२. पार्श्वनाथपूजा	×	"
७३. पद–उठो तेरो मुख देखू नाभिजी के नन्द	टोडर	"
७४. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"
७५. दुविधा कब जइ या मन की	×	"
७६ इह चेतन की सब सुधि गई	बनारसीदास	"
७७. नेमीसुरजी को जनम हुयो	×	"
७८. चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न	×	"
७९. दोहासंग्रह	मानिकचन्द	"
८०. धार्मिक चर्चा	×	"
८१. दूरि गयो कब चेती	जगराम	"
८२. देखो माइ आज रिषभ घर आवे	×	"

८३. चरणकमल को ध्यान मेरे	×	हिन्दी
८४. जिनजी थांकीजी मूरत मनडो मोहियो	×	"
८५. नाहीं मुकति पंथ बट पारी नारी	"	"
८६. समकित नर जीवन थोरो	रूपचन्द	"
८७. नेमजी थे कांई हठ मारयो महाराज	हर्षकीर्ति	"
८८. देखरी कहूं नेमि कुमार	"	"
८९. प्रभु तेरी मूरत रूप बनी	रूपचन्द	"
९०. चिंतामणी स्वामी सांचा साहब मेरा	"	"
९१. सुखघड़ी कब आवेगी	हर्षकीर्ति	"
९२. चेतन तू तिहूं काल अकेला	"	"
९३. पंच मंगल	रूपचन्द	"
९४. प्रभुजी थांका दरसण सूं सुख पावां	ब्रह्म कपूरचन्द	"
९५. लघु मंगल	रूपचन्द	"
९६. सम्मेद शिखर चली रैं जीवड़ा	×	"
९७. हम आये हैं जिनराज तुम्हारे वन्दन को	द्यानतराय	"
९८. ज्ञानपचीसी	बनारसीदास	"
९९. तू भ्रम भूलि न रे प्राणी सज्ञानी	×	"
१००. तुजिये दयाल प्रभु तुजिये दयाल	×	"
१०१. मेरा मन की बात कासु कहिये	सबलसिंह	"
१०२. मूरत तेरी सुन्दर सोहो	×	"
१०३. प्यारे हो लाल प्रभु का दरस की बलिहारी	×	"
१०४. प्रभुजी त्यारियां प्रभु आप जाणिलै त्यारियां	×	"
१०५. क्यों जाणै क्यों त्यारोजी दयानिधि	खुशालचन्द	"
१०६. मोहि लगता श्री जिन प्यारा	हठमलदास	"
१०७. सुमरन ही में त्यारे प्रभुजी तुम सुमरन ही में त्यारे	द्यानतराय	"

१०८. पार्श्वनाथ के दर्शन वृन्दावन हिन्दी र० सं० १७६८

१०९. प्रभुजी मैं तुम चरणशरण गह्यो बालचन्द "

५४३५. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ८८ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में पृष्ठ ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महाशांतिक पूजा विधान है। ६५ से ८१ तक अन्य प्रतिष्ठा सम्बन्धी पूजाएं एवं विधान हैं। पत्र ८२ पर अपभ्रंश में चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति है। पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे मन रमि रहु चरणजिनन्द' नामक एक बड़ा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द। रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ॥ढाल॥

जह पठावहि तिहुवण इंदं ॥ रे मन० ॥

यहु संसार असार मुणे बिणु करु जिय धम्मु दयालं।

परगय तच्चु मुणहि परमेट्ठिहि सुमरीहु अप्पु गुणालं ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ अजीउ दुविहु पुणु आसव बन्धु मुणहि चउभेयं।

संवरु निजरु मोखु वियाणहि पुण्णपाप सुविसेयं ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ दुभेउ मुक्त संसारी मुक्त सिद्ध सुवियाणे।

वसु गुण जुत्त कलङ्क विवज्जिद्द भासिये केवलणाणे ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

जे संसारि भमहि जिय संकुल लख जोणि चउरासी।

थावर वियलिंदिय सयलिंदिय. ते पुग्गल सहवासी ॥ रे मन० ॥ ४ ॥

पंच अजीव पढमु तहि पुग्गलु, धम्मु अधम्मु आगासं।

कालु अकाउ पंच कायासो, ऐक्कह दव्व पयासं ॥ रे मन० ॥ ५ ॥

आसउ दुविहु दव्वभावहं, पुणु पंच पयार जिणुत्तं।

मिच्छा विरय पमाय कसायहं जोयह जीव पउत्तं ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

चारि पयार बन्धु पयडिय ठिदि तह अणुभाव पएसं।

जोगा पयडि पएसठिदायणु भाव कसाय विसेसं ॥ रे मन० ॥ ७ ॥

सुह परिणामे होइ सुहासउ, असुहि असुह वियाणो।

सुह परिणामु करहु हो भवियह, जिम सुह होय वियाणो ॥ रे मन० ॥ ८ ॥

संवर करहि जीव जग सुन्दर आसव दार निरोहं ।
मरुह सिव समु आपु वियाणहु, सोहं सोहं सोहं ॥ रे मन० ॥ ९ ॥
णिजर जरह विणासहु कारणु, जिय जिणवयण संभाले ।
बारह विह तव दसविह संजमु, पंच महावय पाले ॥ रे मन० ॥ १० ॥
अट्ठविहि कम्मविमुक्कु परमपउ, परमप्पयकुत्थि वासो ।
णिवसु मुक्कुत्थि रज्जु तहिपुरि, ईच्छिगु ईच्छइ वासो ॥ रे मन० ॥ ११ ॥
जोणि असरण कहु क्या करणा, पडितु मनह विचारइ ।
जिणवर सासणु तब्बु पयासणु, सो हिय बुइ थिर धारइ ॥ रे मन० ॥ १२ ॥

५४३६. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २४० । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६८८ ।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५४३७. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १५० । आ० ६½×४½ इञ्च । पूर्ण एवं जीर्ण । अधिकांश पाठ अशुद्ध है । लिपि विकृत है ।

विशेष—इसमें निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. कर्मनोकर्म वर्णन	×	प्राकृत	३–५
२. ग्यारह अग एवं चौदह पूर्वों का विवरण	×	हिन्दी	६–१२
३. श्वेताम्बरो के ८४ वाद	×	"	१२–१३
४ संहनन नाम	×	"	१३
५. सघोत्पत्ति कथन	×	"	१४

ॐ नमः श्री पार्श्वनाथ काले बुद्धकीर्तिना एकान्त मिथ्यात्वबौद्ध स्थापितं ॥ १ ॥
संवत् १३६ वर्षे भद्रबाहुशिष्येण जिनचन्द्रेण संशयमिथ्यात्वं श्वेतपटमतं स्थापितं ॥ २ ॥
श्री शीतलतीर्थङ्करकाले क्षीरकदम्बाचार्यपुत्रेण पर्वतेन विपरीतमतं मिथ्यात्व स्थापितं ॥ ३ ॥
सर्वतीर्थङ्कराणां काले विनयमिथ्यात्वं ॥ ४ ॥
श्रीपार्श्वनाथगणि शिष्येण मस्करीपूर्णेनाज्ञानमिथ्यात्वं श्री महावीर काले स्थापितं ॥ ५ ॥
संवत् ५२६ वर्षे श्री पूज्यपादशिष्येण प्राभृतकवेदिना वज्रनंदिना पञ्चगणकमकेण द्राविडसंघः स्थापितः ।
संवत् २०५ वर्षे श्वेतपटात् श्रीकलशात् आपलाक संघोत्पत्तिर्जाता । ७ ॥

चतुः संघोरत्ति कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसंघमण्डितेन अर्हद्वलिगुप्तिगुप्ताचार्यविशाखाचार्येति नामद्वय धारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसंघः, सिंहसंघः, सेनसंघः, देवसंघः इति चत्वारः संघाः स्थापिताः । तेभ्यो यथाक्रमं बलात्कारगणादयो गणाः सरस्वत्यादयो गच्छाश्च जातानि तेषां प्राक्क्रियादिषु कर्म्मसु कोपि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

संवत् २५३ वर्षे विनयसेनस्य शिष्येण सन्यासभंगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसंघ स्थापितं ॥ ९ ॥

संवत् ६५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन निःपिच्छत्वं स्थापितं ॥ १० ॥

संवत् १८०० वर्षे प्रतीते वीरचन्द्रमुनेः सकाशात् भिल्लसंघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनान्येषामुत्पत्ति पंचमकालावसाने सर्वेषामेवां ॥

गृहस्थानां शिष्याणां विनाशो भविष्यत्येक जिनमतं कियत्कालं स्थास्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्तं ॥

६. गुणस्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५–२०
७. जिमान्तर	वीरचंद्र	हिन्दी	२१–२३
८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	"	२४–२७
९. स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२–३७
१०. यति आहार का ४६ दोष	×	"	३७
११ लोक वर्णन	×	"	३८–५३
१२. चउबीस ठाणा चर्चा	×	"	५४–८९
१३. अन्यस्फुट पाठ संग्रह	×	"	९०–१५०

५४२८ गुटका सं० ४७—पत्र सं० ४–१२१ । प्रा० ९×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१. त्रिकालदेववंदना	×	संस्कृत	५–१२
२. सिद्धभक्ति	×	"	१२–१४
३. नंदीश्वराविभक्ति	×	प्राकृत	१४–१६
४. चौबीस अतिशय भक्ति	×	संस्कृत	१६–१९
५. श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१९–२१
६. दर्शन भक्ति	×	"	२१–२२
७. ज्ञान भक्ति	×	"	२२
८. चारित्र भक्ति	×	संस्कृत	२२–२४
९. अनागार भक्ति	×	"	२४–२६

१०. यौग भक्ति	×	,,	२६–२८
११. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	२८–३०
१२. बृहत्स्वयंभू स्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	३०–४१
१३. गुरावली (लघु आचार्य भक्ति)	×	,,	४१–४४
१४. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	×	,,	४४–४६
१५. स्तोत्र संग्रह	×	,,	४६–५०
१६. भावना बतीसी	×	,,	५१–५२
१७. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५३–६०
१८. संबोधपचासिका	×	,,	६१–६८
१९. द्रव्यसंग्रह	नेमिचंद्र	,,	६८–७१
२०. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	७१–७५
२१. ढाढसी गाथा	×	,,	७५–८३
२२. परमानंद स्तोत्र	×	,,	८३–८४
२३. अणत्थमिति संधि	हरिश्चन्द्र	प्राकृत	८५–८६
२४. चूनडीरास	विनयचन्द्र	,,	९०–९४
२५. समाधिमरण	×	अपभ्रंश	९४–९९
२६. निर्झरपंचमी विधान	यतिविनयचन्द्र	,,	९९–१०५
२७. पुण्यदोहा	×	,,	१०५–११०
२८. द्वादशानुप्रेक्षा	×	,,	११०–११२
२९. ,,	अल्हण	,,	११२–११४
३० योगि चर्चा	महात्मा ज्ञानचंद	,,	११४–११९

५४३९. गुटका सं० ५८। पत्र सं० १३–५१। आ० ६×६। अपूर्ण।

विशेष—गुटका प्राचीन है।

१. जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अपभ्रंश	अपूर्ण	१३-२०

अन्तिम भाग—

कत्तिय किण्ह चउद्दसि रत्तिहि, गउ सम्मइ जिणु पंचम छत्तिहि।

इय सम्बन्धु कहिउ सयलामलो, जिनरत्ति हि फलु भवियह मंगलो।

अवरुवि ओणरत्ति करेसइ, सो भरहवरउ लहेसइ।
सारउ सुउ महियलि भुंजेसइ, रइ समाण कुल उत्तिरमेसइ ॥
पुणु सोहम्म सग्गी जाएसइ, सहु कीलेसइ णिरु सुकुमालिहि।
मणुवसुखु भुंजिवि जाएसइ, सिवपुरि वासु सोवि पावेसइ।
इय जिणरत्ति विहाणु पयोसिउ, जहजिणसासणि गणहरि भासिउ।
जे हीणाहिउ काइमि वुत्तउ, तं बुहारण मठु खमहु णिरुत्तउ।
एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ।
जो नर नारि एहमणि भावइ, पुण्णइ अहिउ पुण्ण फलु पावइ।

धत्ता—

सिरि णरसेणह सामिउ, सिवपुरि गामिउ, बड्ढमाण तित्थकरु।
जइ मागिउ देइ करुण करेइ देउ सुबोहि लाहु परमेसरु ॥ २७ ॥
इय सिरि बड्ढमाणकहापूराणे सिधादिभवभावावण्णणो जिणराइविहाणफलसंपत्ती ॥
सिरि णरसेण विरइए सुभव्वासण्णणाणिमित्ते पढम परिछेह सम्मत्तो।

॥ इति जिणरात्रि विधान कथा समाप्ता ॥

२. रोहिणिविधान मुणिगुणभद्र अपभ्रंश

प्रारम्भिक भाग—

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयजुलु।
सिवमग्गसहायहो केवलकायहो रिसहहो पणविवि कयकमलु
परमेट्ठि पंच पणविवि महंत, भवजलहि पोय विहडिय कयंत।
सारभ सारस ससि जोह्न जेम, णिम्मल वणिज्ज केणकेम।
जिहि गोयमए विणिव वरस्स, सेणिय रायस्स जसोहरस्स।
तिह रोहिणी वय कहु कहमि भव्व, जह सत्तिणि वारिय पावणव्व।
इय जंबूदीव हो भरह खेत्ति, कुरु जंगल ए सिवि गए अणेत्ति।
हथिणाउरु पुरजण पवरिद्धु, जणु वसइ जित्थु सह सय समिद्धु।
तहि वीयसोउ णयसोउ भूउ, विज्जु पहरइ रइ हियय भूउ।
तहो णंदणु कुलणन्दणु असोउ, अंकिजवि णउ अइ भूरि सोउ।

वह भंग विसइ जण कुलह विसए चंपाउरि पवउ गुणाइ विसए ।
मट्टइ णामिणी उणाइवंतु, सिरिमइ पियलंकिउ रिउ कयन्तु ।
सुय अट्ठ तासु भरि जणिय तासु, रोहिणी कण्णाणं कामपासु ।
कत्तिय अट्ठाहिव सोपवास, गयपुर वहि जिण वसु पुज्जवास ।
जिणु अचिवि मुणि वंदिवि असेस, सिरि वासुपुज्ज पयलविसेस ।
मह मज्झिणि सण्णहो णिवह देइ गोहिणी जातणया अंकलइ ।
अवलोइवि सुव जुव्वण समेय, परिणयण चित हममणि अमेय ।
णियमति मंतु गिण्हिवि अभेउ, णिय वुद्धि वियारिवि विहियसेउ ।

घत्ता—

ता पुरवउ वहिरि कि परिउ साहि, रिवद्ध मंव चउ पासहि ।
कणयमयमु खंचिय रयण करचिय, मंडिय मडव पासहि ।। १ ।।

अन्तिम भाग—

निसुणाइ जिणवणि सावहम्मु विग्रलइणं करनलु आवमानु ।
वग्घा घायहो जह सरणुणत्थि, मय सावहो जीवहो सहणसत्थि ।
अणु हवइ सुहासुह एक्कुजीउ, तणु भिण्णु लेइ मरणाउ भीउ ।
ससार सहुकक्खु पूरकर समुद्दु, अंगुजि धाउ विहलु कुमुद्दु ।
अासवइ कम्मु जो एहि विच, तहो विलयं संवरु होइ कच ।
समं भावि सहियइ कम्मुआउ, परिभमिउ लोहु जीविउ सपाउ ।
दुल्लहु जिण धम्मु समुत्ति मग्गु, गावि संगहियउ कम्मेण लगाउ ।
इउ मुणिवि सरिवि जिण सिक्ख दिक्ख, हुउ गणहरु राउ असोउ भिक्ख ।
संगहिय उपाध्यायउ अममलणाणु, केवलु गउ मोक्खहु सुह विहाणु ।
रहि तणउ चरिवि पवण्णसम्मि अच्चु, एम्व्हि विहि वी लिगु भग्गी ।
धीयउ विसग्गि संपत्त अज्ज, वउधरी दिक्खिय सुवहु सज्ज ।
हुव केवमोक्ख गयहणि विकम्म, अणु हवहि णिरंतर मुत्ति सम्म ।
वउधरिय लक्खणसी धरि सुलच्छि, सं पणुसिरि नाम इन्दी वलच्छि ।
रोहवउ विहिउ ताइएउ, रोहिणि कहविरइय तासु हेउ ।

घत्ता—

सिरि गुणभद्दमुणीसरेण विहिय कहा बुधी भरेण ।

सिरि मलयकित्ति पयल जुयलणविवि, सावयनमो यह मणुक्खविवि ।

णंदउ सिरि जिणसंघ, णंदउ तहूभूमि बालुणि विग्घं ।

णंदउ लक्खणु लक्खं, दितु सया कप्पतरु वजइ भिक्खं ।

।। इति श्री रोहिणी विधानं समाप्तं ।।

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	अपभ्रंश	२६-२६
४. दशलक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	"	३०-३३
५. चदनषष्ठीव्रतकथा	आचार्य छत्रसेन	संस्कृत	३३-३६

नरदेव के उपदेश से आचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिनं प्रणम्य चंद्राभ कर्मौघध्वान्तभास्करं ।

विधान चदनषष्ठ्यत्र भव्यानां कथमिहां ।। १ ।।

द्वीपे जम्बूद्रुमं केम्मिनु क्षेत्रे भरतनामनि ।

काशी देशोस्ति विख्यातो वर्ज्जितो बहुधाबुधैः ।। २ ।।

अन्तिम—

आचार्यछत्रसेनेन नरदेवोपदेशतः ।

कृत्वा चंदनषष्ठीयं कृत्वा मोक्षफलप्रदा ।। ७७ ।।

यो भव्यः कुरुते विधानममलं स्वर्गापवर्गप्रदां ।

योन्य कार्यते करोति अविनं श्याख्याय संबोधनं ।।

भूत्वासौ नरदेवयोर्ध्वरसुखं सच्छत्रसेनाकता ।

यास्यंतो जिननायकेन महते प्राप्नोति जैनं श्रीयां ।। ७८ ।।

।। इति चंदनषष्ठी समाप्तं ।।

६. मुक्तावली कथा	×	संस्कृत	३६-३८

आरम्भ— आदि देवं प्रणम्योक्तं मुक्तात्मानं विशुद्धिदं ।

अथ संक्षेपतो वक्ष्ये कथां मुक्तावलिविधिः ।। १ ।।

७. सुगंधदशमी कथा रामकीर्ति के शिष्य अपभ्रंश ३८–४१

विमल कीर्ति

आदि भाग

पणवेप्पिणु सम्मइ जिणेसरहो जा पुव्वसूरि आगम भणिया।

णिसुणिज्जहु भवियहु इक्कमना, कहकहमि सुगंधदसमी हितभणिया ।।

अन्तिम पाठ

दसमिहि सुअंध विहाणुकरेविणु तइय कप्प उप्पण्ण मरेविणु।

चउदह आहरयेहि पसाहिय सागी मुहइ भुंजइ अविरोहिय ।।

पुहवी मण्डणु पुरु सुरु दुल्लहु, राउ पयाउ दयाजण वल्लहु।

मानस सुंदरि गत्ति उपण्णी मयणावलि नामि संपुण्णी ।।

दिणि दिणि कुमरि वियावहु भत्ती भव्वलोय माणस मोहती।

सामवण्ण मण्णवि सुरहि तणु जिणवरु सामिउ पज्जइ अणु दिणु ।।

दाणु चउविह दिंति ण त्थक्कइ तह व छल्ल का वण्ण ण सकइ।

धम्मवंत पेखि णरणहिं पोमाइयइ धम्म अमगहि।

रायं सापरिणाविय जामहि, पुत्त कलत्तहि वड्ढियतामहि ।।

रामकित्ति गुरुविणउ करेविणु विणु विमलकीत्ति महिपाल पढविणु।

पच्छइ पुणु तव परणु करेविणु मइ अणुक्कमेण सोमक्खलहेमइ ।।

घत्ता

जो करइ करावइ एहविहि वक्खाणिय विभवियह दावेइ।

सो जिणणाह भासियहु सग्गु मोक्खु फव पावइ ।। ८ ।।

इति सुगंधदशमीकथा समाप्ता

८. पुष्पाञ्जलि कथा × अपभ्रंश ४१–४२

आरम्भ

जज जय अरुह जिणेसर हयवम्मीसर मुत्तिसिरीवरगणधरण।

अयसय गणभासुर सहयमहीसर जुति गिराधर समकरण ।। ६ ।।

अन्तिम घत्ता

बलवत्तरिणाणि रयणकित्ति मुणि सिस्स बुहिवं दिज्जइ।

भावकित्ति जुउ अनंतकित्तिगुरु पुष्फुंजलि विहि किज्जइ ।। ११ ।।

पुष्पांजलि कथा समाप्ता

६. अनंतविधान कथा	×	अपभ्रंश	४६–५१

५४४० गुटका सं० ५६—पत्र संख्या—१८३ । आ०–७॥×६ । दशा सामान्यजीर्ण ।

१. नित्यवंदना सामायिक	×	संस्कृत प्राकृत	१–१२
२. नैमित्तिकप्रयोग	×	संस्कृत	१५
३. श्रुतभक्ति	×	"	१५
४. चारित्रभक्ति	×	"	१६
५. आचार्यभक्ति	×	"	२१
६. निर्वाणभक्ति	×	"	२३
७. योगभक्ति	×	"	"
८. नंदीश्वरभक्ति	×	"	२६
९. स्वयंभूस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	"	४३
१०. गुर्वावलि	×	"	४५
११. स्वाध्यायपाठ	×	प्राकृत संस्कृ	५७
१२. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६७
१३. सुप्रभाताष्टक	यतिनेमिचंद	"	पत्र सं० ८
१४. सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	"	" २५
१५. स्वप्नावलि	मुनि देवनंदि	"	" २१
१६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र	"	"	" २५
१७. भूपालस्तवन	भूपाल कवि	"	" २५
१८. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	" २६
१९. विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	"	" ४०
२०. पार्श्वनाथस्तवन	देवचंद्र सूरि	"	" ४४
२१. कल्याण मंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्रसूरि	संस्कृत	
२२. भावना बत्तीसी	×	"	
२३. करुणाष्टक	पद्मनंदी	"	
२४. वीतराग गाथा	×	प्राकृत	

२५. मंगलाष्टक	×	संस्कृत	
२६. भावना चौतीसी	भ० पद्मनंदि	"	१२-१५

आरम्भ

शुद्धप्रकाशमहिमास्तसमस्तमोहं, निद्रातिरेकमसमावगमस्वभावं ।
आनंदकंदमुदयास्तदशानभिज्ञं स्वायंभुवं भवतु धाम सतां शिवाय ।। १ ।।
श्रीगौतमप्रभृतयोपि विभोर्महिम्नः प्रायः क्षमानयनयः स्तवनं विधातुं ।
अथं विचार्य जहतस्तदमुत्रलोके सौख्याप्तये जिन भविष्यति मे किमन्यत् ।। २ ।।

अन्तिम

श्रीमत्प्रभेन्दुप्रभुवाक्यरश्मि विकाशिचेतः कुमदः प्रमोदात् ।
श्रीभावनापद्धतिःमात्मशुद्धयै श्रीपद्मनंदी स्वयं चकार ।। ३४ ।।

इति श्री भट्टारक पद्मनंदिदेव विरचितं चतुस्त्रिंशद् भावना समाप्तमिति ।

२७. भक्तामरस्तोत्र	आचार्य मानतुंग	संस्कृत
२८. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनंदि	"

आरम्भ

स्वात्मावबोधविशदं परमं पवित्रं ज्ञानैकमूर्तिमगणवद्यगुणैकपात्रं ।
आस्वादिताक्षयसुखाब्जलसत्परागं, पश्यंति पुण्यसहिता भुवि वीतरागं ।। १ ।।
उद्यत्तपस्तपराशोजितपापपकं चैतन्यविन्दमचलं विमलं विशंकं ।
देवेन्द्रवृन्दसहितं करुणालतागं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। २ ।।
जाग्रद्विशुद्धिमहिमावधिमस्तशोकं धर्मोपदेशविधिवेधितभव्यलोकं ।
आचारबन्धुरमति जनतानुरागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। ३ ।।
कदर्प्प सर्प्प मदनासनवैनतेयं, या पाप हारिजगदुत्तमनामधेयं ।
संसारसिंधु परिमथन मदरागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। ४ ।।
निर्श्रेणिकमुकमलारसिकं विदंभ, वर्द्धिष्णु सद्व्रतचर्यामृतपूर्णकुंभं ।
बलाद्विमोहतरुखण्डनखण्डनागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। ५ ।।
आणंदकंद सरीकृतधर्मपंथं, ध्यानिदग्धनिखिलोद्धतकर्म्मकथं ।
व्यस्ताजवाजि गणघात विधाय जोगं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ।। ६ ।।

स्वच्छोज्वलत्वगिरिनिर्झरजितमेकन.दं, स्याद्वादवादितमयाकृतसद्विषादं ।
निःसीमसंजमसुधारसतत्त्वरागं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ७ ॥
सम्यक्प्रमाणकुमुदाकरपूर्णचन्द्रं मांगल्यकारणमनंतगुणं जितेन्द्रं ।
शुद्धप्रदानविधिपोषितभूमिभागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ८ ॥

श्रीपद्मनन्दिरचितं किलवीतरागस्तोत्रं,
पवित्रमणवद्यमनादिनादी ।
यः कोमलेन वचसा विनयाद्विधीते,
स्वर्गापवर्गकमलातमलं वृणीत ॥ ९ ॥

॥ इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिविरचिते वीतरागस्तोत्रं समाप्तेति ॥

२९. आराधनासार	देवसेन	अपभ्रंश	र० सं० १०८६
३०. हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयंभू	,, स्वयंभू रामयण का एक अंश	११९
३१. कालावलीपद्धडी	×	,,	११६
३२. ज्ञानपिण्ड की विंशति पद्धडिका	×	,,	१३१
३३. ज्ञानांकुश	×	संस्कृत	१३२
३४, इष्टोपदेश	पूज्यपाद	,,	१३६
३५. सूक्तिमुक्तावलि	आचार्य सोमदेव	,,	१४६
३६. श्रावकाचार	महापंडित आशाधर	,, ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण	१८३

५४४१. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ५६ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२२–२७
२. पंचमेरु की पूजा	×	,,	२७–३१
३. लघुसामायिक	×	संस्कृत	३२–३३
४. आरती	×	,,	३४–३५
५. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	३६–३७

५४४२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । आ० ८½×६ इञ्च । अपूर्ण ।

विशेष—देवा ब्रह्मकृत हिन्दी पद संग्रह है ।

५४४३. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२८ अपूर्ण ।

विशेष—प्रति जीर्णशीर्ण अवस्था में है । मधुमालती की कथा है ।

५४४४. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य

१. तीर्थोदकविधान	×	संस्कृत	१–११
२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	१२–२२
३. देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	२२–३६
४. जिनयज्ञकल्प	"	"	३७–१२५

५४४५. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५४४६ गुटका सं० ६५—पत्र संख्या-८६-४११ । आ०-८×६॥ लेखनकाल—१६६१ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. सहस्रनाम	पं० आशाधर	संस्कृत	अपूर्ण । ८६-८७
२. रत्नत्रयपूजा	पद्मनंदि	अपभ्रंश	" ८७–९३
३. नंदीश्वरपंक्तिपूजा	"	संस्कृत	" ९३–९७
४. बत्तीसिद्धपूजा (कर्मदहन पूजा)	सोमदत्त	"	९८–१०६
५. सारस्वतयंत्र पूजा	×	"	१०७
६. बृहत्कलिकुण्डपूजा	×	"	१०७–१११
७. गणधरवलयपूजा	×	"	१११–११५
८. नंदीश्वरजयमाल	×	प्राकृत	११६
९. बृहत्षोडशकारणपूजा	×	संस्कृत	११६–१२८
१०. ऋषिमंडलपूजा	ज्ञान भूषण	"	१२८–३६
११. शांतिचक्रपूजा	×	"	१३७–३८
१२. पञ्चमेरुपूजा (पुष्पाञ्जलि)	×	अपभ्रंश	१३९–४१
१३. पणकरहा जयमाल	×	"	१४२
१४. बारह अनुप्रेक्षा	×	"	१४३–४७

१५ मुनीश्वरों की जयमाल	×	अपभ्रंश	१४७
१६. णमोकार पायडी जयमाल	×	"	१४९
१७ चौबीस जिनद जयमाल	×	"	१५०-१५२
१८ दशलक्षण जयमाल	रइधू	"	१५३-१५५
१९ भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१५५-१५७
२० कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	१५७-१५८
२१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१५८-१६०
२२ अकलंकाष्टक	स्वामी अकलंक	"	१६०
२३ भूपालचतुर्विंशति	भूपाल	"	१६१-६२
२४ स्वयम्भूस्तोत्र (इष्टोपदेश	पूज्यपाद	"	१६२-६४
२५ लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनंदि	"	१६४
२६. लघुसहस्रनाम	×	"	१६५
२७. सामायिकपाठ	×	प्राकृत संस्कृत	ले० सं० १६७८, १६५-७०
२८ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	१७१
२९. भावनाद्वात्रिंशिका	×	"	१७१-७२
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१७२-७४
३१. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१७४-७८
३२ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपभ्रंश	१७९-८८
		ले० सं० १६६१ वैशाख सुदी ५ ।	
३३. सुप्पयदोहा	×	×	१८८-९०
३४. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत	१९१
३५. यतिभावनाष्टक	×	"	"
३६. करुणाष्टक	पद्मनंदि	"	१९२
३७. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	१९४
३८. दुर्लभानुप्रेक्षा	×	"	"
३९. वैराग्यगीत (उदरगीत)	छीहल	हिन्दी	१९५
४०. [illegible]	×	अपभ्रंश	अपूर्ण [illegible]

४१. सिद्धचक्रपूजा	×	संस्कृत	१९६–९७
४२. जिनशासनभक्ति	×	प्राकृत अपूर्ण	१९९–२००
४३. धर्मकुहेला जैनी का (त्रेपनक्रिया)	×	हिन्दी	२०२–३७

विशेष—लिपि संवत् १६९६ । आ० शुभचन्द्र ने गुटके की प्रतिलिपि करायी तथा श्री माधवसिंहजी के शासनकाल में गढकोट ग्राम में हरजी जोशी ने प्रतिलिपि की ।

४४. नेमिजिनंद व्याहलो	खेतसी	हिन्दी	२३७–४२
४५. गणधरवलययन्त्रमण्डल (कोठे)	×	"	२४२
४६. कर्मदहन का मण्डल	×	"	२४३
४७. दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिसागर	हिन्दी	२४३–६४
४८. पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	"	२६४–७४
४९. रोहिणीव्रत पूजा	×	"	२७५
५०. त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत	२७५–८६
५१. जिनगुणउद्यापन	×	हिन्दी अपूर्ण	२८६–९६
५२ पंचेन्द्रियवेलि	छीहल	हिन्दी अपूर्ण	३०७
५३. नेमीसुर कवित्त (नेमीसुर राजमतीवेलि)	कवि ठक्कुरसी (कविदेल्ह का पुत्र)	"	३०७–०९
५४. विज्जुच्चर की जयमाल	×	"	३०९–११
५५. हणवतकुमार जयमाल	×	अपभ्रंश	३११–१४
५६. निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत	३१४
५७ कृपणछन्द	ठक्कुरसी	हिन्दी	३१४–१७
५८. मानलघुबावनी	मनासाह	"	३१८–२१
५९. मान की बडी बावनी	"	"	३२२–२८
६०. नेमीश्वर को रास	भाउकवि	"	३२९–३३
६१. "	ब्रह्मरायमल्ल	" र० सं० १६१५,	३३३–४१
६२. नेमिनाथरास	रत्नकीर्त्ति	"	३४१–३४३
६३. श्रीपालरासो	ब्रह्मरायमल्ल	" र. सं. १६३०	३४३–५५

६४. सुदर्शनरासो	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी र सं. १६२९	३५६–६६

संवत् १६६१ में महाराजाधिराज माधोसिंहजी के शासन काल में मालपुरा में श्रीलाला भांवसा ने प्रारम्भ पठनार्थ लिखवाया।

६५. जोगीरासा	जिनदास	हिन्दी	३६७–६८
६६. सोलहकारणरास	ब्र० सकलकीर्ति	"	३६८–६९
६७. प्रद्युम्नकुमाररास	ब्रह्मरायमल्ल	"	३६९–८३

रचना संवत् १६२८। गढ हरसौर में रचना की गई थी।

६८. सकलीकरणविधि	×	संस्कृत	३८३–९५
६९. बीसविरहमाणपूजा	×	"	३९५–९७
७०. पंचकल्याणकपूजा	×	"	अपूर्ण ३९८–४११

५४४७. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ३७। आ० ७×५ इञ्च। अपूर्ण। दशा-सामान्य।

१. भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१–२६
२. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	२६–२७

५४४८. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ७०। आ० ८३×६ इञ्च। अपूर्ण। दशा-जीर्ण।

१. नवकारमंत्र आदि	×	प्राकृत	१
२. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	८–२१

हिन्दी अर्थ सहित। अपूर्ण

३. जम्बूस्वामी चरित्र	×	हिन्दी	अपूर्ण
४. चन्द्रहंसकथा	टीकमचन्द	"	र. सं. १७०८। अपूर्ण
५. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	पूर्ण
६. स्तुति	"	"	अपूर्ण

५४४९. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ८८–११२। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। ले० काल सं० १७८० चैत्र सुदी ११।

विशेष—प्रारम्भ में वैद्य मनोत्सव एवं बाद में आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

५४५०. गुटका सं० ६९। पत्र सं० ११८। आ० ५×६ इंच। हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है।

५४५१. गुटका सं० ७० । पत्र सं० ६४ । ग्रा० ८३×६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-सिद्धान्त अपूर्ण एवं अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—इस गुटके में उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र की (हिन्दी) टीका दी हुई है । टीका सुन्दर एवं विस्तृत है तथा पाण्डे रूपचन्दजी कृत है ।

५४५२ गुटका सं० ७१ । पत्र सं० ३५–२२२ । ग्रा० ८३×६ इंच । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. स्वरोदय	×	हिन्दी	३५–४१
२. सूर्यकवच	×	संस्कृत	४२
३. राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	"	४३–५७
४. देवसिद्धपूजा	×	"	५८–६३
५. दशलक्षणपूजा	×	"	६४-६५
६. रत्नत्रयपूजा	×	"	६५–७३
७. सोलहकारणपूजा	×	"	७३–७५
८. पार्श्वनाथपूजा	×	"	७५–७६
९. कलिकुण्डपूजा	×	"	७६–७८
१०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	७८–८२
११. न्हवनविधि	×	"	८२–८५
१२. [illegible]स्तोत्र	×	"	८५
१३. तत्त्वार्थसूत्र तीन अध्याय तक	उमास्वामि	"	८५–८७
१४. शांतिपाठ	×	"	८८
१५. रामविनोद भाषा	रामविनोद	हिन्दी	८९–२२२

५४५३. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० २०४ । ग्रा० ६½×६½ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१–१११
		रचना संवत् १६९३ लिपि सं० १७७१ ।	
२. बनारसीविलास	"	हिन्दी	अपूर्ण
३. स्त्रीमुक्तिखण्डन	×	" अपूर्ण पत्र सं०	३६–७०

५४५४. गुटका सं० ७३। पत्र सं० १५२। प्रा० ७×६ इंच। अपूर्ण। दशा-जीर्ण शीर्ण।

१. रास भाणावरी	रूपचन्द	अपभ्रंश	१

प्रारम्भ—

विसउणामेण कुरुजंगले तहि यस वाउ जीउ राजे।
धणकणणायर पूरियउ कणयप्पहु धणउ जीउ राजे॥ १॥

विशेष—गीत अपूर्ण है तथा अस्पष्ट है।

२. पद्धडी (कौमुदीमध्यात्)	सहणपाल	अपभ्रंश	२-७

प्रारम्भ—

हाहउं धम्मयुउ हिंडिउ संसारि असारइ।
कोइपए सुणउ, गुणदिठ्ठु संस बिणु वारइ॥ छ॥

अन्तिम घत्ता—

पुणुमंति कहइ सिवाय सुणि, साहणमेयहु किज्जइ।
परिहरि विगेहु सिरि सतियल संधि सुमइं साहिज्जइ॥ ६॥

॥ इति सहणपालकृते कौमुदीमध्यात् पद्धडी छन्द लिखितं॥

३. कल्याणकविधि	मुनि विनयचन्द	अपभ्रंश	७-१३

प्रारम्भ—

सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु
पणविवि तिजइ पयासण केवलसिद्धिहि कारणगुणमिहउं।
सयलवि जिण कल्लाण सिहयमल सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु॥ १॥

अन्तिम—

एयमत्तु एक्कु वि कल्लाणउ विहिहिणिव्वियडि अहवइ गसणउ।
अहवासय सहसवणविहि, विणयचंदि मुणि कहिउ समत्यहु॥
सिद्धि सुहंकर सिद्धियहु॥ २५॥

॥ इति विनयचन्द्र कृतं कल्याणकविधिः समाप्ता॥

४. चूनड़ी (विणयं वंदिवि पंच गुरु)	यति विनयचन्द	अपभ्रंश	१३-१७

५. मरणभिति संधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	अपभ्रंश	१७–२४
६. सम्माधि	×	"	२४–२७
७. मणुवसंधि	×	"	२७–३१
८. णाणपिंड	×	"	३१–४५
विशेष—२० कडवक हैं।			
९. श्रावकाचार दोहा	रामसेन	"	४५–५९
१०. दशलाक्षणीकरास	×	"	५९–६०
११. श्रुतपञ्चमीकथा	स्वयंभू	"	६१–६७
(हरिवंश मध्यात् विदुर वैराग्य कथानके)			
१२. पद्धड़ी	यशःकीर्ति	"	६७–७०
(यशःकीर्ति विरचित चंद्रप्रभचरित्रमध्यात्)			
१३. रिट्ठणेमिचरिउ (९७-९८ संधि)	स्वयम्भू	" (अत्रलाश्रित)	७७–८६
१४. वीरचरित्र (अनुप्रेक्षा भाग)	रइधू	"	८६–८९
१५. चतुर्गति की पद्धड़ी	×	"	८९–९१
१६. सम्यकत्वकौमुदी (भाग १)	सहणपाल	"	९१–९४
१७. भावना उणतीसी	×	"	९४–९९
१८. गौतमपृच्छा	×	प्राकृत	१००–०२
१९. आदिपुराण (कुछ भाग)	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१०२–३१
२०. यशोधरचरित्र (कुछ भाग)	"	"	१३२–४६

५४४५ गुटका सं० ७९। पत्र सं० २३ से १२३। आ० ९×९ इञ्च। अपूर्ण।

१. फुटकर पद्य	×	हिन्दी	२३–३१
२. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"	३२–४३
३. करुणाष्टक	×	"	४४
४. पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	"	४५
५. विनती	भूधरदास	"	४७
६. ते गुरु मेरे उर बसो	"	" ले० काल सं० १८२६	४८

७. जकड़ी	द्यानतराय	हिन्दी		५१
८. मगन रहो रे तू प्रभु के भजन में	वृन्दावन	"		५२
६. हम आये हैं जिनराज तोरे वंदन को	द्यानतराय	"	ले० काल सं० १७६६	"
१०. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचन्द	"		५३–६०

विशेष—ले० काल सं० १७६६ । दयाचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी । पं० फकीरचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

११. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	६१–६३
१२. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	६३–६४
१३. मनां रे प्रभु चरणा ल्यु लाय	हरीसिंह	"	६४
१४. हमारी करुणा ल्यो जिनराज	पद्मनन्दि	"	६५
१५. पानीका पतासा जैसा तनका तमाशा है [कवित्त]	केशवदास	"	६६–६८
१६. कवित्त	जयकिशन सुंदरदास आदि	"	६९–७२
१७. गुणवेलि	×	हिन्दी	७५
१८. पद—थारा देश में हो लाल गढ़ बड़ो गिरनार	×	"	७७
१९. कक्का	गुलाबचन्द	"	७८–८२

र० काल सं० १७६० ले० काल सं० १८००

२०. पंचबधावा	×	हिन्दी	८४
२१. मोक्षपैड़ी	×	"	८६
२२. भजन संग्रह	×	"	९२
२३. दानकीबीनती	भतीदास	संस्कृत	९३

निहालचन्द अजमेरा ने प्रतिलिपि की संवत् १८१४ ।

२४. शकुनावली	×	हिन्दी लिपिकाल १७९७	९९–१०१
२५. फुटकर पद एवं कवित्त	×	"	१२३

५४५६. गुटका सं० ७५—पत्र संख्या—११६ । आ०–४३/४×४१/२ इंच । ले० काल सं० १८४८ । दशा सामान्य । अपूर्ण ।

१. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी
२. कल्याणमंदिरभाषा	बनारसीदास	"

३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	
४. श्रीपालजी की स्तुति	×	हिन्दी	
५. साधुवंदना	बनारसीदास	"	
६. बीसतीर्थङ्करों की जकडी	हर्षकीर्ति	"	
७. बारहभावना	×	"	
८. दर्शनाष्टक	×	हिन्दी	सब दर्शनों का वर्णन है।
९. पद-शरण केवल को ध्यान	हरीसिंह	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्रभाषा	×	"	"

४४५७ गुटका स० ७६ । पत्र संख्या—१८० । आ०—५॥×४॥ लेखन सं० १७८३ । जीर्ण ।

१. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	
२. नित्यपूजा व भाद्रपद पूजा	×	"	
३. नंदीश्वरपूजा	×	"	पंडित नगराज ने हिरणोदा में प्रतिलिपि की।
४. श्रीसीमंधरजी की जकड़ी	×	हिन्दी	प्रतिलिपि गुढ़ा में की गई।
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	
६. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	
७. जिनजपिजिन जपि जीवरा	×	हिन्दी	
८. चिंतामणिजी की जयमाल	मनरथ	"	जोवनेरमें नगराजने प्रतिलिपि की थी।
९. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	संस्कृत	
१०. भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतुंग	"	

४४५८ गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १२५ । आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० सं० काल १८१९ माह सुदी १२ ।

१. देवसिद्धपूजा	×	संस्कृत	१-३५
२. नंदीश्वरपूजा	×	"	३३-४४
३. सोलहकारण पूजा	×	"	४४-५०
४. दशलक्षणपूजा	×	"	५०-५५

५. रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६–६१
६. पार्श्वनाथपूजा	×	"	६२–६७
७. शांतिपाठ	×	"	६७–६९
८ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०–११४

५४५६. गुटका सं० ७८। पत्र संख्या १६०। आ० ६×४ इंच। अपूर्ण। दशा–जीर्ण।

विशेष—दो गुटकों का सम्मिश्रण है।

१. ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०–२७
२. चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा	×	"	२८–३१
३. चिंतामणिस्तोत्र	×	"	३६
४. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	३७–३८
५. पार्श्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३९–४०
६. कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१–४३
७. चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	४३–४८
८. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	४८–५३
९. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५४–६१
१०. चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र	"	६१–८९
११. गणधरवलय पूजा	×	"	८९–११४
१२. अष्टाह्निका कथा	यशःकीर्त्ति	"	१०४–११२
१३. अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्त्ति	"	११२–११८
१४. सुगन्धदशमी कथा	"	"	११८–१२७
१५. षोडषकारण कथा	"	"	१२७–१३६
१६. रत्नत्रय कथा	"	"	१३६–१४१
१७. जिनचरित्र कथा	"	"	१४१–१५०
१८. आकाशपंचमी कथा	"	"	१५०–१५[illegible]
१९. रोहिणीव्रत कथा	"	"	अपूर्ण [illegible]

२०. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	संस्कृत	१५८–१६१
२१. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	१६२–६३
२२. शांतिक होम विधि	×	"	१७४–७६
२३. चौबीसी विनती	भ० रत्नचन्द्र	हिन्दी	१८६–८९

५४६०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३३ । आ० ७×४½ इंच । अपूर्ण ।

१. राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	१–२८
२. एकीश्लोक रामायण	×	"	२९
३. एकोश्लोक भागवत	×	"	"
४. गणेशद्वादशनाम	×	"	३०–३१
५. नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	"	३२–३३

५४६१. गुटका सं० ८० । पत्र सं० १८–४४ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत तथा हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष— पञ्चमंगल, बाईस परिषह, देवपूजा एवं तत्वार्थसूत्र का संग्रह है ।

५४६२ गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २–२६ । आ० ५½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—नित्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

५४६३ गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ३० । आ० ६×४ इंच । भाषा संस्कृत । ले० काल सं० १८८३ ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (पं० आशाधर)का संग्रह है ।

५४६४ गुटका सं० ८४ । पत्र सं० १८–५१ । आ० ७×४½ इंच ।

१. स्वस्त्ययनविधि	×	संस्कृत	१८–२०
२. सिद्धपूजा	×	"	२१–२३
३. षोडशकारणपूजा	×	"	२४–२५
४. दशलक्षणपूजा	×	"	२६–२७
५. रत्नत्रयपूजा	×	"	२८–३७
६. [illegible]	×	"	३८–३९

७. चिंतामणिपूजा	×	संस्कृत	३६-४१
८. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	४२-५१

४४६५. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । दशा-सामान्य।

विशेष—पत्र ३-४ नहीं हैं। जिनसेनाचार्य कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है।

४४६६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ५ से २५ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—१८ से ८७ सवैयों का संग्रह है किन्तु किस ग्रंथ के हैं यह अज्ञात है।

४४६७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३३ । आ० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जैनरक्षास्तोत्र	×	संस्कृत	१-३
२. जिनपिंजरस्तोत्र	×	"	४-५
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	६
४. चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	७
५. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	७-१५
६. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	१५-१८
७. ऋषि मंडलस्तोत्र	गौतम गणधर	"	१८-२४
८. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	२४-२६
९. शीतलाष्टक	×	"	२७-३२
१०. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	३२-३३

४४६८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २१ । आ० ७×५ इञ्च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—गर्गाचार्य विरचित पाशा केवली है।

४४६९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×५½ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारंभ में पूजाओं का संग्रह है तथा अन्त में ब्रह्मसकीर्ति कृत मंत्र नवकाररास है।

४४७० गुटका सं० ९० । पत्र सं० ५० से १२० । आ० ८×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—भक्ति पाठ तथा चतुर्विंशति तीर्थङ्कर स्तुति (आचार्य समन्तभद्रकृत) है।

४४७१ गुटका सं० ९१ । पत्र सं० ७ से २२ । आ० ६×६ इंच । विषय-स्तोत्र । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. संबोध पंचासिकाभाषा	द्यानतराय	हिन्दी		७-८
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	,,		९-१४
३. कल्याण मंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	,,		१५-२२

५४७२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १३०-२०३ । आ० ८×८ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल १८३३ । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. भविष्यदत्तरास	रायमल्ल	हिन्दी		१३०-८५
२. जिनपञ्जरस्तोत्र	×	संस्कृत		१८५ ८७
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	,,		१८८
४. स्तवन (अरिहन्त संत का)	×	हिन्दी		१८९-९३
५. चेतनचरित्र	×	,,		१९३-२०३

५४७३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० २५-१०८ । आ० ५×३ इंच । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ के २४ पत्र नही है ।

१. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी		२५
२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत		५४
३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,		६२
४. सासू बहू का झगडा	ब्रह्मदेव	हिन्दी		६५
५. पिया चले गिरवर कूं	×	,,		६७
६. नाभि नरेन्द्र के नंदन कूं जग वंदन	×	,,		६८
७. सीताजी की विनती	×	,,		७१
८. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत		७२-९४
९. पद- अरज करां छा जिनराजजी राग सारंग	×	हिन्दी	अपूर्ण	९६
१०. ,, की परि करोजी गुमान थे के दिनका महमान,	बुधजन	,,		९७
११. ,, लगनि मोरी लगी ऐसी	×	,,		९९
१२. ,, शुभ गति पावन याही चित धारोजी	नवल	,,		९९
१३. ,, जाऊंगी संगि नेम कंवार	×	,,		१००
१४. ,, टुक नजर महर की करना	भूधरदास	,,		१०२

१५. खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी (राग काफी)	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
१६. देखो करमां सूं झुल रही प्रजरी	किशनदास	"	१०३
१७. सखी नेमीजीसूं मोहे मिलावोरी (रागहोरी)	द्यानतराय	"	"
१८. दुरमति दूरि खड़ी रहो री	देवीदास	"	१०५
१९. अरज सुनो म्हारी अन्तरजामी	खेमचन्द	"	१०६
२०. जिनजी की छबि सुन्दर या मेरे मन भाई	×	"	अपूर्ण १०८

५४७४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३-४७ । आ० ५×५ इंच । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण ।

विशेष—पत्र संख्या २९ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आयुर्वेद के नुसखे हैं । तेजरी, इकांतरा आदि के मंत्र हैं । सं० १८२१ में श्री हरलाल ने पाटा में प्रतिलिपि की थी ।

५४७५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १८७ । आ० ४×३ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-११८
२. चर्चासमाधान	भूधरदास	हिन्दी	११९-१३७
३. सूर्यस्तोत्र	×	संस्कृत	१३८
४. सामायिकपाठ	×	"	१३८-१४४
५. मुनीश्वरों की जयमाल	×	"	१४५-१४६
६. शांतिनाथस्तोत्र	×	"	१४७-१४८
७. जिनपंजरस्तोत्र	कमलप्रभसूरि	"	१४९-१५१
८. भैरवाष्टक	×	"	१५१-१५६
९. अकलंकाष्टक	अकलंक	"	१५६-१५९
१०. पूजापाठ	×	"	१६०-१६७

५४७६. गुटका सं ६६ । पत्र सं० ११० । आ० ३×३ इञ्च । ले० काल सं० १८५७ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	

३. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत	
४. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	
५. चैत्यवंदना	×	"	
६. ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	हिन्दी	१०-२४
७. श्रीपालस्तुति	×	"	२५-२८
८. विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	"	२६-३१
९. चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	×	"	३३-३७
१०. पंचमंगल	रूपचंद	"	३८-४७
११. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	४८-५६
१२. पद-मेरी रै लगावो जिनजी का नावसूं	×	हिन्दी	६०
१३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	६१-७०
१४. नेमीश्वर की स्तुति	भूधरदास	हिन्दी	७१-७२
१५. अकड़ी	रूपचंद	"	७३-७५
१६. "	भूधरदास	"	७६-८३
१७. पद- लीयो जाय तो लीजे रे भाली जिनजी को नाम सब भलो	×	"	८४-८५
१८. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	८५-८९
१९. घण्टाकर्णमंत्र	×	"	९०-९६
२० तीर्थङ्करादि परिचय	×	"	९७-१६२
२१. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१६३-६५
२२. पारसनाथजी की नियाणी	×	हिन्दी	१६६-७७
२३. स्तुति	कनककीर्ति	"	१८०-८२
२४ पद-(वंदूं श्रीजिनराय मनवच काय करानी)	×	"	

५४५७. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७५ । प्रा० ३×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष-गुटकाजीर्ण शीर्ण हो चुका है । अक्षर मिट चुके हैं ।

१ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत

२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	"		
३. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"		
४. कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"		
५. पंचस्तोत्रावस्तोत्र	×	"		
६. सर्वनामस्तोत्र	×	"		
७. स्तोत्र संग्रह	×	"		३६–७२

५४७८. गुटका सं० ६८ पत्र सं० ११–११५ । आ० २½×२¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष–नित्य पूजा एवं षोडशकारणादि भाद्रपद पूजाओं का संग्रह है ।

५४७९. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ४–१०५ । आ० ४×३ इञ्च ।

१. कक्काबत्तीसी	×	हिन्दी		४–१३
२. त्रिकालचौबीसी	×	"		१४–१७
३. भक्तिपाठ	कनककीर्ति	"		१७–२०
४. तीसचौबीसी	×	"		२१–२३
५. पहेलियां	माह	"		२४–६३
६. तीनचौबीसीरास	×	"		६४–६६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"		६७–७३
८. चौपाल बीनती	×	"		७४–७८
९. भजन	×	"		७९–८०
१०. नवकार बडी बीनती	ब्रह्मदेव	"	सं० १८४५	८१–८२
११. प्रद्युम्न पच्चीसी	बिनोदीलाल	"		८३–१०१
१२. नेमीश्वर का ब्याहुला	लालचन्द	"	अपूर्ण	१०१–१०५

५४८०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० २–८० । आ० १०×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. जिनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	१
२. मालिकापूजा	रामचंद्र	"	२–३
३. सिद्धपूजा	×	संस्कृत	४–५

४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	५–६
५. जिनपूजाविधान (देवपूजा)	×	हिन्दी	७–१५
६. [illegible]	द्यानतराय	"	१६–१८
७. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१३–१५
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५–२१
९. सोलहकारणपूजा	×	"	२२ २४
१०. दशलक्षणपूजा	×	"	२५–३२
११. रत्नत्रयपूजा	×	"	३३–३६
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	हिन्दी	३७
१३. नंदीश्वरद्वीपपूजा	×	संस्कृत	३७–३९
१४. शास्त्रपूजा	×	"	४०
१५. सरस्वतीपूजा	×	हिन्दी	४१
१६. तीर्थङ्करपरिचय	×	"	४२
१७. नरक-स्वर्ग के यंत्र पृथ्वी आदि का वर्णन	×	"	४३–५०
१८. जैनशतक	भूधरदास	"	५१–५९
१९. एकीभावस्तोत्रभाषा	"	"	६०–६१
२०. द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	६१–६३
२१. दर्शनस्तुति	×	"	६३–६४
२२. साधुवंदना	बनारसीदास	"	६४–६५
२३. पंचमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	६५–६९
२४. जोगीरासो	जिनदास	"	६९–७०
२५. चर्चायें	×	"	७०–८०

५४८१. गुटका सं० १०१ । पत्र सं० २–२१ । आ० ८३×८३ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–चर्चा । अपूर्ण । दशा–सामान्य । चौबीस ठाणा का पाठ है ।

५४८२. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० २ २३ । आ० ५×४ इंच । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण । दशा–सामान्य । निम्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

१. भूल क्यों गया जी म्हानें	×	हिन्दी	२
२. जिन छवि पर जाऊं मैं वारी	राम	"	२
३. अंखिया लगी तैडे	×	"	२
४. हगनि सुख पायो जिनवर देखि	×	"	२
५. लगन मोहे लगी देखन की	बुधजन	"	३
६. जिनजी का ध्यान में मन लगि रह्यो	×	"	३
७. प्रभु मिल्या दीवानी बिछोवा कैसे किया सइयां	×	"	४
८. नहीं ऐसो जनम बारम्बार	नवलराम	"	४
९. आनन्द मङ्गल आज हमारे	×	"	४
१०. जिनराज भजो सोही जीत्यो	नवलराम	"	५
११. सुभ पंथ लगो ज्यो होय भला	"	"	५
१२. छांडदे मनकी हो कुटिलता	"	"	६
१३. सबन में दया है धर्म को मूल	"	"	६
१४. दुख काहू नहीं दीजे रे भाई	×	"	६
१५ मारणलाग्यां	नवलराम	"	६
१६. जिन चरणां चित लगाय मन	"	"	७
१७. हे मां जा मिलिये श्री नेमकंवार	"	"	७
१८. म्हारो लाग्यो प्रभु सूं नेह	"	"	८
१९. थां ही संग नेह लग्यो है	"	"	९
२०. थां पर वारी हो जिनराय	"	"	९
२१. मो मन थां ही संग लाग्यो	"	"	९
२२. धनि घड़ी ये आई देखे प्रभु नैना	"	"	९
२३. वीर री पीर मोरी कासों कहिये	"	"	९
२४. जिनराय ध्यावो भवि भाव से	"	"	१०
२५. सखी आज काहे पति को समझावो	"	"	१०
२६. प्रभुजी म्हारी विनती [illegible] हो राज	"	"	११

२७. ई' विध खेलिये हो चतुर नर	नवलराम	हिन्दी	१२
२८. प्रभु गुन गावो भविक जन	,,	,,	१२
२९. यो मन म्हारो जिनजी सूं लाग्यो	,,	,,	१३
३०. प्रभु चूक तकसीर मेरी माफ करो वे	,,	,,	१३
३१. दरसन करत अघ सब नसे	,,	,,	१३
३२. रे मन लोभिया रे	,,	,,	१४
३३ भरत नृप वैरागे चित दीनो	,,	,,	१५
३४. देव दीन को दयाल जानि चरण शरण आयो	,,	,,	,,
३५. गावो हे श्री जिन विकलप छारि	,,	,,	,,
३६. प्रभुजी म्हारो अरज सुनो चितलाय	,,	,,	१६
३७. ये शिक्षा चित लाई	,,	,,	१६–१७
३८. मैं पूजा फल बात सुनो	,,	,,	१८
३९. जिन सुमरन की बार	,,	,,	,,
४०. सामायिक स्तुति वंदन करि के	,,	,,	१९
४१. जिनन्दजी की छब छब नैन लाय	संतदास	,,	,,
४२. चेतो क्यों न ज्ञानी जिया	,,	,,	२०
४३. एक अरज सुनी साहब मोरी	द्यानतराय	,,	,,
४४. मो से अपना कर दयार रिखभ दीन तेरा	बुधजन	,,	२०
४५. अपना रंग में रंग दयोजी साहब	×	,,	,,
४६. मेरा मन मधुकर अटक्यो	×	,,	२१
४७. भैया तुम चोरी त्यागोजी	पारसदास	,,	,,
४८. घड़ी २ पल २ छिन २	दौलतराम	,,	,,
४९. घट घट नटवर	×	,,	२२
५०. आरम अपनी जोय सुज्ञानी होरे	×	,,	,,
५१. सुनि जीया रे चिरकाल रे सोयो	×	,,	,,
५२. [illegible]	[illegible]	,,	,,

५३. भाई सोही सुगुरु बखानि रे	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हाँ मन जिनजी न क्या नहीं रटै	”	”	”
५५. की परि इतनी मगरूरी करी	”	”	अपूर्ण

५४८३. गुटका सं० १०३। पत्र सं० ३–२०। आ० ६X५ इञ्च। अपूर्ण। दशा जीर्ण।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है।

५४८४. गुटका सं० १०४। पत्र सं० ३०–१४४। आ० ६X५ इञ्च। ले० काल सं० १७२८ कार्तिक सुदी १५। अपूर्ण। दशा-जीर्ण।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	३०–३२
२. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	”	३३–४७
३ स्नपनविधि	×	संस्कृत	४८–६०
४ क्षेत्रपालपूजा	×	”	६०–६४
५. क्षेत्रपालाष्टक	×	”	६४–६५
६. बन्देतान की जयमाल	×	”	६५–६६
७ पार्श्वनाथ पूजा	×	”	७०
८. पार्श्वनाथ जयमाल	×	”	७०–७३
९ पूजा जयमाल	×	संस्कृत	७४
१० चिंतामणि की जयमाल	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	७५
११. कलिकुण्डस्तवन	×	प्राकृत	७६–७८
१२. विद्यमान बीस तीर्थङ्कर पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	८२
१३. पद्मावतीपूजा	”	”	८५
१४. रत्नावली व्रतो की तिथियो के नाम	”	हिन्दी	८६–८७
१५. व्रत मंडल की	”	”	८८–८९
१६. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	८९–१०२
१७. [illegible]	×	”	१०३–११६
१८. [illegible]	×	हिन्दी	११६–११८

५४८५. गुटका सं० १०५। पत्र सं० ११७। आ० ६X५ इंच।

१. षट्ऋतुवर्णन बारह मासा	जगराज	हिन्दी	अपूर्ण	२४–४३
२. कवित्त सग्रह	×	,,		४३–६१
	विभिन्न कवियो के नायक नायिका सबन्धी कवित्त हैं।			
३ उपदेश पचीसी	×	हिन्दी	अपूर्ण	६२–६३
४. कवित्त	मुन्नालाल	,,		६६–६७

५४८६ गुटका स० १०६ । पत्र स० २४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र है

५४८७. गुटका स० १०७ । पत्र सं० २०–६४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १७४८ वैशाख सुदी १४ । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. कृष्णरुक्मरिणवेलि हिन्दी गद्य टीका सहित	पृथ्वीराज	हिन्दी	२०–५८

लेखन काल स० १७४८ वैशाख सुदी १४ । र० काल स० १६३७ । अपूर्ण ।

अन्तिम पाठ—

रमता जगदीश्वरतरणौ रहसी रस मिथ्यावचन न ता सम है ।
सरसति रुकमिरणी तरिण सहचरि कहि या मुर्पेतियज कहै ।। १० ।।

टीका—रहसि एका तइ रुकमरणी साथइ श्रीकृष्णजी तइ रमता क्रीडाता जे रस ते दृष्टि दीठा सरीख कह्यौ । पर त वचन माही कूडउ नेमत मानउ साच मानिज्यौ । रुकमणी सरस्वतीनी सहचरी । सरस्वती तिणइ मुख-बात कही मुझनइ आपणउ जाणी ।। जाणी सवबात कही तहना मुख थकी सुणी तिमही ज कही ।। १० ।।

रूप लक्षरण गुण तणास रुकमोरिण जहिवा समरथाक कुरण ।
जारिणया जिका सातिसामैं जपिया गाविंद राणि तरणा गुरण ।। ११ ।।

टीका—रुकमरिण नउ रूप लक्षरण गुरण क हवा भरिण समर्थ कुरण समथ तर छइ अपितु को नहि परमइ । माहरि मतिइ अनुसार जिसा व्याख्या तिस्या ग्रन्थ र्माहि गू थ्या कह्या तिरण कारण हू ताहरउ बालक छू मौ परि कृपा करिज्यौ ।। ११ ।।

वसु शिव नयन रस शशि वत्थर विजयवसमि रवि रिव वरसोत ।
किसन रुकमणी वेलि कल्पतरु कीधी कमध ज कल्याण उत ।। १२ ।।

टीका—अचल पर्वत सत्व रजु तम गुरण ३ अग ६ शशिचन्द्रमा १ सवत् १६३७ वर प्रबल गुरण रवि ससि सचि तास वीमउ जस ।। करि श्री भरतार श्रवणे दिन रात कठ करि श्रीफल भगति मपार विचइ श्री लक्ष्मी नउ भरतारि रुकमणी कृष्णनउ श्री रुकमणी जस करी भावना कीधी ए वेली महो भणतो श्रवणे सांभलिउ रात दिन गलइ करउ श्री लक्ष्मी रूप फल पामइ ।

वेद बीज जल वयरण सुकवि जउ मंडीस धर ।
पत्र दूहा गुण पुहपवास भोगी लिखमी वर ॥
पसरी दीप प्रदीप अधिक गहरी या डवर ।
मनसुजेणांति अंब फल पामिइ अबर ॥
विसतार कोध जुवि जुगी विमल धणी किसन कहणहार धन ।
अमृत वेलि पीथल अतइ रोपी कलियाण तनुज ॥ ३१३ ॥

अर्थ—मूल वेद पाठ तींको बीज जल पाणी तिको कवियण तिये वयणे करि जडमाडीस दृढ़ परिणइ ॥ दूहा ते पत्र दूहा गुण ते फूल सुगन्ध वास भोगी भमर श्रीकृष्णजी बेलिइं मांकहइ करो बिस्तरी जगत्र नइ विषे दीप प्रदीप। व दीवा थी अधिक अत्यन्त विस्तरी जिके मन सुधी एह नउ की जाणइ तीको इसा फल पांमइ । अंबर कहितां स्वर्ग नां सुख पांमे । विस्तार करी जगत्र नइ विषइ विमल कहीता निर्मल श्रीकिसनजी बेलि मा धणी नइ कहण हार धन्य तिको पिण अमृत रूपणी बेलि पृथ्वी नइ लिखइ अविचल पृथ्वी नई कविराज श्री कल्याण तम बेटा पृथ्वीराजइ कह्या।

इति पृथ्वीराज कृत क्रुषण रुकमणी बेलि संपूर्ण । मुणि जग विमल वाचणार्थ । संवत् १७४८ वर्ष वैशाख मासे कीष्ण पक्षे तिथि १४ भ्रगुवासरे लिखतं उणियारा नग्रे ॥ श्री ॥ रस्तु ॥ इति मंगलं ॥

२. कोकमंजरी	×	हिन्दी		५४
३. बिरहमंजरी	नंददास	"		५५–६१
४. बावनी	हेमराज	"	४६ पद्य हैं	६१–६७
५. नेमिराजमति बारहमासा	×	"		६७
६. पुष्पावलि	×	"		६६–८७
७. नाटक समयसार	बनारसीदास	"		८८–११४

५४८८. गुटका सं० १०७ क। पत्र सं० २३५ । आ० ५×४ इञ्च । विषय–पूजा एवं स्तोत्र ।

१. देवपूजाष्टक	×	संस्कृत	१–४
२. सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"	४–६
३. भूताष्टक	×	"	६–७
४. गुरुस्तवन	शांतिदास	"	८
५. गुर्वष्टक	भाविराज	"	६

६. सरस्वती जयमाल	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	१०–१२
७. गुरुजयमाला	"	"	१३–१५
८. लघुस्नपनविधि	×	संस्कृत	१६–२३
९. सिद्धचक्रपूजा	×	"	२४–३०
१०. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	यशोविजय	"	३१–३५
११. षोडशकारणपूजा	×	"	३५–३९
१२. दशलक्षणपूजा	×	"	३९–४२
१३ नन्दीश्वरपूजा	×	"	४३–४५
१४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	४६–५९
१५. अर्हद्भक्तिविधान	×	"	५९–६२
१६. सम्यक्दर्शनपूजा	×	"	६२–६४
१७ सरस्वतीस्तुति	आशाधर	संस्कृत	६४–६६
१८. ज्ञानपूजा	×	"	६७–७१
१९. महर्षिस्तवन	×	"	७१–७३
२०. स्वस्त्ययनविधान	×	"	७३–७९
२१. चारित्रपूजा	×	"	७९–८१
२२. रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	×	प्राकृत संस्कृत	८१–९१
२३. बृहद्स्नपन विधि	×	संस्कृत	९१–११९
२४. ऋषिमण्डल स्तवनपूजा	×	"	११९–२९
२५ अष्टाह्निकापूजा	×	"	१२९–५१
२६. विरदावली	×	"	१५२–६०
२७. दर्शनस्तुति	×	"	१६१–६२
२८. आराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	१६३–६९

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

श्री जिणवरवाणि णवेवि गुरु निर्ग्रन्थ प्रणमेवी ।

कहूं आराधना सुविचार संक्षेपे सारौ वीर ॥ १ ॥

हो क्षपक वयण अवधारि, हवि चाल्यो तुम भवपारि ।
हो सुभट कहुं तुम भेउ, धरी समकित पालन एहु ॥ २ ॥
हवि जिनवरदेव आराहि, तूं सिद्ध समरि मन मांहि ।
सुणि जीव दया धुरि धर्म्म, हवि छांडि अशुए कर्म्म ॥ ३ ॥
मिथ्यात कु संका टालो, गणगुरु वचनि पालो ।
हवि ध्यान धरे मन धीर, त्यो संजम दोहीलो वीर ॥ ४ ॥
उपप्राचित करि व्रत सुधि, मन वचन काय निरोधि ।
तू क्रोध मान माया छांडि, आपुण सूं सिसि मांडि ॥ ५ ॥
हवि क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार ।
तुं मंत्र समरे नवकार, जीए तन करे भवनार ॥ ६ ॥
हवि सवे परिसह जिपि, अभंतर ध्याने दीपि ।
वैराग्य धरे मन माहि, मन मांकड़ गाढु साहि ॥ ७ ॥
सुणि देह जोय सार, भवलचो वयण मो हार ।
हवि भोजन पांणि छांडि, मन लेई सुगति मांडि ॥ ८ ॥
हवि खुणखरण वुटि आयु, मनासि छांडो काय ।
इंद्रीय बस करि धीर, कुटंब मोह मेल्हे वीर ॥ ९ ॥
हवि मन गन गांठु बांधे, तू मरण समाधि साधि ।
जे साधो मरण सुनेह, जेया स्वर्ग सुगतिय असोय ॥ १० ॥

× × × ×

अन्तिम भाग

हवि हंइडि आणि विचार, वाणु कहिइ किहिं सु अपार ।
लिया अणसरण दीक्या जाण, सन्यास छांड़ो प्राण ॥ ५३ ॥
सन्यास तणां फल जोइ, स्वर्ग सुद्धि फलि सुखु होइ ।
वलि श्रावक कोल हूं पामीइ, सही निर्वाण सुगती गामीइ ॥ ५४ ॥
जे भणि सुणिस नरनारी, ते जाइ भवधि पारि ।
श्री विमलेन्द्रकीर्ति कह्यो विचार, आराधना प्रतिबोधसार ॥ ५५ ॥

इति श्री आराधना प्रतिबोध समाप्त

९. पंचमेरुपूजा (बृहत्)	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत		१७०–१८०
१०. अनन्तपूजा	ब्रह्मशांतिदास	हिन्दी		१८०–९९
११. गणधरवलयपूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत		१९९–२११
१२. पञ्चकल्याणकोद्यापन पूजा	भ. ज्ञानभूषण	"	अपूर्ण	२११–३५

५४८६. गुटका सं० १०८ । पत्र सं० १२० । आ० ५×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१. जिनसहस्रनामभाषा	बनारसीदास	हिन्दी		१–२१
२. लघुसहस्रनाम	×	संस्कृत		२२–२७
३. स्तवन	×	अपभ्रंश	अपूर्ण	२८
४. पद	मनराम	हिन्दी		२९

ले० काल १७३५ आसोज बुदी ९

चेतन इह घर नाही तेरो ।
घटपटादि नैनन गोचर जो, नाटक पुद्गल केरो ।। टेक ।।
तात मात कामनि सुत बंधु, करम बंध को घेरो ।
करि है गौन आनगति कौं जब, कोई नही आवत नेरौ ।। १ ।।
भ्रमत भ्रमत संसार गहन वन, कीयो आनि बसेरौ ।
मिथ्या मोह उदै तैं समझो, इह सदन है मेरो ।। २ ।।
सदगुरु वचन जोइ घट दीपक, मिटै अनादि अंधेरौ ।
असंख्यात परदेस ग्यान मय, ज्यौ जानऊ निज डेरौ ।। ३ ।।
नाना विकलप त्यागि आपकौ, आप आप महि हेरौं ।
जौं मनराम अचेतन परसौं, सहजें होइ निवेरौ ।

५. पद–मो पिय चिदानंद परवीन	मनराम	हिन्दी		३०
६. चेतन समझि देखि घरमांहि	"	"	अपूर्ण	३१
७. कै परमेस्वरी की अरचा विधि	"	"		३२
८. जयति आदिनाथ जिनदेव ध्यान गाऊं	×	"		३३
९. सम्यक्त्व पचीविधि सिरिपाल हो	"	"		३४–३५

१०. पंचमगति बेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	सं० १६८३ श्रावरण अपूर्ण
११. पंच सवावा	×	"	"
१२. मेघकुमारगीत	पूनों	हिन्दी	४०–४५
१३. भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	"	४६
१४. पद–अब मोहे कछून उपाय	रूपचंद	"	४७
१५. पंचपरमेष्ठीस्तवन	×	प्राकृत	४७–४९
१६. शांतिपाठ	×	संस्कृत	५०–५२
१७. स्तवन	आशाधर	"	५२
१८. बारह भावना	कविम्रालु	हिन्दी	
१९. पंचमंगल	रूपचंद	"	
२०. जकड़ी	"	"	
२१. "	"	"	
२२. "	"	"	
२३. "	दरिगह	"	

सुनि सुनि जियरा रे तू त्रिभुवन का राउ रे ।
तू तजि परपरचारे चेतसि सहज सुभाव रे ॥
चेतसि सहज सुभाव रे जियरा परस्यौं मिलि क्या राच रहे ।
अप्पा पर जाण्या पर अप्पाणा चउगइ दुक्ख अणाइ सहे ॥
अबसो गुण कीजै कर्म हं छीज्जै सुणाहु न एक उपाव रे ।
दंसण णाण चरणमय रे जिउ तू त्रिभुवन का राउ रे ॥ १ ॥
करमनि बसि पड़िया रे अणया मूढ़ विभाव रे ।
मिथ्या मद भड़िया रे मोह्या मोहि अणाइ रे ॥
मोह्या मोह अणाइ रे जिय रे मिथ्यामद नित मांचि रह्या ।
पड पडिहार खडग मदिरावत ज्ञानावरणी आदि कह्या ॥
हडि चित्त कुलाल भंडारीरण अष्टाउपीयै चताई रे ।
रे जीयड़े करमनि बसि पड़िया अणया मूढ़ विभाव रे ॥ २ ॥

तू मति सोवहि न बीता रे वैरिन मे काहा वास रे ।
भवभव दुखदाय करै तिनका करै विसास रे ।।
तिनका करहि विसास रे जिवडे तू मूढा नहि निमषु डरे ।
जम्मण मरण जरा दुखदायक तिनस्यौं तू नित नेह करें ।।
आपे ग्याता आपे द्रिष्टा कहि समझाऊं कास रे ।
रे जीउ तू मति सोवहि न बीता वैरिन मे काहावास रे ।।
ते जगमांहि जागे रे रहे अन्तरल्यवलाइ रे ।
केवल विगत भयारे, प्रगटी जोति सुभाइ रे ।।
प्रगटी जोति सुभाइ रे जीवडे मिथ्या रैणि विहाणी ।
स्वपरभेद कारण जिन्ह मिलिया ते जग हूवा वाणी ।।
सुगुरु सुधर्म पंच परमेष्ठी तिनकै लागौ पाय रे ।
कहै दरिगह जिन त्रिभुवन सेवै रहे अतर ल्यवलाइ रे ।। ४ ।।

२४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	ले० काल १७३५ आसोज बुदी ६
२५ निर्वाणकाण्ड गाथा	×	प्राकृत	
२६. पूजा संग्रह	×	हिन्दी	

५४६०. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० १५२ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल १८३६ सावण सुदी ६ । अपूर्ण । दशा-जीर्णशीर्ण ।

विशेष-लिपि विकृत एवं अशुद्ध है ।

१. शनिश्चरदेव की कथा	×	हिन्दी		११४
२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"		१५-२४
३. नेमिनाथ का बारहमासा	×	"	अपूर्ण	२५-२६
४. जकड़ी	नेमिचन्द	"		२७
५. सवैया (सुख होत शरीरको दालिद भागि जाइ)	×	"		२८
६. कवित्त (श्री जिनराज के ध्यान को उछाह मोहि लागै		"		२९
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"		३०-३१

८. स्तुति (प्रागम प्रभु को जब भयो)	×	हिन्दी	३४–३६
९. बारहमासा	×	"	३७–३९
१०. पद व भजन	×	"	४०–४७
११. पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्ति	"	४८–४९
१२. ग्राम नींबू का झगड़ा	×	"	५०–५१
१३. पद–कोइ समुद विजयसुत सार	×	"	५२–५७
१४. गुरुओं की स्तुति	भूधरदास	"	५८–५९
१५. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	६०–६३
१६. विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	भूधरदास	हिन्दी	६४–६६
१७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	६७–६८
१८. पद–मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	हिन्दी	७०
१९. मेरा मन बस कीनो महावीरा	हर्षकीर्ति	"	७१
२०. पद–(नैना सफल भयो प्रभु दरसण पाय)	रामदास	"	७२
२१. चलो जिनन्द वंदस्या	×	"	७२–७३
२२. पद–प्रभुजी तुम मैं चरण शरण गह्यो	×	"	७४
२३. ग्रामेर के राजाओं के नाम	×	"	७५
२४. " "	×	"	७६
२५. विनती–बोल २ भूलो रे भाई	नेमिचन्द्र	"	७८–७९
२६. पद–चेतन मानि ले बात	×	"	७९
२७. मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	"	८०
२८. विनती–वंदू श्री अरहन्तदेव	हरिसिंह	"	८१–८२
२९. पद–सेवक हूं महाराज तुम्हारो	दुलीचन्द	"	८२–८४
३०. मन धरी वे होत उछावा	×	"	८४–८६
३१. धरम का ढोल बजावे सूली	×	"	८७
३२. अब मोहि तारोजी जगद्गुरु	मनसाराम	"	८८
३३. लागो वीर लागो वीर प्रभुजी का ध्यानमें मन । पूरणदेव		"	८८
३४. आसरा जिनराज तेरा	×	"	८८

३५. तु आली ज्यों तारोजी	×	हिन्दी	८६
३६. तुम्हारे दर्श देखत ही	जोधराज	,,	६०
३७. सुनि २ रे जीव मेरा	मनसाराम	,,	६०–६१
३८. भरमत २ संसार चतुर्गति दुख सहा	×	,,	६१–६३
३९. श्रीनेमकुवार हमको क्यों न उतारो पार	×	,,	६५
४०. आरती	×	,,	६६–६७
४१. पद—विनती कराछां प्रभु मानो जी	किशनगुलाब	,,	६८
४२. थे श्री प्रभू तुम ही उतारोगे पार	,,	,,	६६
४३. प्रभूजी मोह्या छै तन मन माग	×	,,	६६
४४. वंदू श्रीजिनराज	कनककीर्ति	,,	१००–१०१
४५. बाजा बजय्या प्यारा २	×	,,	१०२
४६. सफल घडी हो प्रभुजी	खुशालचन्द	,,	१०३
४७. पद	देवसिंह	,,	१०४–१०५
४८. चरखा चलता नांही रे	भूधरदास	,,	१०६
४९. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१०७–१७
५०. चौबीस तीर्थंकर स्तुति	,,	हिन्दी	११६–२१
५१. मेघकुमारवार्ता	,,	,,	१२१–२४
५२. क्षमिश्वर की कथा	,,	,,	१२५–४१
५३. कर्मयुद्ध की विनती	,,	,,	१४२–४३
५४. पद—अरज करूं छूं वीतराग	,,	,,	१४६–४७
५५. स्फुट पाठ	,,	,,	१४८–५३

५४६१. गुटका सं० ११० । पत्र सं० १४३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

१. नित्यपूजा	×	संस्कृत	१–२६
२. मोक्षशास्त्र	उमास्वामि	,,	२६–४६
३. भक्तामरस्तोत्र	आ० मानतुंग	,,	५०–५८
४. पंचमंगल	रूपचन्द	,,	५८–६८

५. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	६८–७५
६. पूजासंग्रह	×	"	७५–१०२
७. विनतीसंग्रह	देवाब्रह्म	"	१०२–१४३

५४६२. गुटका सं० १११ । पत्र सं० २८ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१–६
२. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११
३. चरचा	×	प्राकृतहिन्दी	११–२६

विशेष—"पुस्तक भक्तामरजी की पं० लिखमीचन्द रैनवाल हाला की छै । मिती चैत सुदी ६ संवत् १६५४ का में मिन्नी मार्फत राव श्री राठोडजी का सूं पंचासू ।" यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है ।

५४६३. गुटका सं० ११२ । पत्र सं० १५ । आ० ६×६ इंच । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५४६४. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १६–२२ । आ० ६¾×५ इंच । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र सं० १८–२० ।

डोकरी ने राजा भोज कह्यो डोकरी हे राम राम । बीरा राम राम । डोकरी यो मारग कहां जाय छै । बीरा ईं मारग परथी आई अर परथी गई ॥ १ ॥ डोकरी मेहे बटाउ हे बटाउ । ना बीरा थे बटाऊ नाही । बटाऊ तो संसार मांही दोय और ही छै ॥ एक तो चांद अर एक सूरज ॥ २ ॥ डोकरी मेहे राजा हे राजा ॥ ना बीरा थे तो राजा नाही । राजा तो संसार में दोय और ही । एक तो अन्न अर एक पाणी ॥ ३ ॥ डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना बीरा थे चोर ना । चोर तो संसार में दाय और ही छै । एक नेत्र चोर और एक मन चोर छै ॥ ४ ॥ डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा । ना बीरा थे तो हलवा नाहीं ॥ हलवा तो संसार में दोय और ही छै । कोई पराये घर बसत मांगिबा जाइ उका घर में छै पणि नट जाय सो हलवो ॥ ५ ॥ डोकरी तू म्हा के माता हे माता । ना बीरा माता तो दोय और ही छै । एक तो उदर मांही सूं काढे सो माता । दूसरी धाय माता ॥ ६ ॥ डोकरी मेहे तें हारया हे हरया । ना बीरा थे क्या ने हारयो । हारयो तो संसार में तीन और ही छै । एक तो मारग चालतो हारयो । दूसरो बेटी आई सो हारयो तीसरी जैकी जोडी अल्पी होइ सो हारयो ॥ ७ ॥ डोकरी मेहे बापडा हे बापडा । ना बीरा थे बापडा नाही । बापडा तो च्यारा और छै । एक तो गऊ की जायो बापडो । दूसरो सूपाली को जायो बापडो । तीसरो जे की माता जनमता ही मर गई सो बापडो । चौथा बामण बाण्या की बेटी विधवा हो जाय सो बापडी ॥ ८ ॥ डोकरी थारा सिभा हे

मिला। बीरा मिलवा बाला तो संसार में च्यारि और ही छै। जैको बाप विरधा होसी सो बां मिलसी। अर जै को बेटो परदेश सूं आयो होसी सो बां मिलसी। दूसरो सांवरण भादवा को मेह बरस सी सो समन्दर सूं। तीसरो भाणेज की भात पैराबा जासी सो वो मिलसी। चौथा स्त्री पुरुष मिलसी। डोकरी जाण्या हे जाण्या। भरिया कहे न उजलेउ झलसी आधा। पुरुषा आई पारवा बोलार लाधा॥ १०॥

॥ इति डोकरी राजा भोज की वार्ता सम्पूर्ण॥

५४६५. गुटका सं० ११४। पत्र सं० ६-७२। आ० ६१/२×५१/२ इञ्च।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है।

५४६६. गुटका सं० ११५। पत्र सं० १६८। आ० ६×५ इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। दशा-सामान्य

विशेष—पूजा संग्रह, जिनयज्ञकल्प (आशाधर) एवं स्वयंभूस्तोत्र का संग्रह है।

५४६७. गुटका सं० ११६। पत्र सं० १६६। आ० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं।

४. भुवनकीर्ति गीत	बूचराज	हिन्दी	१२-१४

आजि वधाउ सुगाहु सहेली यहु मनु विघसइ जि महलीए।
गोहि अनन्त नित कोटिहि सारिहि सुहु गुरु सुहु गुरु वेदहि सुकरि रलीए॥
करि रली वन्दह सखी सुहु गुरु लवधि गोइम सम सरे।
जसु देखि वरसगु टलहि भवदुख होइ नित नवनिधि घरे॥
कपूर चन्दन अगर केसरि आणि भावन भाव ए।
श्रीभुवनकीर्ति चरण प्रणमोहू सखी आज बधाव हो॥ १॥
तेरह विधि चारित प्रतिपालइ दिनकर दिनकर जिम तपि सोहइ ए।
सर्वाङ्गि भासिउ धर्म सुणावै वाणी हो वाणी भवु मन मोहइ ए।
मोहन्ति वाणी सदा भवि सुनु ग्रन्थ आगम भासए।
षट् द्रव्य अरु पञ्चास्तिकाया सततत्व पयासए॥
बावीस परिग्रह सहइ अंगिहं गरुव मति नित गुणनिधो।
श्रीभुवनकीर्ति चरण पणमि सु चारितु तसु तेरह विधे॥ २॥
मूल गुणाहं अठाइसइ धारइए मोहए मोहु महाभटु ताडियो ए।
रतिपति तिसु दंति हु महिइउ पुनु कोवकुए कोवकुकरि तिहि टालीयो ए॥

रलियो जिमि कं बैं। करिहि वगउ करि इम बोलइ ।
गुरु सियाल मेरह जिउम जंगमु पवरा मइ किम डोलए ।
ओ पंच विषय विरतु चितिहि कियउ जिउ कम्मह तणु ।
श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणमइ धरइ अठाइस मूलगुरा ।। ३ ।।
दस लाक्षरा धर्म निवु धारि कु संजमु संजमु भसगु वमिए ।
सत्रु मित्रु ओ सम किरि देखई गुरनिरगंथु महा मुनीए ।।
निरगंथु गुद मद प्रट्ठ परिहरि सवय जिव प्रतिपालए ।
मिथ्यात तम निर्द्धरा दिन म जैणधर्म उजालए ।।
तेरसव्रतहं भसल चित्रहं कियउ सकयो जम ।
श्री भुवनकीर्ति चरण पणमउ धरइ दशलक्षिण धर्म्मु ।। ४ ।।
सुर तरु संघ कलिउ चितामरिण दुहिए दुहि ।
महो धरि धरि ए पंच सबद वाजहि उच्छरंगि हिए ।।
गावहि ए कामरिण मधुर सरे प्रति मधुर सरि गावति कामरिण ।
जिराहं मन्दिर प्रवही प्रष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसमसाल चढ़ावहि ।।
बुधराज भरिण श्री रत्नकीर्ति पाटिउ दयोसह गुरो ।
श्री भुवनकीर्ति प्रासीरवादहि संघु कलियो सुरतरो ।।

।। इति आचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ।।

५. नाडी परीक्षा	×	संस्कृत	१५-१८
६. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१९-१०६
७. पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	"	१०७

सुन्दर सोहरा गुरा निलउ, जग जीवरा जिरा चन्दोजी ।
मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनंदो जी ।। १ ।।
जेसलमेरु जुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।
पास जिरोसुर जग धराी कलियो सुरतरु कन्दोजी ।। २ ।। जे० ।।
मरिए माणिक मोती जवयउ कचराकम रसालो जी ।
सिखर सेहर सोहतउ पुनिम ससिहर प्रालोजी ।। ३ ।। जै० ।।

निरमल तिलक सोहमणउ जिन मुख कमल रिसालोजी ।
कानों कुण्डल दीपतां झिक मिग झाक झमालोजी ॥ ४ ॥ जे० ॥
कंठि मनोहर कंठिलउ उरि वारि नव सिर हारोजी ।
बहिर बबहि भला करता झब झब कारोजी ॥ ५ ॥ जे० ॥
मरकत मणि तनु दीपती मोहन सूरति सारोजी ।
सुख सोहग संपद मिलइ जिणवर नाम अपारोजी ॥ ६ ॥ जे० ॥
इन परि पास जिणेसरु भेटयउ कुल सिणगारोजी ।
जिणचन्द्र सूरि पसाउ लइ समयराज सुखकारोजी ॥ ७ ॥ जे० ॥

॥ इति श्री पार्श्वनाथस्तवन समाप्तोऽयं ॥

५४६८. गुटका सं० ११७ । पत्र सं० ३५० । ग्रा० ६३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष— विविध पाठों का संग्रह है । चर्चाएं पूजाएं एवं प्रतिष्ठादि विषयो से संबंधित पाठ है ।

५४६६. गुटका सं० ११८ । पत्र सं० १२६ । ग्रा० ६×४ इञ्च ।

१. शिक्षा चतुष्क	नवलराम	हिन्दी	५
२. श्री जिनवर पद वन्दि कै जी	बखतराम	”	५–७
३. अरहंत चरनचित लाऊं	रामकिशन	”	६–१०
४ चेतन हो तेरे परम निधान	जिनदास	”	११–१२
५. चैत्यवंदना	सकलचन्द्र	संस्कृत	१२-१३
६. कल्याणाष्टक	पद्मनंदि	”	२१
७. पद—आजि दिवसि धनि लेखे लेखवा	रामचन्द्र	हिन्दी	३७
८. पद–प्रातभयो सुमरि देव	जगराम	”	५३
९. पद–सुफलघड़ीजी प्रभु	खुशालचन्द्र	”	७५
१०. निर्वाणभूमि मंगल	विश्वभूषण	”	८६–९०
		संवत् १७२१ में भुसावर मे पं० केसरीसिंह ने लिखा ।	
११. पञ्चमगतिवेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	११५–१८
		रचना सं० १६८३ प्रति लिपि सं० १८३०	

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २११ । आ० ६३×६ इञ्च । ले० काल सं० १८३० असाढ़ बुदी ८ । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—पुराने घाट जयपुर में ऋषभ देव चैत्यालय में रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । इसमें कवि बालक कृत सीता चरित्र है जिसमें २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नहीं हैं ।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र सं० १११ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. रविव्रतकथा जयकीर्ति हिन्दी २–३ ले० काल सं० १७६३ पौष सु० ८

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति चित ध्याऊं ।
सद्गुरु चरण कमल नमि रविव्रत गुण गाऊं ॥ १ ॥
वाणारसी पुरी सोभती मतिसागर तह साह ।
सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥
मुनिवादि सेठे लीधो रविव्रत सार ।
सांभलि कहूं बहुला कीया व्रत नंदो अपार ॥ ३ ॥
नेह थी धन मन अणुगयो दुरजीयो थयो सेठ ।
सात पुत्र चाल्या परदेश अजोध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविनों व्रत कर सी ।
त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमणी वरसी ॥ २० ॥
नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरि रामरत्न सुभूषन ।
जयकीर्ति सूरी प्राय नमी कहासांभ मति सूचण ॥ २१ ॥

इति रविव्रत कथा संपूर्ण । इन्दोर मध्ये लिपि कृतं ।
ले० काल सं० १७६३ पौष सुदी ८ पं० अवाराम ने लिपी की थी ।

२. धर्मसार चौपई पं० शिरोमणि हिन्दी

र० काल १७१२ । ले० काल १७२४ जयसिंहका पुरी में जीवनराम ने प्रतिलिपि की । १–७३

३. विषापहार स्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	८५–८८
४. प्रसन्न अष्टक	×	संस्कृत	८६–६०
	दयाराम ने सूरत मे प्रतिलिपि की थी । स० १७६४ । पूजा है ।		
५. त्रिषष्ठिशलाकाछन्द	श्रीपाल	संस्कृत	६१–६३
६ पद—थेई थेई थेई नृत्यति भ्रमरी	कुमुदचन्द्र	हिन्दी	६७
७ पद—प्रात समै सुमरो जिनदेव	श्रीपाल	”	६७
८ पार्श्वविनती	ब्रह्मनाथू	”	६८–६६
६ कवित्त	ब्रह्मगुलाल	”	१२५

गिरनार की यात्रा के समय सूरत म लिपि किया गया ।

५५०२ गुटका स० १२१ । पत्र स० ३३ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी ।

विशेष–विभिन्न कवियों के पदा का सग्रह है ।

५५०३ गुटका स० १२२ । पत्र स० १३० । ग्रा० ५½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत ।

विशष–तीन चोबीसी नाम दर्शनस्तोत्र (सस्कृत) कल्याणमदिरस्तोत्र भाषा (बनारसीदास) भक्तामर स्तोत्र (मानतु गाचार्य) लक्ष्मीस्तोत्र (संस्कृत) निर्वाणकाण्ड पचमगल देवपूजा सिद्धपूजा सोलहकारण पूजा पच्चीसो (नवल) पार्श्वनाथस्तोत्र सूरत का बारहखडी बाईस परीषह जैनशतक (भूधरदास) सामायिक टीका (हिन्दी) आदि पाठा का सग्रह है ।

५५०४ गुटका स० १२३ । पत्र स० २६ । ग्रा० ६×६ इञ्च भाषा संस्कृत हिन्दी । दशा–जीर्णशीर्ण ।

१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित	×	संस्कृत	२–१८
२ पल्यविधि	×	”	१८–२२
३ जैनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२२–२६

५५०५ गुटका स० १२४ । पत्र स० ६६ । ग्रा० ७×६ इञ्च ।

विशेष–पूजाओ एव स्तोत्रो का सग्रह है ।

५५०६ गुटका स० १२५ । पत्र स० ५६ । ग्रा० १२×४ इञ्च । पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा–सामान्य ।

१ कर्म प्रकृति चर्चा	×	हिन्दी
२ चोबीसठाणा चर्चा	×	”

३. चतुर्दशमार्गणा चर्चा	×	हिन्दी
४. द्वीप समुद्रों के नाम	×	"
५. देशो (भारत) के नाम	×	हिन्दी

१. अंगदेश । २. बंगदेश । ३. कलिंगदेश । ४. तिलंगदेश । ५. राष्ट्रदेश । ६. लाटदेश । ७. कर्णाटदेश । ८. मेदपाटदेश । ९. बैराटदेश । १०. गौडदेश । ११ चौडदेश । १२. द्राविडदेश । १३. महाराष्ट्रदेश । १४. सौराष्ट्रदेश । १५ काममोरदेश । १६. कीरदेश । १७. महाकीरदेश । १८. मगधदेश । १९. सूरसेनदेश । २०. कावेरदेश । २१.*कम्बोजदेश । २२ कमलदेश । २३. उत्करदेश । २४. करहाटदेश । २५. कुरुदेश । २६. क्षत्राणदेश । २७. कच्छदेश । २८ कौसिकदेश । २९. सकदेश । ३०. भयानकदेश । ३१ कौसिकदेश । ३२.""" "") ३३. काश्तदेश । ३४. कापूनदेश । ३५ कच्छदेश । ३६. महाकच्छदेश । ३७. मोटदेश । ३८. महामोटदेश । ३९. कीटिकदेश । ४०. केकिदेश । ४१ कोल्लगिरिदेश । ४२ कामकरदेश । ४३ कुण्कुणदेश । ४४. कुंतलदेश । ४५. कलकूटदेश । ४६. करकटदेश । ४७. केरलदेश । ४८. खसदेश । ४९ सर्प्परदेश । ५०. लेटदेश । ५१. बिहारदेश । ५२. बेदिदेश । ५३ जालंधरदेश । ५४. टंकण टक्क । ५५. मोडियाणदेश । ५६. महालदेश । ५७. तुरुष्कदेश । ५८ नायकदेश । ५९. कौमलदेश । ६० दशार्णदेश । ६१. दण्डकदेश । ६२. देशसभदेश । ६३. नेपालदेश । ६४. नर्तकदेश । ६५. पञ्चालदेश । ६६. पल्लवदेश । ६७. पु ड्रदेश । ६८. पाण्ड्यदेश । ६९ प्रत्यग्रदेश । ७० अंबुददेश । ७१. बसुदेश । ७२. गंभीरदेश । ७३. महिष्मकदेश । ७४. महोदयदेश । ७५. मुरण्डदेश । ७६. मुरलदेश । ७७. मरुस्थलदेश । ७८. मुद्गरदेश । ७९. मंगलदेश । ८०. मल्लवर्तदेश । ८१. यवनदेश । ८२. आरामदेश । ८३. राढकदेश । ८४. ब्रह्मोत्तरदेश । ८५. ब्रह्मावर्तदेश । ८६. ब्रह्मणदेश । ८७ बाह्लकदेश । विदेहदेश । ८९. वनवासदेश । ९०. वनायुजदेश । ९१. वाल्हीकदेश । ९२. बल्लवदेश । ९३ अवन्तिदेश । ९४. वन्हिदेश । ९५. सिंहलदेश । ९६. सुह्मदेश । ९७. सूपरदेश । ९८. सुहडदेश । ९९. अश्मकदेश । १००. हूणदेश । १०१. हुर्म्मकदेश । १०२. हुर्म्मजदेश । १०३. हंसदेश । १०४. हूहकदेश । १०५. हेरकदेश । १०६. भीलदेश । १०७. महाभीलदेश । १०८. चट्टीकदेश । १०९. भोट्यदेश । ११० गांधारदेश । १११. गुजरातदेश । ११२ पारसकुलदेश । ११३. ममानकदेश । ११४. कोसलदेश । ११५ शाकंभरिदेश । ११६. कनउजदेश । ११७. मादनदेश । ११८. उषीविसदेश । ११९. मीनाबरदेश । १२०. गंगापारदेश । १२१. संभाणदेश । १२२. कनकगिरिदेश । १२३. नवसारिदेश । १२४. वांजिरिदेश ।

६. क्रियावादियों के ३६३ भेद	×	हिन्दी

---

* विशेष— यह भाग गुटके में काफी फटा हुआ है ।

७ स्फुट कवित्त एवं पद्य संग्रह	×	हिन्दी संस्कृत	
८ द्वादशानुप्रेक्षा	×	संस्कृत	
९ सूक्तावलि	×	,, ले० काल १८३६ श्रावण सुदी १०	
१० स्फुट पद्य एवं मंत्र आदि	×	हिन्दी	

५५०७ गुटका सं० १२६ पत्र सं० ४५। आ० १० ४½ इंच भाषा हिन्दी संस्कृत। विषय-चर्चा

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है

५५०८ गुटका सं० १२७। पत्र सं ३३ आ० ७×५ इंच

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५५०९ गुटका सं० १२७ क। पत्र सं० ५५। आ० ७½×६ इंच।

१ शीघ्रबोध	×	संस्कृत	१–१६
२ लघुचाणक्य	×	,,	१७–३९
		विशेष—वेष्णवधम। ले० काल सं० १८०७	
३ ज्योतिषपटलमाला	श्रीपति	संस्कृत	४०–५१
४ सारणी	×	हिन्दी	५१–५५
		ग्रहों को देखकर वर्षा होने का योग	

५५१० गुटका सं० १२८। पत्र सं० ३ ६० आ० ७½× इंच। भाषा संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५११ गुटका सं० १२९। पत्र सं० ८–२४। आ० ७×५ इंच। भाषा—संस्कृत।

विशेष—क्षेत्रपालस्तोत्र लक्ष्मीस्तोत्र (सं०) एवं पद्ममङ्गलपाठ है।

५५१२. गुटका सं० १३०। पत्र सं० ६८। आ० ६×४ इंच। ले० काल १७५२ आषाढ़ बुदी १०।

१ चतुर्विंशतीर्थंकरपूजा	×	संस्कृत	१–५४
२ चौबीसदण्डक	दौलतराम	हिन्दी	५५–६७
३ पीठप्रक्षालन	×	संस्कृत	६८

५५१३ गुटका सं० १३१। पत्र सं० १४। आ० ७×५ इंच। भाषा संस्कृत हिन्दी।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह।

५५१४ गुटका सं० १३२। पत्र सं० १४–४१। आ० ६×४ इंच। भाषा—हिन्दी।

१. पञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द	हिन्दी	ले० काल १८२६	१५–२२
२. स्तुति	×	"		२३–२३
३. दोहाशतक	रूपचन्द	"		२५–३८
४. स्फुटदोहे	×	"		३४–४१

५५१५. गुटका सं० १३३। पत्र सं० १२१। आ० ५३×४ इंच। भाषा–संस्कृत हिन्दी।

विशेष—छहढाला (द्यानतराय), पंचमङ्गल (रूपचन्द), पूजायें एवं तत्वार्थसूत्र, भक्तामरस्तोत्र आदि का संग्रह है।

५५१६. गुटका सं० १३४। पत्र सं० ४१। आ० ५३×४ इंच। भाषा–संस्कृत।

विशेष—शांतिनाथस्तोत्र, स्कन्धपुराण, भगवद्गीता के कुछ स्थल। ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ११।

५५१७. गुटका सं० १३५। पत्र सं० १३–११४। आ० ३३×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—पंचमङ्गल, तत्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५१८. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ४–१०८। आ० ८३×२ इञ्च। भाषा–संस्कृत।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, अष्टक आदि हैं।

५५१९. गुटका सं० १३७। पत्र सं० १६। आ० ६×४३। भाषा–हिन्दी। अपूर्ण।

१. मोरपिच्छधारी (कृष्ण) के कवित्त	धर्मदास, कवीत, विविध देव	हिन्दी	३ कवित्त हैं।
२. वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	"	

वाजिद के कवित्तों के ६ अंग हैं। जिनमें ६० पद्य हैं। इनमें से विरह के अंग के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं।

वाजीद विपति बेहद कहो कहां मुख सौं। तर कमाल की प्रीत करी पीव मुख सौं।
पहले अपनी ओर तीर को ताल ही, परि हां पीछे डारत दूरि जगत सब जानई ॥२॥
बिन बालम बेहाल रही क्यों जोव रे। बरत हृदय सी बाई बिना तोहि पीवरे।
रुधिर मांस के लाल हैं क बाल है। परि हां अब जीव जाता पीव और क्यों देखना ॥२५॥
कहिये सुनिये राम और न चित्त रे। हरि ठाकुर को ध्यान सु धरिये नित्त रे।
जीव बिलम्ब्यां पीव दुहाई राम की। परि हां सुख संपति वाजिद कहो क्यों काम की २६॥

५५२०. गुटका सं० १३८। पत्र सं० ६। आ० ७×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। पूर्ण एवं शुद्ध। दशा–सामान्य।

विशेष—सुगन्धदशमी व्रतकथा भाषा।

५५२१. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ८ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल सं० १९३५ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण एवं शुद्ध दशा-सामान्य ।

विशेष—सोनागिरि पूजा है ।

५५२२. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० ३७ । आ० ३×३ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५५२३ गुटका सं० १४२ । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१८ असाढ सुदी १४ ।

विशेष—गुटके में निम्न २ पाठ उल्लेखनीय हैं ।

१. कहवाला	धामतराय	हिन्दी	१-६
२. कहवाला	किशन	"	१०-१२

५५२४. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १७४ । आ० ५½×४ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८९७ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२५. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ९१ । आ० ८×९ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२६. गुटका सं० १४५ । पत्र स० ११ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पल्लीशास्त्र । ले० काल १८७४ ज्येष्ठ सुदी १४ ।

प्रारम्भ के पद्य—

नमस्कृत्यमहादेवं गुरु शास्त्रविशारदं ।
भविष्यदर्थबोधाय वक्षते पचपक्षिणः ॥१॥
अनेन शास्त्रसारेण लोके कालत्रयं प्रति ।
फलाफल नियुज्यन्ते सर्वकार्येषु निश्चितं ॥२॥

५५२७. गुटका सं० १४६ । पत्र सं० २५ । आ० ७×५ इंच । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य

विशेष—आदिनाथ पूजा (सेवकराम) भजन एवं नेमिनाथ की भावना (सेवकराम) का संग्रह है । पट्टी पहाड़े भी लिखे गये हैं । अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५२८. गुटका सं० १४७ । पत्र सं० ३-५७ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—शीघ्रबोध है ।

५५२९. गुटका सं० १४८ । पत्र सं० ५५ । आ० ७×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र संग्रह है

५५३०. गुटका सं० १४९ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. बिहारीसतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	१-३५
२. वृन्द सतसई	वृन्दकवि	"	३६-८०

७०८ पद्य हैं । ले० काल सं० १८४६ चैत सुदी १० ।

३. कवित्त	देवीदास	हिन्दी	३६-८०

५५३१. गुटका सं० १५० । पत्र सं० १३५ । आ० ६½×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८४५ । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—लिपि विकृत है । कक्का बत्तीसी, राम सीतरण का दूहा, फूल भीतणी का दूहा, आदि पाठ है। अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५३२. गुटका सं० १५१ पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—पदों तथा विनतियों का संग्रह है तथा जैन पचीसी (नवलराम) बारह भावना (दौलतराम) निर्वाणकाण्ड है ।

५५३३. गुटका सं० १५२ । पत्र सं० १०७ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थों में से छोटे २ पाठों का संग्रह है । पत्र १०७ पर भट्टारक पट्टावलि उल्लेखनीय है ।

५५३४. गुटका सं० १५३ । पत्र सं० ६० । आ० ८×५½ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, पूजाएं एवं पञ्चमंगल पाठ है ।

५५३५. गुटका सं० १५४ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इंच । ले० काल १८७६ ।

१. भक्तामर	×	संस्कृत	१-८
२. मंत्र आदि संग्रह	×	[illegible]	[illegible]

३. चतुर्दशी की गीता	×	"	२३–२४
४. भागवत महिमा	×	हिन्दी	२५–५१
		तीर्थों के नाम एवं देवाधिदेव स्तोत्र है ।	
५. महाभारत विष्णु सहस्रनाम	×	संस्कृत	५२–८१

५५३६. गुटका सं० १५५ । पत्र सं० १८ । ६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

१. जीनेन्द्र पूजा	×	संस्कृत	१–३
२. पार्श्वनाथ जयमाल	×	"	४–१३
३. सिद्धपूजा	×	"	१ २
४. पार्श्वनाथाष्टक	×	"	३–६
५. षोडशकारणपूजा	आचार्य केशव	"	१–१४
६. सोलहकारण जयमाल	×	अपभ्रंश	३६–५०
७ दशलक्षण जयमाल	×	"	५१–६३
८. द्वादशव्रतपूजा जयमाल	×	संस्कृत	६४–८०
९. रामोकार पैंतीसी	×	"	८१–८३

५५३७. गुटका सं० १५६ । पत्र सं० १७ । आ० ५×३ इंच । ले० काल १७७६ ज्येष्ठ सुदी २ । भाषा-हिन्दी । पद्य सं० ७६ ।

विशेष—यादव वंशावलि वर्णन है ।

५५३८. गुटका सं० १५७ । पत्र सं० ३२ । आ० ६×५ इंच । ले० काल १८३२ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, अक्षर बावनी, (द्यानतराम) एवं पंचमंगल के पाठ हैं । पं० सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में सं० १८३२ में प्रति लिपि की ।

५५३९. गुटका सं० १५७ (क) पत्र सं० १४१ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५५४०. गुटका सं० १५८ । पत्र सं० १८ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८१० । दशा-जीर्ण ।

विशेष—सामान्य चर्चाओं पर पाठ है ।

५५४१. गुटका सं० १५६ । पत्र सं० ३५० । आ० ७×४ । ले० काल-× । दशा-जीर्ण । विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५५४२. गुटका सं० १६० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५५४३ गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २६ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७३७ पूर्ण । सामान्य पाठ हैं ।

५५४४. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ११ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । पूजाओं का संग्रह है ।

५५४५. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० २१ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष-भक्तामर स्तोत्र एवं दर्शन पाठ आदि हैं ।

५५४६. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८३४ पूर्ण ।

विशेष-पद्मपुराण मे से गीता महात्म्य लिया हुवा है । प्रारम्भ के ७ पत्रो में संस्कृत मे भगवत गीता माला दी हुई है ।

५५४७. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ३० । आ० ६३/४×५१/२ इञ्च । विषय-आयुर्वेद । अपूर्ण । दशा जीर्ण ।

विशेष-आयुर्वेद के नुसखे हैं ।

५५४८ गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ६८ । आ० ४×२१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-४०
२. कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	"	४१-६८

५५४९. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४८-२४७ । आ० ३×२ इञ्च । अपूर्ण ।

५५५०. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इञ्च । पूर्ण ।

५५५१. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २२ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८० श्रावण सुदी २ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. धर्मरासो	×	हिन्दी	१-१८

अथ धर्म्म रासो लिख्यते—

पहली वंदो जिणवर राइ, तिहि वंदा दुख दालिद्र जाइ ।
रोग कलेस न संचरै, पाप करम सब जाइ पुलाई ।।
तिहवे मुकति पद संचरै, ताको जिम धर्म्म होई सहाई ।। १ ।।

धर्म्म दुहेलो जैनको, छह दरसन जे ही परधान ।
श्रावग जन सुणिजे दे कान, भव्यजीव चित संभलो ॥
पढत चित्त सुख होई निधान, धर्म्म दुहेलो जैन को ॥ ३ ॥

दूजा बदों सारद माई, भूलो म्राखर म्राणो ठाइ ॥
कुमति कलेस न उपजे, महा सुमति बंदो म्रधिकाइ ॥
जिणधर्म्म रासो वर्णउ, तिहि पढत मन होइ उछाह ॥
धर्म दुहेलो जैन को ॥ ४ ॥

अन्तिम— ऊभौ जीमण जीवै सही, म्रागम बात जिरोगुर कही ।
कर पात्रा म्राहार लै, ये म्रट्ठाईस मूलगुण जाणि ॥
धन जती जे पालही, ते म्रनुक्रम पहुचे निरवाणि ।
धर्म्म दुहेलौ जैन का ॥१५२॥

मूढ देव गुरुशास्त्र बखाणि, षट् म्रनायतन जाणि ।
म्राठ दोष शङ्का म्रादि दै, म्राठ मद सौ तजे पचीस ॥
ते निश्चै सम्यक्त फलै, ऐसी विधि भासै जगदीश ।
धर्म्म दुहेलौ जैन का ॥१५३॥

इति श्री धर्म्मरासो समाप्ता ॥१॥ स० १७६० श्रावण सुदा २ सागानायर मध्ये ।

५५५२. गुटका सं० १७० । पत्र सं० ५ । म्रा० ६×६ इ च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा ।

विशेष—सिद्धपूजा है ।

५५५३. गुटका सं० १७१ । पत्र स० ६ । म्रा० ६×७ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—सम्मेदशिखर पूजा है ।

५५५४ गुटका सं० १७२ । पत्र स० १५-६० । म्रा० ३×३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७१८ । सावण सुदी १० ।

विशेष—पूजा, पद एवं विनतियो का सग्रह है ।

५५५५. गुटका सं० १७३ । पत्र स० १८५ । म्रा० ६×४ इ च । म्रपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष —म्रायुर्वेद के नुसखे, मन्त्र, तन्त्रादि सामग्री है । कोई उल्लेखनीय रचना नही है ।

५५५६ गुटका सं० १७८। पत्र सं० ४-६३। आ० ६×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार रस। ले० काल स० १७४७ जेठ बुदी १।

विशेष—इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है।

५५५७. गुटका सं० १७५। पत्र सं० २४। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।

विशेष—पूजा संग्रह है।

५५५८ गुटका सं० १७६। पत्र सं० ८। आ० ५×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल स० १८०२। पूर्ण।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालामालिनी) है।

५५५६ गुटका स० १७७। पत्र सं० २१। आ० ५'×३' इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—पद एवं विनती संग्रह है।

५५६०. गुटका सं० १७८। पत्र स० १७। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—प्रारम्भ मे बादशाह जहांगीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है। स० १६८४ मंगसिर सुदी १२। तारानम्बोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके आदेश के अनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी।

५५६१. गुटका स० १७६। पत्र सं० १४। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद संग्रह। अपूर्ण।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है।

५५६२ गुटका स० १८०। पत्र स० २१। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा, (ब्रह्मरायमल्ल), आदित्यवारकथा के पाठ का मुख्यत. संग्रह है।

५५६३ गुटका सं० १८१। पत्र स० २१-४६।

१. चन्द्रकुंवरदास की वार्ता	×	हिन्दी	२१-२६
		पद्य सं० ११६। ले० काल सं० १७१६	
२ सुगुरुसीख	×	हिन्दी	२८-३०
३. कक्काबत्तीसी	ब्रह्मगुलाल	” ले० काल सं० १७६५	३०-३४
४. अन्यपाठ	×	”	३४-४६

विशेष—अधिकांश पत्र खाली हैं।

५५६४. गुटका सं० १८२। पत्र सं० १६। आ० ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। अपूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा है।

५५६५. गुटका सं० १८३। पत्र सं० २० । आ० १०×६ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। दशा-जीर्ण शीर्ण।

विशेष—प्रथम ५ पत्रों पर पृच्छायें हैं। तथा पत्र १०-२० तक शकुनशास्त्र है। हिन्दी पद्य में है।

५५६६. गुटका सं० १८४। पत्र सं० २४। आ० ६३/४×५ इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—वृन्द विनोद सतसई के प्रथम पद्य से २५० पद्य तक है।

५५६७. गुटका सं० १८५। पत्र सं० ७-८८। आ० १०×५१/२ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८२३ वैशाख सुदी ८।

विशेष—बीकानेर में प्रतिलिपि की गई थी।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी		७-७६
२. अनाथीसाध चौढालिया	विमल विनयगणि	,,	७३ पद्य हैं	७६-७८
३. अध्ययन गीत	×	हिन्दी		७८-८३
		दस अध्याय में अलग अलग गीत हैं। अन्त में चूलिका गीत है।		
४. स्फुट पद	×	हिन्दी		८४-८८

५५६८. गुटका सं० १८६। पत्र सं० ५२। आ० ९×५ इंच भाषा-हिन्दी। विषय पद संग्रह।

विशेष—१४२ पदों का संग्रह है मुख्यतः खातनराम के पद हैं।

५५६९. गुटका सं० १८७। पत्र सं० ७७। पूर्ण।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. चौरासी गोत	×	हिन्दी	१-२
२. कछवाहा वंश के राजाओं के नाम	×	,,	२-४
३. देहली राजाओं की वंशावली	×	,,	५-१६
४. देहली के बादशाहों के परगनों के नाम	×	,,	१७-१८
५. सीख सत्तरी	×	,,	१९-२०
६. ३६ कारखानों के नाम	×	,,	२१
७. चौबीस ठाणा चर्चा	×	,,	२२-४५

५५७०. गुटका सं० १८८। पत्र सं० ११-७३। आ० ६×४१/२ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके में भक्तामरस्तोत्र कल्याणमन्दिरस्तोत्र हैं।

१. पार्श्वनाथस्तवन एवं अन्य स्तवन	मतिसागर के शिष्य जगरूप	हिन्दी	र० सं० १८००

आगे पत्र जुड़े हुए हैं एवं विकृत लिपि में लिखे हुये हैं।

५५७१. गुटका सं० १८६। पत्र सं० ६–७८। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–इतिहास।

विशेष—अकबर बादशाह एवं बीरबल आदि की वार्ताएं हैं। बीच बीच के एवं आदि अन्त भाग नहीं हैं।

५५७२. गुटका सं० १९०। पत्र सं० १७। आ० ४×३ इञ्च। भाषा–हिन्दी।

विशेष—रूपचन्द कृत पञ्चमंगल पाठ है।

५५७३. गुटका सं० १९१। पत्र सं० २८। आ० ८½×६ इंच। भाषा–हिन्दी।

विशेष—सुन्दरदास कृत सवैये एवं अन्य पद्य है। अपूर्ण है।

५५७४. गुटका सं० १९२। पत्र सं० ४५। आ० ८½×६ इंच। भाषा–प्राकृत संस्कृत। ले० काल १८००।

१. कवित्त	×	हिन्दी	१–४
२. भयहरस्तोत्र	×	प्राकृत	५–६
		हिन्दी गद्य टीका सहित है।	
३. शांतिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	"	७–९
४. नमिऊणस्तोत्र	×	"	९–१३
५. अजितशान्तिस्तवन	नन्दिषेण	"	१३–२२
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	२३–३०
७. कल्याणमंदिरस्तोत्र	×	संस्कृत ३१–३९ हिन्दीगद्य टीकासहित है।	
८. शांतिपाठ	×	प्राकृत ४०–४५	"

५५७५. गुटका सं० १९३। पत्र सं० १७–३२। आ० ८½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। ले० काल १८६७।

विशेष–तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र है।

५५७६. गुटका सं० १९४। पत्र सं० १३। आ० ६×६ इंच। भाषा- हिन्दी। विषय–कामशास्त्र। अपूर्ण। दशा–सामान्य। कोकसार है।

५५७७. गुटका सं० १९५। पत्र सं० ७। आ० ६×६ इंच। भाषा–संस्कृत।

विशेष–भट्टारक महीचन्द्रकृत त्रिलोकस्तोत्र है। ४६ पद्य हैं।

५५७८. गुटका सं० १९६ । पत्र सं० २२ आ० ९×६ इंच । भाषा- हिन्दी ।

विशेष – नाटकसमयसार है ।

५५७९. गुटका सं० १९७ । पत्र सं० ३० । आ० ८×६ इंच । भाषा–हिन्दी । ले० काल १८६४ श्रावण सुदी १४ । बुधजन के पदो का सग्रह है।

५५८०. गुटका सं० १९८ । पत्र सं० ३१ । आ० ८½×५½ इंच । अपूर्ण । पूजा पाठ सग्रह है ।

५५८१. गुटका सं० १९९ । पत्र सं० २–५६ । आ० ८×५ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी अपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

विशेष–पूजा पाठ संग्रह है ।

५५८२. गुटका सं० २०० । पत्र स० ३४ । आ० ६½×८ इंच । पूर्ण । दशा–सामान्य

१. जिनदत्त चौपई	रल्हकवि	प्राचीन हिन्दी	

रचना संवत् १३५४ भादवा सुदी ५ । ले० काल सवत् १७५२ । पालव निवासी महानन्द ने प्रतिलिपि की थी

२. आदीश्वर रेखता	सहस्रकीर्ति	प्राचीन हिन्दी	अपूर्ण

र० काल सं० १६६७ । रचना स्थान-सालकोट । ले० काल-स० १७४३ मगसिर सुदी ७ । महानद ने प्रतिलिपि की थी । १२ पद्य मे ४५ से आगे ६१ तक के पद्य हैं ।

३ पंचबधावो	×	राजस्थानी शेरगढ की	"
४ कवित्त	वृंदावनदास	हिन्दी	
५ पद–रेमन रेमन जिनवान कहु न विचार	लक्ष्मीसागर	"	रागमल्हार
६ तूही तू ही मेरे साहिब	"	"	रागकाफी
७. तूती तूही २ तूती बोल	"	"	×
८. कवित्त	ब्रह्म गुलाल एव वृन्दावन	"	पत्र १९

ले० काल स० १७५० फागण सुदी १४ । फकीरचन्द जैसवाल ने प्रतिलिपि की थी । कैलास का वासी गोत तेला ।

९ जेष्ठ पूर्णिमा कथा	×	हिन्दी	पूर्ण
१०. कवित्त	ब्रह्म गुलाल	"	
११. "	×	"	

१२. समुद्र विजय सुत सांवरे रंग भीने हो × „

ले० काल १७७२ मोतीहटका देहुरा दिल्ली में प्रतिलिपि की थी।

१३. पञ्चकल्याणकपूजा अष्टक × संस्कृत ले० काल सं० १७४९ ज्येष्ठ बु० १०।

१४. षट्रस कथा × संस्कृत ले० काल सं० १७५२।

५५८३. गुटका सं० २०१। पत्र सं० ३६। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। पूर्ण।

विशेष—आदित्यवारकथा (भाऊ) खुशालचंद कृत शनिश्चरदेव कथा एवं लालचंद कृत राजुल पच्चीसी के पाठ और हैं।

५५८४. गुटका सं० २०२। पत्र सं० २८। आ० ६×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १७५०।

विशेष पूजा पाठ संग्रह के अतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द कृत दशारास पाठ भी है।

५५८५. गुटका सं० २०३। पत्र सं० २०–१२, १८५ से २०३। आ० ६×५½ इंच। भाषा संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। दशा-सामान्य। मुख्यतः निम्न पाठ है।

१ जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	६०–२१
२. ऋषिमण्डलस्तवन	×	„	३०-३१
३. जलयात्राविधि	ब्रह्मजिनदास	„	११२–११६
४. गुरुओं की जयमाल	„	हिन्दी	११६–११७
५. णमोकार छन्द	ब्रह्मलाल सागर	„	११७–२२०

५५८६. गुटका सं० २०४। पत्र सं० १४०। आ० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७११ चैत्र सुदी ६। अपूर्ण। जीर्ण।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी। मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्वनाथस्तवन (ब्रह्मनाथू) का संग्रह है।

५५८७ गुटका सं० २०५। नित्य नियम पूजा संग्रह। पत्र सं० ६७। आ० ८½×५½। पूर्ण एवं शुद्ध। दशा-सामान्य।

५५८८. गुटका सं० २०६। पत्र सं० ४७। आ० ८½×७। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। दशा सामान्य। पत्र सं० २ नहीं है।

१. सुंदर शृंगार महाकविराज हिन्दी पत्र सं० ८११

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में आमेर निवासी मोतीराम कासा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२. स्यामबत्तीसी नन्ददास "

बीकानेर निवासी महात्मा फकीरा ने प्रतिलिपि की। मालीराम काला ने सं० १८३२ में प्रतिलिपि कराई थी।

अन्तिम भाग—

दोहा—कृष्ण स्याम चरासु मठ भवनहि सुत प्रवांन।

कहत स्याम कलमल कछू रहत न रंच समान ॥ ३६ ॥

छन्द मत्तगयन्द—

स्यो सनकादिक नारदस्मेद ब्रह्मा सेस महेस जु पार न पायो।

सो सुख ब्यास विरंचि बखानत निगम कुं सोधि अगम बतायो ॥

सैक भाग नहिं भाग जसोमति नन्दलला बृज आनि कहायो।

सो कवि या कवि कहाव्य करी जु कल्यान जु स्यांम भले गुनगायो ॥३७॥

इति श्री नन्ददास कृत स्याम बत्तीसी संपूर्ण ॥ लिखतं महात्मा फकीरा वासी बीकानेर का। लिखावतु मालीराम काला संवत् १८३२ मिती भादवा सुदी १४।

५५८६. गुटका सं० २०७। पत्र सं० २००। आ० ७×५ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १६८६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ, पद एवं भजनों का संग्रह है।

५५६०. गुटका सं० २०८। पत्र सं० १७। आ० ६३ ६३ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—चाणक्य नीतिसार तथा नाथूराम कृत जातकसार है।

५५६१. गुटका सं० २०६। पत्र सं० १६–२४। आ० ६×५ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—सूरदास, परमानन्द आदि कवियों के पदों का संग्रह है। विषय-कृष्ण भक्ति है।

५५६२. गुटका सं० २१०। पत्र सं० २८। आ० ६३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—चतुर्दश गुणस्थान चर्चा है।

५५६३. गुटका सं० २११। पत्र सं० ४६–८७। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८१०।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास का संग्रह है।

५५६४. गुटका सं० २१२। पत्र सं० ६–१३०। आ० ६×६ इंच।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं पद संग्रह है।

५५६५. गुटका सं० २१३ । पत्र सं० ११७ । आ० ६×५ इंच । भाषा–हिन्दी । ले० काल १८४७ ।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं है । सम्बोधपंचासिका (द्यानतराय) बुधजन की बारह भावना, वैराग्य पच्चीसी (भगवतीदास) आलोचनापाठ, पद्मावतीस्तोत्र (समयसुन्दर) राजुल पच्चीसी (विनोदीलाल) आदित्यवार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५५६६. गुटका सं० २१४ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×६ इंच ।

विशेष—सुन्दर शृंगार का संग्रह है ।

५५६७. गुटका सं० २१५ । पत्र सं० १३२ । आ० ६×६ इंच । भाषा–हिन्दी ।

१. कलियुग की विनती	देवाब्रह्म	हिन्दी		५–७
२ सीताजी की विनती	×	”		७–८
३. हंस की ढाल तथा विनती ढाल	×	”		६–१२
४. जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	”		१२
५. होली कथा	छीतरठोलिया	”	र० सं० १६६०	१३–१८
६. विनतियां, ज्ञानपच्चीसी, बारह भावना राजुल पच्चीसी आदि	×	”		१६–४०
७. पांच परवी कथा	ब्रह्मवेणु (भ जयकीर्ति के शिष्य)	”	७६ पद्य है	४१–४०
८ चतुर्विशति विनती	चन्द्रकवि	”		४५–६७
६. बधावा एवं विनती	×	”		६७–६६
१०. नव मंगल	विनोदीलाल	”		६६–७७
११. कक्का बतीसी	×	”		७७–८१
१२. बडा कक्का	गुलाबराय	”		८०–८१
१३. विनतियां	×	”		८१–१३२

५५६८. गुटका सं० २१६ । पत्र सं० १६४ । आ० ११×६ इंच । भाषा–हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है ।

१. जिनवरजत जयमाला	ब्रह्मलाल	हिन्दी	१–२
		भट्टारक पट्टावली दी गई है ।	
२. बारहमासा अकिश्चनसार	[illegible]	हिन्दी	१३–१५

३. मुक्तावलि गीत	सकलकीर्ति	हिन्दी	१५
४. चौबीस गणधरस्तवन	गुणकीर्ति	"	२०
५. अष्टाह्निकागीत	भ० शुभचन्द्र	"	२१
६. मिच्छा दुक्कड	ब्रह्मजिनदास	"	२२
७. क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	संस्कृत	३७-३८
८. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	१०६-११६
९. भट्टारक विजयकीर्ति अष्टक	×	"	१५०

५५९९. गुटका सं० २१७ । पत्र सं० १७१ । आ० ८३/४×६३/४ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

५६००. गुटका सं० २१८ । पत्र सं० १६६ । आ० ६×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—१४ पूजाओं का संग्रह है ।

५६०१. गुटका सं० २१९ । पत्र सं० १८४ । आ० ६×८ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—खड्गसेन कृत त्रिलोकदर्पणकथा है । ले० काल १७५३ ज्येष्ठ बुदी ७ बुधवार ।

५६०२. गुटका सं० २२० । पत्र सं० ८० । आ० ७१/२×५ इंच । भाषा-अपभ्रंश संस्कृत ।

१. तिसलजिणचऊबीसी	महणसिंह	अपभ्रंश	१-७०
२. नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत	७०-८०

विशेष—गुटके के अधिकांश पत्र जीर्ण तथा फटे हुए हैं एवं गुटका अपूर्ण है ।

५६०३. गुटका सं० २२१ । पत्र सं० ५१-१६० । आ० ८३/४×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जोधराज गोदीका की सम्यक्त्व कौमुदी (अपूर्ण), प्रीत्यंकरचरित्र, एवं नयचक्र की हिन्दी गद्य टीका अपूर्ण है ।

५६०४. गुटका सं० २२२ । पत्र सं० ११६ । आ० ५×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६०५. गुटका सं० २२३ । पत्र सं० ५२ । आ० ७×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—यन्त्र, पृच्छाएं एवं उनके उत्तर दिये हुए हैं ।

५६०६. गुटका सं० २२४ । पत्र सं० १४० । आ० ७×५१/२ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । दशा-जीर्ण शीर्ण एवं अपूर्ण ।

विशेष—गुरावली (अपूर्ण), भक्तिपाठ, स्वयंभूस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र एवं सामायिक पाठ आदि हैं ।

५६०८. गुटका सं० २०५ । पत्र सं० ११-१७७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-हिन्दी ।

१. बिहारी सतसई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास । टीकाकाल सं० १८३४ । पत्र सं० ११ से १३१ । ले० काल सं० १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवार ।

विशेष—पुस्तक में ७१४ पद्य हैं एवं ८ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं ।

अन्तिम भाग— पुरुषोत्तमदास के दोहे हैं—

जदपि है सोभा सहज मुक्त न तऊ सुदेस ।
पोये ठौर कुठौर के लरमें होत विसेष ॥७१॥

इस पर ७१५ संख्या है । वे सातसौ से अधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं । टीका सभी की दी हुई है । केवल ७१४ की जो कि पुरुषोत्तमदास का है, टीका नहीं है । ७१४ दोहों के आगे निम्न प्रशस्ति दी है ।

दोहा—

सालग्रामी सरजु जहू मिली गंगसो आय ।
अन्तराल में देस सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥
लिखे दूहा भूषन बहुत अनवर के अनुसार ।
कहुं औरे कहुं और हू निकलेंगे सब्कार ॥२॥
सेवी जुगल कसोर के प्रानताथ जी नांव ।
सतसती तिनसों पढी बसि सिंगार बट ठांव ॥३॥
जमुना तट शृङ्गार बट तुलसी विपिन सुदेस ।
सेवत संत महंत जहि देखत हरत कलेस ॥४॥
पुरोहित श्रीनन्द के मुनि सडिल्य महान ।
हम हैं ताके गौत में मोहन मो जजमान ॥५॥
मोहन महा उदार तजि और जाचिये काहि ।
सम्पति सुदामा को दई इन्द्र लही नहीं जाहि ॥६॥
गहि पंक सुमनु तात तैं विधि को वस अजाय ।
रांधा नाम कहूं सुनें आनंम कान बढाय ॥७॥
संवत् अठारहसौ बिते ता परि तीसरु चारि ।
जन्माठै पूरो कियो कृष्ण चरन मन धारि ॥८॥

इति हरचरणदास कृता बिहारी रचित सप्तशती टीका हरिप्रकाशाख्या सम्पूर्णा। संवत् १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवासरे शुभमस्तु।

२. कविवल्लभ—ग्रन्थकार हरिचरणदास। पत्र सं० १३१-१७७। भाषा—हिन्दी पद्य,

विशेष— ३६७ तक पद्य हैं। आगे के पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ—

मोहन चरन पयोज में, है तुलसी को बास।
ताहि सुमरि हरि भक्त सब, करत विघ्न को नास ॥१॥

कवित्त—

आनन्द को कन्द वृषभान जाको मुखचन्द,
लीला ही ते मोहन के मानस को चोर है।
दूजो तैसो रचिवे को चाहत विरंचि निति,
ससि को बनावै अजो मन कौन मोरै है।
फेरत है सान आसमान पै चढाय फेरि,
पानि पै चढाय वे को वारिधि में बोरै हैं।
राधिका के आनन के जोट न विलोके विधि,
टूक टूक तोरै पुनि टूक टूक जोरै है ॥

अथ दोष लक्षण दोहा—

रस आनन्द सरूप कौं दूषै ते हैं दोष।
आत्मा कौं ज्यो अंधता और बधिरता रोष ॥३॥

अन्तिम भाग—

दोहा—

साका सतरह सौ पुजौ संवत् पैंतीस जान।
अठारह सो जेठ बुदि ने ससि रवि दिन प्रात ॥२८४॥

इति श्री हरिचरणजी विरचित कविवल्लभो ग्रन्थ सम्पूर्ण। स० १८५२ माघ कृष्णा १४ रविवासरे।

५६०६. गुटका सं० २२६। पत्र सं० १००। आ० ६¾×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८२५ जेठ बुदी १५। पूर्ण।

१. सप्तभंगीवाणी	भगवतीदास	हिन्दी	१
२. समयसारनाटक	बनारसीदास	"	१-१००

५६१०. गुटका सं० २२७। पत्र सं० २६। आ० ९×५½। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। ले० काल सं० १८४७ असाढ बुदी ६।

विशेष—रससागर नाम का आयुर्वेदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य में है। पोथी लिखी पंडित डूंगरसी की सो देखि लिखी—मिति असाढ़ बुदी ६ वार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोधा।

५६११. गुटका सं० २२८। पत्र सं० ४६ से ६२। आ० ६×७ इ०। भाषा—प्राकृत हिन्दी। लै० काल १६२४। द्रव्य संग्रह की भाषा टीका है।

५६१२. गुटका सं० २२६। पत्र सं० १८। आ० ६×७ इ०। भाषा हिन्दी।

१. पंचपाल पैंतीसी	×	हिन्दी	१–६
२. अंकपनाचार्यपूजा	×	„	७–१२
३ विष्णुकुमारपूजा	×	„	१३–१८

५६१३. गुटका सं० २३०। पत्र सं० ४२। आ० ७×६ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है।

५६१४. गुटका सं० २३१। पत्र सं० २२–४७। आ० ६×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय-आयुर्वेद।

विशेष—नयनसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव है।

५६१५. गुटका सं० २३२। पत्र सं० १४–१५७। आ० ७×५ इ०। भाषा—हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—भैया भगवतीदास कृत अनित्य पच्चीसी, बारह भावना, शत अष्टोत्तरी, जैनशतक, (भूधरदास) दान बावनी (द्यानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्म्मछत्तीसी, ज्ञानपच्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण मंदिर भाषा, दानवर्णन, परिषह वर्णन का संग्रह है।

५६१६. गुटका सं० २३३। पत्र संख्या ४२। आ० १०×४½ भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६१७. गुटका सं० २३४। पत्र सं० २०३। आ० १०×७½ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। पूजा पाठ, बनारसी विलास, चौबीस ठाणा चर्चा एवं समयसार नाटक है।

५६१८. गुटका सं० २३५। पत्र सं० ११८। आ० १०×६½ इ०। भाषा—हिन्दी।

१. तत्वार्थसूत्र (हिन्दी टीका सहित)		हिन्दी संस्कृत	१–६०
		६१ पत्र तक दीमक ने खा रखा है।	
२ चौबीसठाणाचर्चा	×	हिन्दी	६१–११८

५६१९. गुटका सं० २३६। पत्र सं० १४०। आ० ६×७ इ०। भाषा हिन्दी।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६२०. गुटका सं० २३८ । पत्र सं० २५० । आ० ६×६½ इ० । भाषा–हिन्दी । । ले० काल सं० १७४८ आसोज बुदी ११ ।

१. कुण्डलिया	अगरदास एवं अन्य कविगण	हिन्दी	लिपिकार विजयराम	१–३३
२. पद	मुकन्ददास	"		३३–३४
		ले० काल १७७५ श्रावण सुदी ५		
३. त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	हिन्दी		३४–२५०

५६२१. गुटका सं० २३६ । पत्र सं० १६८ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

१. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१–१४
२. कथाकोष	×	"	१४–८४
३. त्रिलोक वर्णन	×	"	८४–१६८

५६२२. गुटका सं० २४० । पत्र सं० ४८ । आ० १२½×८ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय–स्तोत्र ।

विशेष—पहिले भक्तामर स्तोत्र टीका सहित तथा बाद मे यन्त्र मंत्र सहित दिया हुवा है ।

५६२३. गुटका सं० २४१ । पत्र सं० ५–१७७ । आ० ४×३ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल १८५७ वैशाख बुदी अमावस्या ।

विशेष—लिखितं महात्मा शभूराम । ज्ञानदीपक नामक न्याय का ग्रन्थ है ।

५६२४. गुटका सं० २४२ । पत्र सं० १–२००, ४०० ४६५, ६०५ से ७६४ । आ० ४×३ इ० । भाषा–हिन्दी गद्य ।

विशेष—भावदीपक नामक ग्रन्थ है ।

५६२५. गुटका सं० २४३ । पत्र सं० २४० । आ० ६×४ इ० । भाषा–संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६२६. गुटका सं० २४४ । पत्र सं० २२ । आ० ६×४ इ० । भाषा–संस्कृत ।

१. त्रैलोक्य मोहन कवच	रायमल	संस्कृत	ले० काल १७६१	४
२. दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	शंकराचार्य	"		५–७
३. बकारादिनामस्तोत्र	×	"		७–८
४. हरिहरनामावलिस्तोत्र	×	"		८–१०
५. द्वादशराशि फल	×	"		१०–११

६. बृहस्पति विचार × " ले० काल १७६२ १२-१४

७. अन्यस्तोत्र × " १६-२२

५६२७. गुटका सं० २४५ । पत्र सं० २-४६ । आ० ७×५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

५६२८. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—नन्दराम कृत मानमञ्जरी है । प्रति नवीन है ।

५६२९. गुटका सं० २४७ । पत्र सं० ६-७३ । आ० ७×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजापाठ संग्रह है ।

५६३०. गुटका सं० २४८ । पत्र सं० १२ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—तीर्थङ्करों के पंचकल्याण आदि का वर्णन है ।

५६३१. गुटका सं० २४९ । पत्र सं० ८ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—पद संग्रह है ।

५६३२. गुटका सं० २५० । पत्र सं० १५ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—बृहत्स्वयम्भूस्तोत्र है ।

५६३३. गुटका सं० २५१ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० भाषा-संस्कृत ।

विशेष—समन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार है ।

५६३४. गुटका सं० २५२ । पत्र सं० ३ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल १९३३ ।

विशेष—प्रकमाष्टक स्तोत्र है ।

५६३५. गुटका सं० २५३ पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत ले० काल सं० १९३३ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५४ । पत्र सं० १० । आ० ८×५ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—बिम्ब निर्वाण विधि है ।

५६३७. गुटका सं० २५५ । पत्र सं० ११ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—बुधजन कृत छह ढालीसी पंचमङ्गल एवं पूजा आदि है ।

५६३८. गुटका सं० २५६ । पत्र सं० ६ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नवीनचन्द कृत रामचन्द्र चरित्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५७ । पत्र सं० ८ । प्रा० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । दशा-जीर्णशीर्ण ।

विशेष—सन्तराम कृत कवित्त संग्रह है ।

५६४०. गुटका सं० २५८ । पत्र सं० ६ । प्रा० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष —ऋषिमण्डलस्तोत्र है ।

५६४१. गुटका सं० २५६ । पत्र सं० ६ । प्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८३० ।

विशेष—हिन्दी पद एवं नाथू कृत लहुरी है ।

५६४२. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ४ । प्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—नवल कृत दोहा स्तुति एवं दर्शन पाठ हैं ।

५६४३. गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ६ । प्रा० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । र० काल १८६१ ।

विशेष—सोनागिरि पच्चीसी है ।

५६४४. गुटका सं० २६२ । पत्र सं० १० । प्रा० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—ज्ञानोपदेश के पद्य हैं ।

५६४५. गुटका सं० २६३ । पत्र सं० १६ । प्रा० ६½×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—शंकराचार्य विरचित अपराधसूदनस्तोत्र है ।

५६४६ गुटका सं० २६४ । पत्र सं० ६ । प्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—सप्तश्लोकी गीता है ।

५६४७. गुटका सं० २६५ । पत्र सं० ४ । प्रा० ५½×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—वराहपुराण में से सूर्यस्तोत्र है ।

५६४८. गुटका सं० २६६ । पत्र सं० १० । प्रा० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत । ले० काल १८८७ पौष सुदी ६ ।

विशेष— पत्र १-७ तक महागणपति कवच है ।

५६४६. गुटका सं० २६७ । पत्र सं० ७ । प्रा० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभाव स्तोत्र भाषा है ।

५६५०. गुटका सं० २६८ । पत्र सं० ३५ । प्रा० ५½×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल १८८५ पौष सुदी २ ।

विशेष—महात्मा संतराम ने प्रतिलिपि की थी । पद्मावती पूजा, चतुषष्ठी स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (आशाधर) है ।

५६५१. गुटका सं० २६९ । पत्र सं० २७ । आ० ७½×५½ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५६५२ गुटका सं० २७० । पत्र सं० ८ । आ० ६½×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९१२ । पूर्ण ।

विशेष—तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है ।

५६५३ गुटका सं० २७१ । पत्र सं० ३१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, ऋद्धिमूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं ।

५६५४. गुटका सं० २७२ । पत्र सं० ६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा है ।

५६५५. गुटका सं० २७३ । पत्र सं० ४ । आ० ७×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत चमत्कारजी की पूजा है । चमत्कार क्षेत्र संवत् १८८९ में भादवा सुदी २ को प्रकट हुवा था । सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६५६. गुटका सं० २७४ । पत्र सं० १६ । आ० १०×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । पूर्ण ।

विशेष—इसमें रामचन्द्र कृत शिखर विलास है । पत्र ८ से आगे खाली पत्र हैं ।

५६५७. गुटका सं० २७५ । पत्र सं० ६३ । आ० ५½×५ इ० । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है तीन चौबीसी नाम, जिनपच्चीसी (नवल), दर्शनपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, सबोधपञ्चासिका (द्यानतराय) ।

५६५८ गुटका सं० २७६ । पत्र सं० १० । आ० ६½×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बड़ा कक्का (हिन्दी) आदि पाठ हैं ।

५६५९ गुटका सं० २७७ । पत्र सं० २-२१ । आ० ५½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । अपूर्ण ।

विशेष—हरखचन्द के पदों का संग्रह है ।

५६६०. गुटका सं० २७८ । पत्र सं० १-८० । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं । योगीन्द्रदेव कृत परमात्मप्रकाश है ।

५६६१. गुटका सं० २७९ । पत्र सं० ६-३४ । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है ।

५६६२. गुटका सं० २८० । पत्र सं० २-४१ । आ० ५३/४×४ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

विशेष—कथाओं का वर्णन है ।

५६६३. गुटका सं० २८१ । पत्र सं० १२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-× । पूर्ण ।

विशेष—बारहखड़ी, पूजासंग्रह, दशलक्षण, सोलहकारण, पञ्चमेरुपूजा, रत्नत्रयपूजा, तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० २८२ । पत्र सं० १६-८४ । आ० ६३/४×५३/४ इ० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है— जैनपच्चीसी, पद (भूधरदास) भक्तामरभाषा, परमज्योतिभाषा विषापहारभाषा (अचलकीर्त्ति), निर्वाणकाण्ड, एकीभाव, अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल (भगवतीदास), सहस्रनाम, साधुवंदना, विनती (भूधरदास), नित्यपूजा ।

५६६५. गुटका सं० २८३ । पत्र सं० ३३ । आ० ७१/२×५ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । अपूर्ण ।

विशेष—३३ से आगे के पत्र खाली हैं । बनारसीदास कृत समयसार है ।

५६६६. गुटका सं० २८४ । पत्र सं० २-३५ । आ० ८×६१/२ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—चर्चाशतक (द्यानतराय), श्रुतबोध (कालिदास) ये दो रचनायें हैं ।

५६६७. गुटका सं० २८५ पत्र सं० ३-४६ । आ० ८×६१/२ इ० । भाषा-संस्कृत प्राकृत । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा, स्वाध्यायपाठ, चौबीसठाणाचर्चा ये रचनायें हैं ।

५६६८. गुटका सं० २८६ । पत्र सं० ३१ । आ० ८×६ इ० । पूर्ण ।

विशेष—द्रव्यसंग्रह संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित ।

५६६९. गुटका सं० २८७ । पत्र सं० ३२ । आ० ७१/२×५१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, नित्यपूजा है ।

५६७०. गुटका सं० २८८ । पत्र सं० २-४२ । आ० ६×४ इ० । विषय-संग्रह । अपूर्ण ।

विशेष—ग्रह फल आदि दिया हुआ है ।

५६७१. गुटका सं० २८९ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार । पूर्ण

विशेष—रसिकराय कृत स्नेहलीला के से उद्धव गोपी संवाद दिया है ।

प्रारम्भ— एक समय ब्रजवास की सुरति भई हरिराइ ।
निज जन अपनो जानि के ऊधो लियो बुलाइ ॥

श्रीकिरसन बचन ऐसे कहे ऊधव तुम सुनि ले ।
नन्द जसोदा आदि दे ब्रज जाइ सुख दे ॥ २ ॥
ब्रज वासी बल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान ।
तानै नीमष न वीसरू मोहे नन्दराय की प्रान ॥

अन्तिम— यह लीला ब्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।
जन मोहन जो गाव ही ते नर पाव देह ॥ १२२ ॥
जो गाव सीख सुर मवन तुम बचन सहेत ।
रसिक राय पूरन कीया मन वांछित फल देत ॥ १२३ ॥

नोट—आगे नाग लीला का पाठ भी दिया हुआ है ।

५६७२. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. सोलहकारणकथा	रत्नपाल	संस्कृत		८-१३
२. दशलक्षणीकथा	मुनि ललितकीर्ति	"		१३-१७
३. रत्नत्रयव्रतकथा	"	"		१७-१६
४. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	"	"		१६-२३
५. अक्षयदशमीकथा	"	"		२३-२६
६. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	"	"		२७
७. वैराग्यमोत्सव	नयनसुख	हिन्दी पद्य	पूर्ण	३१-४२

विशेष— नालेरी ग्राम में दीवान श्री बुधसिंहजी के राज्य में मुनि मेघविजय ने प्रतिलिपि की थी । गुटका काफी जीर्ण है । पत्र चूहों के खाये हुए है । लेखनकाल स्पष्ट नहीं है ।

५६७३. गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ११७ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । संस्कृत में समयसार कलश टीका भी है ।

५६७४. गुटका सं० २६२ । पत्र सं० ४८ ।

१. ज्योतिषशास्त्र	×	संस्कृत		१६-३६
२. फुटकर दोहे	×	हिन्दी	११ दोहा है	३६-३७

३. यशस्तोत्र	गोवर्धन	संस्कृत	४७–४८

ले० काल सं० १७६१ संत हरिवंशदास ने लवाण में प्रतिलिपि की थी।

५६७५. गुटका सं० २६३। संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमलजी। पत्र सं० ७६। आ० ५×६ इञ्च। ले० काल सं० १७३३। अपूर्ण। दशा-जीर्ण।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं मंत्रों का संग्रह है।

५६७६. गुटका सं० २६४। पत्र सं० ७७। आ० ६×४ इञ्च। ले० काल १७८८ पौष सुदी ६। पूर्ण। सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष—पं० गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी। पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

५६७७. गुटका सं० २६५। पत्र सं० ३१–६२। आ० ४×५। इञ्च भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल शक सं० १६२५ सावन बुदी ५।

विशेष—पुण्याहवाचन एवं भक्तामरस्तोत्र भाषा है।

५६७८. गुटका सं० २६६। पत्र सं० ३–४१। आ० ३×३½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। अपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र है।

५६७९. गुटका सं० २६७। पत्र सं० २५। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे हैं।

५६८०. गुटका सं० २६८। पत्र सं० ६२। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र खाली हैं। ३१ से आगे फिर पत्र १ २ से प्रारम्भ है। पत्र १० तक शृङ्गार के कवित्त हैं।

१. बारह मासा—पत्र १०–२१ तक। चूहर कवि का है। १२ पद हैं। वर्णन सुन्दर है। कविता में पत्र लिखकर बताया गया है। १७ पद्य है।

२. बारह मासा—गोविन्द का–पत्र २१–३१ तक।

५६८१. गुटका सं० २६९। पत्र सं० ४१। आ० ७×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-शृङ्गार।

विशेष—कोकसार है।

५६८२. गुटका सं० ३००। पत्र सं० १२। आ० ६×५½ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र।

विशेष—मन्त्रशास्त्र, आयुर्वेद के नुसखे। पत्र ७ से आगे खाली है।

५६८३. गुटका सं० ३०१ । पत्र सं० १८ । आ० ४½×३ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल १९१८ । पूर्ण ।

विशेष—भावणी मांगीतुंगी की– हर्षकीर्ति ने सं० १९०० ज्येष्ठ सुदी ५ को यात्रा की थी ।

५६८४. गुटका सं० ३०२ । पत्र सं० ४२ । आ० ४×३½ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–संग्रह । पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८५. गुटका स० ३०३ । पत्र सं० १०५ । आ० ४½×४½ इ० । पूर्ण ।

विशेष—३० यन्त्र दिये हुये हैं । कई हिन्दी तथा उर्दू में लिखे हैं । आगे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है । उनका फल दिया हुआ है । जन्मपत्री सं० १८१७ की जगतराम के पौत्र माणकचन्द के पुत्र की आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये हैं ।

५६८६. गुटका सं० ३०३ क । पत्र सं० १५ । आ० ८×५½ इ० । भाषा–हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में विश्वामित्र विरचित रामकवच है । पत्र ३ से तुलसीदास कृत कवित्तबंध रामचरित्र है । इसमें छप्पय छन्दों का प्रयोग हुआ है । १–२० पद्य तक संख्या ठीक है । इसमे आगे ३५६ संख्या से प्रारम्भ कर ३८२ तक संख्या चली है । इसके आगे २ पत्र खाली हैं ।

५६८७. गुटका सं० ३०४ । पत्र सं० १६ । आ० ७½×५ इ० । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—४ से ६ तक पत्र नहीं है । अजयराज, रामदास, बनारसीदास, जगतराम एवं विजयकीर्ति के पदो का संग्रह है ।

५६८८. गुटका सं० ३०५ । पत्र सं० १० । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा है ।

५६८९. गुटका सं० ३०६ । पत्र सं० ९ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । पूर्ण । विशेष—शांतिपाठ है ।

५६९०. गुटका सं० ३०७ । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नन्ददास की नाममञ्जरी है ।

५६९१. गुटका सं० ३०८ । पत्र सं० १० । आ० ५×४½ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । पूर्ण

विशेष—भक्तामरस्तोत्रऋद्धिमन्त्र सहित है ।

क भण्डार [शास्त्रभण्डार बाबा दुलीचन्द जयपुर]

५६६२. गुटका सं० १। पत्र सं० २७१। आ० ६३/४×७१/४ इञ्च। वे० सं० ८५७। पूर्ण।

१. भाषाभूषण	भीरजसिंह राठौड	हिन्दी	१–८
२. अठोत्तरा सनाथ विधि	×	,, ले० काल सं० १७५६	१३

औरंगजेब के समय में पं० अभयसुन्दर ने ब्रह्मपुरी में प्रतिलिपि की थी।

३. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१४
४. समयसार नाटक	बनारसीदास	,,	११७

बादशाह शाहजहां के शासन काल में सं० १७०८ में लाहौर में प्रतिलिपि हुई थी।

५. बनारसी विलास	×	,,	१२६

विशेष—बादशाह शाहजहां के शासनकाल सं० १७११ में जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

५६६३. गुटका सं० २। पत्र सं० २२५। आ० ८×५१/२ इञ्च। अपूर्ण। वे० सं० ८५८।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठ संग्रह है।

५६६४. गुटका सं० ३। पत्र सं० २४। आ० १०३/४×५१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। वे० सं० ८५६।

१. शांतिकनाम	×	हिन्दी	१
२. महाभिषेक सामग्री	×	,,	१–८
३ प्रतिष्ठा मे काम आने वाले ६६ यंत्रों के चित्र	×	,,	६–२४

५६६५. गुटका सं० ४। पत्र सं० ६३। आ० ५३/४×८३/४ इ०। पूर्ण। वे० सं० ८६०।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

५६६६. गुटका सं० ५। पत्र सं० ५६। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। वे० सं० ८६१।

विशेष—सुभाषित पाठों का संग्रह है।

५६६७ गुटका सं० ६। पत्र सं० ३३४। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० ८६२।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है।

५६६८. गुटका सं० ७। पत्र सं० ४१६। आ० ६१/२×५ इ०। ले० काल सं० १८०५ असाढ सुदी ५ पूर्ण। वे० सं० ८६३।

१. पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी
२. प्रतिष्ठा पाठ	×	"
३. चौबीस तीर्थङ्कर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी ले० काल १८७५ भादवा सुदी १०

५६९९. गुटका स० ८ । पत्र सं० ३१७ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६२ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८६४ ।

विशेष—पूजा एवं प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है । पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषतः उल्लेखनीय है ।

५७००. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १४ । आ० ४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वे० सं० ८६५ ।

विशेष—जगतराम, गुमानीराम, हरीसिंह, जोधराज, लाल, रामचन्द्र आदि कवियों के भजन एवं पदों का संग्रह है ।

ख भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर जोबनेर जयपुर]

५७०१. गुटका सं० १ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×४½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. होडाचक्र	×	संस्कृत	अपूर्ण	८
२. नाममाला	धनञ्जय	"	"	६-३२
३. श्रुतपूजा	×	"		३३-३६
४. पञ्चकल्याणकपूजा	×	"	ले० काल १७८३	३६-६५
५. मुक्तावलीपूजा	×	"		६५-६६
६. द्वादशव्रतोद्यापन	×	"		६६-८६
७. त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	"	ले० काल सं० १७८३	८६-१०२
८. णवकारपैंतीसी	×	"		
९. आदित्यवारकथा	×	"		
१०. प्रोषधोपवास व्रतोद्यापन	×	"		१०३-२१२
११. नन्दीश्वरपूजा	×	"		
१२. पञ्चकल्याणकपाठ	×	"		
१३. पञ्चमेरुपूजा	×	"		

५७०२. गुटका सं० २। पत्र सं० १६६। आ० ६×६½ इ०। ले० काल ×। दशा–जीर्ण शीर्ण।

१. त्रिलोकवर्णन	×	संस्कृत हिन्दी	१–१०
२. कालचक्रवर्णन	×	हिन्दी	११–१४
३. विचारगाथा	×	प्राकृत	१५–१६
४. चौबीसतीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	१६–३१
५. चउबीसठाणाचर्चा	×	"	३२–७८
६. आस्रव त्रिभङ्गी	×	प्राकृत	७९–११२
७. भावसंग्रह (भावत्रिभङ्गी)	×	"	११३–१३३
८. त्रेपनक्रिया श्रावकाचार टिप्पण	×	संस्कृत	१३४–१५४
९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५४–१६८

५७०३. गुटका सं० ३। पत्र सं० २१५। आ० ६×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—नित्यपूजापाठ तथा मन्त्रसंग्रह है। इसके अतिरिक्त निम्नपाठ संग्रह है।

१. शत्रुञ्जयतीर्थरास	समयसुन्दर	हिन्दी		३३
२. बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	"	र० काल १६१६	३३–४०
३. दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	"		४१–४९
४. शालिभद्र चौपई	जितसिंहसूरि	"	र० काल १६०८	४९–६४
५. चतुर्विंशति जिनराजस्तुति	"	"		६४–१०६
६. बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	"	"		१०६–११७
७. महावीरस्तवन	जितचन्द्र	"		११७–११९
८. आदीश्वरस्तवन	"	"		१२०
९. पार्श्वजिनस्तवन	"	"		१२०–१२१
१०. विनती, पाठ व स्तुति	"	"		१२२–१४१

५७०४. गुटका सं० ४। पत्र सं० ७१। आ० ५½×३ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १९०४। पूर्ण।

विशेष—नित्यपाठ व पूजाओं का संग्रह है। लश्कर में प्रतिलिपि हुई थी।

५७०५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४८ । आ० ५×४ इ० । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण ।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिन्दी), कल्याणमन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (संस्कृत) एवं विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५७०६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८० । आ० ८½×६¼ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

१. चौरासीबोल	कौरपाल	हिन्दी	अपूर्ण	४–१६
२. आदिपुराणविनती	गङ्गादास	"		१७–४३

विशेष—सूरत में नरसीपुरा (नरसिंघपुरा) जाति वाले वणिक पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना की थी ।

३. पद– जिण जपि जिण जपि जिवड़ा	हर्षकीर्त्ति	हिन्दी		४४-४५
४. अष्टकपूजा	विश्वभूषण	"	पूर्ण	५१
५. समकितविणवोधर्म	ब्र० जिनदास	"	"	५८

५७०७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ५० । आ० ५½×४½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—४८ यन्त्रो का मन्त्र सहित संग्रह है । अन्त में कुछ आयुर्वेदिक नुसखे भी दिये हैं ।

५७०८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० × । आ० ५×२½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उपवासों का ब्यौरा, सुभाषित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है ।

५७०९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ५१ । आ० ७×५ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–संग्रह । ले० काल सं० १७८३ । पूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे, पाशा केवली, नाम माला आदि हैं ।

५७१०. गुटका सं० १० । पत्र सं० ८५ । आ० ६×३½ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लिपि स्पष्ट नहीं है तथा अशुद्ध भी है ।

५७११. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२-६२ । आ० ६×५ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५७१२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २२३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १६०५ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७१३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० १६३ । आ० ५×५½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

५७१४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ४२ । आ० ८½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. त्रिलोकवर्णन	×	हिन्दी	पूर्ण	१-१८
२. खंडेला की चरचा	×	"	"	१६--२६
३. त्रेसठ शलाका पुरुषवर्णन	×	"	"	२६-४२

५७१५. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×५ इ० । ले० काल० × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७१६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२० । आ० ६×५½ इ० । ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण ।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	१०-१०६
२. पार्श्वनाथजीकी निसाणी	×	"	११०-११४
३. शान्तिनाथस्तवन	गुणसागर	"	११५-११६
४. गुरुदेवकीविनती	×	"	११७-१२०

५७१७ गुटका सं० १७ । पत्र सं० ११५ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५७१८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १६४ । आ० ५¾×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है ।

५७१९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० २१३ । आ० ५×३½ इ० । ले० काल × पूर्ण ।

विशेष—नित्य पाठ व मंत्र आदि का संग्रह है तथा आयुर्वेद के नुसखे भी दिये हुये है ।

५७२०. गुटका सं० २० । पत्र सं० १३२ । आ० ७×६ इ० । ले० काल सं० १८२२ । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजापाठ, पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मप्रभदेव) जिनस्तुति (रूपचन्द, हिन्दी) पद (शुभचन्द्र एवं कनककीर्ति) खंडेलवालो की उत्पत्ति तथा सामुद्रिक शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५७२१. गुटका सं० २१। पत्र सं० ५–६२। आ० ५३⁄४×५१⁄४ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। जीर्ण।

विशेष—समयसार गाथा, सामायिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र के पाठ हैं।

५७२२. गुटका सं० २२। पत्र सं० २१६। आ० ६×६ इ०। ले० काल सं० १८६७ चैत्र सुदी १४। पूर्ण।

विशेष—५० मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

५७२३. गुटका सं० २३। पत्र सं० ६७–२०६। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

१. पद– (वह पानी मुलतान गये)	×	हिन्दी	पूर्ण	६७
२. (पद–कौन खतामेरीमै न जानी तजि के चले गिरनारि)	×	"	"	"
३. पद–(प्रभु तेरे दरसन की बलिहारी)	×	"	"	"
४. आदित्यवारकथा	×	"	"	६६–१२५
५. पद–(चलो पिय पूजन श्री वीर जिनंद)	×	"	"	१७८–१७६
६. जोगीरासो	जिनदास	"	"	१६०–१६२
७. पञ्चेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	"	"	१६२–१६५
८. जैनबिद्रीदेश की पत्रिका	मजलसराय	"	"	१६५–१६७

ग भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

५७२४. गुटका स० १। आ० ८×५ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १००।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. पद– सांवरिया पारसनाथ मोहे तो चाकर राखो	खुशालचन्द	हिन्दी
२. " मुझे है चाव दरसन का दिखा दोगे तो क्या होगा	×	"
३. दर्शनपाठ	×	संस्कृत
४. तीन चौबीसीनाम	×	हिन्दी
५. कल्याणमन्दिरभाषा	बनारसीदास	"
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत
७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

८. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
९. अकृत्रिम जिन चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
१०. सिद्ध पूजा	×	संस्कृत
११. सोलहकारणपूजा	×	"
१२. दशलक्षणपूजा	×	"
१३. शान्तिपाठ	×	"
१४. पार्श्वनाथपूजा	×	"
१५. पंचमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी
१६. नन्दीश्वरपूजा	×	संस्कृत
१७. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	अपूर्ण "
१८. रत्नत्रयपूजा	×	"
१९. अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
२०. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"
२१. गुरुओं की विनती	×	"
२२. जिनपचीसी	नवलराम	"
२३. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	पूर्ण संस्कृत
२४. पञ्चकल्याणमंगल	रूपचन्द	हिन्दी
२५. पद– जिन देख्या विन रह्यो न जाय	किशनसिंह	"
२६. " कीजौ हो भैयन सो प्यार	द्यानतराय	"
२७. " प्रभू यह अरज सुणो मेरी	नन्द कवि	"
२८. " भयो सुख चरन देखत ही	"	"
२९. " प्रभू मेरी सुनो विनती	"	"
३०. " परयो संसार की धारा जिनको वार नहीं पारा	"	"
३१. " कला दीदार प्रभू तेरा भया कर्मन सगुर हेरा	"	"
३२. स्तुति	बुधजन	"
३३. नेमिनाथ के दश भव	×	"
३४. पद– जैन मत परखो रे भाई	×	"

५७२५. गुटका सं० २। पत्र सं० ८३-४०३। आ० ४३/४×३ इ०। अपूर्ण। वे० सं० १०१।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण	८३-९३
२. देवसिद्धपूजा	×	"		९३-११५
३. सोलहकारणपूजा	×	अपभ्रंश		११५-१२२
४. दशलक्षणपूजा	×	अपभ्रंश संस्कृत		१२३-१२६
५. रत्नत्रयपूजा	×	संस्कृत		१२८-१६७
६. नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत		१६८-१८१
७. शान्तिपाठ	×	संस्कृत		१८१-१८६
८. पञ्चमंगल	रूपचन्द	हिन्दी		१८७-२१२
९. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	अपूर्ण	२१३-२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"		२२५-२६८
११. भक्तामरस्तोत्र मत्र एवं हिन्दी पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत हिन्दी		२६९-४०३

५७२६. गुटका सं० ३। पत्र सं० ८९। आ० १०×९ इ०। विषय-संग्रह। ले० काल सं० १८७९ श्रावण सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० १०५।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

१. चौबीसतीर्थंकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी
२. अष्टाह्निकापूजा	"	"
३. षोडशकारणपूजा	"	"
४. दशलक्षणपूजा	"	"
५. रत्नत्रयपूजा	"	"
६. पंचमेरुपूजा	"	"
७. सिद्धक्षेत्रपूजा	"	"
८. दर्शनपाठ	×	"
९. पद-अरज हमारी सुन	×	"

१०. भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	×	"	
११ भक्तामरस्तोत्रऋद्धिमंत्रसहित	×	संस्कृत हिन्दी	

नथमल कृत हिन्दी अर्थ सहित ।

५७२७. गुटका स० ४ । पत्र सं० ५५ । आ० ८×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १९५४ । पूर्ण । वे० सं० १०३ ।

विशेष—जैन कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है । इसमें दौलतराम, द्यानतराय, जोधराज, नवल, बुधजन भैय्या भागवतीदास के नाम उल्लेखनीय हैं ।

घ भण्डार [दि० जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर]

५७२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३०० । आ० ६३/४×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे. सं० १४० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है:—

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत		१–६
२. घन्टाकरणमन्त्र	×	"		६
३. बनारसीविलास	बनारसीदास	हिन्दी		७–१६६
४. कवित्त	"	"		१६७
५. परमार्थदोहा	रूपचन्द	"		१६८–१७४
६. नाममालाभाषा	बनारसीदास	"		१७५–१९०
७. अनेकार्थनाममाला	नन्दकवि	"		१९०–१९७
८. जिनपिंगलछंदकोश	×	"		१९७–२०६
९. जिनसतसई	×	"	अपूर्ण	२०७–२११
१०. पिंगलभाषा	रूपदीप	"		२११–२२१
११. देवपूजा	×	"		२२२–२६२
१२. जैनशतक	भूधरदास	"		२६२–२८३
१३ भक्तामरभाषा (पद्य)	×	"		२८४–३००

विशेष—श्री टेकमचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५७२९. गुटका सं० २ । पत्र सं० २३३ । प्रा० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१–१०९
विशेष—संस्कृत गद्य में टीका दी हुई है ।			
२. धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी	११०–१७०
३. ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	प्राकृत	१७१–१९२
४. पंचलब्धिविचार	×	"	१९३–१९४
५. अठावीस मूलगुणरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१९४–१९६
६. दानकथा	"	"	१९७–२१५
७. बारह अनुप्रेक्षा	×	"	२१५–२१७
८. हंसतिलकरास	ब्र० अजित	हिन्दी	२१७–२१३
९ चिद्रूपभास	×	"	२२०–२१७
१० आदिनाथकल्याणककथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	"	२२८–२३३

५७३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६८ । प्रा० ५½×४ इ० । ले० काल सं० १९२१ पूर्ण । वे० सं० १४२

१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१–३५
२. आदित्यवार कथा भाषा टीका सहित	मू० क० सकलकीर्ति	हिन्दी	३६–६०
	भाषाकार–सुरेन्द्रकीर्ति र० काल १७४१		
३. पञ्चपरमेष्ठिगुणस्तवन	×	"	६१–६८

५७३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७० । प्रा० ७½×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७४३

१. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	५–२५
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६–३२
३. जिनस्तवन	दौलतराम	"	३२–३३
४. छहढाला	"	"	३४–५३
५. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	६०–६७
६. रविवारकथा	देवेन्द्रभूषण	हिन्दी	६८–७०

५७३२. गुटका सं० ५। पत्र सं० ३६। आ० ८½×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४४।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

५७३३. गुटका सं० ६। पत्र सं० ६-३६। आ० ६½×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४७।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

५७३४. गुटका सं० ७। पत्र सं० २-३३। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४८।

५७३५. गुटका सं० ८। पत्र सं० १७-४८। आ० ६½×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४६।

विशेष—बनारसीविलास तथा कुछ पदों का संग्रह है।

५७३६ गुटका सं० ९। पत्र सं० ३२। आ० ६×४½ इ०। ले० काल० सं० १८०१ फागुण। पूर्ण। वे० सं० १४५।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

५७३७. गुटका सं० १०। पत्र सं० ४०। आ० ६×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा पाठ संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५०।

५७३८. गुटका सं० ११। पत्र सं० २५। आ० ७×५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा पाठ संग्रह ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१।

५७३९ गुटका सं० १२। पत्र सं० ३४-८६। आ० ८½×६½ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा पाठ संग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४६।

विशेष—स्फुट पाठों का संग्रह है।

५७४०. गुटका सं० १३। पत्र सं० ४८। आ० ८×६ इ०। भाषा- हिन्दी। विषय-पूजा पाठ संग्रह। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० १५२।

ङ भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर संघीजी]

५७४१. गुटका सं० १। पत्र सं० १०७। आ० ८½×५½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५७४२. गुटका सं० २ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८७६ वैशाख शुक्ला १० । अपूर्ण ।

विशेष—चि० रामसुखजी डूंगरसीजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मंढा नगर में प्रतिलिपि की थी । पूजाओं का संग्रह है ।

५७४३. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६६ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तिपाठ, संबोधपञ्चासिका तथा सुभाषितावली आदि उल्लेखनीय पाठ हैं ।

५७४४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ४-६६ । आ० ७×८ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८६८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का संग्रह है ।

५७४५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २८ । आ० ८×६½ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० ११०७ । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७४६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २७६ । आ० ६×४½ इ० । ले० काल सं० १६६.... माह बुदी ११ । अपूर्ण ।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । पूजा स्तोत्रों के अतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है :—

१. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत
२. सबोधपंचासिका	×	"
३. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	संस्कृत

५७४७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १०४ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—आदित्यवार कथा के साथ अन्य कथायें भी हैं ।

५७४८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३४ । आ० ४½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७४९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७८ । आ० ७½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

५७५०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १० । आ० ७½×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—आनन्दघन एवं सुन्दरदास के पदों का संग्रह है ।

५७५१. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २० । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भूधरदास आदि कवियो की स्तुतियों का संग्रह है ।

५७५२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५० । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—पञ्चमङ्गल रूपचन्द कृत, बधावा एव विनतियों का संग्रह है ।

५७५३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६० । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१. धर्मविलास	द्यानतराय	हिन्दी
२. जैनशतक	भूधरदास	"

५७५४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १५ से १३४ । आ० ६×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । विशेष—चर्चा संग्रह है ।

५७५५. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४० । आ० ७½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७५६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजापाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७५७. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गङ्ग, विहारी आदि कवियो के पद्यों का संग्रह है ।

५७५८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पूजायें है ।

५७५९. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १७३ । आ० ६×७½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
२. जम्बूस्वामी चौपई	ब्र० रायमल्ल	"	पूर्ण
३. धर्मपरीक्षाभाषा	×	"	अपूर्ण
४. समाधिमरणभाषा	×	"	"

५७६०. गुटका सं० २० | पत्र सं० ५१ | आ० ८½×६½ इ० | भाषा–संस्कृत हिन्दी | ले० काल × | अपूर्ण |

विशेष—घुमानीरामजी ने प्रतिलिपि की थी |

१. बसंतराजशकुनावली	×	संस्कृत हिन्दी	र० काल सं० १८२५ श्रावन सुदी ५	
२. नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत	×

५७६१. गुटका सं० २१ | पत्र सं० ८–७४ | आ० ८×५½ इ० | ले० काल सं० १८२० आषाढ सुदी ६ | अपूर्ण |

१. ढोलामारुणी की वार्ता	×	हिन्दी
२. शनिश्चरकथा	×	"
३. चन्दकुंवर की वार्ता	×	"

५७६२. गुटका सं० २२ | पत्र सं० १२७ | आ० ८×६ इ० | ले० काल × | अपूर्ण |

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह हैं |

५७६३. गुटका सं० २३ | पत्र सं० ३६ | आ० ६½×५½ इ० | ले० काल × | अपूर्ण |

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है |

५७६४. गुटका सं० २४ | पत्र सं० १२८ | आ० ७×५½ इ० | ले० काल सं० १७७४ | अपूर्ण | जीर्ण

१. यशोधरकथा	खुशालचन्द काला	हिन्दी	र० काल १७७५
२. पद व स्तुति	×	"	"

विशेष—खुशालचन्दजी ने स्वयं प्रतिलिपि की थी |

५७६५. गुटका सं० २५ | पत्र सं० ७७ | आ० ६×४½ इ० | ले० काल × | अपूर्ण |

विशेष—पूजाओं का संग्रह है |

५७६६. गुटका सं० २६ | पत्र सं० ३६ | आ० ६½×५½ इ० | भाषा—संस्कृत | ले० काल × | अपूर्ण

१. पद्मावतीसहस्रनाम	×	संस्कृत
२. द्रव्यसंग्रह	×	प्राकृत

५७६७. गुटका सं० २७ | पत्र सं० १३८ | आ० ८×६ इ० | ले० काल × | अपूर्ण |

१. पूजासंग्रह	×	संस्कृत

२. प्रद्युम्नरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
३. सुदर्शनरास	"	"
४. श्रीपालरास	"	"
५. आदित्यवारकथा	"	"

५७६८. गुटका सं० २८। पत्र सं० २७६। आ० ७×४½ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय है।

१. नाममाला	धनंजय	संस्कृत
२. अकलंकाष्टक	अकलंकदेव	"
३. त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भट्टारक महीचन्द	"
४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"
५. योगीरासो	जिनदास	हिन्दी

५७६९. गुटका सं० २९। पत्र सं० २५०। आ० ७×४½ इ०। ले० काल सं० १८७४ वैशाख कृष्णा ९। पूर्ण।

१. नित्यनियमपूजासंग्रह	×	हिन्दी	
२. चौबीस तीर्थंकर पूजा	रामचन्द्र	"	
३. कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	"	
४. पंचपरमेष्ठिपूजा	×	"	र० काल सं० १८६२ ले० का० सं० १८७९ स्यौजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी।
५. पंचकल्याणकपूजा	×	हिन्दी	
६. द्रव्यसंग्रह भाषा	द्यानतराय	"	

५७७०. गुटका सं० ३०। पत्र सं० १००। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

१. पूजापाठसंग्रह	×	संस्कृत
२ सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी
३. लघुचाणक्यराजनीति	चाणक्य	"
४. वृद्ध " "	"	"

५. नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत

५७७१. गुटका स० ३१ । पत्र सं० ६०–११० । आ० ७×५ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५७७२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६२ । आ० ५½×५½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. कक्काबत्तीसी	×	हिन्दी
२. पूजापाठ	×	संस्कृत हिन्दी
३. विक्रमादित्य राजा की कथा	×	"
४. शनिश्चरदेव की कथा	×	"

५७७३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×४¾ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. पाशाकेवली (अबजद)	×	हिन्दी
२ ज्ञानोपदेशबत्तीसी	हरिदास	"
३. स्यामबत्तीसी	×	"
४. पाशाकेवली	×	"

५७७४. गुटका सं० ३४ । आ० ५×५ इ० । पत्र सं० ८४ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । बचूलाल छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

५७७६ गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १५ से ७६ । आ० ७×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं एवं पद संग्रह है ।

५७७७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
२. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	"
३. पद–संग्रह	"	"

५७७८. गुटका सं० ३८। पत्र सं० २१०। आ० ५३×३२ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है।

५७७९. गुटका सं० ३९। पत्र सं० ११८। आ० ८३×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८६१। पूर्ण।

विशेष—नानू गोधा ने गाजी के थाना में प्रतिलिपि की थी।

१. गुलालपच्चीसी	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	
२. चंद्रहंसकथा	हर्षकवि	"	र. का सं. १७०८ ले. का. सं. १८११
३. मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	"	
४. आत्मसंबोधन	द्यानतराय	"	
५. पूजासंग्रह	×	"	
६. भक्तामरस्तोत्र (मंत्र सहित)	×	संस्कृत	ले० का० सं० १८११
७. आदित्यवार कथा	×	हिन्दी	ले० का० सं० १८६१

५७८०. गुटका सं० ४०। पत्र सं० ८२। आ० ५३×४ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

१. नखशिखवर्णन	×	हिन्दी
२. आयुर्वेदिकनुसखे	×	"

५७८१. गुटका सं० ४१। पत्र सं० २००। आ० ७३×४३ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—ज्योतिष संबन्धी साहित्य है।

५७८२. गुटका सं० ४२। पत्र सं० १५८। आ० ८×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–पूजा पाठ। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—मनोहरलाल कृत ज्ञानचिंतामणि है।

५७८३. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ८०। आ० ६×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा व पद। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—शनिश्चर एवं आदित्यवार कथायें तथा पदों का संग्रह है।

५७८४. गुटका सं० ४४। पत्र सं० ६०। आ० ६×५ इ०। ले० काल सं० १९५६ फागुन बुदी १४। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्रसंग्रह है।

५७८५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १० । आ० ८×५१/२ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. नित्यपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
२. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"
३. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत

५७८६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २४५ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७८७ गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७१ । आ० ६×४ इ० । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदा ७ । पूर्ण ।

१. भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	संस्कृत
२. वैद्यजीवन	लोलिम्मराज	"
३. सप्तशती	गोवर्द्धनाचार्य ले० काल सं० १७३१	"

विशेष—जयपुर में गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

५७८८. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १७२ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. बारहखडी	सूरत	हिन्दी
२. कक्काबत्तीसी	×	"
३. बारहखडी	रामचन्द्र	"
४. पद व विनती	×	"

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं ।

५७८९. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० २८ । आ० ८१/२×६ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १९५१ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७९०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १५५ । आ० १०१/२×७ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	संस्कृत
२. स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"

३. एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी
४. सबोधपञ्चासिकाभाषा	द्यानतराय	"
५. निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत
६. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
७ सिद्धपूजा	आशाधर	संस्कृत
८. लघुसामायिक भाषा	महाचन्द्र	"
९. सरस्वतीपूजा	मुनिपद्मनन्दि	"

५७६१ गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इ० । ले० काल सं० १९१७ चैत्र सुदी १० अपूर्ण ।

विशेष—चिमनलाल भांवसा ने प्रतिलिपि की थी ।

१. विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी
२. रथयात्रावर्णन	×	"
३. सांवलाजी के मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन	×	"

विशेष—यह रथयात्रा सं० १९२० फागुण बुदी ८ मंगलवार को हुई थी ।

५७६२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० १३२ आ० ६×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा स्तोत्र व पद संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ७० । आ० १०×७ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५० । आ० ८×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७४४ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—नेमिनाथ रासो (ब्रह्मरायमल्ल) एवं अन्य सामान्य पाठ है ।

५७६५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ७-१२८ । आ० ९×५½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) तथा धर्मपरीक्षा भाषा (मनोहरलाल) कृत है ।

५७९६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कंवर वख्तराम के पठनार्थ पं० आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१. नीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत
२. नवरत्नकवित्त	×	हिन्दी
३. कवित्त	×	"

५७९७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० २१७ । आ० ६½×५½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७९८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७९९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ६० । आ० ५×४ इ० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाओं का संग्रह है ।

५८००. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । आ० ९×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास एवं हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी हैं ।

५८०१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है । पुट्ठों के दोनों ओर गणेशजी एवं हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० ७-४९ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ९० । आ० ३½×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

५८०६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

च भण्डार [दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

५८०७. गुटका सं० १ । पत्र सं० १६२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १७५२ पौष । पूर्ण । वे० सं० ७४७ ।

विशेष—प्रारम्भ में आयुर्वेद के नुसखे है तथा फिर सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५८०८. गुटका सं० २ । संग्रहकर्त्ता पं० फतेहचन्द नागोर । पत्र सं० २४८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४८ ।

विशेष—ताराचन्दजी के पुत्र सेवारामजी पाटणी के पठनार्थ लिखा गया था—

१. नित्यनियम के दोहे	×	हिन्दी	ले० काल सं० १८५७
२. पूजन व नित्य पाठ संग्रह	×	,, संस्कृत	ले० काल सं० १८५६
३. सुभषीत	×	हिन्दी	१०८ शिक्षायें हैं ।
४. ज्ञानपदवी	मनोहरदास	,,	
५. चैत्यवंदना	×	संस्कृत	
६. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	हिन्दी	
७. आदित्यवार की कथा	×	,,	
८. नवकार मंत्र चर्चा	×	,,	
९. कर्म प्रकृति का ब्यौरा	×	,,	
१०. लघुसामायिक	×	,,	
११. पाशाकेवली	×	,,	ले० काल० सं १८६६
१२. जैन बद्रीदेश की पत्री	×	,,	,,

५८०९. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५७ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४९ ।

५८१०. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २०६ । आ० ५×५$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा हिन्दी । विषय-पद भजन । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५० ।

५८११. गुटका सं ५ । पत्र सं १२५ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५१ ।

विशेष- सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

५८१२. गुटका सं० ६। पत्र सं० १५१। आ० ६$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५२।

विशेष-प्रारम्भ में आयुर्वेदिक नुसखे भी हैं।

५८१३. गुटका सं० ७। आ० ६×६$\frac{3}{4}$ इ० भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजापाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७५३।

५८१४. गुटका सं० ८। पत्र सं० १३७। आ० ७$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इ०। भाषा हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७५४।

५८१५. गुटका सं० ६। पत्र सं० ७२। आ० ७$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० ७५५।

५८१६. गुटका सं० १०। पत्र सं ३५७। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७५६।

५८१७. गुटका सं० ११। पत्र सं० १२८। आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{4}$ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० ७५७।

५८१८. गुटका सं० १२। पत्र सं० १४६-७१२। आ० ६×४ इ०। भाषा संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ७५८।

विशेष-निम्नपाठों का संग्रह है—

१. दर्शनपच्चीसी	×	हिन्दी
२. पञ्चास्तिकायभाषा	×	"
३. मोक्षपैडी	बनारसीदास	"
४. पंचमेरुजयमाल	×	"
५. साधुवंदना	बनारसीदास	"
६. अखडी	भूधरदास	"
७. गुणमञ्जरी	×	"
८. लघुमंगल	रूपचन्द	"
९. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

१०. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	भैया भगवतीदास	"	र० सं० १७४५
११. बाईस परिषह	भूधरदास	"	
१२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"	र० सं० १७३६
१३. बारह भावना	"	"	
१४. एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	"	
१५. मंगल	विनोदीलाल	"	र० सं० १७४४
१६. पञ्चमंगल	रूपचन्द	"	
१७. भक्तामरस्तोत्र भाषा	नथमल	"	
१८. स्वर्गसुख वर्णन	×	"	
१९. कुदेवस्वरूप वर्णन	×	"	
२०. समयसारनाटक भाषा	बनारसीदास	"	ले० सं० १८६१
२१. दशलक्षणपूजा	×	"	
२२. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	
२३. स्वयंभूस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	
२५. देवागमस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२६. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर स्तुति	चन्द	हिन्दी	
२७. चौबीसठाणा	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	
२८. कर्मप्रकृति भाषा	×	हिन्दी	

५८१९. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ७५९ ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त लघु चाणक्य राजनीति भी है ।

५८२० गुटका सं० १४ । पत्र सं० × । आ० १०×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ७६० ।

विशेष—पञ्चास्तिकाय भाषा टीका सहित है ।

५८२१. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ३–१८४ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६१ ।

५८२२. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२७ । आ० ६½×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६२ ।

५८२३. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । आ० ८½×७½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६३ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७६३ ।

विशेष—यह गुटका बसवा निवासी पं० दौलतरामजी ने स्वयं के पढ़ने के लिए पारसराम ब्राह्मण से लिखवाया था ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण १-८१
२. बनारसीविलास	"	"	८२-१०३
४. तीर्थङ्करों के ६२ स्थान	×	"	१६४-२२०
४. खंडेलवालों की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र ×		"	२२५-२३०

५८२४ गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५-३१५ । आ० ६¾×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६४ ।

५८२५. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ४७ । आ० ८½×६½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६५ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रों का संग्रह है ।

५८२६. गुटका सं० २० । पत्र सं० १६५ । आ० ८×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ ।

५८२७. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×३¾ इ० । भाषा- × । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष—गुटका पानी में भीगा हुआ है ।

५८२८. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

छ भण्डार [दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर]

५८२६. गुटका सं० १। पत्र सं० १७०। आ० ५×५ इ०। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३२।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है। बीच के अधिकांश पत्र गले एवं फटे हुए हैं। मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है।

१. नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्त्ति	हिन्दी	६५ पद्य हैं।
२ नेमीश्वर की बेलि	ठक्कुरसी	"	८८–६५
३. पंचेन्द्रियबेलि	"	"	६६–१०१
४. चौबीसतीर्थंकररास	×	"	१०१–१०३
५. विवेकजकडी	जिनदास	"	१२६–१३३
६. मेघकुमारगीत	पूनो	"	१४८–१५१
७. टंडाणागीत	कविबूचा	"	१५१–१५१
८. बारहअनुप्रेक्षा	अवधू	"	१५३–१६०
		ले० काल सं० १६६२ जेठ बुदी १२	
९. शान्तिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	संस्कृत	१६०–१६३
१०. नेमीश्वर का हिंडोलना	मुनिरत्नकीर्ति	हिन्दी	१६३–१६४

५८३०. गुटका सं० २। पत्र सं० २२। आ० ६×६ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३२।

१. नेमिनाथमंगल	लालचन्द	हिन्दी र० काल १७४४	१–११
२. राजुलपच्चीसी	×	"	१२–२२

५८३१. गुटका सं० ३। पत्र सं० ४–५४। आ० ८×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २११।

१. प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	हिन्दी	४–२७
२. आदिनाथविमती	कनककीर्ति	"	३२
३. बीस तीर्थंकरों की जयमाल	हर्षकीर्ति	"	३२–३६

४. चन्द्रगुप्त के सोलहस्वप्न × हिन्दी ५२-५४

इसके अतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णतः अशुद्ध है।

५८३२. गुटका सं० ४। पत्र सं० ७४। आ० ६½×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है।

५८३३. गुटका सं० ५। पत्र सं० १०-७५। आ० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७६१ माह सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

१. आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	अपूर्ण	१०-१२
२. सप्तव्यसनकवित्त	×	"		
३. पार्श्वनाथस्तुति	बनारसीदास	"		
४. अठारहनाते का चौढाला	लोहट	"		

५८३४. गुटका सं० ६। पत्र सं० २-४२। आ० ६½×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष—शनिश्चरजी की कथा है।

५८३५. गुटका सं० ७। पत्र सं० १२-६५। आ० १०½×५½ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३५।

१. चाणक्यनीति	चाणक्य	संस्कृत	अपूर्ण	१३
२. साखी	कबीर	हिन्दी		१३-१६
३. ऋद्धिमन्त्र	×	संस्कृत		१६-२१
४. प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं व्रतों का चित्र सहित वर्णन		हिन्दी		६५

५८३६. गुटका सं० ८। पत्र सं० २-२६। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७।

१. बलभद्रगीत	×	हिन्दी	अपूर्ण	२-६
२. जोगीरासा	पांडे जिनदास	"		७-११
३. कक्काबत्तीसी	×	"		११-१४
४. "	मनराम	"		१४-१८
५. पद- साधो छोडो कुमति अकेली	विनोदीलाल	"		१८
६. " रे जीव जगत सुपनों जान	छीहल	"		२०

७. ,, भरत भूप घरही में बरागी	कनककीर्त्ति	,,	२०–२१
८. छुहरी– हो सुन जीव श्ररज हमारी या	सभाचन्द	,,	२१–२२
९. परमारथ छुहरी	×	,,	२२–२३
१०. पद– भवि जीवनवि से चन्द्रस्वामी	रूपचन्द	,,	२७
११. ,, जीव सिव देशड ले पधारो	सुन्दर	,,	२८
१२. ,, जीव मेरे जिरावर नाम भजो	×	,,	२९
१३. ,, योगी या तु भावरो इरा देश	×	,,	२९
१४. ,, श्ररहंत गुरा गायो भावो मन भावौ	श्रजयराज	,,	२९–३१
१५. ,, गिर देखत दालिद्र भाज्या	×	,,	३१
१६. परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३२–३५
१७. पद– घट पटादि नैननि गोचर जो नाटिक पुद्गल कैरो	मनराम	हिन्दी	३६
१८. ,, जिय तैं नरभव योंही खोयो	मनराम	,,	३२
१९. ,, श्रंखियां श्राज पवित्र भई	,,		
२०. ,, बनो बन्यो है श्राजि हेली नेमीसुर जिन देखीयो	जगतराम		४०
२१. ,, नमो नमो जै श्री श्ररिहंत	,,	,,	४१
२२. ,, माधुरी जिनबानी सुन हे माधुरी	,,	,,	४२–४४
२३. सिव देवी माता को श्राठवों	मुनि शुभचन्द्र	,,	४४-४६
२४. पद–	,,	,,	४६–४८
२५. ,,	,,	,,	४८–४९
२६. ,, हलदी चहोडी तैल चहोड्यौ श्रपन कुमारि का	,,	,,	४९–५१
२७. ,, ले जदि साहरिए ल्यायौ नोली घोडीया		,,	५१–५३
२८. श्रन्य पद		..	५३–५९

५८३७. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ६–१२१ । श्रा० ६×४½ इ० । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० सं० २९८ ।

५८३८. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४ । आ० ८३×६ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल × । वे० सं० २६६ ।

१. जिनपच्चीसी	नवल	हिन्दी	१–२
२. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	”	२–४

५८३९. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १०–६० । आ० ५३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । वे० सं० ३०० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५८४०. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ११५ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । वे० सं० ३०१ ।

५८४१. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३० । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०२ ।

५८४२. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६–१७ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० सं० × । अपूर्ण । वे० सं० ३०३ ।

५८४३. गुटका सं० १४ । पत्र सं० २०१ । आ० ११×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०४

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५८४४. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ७७ । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल सं० १६०३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३०५ ।

विशेष—इखलाक मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है । मूल पुस्तक फारसी भाषा में है । छोटी २ कहानियां हैं ।

५८४५. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२६ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०६

विशेष—रामचन्द (कवि बालक) कृत सीता चरित्र है ।

५८४६. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ३–२६ । आ० ४×२ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४०७ ।

१. देवपूजा	संस्कृत	अपूर्ण
२. वृषभजी का रासो	हिन्दी	१०–२१
३. नेमिनाथ राजुल का बारहमासा	”	२१–६६

५८४७ गुटका सं० १८ । पत्र सं० १६० । आ० ८३×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं ३०८

विशेष—पत्र सं० १ से ३८ तक सामान्य पाठों का सग्रह है ।

१. सुन्दर शृङ्गार	कविराजसुन्दर	हिन्दी	३७४ पद्य है	३६–८०
२. बिहारीसतसई टीका सहित	×	"	अपूर्ण	८१–८५
			७४ पद्यों की ही टीका है ।	
३. बखत विलास	×	"		८६–१०३
४. बृहत्घंटाकर्णकल्प	कवि भोगीलाल	"		१०४–६६०

विशेष—प्रारम्भ के ८ पत्र नही हैं आगे के पत्र भी नही हैं ।

इति श्री कछवाह कुलभवननरुकासो राउराजा बख्तावरसिंह आनन्द कृते कवि भोगीलाल विरचिते बखत बिलासे विभाव वर्णनो नाम तृतीय बिलासः ।

पत्र ८–५६ नायक नायिका वर्णन ।

इति श्री कछवाहा कुलभूषननरुकासी। राउराजा बख्तावर सिंह आनन्द कृते भोगीलाल कवि विरचिते बखतविलासनायकवर्णनं नामाष्टको विलास: ।

५८४८. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ५४ । आ० ८×६ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ ।

विशेष—खुशालचन्द कृत धन्यकुमार चरित है पत्र जीर्ण है किन्तु नवीन है ।

५८४६. गुटका सं० २० । पत्र सं० २१ । आ० ६×६ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१० ।

१. ऋषिमंडलपूजा	सदासुख	हिन्दी	१–१०
२. अकम्पनाचार्यादि मुनियों की पूजा	×	"	१६
३. प्रतिष्ठानामावलि	×	"	२१

५८५०. गुटका स० २० (क) । पत्र सं० १०२ । आ० ६×६ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३११ ।

५८५१. गुटका स० २१ । पत्र सं० २८ । आ० ८३×६३ इ० । ले० काल सं० १६३७ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३१३ ।

विशेष—मडलाचार्य केशवसेन कृष्णसेन विरचित रोहिणी व्रत पूजा है ।

५८५२. गुटका सं० २२। पत्र सं० १६। आ० ११×३ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१४।

वज्रदन्तचक्रवर्ति का बारहमासा	×	हिन्दी	६
२. सीताजी का बारहमासा	×	"	६-१२
३. मुनिराज का बारहमासा	×	"	१३-१६

५८५३. गुटका सं० २३। पत्र सं० २३। आ० ८३/४×६ इ०। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१५।

विशेष—गुटके में अष्टाह्निकाव्रतकथा दी हुई है।

५८५४. गुटका सं० २४। पत्र स० १५। आ० ८३/४×६ इ०। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। ले० काल सं० १९८३ पौष बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३१६।

विशेष—गुटके में ऋषिमंडलपूजा, अनन्तव्रतपूजा, चौबीसतीर्थंकर पूजादि पाठों का संग्रह है।

५८५५. गुटका सं० २५। पत्र सं० ३५। आ० ८×६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१७।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है।

५८५६. गुटका सं० २६। पत्र सं० ५९। आ० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले० काल सं० १९२१ माघ बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ३१८।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

५८५७. गुटका सं० २७। पत्र सं० ५३। आ० ६×५ इ०। ले० काल सं० १९५४। पूर्ण। वे० स० ३१९।

विशेष— गुटके में निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं।

१. धर्मचाह	×	हिन्दी	२
२. बंदनाजखडी	बिहारीदास	"	३-४
३. सम्मेदशिखरपूजा	गंगादास	संस्कृत	५-२०

५८५८ गुटका सं० २८। पत्र सं० १६। आ० ८×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२०।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत है।

५८५९. गुटका सं० २९। पत्र सं० १७९। आ० ९×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२१।

विशेष—बिहारीदास कृत सतसई है। दोहा सं० ७०७ है। हिन्दी गद्य पद्य दोनों में ही अर्थ है टीका-काल सं० १७८५। टीकाकार कवि कृष्णदास हैं। आदि अन्तभाग निम्न हैः—

प्रारम्भः—   अथ बिहारी सतसई टीका कवित्त बंध लिख्यते:—

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरी सोइ।
जातन की झांई परै, स्याम हरित दुति होइ॥

टीका—यह मंगलाचरन है तहां श्री राधा जू की स्तुति ग्रंथ कर्त्ता कवि करतु है। तहां राधा और हटे यांतै जा तन की झांई परै स्याम हरित दुति होइ या पद तें श्री वृषभान सुता की प्रतीति हुई—

कवित्त—

जाकीप्रभा अवलोकत ही तिहु लोक की सुन्दरता गहि वारि।
कृष्ण कहै सरसी रुहे नैंननि कौ नामु यहा सुद मंगल कारो॥
जातन की झलकै झलकै हरित द्युति स्याम को होत निहारी।
श्री वृषभान कुंमारि कृपा कें सुराधा हरौ भव वाधा हमारी॥ १॥

अन्तिम पाठ—   माथुर विप्र ककोर कुल लह्यौ कृष्ण कवि नाउ।
सेवकु हौं सब कविनु कौ बसतु मधुपुरी गांउ॥ २४॥
राजा मल्ल कवि कृष्ण पर ढरयौ कृपा के ढार।
भांति भांति बिंपदा हरी दीनी दरवि अपार॥ २५॥
एक दिना कवि सौ नृपति कही कही को जात।
दोहा दोहा प्रति करौ कवित बुद्धि अवदात॥ २६॥
पहले हूं मेरे यह हिय मैं हुंतौ विचारु।
करौ नाइका भेंद को ग्रंथ बुद्धि अनुसार॥ २७॥
जे कीनै पूरव कवितु सरस ग्रंथ सुखदाइ।
तिनहिं छांडि मेरे कवित को पढि है मनुलाइ॥ २८॥
जानिय हैं अपनै हियें कियो न ग्रंथ प्रकास।
नृप की आइस पाइकै हिय में भये हुलास॥ २९॥
करे सात सै दोहरा सु कवि बिहारीदास।
सब कोऊ तिनको पढे गुनै सुनै सविलास॥ ३०॥
बडौ भरोसों जानि मैं गह्यौ आसरो आइ।
यातैं इन दोहानु संग दीनै कवित लगाइ॥ ३१॥

उक्ति जुक्ति दोहानु की अक्षर जोरि नवीन।

करे सातसौ कवित में सीखे सकल प्रवीन ॥ ३२ ॥

मै अंत ही दीठ्यौ करी कवि कुल सरल सुभाइ।

भूल चूक कछु होइ सो लीजौ समझि बनाइ ॥ ३३ ॥

सत्रह सतसै आगरे असी बरस रविवार।

कातिक बदि चोथि भये कवित सकल रससार ॥ ३४ ॥

इति श्री विहारीसतसई के दोहा टीका सहित संपूर्ण।

सतसै ग्रंथ लिख्यौ श्री राजा श्री राजा साहिबजी श्रीराजामल्लजी कौं। लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी मौजे अंजनगोई के प्रगनै पछोर के। मिती माह सुदी ७ बुधवार संवत् १७९० मुकाम प्रवेस जयपुर।

५८६०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १६८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३५२ ।

१. तत्वार्थसूत्रभाषा	कनककीर्त्ति	हिन्दी ग०	अपूर्ण
२. शालिभद्रचोपई	जिनसिंह सूरि के शिष्य मतिसागर	" प० र० काल १६७८	"

ले० काल सं० १७४३ भादवा सुदी ४। अजमेर प्रतिलिपि हुई थी।

स्फुट पाठ	×	"

५८६१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

५८६२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १७४ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है। तथा ८८ हिन्दी पद नैन (सुखनयनानन्द) के हैं।

५८६३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२५ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चतुर्विंशतिजिनपूजा है।

५८६४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×६ इ० । विषय-पूजा । ले० काल सं० १८६६ श्रावण सुदी ११ । वे० सं० ३२६ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्द्र) एवं स्तोत्र संग्रह है। हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

५८६५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १७ । म्रा० ६X७ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२७ ।

विशेष—पावापरि सोनागिर पूजा है ।

५८६६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ७ । म्रा० ८X५¾ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा पाठ एवं ज्योतिषपाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२८ ।

१. बृहत्षोडशकारण पूजा	X	संस्कृत	
२. चाणक्यनीति शास्त्र	चाणक्य	"	
३ शालिहोत्र	X	संस्कृत	अपूर्ण

५८६७ गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ३० । म्रा० ७X६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२६ ।

५८६८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २४ । म्रा० ५X४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३३० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । इसी में प्रकाशित पुस्तकें भी बन्धी हुई हैं ।

५८६९. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ४४ । म्रा० ६X४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३३१ ।

विशेष—देवसिद्धपूजा आदि दी हुई हैं ।

५८७०. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ८० । म्रा० ४X६¾ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय आयुर्वेद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३३२ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये है पदार्थों के गुणों का वर्णन भी है ।

५८७१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० ७१ । म्रा० ७X५¾ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३३३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८७२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ८६ । म्रा० ७X५¾ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८४६ । अपूर्ण । वे० सं० ३३४ ।

विशेष—विदेह क्षेत्र के बीस तीर्थंकरो की पूजा एवं अढाई द्वीप पूजा का संग्रह है । दोनों ही अपूर्ण हैं । जौहरी लाला ने प्रतिलिपि की थी ।

५८७३. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २८ । आ० ८½×७ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

५८७४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ ।

विशेष—हिन्दी पद एवं पूजा संग्रह है ।

५८७५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १०८ । आ० ८½×३½ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३७ ।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र, दशलक्षण, सोलहकारण आदि का संग्रह है ।

५८७६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ५५ । आ० ८×५ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा पाठ ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूजा, पार्श्वपूजा, सोलहकारण दशलक्षण पूजाएं हैं ।

५८७७. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ६६ । आ० ७×५ इ० । भाषा हिन्दी । विषय–कथा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३९ ।

१. जेष्ठजिनवरकथा	खुशालचन्द	हिन्दी	१–६
		र० काल सं० १७८२ जेठ सुदी ६	
२ आदित्यव्रतकथा	”	हिन्दी	६१–१६
३. समवसरणस्थान	”	”	१६–२६
४ मुकुटसप्तमीव्रतकथा	”	”	२६–३०
५ दशलक्षणव्रतकथा	”	”	३०–३४
६. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	”	”	३४–४०
७ रक्षाविधानकथा	”	संस्कृत	४१–४५
८. उमेश्वरस्तोत्र	”	”	४६–६६

५८७८ गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×५ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १६६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० ।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है ।

५८७९. गुटका सं० ४९। पत्र सं० ४९। आ० ५×५ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४१।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१–१३
२. ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	संस्कृत	१४–२०
३. कक्काबत्तीसी	नन्दराम	„ ले० काल १८८८	३४–४२

५८८०. गुटका सं० ५०। पत्र सं० २५४। आ० ५×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–पूजा पाठ ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४२

५८८१. गुटका स० ५१। पत्र सं० १६३। आ० ७¾×४¾ इ०। भाषा–हिन्द संस्कृत। ले० काल सं० १८८२। पूर्ण। वे० सं० ३४३।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं।

१. नवग्रहगर्भितपार्श्वस्तोत्र	×	प्र.कृत	१–२
२. जीवविचार	आ० नेमिचन्द्र	„	३–८
३. नवतत्वप्रकरण	×	„	६–१४
४. चौबीसदण्डकविचार	×	हिन्दी	१५–६८
५. तेईस बोल विवरण	×	„	६६–६५

विशेष— दाता की कसौटी दुरभिक्ष परे जान जाइ।
सूर की कसौटी दोई अनी जुरे रन मे ॥
मित्र की कसौटी मामलो प्रगट होय।
हीरा की कसौटी है जौहरी के घन मे ॥
कुल को कसौटी आदर सनमान जानि।
सोने की कसौटी सराफन के जतन में ॥
कहै जिननाम जैसी वस्त तैसी कीमति सौं।
साधु की कसौटी है दुष्टन के बीच में ॥

१. विनती	समयसुन्दर	हिन्दी	१०३–१०३

२. द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	"		११७–१४१

र० काल सं० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७९ फाल्गुन सुदी ९ ।

३. गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी		१४४–१४५
४. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	ले० काल १८८१	१४६–१४७
५. कृपणपच्चीसी	विनोदीलाल	"	" " १८८२	१४७-१५४
६. तेरापन्थ बीसपन्थ भेद—	×	"		१५५–१६७

५८८२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ३५ । म्रा० ७३/४×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८८५ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ८० । म्रा० ६१/२×५१/२ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ४४ । म्रा० ६१/२×६ इ० । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एवं शान्तिपाठ है ।

५८८५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २० । म्रा० ६१/२×६ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

५८८६ गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ६८ । म्रा० ६१/२×५१/२ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ३४८ ।

५८८७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० १७ । म्रा० ६१/२×५१/२ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एवं कथा दी हुई है ।

५८८८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १०४ । म्रा० ७×६ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८८९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० १२६ । म्रा० ६१/२×५ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—सन्निपातनिदान नामक ग्रंथ है ।

५८६०. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ११३ । आ० ४×३ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं बनारसी विलास के कुछ पद एवं पाठ हैं ।

५८६१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० २२३ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८६२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २०८ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५४ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है:—

५८६३ गुटका सं० ६३ । पत्र सं० २६३ । आ० ६½×६ इ० । भाषा–हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. हनुमतरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी		२४-६७
		ले० काल सं० १८६० फागुण बुदी ७ ।		
२. शालिभद्रसज्भाय	×	हिन्दी		६८–६६
३. जलालगाहाणी की वार्ता	×	"		१०१–१४७
		ले० काल १८५६ माह बुदी ३		

विशेष—कोठ्यारी प्रतापसिंह पठनार्थ लिखी हलमूरिमध्ये ।

४. तंत्रसार	×	"	पद्य सं० ४८	१४८–१५२
५. चन्दकुंवर की वार्ता	×	"		१५२–१६४
६. बम्बरनिसांणी	जिनहर्ष	"		१६५–१६६
७. सुदयवछसालिंगा री वार्ता	×	"	अपूर्ण	१७०–२६३

५८६४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ६७ । आ० ६½×४ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । पूर्ण । ले० काल × । वे० सं० ३५६ ।

विशेष—नवमङ्गल बिनोदीलाल कृत एवं पद स्तुति एवं पूजा संग्रह है ।

५८६५. गुटका सं० ६५। पत्र सं० ६३। आ० ६×४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५७।

विशेष—सिद्धचक्रपूजा एवं पद्मावती स्तोत्र है।

५८६६. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ४५। आ० ६×४½ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय–पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५८।

५८६७. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ४६। आ० ५½×४½ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५९।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, पंचमंगल, देवपूजा आदि का संग्रह है।

५८६८. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ६४। आ० ४×३ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–स्तोत्र संग्रह ले० काल ×। वे० सं० ३६०।

५८६९. गुटका सं० ६९। पत्र सं० १५१। आ० ७ ४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६१।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठों का संग्रह है।

१, सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति	हिन्दी		१–१४
२. महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	"		१४–१६
३ धर्मपरीक्षा भाषा	विशालकीर्ति	"	ले० काल १८६४	३०–१५१

विशेष—नागपुर में पं० चतुर्भुज ने प्रतिलिपि की थी।

५९००. गुटका सं० ७०। पत्र सं० ५६। आ० ५½×५ इ० भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८०२ पूर्ण। वे० स० ३६२।

१. महादण्डक	×	हिन्दी	३–५३

ले० काल सं० १८०२ पौष बुदी १३।

विशेष—उदयविमल ने प्रतिलिपि की थी। शिवपुरी में प्रतिलिपि की गई थी।

२. बोल	×	"	५४–५६

५९०१. गुटका सं० ७१। पत्र सं० १२३। आ० ६½×४ इ० भाषा संस्कृत हिन्दी। विषय–स्तोत्रसंग्रह ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६३।

५९०२. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० १५७ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ ।

विशेष—पूजा पाठ व स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५९०३. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० ९६ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६५ ।

१. पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी	१–४४
२. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	४५–९६

५९०४. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ५० । आ० ५३⁄४×५३⁄४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३६६ ।

विशेष—प्रारम्भ में पूजा पाठ तथा नुसखे दिये हुये हैं तथा अन्त के १७ पत्रों में संवत् १०३३ मे भारत के राजाओं का परिचय दिया हुआ है ।

५९०५. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० ६० । आ० ५१⁄२×५१⁄२ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५९०६. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० १८–१३७ । आ० ७×३१⁄२ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ ।

विशेष—प्रारम्भ में कुछ मंत्र हैं तथा फिर आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५९०७. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० २७ । आ० ६३⁄४×४१⁄२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३६९ ।

१. ज्ञानचिन्तामणि	मनोहरदास	हिन्दी	१२६ पद्य हैं	१–११
२. वज्रनाभिचक्रवर्ती की भावना	भूधरदास	"		११–२१
३. सम्मेदगिरिपूजा	×	"	अपूर्ण	२२–२७

५९०८. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १२० । आ० ६×३१⁄२ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३७१ ।

विशेष—नाममाला तथा लब्धिसार आदि में से पाठ है ।

५६०६. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३० । आ० ६¾×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८२"" । पूर्ण । वे० सं० ३७१ ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत प्रद्युम्नरास है ।

५६१०. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ५४–१३६ । आ० ६¾×६ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द	प्राकृत	अपूर्ण	५४–७६
२. मूलसंघ की पट्टावलि	×	संस्कृत		८०–८३
३. गर्भषडारचक्र	देवनन्दि	,,		८४–६०
४. स्तोत्रत्रय	×	संस्कृत		६०–१०५
	एकीभाव, भक्तामर एवं भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र हैं ।			
५. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	,,	१० पद्य हैं	१०५–१०६
६. पार्श्वनाथस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	,,	६ ,,	१०६–१०७
७. परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	,,	१४ ,,	१०७–१०६
८. सामायिक पाठ	अमितिगति	,,		११०–११३
६. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत		११३–११६
१०. आराधनासार	,,	,,		१२४–१३४
११. समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	,,		१३४–१३८

५६११. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २–५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७३० भादवा सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—कामशास्त्र एवं नायिका वर्णन है ।

५६१२. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० ६¾×६ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—पूजा तथा कथाओं का संग्रह है । अन्त में १०६ से ११३ तक १८ वीं शताब्दी का (१७०१ से १७५६ तक) वर्षा अकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है ।

५६१३. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । जीर्ण । पूर्ण । वे० सं० ३७५ ।

१ कृष्णरास	×	हिन्दी	पद्य सं० ७६ है	१-१६
		महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है।		
२. कालीनागदमन कथा	×	,,		१६-२६
३. कृष्णप्रेमाष्टक	×	,,		२६-२८

५६१४. गुटका सं० ८४। पत्र सं० १५२-२४१। आ० ६¾×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७६।

विशेष—वैद्यकसार एवं वैद्यवल्लभ ग्रन्थों का संग्रह है।

५६१५. गुटका सं० ८५। पत्र सं० ३०२। आ० ८×५ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७७।

विशेष—दो गुटको का एक गुटका कर दिया है। निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है।

१. चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हिन्दी	११ पद्य हैं	२०-२२
२. बेलि	छीहल	,,		२२-२५
३. टंडाणागीत	बूचा	,,		२५-२८
४. चेतनगीत	मुनिसिंहनन्दि	,,		२८-३०
५. जिनलाडू	ब्रह्मरायमल्ल	,,		३०-३१
६. नेमीश्वरचौमासा	सिंहनन्दि	,,		३२-३३
७ पंथीगीत	छीहल	,,		४१-४२
८ नेमीश्वर के १० भव	ब्रह्मधर्मरुचि	,,		४३-४७
६. गीत	कवि पल्ह	,,		४७-४८
१० सीमंधरस्तवन	ठक्कुरसी	,,		४६-५०
११. आदिनाथस्तवन	कवि पल्ह	,,		४६-५०
१२. स्तोत्र	भ० जिनचन्द्र देव	,,		५०-५१
१३. पुरन्दर चौपई	ब्र० मालदेव	,,		५२-८७
		ले० काल सं० १६०७ फागुण बुदी ६।		
१४ मेघकुमार गीत	पूनो	,,		१२-१५
१५. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	,,		२६-२६

१६. बलिभद्र गीत	अभयचन्द	"	३०-३६
१७ भविष्यदत्त कथा	ब्रह्मरायमल्ल	"	४०-८५
१८. निर्दोषसप्तमीव्रत कथा	"	"	
		लेo काल १६४३ आसोज १३ ।	
१९. हनुमन्तरास	"	"	अपूर्ण

५६१६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० १८८ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र । ले० काल सं० १८८२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३७८ ।

५६१७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३०० । आ० ५¾×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों के अतिरिक्त रूपचन्द, बनारसीदास तथा विनोदीलाल आदि कवियों कृत हिन्दी पाठ है ।

५६१८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५६१९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० २-२६६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	संस्कृत		१८-२०
२. बारह अनुप्रेक्षा	×	प्राकृत	४७ गाथायें हैं ।	२१-२५
३. भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	संस्कृत		
४. अन्य स्फुट पाठ एवं पूजायें	×	संस्कृत हिन्दी		

५६२०. गुटका सं० ९० । पत्र सं० ३-६१ । आ० ८×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ ।

विशेष—नवलराम के पदों का संग्रह है ।

५६२१ गुटका सं० ९१ । पत्र सं० १४-४६ । आ० ८½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

५६२२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८४ ।

विशेष—सम्मेदगिरि पूजा है ।

५६२३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. चेतनचरित	भैया भगवतीदास	हिन्दी	१–१०
२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	११–१५
३. लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	"	३३–३४
४. चौरासी जाति की जयमाल	×	हिन्दी	३६–४०
५. सोलहकारणकथा	ब्रह्मज्ञानसागर	हिन्दी	७१–७४
६. रत्नत्रयकथा	"	"	७४–७६
७. आदित्यवारकथा	भाऊकवि	"	७६–८६
८. दोहाशतक	रूपचन्द	"	९४–९६
९. त्रेपनक्रिया	ब्रह्मगुलाल	"	९७–९९
१०. अष्टाह्निका कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	"	१००–१०४
११. अन्यपाठ	×	"	१०५–१२३

५६२४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ७–७९ । आ० ५×३½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८६ ।

विशेष—देवाब्रह्म के पदों का संग्रह है ।

५६२५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ३–९६ । आ० ९×५½ इ० । भाषा हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८७ ।

१. भविष्यदत्तकथा	ब्रह्मरायमल	हिन्दी	अपूर्ण	३–७०
		ले० काल सं० १७६० कार्त्तिक सुदी १२		
२. हनुमतकथा	"	"		७१–९६

५६२६. गुटका सं० ९६ । पत्र सं० ८९ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ ।

१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्रयंत्रसहित	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१-४३
२. पद्मावतीकवच	×	"	४३-५२
३. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	५२-६३
४. पद्मावतीस्तोत्र बीजमंत्र एवं साधन विधि	×	"	६३-८६
५. पद्मावतीपटल	×	"	८६-८७
६. पद्मावतीदंडक	×	"	८७-८६

५६२७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६-११३ प्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३८६ ।

१. स्फुटवार्त्ता	×	हिन्दी	अपूर्ण	६-२२
२. हरिचन्दशतक	×	"		२३-६६
३. श्रीध्रुवचरित	×	"		६७-६३
४. मल्हारचरित	×	"	अपूर्ण	६३-११३

५६२८. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५३ । प्रा० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६० ।

विशेष—स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६२९. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ६-१२६ । प्रा० ८½×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ ।

५६३०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० ८८ । प्रा० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६२ ।

१. आदित्यवारकथा	×	हिन्दी	१४-३४
२. पक्की स्याही बनाने की विधि	×	"	३५
३. संकट चौपई कथा	×	"	३८-४३
४. कक्का बत्तीसी	×	"	४५-४७
५. निरंजन शतक	×	"	५६-८४

विशेष—लिपि विकृत है पढने में नहीं आती ।

५९३१. गुटका सं० १०१। पत्र सं० २३। प्रा० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६३।

विशेष—कवि सुन्दर कृत नायिका लक्षण दिया हुआ है। ४२ से १५० पद्य तक है।

५९३२. गुटका सं० १०२। पत्र सं० ७८-१०१। प्रा० ८×७ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६४।

१. चतुर्दशी कथा डालूराम हिन्दी र० काल १७६५ प्र. जेठ सुदी १०

ले० काल सं० १७६५ जेठ सुदी १४। अपूर्ण।

विशेष—२६ पद्य से २३० पद्य तक हैं।

मध्य भाग—

माता ऐसो हठ मति करौ, संजम विना जीव न निसतरै।
कांकी माता काको बाप, प्रातमराम अकेलो प्राप॥ १७६॥

दोहा—

प्राप देखि पर देखिये, दुख सुख दोउ भेद।
प्रातम ऐक विचारिये, भरमन कहु न छेद॥ १७७॥
मंगलाचार कंवर को कीयो, दिख्या लेण कवर जब गयो।
सुवामी आगे जोड्या हाथ, दीख्य दोह मुनीमुर नाथ॥ १७८॥

अन्तिमपाठ—

बुधि सारु कथा कही, राजघाटी मुलतान।
करम कटक मैं देहरौं बैठो पचे सु जांण॥ २२८॥
सतरासै पचावनै प्रथम जेठ सुदि जानि।
सोमवार दसमी मानी पूरण कथा वखानि॥ २२६॥
खंडेलवाल बोहरा गोत, प्रांबावती मैं वास।
डालु कहै मति मौ हंसौ, हूं सबन कौ दास॥ २३०॥
महाराजा बीसनसिंहजी प्राया, साह्या प्राल की लार।
जो या कथा पढै सुणै, सो पुरिष मैं सार॥ १३१॥

चौदश की कथा संपूर्ण। मिती प्रथम जेठ सुदी १४ संवत् १७६५

२. चौदशकीजयमाल	×	हिन्दी	६३-६४
३. तारातंबोलकी कथा	×	" ले० काल सं० १७६३	६४-६६

४. नवरत्न कवित्त	बनारसीदास	"		६७-६६
५. ज्ञानपच्चीसी	"	"		६८-१००
६. पद	×	"	अपूर्ण	१००-१०१

५६३३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १०-५५ । आ० ८½×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

ज भण्डार [दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

५६३५. गुटका सं० १ । पत्र सं० १४० । आ० ७½×५½ इ० । लिपि काल × ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. देहली के बादशाहों की नामावलि एवं परिचय	×	हिन्दी	ले० काल सं० १८५२ जेठ बुदी ५ ।	१-१६
२. कवित्तसंग्रह	×	"		२०-४४
३. शनिश्चर की कथा	×	"	गद्य	४५-६७
४. कवित्त एवं दोहा संग्रह	×	"		६८-६४
५. द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	"	ले० काल १८६६ पौष बुदी ५ ।	६५-६६

विशेष—रणथम्भोर में लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६. गुटका सं० २ । पत्र सं० १०६ । आ० ५×४½ इ० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६३७. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ३-१५३ । आ० ६×५½ इ० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. गीत-धर्मकीर्ति	×	हिन्दी	३-४

(जिणवर ब्याइयवाणी, भवि जिसया फलु पाम)

२. गीत—(जिणवर ही स्वामी चरण नमाम, सरसति स्वामिनि वीनऊं हो)

१. पुष्पाञ्जलिजयमाल	×	अपभ्रंश	७–२४
२. लघुकल्याणपाठ	×	हिन्दी	२४–२६
३. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	४६–६०
४. आराधनासार	"	"	८३–१००
५. द्वादशानुप्रेक्षा —	लक्ष्मीसेन	"	१००–१११
६. पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	१११–११२
७. द्रव्यसंग्रह	आ० नेमिचन्द	प्राकृत	१४६–१५१

५६३८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १८६ । आ० ६×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४२ आषाढ सुदी १५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पार्श्वपुराण	भूधरदास	हिन्दी		१–१०२
२. एकसोगुनहत्तरजीव वर्णन	×	"	१८४२	१०४
३. हनुमन्त चौपाई	ब्र० रायमल	"	१८२२ आषाढ सुदी ३	"

५६३६. गुटका स० ५ । पत्र सं० १४० । आ० ७½×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६४०. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २१३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५८४१. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २२० । आ० ६×७½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पं० देवीचन्दकृत हितोपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामें अर्थ दिया हुआ है । भाषा गद्य और पद्य दोनों में है । देवीचन्द ने अपना कोई परिचय नहीं लिखा है । जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी । भाषा साधारण है —

अब तेरी सेवा में रहि हों । असै कहि गंगदत्त कुवा महि ते नीकरो ।

दोहा—छुटो काल के गाल में अब कहो काल न आय ।
ओ नर अरहट मालतें नयो जनम तन पाय ।।

वार्त्ता—सांप की दाढ मैं तै छूटो अरु कही नयो जनम पायो । कूवे में तै बाहरि आय यो कही वहां सांप कितनेक वेर तो वाट देखो । न आयो जब आतुर भयो । तब यो कही में कहा कीयो । जदपि कुवा के मेंढक सब खायो वै अब लग गंगादत्त को न खायो तब लग रञ्च कछु खायो नहीं ।

५६४२. गुटका सं० ८। पत्र सं० १६६-४३०। आ० ९×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—बुलाकीदास कृत पांडवपुराण भाषा है।

५६४३ गुटका स० ९। पत्र स० १०१। आ० ७३⁄४×६१⁄२ इ०। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एव सामान्य पाठो का सग्रह है।

५६४४ गुटका सं० १०। पत्र स० ११८। आ० ८१⁄२×६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सग्रह। ले० काल स० १८६० माह बुदी ५। पूर्ण।

१ सुदरविलास	सुन्दरदास	हिन्दी	१ से ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज खडेलवाल ने प्रतिलिपि की थी।

२ बारहखडी	दत्तलाल	"	

विशेष—९ पद्य है।

५६४५. गुटका स० ११। पत्र स० ४२। आ० ८१⁄२×६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल स० १९०८ चैत बुदी ६। पूर्ण।

विशेष—वृंदसतसई है जिसम ७०१ दोहे हैं। दसकत चौमनलाल कालख हाला का।

५६४६. गुटका स० १२। पत्र स० २०। आ० ८×६१⁄२ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १९६० आसोज बुदी ९। पूर्ण।

विशेष—पचमेरु तथा रत्नत्रय एव पार्श्वनाथस्तुति है।

५६४७ गुटका सं० १३। पत्र सं० १५५। आ० ८×६१⁄२ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७६० ज्येष्ठ सुदी १। अपूर्ण।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमंदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, अठारा नाते का चौढाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ स्तुति [पद्मप्रभदेव कृत] पंचपरमेष्ठी गुणमाल, शान्तिनाथस्तोत्र आदित्यवार कथा [भाऊकृत] नवकार रासो, जोगी रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति आदि।

बीच के १०० से १३२ पत्र नहीं हैं। पीछे काटे गये मालूम होते हैं।

ञ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाण्ड्या जयपुर]

५६४८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २० । आ० ५½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १९५८ । पूर्ण । वे० सं० २७ ।

विशेष—आलोचनापाठ सामायिकपाठ छहढाला (दौलतराम) कर्मप्रकृतिविधान (बनारसीदास) अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल आदि पाठों का संग्रह है ।

५६४९. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२ । आ० ५½×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९ ।

विशेष—वीररस के कवित्तो का संग्रह है ।

५६५०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६० । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वे० सं० ३० ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६५१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १०१ । आ० ६×५' इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ जिनसहस्रनामस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	१-११
२ लहुरी नमोकारका	विश्वभूषण	"	१९-२१
३ पद- आतम रूप सुहावना	द्यानतराय	"	२२
४ विनती	×	"	२३-२४
विशेष—रूपचन्द ने आगरे मे स्वपठनार्थ लिखी था ।			
५ सुखघडी	हर्षकीर्त्ति	"	२४-२५
६ सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	२५-४७
७ अध्यात्मदोहा	रूपचन्द	"	४७-५५
८ साधुवंदना	बनारसीदास	"	५५-५८
९ मोक्षपैडी	"	"	५८-६१
१० कर्मप्रकृतिविधान	"	"	७६-९१

११. बिनती एवं पदसंग्रह	×	हिन्दी	९१-१०१

५६५२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ६-२६ । प्रा० ४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ३२ ।

विशेष—नेमिराजुलपच्चीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भौजाई का झगड़ा आदि पाठों का संग्रह है ।

५६५३. गुटका सं० ६ । पत्र स० १६ । प्रा० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४१ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—पद, चौरासी न्यात की जयमाल, चौरासी जाति वर्णन ।

५६५४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ७ । प्रा० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९४३ बैशाख सुदी १ । अपूर्ण । वै० स० ४२ ।

विशेष—विषापहारस्तोत्र भाषा एव निर्वाणकाण्ड भाषा है ।

५६५५. गुटका स० ८ । पत्र सं० १८४ । प्रा० ७×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ४३ ।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१-३५
२. छहढाला (अक्षरबावनी)	"	"	३५-३९
३. धर्मपच्चीसी	"	"	३९-४२
४. तत्त्वसारभाषा	"	"	४२-४९
५. सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	संस्कृत	४९-१७५
६. जिनसहस्रनामस्तवन	जिनसेनाचार्य	"	१-१२

ले० काल सं० १७९८ फागुन सुदी १०

५६५६. गुटका सं० ९ । पत्र सं० १३ । प्रा० ६½×४½ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल सं० १९१८ । पूर्ण । वै० सं० ४४ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

५६५७. गुटका सं० १० । पत्र सं० १०५ । प्रा० ८×७ इ० । ले० काल × ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१९
२. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२०-२४

३. बारहग्रक्षरी	×	संस्कृत	२४–२७
४. समाधिरास	×	पुरानी हिन्दी	२७–२६

विशेष—पं० डालूराम ने अपने पढने के लिए लिखा था।

५. द्वादशानुप्रेक्षा	×	पुरानी हिन्दी	२६–३१
६. योगीरासो	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३२–३३
७. श्रावकाचार दोहा	रामसिंह	„	५३–६३
८. षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	८४–१०४
६. षटलेश्या वर्णन	×	संस्कृत	१०४–१०५

५६५८. गुटका सं० ११। पत्र सं० ३५। (खुले हुये शास्त्राकार) आ० ७१/२×५ इ०। भाषा–हिन्दी ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

५६५६. गुटका सं० १२। पत्र सं० ५०। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १००।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

५६६०. गुटका सं० १३। पत्र सं० ४०। आ० ६×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०१।

१. चन्दकथा	लक्ष्मण	हिन्दी	१–२१

विशेष—६७ पद्य से २६२ पद्य तक आभानेरी के राजा चन्द की कथा है।

२. फुटकर कवित्त	अगरदास	„	२२–४०

विशेष—चन्दन मलियागिरि कथा है।

५६६१. गुटका सं० १४। पत्र सं० ३६६। आ० ७×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १६५३। पूर्ण। वे० सं० १०२।

१. चौरासी जाति भेद	×	हिन्दी	१–१६
२. नेमिनाथ फागु	पुण्यरत्न	„	२०–२५

विशेष—अन्तिम पाठ :—

समुद्र विजय तन गुरा निलउ सेव करइ जमु सुर नर वृन्द।

पुण्यरत्न मुनिवर भणइ श्रीसंघ सुदृशन नेमि जिरणन्द ॥ ६४ ॥

कुल ६४ पद्य हैं।

॥ इति श्री नेमिनाथ फागु समास ॥

३. प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी		२६–५०
४. सुदर्शनरास	”	”		५१–८०
५. श्रीपालरास	”	”		११२
			ले० काल सं० १६५३ जेठ बुदी २	
६. शीलरास	”	”		११३
७. मेघकुमारगीत	पूनो	”		१३५
८. पद– चेतन हो परम निधान	जिनदास	”		२३६
९. ” चेतन चिर भूलिउ भमिउ देखउ चित न विचारि।	रूपचन्द	”		२३८
१०. ” चेतन तारक हो चतुर सयाने वे निर्मल दिष्टि प्रछत तुम भरम भुलाने।	”	”		”
११. ” आदि अनादि गवायो जीव विधिवस बहु दुख पायो चेतन।	”	”		
१२. ”	दास	”		२४०
१३. ” चेतन तेरो दानो वानों चेतन तेरी जाति।	रूपचन्द	”		
१४. ” जीव मिथ्यात उदै चिर भ्रम भायौ। वा रत्नत्रय परम धरम न भायौ॥	”	”		
१५. ” सुनि सुनि जियरा रे, तू त्रिभुवन का राउ रे	दरिगह	”		
१६. ” हा हा भूता मेरा पद मता जिनवर धरम न वेये।	”	”		
१७. ” जै जै जिन देवन के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा।	रूपचन्द	”		२४७
१८. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राकृत		२५१
१९. अक्षरगुणमाला	मनराम	हिन्दी	ले० काल १७३५	२५५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	”	ले० काल १७३५	२५७
२१. आखडी	दयालदास	”		२६२

२२. पद— कायु बोलै रै भव दुख बोलणी न भावे।	हर्षकीर्ति	”		२३२
२३. रविव्रत कथा	भानुकीर्ति	”	र० काल १६८७	३३६
(आठ सात सोलह के अंक वर्ण रचै सु कथा विमल)				
२४. पद - जो बनीया का जोरा माही श्री जिण कोप न ध्यावै रे।	शिवसुन्दर	”		३४१
२५. शीलबत्तीसी	अकूमल	”		३४८
२६. टंडाणा गीत	बूचराज	”		३६२
२७. भ्रमर गीत	मनसिंघ	”	१६ पद है	३६५
(बाडी फूली अति भली सुन भ्रमरा रे)				

५६६२. गुटका सं० १५। पत्र सं० २७५। आ० ५×४½ इ०। ले० काल सं० १७२७। पूर्ण। वे० सं० १०३।

१. नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१६३
र० काल सं० १६६३। ले० काल सं० १७६३			
२. मेघकुमार गीत	पुनो	”	१६३–१६६
३. तेरहकाठिया	बनारसीदास	”	१८८
४. विवेकजकडी	जिनदास	”	२०६
५. गुणाक्षरमाला	मनराम	”	
६. मुनीश्वरों की जयमाल	जिनदास	”	
७. बावनी	बनारसीदास	”	२४३
८. नगर स्थापना का स्वरूप	×	”	२५४
९. पंचमगति को वेलि	हर्षकीर्ति	”	२६९

५६६३. गुटका सं० १६। पत्र सं० २१२। आ० ६×६ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। वे० सं० १०८।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

५६६४. गुटका सं० १७। पत्र सं० १४२। आ० ६×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०८।

१. भविष्यदत्त चौपई ब्र० रायमल्ल हिन्दी ११६

२. चौबोस तीर्थङ्कर परिचय × ” १४२

५९६५. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५९६६. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ९८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ । पूर्ण । वे० सं० १११ ।

१. लग्नचन्द्रिका भाषा स्योजीराम सौगाणी हिन्दी १–४३

प्रारम्भ—आदि मंत्र कूं सुमरिइं, जगतारण जगदीश ।

जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ।। १ ।।

दूजा पूजूं सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करूं बणाय ।। २ ।।

गुरन मोहि आग्या दई, मसतक धरि के बांह ।

लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कहूं बणाय ।। ३ ।।

मेरे श्री गुरुदेव का, आंबावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पंडित बुध के वास ।। ४ ।।

लालचन्द पंडित तणे, नाती चेला नेह ।

फतेचद के सिष तिने, मोकूं हुकम करेह ।। ५ ।।

कवि सोगाणी गोत्र है, जैन मतो पहचानि ।

कंवरपाल को नंद ते, स्योजीराम बखाणि ।। ६ ।।

ठारासै के साल परि, बरष सात चालोस ।

माघ सुकल की पंचमी, वार सुरनकोईस ।। ७ ।।

अन्तिम— लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कही जु सार ।

जे मार्नाले ते नरा ज्योतिस को ले पार ।। ५२३ ।।

२. वृन्दसतसई वृन्दकवि हिन्दी प० ले० काल वैशाख बुदी १० १८७४

विशेष—७०६ पद्य हैं ।

३. राजनीति कवित्त   देवीदास   ,,   ×   १२२ पद्य हैं।

५६६७. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३० । म्रा० ८×६ इ० । भाषा- हिन्दी । विषय- पद । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११२ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है । गुटका प्रशुद्ध लिखा गया है ।

५६६८. गुटका सं० २० । पत्र सं० २०१ । म्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल० सं० १७८३ । पूर्ण । वे० सं० ११४ ।

विशेष—म्रादिनाथ की वीनती, श्रीपालस्तुति, मुनिश्वरो की जयमाल, वडा कक्का, भक्तामर स्तोत्र म्रादि हैं ।

५६६९. गुटका सं० २१ । पत्र सं० २७६ । म्रा० ७×४½ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० ११५ । ब्रह्मरायमल्ल कृत भविष्यदत्तरास नेमिरास तथा हनुमन चौपई है ।

५६७०. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २६-५३ । म्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० ११ ।

५६७१. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ८१ । म्रा० ६×५½ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३१ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५६७२. गुटका सं० २४ । पत्र सं० २०१ । म्रा० ६×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत विषय—पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२ ।

विशेष—जिनसहस्रनाम (म्राशाधर) षट्भक्ति पाठ एव पूजाम्रो का संग्रह है ।

५६७३. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ६-८ । म्रा० ९×५ इ० । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—पूजा पाठ । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० सं० १३३ ।

५६७४. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ८५ । म्रा० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ ।

५६७५. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १०१ । म्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५२ ।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ, रूपचन्द की अकडी, द्रव्य संग्रह एवं पूजायें है ।

५६७६. गुटका सं० २८ । पत्र सं० १३३ । म्रा० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८०२ । पूर्ण । वे० सं० १५३ ।

विशेष—समयसार नाटक, भक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें हैं।

५६७७. गुटका सं० २६। पत्र सं० ११६। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-संग्रह ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का संग्रह है।

५६७८. गुटका सं० ३०। पत्र सं० २०। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५५।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं निर्वाणकाण्ड गाथा हैं।

५६७९. गुटका सं० ३१। पत्र सं० ४०। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं० १६२।

विशेष—रविव्रत कथा है।

५६८०. गुटका सं० ३२। पत्र सं० ४४। आ० ४$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं० १७७६।

विशेष—बीच २ मे से पत्र खाली हैं। बुलाखीदास खत्री की बरात जो सं० १६८४ मिती मंगसिर सुदी ३ को आगरे मे अहमदाबाद गई, का विवरण दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त पद, गणेशछंद, लहरियाजी की पूजा आदि है।

५६८१. गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२। आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६३।

१. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचंद	हिन्दी
२. नेमिनाथ का बारहमासा	"	"
३. राजुलमंगल	×	×

प्रारम्भ— तुम नीकस भवन सुहावे, जब कमरी भई वरागी।

प्रभुजी हमनै भी ले चालो साथ, तुम विन नही रहे दिन रात।

अन्तिम— भाषा दोनु ही मुकती मिलाना, तहां फेर न होय आवागवना।

राजुल अटल सुषडी नीहाइ, तिहां राणी नहीं छे कोई,

सोये राजुल मंगल गावत, मन वंछित फल पावत ॥१८॥

इति श्री राजुल मंगल संपूर्ण।

५६८२. गुटका सं० ३४। पत्र सं० १६०। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३३।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं टीकम की चतुर्दशी कथा है।

५६८३ गुटका सं० ३५। पत्र सं० ४०। आ० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं।

५६८४. गुटका सं० ३६। पत्र सं० २४। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७७६ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३५।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं कल्याण मंदिर संस्कृत और भाषा है।

५६८५. गुटका सं० ३७। पत्र सं० २१३। आ० ५×७ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—पूजा, स्तोत्र, जैन शतक तथा पदों का संग्रह है।

५६८६. गुटका सं० ३८। पत्र सं० ५६। आ० ७×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४२।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

५६८७. गुटका सं० ३६। पत्र सं० ५०। आ० ७×४ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४३।

१. श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत	१–१४
२. जयतिहुवणस्तोत्र	अभयदेवसूरि	"	१५–१६
३ अजितशान्तिजिनस्तोत्र	×	"	२०–२५
४. श्रीवंतजयस्तोत्र	×	"	२६–३२

अन्य स्तोत्र एवं गौतमरासा आदि पाठ है।

५६८८. गुटका सं० ४०। पत्र सं० २५। आ० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४४

विशेष—सामायिक पाठ है।

५६८६ गुटका सं० ४१। पत्र सं० ५०। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४६।

विशेष-हिन्दी पाठ संग्रह है।

५६६० गुटका सं० ४२। पत्र सं० २०। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष—सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एवं जिनपच्चीसी हैं।

५६६१. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४८।

५६६२ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। आ० ६×४ इ० भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। आ० ८×५ इ०। भाषा- हिन्दी। विषय—सुभाषित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५६६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७१। आ० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं० २५१।

१. भक्तामरस्तोत्र भाषा	अखयराज	हिन्दी गद्य	१—३४
२. इष्टोपदेश भाषा	×	"	३४—५२
३. सम्बोधपंचासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३—७१
४. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	७२—९२
५. बरवा	×	"	९२—१०३
६. योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४—१११
७. द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२—१३३
८ अनित्यपंचाशिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४—१४७
९. जकडी	रूपचन्द	"	१४८—१५४
१०. "	दरिगह	"	१५५—५६
११ "	रूपचन्द	"	१५७—१६३
१२. पद	"	"	१६४-१६९
१३. आत्मसंबोध जयमाल आदि	×	"	१७०—१७७

५६६५. गुटका सं० ४७। पत्र सं० १६। आ० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल × पूर्ण। वे० सं० २५४।

५९९६. गुटका सं० ४८। पत्र सं० १००। आ० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७०५ पूर्ण। वे० सं० २५५।

विशेष—आदित्यवारकथा (भाऊ) विरहमंजरी (नन्ददास) एवं आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

५९९७. गुटका सं० ४६। पत्र सं० ४-११६। आ० ५×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० २५७।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५९९८. गुटका सं० ५०। पत्र सं० १८। आ० ५×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५८।

विशेष—पदों एवं सामान्य पाठों का संग्रह है।

५९९९. गुटका सं० ५१। पत्र सं० ४७। आ० ८×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५६।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है।

६०००. गुटका सं० ५२। पत्र सं० ६८। आ० ८३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० सं० १७२५ भादवा बुदी २। पूर्ण। वे० सं० २६०।

विशेष—समयसार नाटक तथा बनारसीविलास के पाठ हैं।

६००१. गुटका सं० ५३। पत्र सं० २२८। आ० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७५२। पूर्ण। वे० सं० २६१।

१. समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	१-६१
विशेष—विहारीदास के पुत्र नैनसी के पठनार्थ सदाराम ने लिखा था।			
२ सीताचरित्र	रामचन्द्र (बालक)	हिन्दी	१-१३७
३. पद	कवि संतीदास	"	
४. ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	"	
५. षट्पंचासिका	×	"	

६००२. गुटका सं० ५४। पत्र सं० ५८। आ० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८२७ जेठ बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० २६२।

१. स्वरोदय	हिन्दी	१-२७
विशेष—उमा महेश संवाद में से है।		

२. पंचाध्यायी ,, २८-५८

विशेष—कोटपुतली वास्तव्य श्रीवन्तलाल फकीरचन्द के पठनार्थ लिखी गई थी।

६००३. गुटका सं० ५५। पत्र सं० ७-१२६। आ० ५३/४×३३/४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७२।

१. अनन्त के छप्पय	भ० धर्मचन्द्र	हिन्दी	१४-२०
२. पद	विनोदीलाल	,,	
३. पद	जगतराम	,,	
(नेमि रंगीलो छबीलो हटीलो चटकीले मुगति वधु संग मिलो)			
४. सरस्वती चूर्ण का नुसखा	×	,,	
५. पद— प्रात उठी ले गौतम नाम जिम मन वांछित सीझै काम।	कुमुदचन्द्र	हिन्दी	
६. जीव वेलडी	देवीदास	,,	
(सतगुर कहत सुनो रे भाई यो संसार असारा)		,,	२१ पद्य हैं।
७. नारीरासो	×	,,	३१ पद्य हैं।
८. चेतावनी गीत	नाथू	,,	
९. जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिणचन्द्र	संस्कृत	
१०. महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	,,	
११. नेमिनाथ स्तोत्र	पं० शालि	,,	
१२. पद्मावतीस्तोत्र	×	,,	
१३. षट्मत चरचा	×	,,	
१४. आराधनासार	जिनदास	हिन्दी	[illegible] पद्य हैं।
१५. विनती	,,	,,	२० पद्य हैं।
१६. राजुल की सज्झाय	,,	,,	३७ पद्य हैं।
१७. झूलना	गंगादास	,,	१२ पद्य हैं।
१८. ज्ञानपैडी	मनोहरदास	,,	
१९. [illegible]	×	,,	

विशेष—विभिन्न कवित्त एवं वीतराग स्तोत्र आदि हैं।

६००४. गुटका सं० ५६। पत्र सं० १२०। आ० ४½×४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×
पूर्ण। वे० सं० २७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६००५. गुटका सं० ५७। पत्र सं० ३–८८। आ० ६½×४¾ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल
सं० १८४३ चैत बुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० २७४।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, स्तुति, कल्याणमन्दिर भाषा, शांतिपाठ, तीन चौबीसी के नाम, एवं देवा पूजा आदि है

६००६. गुटका सं० ५८। पत्र सं० ५६। आ० ६×४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० सं० २७६।

१. तीसचौबीसी	×	हिन्दी	
२. तीसचौबीसी चौपई	स्याम	"	र० काल १७४६ चैत सुदी ५ ले० काल सं० १७४६ कातिक बुदी ५

अन्तिम—नाम चौपई ग्रन्थ यह, जोरि करी कवि स्याम।
जेसराज सुत ठोलिया, जोवनपुर तस धाम ॥२१६॥
सतरासै उनचास में, पूरन ग्रन्थ सुभाय।
चैत्र उजाली पंचमी, विजै स्कन्ध नृपराज ॥२१७॥
एक वार जे सरदहै, अथवा करिसि पाठ।
नरक नीच गति कै विषै, गाढे जडे कपाट ॥२१८॥

॥ इति श्री तीस चोइसो जी की चौपई ॥

६००७. गुटका सं० ५६। पत्र सं० ५२। आ० ६×४½ इ०। भाषा–संस्कृत प्राकृत। ले० काल ×।
पूर्ण। वे० सं० २६३।

विशेष—तीनचौबीसी के नाम, भक्तामर स्तोत्र, पंचरत्न परीक्षा की गाथा, उपदेश रत्नमाला की गाथा
आदि है।

६००८. गुटका सं० ६०। पत्र सं० ३४। आ० ६×८ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १६४३,
पूर्ण। वे० सं० २६३।

१. समन्तभद्रकथा	जोधराज	हिन्दी	र० काल १७२२ वैशाख बुदी ७

२. श्रावकों की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र × हिन्दी

३. सामुद्रिक पाठ × ״

अन्तिम—सगुन छलन सुमत सुभ सब जनकूं सुख देत।

भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनों के हेत ॥

६००६. गुटका सं० ६१। पत्र सं० ११-५८। आ० ८३⁄४×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १६१६। अपूर्ण। वे० सं० २६६।

विशेष—विरहमान तीर्थङ्कर जकडी (हिन्दी) दशलक्षण, रत्नत्रय पूजा (संस्कृत) पंचमेरु पूजा (भूधरदास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (संस्कृत) अनन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१९१६), पंचकुमार पूजा आदि हैं।

६०१०. गुटका सं० ६२। पत्र सं० १६। आ० ८३⁄४×६ इ०। ले० काल×। पूर्ण। वे० सं० २६७।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

६०११. गुटका सं० ६३। पत्र सं० १६। आ० ६३⁄४×४३⁄४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०८।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह एवं ज्ञानस्वरोदय है।

६०१२. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ३६। आ० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२५।

विशेष—(१) कवित्त पद्माकर तथा अन्य कवियों के (२) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) आमेर के राजाओं की वंशावली, (४) मनोहरपुरा की पीढियों का वर्णन, (५) खंडेला की वंशावली, (६) खंडेलवालों के गोत्र, (७) कारखानों के नाम, (८) आमेर राजाओं का राज्यकाल का विवरण, (९) दिल्ली के बादशाहों पर कवित्त आदि हैं।

६०१३. गुटका सं० ६५। पत्र सं० ४२। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०१४. गुटका सं० ६६। पत्र सं० १३-३२। आ० ७×४ इ० भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२७।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०१५. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ ।

विशेष—कवित्त एवं आयुर्वेद के नुसखों का संग्रह है ।

६०१६. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० २६ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० ।

विशेष—पदों एवं कविताओं का संग्रह है ।

६०१७. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

६०१८. गुटका सं० ७० । पत्र सं० ४० । आ० ६½×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३३ ।

विशेष—पदों एवं पूजाओं का संग्रह है ।

६०१९. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० ९८ । आ० ४½×३½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय–कामशास्त्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३४ ।

६०२०. गुटका सं० ७२ । स्फुट पत्र । वे० सं० ३३६ ।

विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियां, इष्टछत्तीसी एवं जोधराज पच्चीसी का संग्रह है ।

६०२१. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० २८ । आ० ८½×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३७ ।

विशेष—ब्रह्मविलास, चौबीसदण्डक, मार्गणाविधान, अकलङ्काष्टक तथा सम्यक्त्वपच्चीसी का संग्रह है ।

६०२२. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ३६ । आ० ८½×५ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३८ ।

विशेष—विनतियां, पद एवं अन्य पाठों का संग्रह है । पाठों की संख्या १९ है ।

६०२३. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १४ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९५१ । पूर्ण । वे० सं० ३३९ ।

विशेष—नरक दुःख वर्णन एवं नेमिनाथ के १२ भवों का वर्णन है ।

६०२४. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २५ । आ० ८३/४×६ इ० । भाषा–संस्कृत । । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४२ ।

विशेष—आयुर्वेदिक एवं यूनानी नुसखों का संग्रह है ।

६०२५. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल × । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—जोगीरासा, पद एवं विनतियों का संग्रह है ।

६०२६. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १६० । आ० ६×५ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है । पृष्ठ ६४–१४६ तक वंशीधर कृत द्रव्यसंग्रह की बालावबोध टीका है । टीका हिन्दी गद्य मे है ।

६०२७. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×४ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पद-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

ञ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २५८ । आ० ९×५ इ० । । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । लक्ष्मीसेन का चिंतामणिस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासान्त चतुर्दशी पूजा है ।

६०२९. गुटका सं० २ । पत्र सं० ५४ । आ० ९×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण ।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एवं सामान्य पाठ संग्रह है ।

६०३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

जिनयज्ञ विधान, अभिषेक पाठ, गणधर वलय पूजा, ऋषि मंडल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं ।

६०३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२४ । आ० ८×७३/४ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—

१. सप्तसूत्रभेद × संस्कृत

२. मूढता अनांकुश इत्यादि	×	"
३. त्रेपनक्रिया	×	"
४. समयसार	आ० कुन्दकुन्द	प्राकृत
५. आदित्यवारकथा	भाऊ	हिन्दी
६. पोसहरास	ज्ञानभूषण	"
७ धर्मतरुगीत	जिनदास	"
८. बहुगतिचौपई	×	"
९. संसारअटवी	×	"
१०. चेतनगीत	जिनदास	"

सं० १६२६ में अंबावती मे प्रतिलिपि हुई थी।

६०३२. गुटका सं० ५। पत्र सं० ७५। आ० ६×५ इ०। भाषा–संस्कृत। ले० काल सं० १६८२। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

सं० १६८२ में नागौर में बाई ने दिक्षा ली उसका प्रतिज्ञा पत्र भी है।

६०३३. गुटका सं० ६। पत्र सं० २२। आ० ६×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। वे० सं० ६।

१. नेमीश्वर का बारहमासा	खेतसिंह	हिन्दी	८
२ आदीश्वर के दशभव	गुणचंद	"	
३. औरहीर	×	"	

६०३४. गुटका सं० ७। पत्र सं० १७७। आ० ६×५ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—नित्यनैमित्तक पाठ, सुभाषित (भूधरदास) तथा नाटक समयसार (बनारसीदास) है।

६०३५ गुटका सं० ८। पत्र सं० १४६। आ० ६×५½ इ०। भाषा–संस्कृत, अपभ्रंश। ले० काल ×। पूर्ण।

१. चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमाल	सोम	अपभ्रंश
२. ऋषिमंडलपूजा	मुनि गुणनंदि	संस्कृत

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह भी है।

६०३६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह, लोक का वर्णन, अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारों गतियों की आयु आदि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पञ्चमङ्गल, आलोचना पाठ आदि हैं।

६०३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३८ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक-पाठ, दर्शन, कल्याणमंदिर स्तोत्र एवं सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६०३८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १६६ । आ० ४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र टब्बाटीका	×	संस्कृत हिन्दी	ले० काल सं० १७२७ चैतसुदी ५
२. पद— हर्षकीर्त्ति	×	„	
	(जिण जिण जप जीवडा तीन भवन में सारोजी)		
३. पंचगुरु की जयमाल	ब्र० रायमल्ल	„	ले० काल सं० १७२६
४. कवित्त	×	„	
५. हितोपदेश टीका	×	„	
६. पद—तै नर भव पाय कहा कियो	रूपचन्द	हिन्दी	
७. अकड़ी	×	„	
८. पद—मोहिनी बहकायो सब जग मोहनी	मनोहर	„	

६०३६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३८ । आ० १०×८ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । निम्न पाठ हैः—

क्षेत्रपाल पूजा (संस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (संस्कृत हिन्दी) सिद्धपूजा (सं०) षोडशकारण, दशलक्षण, रत्नत्रयपूजा, कलिकुण्डपूजा और जयमाल (प्राकृत) नंदीश्वरपंक्तिपूजा अनन्तचतुर्दशीपूजा, अक्षयनिधिपूजा तथा पार्श्वनाथस्तोत्र, आयुर्वेद ग्रंथ (संस्कृत ले० काल सं० १६८१) तथा कई तरह की रेखाओं के चित्र भी है, राशिफल आदि भी दिये हुये हैं ।

६०४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० २८३ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके में मुख्यतः निम्न पाठ हैं—

१. जिनस्तुति	सुमतिकीर्त्ति	हिन्दी
२. गुणस्थानकगीत	ब्र० श्री वर्द्धन	„

अन्तिम—पणति श्री वर्द्धन गहा एह वाजो भवियण मुख करइ

३. सम्यक्त्व जयमाल, × अपभ्रंश

४. परमार्थगीत रूपचन्द हिन्दी

५. पद— अहो मेरे जीव तू कत भरमायो, तू
चेतन यह जड परम है यामै कहा लुभायो। मनराम "

६. मेघकुमारगीत पूनो "

७. मनोरथमाला अचलकीर्ति "
अचला तिहि तणा गुण गाइस्यों,

८. सहेलीगीत सुन्दर हिन्दी

सहेल्यो है यो संसार असार मो चित में या उपनी जी सहेल्यो है
ज्यो रांचै सो गवार तन धन जोबन थिर नही।

९. पद— मोहन हिन्दी

जा दिन हँस चलै घर छोडि, कोई न साथ लडा है गोडि ॥
जण जण के मुख ऐसी वाणी, बडो वेग मिलो अन पाणी ॥
अण बिडह्यूं उनगै सरीर, खोसि खोसि ले तनक चीर।
चारि जणा जङ्गल ले जाहि, घर मैं घडी रहण दे नाहि।
जबता बूड विडा में वास, यो मन मेरा भया उदास।
काया माया झूठी जानि, मोहन होऊ भजन परमाणि ॥६॥

१०. पद— हर्षकीर्त्ति हिन्दी

नहिं छोडौ हो जिनराज नाम, मोहि और मिथ्यात से क्या बनै काम।

११. " मनोहर हिन्दी

सेव तौ जिन साहिब की कीजे नरभव लाहो लीजे

१२. पद— जिणदास हिन्दी

१३. " स्यामदास "

१४. मोहविवेकयुद्ध बनारसीदास "

१५. द्वादशानुप्रेक्षा सूरत "

१६. द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	
१७. बिनती	रूपचन्द	"	

जै जै जिन देवनि के देवा, सुर नर सकल करैं तुम सेवा।

१८. पंचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	र० काल सं० १५८५
१९. पञ्चगतिवेलि	हर्षकीर्त्ति	"	" " १८८३
२०. परमार्थ हिंडोलना	रूपचन्द	"	
२१. पंथीगीत	छीहल	"	
२२. मुक्तिपीहरगीत	×	"	
२३. पद—अब मोहि और कछु न सुहाय	रूपचन्द	"	
२४. पदसंग्रह	बनारसीदास	"	

६०४१. गुटका सं० १४। पत्र सं० १०९—२३७। आ० १०×७ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं उसकी विधि दी हुई है।

६०४२. गुटका सं० १५। पत्र सं० ४३। आ० ७×५ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय-पद संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

६०४३. गुटका सं० १५। पत्र सं० ५२। आ० ७×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—सामान्य पाठ संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

६०४४. गुटका सं० १७। पत्र सं० १६६। आ० १३×३ इ०। ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ बुदा। पूर्ण।

१. छियालीस ठाणा	ब्र० रायमल्ल	संस्कृत	१९

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करों के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पंचकल्याणकों की तिथि आदि विवरण है।

२. चौबीस ठाणा चर्चा	×	"	२८
३. जीवसमास	×	प्राकृत ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ	५९

विशेष—ब्र० रायमल्ल ने देहली में प्रतिलिपि की थी।

४. सुप्पय दोहा	×	हिन्दी	८०
५. परमात्म प्रकाश भाषा	प्रभुदास	"	९२
६. रत्नकरण्डश्रावकाचार	समंतभद्र	संस्कृत	९४

६०४५. गुटका सं० १८। पत्र सं० १५०। आ० ७×२३ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

ट भण्डार [आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर]

६०४६. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३७ । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५०१ ।

१. मनोहरमंजरी	मनोहर मिश्र	हिन्दी	१–२६

प्रारम्भ— अथ मनोहर मंजरी, अथ नव जौवना लक्षनं ।

याके योवनु अंकुरयो, अंग अंग छबि भोर ।

सुनि सुजान नव योवना, कहत भेद द्वै ठोर ।।

अन्तिमः— लहलहाति अति रसमसी, बहु सुवासु अपाठ (?)

निरखि मनोहर मंजरी, रसिक सुजु मंडरात ।।

सुनि सुजनि अभिमान तजि मन विचारि गुन दोष ।

कहा विरहु कित प्रेम रसु, तही होत दुख मोख ।।

चंद अत द्वै दीप के, अंक बीच आकास ।

करी मनोहर मंजरी, मकर चांदनी ब्यास ।।

माथुर का हो मथुपुरी, बसत महोली पोरि ।

करी मनोहर मंजरी, अनूप रस सोरि ।।

इति श्र सकललोककृतमणिमरीचिमंजरीनिकरनीराजितपदद्वंदवृन्दावनविहारकारिलब्धकटाक्षटोपासक मनोहर मिश्र विरचिता मनोहरमंजरी समाप्ता ।

कुल ७४ पद्य है । सं० ७२ तक ही दिये हुये हैं । नायिका भेद वर्णन है ।

२. फुटकर दोहा	×	हिन्दी	३०–३६

विशेष— ७० दोहे हैं ।

३. आयुर्वेदिक नुसखे	×	”	३७

६०४७. गुटका सं० २ । पत्र सं० २-५८ । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७६४ । अपूर्ण । वे० सं० १५०२ ।

१. नाममंजरी	नंददास	हिन्दी पद्य सं० २६१	२–२८
२. अनेकार्थमंजरी	”	”	२८–४०

स्वामी खेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३. कवित्त × " ४१–४३

४. भोजरासो उदयभानु " ४३–४८

प्रारम्भ— श्री गणेशाय नमः । दोहरा ।

कुंजर कर कुंजर करन कुंजर मानंद देव ।
सिधि समपन सत सुव सुरतर कीजिय सेव ॥ १ ॥
जगत जननि जग उद्धरन जगत ईस ग्ररधंग ।
मीन विचित्र विराजकर हंसासन सरवंग ॥ २ ॥
सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरैं नहि म्रान ।
जहां तहां सुवन सुभ जिये तहां नृपति भोज बखान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजजी की रासो उदैभानजी को कियो । लिखतं स्वामी खेमदास मिती फागुण बुदी ११ संवत् १७६५ । इसमे कुल १४ पद्य हैं जिनमें भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

५. कवित्त टोडर हिन्दी कवित्त हैं ४६–४

विशेष—ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ११८ । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७२६ । अपूर्ण । वे० सं० १५०३ ।

१. मायाब्रह्म का विचार × हिन्दी गद्य अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

"माया काहे तै कहिये ब्रंमस्यो सबल है तातै माया कहिये । अकास काहे तैं कहिये पिंड ब्रह्माड का आदि आकार है तातैं आकास कहीये । सुनी (शून्य) काहे तै कहीये–जड है तातै सुनी कहिये । सकती काहे तैं कहिये सकल संसार को जीति रही है तातैं सकती कहिये ।"

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हंस का ग्यान ग्रंथ जगीस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशंकराचारीज बीरच्यते । मिती असाढ सुदी १० सं० १७२६. का मुकाम गुहाटी उर कोस दोइ देईदान चारण की पोथीस्यै उतारी पोथी सा..........म ठोल्या साह नेबसी का बेटा ....कर महाराज श्री रुघनाथस्यंघजी ।

२ गोरखपदावली गोरखनाथ हिन्दी अपूर्ण

विशेष—करीब ६ पद्य हैं ।

म्हारा रे बैरागी जोगी जोगणि संग न छाडै जी।

मान सरोवर मनस झुलती आवै गगन मड मंड मारैजी ॥

३. सतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	अपूर्ण	३–६५

ले० काल सं० १७२५ माघ सुदी २।

विशेष—प्रारम्भ के १२ दोहे नही हैं। कुल ७१० दोहे हैं।

४. वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	"	अपूर्ण	६७–११८

६०४६. गुटका सं० ४। पत्र सं० २५। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। ले० काल सं० १८३९ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १५०४।

विशेष—चाणक्य नीति का वर्णन है। श्रीचन्दजी गंगवाल के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

६०५०. गुटका सं० ५। पत्र सं० ४०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८३१। अपूर्ण। वे० सं० १५०५।

विशेष—विभिन्न कवियों के शृङ्गार के अनूठे कवित्त है।

६०५१. गुटका सं० ६। पत्र सं० ८६। आ० ६×४ इ०। भाषा हिन्दी। र० काल सं० १६८८। ले० काल सं० १७९८ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १५०६।

विशेष—सुन्दरदास कृत सुन्दरशृङ्गार है। श्रेयदास गोधा मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

६०५२. गुटका सं० ७। पत्र सं० ४५। आ० ६×७½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८। अपूर्ण। वे० सं० १५०७।

१. कवित्त	अगर (अग्रदास)	हिन्दी	अपूर्ण	१–१०

विशेष—कुल ६३ पद्य है पर प्रारम्भ के ७ पद्य नही हैं। इनका छन्द कुण्डलिया सा लगता है एक छन्द निम्न प्रकार है—

आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय।
पाछै बछरा खाय कहत गुरु सीख न मानै।
ग्यान पुरान मसान खिनक मैं धरम भुलानै ॥
करो विप्रलो रीत मृतग धन लेत न लाजै।
नीच न समझै मीच परत विषया के काजै।
अगर जीव आदि तै यह बंध्योस करैं उपाय।
आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय ॥१०॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा लोहट हिन्दी १७-२१

ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं ।

अन्तिम— अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर अज्ञान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो अनुभै भान ।। २५ ।।

इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मिती वैशाख बुदी ८ संवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४. कर्मपच्चीसी भारमल हिन्दी २१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य— करम प्रा तोर पंच महावरत धरू जपूं चौवीस जिणंदा ।

अरहंत ध्यान लैव चहूं साहु लोयण वंदा ।।

प्रकृति पच्यासी आणि कै करम पचीसी जान ।

सुदर भारैमल················स्योपुर थान ।। कर्म अति० ।। २२ ।।

।। इति कर्म पच्चीसी संपूर्ण ।।

५. पद–(बांसुरी दीजिये ब्रज नारि) सूरदास ,, २६

६. पद–हम तो ब्रज को बसिबो ही तज्यो ,, ,, २७–२८

ब्रज में बसि वैरिणि तू बंसुरी

७. श्याम बत्तीसी श्याम ,, ३७–४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमें ३४ सवैये तथा १ दोहा हैः—

अन्तिम— कृष्ण ध्यान चतु अष्ट में अवनन सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कलु रहत न रञ्चक नाम ।।

८. पद–बिन माली जो लगावै बाग मनराम हिन्दी ४०

९. दोहा–कबीर औगुन एक ही गुण है कबीर ,, ,,

लाख करोरि

१० फुटकर कवित्त × ,, ४१

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्णन × ,, अपूर्ण ४१–४५

६०५३. गुटका सं० ८। पत्र सं० ८६। आ० ६×८ इ०। ले० काल सं० १७७६ श्रावण बुदी १। पूर्ण। वे० सं० १५०८।

१. कृष्णरुक्मणि वेलि	पृथ्वीराज राठौर	राजस्थानी डिंगल	१-८५
		र० काल० सं० १६३७।	

विशेष—ग्रंथ हिन्दी गद्य टीका सहित है। पहिले हिन्दी पद्य हैं फिर गद्य टीका दी गई है।

२. विष्णु पंजर रक्षा	×	संस्कृत	८६
३. भजन (गढ बंका कैसे लीजे रे भाई)	×	हिन्दी	८७-८८
४. पद-(बैठे नव निकुंज कुटीर)	चतुर्भुज	"	८६
५. " (धुनिमुनि मुरली बन बाजै)	हरीदास	"	"
६. " (सुन्दर सावरो आवे चल्यो सखी)	नंददास	"	"
७. " (बालगोपाल छैगन मेरे)	परमानन्द	"	"
८ " (बन ते आवत गावत गोरी)	×	"	"

६०५४. गुटका सं० ६। पत्र सं० ८५। आ० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५०६।

विशेष—केवल कृष्णरुक्मणी वेलि पृथ्वीराज राठौर कृत है। प्रति हिन्दी टीका सहित है। टीकाकार अज्ञात है। गुटका सं० ८ मे आई हुई टीका से भिन्न है। टीका काल नहीं दिया है।

६०५५. गुटका सं० १०। पत्र सं० १७०-२०२। आ० ६×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे सं० १५११।

१. कवित्त		राजस्थानी डिंगल	१७१-७३

विशेष—शृङ्गार रस के सुन्दर कवित्त है। विरहिनी का वर्णन है। इसमें एक कवित्त छीहल का भी है।

२. श्रीरुक्मणिकृष्णजी को रासो	तिपरदास	राजस्थानी पद्य	१७३-१८५

विशेष—इति श्री रुक्मणी कृष्णजी को रासो तिपरदास कृत सपूर्ण ॥ संवत् १७३६ वर्षे प्रथम चैत्र मासे शुभ शुक्ल पक्षे तिथौ दशम्यां बुधवासरे श्री मुकन्दपुर मध्ये लिखापितं साह सजन का साह सूराजी तत्पुत्र सजन साह श्री छाजूजी वाचनाय। लिखत व्यास जट्ठना नाम्ना।

३ कवित्त	×	हिन्दी	१८६-२०२

विशेष—भूधरदास, सुन्दरदास, विहारी तथा केशवदास के कवित्तों का संग्रह है। ४७ कवित्त है।

६०५६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० १०×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१४ ।

१. रसिकप्रिया	केशवदेव	हिन्दी	अपूर्ण	१-४८
		ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४		
२. कवित्त	×	"		४६

६०५७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. स्नेहलीला	जनमोहन	हिन्दी	६-१५

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावे नर देह ॥११६॥

जो गावे सीखे सुने भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन वांछित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ में कृष्ण ऊधव एवं ऊधव गोपी संवाद है ।

६०५८. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० × । पूर्ण । वे० सं० १५२२ ।

१. रागमाला	श्याम मिश्र	हिन्दी	१-१२

र० काल सं० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल सं० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि में कासिमखां का वर्णन है । ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है ।

अन्तिम—संवत् सौरह से बरस ऊपर बीते दोय ।

फागुन बदी सनो दसी सुनो गुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर स्याम आगरे नगर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ स्याम मिश्र कृत संपूर्ण । संवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोमवार पोथी लेरवड ग्रामें हिंडोण का मैं साह गोरधनदास अग्रवाल की पोथी ये लिखी लिखतं मौजीराम ।

२. द्वादशमासा (बारहमासा)	महाकविराइसुन्दर	हिन्दी

विशेष—कुल २४ कवित्त है। प्रत्येक मास का विरहिनी वर्णन किया गया है। प्रत्येक कवित्त में सुन्दर शब्द हैं। सम्भव है रचना सुन्दर कवि की है।

३. नखशिखवर्णन   केशवदास   हिन्दी   १४-२८

लें० काल सं० १७४६ माह बुदी १४।

विशेष—शेरगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

४. कवित्त—   गिरधर, मोहन सेवग आदि के   हिन्दी

६०५६. गुटका सं० १४। पत्र सं० ३६। आ० ५×५ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५२३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६०. गुटका सं० १५। पत्र सं० १६८। आ० ८×६ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-पद एवं पूजा। ले० काल सं० १८३३ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० १५२४।

१. पदसंग्रह   हिन्दी   १–५८

विशेष—जिनदास, हरीसिंह, बनारसीदास एव रामदास के पद हैं। राग रागनियों के नाम भी दिये हुये है

२. चौबीसतीर्थङ्करपूजा   रामचन्द्र   हिन्दी   ५८–१६८

६०६१. गुटका सं० १६। पत्र सं० १७१। आ० ७×६ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १६४७। अपूर्ण। वे० सं० १५२५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१. विरदावली   ×   संस्कृत

विशेष—पूरी भट्टारक पट्टावली दी हुई है।

२. ज्ञानबावनी   मतिशेखर   हिन्दी   ६८–१०२

विशेष—रचना प्राचीन है। ५३ पद्यों में कवि ने अक्षरों की बावनी लिखी है। मतिशेखर की लिखी हुई धन्ना चउपई है जिसका रचनाकाल सं० १५७४ है।

३ त्रिभुवन की विनती   गङ्गादास

विशेष—इसमें १०१ पद्य हैं जिसमें ६३ शलाका पुरुषों का वर्णन है। भाषा गुजराती लिपि हिन्दी है।

६०६२. गुटका सं० १७। पत्र सं० ३२–७०। आ० ५×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८४७। अपूर्ण। वे० सं० १५२६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६३. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० १५२७ ।

१. चतुर्दशीकथा टीकम हिन्दी र० काल सं० १७१२

विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२. कलियुग की कथा द्वारकादास „

विशेष—पचेवर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३. फुटकर कवित्त, रागों के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४. कपडा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानी

विशेष—इसमें ३१ पद्यों में कवि ने नायिका को अलग २ कपड़े पहिना कर विरह जागृत किया तथा फिर पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ५७-३०५ । आ० ६½×६½ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल सं० १६६० द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई ब्र० रायमल्ल हिन्दी अपूर्ण ५७-१०६

२. श्रीपालचरित्र परिमल्ल „ १०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति में है । अकबर के शासन काल में रचना की गई थी ।

३ धर्मरास (श्रावकाचाररास) × „ २८३-२६८

६०६५. गुटका सं० २० । पत्र सं० ७३ । आ० ६×६½ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८३६ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण निम्न है:—

कपड़ा की रौस जाणै हैवर की हौस जाणै ।
न्याय भी नवेरि जाणै राज रौस माणिवौ ॥
राग तो छत्तीस जाणै लषिण बत्तीस जाणै ।
भूँप चतुराई जाणै महल में मांणिवौ ॥
बात जाणै संवाद जाणै खूबी खसबोई जाणै ।
सगपन साधि जाणै अर्थ को आणिवौ ।
कहत बणारसीदास एक जिन नांव बिना ।
.... बूडी सब आणिवौ ॥

६०६६. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १६४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० १५३२ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र पाठ संग्रह है ।

६०६७. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४८ आ० १०×७ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५३३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

६०६८. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १५-६२ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०८ । अपूर्ण । वे० सं० १५३४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—भक्तामर भाषा, परमज्योति भाषा, आदिनाथ की वीनती, ब्रह्म जिनदास एवं कनककीर्ति के पद, निर्वाणकाण्ड गाथा, त्रिभुवन की वीनती तथा मेघकुमारचौपई ।

६०६९. गुटका सं० २४ । पत्र सं० २० । आ० ६×४½ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल १८८० । अपूर्ण । वे० सं० १५३५ ।

विशेष—जैन नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०७०. गुटका सं० २५ । पत्र सं० २४ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५३६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—विषापहार भाषा (अचलकीर्त्ति) भूपालचौबीसी भाषा, भक्तामर भाषा (हेमराज)

६०७१. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ६० । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०७२. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५-१२० । भाषा-संस्कृत । ले० काल १८६५ । अपूर्ण । वे० सं० १५३८ ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

६०७३ गुटका सं० २८ । पत्र सं० १५० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७५३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३९ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है । सं० १७५३ असाढ़ सुदी ३ मु० मौ० नन्दपुर गंगाजी का तट । दुर्गादास चांदबाई की पुस्तक से मनरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७४. गुटका सं० २६। पत्र सं० १६। आ० ५×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४०,

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

६०७५. गुटका सं० ३०। पत्र सं० १५५। आ० ९×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४१।

१. भविष्यदत्त चौपाई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	१-७६
			र० सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४।

विशेष—फतेराम बज ने जयपुर में सं० १८१२ असाढ बुदी १० को प्रतिलिपि की थी।

२. वीरजिणन्द की संधावली	पूनो	हिन्दी	७७-७९

विशेष—मेघकुमार गीत है।

३. अठारह नाते की कथा	लोहट	,,	८०-८३
४. रविवार कथा	खुशालचन्द	,,	र० काल सं० १७७५

विशेष—लिखतं फतेराम ईसरदास बज वासी सांगानेर का।

५. ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	,,	
६. चौबीसतीर्थंकरों की वंदना	नेमीचन्द	,,	६७
७. फुटकर सवैया	×	,,	११३
८. षट्लेश्या वेलि	हर्षकीर्ति	,, र० काल सं० १६८३	११६
९. जिन स्तुति	जोधराज गोदीका	,,	११८
१०. प्रीत्यंकर चौपई	मु० नेमीचन्द	,,	११९-१३४
			र० काल सं० १७७१ वैशाख सुदी ११

६०७६. गुटका सं० ३१। पत्र सं० ४-२६५। आ० ८½×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५४२।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह हैं।

६०७७. गुटका सं० ३२। पत्र सं० ११९। आ० ६×४½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल × पूर्ण वे० सं० १५४४।

विशेष—नित्य एवं भाद्रपद पूजा संग्रह है।

६०७८. गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२४। ग्रा० ५×४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १७५६ वैशाख सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० १५४५।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०७६. गुटका सं० ३५। पत्र सं० १३८। ग्रा० ६×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४६।

विशेष—मुख्यतः नाटक समयसार की प्रति है।

६०८०. गुटका सं० ३६। पत्र सं० २४। ग्रा० ५×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४७।

६०८१. गुटका सं० ३७। पत्र सं० १७०। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४६।

विशेष–नित्यपूजा पाठ संग्रह है।

६०८२. गुटका सं० ३८। पत्र सं० ६४। ग्रा० ५×४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल १८४२ पूर्ण। वे० सं० १५४८।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१. पदसंग्रह	मनराम एवं भूधरदास	हिन्दी	
२. स्तुति	हरीसिंह	"	
३. पार्श्वनाथ की गुणमाला	लोहट	"	
४. पद– (दर्शन दीज्योजी नेमकुमार	मेलीराम	"	
५. आरती	शुभचन्द	"	

विशेष—अन्तिम–आरती करता आरति भाजे,शुभचन्द ज्ञान मगन मैं साजे ।।८।

६. पद– (मै तो थारी आज महिमा जानी)	मेला	"	
७. शारदाष्टक	बनारसीदास	"	ले० काल १८१०

विशेष—जयपुर में कालीदास के मकान में लालाराम ने प्रतिलिपि की थी।

८. पद– मोह नींद में छकि रहे हो लाल	हरीसिंह	हिन्दी	
९. " उठि तेरो मुख देखू नाभि जू के नंदा	टोडर	"	
१०. चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	"	
११. विनती	अजैराज	"	

६०८३. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २-१५६ । आ० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५५० । मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है:—

१. आरती संग्रह	द्यानतराय	हिन्दी	(५ आरतियां हैं)
२. आरती—इह विधि आरती करौ प्रभु तेरी	मानसिंह	"	
३. आरती—इहविधि आरती करौं प्रभु तेरी	दीपचन्द	"	
४. आरती—करौ आरती आतम देवा	बिहारीदास	"	३
५. पद संग्रह	द्यानतराय	"	१७
६. पद— संसार अथिर भाई	मानसिंह	"	४०
७. पूजाष्टक	विनोदीलाल	"	५३
८. पद-संग्रह	भूधरदास	"	६७
९. पद—जाग पियारी अब क्या सोवै	कबीर	"	७७
१०. पद—क्या सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयसुन्दर	"	७७
११. सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	"	८०
१२. आरती सिद्धों की	खुशालचन्द	"	८१
१३. गुरुअष्टक	द्यानतराय	"	८३
१४. साधु की आरती	हेमराज	"	८५
१५. वाणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	"	"
१६. पार्श्वनाथाष्टक	मुनि सकलकीर्ति	"	"

अन्तिम—अष्ट विधि पूजा अर्घ उतारी सकलकीर्तिमुनि काज मुदा ॥

१७. नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	हिन्दी	११७
१८. पूजासंग्रह	लालचन्द	"	१३८
१९. पद—उठ तेरो मुख देखूं नाभिजी के नंदा	टोडर	"	१४५
२०. पद—देखो माई आज रिषभ घरि आवैं	साहकीरत	"	"
२१. पद—संग्रह	शोभाचन्द धुमचन्द आनंद	"	१४६
२२ लहुरा मंगल	बंसो	"	१४७
२३. क्षेत्रपाल पैंतबीस	शोभाचन्द	"	१४९

२४. न्हवरण आरती	थिरुपाल	हिन्दी	१५०

अन्तिम— केशवनंदन करहिंजु सेव, थिरुपाल भरणे जिरण चरण मेव ॥

२५. आरती सरस्वती	ब्र० जिनदास	"	१५३

६०८४. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ७-६८ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८४ । अपूर्ण । वे० सं० १५५१ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०८५. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २२३ । आ० ८×६½ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७४२ । अपूर्ण । वे० सं० १५५२ ।

पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । तथा समयसार नाटक भी है ।

६०८६. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १३६ । आ० ५×४½ इ० । ले० काल १७२३ चैत सुदी ९ । अपूर्ण । वे० सं० १५५३ ।

विशेष—मुख्य २ पाठ निम्न हैः—

१. चतुर्विशति स्तुति	×	प्राकृत	६
२. लब्धिविधान चौपई	भीषम कवि	हिन्दी	३०

र० काल सं० १६१७ फागुण सुदी १३ । ले० काल सं० १७३२ वैशाख बुदी ३ ।

विशेष—संवत सोलसौ सतरौ, फागुण मास जबै ऊनरौ ।

उजलपाखि तेरस तिथि जाणि, तादिन कथा चढी परवाणि ॥१६६॥

बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनि धर्म तसु गोधा जाति ।

यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुराण मांहि जैसी लही ॥१६७॥

× × × × ×

कडा बन्ध चौपई जाणि पूरा हुआ दोइसै प्रमाणि ।

जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहे सुखवास ॥

इति श्री लब्धि विधान चौपई संपूर्ण । लिखितं चोखा निवाणितं साह श्री भोगीदास पठनार्थं । सं० १७३२ वैशाख बुदि ३ कृष्णपक्ष ।

३. जिनकुशल की स्तुति	साधुकीर्ति	हिन्दी
४ नेमिजी की लहुरि	विश्वभूषण	"

५. नेमीश्वर राजुल की लहुरि (बारहमासा)	खेतसिंह साह	हिन्दी	
६. ज्ञानपंचमीबृहद् स्तवन	समयसुन्दर	"	
७. आदीश्वरगीत	रंगविजय	"	
८. कुशलगुरुस्तवन	जिनरंगसूरि	"	
९ "	समयसुन्दर	"	
१०. चौबीसीस्तवन	जयसागर	"	
११. जिनस्तवन	कनककीर्ति	"	
१२. भोगीदास की जन्म कुण्डली	×	"	जन्म सं० १६६७

६०८७. गुटका सं० ४३। पत्र सं० २१। आ० ५½×५ इ०। भाषा–संस्कृत। ले० काल सं० १७३० अपूर्ण। वे० सं० १५५४।

विशेष—तत्वार्थसूत्र तथा पद्मावतीस्तोत्र है। मलारना में प्रतिलिपि हुई थी।

६०८८. गुटका सं० ४४। पत्र सं० ४–७६। आ० ७×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल×। अपूर्ण वे० सं० १५५५।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. श्वेताम्बर मत के ८४ बोल	जगरूप	हिन्दी	र० काल सं० १८११ ले० काल सं० १८६६ आसोज सुदी ३।
२. व्रतविधानरासो	दौलतराम पाटनी	हिन्दी	र० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०

६०८९. गुटका सं० ४५। पत्र सं० ५–१०३। आ० ६½×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८६६। अपूर्ण। वे० सं० १५५६।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न है।

१. सुदामा की बारहखडी	×	हिन्दी	३२–३४

विशेष—कुल २८ पद्य हैं।

२. जन्मकुण्डली महाराजा सवाई जगतसिंहजी की	×	संस्कृत	१०३

विशेष—जन्म सं० १८४२ चैत बुदी ११ रवौ ७।३० घनेष्टा ५७।२४ सिध योग जन्म नाम सवासुख।

६०९०. गुटका सं० ४६। पत्र सं० ३०। आ० ६½×४½ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल × पूर्ण। वे० सं० १५५७।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है।

६०६१. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ३६ । आ० ६×५½ इ० । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५५८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६०६२. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० ९ । आ० ६×५½ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५५९ ।

विशेष—अनुभूतिस्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया है ।

६०६३. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ६५ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६८ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १५६२ ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत विनती संग्रह तथा लोहट कृत अठारह नाते का चौढालिया है ।

६०६४. गुटका सं० ५० । पत्र सं० ७४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०६५. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १७० । आ० ५½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६३ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं ।

१. कवित्त	कन्हैयालाल	हिन्दी		१०५–१०७

विशेष—३ कवित्त हैं ।

२. रागमाला के दोहे	जैतश्री	"		११३–११८
३. बारहमासा	जसराज	"	१२ दोहे हैं	११८–१२१

६०६६. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० १७८ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०६७. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ३०४ । आ० ६½×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७८३ माह बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १५६७ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. अष्टाह्निकारासो	विनयकीर्त्ति	हिन्दी	१५८

२ रोहिणी विधिकथा	बंसीदास	हिन्दी	१५६-६०

र० काल सं० १६९५ ज्येष्ठ सुदी २।

विशेष— सोरह सै पच्यानऊ ठई, ज्येष्ठ कृष्ण दुतिया भई
फातिहाबाद नगर मुखमात, अग्रवाल शिव जातिप्रधान ॥
मूलसिंह कीरति विख्यात, विशालकीर्ति गोयम सममान।
ता शिष बंशीदास सुजान, मानै जिनवर की ग्रान ॥८६॥
अक्षर पद तुक तनै जु हीन, पढौ बनाइ सदा परवीन ॥
क्षमौ शारदा पंडितराइ पढत सुनत उपजै धर्मो सुभाइ ॥८७॥

इति रोहिणीविधि कथा समाप्त ॥

१, सोलहकारणरासो	सकलकीर्ति	हिन्दी	१७२
२. रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी	ब्रह्मसेन	संस्कृत	१७५-१८६
५. विनती चौपड की	मान	हिन्दी	२४३-२४४
६. पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	"	२५१

६०९८. गुटका सं० ५४। पत्र सं० २२-३०। ग्रा० ६¾×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५६८।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

६०९९. गुटका सं० ५५। पत्र सं० १०५। ग्रा० ६×५¾ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८८४। अपूर्ण। वे० सं० १५६९।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. अश्वलक्षण	पं० नकुल	संस्कृत	अपूर्ण	१०-२६

विशेष—श्लोकों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है। अध्याय के अन्त में पृष्ठ १२ पर—

इति श्री महाराजि नकुल पंडित विरचिते अश्व सुभ विरचित प्रथमोध्यायः ॥

२. फुटकर दोहे	कबीर	हिन्दी

६१००. गुटका सं० ५६। पत्र सं० १४। ग्रा० ७¾×५¾ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५७०।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है।

६१०१. गुटका सं० ५७। पत्र सं० ७५। ग्रा० ६×४½ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल० सं० १८४७ जेठ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १५७१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. वृन्दसतसई	वृन्द	हिन्दी	७१२ दोहे हैं।
२. प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	"	
३. कवित्त चुगलखोर का	शिवलाल	"	

६१०२. गुटका सं० ५८। पत्र सं० ८२। ग्रा० ५×५½ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३. गुटका सं० ५९। पत्र सं० ६-६९। ग्रा० ७×४½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० १५७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४. गुटका सं० ६०। पत्र सं० १८०। ग्रा० ७×५½ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	संस्कृत	
२. आराधना प्रतिबोधसार	×	हिन्दी	५५ पद्य हैं

६१०५. गुटका सं० ६१। पत्र सं० ६७। ग्रा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८१४ भादवा सुदी ६। पूर्ण।० सं० १५७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. बारहखड़ी	×	हिन्दी	३६
२. विनती—पार्श्व जिनेश्वर वंदिये रे साहिब मुकति तणूं दातार रे	कुशलविजय	"	४०
३. पद-किये आराधना तेरी हिये आनन्द व्यापत है	नवलराम	"	"
४. पद-हेली देहली कित जाय छै नेम कुंवार	टीलाराम	"	"

५. पद—नेमकंवार री वाटडी हो राणी राजुल जोवै खडी हो खडी	खुशालचंद	हिन्दी		४१
६. पद—पल नहीं लगदी माय मैं पल नहि लगदी पीया मो मन भावै नेम पिया	बखतराम	"		४३
७. पद-जिनजी को दरसरण नित करां हो सुमति सहेल्यो	रूपचन्द	"		"
८. पद—तुम नेम का भजन कर जिससे तेरा भला हो	बखतराम	"		४४
९. विनती	अजैराज	"		४८
१०. हमीररासो	×	हिन्दी	अपूर्ण	४९
११. पद-भोग दुखदाई तजभवि	जगतराम	"		५०
१२. पद	नवलराम	हिन्दी		५१
१३. " (मङ्गल प्रभाती)	विनोदीलाल	"		५२
१४. रेखाचित्र	आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, वर्द्धमान एवं पार्श्वनाथ	"		५७-५८
१५. वसंतपूजा	अजैराज	"		५९-६१

विशेष—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार हैं :—

आंवेरि सहर सुहावणू रति बसंत कूं पाय ।

अजैराज करि जोरि कै गावै हो मन वच काय ।।

६१०६. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२० । आ० ६×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९३८ पूर्ण । वे० सं० १५७६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०७. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८१ ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत पद एवं भूधरदास कृत गुरुओं की स्तुति है ।

६१०८. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० ८½×४½ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० १५८० ।

६१०६. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १७३ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० १५८१ ।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है ।

६११०. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ३२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८२ ।

विशेष—पंचमेरु पूजा, अष्टाह्निका पूजा तथा सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजाएं हैं ।

६१११. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० १८५ । आ० ८$\frac{1}{2}$×७ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७४३ । पूर्ण । वे० सं० १५८६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६११२. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ११५ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८८ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

६११३. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १५१ । आ० ४$\frac{1}{2}$×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १५८८ ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

६११४. गुटका सं० ७० । पत्र सं० १७-५० । आ० ७$\frac{1}{2}$×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८६ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६११५. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १८ । आ० ५×५$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६० ।

विशेष—चौबीस ठाणा चर्चा है ।

६११६. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० ३८ । आ० ४$\frac{3}{4}$×३$\frac{1}{2}$ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० १५६१ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह एवं श्रीपाल स्तुति आदि है ।

६११७. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० ३ ५० । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६५ ।

६११८. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ६ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५९६ ।

विशेष—मनोहर एवं पूनो कवि के पद हैं ।

६११९. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १० । आ० ६×५½ इ० भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५९८ ।

विशेष—पाशाकेवली भाषा एवं बाईस परीषह वर्णन है ।

६१२०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५९९ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ९-४२ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०० ।

विशेष—सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णन है ।

६१२२. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० ७-२१ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०१ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थ सूत्र है ।

६१२३. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ३० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६१२४. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ३४ । आ० ४×३½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०५ ।

विशेष—देवाब्रह्म, भूधरदास, जगराम एवं बुधजन के पदों का संग्रह है ।

६१२५. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२० । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-विनती संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०६ ।

६१२६. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० २८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० २-२० । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० १६०६ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

६१२८. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० १५ । आ० ८½×६ इ० । भाषा- हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६११ ।

विशेष— देवाब्रह्म कृत पदों का संग्रह है ।

६१२९. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ४० । आ० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १६५६ ।

विशेष—उदयराम एवं बखराम के पद तथा मेलीराम कृत कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा है ।

६१३०. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ७०-१२८ । आ० ६×५½ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल १८६४ अपूर्ण । वे० सं० १६५७ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६१३१. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २८ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १६५८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है

६१३२. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० १६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५९ ।

विशेष—भगवानदास कृत आचार्य शान्तिसागर की पूजा है ।

६१३३. गुटका सं० ९० । पत्र सं० २६ । आ० ९½×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १९१८ । पूर्ण । वे० स० १६६० ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाओं का संग्रह है ।

६१३४. गुटका सं० ९१ । पत्र स० ७२ । आ० ९½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१८ पूर्ण । वे० सं० १६६१ ।

विशेष— प्रारम्भ के १९ पत्रों पर १ से ५० तक पहाड़े हैं जिनके ऊपर नीति तथा शृङ्गार रस के ४७ दोहे हैं । गिरधर के कवित्त तथा शनिश्चर देव की कथा आदि हैं ।

६१३५. गुटका सं० ९२ । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६२ ।

विशेष—कौतुक रत्नमंजूषा (मंत्र तंत्र) तथा ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है ।

६१३६. गुटका सं० ९३ । पत्र सं० ३७ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६३ ।

विशेष—संघीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था। स्तोत्रों का संग्रह है।

६१३७. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ८–११। आ० ६×५ इ०। भाषा गुजराती। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६४।

विशेष—वल्लभकृत रुक्मरिण विवाह वर्णन है।

६१३८. गुटका सं० ६५। पत्र सं० ४२। आ० ४×३ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६६७।

विशेष—तत्वार्थसूत्र एवं पद (चाहं रथ की बजत बधाई जी सब जनमन आनन्द दाई) है। चारों रथों का मेला सं० १६१७ फागुण बुदी १२ को जयपुर हुआ था।

६१३९. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ७६। आ० ८×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६१४०. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ६०। आ० ६½×४½ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६९।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र संग्रह है।

६१४१. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ५८। आ० ७×७ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७०।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सवैये, लक्षरण तथा नीतिग्रन्थ एवं शनिश्चरदेव की कथा है।

६१४२. गुटका सं० ६९। पत्र सं० २–१२। आ० ६×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७१।

विशेष—मन्त्र मन्त्रविधि, आयुर्वेदिक नुसखे, खण्डेलवालों के ८४ गोत्र, तथा दि० जैनों की ७२ जातियां जिसमें से ३२ के नाम दिये हैं तथा चाणक्य नीति आदि है। गुमानीराम की पुस्तक से चाकसू में सं० १७२७ में लिखा गया।

६१४३. गुटका सं० १००। पत्र सं० ५४। आ० ६×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७२।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है। ५४ से आगे पत्र खाली है।

६१४४. गुटका सं० १०१। पत्र सं० ८–२५। आ० ६×४½ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८५२। अपूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ हैं।

६१४५. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० ३३ । आ० ७×७ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल । अपूर्ण । वे० सं० १६७४ ।

विशेष— बारहखडी (सूरत), नरक दोहा (भूधर), तत्त्वार्थसूत्र (उमास्वामि) तथा फुटकर सवैया हैं ।

६१४६. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १६ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७५ ।

विशेष—विषापहार, निर्वाणकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एवं परीषह वर्णन है ।

६१४७. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×५ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७६ ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीगुण, बारहभावना, बाईस परिषह, सोलहकारण भावना आदि हैं ।

६१४८. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११-४७ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ ।

विशेष—स्वरोदय के पाठ है ।

६१४९. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० ३६ । आ० ७×३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७८ ।

विशेष—बारह भावना, पंचमगल तथा दशलक्षण पूजा है ।

६१५०. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० ८ । आ० ७×५ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७९ ।

विशेष—सम्मेदशिखरमहात्म्य, निर्वाणकांड (सेवग) फुटकर पद एव नेमिनाथ के दश भव है ।

६१५१. गुटका सं० १०८ । पत्र सं० २-४ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८० ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत कलियुग की वीनती है ।

६१५२. गुटका सं० १०९ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×६½ इ० भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८१ ।

विशेष—१ से ४ तथा ३५ से ५२ पत्र नहीं हैं । निम्न पाठ हैं:—

१. हरजी के दोहा × हिन्दी ।

विशेष—७६ से २१४, ४४७ से ५५१ दोहे तक है आगे नही है ।

हरजी रसना सो कहै, ऐसो रस न और ।
तिसना तु पीवत नहीं, फिर पीहै किहि ठौर ॥ ७६ ॥

हरजी हरजी जो कहै रसना बारंबार।

पिस तजि मन हूं क्यों न ह्वै जमन नाहि तिहि बार ॥ १६४ ॥

२. पुरुष-स्त्री संवाद	रामचन्द	हिन्दी	१२ पद्य हैं।
३. फुटकर कवित्त (शृंगार रस)	×	"	४ कवित्त है।
४. दिल्ली राज्य का ब्यौरा	×	"	

विशेष—चौहान राज्य तक वर्णन दिया है।

५. आधाशीशी के मत्र व यन्त्र हैं।

६१५३. गुटका सं० ११० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड, भक्तामरस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, एकीभावस्तोत्र आदि पाठ हैं।

६१५४. गुटका सं० १११ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×४ । भाषा हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८३ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड-सेवग पद संग्रह-भूधरदास, जोधा, मनोहर, सेवग, पद-महेन्द्रकीर्ति (ऐसा देव जिनंद है सेवो भवि प्रानी) तथा चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन आदि पाठ हैं।

६१५५. गुटका सं० ११२ । पत्र सं० ६१ । आ० ५×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८४ ।

विशेष-जैनेतर स्तोत्रों का संग्रह है। गुटका पेमसिंह भाटी का लिखा हुआ है।

६१५६. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १३६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष—२० का १०००० का, १५ का २० का यत्र, दोहे, पाशा केवली, भक्तामरस्तोत्र, पद संग्रह तथा राजस्थानी में शृंगार के दोहे हैं।

६१५७. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० १२३ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-अश्व परीक्षा । ले० काल × । १८०४ असाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६८६ ।

विशेष—पुस्तक ठाकुर हमीरसिंह गिलवाडी वालों की है खुशालचन्द ने पाटटा में प्रतिलिपि की थी। गुटका सजिल्द है।

६१५८. गुटका सं० ११५ । पत्र सं० ३२ । प्रा० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११५ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

६१५६. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० ७७ । प्रा० ८×६ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७०२ ।

विशेष—गुटका सजिल्द है । खण्डेलवालों के ८४ गोत्र, विभिन्न कवियो के पद, तथा दीवाण अभयचन्दजी के पुत्र आनन्दीलाल की सं० १६१६ की जन्म पत्री तथा आयुर्वेदिक नुमखे हैं ।

६१६०. गुटका सं० ११७ । पत्र सं० ६१ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७०३ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

६१६१. गुटका सं० ११८ । पत्र सं० ७६ । प्रा० ८×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७०५ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६१६२. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २४० । प्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४१ अपूर्ण । वे० सं० १७११ ।

विशेष—भागवत, गीता हिन्दी पद्य टीका तथा नासिकेतोपाख्यान हिन्दी पद्य में है दोनों ही अपूर्ण है ।

६१६३. गुटका सं० १२० । पत्र सं० ३२-१२८ । प्रा० ४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१२ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. नवपदपूजा	देवचन्द	हिन्दी	अपूर्ण	३२-४३
२. अष्टप्रकारीपूजा	"	"		४४-५०

विशेष—पूजा का क्रम श्वेताम्बर मान्यतानुसार निम्न प्रकार है—जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल इनकी प्रत्येक की अलग अलग पूजा है ।

३. सत्तरभेदी पूजा	साधुकीर्ति	"	र० सं० १६७८	५०-६५
४. पदसंग्रह	×	"		

६१६४. गुटका सं० १२१ । पत्र सं० ६-१२२ । प्रा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१३ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. गुरुजयमाला	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	१३
२. नन्दीश्वरपूजा	मुनि सकलकीर्ति	संस्कृत	३८
३. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	५२
४. देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	६८
५. गणधरवलयपूजा ।	"	"	१०७–११२
६. आरती पंचपरमेष्ठी	पं० चिमना	हिन्दी	११४

अन्त में लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारकों का विवरण है। सरस्वती गच्छ बलात्कार गण मूल संघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट में भट्टारक शांतिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

६१६५. गुटका सं० १२२ । पत्र सं० २८–१२६ । आ० ५३/४×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१४ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १२३ । पत्र सं० ६–४६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१५ ।

विशेष—विभिन्न कवियों ने हिन्दी पदों का संग्रह है।

६१६७. गुटका सं० १२४ । पत्र सं० २५–७० । आ० ४×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१६ ।

विशेष—विनती संग्रह है।

६१६८ गुटका सं० १२५ । पत्र सं० २–४५ । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१७ ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६१६९. गुटका सं० १२६ । पत्र सं० ३६–१८२ । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१८ ।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७०. गुटका सं० १२७ । पत्र सं० ३६–२४६ । आ० ८×४३/४ इ० । भाषा—गुजराती । लिपि–हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १७८३ । ले० काल सं० १९०५ । अपूर्ण । वे० सं० १७१९ ।

विशेष—मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र है।

६१७१ गुटका सं० १२८ । पत्र सं० ३१-६२ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६१७२. गुटका सं० १२६ । पत्र सं० १२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १७२१ ।

विशेष—भक्तामर भाषा एवं चौबीसी स्तवन आदि है ।

६१७३. गुटका सं० १३० । पत्र सं० ५-१६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२२ ।

रसकौतुकराजसभारंजन ३२ से १०० तक पद्य है ।

अन्तिम— कंता प्रेम समुद्र हैं गाहक चतुर सुजान ।

राजसभा रंजन यहै, मन हित प्रीति निदान ॥१॥

इति श्री रसकौतुकराजसभारंजन समस्या प्रबन्ध प्रथम नाम संपूर्ण ।

६१७४. गुटका सं० १३१ । पत्र सं० ६-४१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८६१ अपूर्ण । वे० सं० १७२३ ।

विशेष—भवानी सहस्रनाम एवं कवच है ।

६१७५. गुटका सं० १३२ । पत्र सं० ३-११० । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७८७ । अपूर्ण । वे० सं० १७२४ ।

विशेष—हनुमन्त कथा (ब्र० रायमल्ल) घंटाकरण मंत्र, विनती, वंशावलि, (भगवान महावीर से लेकर सं० १८२२ सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक तक) आदि पाठ हैं ।

६१७६. गुटका सं० १३३ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १७१५ ।

विशेष—समयसार नाटक एवं सिन्दूर प्रकरण दोनों के ही अपूर्ण पाठ है ।

६१७७. गुटका सं० १३४ । पत्र सं० १६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १७२६ ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

६१७८. गुटका सं० १३५ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१८ । अपूर्ण । वे० सं० १७२८ ।

१. पद– राखौ हो बृजराज लाज मेरी	सूरदास	हिन्दी
२. „ मांहिडो बिसरि गई लोह कोउ काह्नन	मलूकदास	„
३. पद–राजा एक पंडित पोली तुहारी	सूरदास	हिन्दी
४. पद-मेरो मुखनीको मुक तेरो मुख थारी ०	चंद	„
५. पद अब मैं हरिरस चाखा लागी भक्ति खुमारी०	कबीर	„
६. पद-बादि गये दिन साहिब बिना सतगुरु चरण सनेह बिना	„	„
७ पद–आ दिन मन पंछी उडि जी है	„	„

फुटकर मंत्र, औषधियों के नुमखे आदि हैं।

६१७६. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ५-१६। आ० ७×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। ले० काल १७८४। अपूर्ण। वे० सं० १७५५।

विशेष—वस्तराम, देवाब्रह्म, चैनसुख आदि के पदों का संग्रह है। १० पत्र से आगे खाली हैं।

६१८०. गुटका सं० १३७। पत्र सं० ८८। आ० ६३/४×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-पद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७५६।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ एवं विलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरषचन्द, नानचन्द, गरीबदास, भूधर एव किसनगुलाब के पदों का संग्रह है।

६१८१. गुटका सं० १३८। पत्र सं० १२१। आ० ६३/४×५३/४ इ०। वे० सं० २०४३।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं:—

१. बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	हिन्दी संस्कृत	
२. नेमिनाथ पूजा	कुवलयचन्द	संस्कृत	
३. क्षीरोदानी पूजा	अभयचन्द	„	
४ हेमकारी	विश्वभूषण	हिन्दी	
५. क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	„	
६. शिखर विलास भाषा	धनराज	„	र० काल सं० १८४८

६१८२. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ३-४६। आ० १०१/२×७ इ०। भाषा–हिन्दी प०। ले० काल सं० १६६५। अपूर्ण वे० सं० २०४०।

विशेष—जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालंकार भी है। भैरूंलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी।

६१८३. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ४-४३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इं० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६०६ द्वि० भादवा सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ ।

विशेष—अमृतचन्द्र सूरि कृत समयसार वृत्ति है ।

६१८४. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० ३-१०६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इं० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८५३ असाढ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २०४६ ।

विशेष—नयनसुख कृत वैद्यमनोत्सव (र० सं० १६४६) तथा बनारसीविलास आदि के पाठ हैं ।

६१८५. गुटका सं० १४२ । पत्र सं० ८-६३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४७ ।

विशेष—द्यानतराय कृत चर्चाशतक हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६१८६. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १८-१७१ । आ० ७$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इं० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६१५ । अपूर्ण । वे० सं० २०४८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

संवत् १६१५ वर्षे क्वार सुदी ५ दिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगरो श्रीआदिनाथचैत्यालयेगुवामी सुभस्थाने भ० श्रीसकलकीर्ति, भ० भुवनकीर्ति, भ० ज्ञानभूषण, भ० विजयकीर्ति, भ० शुभचन्द्र, आ० गुरुदेशात् आ० श्रीरत्नकीर्ति आ० यशःकीर्ति गुणचन्द्र ।

६१८७. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ४६ । आ० ८×६ इं० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल सं० १८२० । पूर्ण । वे० सं० २०४९ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. मुक्तावलिकथा	भारमल्ल	हिन्दी	र० काल सं० १७८८
२. रोहिणीव्रतकथा	×	"	
३. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ललितकीर्ति	"	
४. दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	"	
५. अष्टाह्निकाकथा	विनयकीर्ति	"	
६. सकुटचौदसव्रतकथा	देवेन्द्रभूषण [भ० विश्वभूषण के शिष्य]	"	
७. आकाशपञ्चमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	"	र० काल सं० १७०६
८. निर्दोषसप्तमीकथा	"	"	" " १७७१

९. त्रिलोकपाटृपीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी	
१०. सुगन्धदशमीकथा	हेमराज	"	
११. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पांडे हरिकृष्ण	"	
१२. बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	"	

६१८८. गुटका सं० १४५ । पत्र सं० २१६ । आ० ९×६½ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५० ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१. विरुदावली (पट्टावलि)	×	संस्कृत	७
२. सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	"	६१
३. दशलक्षण जयमाल	सुमतिसागर [अभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	८०
४. दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	संस्कृत	९०
५. मेरुपूजा	"	"	
६. चौरासी ज्ञातिमाला	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१४७

विशेष—इन्हीं की एक चौरासी जातिमाला और है ।

७. आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	"	१५०
८. अनन्तनाथपूजा	"	"	१६६
९. सप्तऋषिपूजा	ब्र० देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत	१७६
१०. ज्येष्ठजिनवरलोटा	श्रुतसागर	"	१७८
११. ज्येष्ठजिनवर व्याख्यान	ब्र० जिनदास	संस्कृत	१७८
१२. पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	१९१
१३ शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	"	२१०
१४. व्रतजयमाला	सुमतिसागर	हिन्दी	२११
१५. आदित्यवारकथा	पं० भट्टारक [धर्मचन्द्र का शिष्य]	"	२१६

६१८९. गुटका सं० १४६ । पत्र सं० ११–८८ । आ० ८½×४½ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७०१ । अपूर्ण । वे० सं० २०५१ ।

विशेष—अठारहनातिविवाह एवं जयमाला आदि के पाठों का संग्रह है ।

६१६० गुटका सं० १४७ । पत्र सं० ३०-६३ प्रा० ४×४¾ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८६ ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

६१६१. गुटका सं० १४८ । पत्र सं० ३५ । प्रा० ८×१० इ० । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण । वे० सं० २१८७ ।

१. पञ्चकल्याणक	हरिचन्द	हिन्दी	१–२०
			र० काल सं० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७
२. त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्त्ति	संस्कृत	

विशेष—नीमैडा में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

३. पट्टावलि	×	हिन्दी	३५

६१६२. गुटका सं० १४६ । पत्र सं० २१ । प्रा० ६×६ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । ले० काल सं० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २१६१ ।

विशेष—गिरनार यात्रा का वर्णन है । चांदनगांव के महावीर का भी उल्लेख है ।

६१६३. गुटका सं० १५० । पत्र सं० २४६ । प्रा० ८×६ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७१७ । पूर्ण । वे० सं० २१६२ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं दिल्ली की बादशाहत का ब्योरा है ।

६१६४ गुटका सं० १५१ । पत्र सं० ६२ । प्रा० ६×६ इ० । भाषा–प्राकृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६५ ।

विशेष—मार्गणा चौबीस ठाणा चर्चा तथा भक्तामरस्तोत्र आदि हैं ।

६१६५ गुटका सं० १५२ । पत्र सं० ४० । प्रा० ७½×५¾ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० २१६६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६१६६. गुटका सं० १५३ । पत्र सं० २७–२२१ । प्रा० ६¾×६ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६७ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६१६७. गुटका सं० १५४ । पत्र सं० २७–१४७ । प्रा० ८×७ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६१६८. गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० १२। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१९९।

विशेष—समवशरण पूजा है।

६१९९. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७-१५२। आ० ७½×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख संवाद हिन्दी पद्य में है।

६२००. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १८-३१। आ० ७½×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। आ० ७½×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६२०२. गुटका सं० १५८। पत्र सं० २-३०। आ० ७×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५९। पत्र सं० ६३। आ० ७½×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० २२०४।

विशेष—कछवाहा वंश के राजाओं की वंशावली, १०० राजाओं के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वंशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १८२४ में बैठना लिखा है।

२. दिल्ली नगर की बसापत तथा बादसाहत का ब्यौरा है किस बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा घड़ी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३. बारहमासा, आखोड़ा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सवैया आदि है।

६२०४. गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। आ० ६×४½ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

६२०५. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० ३५ । आ० ७×६ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२०६ ।

विशेष—श्रावक प्रतिक्रमण हिन्दी अर्थ सहित है । हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव है ।

१ से ५ तक की गिनती के यंत्र हैं । इसके बीस यंत्र हैं १ से ६ तक की गिनती के ३६ खानों का यंत्र हैं । इसके १२० यंत्र हैं ।

६२०६. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० १६-४६ । आ० ६३⁄४×७१⁄२ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल सं० १६५५ । अपूर्ण । वे० सं० २२०८ ।

विशेष—सेवग, जगतराम, नवल, बलदेव, माणक, धनराज, बनारसीदास, खुशालचन्द, बुधजन, न्यामत आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद हैं ।

६२०७. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० ११ । आ० ५३⁄४×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२०७ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ है ।

६२०८. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० ७७ । आ० ६१⁄२×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२०६ ।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

६२०६. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ५२ । आ० ६३⁄४×४३⁄४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१० ।

विशेष— नवल, जगतराम, उदयराम, गुनपूरण, चैनविजय, रेखराज, जोधराज, चैनसुख, धर्मपाल, भगतराम, भूधर, साहिबराम, विनोदीलाल आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियो में पद हैं । पुस्तक गोमतीलालजी ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६२१०. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० २४ । आ० ६३⁄४×४३⁄४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२११ ।

१. अठारह नाते का चौढालिया	लोहट	हिन्दी	१-७
२. मुहूर्त्तमुक्तावलीभाषा	ठाकुरराम	"	१-२३

६२११. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४३⁄४ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-सम्प्रदाय । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१२ ।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध में जीत का यन्त्र, सीधा आने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा महालक्ष्मीसप्रभाविकस्तोत्र हैं।

६२१२. गुटका सं० १६८। पत्र सं० १२-३६। आ० ७३/४×५३/४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१३।

विशेष—वृन्द सतसई है।

६२१३. गुटका सं० १६६। पत्र सं० ४०। आ० ८३/४×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१४।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

६२१४. गुटका सं० १७०। पत्र सं० ६६। आ० ८×५३/४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१५।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एवं रत्नकोश हैं।

६२१५. गुटका सं० १७१। पत्र सं० ३-८१। आ० ५१/२×५१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१६।

विशेष—जगतराम के पदों का संग्रह है। एक पद हरीसिंह का भी है।

६२१६. गुटका सं० १७२। पत्र सं० ५१। आ० ५×४१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१७।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं रति रहस्य है।

अवशिष्ट-साहित्य

६२१७. अष्टोत्तरीस्नात्रविधि……। पत्र सं० १। आ० १०×५३/४ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० का० ×। पूर्ण। वे० सं० २६१। ख भण्डार।

६२१८. अम्बाष्टमीपूजन……। पत्र सं० ७। आ० ११३/४×६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ११५७। अ भण्डार।

६२१९. तुलसीविवाह……। पत्र सं० ५। आ० ६३/४×४३/४ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-विधिविधान। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० २२२२। अ भण्डार।

६२२०. पदमातुलामविधि (नाप तोल परिमाण)……। पत्र सं० २। आ० ६३/४×५३/४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-नापने तथा तोलने की विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१३७। अ भण्डार।

६२२१. प्रतिष्ठापाठविधि······ | पत्र सं० २० | आ० ८३×६३ इ० | भाषा–हिन्दी | विषय–पूजा विधि | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ७७२ | अ भण्डार |

६२२२. प्रायश्चितचूलिकाटीका—नन्दिगुरु | पत्र सं० २५ | आ० ८×५ इ० | भाषा–संस्कृत | विषय–आचारशास्त्र | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ५२८ | क भण्डार |

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी | इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२६) और है |

६२२३. प्रति सं० २ | पत्र सं० १०५ | ले० काल × | वे० सं० ६५ | घ भण्डार |

विशेष—टीका का नाम 'प्रायश्चित विनिश्चयवृत्ति' दिया है |

६२२४. भक्तिरत्नाकर—वनमाली भट्ट | पत्र सं० १६ | आ० ११½×५ इ० | भाषा–संस्कृत | विषय–स्तोत्र | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | जीर्ण | वे० सं० २२६१ | अ भण्डार |

६२२५. भद्रबाहुसंहिता—भद्रबाहु | पत्र सं० १७ | आ० ११½×४½ इ० | भाषा–संस्कृत | विषय–ज्योतिष | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० ५१ | ज भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६६) और है |

६२२६. विधि विधान······· | पत्र सं० ७२–१५३ | आ० १२×५½ इ० | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा विधान | र० काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे० सं० १०८३ | अ भण्डार |

६२२७. प्रति सं० २ | पत्र सं० ५२ | ले० काल × | वे० सं० ६६१ | क भण्डार |

६२२८. समवशरणपूजा—पन्नालाल दूनीवाले | पत्र सं० ८५ | आ० १२½×८ इ० | भाषा–हिन्दी | विषय–पूजा | र० काल सं० १६२१ | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० ७७५ | क भण्डार |

६२२६. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४३ | ले० काल सं० १८२६ भाद्रपद शुक्ला १२ | वे० सं० ७७७ | क भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७७६) और है |

६२३०. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ७५ | ले० काल सं० १६२८ भादवा सुदी ३ | वे० सं० २०० | छ भण्डार |

६२३१. प्रति सं० ४ | पत्र सं० १३६ | ले० काल × | वे० सं० २७८ | ञ भण्डार |

६२३२. समुच्चयचौबीसतीर्थंकरपूजा······ | पत्र सं० २ | आ० ११½×५½ इ० | भाषा–हिन्दी | विषय- पूजा | र० काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे० सं० २०५० | अ भण्डार |



ग्रन्थानुक्रमणिका

अ

घ

च

ध

य



ग्रंथ एवं ग्रंथकार

प्राकृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयचन्द्रगणि—	श्रृंगारसंबंधकथा	२१८
अभयदेवसूरि—	जयतिहुवणस्तोत्र	७५४
अल्हू—	प्राकृतछंदकोष	३११
इन्द्रनंदि—	छेदपिण्ड	५७
	प्रायश्चितविधि	७४
कार्त्तिकेय—	कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा	१०३
कुन्दकुंदाचार्य—	अष्टपाहुड	६६
	पंचास्तिकाय	४०
	प्रवचनसार	११२
	नियमसार	३८
	बोधप्रामृत	११५
	यतिभावनाष्टक	५७३
	रयणसार	८४
	लिंगपाहुड	११७
	षट्पाहुड	११७, ७४८
	समयसार	११६, ५७४, ७३७, ७६२
गौतमस्वामी—	गौतमकुलक	१४
	संबोधपंचासिका	११६, १२८
जिनभद्रगणि	अर्थदिपिका	१
ढाढसीमुनि—	ढाढसीगाथा	७०७
देवसूरि—	यतिदिनचर्या	८१
	जीवविचार	६१६
देवसेन—	आराधनासार	४६, ५७२, ५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४
	तत्वसार	२०, ५७५, ६३७, ७३७, ७४४, ७४७
	दर्शनसार	१३३
	नयचक्र	१३४
	भावसंग्रह	७७
देवेन्द्रसूरि—	कर्मस्तवसूत्र	५
धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	३९६
धर्मदासगणि—	उपदेशरत्नमाला	५०
नन्दिषेण—	अजितशांतिस्तवन	३७६
भंडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला	५१
नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवत्रिभंगी	२
	कर्मप्रकृति	३
	गोम्मटसारकर्मकाण्ड	५२
	गोम्मटसारजीवकाण्ड	६, १६, ७२०
	चतुर्विंशतिस्थानक	१८
	जीवविचार	७३२
	त्रिभंगीसार	३१
	द्रव्यसंग्रह	३२, ५७५, ६२८, ७४४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथचरित्र	१७६
	वीरचरित्र	६४२
	षोडशकारण जयमाल	५१७, ५४२
	संबोधपंचासिका	१२८
	सिद्धान्तार्थसार	४६
रामसिंह—	सावयधम्म दोहा (श्रावकाचार)	६७ ६४१, ७४८
	दोहापाहुड	६०
रूपचन्द—	रागमासावरी	६४१
लक्ष्मण—	रोमिणाहचरिउ	१७१
लक्ष्मीचन्द—	आध्यात्मिकगाथा	१०३
	उपासकाचार दोहा	५२
	चूनडी	६२८, ६४१
	कल्याणकविधि	६४१
विनयचन्द्र—	दुधारसविधानकथा	२४५, ६२८
	निर्झरपंचमीविधानकथा	२४५, ६२८
विजयसिंह—	अजितनाथपुराण	१४२
विमलकीर्त्ति—	सुगन्धदशमीकथा	६३२
सहणपाल—	पद्धडो (कौमुदीमध्यात्)	६४१
	सम्यक्त्वकौमुदी	६४२
सिंहकवि—	प्रद्युम्नचरित्र	१८२
महाकविस्वयंभू—	रिट्ठणेमिचरिउ	१५७, ६४२
	श्रुतपंचमीकथा	६४२
	हनुमतानुप्रेक्षा	६३५
श्रीधर—	सुकुमालचरिउ	२०६
हरिश्चन्द—	अणस्तमितिसंधि	२४१, ६२८ ६४३

संस्कृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अकलंकदेव—	अकलंकाष्टक	५७५ ६३७, ६४९, ७१२
	तत्त्वार्थराजवार्त्तिक	३२
	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	१३४
	प्रायश्चितसंग्रह	७४
अक्षयराम—	णमोकारपैंतीसी पूजा	५८२, ५१७
	प्रतिमासान्त चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	५१६, ५२०
	सुखसंपत्तिव्रत पूजा	५५५
	सौख्यकाव्य व्रतोद्यापन	५१६, ५५६
ब्रह्म अजित—	हनुमच्चरित्र	२१०
अजितप्रभसूरि—	शान्तिनाथचरित्र	१९८
अनन्तकीर्ति—	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	४९४
	पल्यविधान पूजा	५०७
अनन्तवीर्य—	प्रमेयरत्नमाला	१३८
अन्नंभट्ट—	तर्कसंग्रह	१३२
अनुभूतिस्वरूपाचार्य—	सारस्वतप्रक्रिया	६२५ २६६, ७८०
	लघुसारस्वत	२६३
अपराजितसूरि	भगवतीआराधनाटिका	७६
अप्पयदीक्षित—	कुवलयानंद	३०८
अभयचन्द्रगणि—	पंचसंग्रहवृत्ति	३९
अभयचन्द्र—	क्षीरोदानीपूजा	७९३
अभयनंदि—	जैनेन्द्रमहावृत्ति	२६०
अभयनन्दि—	त्रिलोकसार पूजा	४८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिनाथपूजा	४६६
	सुखसंपत्तिव्रतोद्यापन	५५५
सुरेश्वराचार्य—	पंचिकरणवार्तिक	२६१
सुयशकीर्त्ति—	पंचकल्याणकपूजा	५००
सुल्हण कवि—	वृत्तरत्नाकरटीका	३१४
दैवज्ञ पं० सूर्य—	रामकृष्णकाव्य	१६४
भ० सोमकीर्त्ति—	प्रद्युम्नचरित्र	१८१
	सप्तव्यसनकथा	२५०
	समवशरणपूजा	५४६
सोमदत्त—	बड़ासिद्धपूजा (कर्मदहनपूजा)	६३१
सोमदेव—	अध्यात्मतरंगिणी	६६
	नीतिवाक्यामृत	३३०
	यशस्तिलकचम्पू	१८७
सोमदेव—	सूतक वर्णन	
सोमप्रभाचार्य—	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६
	सिन्दूरप्रकरण	३४०
	सूक्तिमुक्तावलि	३४२, ६३५
सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	५८
	दशलक्षणजयमाल	७६५
	पद्मपुराण	१४८
	मेरूपूजा	७६५
	विवाहपद्धति	५३६
सौभाग्यगणि—	प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	२६२
हयग्रीव—	प्रश्नसार	२८८
हर्ष—	नैषधचरित्र	१७७
हर्षकल्याण—	पंचमीव्रतोद्यापन	५३६
हर्षकीर्त्ति—	अनेकार्थशतक	२७१
	छंदोशतक	३०६
	पंचमीव्रतोद्यापन	५०४
	भक्तामरस्तोत्रटीका	४०६
	योगचिंतामणि	३०१
	लघुनाममाला	२७६
	लब्धिविधानपूजा	५३३
	श्रुतबोधवृत्ति	३१५
महाकविहरिचन्द्र—	धर्मशर्माभ्युदय	१७४
हरिभद्रसूरि—	क्षेत्रसमासटीका	५४
	योगबिंदुप्रकरण	११६
	षट्दर्शनसमुच्चय	१३६
हरिरामदास—	पिंगलछंदशास्त्र	३११
हरिषेण—	नन्दीश्वरविधानकथा	२२६ ५१४
	कथाकोश	२१६
हेमचन्द्राचार्य—	अभिधानचिन्तामणि नाममाला	२७१
	अनेकार्थसंग्रह	२७१
	अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका	५७३
	छंदानुशासनवृत्ति	३०६
	द्वाश्रयकाव्य	१७१
	धातुपाठ	२६०
	नेमिनाथचरित्र	१७७
	योगशास्त्र	११५
	लिंगानुशासन	२७७
	वीतरागस्तोत्र	३९९, ४१३
	वीरद्वात्रिंशतिका	१३८
	शब्दानुशासन	२६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भक्तिपाठ	६५१
	पद	६६४, ७०२
		७२४, ७७४
	विनती	६२१
	स्तुति	६०१, ६५०
कनकसोम—	आद्रकुमारधमाल	६१७
	आषाढभूतिचौढालिया	६१७
	मेघकुमारचौढालिया	६१७
कन्हैयालाल—	कवित्त	७८०
कपोत—	मोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
ब्र. कपूरचन्द—	पद	४४५
		५७०, ६२४
कबीर—	दोहा	७६०, ७८१
	पद	७७७, ७६३
	साखी	७२३
कमलकलश—	पंचगणवाडीस्तवन	६१६
कमलकीर्त्ति—	आदिजिनवरस्तुति (गुजराती)	४३६
कर्मचन्द—	पद	५८७
कल्याणकीर्त्ति—	चारुदत्तचरित्र	१६७
किशन—	छहढाला	६७४,
किशनगुलाब—	पद	५८४, ६१४, ६६६
किशनदास—	पद	६४६
किशनलाल—	कृष्णबालविलास	४३७
किशनसिंह—	क्रियाकोशभाषा	५१
	पद	५६०, ७०४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	रात्रिभोजनकथा	२३८
कुवलयचन्द—	नेमिनाथपूजा	७६३
कुशललाभगणि—	ढोलामारुवणीचौपई	२२५
कुशल विजय—	विनती	७८२
केशरगुलाब—	पद	४४५
केशरीसिंह—	सम्मेदशिखरविलास	६२
	वर्द्धमानपुराण	१५४
		१६६
केशव—	कलियुगकीकथा	६२२
	सदयवच्छसावलिंगा की चौपई	२५४
केशवदास—I	वैद्यमनोत्सव	६४६
केशवदास—II	कवित्त	६४३, ७७०
	कविप्रिया	१६१
	नखसिखवर्णन	७७२
	रसिकप्रिया	७७१, ७६६
	रामचन्द्रिका	१६४
केशवसेन—	पंचमीव्रतोद्यापन	६३८
कौरपाल—	चौरासीबोल	७०१
कृपाराम—	ज्योतिषसारभाषा	२८२
		५६८
कृष्णदास—	रत्नावलीव्रतविधान	५३१
कृष्णदास—	सतसईटीका	७२७
कृष्णराय—	प्रद्युम्नरास	७२२
खेमल—	सतियों की सज्झाय	४५१
खड्गसेन—	त्रिलोकसारदर्पणकथा	३२१
		६८६, ६६०,
खानचन्द—	परमात्मप्रकाशबालाव बोधटीका	१११

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
खुशालचन्द—	अनन्तव्रतकथा	२१४
	आकाशपंचमीकथा	२४५
	आदित्यव्रतकथा (रविवारकथा)	७७५
	आरतीसिद्धांकी	७७७
	उत्तरपुराणभाषा	१४५
	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	२२४, २४४, २४६
	जिनपूजापुरन्दरकथा	२४४
	ज्येष्ठजिनवरकथा	२४४
	धन्यकुमारचरित्र	१७३, ७२६
	दशलक्षणकथा	२४४, ७३१
	पद्मपुराणभाषा	१४६
	पल्यविधानकथा	२३३
	पुष्पांजलिव्रतकथा	२३४, २४४, ७३१
	पूजाएवंकथासंग्रह	७१६
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४, ७३१
	मुक्तावली व्रतकथा	२४५
	मेघमालाव्रतकथा	२३६, २४४
	यशोधरचरित्र	१६१, ७११
	लब्धिविधानकथा	२४४
	शांतिनाथपुराण	१५५
	षोडशकारणव्रतकथा	२४४
	सप्तपरमस्थानव्रतकथा	२४४
	हरिवंशपुराण	१५८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	५८२, ६२४, ६६४, ६६८, ७०१, ७८३, ७६८
खेतसिंह—	नेमीश्वर का बारहमासा	७६२
	नेमीश्वरराजुलकोलहुरि	७७६
	नेमिजिनंदव्याहलो	६३८
खेमचन्द—	चौबीसजिनस्तुति	४३७
	पद	५८०, ५८३, ५६१, ६४६
गङ्ग—	पद्यसग्रह	७१०
गंगादास—	रसकौतुक राजसभारंजन	५७६
गंगादास—	आदिपुराणविनती	७०१
	आदित्यवारकथा	७६५
	भूलना	७५७
	त्रिभुवनकीवीनती	७७२
गंगाराम—	पद	६१५
	भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०
गारवदास—	यशोधरचरित्र	१६१
गिरधर—	कवित्त	७७२, ७८६
गुणकीर्त्ति—	चतुर्विंशतिछप्पय	६०१
	चौबीसगणधरस्तवन	६०६
	सीलरास	६०२
गुणचन्द्र—	आदीश्वरकेदशभव	७६२
	पद	५८१, ५८५, ५८७, ५८८
गुणनंदि—	रत्नावलिकथा	२४६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	बीसतीर्थंकरस्तुति	७००
	शालिभद्रचोपई	७००
जिनचंद्रसूरि—	कयवन्नाचौपई	२२१
	क्षमाछत्तीसी	५४
जिनदत्तसूरि—	गुरुपारतंत्र्यएवंसप्तस्मरण	६१६
	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	६१६
पं० जिनदास—	चेतनगीत	७६२
	धर्मतरुगीत	७६२
	पद	५८१, ५८८, ६६८
		७६४, ७७२, ७७४
	आराधनासार	७५७
	मुनीश्वरोंकीजयमाल	५७१
		५७६, ६२२, ६५८
		६८३, ७५०, ७६१
	राजुलसज्झाय	७५०
	विनती	७७५
	विवेकजकडी	७२२, ७५०
	सरस्वतीजयमाल	६५८
		७७८,
पाण्डेजिनदास—	योगीरासा	१०५, ६०१
		६०३, ६२२, ६३९
		६५२, ७०३, ७१२
		७२३
	मालीरासो	५७९
जिनदासगोधा—	सुगुरुशतक	३४० ४४७
ब्र० जिनदास—	अठावीसमूलगुणरास	७०७
	अनन्तव्रतरास—	५६०
	चौरासीन्यातिमाला	७६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	धर्मपचविंशतिका	६१
	निजामणि	६५
	मिच्छादुक्कड	६८६
	रैदव्रतकथा	२४६
	समकितमिथ्यात्वकोधर्म	७०१
	सुकुमालस्वामीरास	३६६
	सुभौमचक्रवर्तिरास	३६७
जिनरंगसूरि—	कुशलगुरुस्तवन	७७९
जिनराजसूरि—	धन्नाशालिभद्ररास	३६२
जिनवल्लभसूरि—	नवकारमहिमास्तवन	६१८
जिनसिंहसूरि—	शालिभद्रधन्नाचौपई	२५३
जिनहर्ष—	चन्दरनिसाणी	३८७, ७३४
	उपदेशछत्तीसी	३२४
	पद	५९०
	नेमिराजुलगीत	६१८
	पार्श्वनाथकीनिशानी	४४८
जिनहर्षगणि—	श्रीपालरास	३६५
जिनेन्द्रभूषण—	बारहसौचौंतीसव्रतकथा	७६५
जिनेश्वरदास—	नन्दीश्वरविधान	४६४
जीवणदास—	पद	४४५
जीवणराम—	पद	५८०
जीवराम—	पद	५९०, ७६१
जैतराम—	जीवजीतसंहार	२२५
जैतश्री—	रागमालाके दोहे	७८०
जैतसिंह—	दशवैकालिकगीत	७००
जोधराजगोदीका—	चौआराधनाउद्योतकथा	२२५
	गोडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	जिनस्तुति	७७५
	धर्मसरोवर	९३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पुरुषार्थसिद्ध्युपायभाषा	६६
	मोक्षमार्गप्रकाशक	८०
	लब्धिसारभाषा	४३
	लब्धिसारक्षपणासार	४३
	लब्धिसारसंदृष्टि	४३
टक्कुरसी—	कृपणछंद	६३८
	नेमीश्वरकीबेलि (नेमीश्वरकवित्त)	७२२
	पंचेन्द्रियबेलि	७०३, ७२२, ७६५
कविठाकुर—	णमोकारपच्चीसी	४३६
	सज्जनप्रकाश दोहा	२८४
डालूराम—	अढाईद्वीपपूजा	४५५
	चतुर्दशीकथा	७४२
	द्वादशांगपूजा	४६१
	पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन	६६
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३
	पंचमेरुपूजा	५०५
डूंगरकवि—	होलिकाचौपई	२५५
डूंगावैद—	श्रेणिकचौपई	२४८
तिपरदास—	श्री रुकमणिकृष्णजी को रासो	७७०
तिलोकचंद—	सामायिकपाठभाषा	६६
तुलसीदास—	कवित्तबंधरामचरित्र	६६७
तुलसीदास—	प्रश्नोत्तररत्नमाला	३३२
तेजराम—	तीर्थमालास्तवन	६१७, ६७३
त्रिभुवनचंद—	अनित्यपंचासिका	७५५
	पद	७१५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
थानजीअजमेरा—	बीसतीर्थंकरपूजा	५२३
थिरूमल—	न्हवणआरती	७७८
दत्तलाल—	बारहखडी	७४५
ब्रह्मदयाल—	पद	५८७
दयालराम—	जकडी	७४६
दरिगह—	जकडी	६६१, ७५५
	पद	७४६
दलजी—	बारहभावना	५७१
दलाराम—	पद	६२०
दशरथनिगोत्या—	धर्मपरीक्षाभाषा	३५५
दास—	पद	७४६
मुनिदीप—	विद्यमानबीसतीर्थंकर पूजा	४१५
दीपचन्द—	अनुभवप्रकाश	४८
	आत्मावलोकन	१००
	चिद्विलास	१०५
	आरती	७७७
	ज्ञानदर्पण	१०५
	परमात्मपुराण	११०
	पद	५८३
दुलीचंद—	आराधनासारवचनिका	५०
	उपदेशरत्नमाला	५१
	जैनसदाचारमार्त्तण्ड नामकपत्रकाप्रत्युत्तर	२०
	जैनागारप्रक्रियाभाषा	५७
	द्रव्यसंग्रहभाषा	३७
	निर्माल्यदोषवर्णन	६५
	पद	६६३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६७४, ७४७
	गुरुअष्टक	७७७
	जकड़ी	६४३
	तत्वसारभाषा	७४७
	दशबोलपच्चीसी	४४८
	दशलक्षणपूजा	५१९, ७०५
	दानबावनी	६०५, ६८९
	द्यानतविलास	३२८
	द्रव्यसंग्रहभाषा	७१२
	धर्मविलास	३२८
	धर्मपच्चीसी	७१०, ७४७
	पंचमेरुपूजा	५०५, ७०५
	पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा	५६९
		६१५, ४०६
	पदसंग्रह	४४५, ५८३
		५८४, ५८५, ५८६
		५८८, ५८९, ५९०
		६२२, ६२४, ६४३
		६४९, ६५४, ७०४
		७४६, ७८७
	भावनास्तोत्र	६१४
	रत्नत्रयपूजा	५२९, ७०५
	वाणीअष्टकजयमाल	७७७
	षोडशकारणपूजा	५११
		५१९, ५५६, ७०५
	संघपच्चीसी	३७५
	संबोधपंचासिका	१२८
		६०५, ६४८, ६८५, ६९३
		७१३, ७१६, ७२५
	संबोधअक्षरबावनी	११९
	समाधिमरणभाषा	१२६
	सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	७०५
	स्वयंभूस्तोत्रभाषा	४२९
	आठपदपूजा	५२४
द्वारिकादास—	कलियुगकीकथा	७७३
धनराज—	तीनमियांकीजकड़ी	६२३
	पद	७९८
	शिखरविलासभाषा	७९३
धर्मचन्द्—	अनन्तकेछप्पय	७५७
धर्मदास—	मोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
धर्मपाल—	पद	५८८, ७९८
धर्मभूषण—	अंजनाकोरास	५६३
धर्मसी—	दानशीलतपभावना	६०
धीरजसिंहराठौड़—	भाषाभूषण	६९८
नन्ददास—	अनेकार्थनाममाला	७०६
	अनेकार्थमंजरी	२७१, ७६१
	पद	५८७, ७०४
		७७०
	नाममंजरी	६९७, ७६६
	मानमंजरी	२७६, ६९१
	विरहमंजरी	६२७, ७२६
	श्यामबत्तीसी	६८३
नन्दराम—	योगसारभाषा	११६
	यशबत्तीसी	७३२
नैणनन्दलाल—	प्रमाणलिकवित्त	७८२
नवलकवि—	रसालकुंवरकीचौपई	५७५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
भूधरदास—	कवित्त	७७०
	गुरुग्रोंकीवीनती	४४७, ५११, ६१४, ६४२, ६६३
	चर्चासमाधान	१५, ६०६, ६४६
	चतुर्विंशतिस्तोत्र	४२६
	जकडी	६५०, ७१६
	जिनदर्शन	६०५
	जैनशतक	३२७, ४२६, ६५२, ६७०, ६८६, ६६८, ७०६, ७१०, ७१३, ७१६, ७३२
	दशलक्षणपूजा	५६२
	नरकदुखवर्णन	६५, ७८८
	नेमीश्वरकीस्तुति	६५०, ७७७
	पंचमेरुपूजा	५०५, ५६६, ७०४, ७५६
	पार्श्वपुराण	१७६, ७४४, ७६१
	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय भाषा	६६
	पद	४४५, ५८०, ५८६, ५६०, ६१५, ६२०, ६४८, ६६४, ६५४, ६६४, ७७६, ७७७, ७८५, ७८६, ७६८
	बाईसपरीषहवर्णन	७५, ६०५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	बारहभावना	११४
	वज्रनाभिचक्रवर्त्तिकी भावना	८५, ४४८, ७३६
	विनती	६४२, ६६३, ६६४
	स्तुति	७१०
भूधरमिश्र—	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय वचनिका	६६
भेलीराम—	पद	७७६
भैरवदास—	पचकल्याणकपूजा	५०१
भोगीलाल—	बृहद्घंटाकर्णकल्प	७२६
मंगलचंद—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६३
	पदसंग्रह	४४७
मकरंदपद्मावतिपुरवाल—	षट्संहननवर्णन	८८
मक्खनलाल—	अकलंकनाटक	३१६
मजलसराय—	जैनबद्रीदेशकीपत्री	५८१
मतिकुशल—	चन्द्रलेहारास	३६१
मतिशेखर—	ज्ञानबावनी	७७२
मतिसागर—	शालिभद्रचौपई	१६८, ७२६
मथुरादासव्यास—	लीलावतीभाषा	३६८
मनरंगलाल—	अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	५५४
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७३
	निर्वाणपूजापाठ	४६६
मनरथ—	चिंतामणिजीकीजयमाल	६४४
मनराम—	अक्षरगुणमाला	७४६
	गुणाक्षरमाला	७५०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तवन	६१७
	धर्मबुद्धिचौपई	२२६
	नेमिनाथमंगल	६०५, ७२२
	नेमीश्वरका ब्याहला	६५१
	पद	५८२, ५८३, ५८७
	पूजासंग्रह	७७७
पांडे लालचंद—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८
	सम्मेदशिखरमहात्म्य	६२
ऋषि लालचंद—	अठारहनातेकीकथा	२१३
	मरुदेवीसज्झाय	४५०
	महावीरजीचौढाल्या	४५०
	विजयकुमारसज्झाय	४५०
	शान्तिनाथस्तवन	४१७
	शीतलनाथस्तवन	४५१
लालजीत—	तेरहद्वीपपूजा	४८४
लाललाल—	जिनवरव्रतजयमाला	६८५
लालवर्द्ध न—	पाण्डवचरित्र	१७८
लालसागर—	णमोकारछंद	६८३
लूणकरणकासलीवाल—	चौबीसतीर्थंकरस्तवन	४३८
	देवकीकीढाल	४३९
साहलोहट—	अठारहनातेकीकथा (चौढाल्या)	६२३
		७२३, ७७५, ७८०, ७९८
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६९
	पार्श्वनाथकीगुणमाला	७७६
	पार्श्वनाथजयमाल	६४२
		७८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वजिनपूजा	५०७
	पूजाष्टक	५१२
	षट्लेश्यावेलि	३६६
वल्लभ—	रुक्मिणीविवाह	७८७
वाजिद—	वाजिदकेअडिल्ल	६७३
वादिचन्द्र—	आदित्यवारकथा	६०७
विचित्रदेव—	मोरपिच्छधारीके कवित्त	६७३
विजयकीर्ति—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६९
	पद	५८०, ५८२
		५८३, ५८४, ५८५
		५८६, ५८७, ५८९
	श्रेणिकचरित्र	२०४
विजयदेवसूरि—	नेमिनाथरास	३६२
	शीलरास	३६५, ६१७
विजयमानसूरि—	श्रेयांसस्तवन	४५१
विद्याभूषण—	गीत	६०७
विनयकीर्त्ति—	अष्टाह्निकाव्रतकथा	६१४
		७८०, ७६४
विनयचंद—	केवलज्ञानसज्झाय	३८५
विनोदीलाललालचंद—	कृपणपच्चीसी	७७३
	चौबीसीस्तुति	७७३, ७७६
	चौरासीजातिका जयमाल	३६६
	नेमिनाथकेनवमंगल	४४०
		६८५, ७२०, ७३४
	नेमिनाथकाबारहमासा	७५३



शासकों की नामावलि

★ ग्राम एवं नगरों की नामावलि ★



★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र सं ' पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×४	अथ प्रकाशिका	अर्थ प्रकाशिका
६×८	घिकड	किघड
७×२६	गोमट्टसार	गोम्मटसार
१६×९	३०४	३१४
१७×१९	१८१४	१८४४
३१×११	तत्वार्थ सूत्र भाषा	तत्वार्थ सूत्र भाषा–जयवंत
३८×१०	वे. सं. २३१	वे. सं. १९९२
४४×५	५४५	५४६
४४×२४	वष	वर्षे
४८×२२	—	५९९
५०×१२	नयचन्द्र	नयनचन्द्र
५३×१	कात	काल
५५×२६	सह	साह्
५९×१५	र. काल	ले० काल
६३×६	न्योपार्जि	न्यायोपार्जित
६९×१०	भूधरदास	भूधरमिश्र
६९×१३	१८७१	१८०१
७५×१८	बालाविवेध	बालावबोध
७५×२१	आधार	आचार
७६×१३	श्रीनंदिगण	—
९८×१	सोनगिर पच्चीसी	सोनागिरपच्चीसी
९९×९	१४ वीं शताब्दी	१९ वीं शताब्दी
१०४×२०	१४४१	१३४१
१२१×१	धर्म एवं आचारशास्त्र	अध्यात्म एवं योग शास्त्र

[illegible] पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
[illegible]	त्र	ऋ
[illegible]	१७२८	१८२८
		र० कालसं० १६६६
[illegible]	र० काल	ले० काल
[illegible]	१०४०	२०४०
	सं० [illegible]	सं० १५८५
[illegible]६	क्र० सं० [illegible] से [illegible]	क्र० सं० २१०० से २१५८
[illegible]	रइधू	कवि तेजपाल
[illegible]	ठमल्ल	नाढमल्ल
[illegible]	[illegible]	२३१८
[illegible]	भट्टा[illegible]	भट्टारक
[illegible]	१७[illegible]	१७१५
[illegible]	[illegible]	आकाशपंचमीकथा
२१[illegible]	धर्म[illegible]	देवेन्द्रकीर्त्ति
२४२	वर्द्ध[illegible]	वर्द्धमानमानम्य
२६४	२१[illegible]	[illegible]०
३१[illegible]	३[illegible]	३२८०
३१[illegible]	[illegible]	पद्मनन्दि
३२[illegible]	३[illegible]	३३६३
३३६×१३	[illegible]	भक्तिलाभ
३६६×–	३[illegible]	३६६–३७६
[illegible]८५×१	[illegible] स्तोत्र टीका	कल्याणमाला
[illegible]८६×५	[illegible]	और
[illegible]६×४	[illegible]	कनककुशल
[illegible]	[illegible]	भूपालचतुर्विंशतिटीका
[illegible]	[illegible]	हिन्दी
[illegible]	[illegible]पुरी	भावबावनी
[illegible]	[illegible] पूजा	पञ्चगुरुकल्याण पूजा
[illegible]	[illegible]	पाटोदी

पत्र पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
[illegible]	नवराम	हिन्दी
[illegible]	”	[illegible]
[illegible]		हिन्दी
[illegible]	हिन्दी	[illegible]
[illegible]	”	[illegible]
[illegible]	[illegible]रायमल्ल	[illegible] रायमल्ल
[illegible]	मनांमघ	मानसिंह
[illegible]	प्रभयदेवसूरि	अभयदेवसूरि
[illegible]	”	अपभ्रंश
[illegible]	[illegible]	[illegible]

